CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीमद्बल्लालसेनदेवप्रणीतः

अद्भुतसागरः

५९

हिन्दी टीकाकारः

डॉ. शिवाकान्त झा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्यो - १४४२ R

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

४१५

श्रीमद्बल्लालसेनदेवप्रणीतः

अद्भुतसागरः

भाषाटीकासमन्वितः

टीकाकारः

विद्यावाचस्पति

डॉ. शिवाकान्त झा

विश्वविद्यालय प्राचार्य

स्नातकोत्तर ज्योतिष विभाग

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय

दरभंगा (बिहार)

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के. ३७/११७ गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. ११२९, वाराणसी २२१००१
दूरभाष : २३३५२६३, २३३३४३१

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
प्रथम संस्करण २००६ ई.
मूल्य : ३५०.००

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY
पुस्तकालय
Acc. 30992 / 30115
R.

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
३८ यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. २११३
दिल्ली ११०००७
दूरभाष : २३८५६३९१

❖

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. १०६९, वाराणसी २२१००१
दूरभाष : २४२०४०४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDF

ज्यो- १४४२ R

भूमिका

समस्त भारतीय दर्शनशास्त्र एवं विज्ञान का एकमात्र लक्ष्य अपनी आत्मा का विकास कर उसे परमात्मा में मिला देना अथवा उसके समान बना लेना है।

विज्ञान एवं दर्शनादि शास्त्रों की भाँति ज्योतिष शास्त्र ने भी विज्ञान होने के कारण इस अखिल ब्रह्माण्ड के रहस्य को व्यक्त करने का सफल प्रयत्न किया है। इसीलिए कहा भी गया है—

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ चित्तसाक्षिणौ ॥

भारतवर्ष में समुपलब्ध आकरग्रन्थों में प्राचीनतम वेदग्रन्थ ही हैं, यह सर्वविदित है। वेद को अपौरुषेय कहा जाता है अर्थात् किसी मनुष्य ने इसको नहीं बनाया है; किन्तु प्राणियों के हितसाधनार्थ सर्वशक्तिमान् परमात्मा ने त्रिकालज्ञ महर्षियों के द्वारा सृष्ट्यारम्भ-काल में ही इसे प्रकाशन कराया है।

प्राणियों के आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक—इन तीन प्रकार के दुःखों की निवृत्ति और धर्मार्थकाममोक्षस्वरूप पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति का सर्वोत्तम पथप्रदर्शक वेद ही है। मनु ने कहा भी है—

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥

यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्त्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः ॥

(अ. २, ६-७)

अर्थात् सम्पूर्ण वेद, वेद के जानने वालों (मनु आदि) की स्मृति और उनका (१३ प्रकार का) शील, धार्मिकों का आचार तथा (जिस विषय को स्मृतियों में विकल्प से लिखा है, उसमें) अपने मन की प्रसन्नता—ये धर्म के मूल हैं।

मनुजी सर्वज्ञ हैं, इसलिए जो कुछ जिसका धर्म वेद में कहा गया है, वही उन्होंने कहा है। श्लोकवार्त्तिक में कहा गया है—

प्रत्यक्षेणानुमीत्या वा यस्तूपायेन बुध्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता ॥

ज्ञान-विज्ञानादि समस्त भारतीय विद्याओं का आधार वेद ही है। नीतिशास्त्र में कहा है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आन्विक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती ।
विद्याश्चतस्त्र एवैता लोकसंस्थितिहेतव: ॥

अङ्गानि वेदाश्चत्वार: मीमांसान्यायविस्तर: ।
धर्मशास्त्रं पुराणं च त्रयीदं सर्वमुच्यते ॥

वेदपुरुष के षडङ्गों (व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, कल्प, शिक्षा और छन्द) में ज्योतिष को नेत्राङ्ग माना गया है। नारद ने कहा है—

वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ।
विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्त्तं न सिद्ध्यति ॥

भास्कराचार्य ने लिखा है—

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता: यज्ञा: प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण ।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यत: स्याद्वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात् ॥

नेत्राङ्ग होने के कारण ज्योतिष का स्थान सर्वोपरि माना गया है। लगध का कथन है—

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा ।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम् ॥

(वेदाङ्गज्योतिष)

भास्कराचार्य ने कहा है—

वेदचक्षु: किलेदं स्मृतं ज्यौतिषं मुख्यता चाङ्गमध्येऽस्य तेनोच्यते ।
संयुतोऽपीतरै: कर्णनासादिभि श्चक्षुषाङ्गेन हीनो न किञ्चित्कर: ॥

(सि. शि. मणि, मध्यमाधिकार)

यद्यपि यह सामान्य सिद्धान्त है कि सभी कोई अपने वर्ग और अपने विषय का पक्षपाती होता है, परन्तु दिग्देशकालव्यञ्जकत्वेन यज्ञ, तप, दान, व्रतोपवास-पर्वादि सकल कर्मों का आदिबीज होने के कारण अन्य शास्त्रापेक्षया ज्यौतिष शास्त्र का अध्ययन अत्यावश्यक है। वेद-वेदाङ्ग-उपनिषद्-दर्शन-पुराणेतिहासादि का एकमात्र सिद्धान्त है कि सभी मनुष्य यज्ञ-तप-दान-व्रतादि की साधना द्वारा ईश्वर की प्राप्ति करें। परञ्च उचित समय पर किया हुआ कर्म ही सफल होता है, अकाल में किया हुआ कर्म निष्फल एवं दुर्गति को देने वाला होता है। अतएव कालात्मक ज्यौतिष शास्त्र का पग-पग पर प्रयोजन स्पष्टतया सिद्ध है। इसके ज्ञान के विना वैदिक या लौकिक कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है।

समस्त वेद यज्ञकर्मात्मक हैं। संस्कारों और यज्ञों की समस्त क्रियायें निश्चित मुहूर्त्तों पर निश्चित कालावधि में सम्पन्न करना आवश्यक हैं। उनके ज्ञान हेतु ज्योतिष शास्त्रीय पञ्चाङ्ग ही एकमात्र आधार है। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान के सम्पादन में तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण—इन पाँच अङ्गों को ध्यान में रक्खा जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्यो- १५५२ R.

पञ्चाङ्ग द्वारा संस्कारों, यज्ञानुष्ठानों एवं यात्रादि कार्यों से सम्बन्धित मुहूर्त्तों का ज्ञान होता है। इसलिए प्रत्येक वेद से सम्बद्ध ज्यौतिषों का अध्ययन वैदिक काल से ही प्रचलित रहा है और अति प्राचीन काल से ही निरन्तर ज्योतिष शास्त्र का उत्तरोत्तर विकास होता आ रहा है।

अनेक शास्त्रों की भाँति ज्योतिष में सन्दिग्धता या अप्रत्यक्षता नहीं है; अपितु यह सर्वत्र सयुक्तिक एवं प्रत्यक्ष है। काश्यप के मतानुसार इस ज्योतिष शास्त्र के अट्ठारह प्रवर्त्तकाचार्य हैं—

सूर्यः पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरङ्गिराः॥
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिःशास्त्रप्रवर्त्तकाः॥

यहाँ पर पुलस्त्य और पौलिशभेद से पराशर ने उन्नीस ज्योतिःशास्त्र-प्रवर्त्तक आचार्य बताया है। वे कहते हैं—

विश्वसृड्नारदो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
लोमशो यवनः सूर्यश्च्यवनः कश्यपो भृगुः॥
पुलस्त्यो मनुराचार्यः पौलिशः शौनकोऽङ्गिराः।
गर्गो मरीचिरित्येते ज्ञेया ज्योतिःप्रवर्त्तकाः॥

नारद ने अपनी नारदसंहिता में सूर्य को छोड़कर सत्रह प्रवर्त्तक आचार्य कहा है; परन्तु पञ्चवर्ष युगवर्णनयुक्त मूल वेदाङ्ग ज्योतिष के निर्माता महात्मा लगध की चर्चा ज्योतिःशास्त्रप्रवर्त्तक के रूप में संहिताकारों ने नहीं की है।

इन ज्योतिःशास्त्र के प्रवर्त्तक आचार्यों के सिद्धान्तों एवं संहिता के ग्रन्थों की अनुपलब्धता के कारण इनके समयादि का निराकरण अतीव कठिन है।

वेदों में प्रसङ्गानुसार ज्योतिषविषयक चर्चायें उपलब्ध हैं; स्वतन्त्र अध्याय या प्रकरण के रूप में नहीं। परन्तु आज के विकसित एवं विशाल ज्योतिर्विज्ञान का आधार वेद में सन्निहित है। अति प्राचीन काल में ज्योतिष शास्त्र के विषयों का विभाजन गणित-फलित की दृष्टि से नहीं किया गया था। बाद में आचार्य वराहमिहिर ने ज्योतिष शास्त्र को सिद्धान्त, संहिता और होरा—इन तीन स्कन्धों (विभागों) में विभक्त किया।

ज्योतिःशास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितं
तत्कात्स्न्योंपनयस्य नाम मुनिभिः सङ्कीर्त्यते संहिता।
स्कन्धेऽस्मिन् गणितेन या ग्रहगतिस्तन्त्राभिधानस्त्वसौ
होरान्योऽङ्गविनिश्चयश्च कथितः स्कन्धस्तृतीयोऽपरः॥

(बृहत्संहिता, उपनयनाध्याय-९)

अर्थात् अनेक भेदों से युत ज्योतिष शास्त्र के तीन स्कन्ध—संहिता, तन्त्र,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होरा हैं। जिसमें सम्पूर्ण ज्योतिष शास्त्र के विषयों का वर्णन हो, उसको 'संहिता' कहते हैं, जिसमें गणित द्वारा ग्रहगति का निर्णय किया गया हो, उसको 'तन्त्र' कहते हैं। इनके अतिरिक्त जातक का मुहूर्त्त आदि का निर्णय जिसमें हो, उसको 'होरा' कहते हैं।

संहितास्कन्ध की विस्तृत परिभाषा बृहत्संहिता में वराहमिहिर ने दी है—

'यत्रैते संहितापदार्थाः। दिनकरादीनां ग्रहाणां चारास्तेषु च तेषां प्रकृतिविकृतिप्रमाणवर्णकिरणद्युतिसंस्थानास्तमनोदयमार्गमार्गान्तरवक्रानुवक्रर्क्षग्रहसमागमचारादिभिः फलानि, नक्षत्रकूर्मविभागेन देशेष्वगस्त्यचारः। सप्तर्षिचारः। ग्रहभक्तयो नक्षत्रव्यूहग्रहशृङ्गाटकग्रहयुद्धग्रहसमागमग्रहवर्षफलगर्भलक्षणरोहिणीस्वात्याषाढीयोगाः सद्योवर्षकुसुमलतापरिधिपरिवेषपरिघपवनोल्कादिग्दाहक्षितिचलनसन्ध्यारागगन्धर्वनगररजोनिर्घातार्घकाण्डसस्यजन्मेन्द्रध्वजेन्द्रचापवास्तुविद्याङ्गविद्यावायसविद्यान्तरचक्रमृगचक्रश्वचक्रवातचक्रप्रासादलक्षणप्रतिमालक्षणप्रतिष्ठापनवृक्षायुर्वेदोदकार्गलनीराजनखञ्जनकोत्पातशान्तिमयूरचित्रकघृतकम्बलखड्गपट्टकृकवाकुकूर्मगोजाश्वेभपुरुषस्त्रीलक्षणान्यन्तःपुरचिन्तापिटकलक्षणोपानच्छेदवस्त्रच्छेदचामरदण्डशयनाऽऽसनलक्षणरत्नपरीक्षादीपलक्षणदन्तकाष्ठाद्याश्रितानि शुभाऽशुभानि निमित्तानि सामान्यानि च जगतः प्रतिपुरुषं पार्थिवे च प्रतिक्षणमनन्यकर्माभियुक्तेन दैवज्ञेन चिन्तयितव्यानि। न चैकाकिना शक्यन्तेऽहर्निशमवधारयितुं निमित्तानि। तस्मात् सुभृतेनैव दैवज्ञेनान्येऽपि तद्विदश्चत्वारः कर्त्तव्याः। तत्रेकेनैन्द्री चाग्नेयी च दिगवलोकयितव्या। याम्या नैर्ऋती चान्येनैव वारुणी वायव्या चोत्तरा चैशानी चेति। यस्मादुल्कापातादीनि शीघ्रमपगच्छन्तीति। तस्याश्चाकारवर्णस्नेहप्रमाणादिग्रहर्क्षोपघातादिभिः फलानि भवन्ति।'

उक्त लक्षणयुक्त संहिता शास्त्र के जानने वाले दैवज्ञ को ही वराहमिहिर ने 'दैवचिन्तक' कहा है—'संहितापारगश्च दैवचिन्तको भवति।' परन्तु इस संहितास्कन्ध के ग्रन्थों में बृहत्संहिता, नारदसंहिता, अद्भुतदर्पण, वसन्तराज-शाकुनादि के अतिरिक्त अन्य आचार्यों के संहिताग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। इसलिए समस्त लोकहितार्थ मिथिला महीमहेन्द्रनिःशङ्कशङ्कर श्रीमद्वल्लालसेनदेव ने अनेक श्रुति-स्मृति-पुराणेतिहास-ज्योतिष-धर्मशास्त्र-चरक-सुश्रुत-शाकुनिक-वसन्तराजप्रभृति ग्रन्थों से सामयिक उपयोगी विविध उत्पातादि विषयों का संग्रह कर नामानुरूप 'अद्भुतसागर' नामक ग्रन्थरत्न को बनाया।

वल्लालसेन का वंशपरिचय एवं समय

अद्भुतसागर के रचयिता वल्लालसेनदेव ने अपने जन्मकाल का उल्लेख नहीं किया है; परन्तु इनके राज्याभिषेक का समय १०८२ शकाब्द और ग्रन्थारम्भ शकाब्द १०९० बताया है। ग्रन्थारम्भ में लिखा है—

शाकेऽभ्रनवखेन्द्वा१०९०ब्द आरेभेऽद्भुतसागरम्।
गौडेन्द्रकुञ्जरालानस्तम्भबाहुर्महीपतिः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्रुवादिसप्तर्ष्यद्भुतावर्त्त में राज्याभिषेक-समय प्रदर्शित किया है—

भुजवसुदशमितशाके १०८२ श्रीमद्वल्लालसेनराज्यादौ।
वर्षैकषष्टि६७भोगो मुनिभिर्विहितो विशाखायाम्॥

राह्वद्भुतावर्त्त में भी ग्रन्थारम्भ के सम्बन्ध में प्रमाण मिलता है—

अथाद्भुतसागरारम्भशकाब्दात् पर्वेश्वरगणनम्—
खनवदशो१०९०नशकाब्दा द्विगुणाः कार्या खावुदग्गोले।
सशरा५ याम्येऽजाद्याः पर्वेशाः सप्तभिः शिष्टाः॥

रव्यादिवर्षाद्भुतावर्त्त में १०९० शकाब्द का उल्लेख है—

खनवदंन-१०९० शेषकाले माघप्रथमांशके सितोऽब्दपतिः।

संवत्सराद्भुतावर्त्त में भी चर्चा आयी है—

खनववियदिन्दु-१०९०हीना।

इस प्रकार ग्रन्थारम्भ शक द्वारा बृहस्पत्यद्भुतावर्त्त में षष्ट्यब्दानयन किया गया है—

अथाद्भुतसागरारम्भशकाब्दात् षष्ट्यब्दयुगगणनम्—
खनवदशोन-१०९०-शकाब्दात् षड्गुणितात् पुनः कृताब्धि-४४गुणात्।
षट्त्रिगुणाश्वि-२३३६-समेतादयुतत्रय-३००००-लब्धयुतो गताब्दगणः॥

तस्मादिषुभिर्लब्धानि पञ्चयुक्तानि सूर्य-१२-शिष्टानि।
वृत्तानि वैष्णवादीन्यधःप्रविष्टस्य वर्षाणि॥

परन्तु इस विशालतम ग्रन्थ के पूरा होने के पूर्व ही उन्होंने दीक्षापर्व के अवसर पर अपने सुयोग्य पुत्र श्री लक्ष्मणसेन का राज्याभिषेक करके इस ग्रन्थ को पूरा करने का भार भी सौंप दिया। तत्पश्चात् श्रीमद्वल्लालसेनदेव सांसारिक माया-मोह से विरक्त होकर अनेक प्रकार के दानादि कर्म करके अपनी स्त्री के साथ स्वर्गलोक चले गये। इसके प्रमाण भी ग्रन्थारम्भ में ही प्राप्त हैं—

ग्रन्थेऽस्मिन्नसमाप्त एव तनये साम्राज्यलक्ष्मीं मुदा
दीक्षापर्वणि दक्षिणे निजकृतेर्निष्पत्तिमस्थापयत्।
नानादानतिलाम्बुसंवलनभं सूर्यात्मजासङ्गमं
गङ्गायां विरचय्य निर्जरपुरं भार्यानुयातो गतः॥

श्रीमल्लक्ष्मणसेनभूपतिरतिश्लाघ्यो यदुद्योगतो
निष्पन्नोऽद्भुतसागरः कृतिरसौ वल्लालभूमीभुजः।
ख्यातः केवलमर्णवः सगरजस्तातस्य तत्पूरण-
प्रावीण्येन भगीरथेन भुवनेष्वद्यापि विद्योतते॥

परन्तु म. म. पं. सुधाकर द्विवेदी ने अपने गणकतरङ्गिणी में श्रीवल्लालसेनदेव के पिता का नाम श्री लक्ष्मणसेन लिखा है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'अयं मिथिलामण्डलमहीमहेन्द्रस्य श्रीलक्ष्मणसेनाभिधस्य तनयो मिथिला-महाराजाधिराजः स्वयमेव खनवदशमिते १०९० शाके निजराज्याभिषेकतोऽष्टवर्षा-नन्तरं बहुविशेषसहितं संहितारूपं वस्तुतोऽद्भुतरूपमद्भुतसागराख्यं ग्रन्थमकरोत् ।'

'भारतीय ज्योतिष' नामक इतिहासकार स्व. डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री ने भी अपने ग्रन्थ में श्रीमद्वल्लालसेन को मिथिला के महाराज श्री लक्ष्मण सेन का पुत्र बताया है।

मिथिला के सुप्रसिद्ध कवि विद्यापति ठक्कुररचित पुरुषपरीक्षण-नीतिग्रन्थस्थ नृत्यविद्या एवं दक्षिणनायिका नामक आख्यायिकाओं के अवलोकन से प्रमाणित होता है कि शाके १०९० संवत् १२२५ सन् ११६८ ईस्वी में गौड देश में लक्ष्मणपुरी में श्री लक्ष्मणसेनदेव ने अपना राज्याभिषेक कराया। नृत्यविद्या नामक आख्यायिका में चर्चित उमापति नामक मन्त्री श्री लक्ष्मणसेन की सभा के पञ्चरत्नों में से एक थे—

ख्यातो गोवर्धनाचार्य उमापतिधरस्तथा।
शरणो जयदेवश्च धोयीकविनृपः क्रमात् ॥
राज्ञो लक्ष्मणसेनस्य पञ्चरत्नानि संसदि।

इनके पिता श्रीमद्वल्लालसेनदेव के पराक्रमवर्णन के प्रसंग में अद्भुतसागर में लिखा है—

गौडेन्द्रकुञ्जरालानस्तम्भबाहुर्महीपतिः ।

तथा पुरुषपरीक्षा में भी 'बभूण गौडदेशे लक्ष्मणसेनो नाम राजा' इत्यादि लिखा है। इसे सम्प्रति मालवा (माड़वार) प्रदेश नहीं समझना चाहिये; क्योंकि स्कन्दपुराण के अनुसार पञ्चगौडब्राह्मणाधिष्ठित देश वंगप्रदेश से विन्ध्य पर्वत के उत्तर भाग तक गौड देश है—

वङ्गदेशं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे।
गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्याविशारदः ॥

आधुनिक वेदाङ्ग-विद्वानों द्वारा इनके नाम के 'सेन' शब्द को देखकर इन्हें वङ्गवासी माना जाता है।

आर्यासप्तशतीकार गोवर्धनाचार्य मैथिल थे और उनके शिष्य न्यायकुसुमाञ्जली ग्रन्थ के रचयिता उदयनाचार्य भी मैथिल पण्डित थे। आर्यासप्तशती से यह स्पष्ट होता है।

मिथिला के हावीडीह नामक प्रसिद्ध स्थान के देवीसिंहासन प्रस्तर पर उल्लिखित पद्य में भी लक्ष्मण संवत् का उल्लेख है—

अब्दे नेत्रशारणङ्कपक्ष-२१२-गदिते श्रीलक्ष्मणक्ष्मापते-
र्मासि श्रावणसंज्ञके मुनितिथौ स्वात्यां गुरौ शोभने।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हावी-पट्टनसंज्ञके सुविदिते हैहट्टदेवी शिवा
कर्मादित्यसुमन्त्रिणेह विहिता सौभाग्यदेव्याज्ञया ॥

इस प्रकार मिथिला की प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में ल. सं. = लक्षणसेन संवत् (जिसका आरम्भ माघ कृष्ण प्रतिपदा से होता है, सम्प्रति मिथिलादेशीय पञ्चाङ्गों में लक्ष्मण संवत् ८९५-९६) उल्लिखित है। उक्त प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट है कि गौड देशान्तर्गत मिथिला के रहने के कारण व्यापक दृष्टि से ही गौड देश के राजा के रूप में इन्हें बताया गया है।

सम्पूर्ण अद्भुतसागर को दिव्यान्तरिक्षभौमोत्पातों की दृष्टि से दिव्याश्रय, अन्तरिक्षाश्रय और भौमाश्रय—इन तीन भागों में बाँटा गया है। इसमें अध्याय का नाम अद्भुतावर्त्त रक्खा गया है। दिव्याश्रय में १५ अद्भुतावर्त्त हैं। अन्तरिक्षाश्रय में १८ और भौमाश्रय में ३९ अद्भुतावर्त्त हैं।

पृथ्वी पर स्थित समस्त चराचर वस्तु या प्राणियों से सम्बन्धित भूकम्प, जलाशयादि के विकारों को भौमाद्भुत कहा गया है। पृथ्वी से ऊपर आकाश में स्थित भू-वायु के अन्तर्गत अन्तरिक्ष में उत्पन्न होने वाले उल्का, दिग्दाह, सूर्य-चन्द्रादि के परिवेष, गन्धर्वनगर, वृष्टिविकारादि को आन्तरिक्षाद्भुत और अन्तरिक्ष से ऊपर दूर आकाश में स्थित सूर्यादि ग्रहों और नक्षत्रों के विकार, गति, स्थिति, आकृति आदि से उत्पन्न उत्पात को दिव्याद्भुत कहा गया है—

दिव्यान्तरिक्षं भौमं तु त्रिविधं परिकीर्त्तितम्।
ग्रहर्क्षविकृतं दिव्यमान्तरिक्षं निबोध मे ॥
उल्कापातो दिशां दाहः परिवेषस्तथैव च।
गन्धर्वनगरञ्चैव वृष्टेश्च विकृतिस्तु या ॥
एवमादीनि लोकेऽस्मिन्नान्तरिक्षं विनिर्दिशेत्।
चरस्थिरभवो भौमो भूकम्पश्चापि भूमिजः ॥
जलाशयानां वैकृत्यं भौमं तदपि कीर्त्तितम्।

ग्रन्थ में जिनके मतों को उद्धृत किया गया है, उनका नामोल्लेख भी ग्रन्थ के आदि में ही किया गया है। इसमें गर्ग, वृद्धगर्ग, पराशर, वसिष्ठ, गार्गीय, वार्हस्पत्य, बृहस्पति, कठश्रुति, ब्रह्मसिद्धान्त (ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त), आथर्वणाद्भुत, अशित, देवल, भार्गवीय, विजवाय, काश्यप, नारद, मयूरचित्र, चरक, यवनेश्वर, वराहमिहिर के सभी ग्रन्थ (बृहत्संहिता, योगयात्रा, वटकणिका, मयूरचित्र, पञ्चसिद्धान्तिका, बृहद्यात्रा, लघुयात्रा, बृहज्जातक, समाससंहिता, लघुजातक आदि), वसन्तराजशाकुन, अनेक पुराण, महाभारतादि अनेक ग्रन्थों से समस्त अद्भुतों को लेकर क्रमबद्धता-पूर्वक सन्निवेश किया गया है।

इस ग्रन्थ के समक्ष वराहमिहिरलिखित बृहत्संहिता भी छोटी हो जाती है; क्योंकि बृहत्संहिता की अपेक्षा इस ग्रन्थ में बहुत से विषय एवं प्रमाणों का संग्रह किया गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस ग्रन्थ के अवलोकन से ज्योतिष संहिता-ज्ञान के साथ इतिहास की बातों की जानकारी भी होती है। पराशर के वचन गद्यों और पद्यों में मिलते हैं। इस प्रकार के ग्रन्थरत्न का निर्माण कर श्रीमद्वल्लालसेनदेव एवं उनके पुत्र श्रीलक्ष्मणदेव ने मानव-क़ल्याण का उत्कृष्ट कार्य किया है। यह ग्रन्थ कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय सहित अन्यत्र भी आचार्य पाठ्यक्रम में निर्धारित है। परन्तु यह ग्रन्थ संवत् १९६२ ईस्वी सन् १९०५ में काशी स्थित प्राभाकरी यन्त्रालय से आज से एक सौ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था; फलतः दुर्लभ हो गया है। इस ग्रन्थ की दुर्लभता एवं मूल श्लोकों एवं गद्यों के कठिन होने के कारण जनसाधारण के उपकारार्थ मैंने सुबोध हिन्दी टीका की है। आशा है, विद्वज्जन हिन्दी टीकायुक्त इस अनुपम ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध का अवलोकन कर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे। भगवान् विश्वनाथ की सत्कृपा से यथाशीघ्र उत्तरार्द्ध की हिन्दी टीका करके प्रकाशित कराने का प्रयत्न करूँगा।

इस कार्य हेतु सर्वप्रथम मैं अपने परम पूज्य पिता स्वर्गीय शोभराम झा एवं परम पूज्यनीया माता श्रीमती सिया देवी को प्रणाम करता हूँ, जिनके आशीर्वाद से ही यह सम्भव हो सका है। अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सीता झा को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने ग्रन्थादि लेखन-हेतु यथायोग्य सहयोग के साथ हमेशा उत्साहवर्धन किया है।

काशी के सुप्रसिद्ध चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन संस्थान के अध्यक्ष श्रीमान् बाबू नवनीत दास गुप्तजी ने तत्परतापूर्वक अपने व्यय से इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया है; एतदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में विनम्रतापूर्वक करबद्ध प्रार्थना है कि मेरी अल्पज्ञता एवं अनवधानतावश यदि कहीं अस्पष्टता दिखाई दे अथवा मुद्रण-दोषजन्य त्रुटि रह गई हो तो पक्षपात-रहित बुद्धि से पण्डितगण उसे सुधार कर मुझे भी सूचित करने की कृपा करेंगे; जिसे अग्रिम संस्करण में संशोधित कर उन सहृदयों के समक्ष उपस्थापित कर सकूँ। कहा भी गया है—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

संवत् २०६२ — विदुषां वशंवदः

गंगादशहरा — **विद्यावाचस्पति डॉ० शिवाकान्त झा**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आवर्त्तानुक्रमणी

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
उपोद्घातः	१-६	परिवेषाद्भुतावर्त्तः	४६७-४८६
दिव्याश्रय १७-४५९		इन्द्रधनुरद्भुतावर्त्तः	४८७-४९६
सूर्याद्भुतावर्त्तः	१९-५१	रश्मिदण्डाद्भुतावर्त्तः	४९७-४९८
चन्द्राद्भुतावर्त्तः	५२-९२	गन्धर्वनगराद्भुतावर्त्तः	४९९-५०३
राहोरद्भुतावर्त्तः	९३-१६०	निर्घाताद्भुतावर्त्तः	५०४-५०८
मङ्गलाद्भुतावर्त्तः	१६१-१७४	सन्ध्याद्भुतावर्त्तः	५०९-५१५
बुधाद्भुतावर्त्तः	१७५-१८६	सन्ध्याकालिकरविकिरणाद्-भुतावर्त्तः	५१६-५१८
बृहस्पत्यद्भुतावर्त्तः	१८७-२१३		
भार्गवाद्भुतावर्त्तः	२१४-२३५	दिग्दाहाद्भुतावर्त्तः	५१९-५२२
शनैश्चराद्भुतावर्त्तः	२३६-२५२	छायाद्भुतावर्त्तः	५२३-५२४
केत्वद्भुतावर्त्तः	२५३-३३०	तमोधूमरजोनीहाराद्भुतावर्त्तः	५२५-५२८
ध्रुवाद्यद्भुतावर्त्तः	३३१-३३९	उल्काद्भुतावर्त्तः	५२९-५७२
ग्रहयुद्धाद्यद्भुतावर्त्तः	३४०-३६२	विद्युदद्भुतावर्त्तः	५७३-५७८
आकृत्यादियोगाद्भुतावर्त्तः	३६३-३७५	वाताद्भुतावर्त्तः	५७९-५८५
रव्यादिवर्षाद्भुतावर्त्तः	३७६-३८६	मेघाद्भुतावर्त्तः	५८६-५९७
संवत्सराद्भुतावर्त्तः	३८७-३८८	मेघानां गर्भाद्भुतावर्त्तः	५९८-६०८
ऋक्षाद्यद्भुतावर्त्तः	३८९-४५९	प्रवर्षणाद्भुतावर्त्तः	६०९-६१५
अन्तरिक्षाश्रयः ४६०-६२६		अतिवृष्ट्याद्यद्भुतावर्त्तः	६१६-६२५
प्रतिसूर्याद्भुतावर्त्तः	४६३-४६६	कबन्धाद्भुतावर्त्तः	६२६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अकाराद्यनुक्रमेण विषयानुक्रमणी

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अ	
अगस्त्यवर्णफलम्	३३२
अगस्त्यसप्तर्षिध्रुवाशुभलक्षणम्	३३७
अगस्त्याद्भुतपाकः	३३९
अगस्त्याद्भुतशान्तिः	३३८
अगस्त्योत्पातफलम्	३३२
अगस्त्योदयः	३३१
अग्निकेतूदयः	३१२
अजवीथी	७९,४०९
अतिवृष्टिफलपाकः	६२५
अतिवृष्टौ विशेषः	६१७
अतिवृष्ट्यद्भुतशान्तिः	६२४
अदृश्यकेतुलक्षणम्	३०६
अद्भुतनिरूपणम्	७
अद्भुतफलपाकस्थाननिर्देशः	१५
अद्भुतफलपाकस्थानानि	१५
अद्भुतसागरारम्भात् षर्वेशगणना	१०१
अद्भुतसागरारम्भात् पष्ट्यब्द-युगगणना	२११
अनुक्तफलदिव्याद्भुतफलपाकः	३७१
अनुराधापीडाफलम्	४०२
अन्तरिक्षाश्रयः	४६३
अपर्वग्रहणम्	१४६
अपां वत्सतारास्थानम्	८२
अभिजित्पीडाफलम्	४०४
अभिषेकदेशजातिनक्षत्र-पीडाशान्तिः	४४६
अमरशिखकेतूदयः	२९०
अमावस्यायां केतूदयः	२८९
अयनक्रमः	२४
अयनपरीक्षणम्	२५
अर्धरात्र्यादावुल्कापातफलम्	५६३
अर्धोदयास्तग्रहणफलम्	१३४
अशनिपातफलम्	५६६
अशनिलक्षणम्	५३१
अशनेराश्रयविशेषे पातफलम्	५५८
अशुभसन्ध्यालक्षणम्	५१०
अशुभसूचककेतुलक्षणम्	२५४
अशुभसूचकचन्द्रः	५४
अशुभसूचकपरिवेषः	४७३
अशुभसूचकभार्गवः	२१६
अशुभसूचकवातलक्षणम्	५७९
अशुभसूचकशनिलक्षणम्	२३८
अशुभसूचकागस्त्यलक्षणम्	३३१
अशुभसूचकेन्द्रधनुर्लक्षणम्	४८९
अशुभाः सन्ध्याकालिकरविकिरणाः	५१६
अश्विनीपीडाफलम्	४०७
अस्तमयादिपरिभाषा	३४६
अस्थिवृष्टिः	६२
आ	
आकृतयो ग्रहाणाम्	३६१
आकृतिफलं ग्रहाणां नक्षत्रविशेषेषु	३६७
आकृतिविशेषेषु ग्रहणां फलविशेषः	३६३
आकृत्यादियोगाद्भुतावर्त्तः	३६३
आकृत्याद्युत्पातशान्तिः	३७१
आक्रन्दादिलक्षणम्	३६१
आग्नेयमण्डलग्रहणम्	१५०
आग्नेयीदिग्देशाः	४२२
आग्नेय्यां प्रधानदिग्देशाः	४२३
आदित्यजाः केतवः	२७७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
आन्तरिक्षोत्पातः	१०
आर्द्रापीडाफलम्	३९८
आवर्त्तकेतुलक्षणम्	३१२
आवर्त्तकेतूदयः	३११
आश्लेषापीडाफलम्	३९९
आषाढशुक्लचतुर्थी-पञ्चम्योर्विशेषः	५८८
आषाढिकरोहिणीयुक्ते चन्द्रे. वातविचारः	५८६
आषाढिकरोहिणीयोगे विशेषः	७९
आषाढिकस्यातियुक्ते चन्द्रे वातविचारः	५८६
आषाढीपूर्णिमायां वातविशेषः	५८३
इ	
इन्द्रधनुरद्धुतावर्त्तः	४८७
इन्द्रधनुरुत्पातशान्तिः	४९२
इन्द्रधनुर्दिक्फलम्	४८९
इन्द्रधनुर्वर्णफलम्	४८९
इन्द्रधनुर्विशेषफलम्	४९१
इन्द्रधनुःफलपाकः	४९६
इन्द्रधनुःसमयफलम्	४९२
इन्द्रधनुःस्थानविकारः	४९१
इन्द्रधनुःस्वरूपम्	४८७
उ	
उत्तरदिक्प्रधानदेशाः	४३४
उत्तरदिग्देशाः	४३१
उत्तरफल्गुनापीडाफलम्	४००
उत्तरभाद्रपदपीडाफलम्	४०७
उत्तराषाढापीडाफलम्	४०४
उत्पातफलदिङ्नियमो नक्षत्रतः	४१७
उत्पातफलविवेकः	११
उत्पातविवेकः	८
उत्पातविशेषेषु शान्तिविशेषः	१४

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
उत्पातशमनम्	११
उत्पातोत्पत्तिः	९
उदगादिनक्षत्रमार्गाः	४१४
उदगादिमार्गेषु ग्रहोदयास्तफलम्	४१४
उदयकालिकप्रतिसूर्यविकारः	४६६
उदये रविवर्णफलम्	३०
उदितग्रहणविकृतिः	१३५
उभयपक्षीयग्रहणफलम्	१४४
उभयपक्षीयग्रहणे मासभेदे फलम्	१४५
उल्काकारफलानि	५३५
उल्काद्भुतावर्त्तः	५२९
उल्कापाते दिक्फलम्	५४८
उल्काभिहतशिखकेतुफलम्	३२०
उल्काया अधोमुखं पतितायाः वर्णतः फलम्	५४६
उल्काया अधोमुखं पतितायाः फलम्	५४६
उल्काया आश्रयविशेषे पातफलम्	५५८
उल्कायाः सूर्यमण्डलात् पतितायाः फलम्	५५०
उल्कारूपान्तराणि	५३४
उल्कालक्षणम्	५३३
उल्कास्वरूपम्	५२९
उल्कोत्पातशान्तिः	५६०
ऊ	
ऊर्म्यादिकेतूदये विशेषः	३०१
ऋ	
ऋक्षदर्शने फलम्	३९१
ऋक्षाद्यद्भुतावर्त्तः	३९१
ऋतुक्रमे शुभवर्णफलम्	२८
ऋतुक्रमेऽशुभवर्णफलम्	२८
ऋतुक्रमः	२६
ऋतुव्यवस्था	२७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
ऋषभवीथी	४०९
ऐ	
ऐरावती वीथी	४०९
ऐशानीदिक्प्रधानदेशाः	४३६
ऐशानीदिग्देशाः	४३४
क	
कन्याराशेर्द्रव्याणि	४५५
कपालकेतोरुदयलक्षणम्	२८८
कबन्धाद्भुतशान्तिः	६२६
कबन्धाद्भुतावर्त्तः	६२६
कम्पमाने सूर्यविम्बे फलम्	५०
कम्पमाने सूर्यविम्बे शान्ति	५०
करकादृष्टिः	६१८
कर्कराशेर्द्रव्याणि	४५४
कर्मर्क्षपीडाशान्तिः	४४३
कलिकेतुलक्षणम्	२९३
कालिकेतोरुदये पूर्वनिमित्तानि	२९३
कलिकेतोरुदयः	२९३
कलेर्गतवत्सराः	३८४
कुमुदकेतोरुदयलक्षणम्	२८७
कुम्भराशेर्द्रव्याणि	४५८
कूर्मदेशेषु राशिस्थितिः	४३६
कृत्तिकापीडाफलम्	३९६
केतव आदित्यजाः	२७७
केतव औद्दालिकाः	२७८
केतवश्चन्द्रजाः	२६३
केतवोऽग्निजाः	२६९
केतवो दिक्पुत्राः	२७६
केतवो दृश्याः	२८४
केतवोऽधर्मजाः	२७६
केतवो धूमकेतुजाः	२७४
केतवो नक्षत्रेषु	२५९
केतवो नाभसाः	२७९

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
केतवोऽनूरुजाः	२७५
केतवोऽन्तककोपजाः	२८४
केतवोऽन्ये	२६९
केतवोऽन्ये	२८०
केतवोऽन्ये आदित्यजाः	२८२
केतवोऽन्ये औद्दालिकाः	२८२
केतवोऽन्ये पैतामहाः	२८२
केतवोऽन्ये प्रजापतिजाः	२७५
केतवोऽन्ये ब्रह्मकोपजाः	२८४
केतवोऽन्येऽमृतजाः	२८३
केतवोऽन्ये मृत्युजाः	२८१
केतवोऽन्ये राहुजाः	२७६
केतवोऽन्ये रुद्रकोपजाः	२८२
केतवोऽन्ये वायुजाः	२७४
केतवो बुधजाः	२६४
केतवो बृहस्पतिजाः	२६५
केतवो ब्रह्मकोपजाः	२७८
केतवो ब्रह्मजाः	२७२
केतवो ब्रह्मराशिजाः	२७५
केतवो ब्रह्मसन्तानाः	२७३
केतवो भूमिजाः	२७३
केतवो भृगुजाः	२५५
केतवो भृगुमुनिजाः	२७४
केतवो भौमजाः	२६३
केतवो मारीचिकश्यपाः	२८३
केतवोऽमृतजाः	२७८
केतवो मृत्युजाः	२६८
केतवो मृत्युनिःश्वासजाः	२७७
केतवो रव्यादिग्रहमण्डलगताः	२७६
केतवो राहुजाः	२६७
केतवो रुद्रकोपजाः	२७८
केतवो वरुणजाः	२७०
केतवो वसन्तादिषु	२५७
केतवो वायुजाः	२७१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
केतवो विदिक्पुत्राः	२७३
केतवो विभावसुजाः	२८३
केतवो व्यालजाः	२७५
केतवोऽसंख्येयाः	३१९
केतवः कालजाः	२६८
केतवः पैतामहाः	२७८
केतवः प्रजापतिजाः	२७२
केतवः प्रजापतिहासजाः	२८३
केतवः शनैश्चरजाः	२६६
केतवः सूर्यजाः	२६२
केतुचक्रपरिवृतिः	३१४
केतुदर्शनतः फलपाकः	३२७
केतुरनियतगतिः	३१८
केतुवर्णफलम्	२५५
केतुशिरोदेशफलम्	३२६
केतुसहस्रम्	२६२
केतुस्त्रिविधः	३१८
केतुस्वामिकानि	२५४
केतूत्पातशान्तिः	३२८
केतूत्पातविशेषशान्तिः	३२८
केतूत्पाता विहितविशेषशान्तयः	३२८
केतूदये पूर्वनिमित्तानि	२५६
केतूनामदृश्यानां फलानि	२९०
केतूनामन्येषामुदयनिमित्तानि	२८५
केतूनामन्येषां फलानि	२८५
केतूनां फलनिर्णयः	२७९
केतूनां फलानि	२७९
केतोराकृतिफलम्	२५६
केत्वद्भुतावर्त्तः	२५३
केत्वभिहतग्रहफलम्	३२३
केत्वभिहतनक्षत्रफलम्	३२०
क्षुद्रजन्तुलक्षणम्	२९२
ग	
गजवीथी	४०९
गदाकेतूदयः	३१३
गन्धर्वनगरदिक्फलम्	५००
गन्धर्वनगरफलपाकः	५०३
गन्धर्वनगरफलम्	४९९
गन्धर्वनगरवर्णफलम्	४९९
गन्धर्वनगरसमयफलम्	५००
गन्धर्वनगराद्भुतावर्त्तः	४९९
गन्धर्वनगरोत्पातशान्तिः	५०३
गुरुविचारः	१८८
गोवीथी	४०९
ग्रन्थकर्त्तृप्रतापवर्णनम्	१
ग्रन्थप्रकाशकः	६
ग्रन्थारम्भशकाब्दवर्षाधिपानयनम्	३८५
ग्रन्थारम्भसमयः	६
ग्रस्तोदयास्तफलम्	१३३
ग्रहणनिर्मुक्तावद्भुतानि	१४४
ग्रहणसमयाद्ग्रहणफलम्	१४०
ग्रहणे खांशफलम्	१२९
ग्रहणे खांशविभागः	१२९
ग्रहणे ग्रासनामानि	११६
ग्रहणे ग्रासविशेषः	११६
ग्रहणे हीनातिरिक्तवेलाफलम्	१२९
ग्रहनक्षत्रादिपीडाकृदुल्काफलम्	५५०
ग्रहयुद्धप्रकारः	३४०
ग्रहयुद्धफलानि	३४२
ग्रहयुद्धाद्यद्भुतावर्त्तः	३४०
ग्रहयुद्धे जयपराजयलक्षणानि	३४२
ग्रहयुद्धे रव्यादीनां पराजयफलम्	३४५
ग्रहयुद्धोत्पातशान्तिः	३६२
ग्रहसमागमफलपाकदेशः	३७२
ग्रहसमागमफलम्	३६८
ग्रहसमागमे दिङ्नियमतः फलम्	३६८
ग्रहाणां नक्षत्रमार्गचारफलम्	४०८
ग्रहाणां प्रकृत्यादिविवेकः	२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
ग्रासे न्यूनाधिकतायां फलम्	१२१
च	
चतुर्दशी शान्तिः	५६७
चन्द्रपीडाकृदुल्काफलम्	५५२
चन्द्रपुत्राः केतवः	२६३
चन्द्रवर्णफलम्	५४
चन्द्रशृङ्गाभिमर्दनम्	८६
चन्द्रशृङ्गे भौमादिभिन्ने फलम्	८७
चन्द्रशृङ्गोन्नतिवासना	७२
चन्द्रसमागमः	७४
चन्द्रस्वामिकानि	५२
चन्द्रादिपर्वफलम्	९९
चन्द्राद्भुतपलपाकः	९२
चन्द्राद्भुतशान्तिः	९१
चन्द्राद्भुतावर्त्तः	५२
चन्द्रे उच्चनीचोदिते फलम्	५७
चन्द्रे कुजादिसव्यापसव्यगे फलम्	८३
चन्द्रे कुण्डम्	६५
चन्द्रे गणितागतप्रमाणान्न्यूनाधिके फलम्	५८
चन्द्रे दण्डः	६६
चन्द्रे दुष्टलाङ्गलसंस्थानम्	६२
चन्द्रे द्विमूर्त्तादौ फलम्	९०
चन्द्रे धनुःसंस्थानम्	६३
चन्द्रे नतोन्नतशृङ्गे फलम्	६९
चन्द्रे नीलमेघाद्यावृते फलम्	५७
चन्द्रे नौसंस्थानम्	५८
चन्द्रे पार्श्वशयनम्	६७
चन्द्रे मृदङ्गसंस्थानम्	६१
चन्द्रे युगम्	६७
चन्द्रे लक्ष्मविकृतिः	९१
चन्द्रे लाङ्गलसंस्थानम्	५९
चन्द्रे वज्रम्	६७

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
चन्द्रे वर्षाधिपे फलम्	३७७
चन्द्रेऽवाक्शिरोलक्षणम्	६५
चन्द्रेऽवाङ्मुखत्वम्	६४
चन्द्रे शकटसंस्थानम्	६५
चलकेतूदयलक्षणम्	२९७
चलकेतूदयः	२९६
चित्रापीडाफलम्	४०१
छ	
छायाऽदर्शने फलम्	५२३
छायाद्भुतावर्त्तः	५२३
छायाफलपाकः	५२४
छायाव्यञ्जकदिग्दाहफलम्	५२०
छायोत्पातशान्तिः	५२४
ज	
जन्मराशितः शुभानि ग्रहस्थानानि	४५०
जन्मराशिस्थचन्द्रादित्यग्रहणशान्तिः	१५१
जन्मर्क्षपीडाशान्तिः	४४२
जलकेतुलक्षणम्	३००
जलकेतोरमृतजस्योदयः	२९९
जारद्गवीवीथी	४०९
ज्येष्ठापीडाफलम्	४०२
त	
तमोदिक्फलम्	५२६
तमोधूमरजोनीहाराद्भुतावर्त्तः	५२५
तमोधूमाद्युत्पातफलपाकः	५२८
तमोधूमाद्युत्पातशान्तिः	५२८
तमोवर्णविकारः	५२६
तमःफलम्	५२५
तामसकीलकादिकेतवः	९०
ताराग्रहणपरिवेषफलम्	४८२
ताराफलपाकनिर्णयः	५७१
तारालक्षणम्	५३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
तुलराशेर्द्रव्याणि	४५६
तैलवृष्टिविकारः	६२२
त्रयोदशीग्रहणम्	१४७
त्रिविधाद्भुतम्	१०
त्वष्टृकृतग्रहणम्	१४८
त्वष्टृकृतमपर्वग्रहणम्	१५०
द	
दक्षिणदिग्देशाः	४२४
दक्षिणप्रधानदिग्देशाः	४२७
दिग्दाहदिक्फलम्	५२०
दिग्दाहफलपाकः	५२२
दिग्दाहवर्णफलम्	५१९
दिग्दाहशान्तिः	५२२
दिग्दाहस्वरूपम्	५१९
दिग्दाहाद्भुतावर्त्तः	५१९
दिग्देशनक्षत्रपीडाफलम्	४१४
दिवा तारादर्शने फलम्	४४८
दिवा बृहस्पतितारादर्शने फलम्	४४९
दिव्यादिकेतुफलविशेषः	३१९
दिव्योत्पातः	१०
देशर्क्षपीडाफलपाकः	४३८
देशर्क्षपीडाशान्तिः	४३६
द्वादशवर्षाण्यनावृष्टिः	३१
द्विचन्द्रफलम्	४०
द्विधाभूते सूर्ये विकारः	३९
द्विसूर्यफलम्	४०
द्व्यधिकसूर्यफलम्	४१
ध	
धनिष्ठापीडाफलम्	४०५
धनुर्मृगादिसूर्यफलम्	३७४
धनुराशेर्द्रव्याणि	४५७
धिष्ण्यालक्षणम्	५३०

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
धूमकेतुलक्षणम्	३१६
धूमकेतूदयः	३१६
धूमसंवर्त्तकेतुलक्षणम्	३१४
धूमसंवर्त्तकेतूदयः	३१३
धूलिवृष्टिः	६२१
ध्रुवाद्यद्भुतावर्त्तः	३३१
ध्रुवाशुभलक्षणम्	३३७
न	
नक्षत्रग्रहावरोधकपरिवेषविकारः	४७८
नक्षत्रतो दिग्देशाः	४१८
नक्षत्रतो देशविभागः	४१५
नक्षपीडाकृदुल्काविकारः	५५५
नक्षत्रमार्गतारोत्पातशान्तिः	४१४
नक्षत्रवर्गः	५५५
नक्षत्रविशेषे भूकम्पविशेषः	४७१
नक्षत्रविशेषेषूपहतेषु विकारः	५५३
नक्षत्रवीथयः	४०९
नक्षत्रोत्पातशान्तिः	४०८
नागरादिग्रहाः	३५८
नागवीथी	४०९
नाडीनक्षत्रपीडाफलम्	४४०
नाडीनक्षत्राणि	४३८
निर्घाततिथिफलम्	५०७
निर्घातदिक्फलम्	५०४
निर्घातनक्षत्रफलम्	५०७
निर्घातफलपाकः	५०८
निर्घातसमयफलम्	५०६
निर्घातस्वरूपम्	५०४
निर्घाताद्भुतावर्त्तः	५०४
निर्घातोत्पातशान्तिः	५०८
निष्प्रभसूर्यविकारः	३८
नैर्ऋतीदिग्देशाः	४२७
नैर्ऋतीप्रधानदिग्देशाः	४२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
प	
पञ्चभङ्गः	१५२
पद्मकेतुलक्षणम्	३०७
पद्मकेतोरमृतजस्य लक्षणम्	३०६
परिविष्टचन्द्रे इन्द्रधनुर्विकारः	४९४
परिवेषवर्णा दिक्पालकृताः	४६८
परिवेषविकारपाकः	४८६
परिवेषविशेषविकारः	४८३
परिवेषस्थभौमादिफलम्	४७९
परिवेषस्य वायुकृतस्य वर्णफलम्	४६९
परिवेषस्वरूपम्	४६७
परिवेषाद्भुतावर्त्तः	४६७
परिवेषे जन्मर्क्षादौ फलम्	४७८
परिवेषे द्वित्र्यादौ फलम्	४७७
परिवेषोत्पातशान्तिः	४८४
परिवेषो वायुकृतः	४६९
परिवेषो वृष्टिकरः	४७७
पश्चिमदिक्प्रधानदेशाः	४३०
पश्चिमदिग्देशाः	४२९
पांशुवृष्टिः	६२१
पीडितषड्नक्षत्राणि	४४८
पुनर्वसुपीडाफलम्	३९८
पुष्यपीडाफलम्	३९९
पूर्वदिग्देशाः	४२०
पूर्वप्रधानदिग्देशाः	४२२
पूर्वभाद्रपदपीडाफलम्	४०६
पूर्वाफाल्गुनीपीडाफलम्	४००
पूर्वाषाढापीडाफलम्	४०३
पौर्णमासीनक्षत्रतो ग्रहस्थितिः	२५३
प्रतिसूर्यवर्णफलम्	४६५
प्रतिसूर्याद्भुतावर्त्तः	४६३
प्रतिसूर्योत्पातफलपाकः	४६६
प्रतिसूर्योत्पातशान्तिः	४६५
प्रत्येकवीथीफलम्	४१३

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
प्रथमशान्तिः	४५
प्रभवादिसंवत्सरफलानि	२०४
प्रमाणर्षिवचनानि	३
प्रमाणसङ्केतः	४
प्रवर्षणशुभाशुभविचारकालः	६०९
प्रवर्षणाद्भुतावर्त्तः	६०९
प्रावृट्परीक्षणहेतुः	५९८
ब	
बार्हस्पत्याब्दफलम्	१९०
बार्हस्पत्ये द्वादशयुगानि	२०३
बुधजाः केतवः	२६४
बुधपीडाकृदुल्काफलम्	५५४
बुधवक्रफलम्	१८५
बुधस्य गतिचतुष्टयम्	१८०
बुधस्य गतिसप्तकम्	१८०
बुधस्य चारविशेषेण प्राकृतादिगतयः	१८३
बुधस्य नक्षत्रविशेषे चारफलम्	१७७
बुधस्याशुभगतिचतुष्टयम्	१८३
बुधस्वामिकानि	१७५
बुधाद्भुतफलपाकः	१८६
बुधाद्भुतशान्तिः	१८५
बुधाद्भुतावर्त्तः	१७५
बुधे वर्षाधिपे फलम्	३७९
बुधोदयदिनफलम्	१८५
बुधोदयास्तफलम्	१८४
बृहस्पतिचारेण मासनामानि तत्फलानि च	१९१
बृहस्पतिनक्षत्रचारफलम्	१८९
बृहस्पतिपीडाकृदुल्काफलम्	५५४
बृहस्पतिपुत्राः केतवः	२६५
बृहस्पतिराशिचारफलम्	१९०
बृहस्पतिवर्णफलम्	१८९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
बृहस्पतिस्वामिकानि	१८७
बृहस्पतौ वर्षाधिपे फलम्	३८१
बृहस्पत्यद्भुतावर्त्तः	१८७
बृहस्पत्युत्पातपाकः	२१३
बृहस्पत्युत्पातशान्तिः	२१३
भ	
भरणीपीडाफलम्	४०८
भवकेतुलक्षणम्	३०३
भवकेतोरमृतजस्योदयः	३०२
भार्गवजाः केतवः	२६६
भार्गवनक्षत्रचारफलम्	२१७
भार्गवपीडाकृदुल्काफलम्	५५५
भार्गवमण्डलफलानि	२२७
भार्गवमण्डलभेदः	२३३
भार्गवमण्डलानि	२२७
भार्गवामार्गः	२३३
भार्गववर्णफलम्	२१६
भार्गववीथीनिर्णयः	२२३
भार्गववीथीफलम्	२२६
भार्गवस्वामिकानि	२१४
भार्गवाद्भुतावर्त्तः	२१४
भार्गवोत्पातपाकः	२३५
भार्गवोत्पातशान्तिः	२३५
भार्गवोदयाद्वृष्टिः	२३५
भार्गवोदयास्तदिनानि	२३४
भार्गवोदयास्तफलम्	२३४
भूच्छायापरिमाणम्	१२७
भौमप्रकरणम्	१६१
भौमादीनां बुधादिभिः पराजयफलम्	३४७
भौमे वर्षाधिपे फलम्	३७८
भौमोत्पातपाकः	१०
म	
मकरराशिफलम्	४५७
मकरराशेर्द्रव्याणि	४५७
मघापीडाफलम्	४००
मङ्गलचारफलम्	१६४
मङ्गलचारफलं नक्षत्रविशेषेषु	१६४
मङ्गलवक्त्रफलपाकः	१७१
मङ्गलवक्त्राणि	१६६
मङ्गलवर्णफलम्	१६४
मङ्गलस्वामिकानि	१६२
मङ्गलाचरणम्	१
मङ्गलाद्भुतपाकः	१७४
मङ्गलाद्भुतशान्तिः	१७४
मङ्गलाद्भुतावर्त्तः	१६१
मङ्गलोदयवक्त्रादिषु फलम्	१७१
मणिकेतोर्दर्शने विकारः	२९२
मध्याह्ने उल्काफलम्	५६३
मध्याह्ने शुक्रदर्शने फलम्	४५०
मस्तकगतेऽर्के शुक्रदर्शने फलम्	४५०
मानसर्क्षपीडाशान्तिः	४४५
मासाद्यधिपाः	३८५
मासाधिपादिफलम्	३८४
मांसवृष्टिः	६२१
मिथुनराशेर्द्रव्याणि	४५३
मिलितनक्षत्रताराणां पीडाफलम्	३९६
मीनराशेर्द्रव्याणि	४५९
मुनिवाचकानां ताराणां स्थितिः	३३७
मूलपीडाफलम्	४०३
मृगवीथी	४०९
मृगशिरःपीडाफलम्	३९९
मृत्तिकाहरणस्थानानि	४४६
मेघगर्जनफलम्	५८७
मेघगर्भधारणकालः	६०६
मेघगर्भनिषेकः	६००
मेघगर्भपोषणविचारः	६०५
मेघगर्भहानियोगः	६०४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मेघगर्भाद्भुतावर्त्तः	५९८
मेघगर्भे निमित्तानि	६००
मेघगर्भे समयविचारः	५९८
मेघगर्भोत्पातशान्तिः	६०८
मेघदिक्फलम्	५८८
मेघवर्णफलम्	५८७
मेघवृक्षादिफलम्	५९०
मेघसंस्थानानि	५८९
मेघाद्भुतावर्त्तः	५८६
मेघोत्पातफलपाकः	५९७
मेघोत्पातशान्तिः	५९४
मेघोत्पाता विहितविशेषशान्तयः	५९५
मेषराशेर्द्रव्याणि	४५२
मोक्षलक्षणं ग्रहणे	१३६
य	
योगोत्पातशान्तिः	३७५
र	
रविप्रकरणम्	१९
रविरश्मिवर्णतः फलम्	३१
रविं प्रविष्टासु तारासु फलम्	३७०
रवेरुदगादिषु प्रतिसूर्यफलम्	४६३
रवौ वर्षाधिपे फलम्	३७६
रव्यादिमण्डलगताः केतवः	२७६
रव्यादिवर्षाद्भुतावर्त्तः	३७६
रव्यादिषु वर्षाधिपेषु फलम्	३७६
रश्मिकेतूदयः	३११
रश्मिदण्डफलम्	४९७
रश्मिदण्डशान्तिः	४९७
रश्मिदण्डाद्भुतावर्त्तः	४९७
रात्रित्रियामदृष्टकेतोः फलम्	२९६
रात्रीन्द्रधनुर्दिक्फलम्	४९४
रात्रीन्द्रधनुर्वर्णफलम्	४८९
रात्रीन्द्रधनुषि विशेषः	४९५

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
रात्रौ ताराऽदर्शने फलम्	४४८
राशितो दिग्देशपीडाफलम्	४३६
राश्यद्भुतशान्तिः	४५९
राश्यद्भुतानि	४५०
राहुग्रहणे विसंवादः	१५५
राहुग्रहणे सिद्धान्तः	१५७
राहुदिक्फलम्	११४
राहुनक्षत्रफलम्	११२
राहुपुत्राः केतवः	२६७
राहुमासफलम्	१०२
राहुराशिफलम्	११०
राहुराशिस्थिते कुजादौ फलम्	१२६
राहुवर्णफलम्	१२२
राहुस्वामिकानि	९८
राहूत्पातशान्तयः	१४६,१४९
राहूत्पाता विहितविशेषशान्तयः	१४६
राहोरद्भुतावर्त्तः	९३
राहोः स्वाभाविकाः वर्णाः	१२६
राह्वदर्शने फलम्	१०१
रेवतीपीडाफलम्	४०७
रोहिणीपीडाफलम्	३९७
रोहिणीशकटभेदे फलम्	३८९
ल	
लोकवादाः	४३६
व	
वज्रपातफलम्	५६६
वज्रपातशान्तिः	५६८
वत्सरावयवेषु नक्षत्रेषु पापाक्रान्तेषु फलम्	३८९
वर्षाकाले धूलिवृष्टौ फलम्	६२५
वर्षाधिपानयनम्	३८४
वर्षाधिपेऽशुभे शान्तिः	३८६
वल्लालसेनराज्यादिः	३३३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
वसाकेतुलक्षणानि	२८५
वातदिक्फलम्	५८१
वातसमयफलम्	५८२
वाताद्भुतावर्त्तः	५७९
वातोत्पातफलपाकः	५८४
वातोत्पातशान्तिः	५८४
वायव्यदिक्प्रधानदेशाः	४३१
वायव्यदिग्देशाः	४३०
वायव्यमण्डलग्रहणम्	१५०
विद्युदद्भुतावर्त्तः	५७३
विद्युदुत्पातफलपाकः	५७८
विद्युदुत्पातशान्तिः	५७७
विद्युद्दिग्वर्णफलम्	५७३
विद्युल्लक्षणम्	५३२
विशाखापीडाफलम्	४०२
विषयविभागः	४
विहितविशेषशान्तय उल्का-द्युत्पाताः	५६०
वीथीविचारफलम्	४१२
वृश्चिकराशेर्द्रव्याणि	४५६
वृश्चिकस्थसूर्यतः फलम्	३७१
वृषराशेर्द्रव्याणि	४५३
वृष्टिनियतदेशाः	६११
वृष्टिप्रमाणम्	६०९
वृष्ट्युत्पातशान्तिः	६१५
वैनाशिकर्क्षपीडाशान्तिः	४४५
वैश्वानरवीथी	७८
श	
शङ्खकेतोरमृतजस्योदयः	२९५
शतभिषापीडाफलम्	४०६
शनिनक्षत्रचारफलम्	२३९
शनिनक्षत्रचारविशेषफलम्	२४९
शनिपीडाकृदुल्काफलम्	५५३
शनिमार्गफलम्	२४९
शनिवक्रफलम्	२५१
शनिवर्णफलम्	२३८
शनैश्चरस्वामिकानि	२३६
शनैश्चराद्भुतशान्तिः	२५२
शनैश्चराद्भुतावर्त्तः	२३६
शनैश्चरे वर्षाधिपे फलम्	३८३
शनैश्चरोत्पातपाकः	२५२
शन्युदयास्तफलम्	२४९
शुक्रप्रकरणम्	२१४
शुक्रे वर्षाधिपे फलम्	३८१
शुभकृद्ग्रहलक्षणम्	२१
शुभसूचककेतुलक्षणम्	२५३
शुभसूचकदिग्दाहलक्षणम्	५१९
शुभसूचकपरिवेषलक्षणम्	४७३
शुभसूचकप्रतिसूर्यलक्षणम्	४६३
शुभसूचकबुधलक्षणम्	१७५
शुभसूचकबृहस्पतिलक्षणम्	१८७
शुभसूचकभार्गवलक्षणम्	२१४
शुभसूचकमङ्गलफलम्	१६१
शुभसूचकराहुलक्षणम्	९७
शुभसूचकवातलक्षणम्	५७९
शुभसूचकविद्युल्लक्षणम्	५७३
शुभसूचकशनिलक्षणम्	२३६
शुभसूचकश्चन्द्रः	५२
शुभसूचकसन्ध्यालक्षणम्	५०९
शुभसूचकः सूर्यः	१९
शुभसूचकागस्त्यलक्षणम्	३३१
शुभसूचकेन्द्रधनुर्लक्षणम्	४८७
शुभाशुभमेघलक्षणम्	५८६
शुभाः सन्ध्याकालिकरविकिरणाः	५१६
शोणितादिवृष्टिः	६१९
श्रवणापीडाफलम्	४०५
श्वेतकेतुलक्षणम्	३०४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
श्वेतकेतूदयः	३०४
ष	
षण्मासमनावृष्टिः	३१
षष्ट्यब्दारम्भसमयः	२११
स	
सन्ध्याकालिकग्रहणफलम्	१३५
सन्ध्याकालिकप्रतिसूर्यफलम्	४६५
सन्ध्याकालिकरविकिरणफलपाकः	५१८
सन्ध्याकालिकरविकिरणाद्भुतावर्त्तः	५१६
सन्ध्याकालिकरविकिरणोत्पातशान्तिः	५१८
सन्ध्यादिषूल्कापातफलम्	५६५
सन्ध्याद्भुतावर्त्तः	५०९
सन्ध्यावर्णफलम्	५१२
सन्ध्यासमयः	५०९
सन्ध्योत्पातशान्तिः	५१३
सप्तदशी शान्तिः	५६८
सप्तमी शान्तिः	५०
सप्तर्षिचारः	३३३
सप्तर्षीणां सोत्पातानां फलम्	३३३
सप्तर्षीणां वर्गाः	३३४
सप्तर्ष्यद्भुतानि	३३३
समस्तदिनशुक्रदर्शने फलम्	४५०
सर्वबीजानि	४४७
संवत्सरनामानि	३८७
संवत्सरशुभाशुभविचारः	५७६
संत्सरादिगणना	३८८
संवत्सराद्भुतावर्त्तः	३८७
संवर्त्तकेतूदयलक्षणम्	३१५
सामान्यतो वर्णफलम्	२७
सामुदायिकर्क्षपीडाशान्तिः	४४४
सांघातिकर्क्षपीडाशान्तिः	४४३
सिकतावृष्टिः	६२२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सूर्यग्रहणनिमित्तम्	९५
सूर्यचन्द्रग्रहणनिमित्तान्तराणि	९३
सूर्यचन्द्रग्रहणनिमित्तानि	९३
सूर्यमण्डले घटादिनिभे फलम्	३९
सूर्यरश्मिविचारः	३२
सूर्यविम्बे कृष्णरेखाफलम्	४६
सूर्यविम्बे छिद्रः	४६
सूर्यविम्बे तामसकीलकादिदर्शने फलम्	३२
सूर्यविम्बे तामसकीलकादिदर्शने भाव्युत्पातः	४९
सूर्यविम्बे ध्वाङ्क्षादिदर्शने विशेषतः फलम्	३४
सूर्यविम्बोत्पातविशेषः	३२
सूर्यस्य ग्रस्तोदयास्ते विशेषः	१३४
सूर्यस्य मध्याह्नस्थस्योत्पातः	४४
सूर्यः शुभवर्णकः	२८
सूर्याद्भुतफलपाकः	५१
सूर्याद्भुतशान्तिः	४३
सूर्याद्भुतानि	१९
सूर्योत्पाते विशेषशान्तिः	४५
सूर्योत्पातो विशेषशान्तिकः	४३
सूर्योदयास्ताद्भुतानि	४२
सूर्योऽशुभवर्णकः	२८
सोमप्रकरणम्	५२
स्वधिकेतुफलम्	३११
स्वधिकेतुलक्षणम्	३०८
स्वधिकेतूदयः	३०८
स्वातीपीडाफलम्	४०२
स्वात्याषाढयोगः	८२
ह	
हस्तपीडाफलम्	४०१
ह्रस्वमण्डले रवौ फलम्	३८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीमद्बल्लालसेनदेवप्रणीतः

अद्भुदसागरः

उपोद्घातः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

।। श्रीः ।।

श्रीमद्बल्लालसेनदेवप्रणीतः

अद्भुतसागरः

भाषाटीकासहितः

उपोद्घातः

अथ मङ्गलाचरणम्

आवृत्तानागतातीतसूक्ष्मसाक्षात्प्रदर्शनम् ।
परं ज्योतिरिवानन्तं ज्यौतिषं तदुपास्महे ॥

वर्त्तमान, भविष्य और भूतकालिक (समस्त) सूक्ष्म विषयों को साक्षात् (प्रत्यक्ष रूप में) प्रदर्शित करने वाले उस ज्योतिष (ज्यौतिषशास्त्र) की मैं उपासना करता हूँ, जो असाधारण ज्योतिःस्वरूप (परब्रह्म) के समान अनन्त है।

अथ ग्रन्थकर्त्तृवंशपराक्रमवर्णनम्

नृपकोटिकिरीटरोचिरंशुस्नपनप्रांशुनखांशुमञ्जरीकैः ।
चरणैर्धरणीं प्रसाधयन्तो वियदोजोऽधिकमासतेन्दुवंश्याः ॥

भुजातेजस्तेषामियमसहमानेव वसुधा
द्विधा भावं-भावं नवशकलभावं गतवती ।
यशोलेपानां तद्विलसितमहो नेयमभवद्
विदीर्णब्रह्माण्डस्थविरपिठरीकर्परपुटेः ॥

भुवः काञ्चीलीलाचतुरचतुरम्भोधिलहरी-
परीताया भर्त्ताऽजनि विजयसेनः शशिकुले ।
यदीयैरद्यापि प्रचितभुजतेजःसहचरै-
र्यशोभिः शोभन्ते परिधिपरिणीता इव दिशः ॥

वेदायनैकपथिकः ककुभां भुजङ्गः सङ्ग्रामरङ्ग इव जङ्गमतामुपेतः ।
चेतोमहौषधिनवेशवशाहितश्रीर्वल्लालसेन इतिभूमिपतिस्ततोऽभूत् ॥

---

१. श्लोकोऽयं पूर्वापरार्धसङ्गत्या कोष्ठान्तर्गतपदसंरक्षणेनालङ्कृतः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किं लक्ष्म्या तुलयामि कातरशतं पान्त्या नृणां तं सुरं
लक्षाप्याजिविचुम्बितां स सकलां धत्ते सुदोस्सम्पदम् ।
यस्याङ्घ्रिः पतिभैक्ष्यकाकुविलुठद्विद्वेषिनारीशिरः-
सिन्दूरोत्करमुद्रितो जनलिपिर्निर्मुक्तियन्त्रं द्विषाम् ॥

मन्दारोदयसेवितोऽपि न गिरिभ्रान्त्याऽतिभूतः क्वचिद्
व्यक्तग्राहविचेष्टितोऽपि विततो नक्षत्रवीथीबलैः ।
आपत्त्राणपरायणक्षितिभृतां तुङ्गैरनङ्गीकृतः
सर्वत्राद्भुतसागरोऽवनिभृता तेनायमारभ्यते ॥

मीमांसालयमांसलस्मृतिपरामर्षप्रकर्षस्फुरद्
वेदाङ्गागमतत्त्वनिस्तुषमतिर्निःशङ्कपृथ्वीपतिम् ।
युक्तायुक्तनिरूपणप्रणयिनं प्रीत्या महीनाथनं
वंशोत्तंसमहार्घरत्ननिलयश्रीः श्रीनिवासं व्यधात् ॥

ज्योतिर्विदार्यवचनानि विचार्य तेषां तात्पर्यपर्यवसितो ग्रथनानुपूर्व्या ।
विप्रप्रसादनवशादवसादबुद्धिर्निःशङ्कशङ्करनृपः कुरुते प्रयत्नम् ॥

करोड़ों राजाओं के शिरोमुकुट के सुशोभित किरणों के प्रक्षालन से (मुकुटधारी राजाओं के द्वारा नतमस्तक होकर प्रणाम करने से) उन्नत (अत्यन्त प्रकाशित) नखों के किरण-समूहरूपी मञ्जरी वाले चरणों से पृथ्वी को सुशोभित करने वाले चन्द्रवंशी राजा लोग आकाशीय तेजःपुञ्ज से भी अधिक तेज (बल) वाले हुए हैं।

उन चन्द्रवंशी राजाओं के भुजबल को सहन नहीं कर पाने से ही शायद यह पृथिवी दो-दो भागों में विभक्त होती हुई नौ भागों (नवद्वीप के रूप या नौ कूर्मविभाग के रूप) में बँट गयी है। अहो ! उनके यशोलेप (भुजबल-यश के प्रभाव) से वे (नव खण्ड) विकसित हो गये और उनके अतुलित प्रभाव को सहन नहीं कर पाने से यह पृथ्वी विदीर्ण (फटे हुए) ब्रह्माण्ड-कटाहरूपी पुराने वर्त्तन के कपाल (वर्त्तन के नीचे का भाग) की तरह हो गयी है।

करधनी (डँरकस) की लीला से युक्त स्त्री की तरह, चारो समुद्रों की लहररूपी करधनी-लीला से युक्त पृथिवी के स्वामी के रूप में राजा विजयसेन चन्द्रवंश में उत्पन्न हुए। उनकी भुजाओं के अतिशय तेजों (प्रभावों) के साथ-साथ चलने वाले यशों से आज भी दिशायें परिधि-परिणीता की तरह सुशोभित हैं अर्थात् राजा विजयसेन ने अपने यश और तेज से सभी दिशाओं का परिधिपर्यन्त पाणिग्रहण (अधिकार) कर लिया हो, ऐसा आभास आज तक हो रहा है।

तत्पश्चात् उनसे राजा वल्लालसेन उत्पन्न हुए, जो वेदरूपी मार्ग के पथिक और दिशाओं के श्रेष्ठ (स्वामी) थे। युद्धभूमि ही जैसे इस राजा के रूप में जंगम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(चलायमान) हो गयी हो और समस्त शोभाओं से युक्त नवीन ईश (स्वामी) के रूप में सकल अहितों (शत्रुओं) की लक्ष्मी को अपने वश में कर लिया हो, ऐसा प्रतीत होता था अर्थात् ये वल्लालसेन वेद में निष्णात, पराक्रमी योद्धा और समस्त पृथ्वी पर राज्य करने वाले राजा हुए।

सैकड़ों कायरों का पालन करने वाली लक्ष्मी से उस नरदेव (वल्लालसेन) की तुलना क्या करूँ ? क्योंकि लाखों लोगों से युक्त संग्राम में सन्नद्ध सकल बाहुसम्पत्ति (बल) वाले वे (राजा वल्लालसेन) हुए हैं; जिनके चरण अपने पति को भिक्षा के रूप में पाने हेतु काकुपूर्वक (भय के कारण विकृत स्वर से गिड़गिड़ाती-रोती-विलखती हुई) लोटती हुई शत्रुओं की स्त्रियों के मस्तक की सिन्दूरराशि से चिह्नित हो गये हैं और वह सिन्दूरचिह्न लोकप्रचलित लिपि एवं शत्रुओं के निर्मुक्ति यन्त्र (पति को छुड़ाने के लिए भूमि पर लिखी गयी अल्पना = ऐपन = अड़िपन) के रूप में प्रसिद्ध हो गया— ऐसी सम्भावना की जाती है।

यह मन्द (शनि) और आर (मङ्गल) के उदयादि निरूपण से रहने पर भी, मन्दार नामक पर्वत के भ्रम से कहीं भी ओझल नहीं हो सका है। ग्राह (गोह या ग्रह) सम्बन्धी चेष्टाओं (गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले अद्भुतों) के व्यक्त (स्पष्ट) रहने पर भी यह (अद्भुतसागर) नक्षत्रों की वीथियों (गलियों) के बल (आधिक्य) से व्याप्त है। तात्पर्य यह है कि ग्राह पृथ्वी पर, जल में एवं ग्रह आकाश में स्थित नक्षत्रवीथीमार्गानुसार भ्रमण करते हैं। परन्तु इस ग्रन्थ में दोनों एकत्र हैं अर्थात् पृथ्वी से आकाश तक के सकल अद्भुतों के वर्णन हैं। यह विपत्ति से छुटकारा देने में पूर्ण समर्थ राजाओं या पर्वतों के शीर्षस्थानीय (सर्वोच्च) से भी अधीनस्थ नहीं किया जा सकने वाला है, ऐसे अद्भुतसागर नामक ग्रन्थ का आरम्भ राजा वल्लालसेन करते हैं।

मीमांसा के प्राङ्गण में पुष्ट, स्मृतिवचनों के विवेचन के उत्कर्ष से प्रकाशित, वेद-वेदाङ्ग और आगम के तत्त्वों के ज्ञान से निष्कलुष बुद्धि वाले, बहुमूल्य रत्नों के निलय को लक्ष्मी के समान, उत्तम कुलोत्पन्न प्रकण्ड विद्वान् गुरु ने प्रीतिपूर्वक, समस्त विषयों के युक्तायुक्त के निरूपण को चाहने वाले, नि:शङ्कशङ्कर की उपाधि से विभूषित श्रीमद्वल्लालसेनदेव राजाधिराज ने लक्ष्मी-निवास को सरस्वती-निवास बना दिया।

आर्य ज्योतिर्विदों के वचनों को विचार कर (अनुशीलन कर), उन्हें तात्पर्य से परिपूरित करते हुए क्रमश: ग्रन्थ के रूप में (विषयानुसार) निबद्ध करने हेतु विप्र-प्रसादन से लब्ध विकसित बुद्धि वाले 'नि:शङ्कशङ्कर' उपाधि वाले राजा (वल्लालसेन) अद्भुतसागर नामक ग्रन्थ बनाने का प्रयत्न करते हैं।

अथ प्रमाणार्षिवचनानि

ग्रन्थेऽत्र वृद्धगर्गगर्गपराशरवशिष्ठगार्गीयान्।
बार्हस्पत्यबृहस्पतिकठश्रुतिब्रह्मसिद्धान्तान् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आथर्वणाद्भुताशितषट्त्रिंशद्ब्रह्मर्षिकृतीः ।
गार्गीयमतौशनसे कालावलिसूर्यसिद्धान्तौ ॥

विन्ध्यवासि-वदरायणोशनःशालिहोत्रविधुगुप्त[१]सुश्रुतान् ।
पीलुकार्यनृपपुत्रदेवलान् भार्गवीयबिजवायकाश्यपान् ॥

नारदमयूरचित्रे चरकं यवनेश्वरस्य मतम् ।
निखिलं वराहमिहिराचार्यग्रन्थं वसन्तराजकृतिम् ॥

मार्कण्डेयपुराणं स्कान्दं भागवतमाद्यमाग्नेयम् ।
पाद्मं मत्स्यपुराणं रामायणभारताख्याने ॥

हरिवंशविष्णुधर्मोत्तरे निबन्धं चरिष्यमाणं च ।
वचनं तेषां सारान् बहुशोऽथान्वीक्ष्य सोऽद्राक्षीत् ॥

इस ग्रन्थ में वृद्धगर्ग, गर्ग, पराशर, वसिष्ठ, गार्गीय, बार्हस्पत्य, बृहस्पति, कठश्रुति, ब्रह्मसिद्धान्त (ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त), आथर्वणाद्भुत, अशित, छत्तीस ब्रह्मर्षियों की कृतियों, गार्गीयमत, औशनस, कालावलि, दोनों सूर्यसिद्धान्त (प्रचलित सूर्यसिद्धान्त और पञ्चसिद्धान्तिकोक्त सूर्यसिद्धान्त), विन्ध्यवासी, वादरायण, उशना, शालिहोत्र, विधुगुप्त (विष्णुगुप्त), सुश्रुत, पीलुकार्य, नृपपुत्र, देवल, भार्गवीय, बिजवाय, काश्यप, नारद, मयूरचित्र, चरक, यवनेश्वर, वराहमिहिराचार्य के सभी ग्रन्थ (बृहत्संहिता, योगयात्रा, वटकणिका, मयूरचित्र, पञ्चसिद्धान्तिका, बृहद्यात्रा, लघुयात्रा, बृहज्जातक, समाससंहिता, लघुजातक आदि), वसन्तराजशाकुन, मार्कण्डेयपुराण, स्कन्दपुराण, श्रीमद्भागवत, अग्निपुराण, पद्मपुराण, मत्स्यपुराण, वाल्मीकिरामायण, महाभारत, हरिवंश, विष्णुधर्मोत्तर आदि अनेक ग्रन्थों का बहुत परिश्रम से बार-बार अध्ययन करके उनके सारवचनों को लेकर क्रमबद्धता करके वल्लालसेन ने सुसज्जित किया है।

अथ प्रमाणसङ्केतः

विषमपदत्वाच्छतशो विरुद्धवचनार्थभेदपरिशुद्धिः ।
पुनरुक्तिलिखनतोऽस्मिन् बहुशो बहुसम्मतिर्ग्राह्या ॥

वल्लालसेन ने पुनरुक्ति और पुनर्लेखन दोष के कारण इन प्रमाण-वचनों में सैकड़ों जगह विषम पद तथा विरुद्धवचनार्थभेद को देखा और उनकी परिशुद्धि करके इसमें लिखा है। इसलिए पुनः पुनः बहुत विद्वान् लोगों की सम्मति ग्रहण करनी चाहिये अर्थात् बहुमत फलादेश ही ग्रहण करने योग्य है।

अथ विषयविभागकथनम्

अद्भुतलक्षणमद्भुतविषयविवेकोत्पत्तिहेतुम् ।
अभिधायादावद्भुतफलपाकस्थाननिर्देशम् ॥

---

१. विष्णुगुप्त इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिव्याश्रयेऽत्र रविशशिराहुमहीनन्दनेन्दुतनयानाम् ।
सुरगुरुभार्गवभानुजकेतुध्रुवकुम्भसम्भवाद्यानाम् ॥
ग्रहयुद्धाकृतियोगाद्यादित्याद्यब्दवत्सरर्क्षाणाम् ।
अद्भुतशान्तीर्वक्ष्यत्यावर्त्तैः पञ्चदशभिः सः ॥
प्रतिरविपरिधिसुरधनुर्भादण्डाकाशनगराणाम् ।
निर्घातसन्ध्ययोर्दिग्दाहच्छायान्धकारधूमानाम् ॥
रेणोर्नीहारोल्काविद्युन्मरुदभ्रजलदगर्भाणाम् ।
वृष्ट्यतिवृष्टिकबन्धप्रभृतीनामद्भुतानि सह शान्त्या ॥
नाभसमाश्रयमध्यममभिघाताऽष्टादशावर्त्तैः ।
पतिभैक्ष्यकाकुविलुठद्वैरिवधूवाष्पधौताङ्घ्रिः ॥
भूकम्पजलाशययोर्वह्नेर्दीपसुरशक्रकेतूनाम् ।
क्षितिरुहलताफलकुसुमशस्यान्नव्यञ्जनादीनाम् ॥
गेहोपस्करवस्त्रोपानच्छयनासनास्त्रनगराणाम् ।
दिव्यस्त्रीनरदर्शनमानुषपिटकोदयादीनाम् ॥
स्वप्नैकरिष्टदन्तप्राणिप्रसवादिसकलशकुनानाम् ।
नानामृगविहगादेर्गजस्य तुरगस्य वृषभस्य ॥
मूषिकशत्रोः सरमासमुद्भवानां शृगालस्य ।
पल्ल्याः पिपीलिकायाः खञ्जनकस्याथ पोतक्याः ॥
एवं मेचवपेचकध्वाङ्क्षाणां चाद्भुतानि सह शान्त्या ।
भौमाश्रयमभिवक्ता त्र्यधिकैः षट्त्रिंशदावर्त्तैः ॥
अथ दिव्यदिव्यनाभसनाभसभौमान्तरिक्षभौमाख्यान् ।
दिव्यान्तरिक्षभौमाभिधानसौमिश्रकोत्पातान् ॥
आवर्त्तैरभिघाता मिश्रकमध्याश्रयं षड्भिः ॥

आरम्भ में अद्भुतलक्षण, विषय-विभाग (दिव्यान्तरिक्ष-भौमसम्बन्धी) एवं अद्भुतों की उत्पत्ति के कारण और अद्भुतों के फलपाक-स्थान का निरूपण करके दिव्याश्रय में सूर्याद्भुतावर्त्त, चन्द्राद्भुतावर्त्त, राहोरद्भुतावर्त्त, मङ्गलाद्भुतावर्त्त, बृहस्पत्यद्भुतावर्त्त, भार्गवाद्भुतावर्त्त, शनैश्चराद्भुतावर्त्त, केत्वद्भुतावर्त्त, अगस्त्यसप्तर्षिध्रुवाद्यद्भुतावर्त्त (अगस्त्यसप्तर्ष्यद्भुतावर्त्त और ध्रुवाद्यद्भुतावर्त्त), ग्रहयुद्धाद्यद्भुतावर्त्त, आकृत्यादि-योगाद्भुतावर्त्त, रव्यादिवर्षाद्भुतावर्त्त, संवत्सराद्भुतावर्त्त और ऋक्षाद्यद्भुतावर्त्त आदि पन्द्रह आवर्त्त हैं। इनमें अद्भुतों और उन अद्भुतों की शान्तिविधियाँ भी वल्लालसेन कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्यम नाभस आश्रय (अन्तरिक्षाश्रय) में प्रतिसूर्याद्भुतावर्त्त, परिधि (पारिवेषाद्भुतावर्त्त), इन्द्रधनुरद्भुतावर्त्त, रश्मिदण्डाद्भुतावर्त्त, गन्धर्वनगराद्भुतावर्त, निर्घाताद्भुतावर्त्त, सन्ध्याद्भुतावर्त्त (तथा सन्ध्याकालिकरविकिरणाद्भुतावर्त्त), दिग्दाहाद्भुतावर्त्त, छायाद्भुतावर्त्त, तमोधूमरेणुनीहाराद्भुतावर्त्त, उल्काद्भुतावर्त्त, विद्युदद्भुतावर्त्त, वाताद्भुतावर्त्त, मेघाद्भुतावर्त्त, मेघानां गर्भाद्भुतावर्त्त, प्रवर्षणाद्भुतावर्त्त, अतिवृष्ट्यद्भुतावर्त्त और कबन्धाद्भुतावर्त्त— ये अट्ठारह आवर्त्त हैं। इन आवर्त्तों में प्रतिसूर्यादि अद्भुत और उनकी शान्तिविधियाँ हैं।

अपने-अपने पति को भिक्षा के रूप में माँगने वाली, भय के कारण विकृत स्वर से (गिड़गिड़ाती हुई, रोती-बिलखती हुई) लोटती हुई (गिरती हुई) शत्रुओं की स्त्रियों के वाष्प (आँसू) से प्रक्षालित पाँव वाले महाराजाधिराज श्री वल्लालसेन भौमाश्रय में भूमिकम्पाद्भुतावर्त्त, जलाशयाद्भुतावर्त्त, अग्न्यद्भुतावर्त्त, दीपाद्भुतावर्त्त, देवप्रतिमाद्भुतावर्त्त, शक्रध्वजाद्भुतावर्त्त, वृक्षाद्यद्भुतावर्त्त, गृहाद्यद्भुतावर्त्त, वातजोपस्कराद्यद्भुतावर्त्त, वस्त्रोपानहासनाद्यद्भुतावर्त्त, अस्त्राद्भुतावर्त्त, पुराद्भुतावर्त्त, दीव्यस्त्रीपुरुषदर्शनाद्भुतावर्त्त, मानुषाद्भुतावर्त्त, पिटकाद्भुतावर्त्त, स्वप्नाद्भुतावर्त्त, कायरिष्टाद्भुतावर्त्त, दन्तजन्याद्भुतावर्त्त, प्रसवाद्भुतावर्त्त, सर्वशाकुनाद्भुतावर्त्त, नानामृगविहगाद्भुतावर्त्त, गजाद्भुतावर्त्त, अश्वाद्भुतावर्त्त, वृषमहिषाद्भुतावर्त्त, विडालाद्भुतावर्त्त, शुनकाद्भुतावर्त्त, शृगालाद्भुतावर्त्त, गृहगोधिकाद्भुतावर्त्त, पिपीलिकापतङ्गमक्षिकमशकलूताभ्रमरभेकाद्भुतावर्त्त, पोतक्यद्भुतावर्त्त, कृष्णपेचिकाद्भुतावर्त्त और वायसाद्भुतावर्त्त शान्तिसहित अद्भुतों के इन तैंतीस आवर्त्तों के अभिवक्ता हैं। परन्तु उपलब्ध ग्रन्थ में 'त्र्यधिकैः षट्त्रिंशदावर्त्तैः' यह पाठ उपलब्ध होता है, जिसकी संगति ग्रन्थान्तर्गत आवर्त्त-विभागों से नहीं हो पाती है। अतः 'त्र्यधिकैश्च त्रिंशदावर्त्तैः' संशोधित रूप है। इन आवर्त्तों के कथन के पश्चात् मिश्रकाद्भुतावर्त्त, अद्भुतशान्त्यद्भुतावर्त्त, सद्योवर्षणाद्भुतावर्त्त, अविरुद्धाद्भुतावर्त्त और पाकसमयाद्भुतावर्त्त— ये पाँच आवर्त्त ग्रन्थान्त में वर्णित हैं, जिनमें यहाँ लेखक द्वारा 'मिश्रमध्याश्रयं षड्भिः' की चर्चा की गयी है।

मिश्रकाश्रय में दिव्यमिश्रक, दिव्यनाभसमिश्रक, नाभसमिश्रक, भौममिश्रक, नाभसभौममिश्रक और दिव्यान्तरिक्षभौममिश्रक— इन छः आवर्त्तों (मिश्रकाद्भुतावर्त्त) के अभिवक्ता वल्लालसेन हैं।

भौमाश्रय के तैंतीस और मिश्रकाश्रय के छः आवर्त्तों को मिलाने से 'त्र्यधिकैः षट्त्रिंशदावर्त्तैः' की संगति होती है। इनके अतिरिक्त उक्त शान्त्यद्भुतावर्त्त, सद्योवर्षणाद्भुतावर्त्त, अविरुद्धाद्भुतावर्त्त और पाकसमयाद्भुतावर्त्त— ये चार आवर्त्त ग्रन्थ के अन्त में उपलब्ध होते हैं; जिनकी चर्चा यहाँ नहीं की गई है।

अथ ग्रन्थारम्भसमयः

शाकेऽभ्रनवखेन्द्वा१०९०ब्द्य आरेभेऽद्भुतसागरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गौडेन्द्रकुञ्जरालानस्तम्भबाहुर्महीपतिः ॥

ग्रन्थेऽस्मिन्नसमाप्त एव तनये साम्राज्यलक्ष्मीं मुदा
दीक्षापर्वणि दक्षिणे निजकृतेर्निष्पत्तिमस्थापयत् ।

नानादानतिलाम्बुसंवलनभं सूर्यात्मजासङ्गमं
गङ्गायां विरचय्य निर्जरपुरं भार्यानुयातो गतः ॥

श्रीमल्लक्ष्मणसेनभूपतिरतिश्लाघ्यो यदुद्योगतो
निष्पन्नोऽद्भुतसागरः कृतिरसौ वल्लालभूमीभुजः ।

ख्यातः केवलमर्णवः सगरजस्तातस्य तत्पूरण-
प्रावीण्येन भगीरथेन भुवनेष्वद्यापि विद्योतते ॥

गौड़देशीय राजारूपी कुञ्जरों (हाथियों) के आलान-स्तम्भ (हाथियों को बाँधने का खम्भा) के समान भुजा वाले राजा (वल्लालसेन) ने शकाब्द १०९० में 'अद्भुतसागर' नामक ग्रन्थ का निर्माण करना प्रारम्भ किया।

परन्तु इस ग्रन्थ के पूर्ण होने के पूर्व ही उन्होंने पवित्र दीक्षापर्व के अवसर पर प्रीतिपूर्वक अपनी साम्राज्यलक्ष्मी (राज्यभार) और अपनी कृति (अद्भुतसागर) की निष्पत्ति (पूर्ण करने का दायित्व) पुत्र [१]लक्ष्मणसेन में स्थापित कर दिया। अर्थात् अपने पुत्र लक्ष्मणसेन का राज्याभिषेक करके इस ग्रन्थ को पूरा करने का भार भी सौंप दिया। तत्पश्चात् अनेक प्रकार के दानादि तिल-जल द्वारा करके गंगा में यमुना का संगम बनाकर (नाना दान करने से अतिशय तिल और जल के मिश्रण से यमुना जल की तरह काला वर्ण का जल हो गया और गंगाजल में उसके मिलने से संगम के जल के रूप में बन गया) पत्नी के साथ स्वर्गलोग सिधार गये।

लक्ष्मणसेन अतिशय श्लाघ्य राजा हुए, जिनके उद्यम से यह कृति (अद्भुतसागर) पूर्ण हुई। जैसे सगर के पुत्र के द्वारा केवल सागर विख्यात हुआ और भगीरथ (सगर के वंशज) ने स्वर्ग से गंगावतरण करवाकर अपने पूर्वजों के अधूरे कार्य को पूर्ण किया, उसी प्रकार लक्ष्मणसेन ने अपने पिता के अपूर्ण ग्रन्थ को अतिशय प्रवीणतापूर्वक पूरा किया; जो आज भी सागर (गंगासागर) की तरह यह 'अद्भुतसागर' तीनों लोकों में प्रसिद्ध है।

अथाद्भुतत्यलक्षणम् १ तत्र वृद्धगर्गः

अभूतपूर्वं यत् पूर्वं यत् पूर्वं जायतेऽन्यथा ।
तदद्भुतमिति प्रोक्तं नैमित्तं स्यान्निमित्तजम् ॥

---

१. म. म. सुधाकर द्विवेदी ने गणकतरङ्गिणी में और नेमिचन्द्र शास्त्री ने भारतीय ज्योतिष में वल्लालसेन को लक्ष्मणसेन का पुत्र बताया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– एवं बार्हस्पत्येऽपि। अभूतपूर्वं यल्लोकस्य पूर्वं भवति पूर्वं च यदन्यथा भवति तदद्भुतम्। तच्च द्विविधम्— नैमित्तमनैमित्तं च। केतूदयादिना निमित्तेन यदद्भुतं जायते तन्नैमित्तम्। तच्छुभाशुभसूचकम्। इतरदनैमित्तम्। तच्च द्विविधम्— शुभसूचकमशुमसूचकञ्च। यदशुभसूचकं स उत्पातः।

अद्भुत वह है, जो घटना संसार में सर्वप्रथम आकाश, अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर देखी जाती हो अर्थात् अभूतपूर्व घटना जब सर्वप्रथम देखी जाती हो अथवा पहले ही जब अन्यथा अर्थात् प्रकृति के विपरीत दिखाई पड़ी हो। अद्भुत दो प्रकार के होते हैं— नैमित्तिक और अनैमित्तिक। नैमित्तिक अद्भुत वह है, जो केतु के उदय, उल्कापात, दिग्दाहादि-निमित्त से उत्पन्न होता है। वह अद्भुत शुभ और अशुभसूचक होते हैं। जो अद्भुत विना किसी निमित्त (पूर्वघटित केतु आदि के उदय) से उत्पन्न हो, उसे अनैमित्तिक अद्भुत कहते हैं। उसमें अशुभसूचक अद्भुत 'उत्पात' कहलाता है और शुभसूचक अद्भुत 'शुभ शकुन' कहलाता है।

यदुक्तं बार्हस्पत्ये

प्राग्विनाशाय सम्प्रोक्तो योऽत्रोत्पात इति स्मृतः।
उद्वेगकारि मर्त्यानां यदप्रीतिविवर्धनम्॥
अहितत्वादनिष्टत्वाच्छब्दाः पर्यायवाचकाः।

विशेषः– अतोऽन्यान्यशुभसूचकान्युत्पातेष्वन्तर्भवति। अतएवः 'यः प्रकृति-विपर्यासः प्रायः संक्षेपतः प्रोक्तः'। इह वटकणिकायां वराहेण प्रायःशब्दः प्रयुक्त इति।

मर्त्यों (भूवासियों) के विनाश करने वाले, उद्वेग करने वाले तथा अप्रसन्नता बढ़ाने वाले अद्भुत को ही उत्पात कहा गया है। अहितवाचक, अनिष्टवाचक आदि सभी शब्द उत्पात के पर्याचवाची हैं। इसीलिए वराहमिहिर ने प्रकृति की विपरीत परिस्थिति को ही संक्षेप में उत्पात कहा है।

अथोत्पातविवेकः; तत्र पराशरः

प्रकृतेर्भूतविकृतप्रादुर्भावाँश्चोत्पातमाचक्षते। तेषां
द्यौरन्तरिक्षं भूरेताश्चाश्रयः पञ्चमहाभूतानि योनिः।

प्रकृति के अन्तर्गत भूतों (पञ्चमहाभूतों) अथवा प्राणियों के विकार से उत्पन्न परिस्थितियों को उत्पात कहा जाता है। उनका (भूतों का) आश्रय अन्तरिक्ष से ऊपर आकाश, अन्तरिक्ष और पृथ्वी है एवं पञ्चमहाभूत (क्षिति, जल, अग्नि, आकाश और वायु) उत्पात की योनि (उत्पत्तिस्थान) है।

अतो गर्गः

प्रकृतेरन्यथोत्पातः संक्षेपस्तावदीदृशः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिविधः स तु विज्ञेयो दिव्यनाभसभूमिजः ॥

प्रकृति (स्वाभाविक स्थिति) से विपरीत को ही संक्षेप में उत्पात कहते हैं। वे दिव्य, आन्तरिक्ष और भौम— तीन प्रकार के होते हैं।

वटकणिकायाम्

यः प्रकृतिविपर्यासः प्रायः संक्षेपतः स उत्पातः ।
क्षितिगगनदिव्यजातो यथोत्तरं गुरुतरो भवति ॥

प्रकृति (स्वभाव) से विपरीत को ही प्राय: संक्षेप में उत्पात कहते हैं। भौम उत्पात (चलायमान वस्तु के स्थिर और स्थिर वस्तु के चलायामान होने) से आन्तरिक्ष (उल्का, निर्घात, विकारयुक्त वायुवृष्टि, चन्द्र-सूर्य का परिवेष, गन्धर्वनगर, इन्द्रधनुष, रोहत, ऐरावत, दण्ड और परिघ आदि से उत्पन्न उत्पात) और आन्तरिक्ष उत्पात से दिव्य (सूर्य आदि ग्रह और नक्षत्रों के विकारयुक्त होने से उत्पन्न) उत्पात क्रमशः उत्तरोत्तर गुरुतर (अधिक प्रभाव देने वाला) होता है।

आथर्वणाद्भुते

प्रकृतिविरुद्धमपीदं प्राक्प्रबोधाय देवाः सृजन्ति–इति ।

देवतागण मनुष्यों को पूर्वज्ञान के लिए प्रकृति (स्वभाव) के विरुद्ध (उत्पात) को उत्पन्न करते हैं।

अथोत्पातोत्पत्तिलक्षणम्

मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

पुरुषापचारान्नियतमपरज्यन्ति देवताः ।
ततोऽपरागाद्देवानामुपसर्गः प्रवर्त्तते ॥

मनुष्यों के अविनय (पापकर्म) से निश्चितरूपेण देवतागण अप्रसन्न होते हैं और देवताओं की अप्रसन्नता से उपद्रव (उत्पात) उत्पन्न होते हैं।

गर्गसंहितायां बार्हस्पत्ये च

अतिलोभादसत्याद्वा नास्तिक्याद्वाऽप्यधर्मतः ।
नरापचारान्नियतमुपसर्गः प्रजायते ॥

ततोऽपचारान्नियतमपरज्यन्ति देवताः ।
ताः सृजन्त्यद्भुतान् भावान् दिव्यनाभसभूमिजान् ॥

त एव त्रिविधा लोके उत्पाता देवनिर्मिताः ।
विचरन्ति विनाशाय रूपैः सम्बोधयन्ति च ॥

येषु शान्तिं प्रकुर्वन्ति न ते यान्ति पराभवम् ।
ये तु न प्रतिकुर्वन्ति क्रियया श्रद्धयाऽन्विताः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नास्तिक्याद्वा विमोहाद्वा विनशन्त्येव तेऽचिरात् ।

मनुष्यों के अतिलोभ से, असत्य बोलने से, नास्तिकता से (ईश्वर पर अविश्वास से), अधर्म करने से और अविनय से निश्चित ही उपद्रव होते हैं । मनुष्यों के अविनय से देवतागण अप्रसन्न होते हैं और वे दिव्य, आन्तरिक्ष एवं भौम अद्भुत को उत्पन्न करते हैं । वे ही तीनों उत्पात देवताओं द्वारा निर्मित होकर मनुष्यों के विनाश के लिए विचरण करते हैं और उत्पातरूप में उन उपद्रवों को देवतागण सूचित करते हैं । इन उत्पातों की शान्ति जो करते हैं, वे कष्ट नहीं पाते हैं और जो नास्तिकता एवं मतिभ्रम से कर्म और श्रद्धापूर्वक उपद्रव-निवारण के लिए शान्ति नहीं करते हैं, वे शीघ्र ही विनाश को प्राप्त करते हैं ।

अथ त्रिविधोत्पातविवेकः

मात्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

दिव्यान्तरिक्षं भौमं तु त्रिविधं परिकीर्त्तितम् ।
ग्रहर्क्षविकृतं दिव्यमान्तरिक्षं निबोध मे ॥

उल्कापातो दिशां दाहः परिवेषस्तथैव च ।
गन्धर्वनगरं चैव वृष्टेश्च विकृतिस्तु या ॥

एवमादीनि लोकेऽस्मिन्नान्तरिक्षं विनिर्दिशेत् ।
चरस्थिरभवो भौमो भूकम्पश्चापि भूमिजः ॥

जलाशयानां वैकृत्यं भौमं तदपि कीर्त्तितम् ।

दिव्य, आन्तरिक्ष और भौम— ये तीन प्रकार के उत्पात होते हैं । सूर्यादि ग्रह और नक्षत्रों के विकार (गति, स्थिति, आकृति आदि) से उत्पन्न को 'दिव्य'; उल्कापात, दिग्दाह, सूर्य-चन्द्र के परिवेष, गन्धर्वनगर, वर्षा के विकार (रक्तवृष्टि, पांशुवृष्टि, मेघों की आकृतिविशेष आदि) इत्यादि को 'आन्तरिक्ष' और पृथ्वी पर चलायमान वस्तु के स्थिर होने तथा स्थिर वस्तु के चल होने से भूकम्प, जलाशयों के विकार आदि को 'भौम' कहा गया है ।

गर्गसंहितागार्गीयबार्हस्पत्येषु च

स्वर्भानुकेतुनक्षत्रग्रहतारार्कचन्द्रजम् ।
दिवि चोत्पद्यते यच्च तद्दिव्यमिति कीर्त्तितम् ॥

वाय्वभ्रसन्ध्यादिग्दाहपरिवेषस्तमांसि च ।
खपुरं चेन्द्रचापं च तद्विद्यादन्तरिक्षजम् ॥

भूमावुत्पद्यते यच्च स्थावरे चाथ जङ्गमे ।
तदैकदेशिकं भौमं भूमिचालाम्बुविक्रिया ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– भौमाद्भुतस्य भूगोलोत्पन्नत्वात् सकलभूगोलगामिफलसूचकत्वप्रसक्तौ विशेष उक्तः । तदैकदेशिकमिति । यस्मिन् यस्याधिकारस्तत्रोत्पन्नं तस्यैव शुभाशुभसूचकमित्यर्थः ।

राहु, केतु, नक्षत्र, ग्रह, तारा, सूर्य और चन्द्रमा के विकार से महति दूर आकाश में जो उत्पन्न होते हैं, उसे 'दिव्य', वायु, मेघ, सन्ध्या, दिग्दाह, परिवेष, अन्धकार, गन्धर्वनगर, इन्द्रधनुष आदि जो अन्तरिक्ष अर्थात् पृथ्वी से ऊपर (भू-वायुगोल तक) में उत्पन्न होते हैं, वे 'आन्तरिक्ष' और पृथ्वी पर स्थावर-जङ्गम (चल-अचल), भूकम्प, जल की विकृति आदि 'भौम' उत्पात उत्पन्न होते हैं, जो एकदेशिक होते हैं अर्थात् भौम उत्पात का भूमि के सम्बन्ध से उत्पन्न होने के कारण समस्त भूमण्डल पर प्रभाव होना चाहिये, परन्तु जिस भूभाग पर भौम उत्पात होता है, वहीं के लोगों के लिए शुभाशुभ फलसूचक होता है ।

मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

भौमं चाल्पफलं ज्ञेयं चिरेण च विपच्यते ।
नाभसं मध्यफलदं मध्यकालफलप्रदम् ॥
दिव्यं तीव्रफलं ज्ञेयं शीघ्रकारि तथैव च ।

भौम उत्पात अधिक समय में अल्प शुभाशुभ फलदायक होता है । आन्तरिक्ष मध्य काल में मध्यम फल देने वाला होता है एवं दिव्य उत्पात शीघ्र ही तीव्र फलदायक होता है ।

वराहसंहितायाम्

भौमं चिरस्थिरभवं तच्छान्तिभिराहतं शममुपैति ।
नाभसमुपैति मृदुतां क्षरति न दिव्यं वदन्त्येके ॥

चिर-स्थिर वस्तु से उत्पन्न भौम उत्पात शान्ति से आहत होकर नष्ट हो जाता है । नाभस (आन्तरिक्ष) उत्पात शान्ति से कम हो जाता है और दिव्य उत्पात शान्ति से भी नष्ट नहीं होता है । यह किसी आचार्य का मत है ।

तथा च काश्यपः

भौमं शान्तिहतं नाशमुपगच्छति मर्दितुम् ।
नाभसं न शमं याति दिव्यमुत्पातदर्शनम् ॥

भौम उत्पात शान्ति से आहत होकर नाश हो जाता है, नाभस उत्पात कम हो जाता है और दिव्य उत्पात-दर्शन होने पर शान्ति से भी नष्ट नहीं होता है ।

बार्हस्पत्ये तु

तत्र भौमान्यरिष्टानि व्यावर्त्तन्ते प्रजागुणैः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सप्तरात्रात् पराहाद्वा वर्जयन्त्यप्यवर्षणात् ॥
व्रतहोमोपवासैश्च दानैः स्वस्त्ययनैस्तथा ।
आन्तरिक्षाण्यरिष्टानि व्यावर्त्तन्ते कथञ्चन ॥
अव्यावर्त्तान्यरिष्टानि दिव्यान्याहुर्मनीषिणः ।
बह्वन्नदक्षिणादानैर्महाहोमान् प्रयोजयेत् ॥
प्रशस्तानि च कुर्वीत देवब्राह्मणपूजनम् ।
हिरण्यानां विसर्गाश्च कर्त्तव्या ब्राह्मणेष्वथ ।
गोदोहश्च शमं याति दिव्योऽपीति मनीषिणः ॥

विशेषः– गोदोहश्च शिवायतनभूमौ कर्त्तव्यः ।

प्रजा के गुण से अर्थात् धर्माचरण से भौम अरिष्ट (उत्पातजन्य अशुभ फल) नष्ट हो जाते हैं अथवा भौम-उत्पात-दर्शन के अनन्तर सात रात्रि के भीतर यदि जलवृष्टि हो तो भौम-अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं। व्रत, हवन, उपवास, दान तथा मांगलिक कार्यों से आन्तरिक्ष अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं। मनीषियों ने दिव्य अरिष्टों को अव्यावर्त्त (नष्ट नहीं होने वाला) कहा है; परन्तु अत्यधिक अन्नदक्षिणादान, महाहोम, प्रशस्त कर्म (यज्ञादि), देवता और ब्राह्मणों को सुवर्णदान और (शिवमन्दिर में भूमि पर) गोदुग्ध-दोहन से दिव्य अरिष्ट भी सम्भवत: शान्त हो जाते हैं। ऐसा मनीषियों ने कहा है।

तथा च गार्गीयवराहसंहितयोः

दिव्यमपि शममुपैति प्रभूतकनकान्नगोमहीदानैः ।
रुद्रायतने भूमौ गोदोहात् कोटिहोमाच्च ॥

अधिक सुवर्ण, अन्न, गाय और पृथ्वी का दान करने से दिव्य उत्पात भी शान्त होता है, फिर आन्तरिक्ष और भौम उत्पात की तो बात ही क्या है ? अर्थात् वे दोनों तो शान्त होते ही हैं तथा शिवालय में भूमि पर गोदोहन और कोटि-संख्यक हवन करने से दिव्य उत्पात शान्त होता है।

भार्गवीये तु

सावित्र्या लक्षहोमं तु भौमेऽरिष्टे विशारदाः ।
कुर्युर्दैवं च दानं च विप्रेभ्यो यस्य यत्प्रियम् ॥
गोभूमिकाञ्चनाश्वानां रत्नानां धान्यवाससाम् ।
रथानां वारणानां च प्रदानं कामतः परम् ॥
तुष्येयुर्येन वा विप्राः सम्भवो यस्य यस्य हि ।
तत्तत् सर्वमुपादेयमेष दानविधिः स्मृतः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दद्यात्तु गुरवे ग्रामान् धेनुं वा गोयुगं तथा।
अलङ्कारैश्च सम्पूज्य प्रीणयेत् प्रीतमानसः॥

अनेन विधिना भौममद्भुतं शमयेद्गुरुः।
एष एव विधिर्ज्ञेयो वियत्यप्यद्भुताश्रये॥

विशेषोऽत्र तु सावित्र्या दशलक्षं तु होमयेत्।
होमं समाहितमनाः कुर्याच्च घृतकम्बलम्॥

धेनूनां द्वादश ज्ञेयं शतं निष्कसमायुतम्।
गुरवे दीयमानं तच्छमयेदम्बराद्भुतम्॥

दिव्याद्भुतेषु कर्त्तव्यः क्वचिद्धोमः समाहितैः।
गोसहस्रं तु दातव्यं गुरवे दक्षिणाविधौ॥

एष प्रोक्तो विधिः सम्यग्दिव्यारिष्टविपद्धरः।
सुभिक्षक्षेमसम्पत्त्या पूजनं पुष्टिवर्धनम्॥

भौम उत्पात की शान्ति के लिए सावित्री का लक्ष हवन करना चाहिये, देवकार्य करना चाहिये, ब्राह्मणों को प्रिय वस्तु का दान करना चाहिये। गाय, भूमि, सुवर्ण, घोड़ा, रत्न, धान्य, वस्त्र, रथ, हाथी, जिसे जो वस्तु सम्भव हो और जिन ब्राह्मणों को जितनी, जिस वस्तु की इच्छा हो, प्रसन्न कर प्रदान करना 'दानविधि' कही गयी है। गुरु की अनेक गाँव, एक या दो गाय तथा आभूषणों के साथ पूजा करके प्रसन्नतापूर्वक प्रणाम, आदर-सत्कार करना चाहिये। इस विधि से प्रसन्न गुरु भौम अद्भुत का नाश करते हैं।

यही विधि आन्तरिक्षाद्भुत की शान्ति के लिए भी कही गई है; परन्तु इसमें विशेषता यह है कि सावित्री का दस लाख हवन एकाग्रचित्त होकर करना चाहिये और घृत, कम्बल तथा १०० निष्क के साथ १२ गाय गुरु को देने से आन्तरिक्षाद्भुत शान्त हो जाता है।

दिव्य अद्भुतों की शान्ति के लिए कहीं एकाग्रचित्त होकर (सावित्री का) हवन कर दक्षिणा में १ हजार गाय गुरु को देना चाहिए। दिव्य अरिष्टजन्य कष्ट को हरने वाली शान्तिविधि यह है। इस तरह पूजन करने से सुभिक्ष, कल्याण और पुष्टिवर्धन होता है।

अल्पफलदिव्योत्पाते च कोटिहोमाशक्तावमृताख्या महाशान्तिः कर्त्तव्या;

यदुक्तं गार्गीये

प्रयतस्तेषु सर्वेषु दिव्येष्वद्भुतकेष्वपि।
महाशान्तिं बुधः कुर्यादमृतां विश्वभेषजम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सभी प्रकार के दिव्याद्भुतों के भी शमन के लिए विश्वभेषजरूपी अमृता नामक महाशान्ति विद्वान् को करनी चाहिये। अर्थात् इस महाशान्ति से दिव्य उत्पात के अशुभ फल भी दूर हो जाते हैं तो भौम और आन्तरिक्ष उत्पातों की तो बात ही क्या ? अर्थात् इस शान्ति से सभी प्रकार के अद्भुत शान्त हो जाते हैं।

बार्हस्पत्येऽथर्वस्मृतौ च

अद्भुतेष्वपि सर्वेषु त्रिविधेषु न संशयः।
दिव्यान्तरिक्षभौमेषु अमृता शंसिता बुधैः॥

सर्वाद्भुतप्रशमनीं सर्वविघ्नविनाशिनीम्।
शान्तिमेवामृतां कुर्यादायुरारोग्यवर्धनीम्॥

अमृतायाः प्रभावेण देवाश्चामर्त्त्यतां गताः।
तेनामृतां सदा कुर्याद्येनारोग्यमवाप्यते॥

दिव्यान्तरिक्षभौम— तीनों प्रकार के सभी अद्भुतों की शान्ति के लिए विद्वानों ने अमृता की अनुशंसा की है। यह शान्ति सभी प्रकार के अद्भुतों को नाश करने वाली, सभी विघ्नों का विनाश करने वाली और आयु तथा आरोग्य को बढ़ाने वाली है। इसलिए अमृता-शान्ति ही करनी चाहिये। अमृता के प्रभाव से देवतागण अमरत्व को प्राप्त किये हैं। इसलिए हमेशा अमृता शान्ति करनी चाहिये, जिससे आरोग्यता प्राप्त होती है।

मत्स्यपुराणे

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि त्रिविधेष्वद्भुतादिषु।
विशेषेण तु भौमस्य शान्तिः कार्याऽमृता भवेत्॥

अभया चान्तरिक्षेषु सौम्याऽऽदित्येषु पार्थिव।

इसके बाद तीनों प्रकार के सभी अद्भुतों की शान्ति की विधि बतलाता हूँ। विशेष रूप से भौम अद्भुत की शान्ति अमृता, आन्तरिक्ष अद्भुत के लिए अभया और दिव्य के लिए सौम्या शान्ति राजा को करनी चाहिये।

विष्णुधर्मोत्तरे

सर्वोत्पातप्रशमनी अमृता चाऽभया स्मृता।
सौम्या चैव महाशान्तिः सर्वकामफलप्रदा॥
विशेषेण तु भौमेषु शान्तिः कार्याऽमृता भवेत्।

विशेषः– सन्निहितपुष्यनक्षत्रप्राप्तौ पुण्याभिषेको कर्त्तव्यः।

सभी उत्पातों का नाश करने वाली अमृता और अभया शान्ति कही गई है और सौम्या शान्ति महाशान्ति है, जो सभी कामना-फलों को देने वाली है; परन्तु भौम उत्पात की शान्ति के लिए विशेषतः अमृता शान्ति करनी चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च वराहसंहितायाम्

नास्ति लोके स उत्पातो यो ह्यनेन न शाम्यति ।
मङ्गल्यं चापरं नास्ति यदस्मादतिरिच्यते ॥

संसार में ऐसा कोई उत्पात नहीं है, जिसका इस शान्ति से शमन नहीं होता हो और इससे बढ़कर कोई दूसरा मङ्गलकार्य भी नहीं है।

अथाद्भुतानां पाकस्थाननिर्देशः; तत्र पराशरः

नृपनृपतिसुतराज्ञीकोषलोकपुरपुरोहितवाहनेष्वेतेषां फलमतिनिवर्त्तते ।

इन दिव्यान्तरिक्षभौमाद्भुतों का फल राजा, राजपुत्र, रानी, खजाना, संसार, नगर, पुरोहित और वाहनों पर अधिकांशत: होता है।

मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

राज्ञः शरीरे लोके च पुरे दारपुरोहिते ।
पाकमायाति पुत्रेषु तथा वै कोषवाहने ॥

विशेषः– नृपादिपरं स्वाम्यादिपरं माण्डलिकगृहस्थादीनामपि फलदर्शनात् ।

इनका फल राजा के शरीर, संसार (प्रजा), नगर, रानी, राजपुरोहित, राजा के पुत्र, कोष और वाहन पर होता है।

यहाँ राजा से अभिप्राय यह है कि देश, मण्डल, नगर एवं घर के प्रधान इन फलों से प्रभावित होते हैं।

तथा च गर्गः

पुरे जनपदे कोषे वाहने च पुरोहिते ।
पुत्रे स्वामिनि भृत्ये च पच्यते दैवमष्टधा ॥

विशेषः– देवस्याष्टत्वाद्दैवम् ।

नगर, जनपद (गाँव), कोष, वाहन, पुरोहित, पुत्र, स्वामी और नौकर— इन आठों पर आठ देवों के द्वारा संसूचित उत्पातों का फल पड़ता है (पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-आकाश-सूर्य-चन्द्र-यजमानरूप आठ देवता का समष्टिरूप शिवमूर्त्ति (दैव) है)।

अथोत्पातफलपाकस्थानं वटकणिकायाम्

दिव्या जगतो देवस्य नाभसाः पार्थिवस्य भूप्रभवाः ।
अनुबध्नन्तो भयदस्त्र्यहाधिकश्चानिलश्चण्डः ॥

विशेषः– ननूक्तफलस्याद्भुतस्य कथमशुभाशुभत्वमवगन्तव्यम् । अवगतेऽनुष्ठानमुच्यते । तदभावे पुनरेषां न फलं ज्ञेयमिति ।

दिव्य उत्पात समस्त संसार के लिए, नाभस उत्पात देवगण के लिए और भौम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्पात राजा के लिए भयदायी होते हैं। तीन दिनों से अधिक तक प्रचण्ड वायु भी अशुभ फलदायी होता है।

उक्त फल वाले अद्भुत के शुभाशुभत्व का ज्ञान अपेक्षित है; क्योंकि शुभाशुभत्वज्ञान के उपरान्त ही अनुष्ठान किया जाता है। इसीलिए ग्रन्थकार ने क्रमशः दिव्यान्तरिक्षभौमाद्भुतों के शुभाशुभत्व का विचार फलगौरवत्व को ध्यान में रखकर किया है। यदि अनुष्ठान द्वारा शान्ति नहीं की जाय तो उत्पातफल-ज्ञान व्यर्थ है।

*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिव्याश्रय:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ सूर्याद्भुतावर्त्तः

अथात्र फलगौरवात् प्रथमं दिव्याद्भुतोक्तेः प्राधान्यदोषादादित्याद्भुतान्येवाभिधीयन्ते ।

अथ शुभसूचकादित्यलक्षणमाह पराशरः

रविर्महान् परिमण्डलः कुक्षिमान् विपुलो घृतमण्डनिभः क्षेमारोग्यकरः सुवर्णरजतपद्मप्रभो विमलः स्निग्धो जगद्धिताय ।

महान् परिमण्डल (पूर्ण गोलाकार), पूर्ण शरीर वाला (बिम्ब वाला), विशाल, घृत के सदृश वर्ण वाला सूर्य कल्याण और आरोग्य करने वाला होता है। सुवर्ण, चाँदी और कमल के समान वर्ण वाला, निर्मल और स्निग्ध मण्डल वाला सूर्य संसार के लिए हितकारक होता है।

वराहसंहितायाम्

अमलवपुरवक्रमण्डलः स्फटिकविपुलामलदीर्घदीधितिः ।
अविकृततनुर्वर्णचिह्नभृज्जगति करोति शिवं दिवाकरः ॥

विशेषः– येषामयं स्वामी तेषु विशेषेण शुभकरः। विपरीतो विशेषेण विपरीतकरः ।

निर्मल, अखण्डित, स्पष्ट बिम्बवान्, अतिशय स्वच्छ-विस्तीर्ण-दीर्घ रश्मि वाला, निर्विकार शरीर, वर्ण और चिह्न वाला सूर्यमण्डल संसार का मङ्गल करने वाला होता है।

रविस्वामिकान्याह यवनेश्वरः

नृपाटवीशैलसुवर्णताम्रसिंहानलव्यालविषौर्णिकानाम्[१] ।
हिंसोग्रवाग्द्रव्यवदुष्णरूक्षद्रव्याकराणां प्रभुरुच्यतेऽर्कः ॥

राजा, जंगल, पर्वत, सुवर्ण, ताम्र, सिंह, अग्नि, सर्प, विष, ऊन, उग्र वाणी, तीक्ष्ण द्रव्य, उष्ण और रूक्ष द्रव्यों के खजानों के स्वामी सूर्य हैं।

---

१. व्याडविषौर्णिकानाम् - पाठा०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपस्तु

प्रागर्धं नर्मदायाश्च शोणाः शबरमागधाः ।
[१]भद्रा बङ्गाः कलिङ्गाश्च बाह्लीका यवनाः शकाः ॥

काम्बोजा मेकलाः सुह्माः प्राग्ज्योतिषकिरातकाः ।
चीनाः सर्वे सशैलेयाः पार्वता बहिरन्तजाः ॥

यमुनादक्षिणं कूलं कौशाम्ब्यौदुम्बराणि च ।
विन्ध्याटवी च पुण्ड्राश्च वर्धमानं च पर्वताः ॥

श्रीपर्वतश्चेदिपुरं गोलाङ्गूलकमेव च ।
इक्षुमत्याश्रिता ये च जनाः शूरा मदोत्कटाः ॥

कान्तारमथ गोपाश्च कन्दरास्तस्करास्तथा ।
समरे विषमाः शूरास्तरवः कटुका अपि ॥

चतुष्पादा भेषजञ्च धान्यञ्च भिषजस्तथा ।
अरण्ययायिव्यालाश्च कर्षका व्याडकास्तथा ॥

गैरिकं पद्मकिञ्जल्कं पुंसंज्ञा ये च जन्तवः ।
सर्वेषां भास्करः स्वामी तेजस्तेजस्विनामपि ॥

नर्मदा नदी का पूर्वार्ध भाग, शोण नद, शबर, मगध, मद्र, वङ्ग, कलिङ्ग, वाह्लीक, यवन, शक, कम्बोज, मेकल, सुह्म, प्राग्ज्योतिष, किरात, चीन, सभी पर्वतवासी, पर्वत, पर्वत के बाहर और मध्य में रहने वाले, यमुना नदी के दक्षिण तट, कोशाम्बी, उदुम्बर, विन्ध्य पर्वत के मध्य भाग, पुण्ड्र, वर्धमान पर्वत, श्री पर्वत, चेदिपुर, गोलाङ्गूल, इक्षुमती नदी के आश्रित, वीर जन, उग्र लोग, जंगल, गोपालन करने वाले, कन्दरा, चोर, युद्ध में पराक्रमी वीर, कटुक वृक्ष, चतुष्पद पशु, औषधि, वैद्य, निर्जन स्थान को जाने वाले, सर्प, किसान, व्याड (बाघ, दुष्ट आदि), गेरुआ वस्त्र धारण करने वाले, कमल के केशर, पुँलिंग जन्तु, तेज, तेजस्वी पुरुष या तेजस्वी वस्तु— इन सबों के स्वामी सूर्य हैं।

गौडमिति द्रष्टव्यं वराहसंहितायाम्

प्राङ्नर्मदार्धशोणोड्रबङ्गसुह्माः कलिङ्गबाह्लीकाः ।
शकयवनमगधशबरप्राग्ज्योतिषकचीनकाम्बोजाः[२] ॥

मेकलकिरात[३]पावनबहिरन्तःशैलजाः पुलिन्दाश्च ।
द्रविडानां प्रागर्धं दक्षिणकूलं च यमुनायाः ॥

---

१. उड्रा इति पाठः।
२. काश्मीरा इति पाठः।
३. विटका इति पाठः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चम्पोदुम्बरकौशाम्बिचेदिविन्ध्याटवीकलिङ्गाश्च ।
पुण्ड्राश्च गोलाङ्गूलश्रीपर्वतवर्धमानाश्च ॥
इक्षुमतीत्यथ तस्करपारतकान्तारगोपबीजानाम् ।
तुषधान्यकटुकतरुकनकदहनविषसमरशूराणाम् ॥
भेषजभिषक्चतुष्पदकृषिकरनृपहिंस्त्रयायिचौराणाम् ।
व्यालारण्ययशोयुततीक्ष्णानां भास्करः स्वामी ॥

नर्मदा नदी के पूर्व भाग, शोण नद, उड्र, वङ्ग, सुह्म, कलिङ्ग, वाह्लीक, शक, यवन, मगध, शबर, प्राग्ज्योतिष, चीन, कम्बोज, मेकल, किरात, पवित्र स्थल, पर्वत के बाहर और भीतर रहने वाले, पुलिन्द, द्रविड़ के पूर्वार्ध भाग, यमुना के दक्षिण तट, चम्पक, उदुम्बर (या गुल्लरि वृक्ष), कोशाम्बी, चेदि, विन्ध्य पर्वत के मध्य भाग, कलिङ्ग, पुण्ड्र, गोलाङ्गूल, श्रीपर्वत, वर्धमान, इक्षुमती नद, तस्कर, पारतदेशवासी, वन, गोपालन करने वाले, बीज, भूसा, धान्य, कटुक वृक्ष, सुवर्ण, अग्नि, विष, युद्ध में शूर, औषधि-वैद्य, चतुष्पद पशु, किसान, राजा, क्रूर, युद्ध जीतने वाले, चोर, सर्प, निर्जन स्थान, यशस्वी, तीक्ष्ण (निम्बादि वृक्ष या उग्र जन)— इन सबों के स्वामी सूर्य हैं।

तेषां प्रयोजनमाह गर्गः

स्निग्धरश्मिविशालश्च प्रकृतिस्थश्च यो ग्रहः ।
ग्रहयुद्धरजोधूमनिर्घातोल्काभिराहतः ॥
न यदा स्वोच्चराशिस्थो मित्रभे स्वगृहेऽपि वा ।
स्थितः शुभग्रहैर्दृष्टः सम्पुष्णाति परिग्रहम् ॥
[1]स्वमन्यथा हन्ति नित्यं निजनाशं करोति च ।
नृपाणां भयदोऽपि स्यादवृष्टिभयकारकः ॥

विशेषः– स्वतः कृतोऽमात्यकृतो वा नाशो निजनाशः ।

जो ग्रह निर्मल रश्मिवान्, विपुल, स्वभावस्थित, ग्रहयुद्ध, धूलि, धूम, निर्घात और उल्का से आहत न हो, जब उच्चराशिस्थ, मित्रराशिस्थ अथवा स्वराशिगत हो और शुभ ग्रहों से अवलोकित हो, वह ग्रह अपने परिग्रह वर्ग का अर्थात् ग्रह जिनका स्वामी हो, उनके लिए कल्याणकारी होता है। उक्त विपरीत लक्षण से युक्त ग्रह अपने परिग्रह वर्ग का विनाश करता है और मनुष्यों का नाश करता है। राजाओं को भय देने वाला और अवृष्टिभयकारक होता है।

---

१. स्वकृतो व्याहरन् नित्यं जननाशं करोति च।
तथा—स्वकृतः स्वसुतकृतोऽमात्यकृतो वा। — इति पाठान्तरमस्ति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च वराहसंहितायाम्

उदयसमये यः स्निग्धांशुर्महान् प्रकृतिस्थितः।
यदि च न हतो निर्घातोल्कारजोग्रहमर्दनैः॥

स्वभवनगतः स्वोच्चप्राप्तः शुभग्रहवीक्षितः।
स भवति शुभस्तेषां येषां प्रभुः परिकीर्त्तितः॥

उदय के समय में जो ग्रह निर्मल, विशाल, स्वभावस्थित, निर्घात, उल्का, धूलि तथा ग्रहयुद्ध से आहत न हो, अपनी राशि में स्थित, उच्चगत या शुभ ग्रह से दृष्ट हो, वह जिनका स्वामी हो, उनके लिए शुभ करने वाला होता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

अतिविहितविपरीतलक्षणक्षयमुपगच्छति तत्परिग्रहः।
डमरभयगदातुरा जना नरपतयश्च भवन्ति दुःखिता॥

यदि न रिपुकृतं भयं नृपाणां स्वसुतकृतं नियमादमात्यतो वा।
भवति जनपदस्य चाऽप्यवृष्ट्या गमनमपूर्वपुराद्रिनिम्नगासु॥

जो ग्रह पूर्वोक्त शुभ लक्षणों से विपरीत लक्षणयुक्त हो, वह अपने परिग्रह वर्ग का नाश करता है। अपने वर्ग के मनुष्यों और राजाओं को शस्त्रयुद्ध और रोग से दुःखित करता है। इस तरह के उत्पात होने पर भी यदि राजा और लोगों को शत्रु, पुत्र या निश्चित करके मन्त्री का भय न हो तो उनका और लोगों का अनावृष्टि होने के कारण अपूर्व पुर (जहाँ कभी गमन न हुआ हो), पर्वत और नदियों में गमन होता है। अर्थात् इस तरह के उत्पात होने पर राजा और मनुष्यों को शत्रु, पुत्र या मन्त्री का भय अवश्य होता है। यदि किसी तरह उन आपत्तियों से मुक्त हो जाय तो अवृष्टि के कारण अन्न, शाक, जल आदि के लिए जहाँ पर कभी गया भी नहीं था, उस पुर, पर्वत और नदियों में जाना पड़ता है।

अथ प्रकृत्यादिविवेकः

तत्र स्वकालिककपिशवर्णरश्मियोगिन्यगणितागतप्रमाणोपायादिस्थानयोगित्वाखण्डलत्वचिह्नादिका प्रकृतिः। प्रकृतिवैपरीत्यं विकृतिः। स्निग्धनिर्मलत्वगणितागतविम्बप्रमाणाधिक्यस्फुटविमलामलदीर्घरश्मिजालादयो गुणाः। एतस्माद्विपरीता दोषाः। प्रकृतिर्गुणदोषरहिता शुभफला। गुणवती अतिबहुला। अशुभफला दोषवती। विकृतिर्गुणदोषरहिताऽशुभफला। दोषवती बहुशुभफला। तत्र विकृतिप्रकृतिगुणदोषसंख्याबलाबलमाकलय्य शुभाशुभफलव्यवस्था कर्त्तव्या।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्यमण्डल में अपने-अपने ऋतुओं के वर्ण और रश्मि के संयोग से ('ताम्रः कपिलो वार्कः शिशिरे हरिकुङ्कुमच्छविश्च मधौ' इत्यादि स्वकालिक वर्ण के अनुरूप) गणितागत बिम्बप्रमाण के अनुरूप स्थान, गति, अखण्डलत्व, वर्ण-चिह्नादि एवं अयनगति (गणितागत अयननिवृत्ति और वेधीय अयननिवृत्ति एक काल में) हो, तो उसे 'प्रकृति' कहते हैं। स्वभाव के विरुद्ध वर्ण, स्थान, बिम्बप्रमाण, अयनगति, खण्डत्व, चिह्नादि का नाम विकृति है।

स्निग्धता, निर्मलता, गणितागत बिम्बप्रमाण में महानता, अति स्वच्छ, विमल, विशाल, किरणसमूहादि सूर्यमण्डल के गुण हैं। इसके विपरीत दोष हैं। गुण और दोष से रहित प्रकृति (सूर्यबिम्ब के स्वभाव) शुभ फल देने वाली होती है। उपर्युक्त गुणों से युक्त प्रकृति अधिक शुभ प्रदान करती है। दोषों से युक्त सूर्यबिम्ब प्रकृति अशुभ फल देती है। सूर्यबिम्ब विकृति गुण और दोष से रहित होने पर भी अशुभ फल देती है। दोष से युक्त विकृति शुभ फल प्रदान करती है। अतः सूर्यमण्डल की विकृति (विकार) और प्रकृति (स्वभाव) के गुण तथा दोषों की संख्याओं के तारतम्य से बिम्ब के बलाबल का विचार कर शुभाशुभ फल की व्यवस्था करनी चाहिये।

अथायने रवेः शुभलक्षणम्

तत्र गर्गपराशरौ

अयने सुप्रभः स्निग्धः सेवते यदि भास्करः।
सुवृष्टिं शस्यवृद्धिं च योगक्षेमं विनिर्दिशेत्॥

विशेषः– अयने इति कर्मपदम्। एवं च ये ये अयने सेवते इत्यर्थः।

सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन के समय यदि बिम्ब का वर्ण सुन्दर (स्वकालिक वर्ण) और बिम्ब निर्मल हो तो सुन्दर वृष्टि, धान्य-वृद्धि और लोगों का कल्याण होता है।

तथा च

श्वेतः शिरीषपुष्पाभः पद्माभो रुक्मसन्निभः।
वैदूर्यघृतमण्डाभो हेमाभश्च दिवाकरः॥
वर्णैरेभिः प्रशस्तः स्यान्महास्निग्धः प्रतापवान्।
भावनः सर्वसस्यानां क्षेमारोग्यसुभिक्षदः॥

स्वच्छ (सफेद), शिरीष-पुष्प की तरह कान्ति वाला, कमल-पुष्प की तरह कान्ति वाला, रुक्म की तरह कान्ति वाला, वैदूर्यमणि (विडालाक्ष मणि) और घृत की तरह कान्ति वाला, सुवर्ण की तरह कान्ति वाला— इन वर्णों से युक्त अति स्वच्छ और पराक्रम (स्थानादि बल से) से युक्त सूर्य शुभकारी होता है तथा सभी प्रकार के धान्यों के लिए शुभकारी और लोगों के लिए कल्याण, आरोग्य और सुभिक्षकारी होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अयनक्रमो वराहसंहितायाम्

आश्लेषार्धाद्दक्षिणमुत्तरमयनं रवेर्धनिष्ठाद्यम् ।
नूनं कदाचिदासीद्येनोक्तं पूर्वशास्त्रेषु ॥

यह निश्चित है कि किसी समय आश्लेषा के आधे भाग से सूर्य की दक्षिणायन और धनिष्ठा के आदि भाग से उत्तरायण की प्रवृत्ति होती थी; इसीलिए पूर्वशास्त्रों में यह अयनक्रम कहा गया है।

तथा च काश्यपः

सार्पार्धाद्दक्षिणं भानोः श्रविष्ठाद्यं तथोत्तरम् ।
कदाचिदासीदयनमुत्पातान्नैव शास्त्रतः ॥[1]

काश्यप के अनुसार आश्लेषा के आधे भाग से दक्षिणायन और धनिष्ठा के आदि भाग से उत्तरायण किसी समय उत्पात से नहीं होता था। शास्त्र से अर्थात् यह उक्त अयनक्रम गणित (अयनगति) से होता था। इसे उत्पात (विकृति) नहीं माना जाता था।

तथा च गर्गः

यदा निवृत्तोऽनुप्राप्तः श्रविष्ठामुत्तरायणे ।
आश्लेषां दक्षिणेऽप्राप्तस्तदा विद्यान्महाभयम् ॥

विशेषः– पूर्ववचनाच्छ्रविष्ठामिति धनिष्ठाद्यपरम्। आश्लेषामिति आश्लेषार्धपरम्।

जब धनिष्ठादि में नहीं पहुँच कर सूर्य उत्तर की ओर लौट जाय अर्थात् धनिष्ठादि से पूर्व ही उत्तरायण की प्रवृत्ति हो जाय और आश्लेषार्ध में पहुँचने से पहले ही दक्षिणायन की प्रवृत्ति हो जाय तो महान् भय जानना चाहिये।

पराशरश्च

यद्यप्राप्तौ वैष्णवमुदङ्मार्गं प्रतिपद्यते दक्षिणमाश्लेषां वा महाभयाय ।

विशेषः– अत्रापि वैष्णवं वैष्णवान्तरम् आश्लेषाऽऽश्लेषार्धमिति।

यदि सूर्य श्रवण के अन्त अर्थात् धनिष्ठादि तक पहुँचने से पूर्व ही उत्तर की ओर लौट जाय अर्थात् उत्तरायण की प्रवृत्ति हो जाय अथवा आश्लेषार्ध से पूर्व ही दक्षिणायन हो जाय तो महाभय होता है।

परन्तु वराहेण एतद्विरुद्धं लिखितम् । तद्यथा

साम्प्रतमयनं सवितुः कर्कटकाद्यं मृगादितश्चान्यत् ।
उक्ताभावो विकृतिः प्रत्यक्षपरीक्षणैर्व्यक्तिः ॥

---

१. तादृशमयनं कदाचिच्छास्त्रत एवासीन्न तूत्पातात्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस समय कर्कादि अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण के आरम्भ से दक्षिणायन की और मकरादि अर्थात् उत्तराषाढ़ के द्वितीय चरण के आरम्भ से उत्तरायण की प्रवृत्ति होती है। इस तरह उक्त अयन के अभाव का नाम विकार (विकृति) है। ये सब प्रत्यक्ष वेधविधि से देखने पर स्पष्ट होते हैं।

प्रत्यक्षपरीक्षणोपायश्च तेनैवोक्तः

दूरस्थचिह्नवेधादुदयेऽस्तमयेऽपि वा सहस्रांशोः।
छायाप्रवेशनिर्गमचिह्नैर्वा मण्डले महति॥

सूर्य के उदय या अस्त के समय में दूरस्थ चिह्न के वेध से अयनगति की परीक्षा करनी चाहिये अर्थात् दूर में स्थित वृक्ष आदि के सामने सूर्य के उदय या अस्त को देखकर अयनगति की परीक्षा करनी चाहिये। फिर दूसरे दिन वहीं स्थित होकर पूर्व दिन के चिह्न से ही परीक्षा करे कि सूर्य वृक्षादि चिह्न से दक्षिण या उत्तर की ओर जा रहा है। जिस तरफ सूर्य खिसकता हो, उसी तरफ के अयन में सूर्य को जानना चाहिये। अथवा महामण्डल (बड़े वृत्त) में शंकु के छायाप्रवेश और निर्गमचिह्न से अयन जानना चाहिये।

उदाहरण– जलादि के द्वारा समतल भूमि पर अभीष्ट त्रिज्या व्यासार्ध से एक वृत्त बनाकर, उसमें दिग्ज्ञान-विधि द्वारा पूर्वापर और दक्षिणोत्तर रेखा अंकित करे। वृत्तमध्य में त्रिज्याल्प शङ्कु की स्थापना करे। जिस दिन सायन मेषादि बिन्दु में सूर्य स्थित रहता है, उस दिन सूर्योदयास्त काल में शङ्कु की छाया ठीक वास्तव पूर्वापर रेखा पर पड़ेगी। उसके बाद मिथुनान्त कालपर्यन्त शङ्कु की छाया धीरे-धीरे क्रमशः पूर्वापर रेखा से दक्षिण की ओर बढ़ेगी और कर्कादि से कन्यान्त काल तक धीरे-धीरे शङ्कु की छाया उत्तर तरफ बढ़ेगी। फिर सायन तुलादि में सूर्य के स्थित होने पर शङ्कु की छाया ठीक सायन मेषादि की तरह पूर्वापर रेखा पर पड़ेगी। उसके बाद धन्वन्त बिन्दुपर्यन्त धीरे-धीरे पूर्वापर रेखा से शङ्कु की छाया उत्तर की ओर बढ़ेगी। फिर वहाँ से लौटकर मकरादि से मीनान्त तक शङ्कु की छाया धीरे-धीरे दक्षिण तरफ पड़ेगी। जिस समय दो दिन की छायाग्रबिन्दु वृत्तपरिधिस्थ एक ही जगह पड़े, उसी दिन अयन की निवृत्ति समझनी चाहिये।

उक्तादधिकसमयेऽयननिवृत्तौ विकृतत्वेऽपि शुभमेव फलम्।
तथा च वृद्धगार्ग्यः

अनिवृत्ते समे वाऽपि निवृत्तः शस्यते रविः।

सूर्य अयन-बिन्दु को अतिक्रमण कर लौटता है तो भी शुभदायक होता है।

वराहेण तूत्तरायणमात्र एवैतदुक्तम्। तद्यथा

उत्तरमयनमतीत्य व्यावृत्तः क्षेमसस्यवृद्धिकरः।
प्रकृतिस्थश्चाप्येवं विकृतगतिर्भयकृदुष्णांशुः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अप्राप्य मकरमर्को विनिवृत्तो हन्ति सापरां याम्याम्।
कर्कटकमसम्प्राप्तो विनिवृत्तश्चोत्तरां सैन्द्रीम्॥

यदि सूर्य उत्तर अयन को अतिक्रमण (मकर में प्रवेश) कर उत्तर की ओर लौटे तो लोगों का कल्याण और धान्य की वृद्धि करता है; परन्तु यहाँ पर उत्तरायण का ग्रहण उपलक्षण प्रतीत होता है। इसलिए दक्षिणायन में भी इसी तरह का फल समझना चाहिये अर्थात् कर्क में प्रविष्ट होकर सूर्य दक्षिण की ओर लौटे तो लोगों का कल्याण और धान्य की वृद्धि करता है। प्रकृतिस्थ (गणितागत अयननिवृत्ति और पूर्वकथित वेधीय अयननिवृत्ति एक काल में) होने पर पूर्वकथित फल ठीक घटता है तथा विकारयुक्त गति होने पर सूर्य लोगों में भय उत्पन्न करता है।

यदि मकर में नहीं प्रविष्ट होकर सूर्य उत्तर की तरफ लौट जाय तो पश्चिम और दक्षिण दिशा में जनों का नाश करता है और यदि कर्क में प्रविष्ट होने से पूर्व ही सूर्य दक्षिण की ओर लौट जाय तो पूर्व और उत्तर दिशा में स्थित जनों का नाश करता है।

तथा च ग्रन्थकारः

सकलवसुधाधिनाथश्रीमद्वल्लालसेनदेवेन।
अयनद्वयं यथा तत् परीक्ष्य संलिख्यते सवितुः॥

इदानीं तद्विसंवादादयनं दक्षिणं रवेः।
भवेत् पुनर्वसोरादौ विश्वादावुत्तरायणम्॥

अप्राप्य विश्वमर्को विनिवृत्तो हन्ति सापरां याम्याम्।
आदित्यमसम्प्राप्तो विनिवृत्तश्चोत्तरां सैन्द्रीम्॥

पूर्वकथित अयनक्रम में विसंवाद को देखकर समस्त पृथ्वी के स्वामी श्रीमद् वल्लालसेनदेव ने सूर्य के दोनों अयनों की परीक्षा (वेधविधि से) करके यहाँ जो अयनक्रम है, उसे लिखते हैं। सूर्य के पुनर्वसु नक्षत्र के आदि बिन्दु पर पहुँचने पर दक्षिणायन और उत्तराषाढ़ के आदि बिन्दु पर पहुँचने से उत्तरायण आरम्भ होता है। उत्तराषाढादि में पहुँचने से पूर्व ही सूर्य यदि उत्तर की ओर लौट जाय तो पश्चिम और दक्षिण दिशा में स्थित लोगों का नाश करता है। आदित्य (पुनर्वसु) के आदि बिन्दु पर पहुँचने से पूर्व ही दक्षिण की ओर सूर्य लौट जाय तो उत्तर और पूर्व दिशा में स्थित लोगों का नाश करता हैं।

पराशरश्च

वैश्वादुत्तरेऽप्ययनविभागो बोद्धव्यः।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र के बाद भी अयनविभाग (उत्तरायण की प्रवृत्ति) जानना चाहिये।

तथा च स्वकालिकं ऋतुक्रममाह पराशरः

तस्य श्रविष्ठाद्यात् पौष्णान्तं चरतः शिशिरः। वसन्तः पौष्णान्ता-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्रोहिण्यन्तम् ।[1] सौम्यात् सार्पार्धं ग्रीष्मः । प्रावृट् सार्पार्धात् हस्तान्तम् ।[2] चित्राद्यादिन्द्रार्धं शरत् । हेमन्तो ज्येष्ठार्धाद्वैष्णवान्तमिति ।

विशेषः– तस्येति सवितुरिति सम्बन्धः ।

धनिष्ठादि से रेवती के अन्त तक जब सूर्य का गमन होता है तो शिशिर ऋतु । रेवत्यन्त से रोहिणी नक्षत्र के अन्त तक सूर्य के गमन करने से वसन्त ऋतु । मृगशिरा से आश्लेषा के आधे भाग तक ग्रीष्म ऋतु, आश्लेषा के आधे भाग से हस्त नक्षत्र के अन्त तक वर्षा ऋतु, चित्रा के आदि से ज्येष्ठा के आधे भाग तक शरद ऋतु और ज्येष्ठा के उत्तरार्ध भाग से श्रवण नक्षत्र के अन्त तक हेमन्त ऋतु होता है ।

वराहकालिक ऋतुक्रमस्तु पञ्चसिद्धान्तिकायाम्

उदगयनमकरादावृतवः शिशिरादयश्च सूर्यवशात् ।
द्विभवनकालसमाना दक्षिणमयनञ्च कर्कटकात् ॥

सूर्य के मकरादि बिन्दु पर जाने से उत्तरायण और कर्कादि पर जाने से दक्षिणायन की प्रवृत्ति होती है । सूर्य के दो-दो राशि-भोगकाल के समान शिशिरादि ऋतु मकरादि से होते हैं ।

ब्रह्मसिद्धान्ते च

द्वौ द्वौ राशी मकरादृतवः षट् सूर्यगतिवशाद्ग्राह्याः ।
शिशिरवसन्तग्रीष्मवर्षाशरदः सहेमन्ताः ॥

मकरादि से धन्वन्त तक दो-दो राशियों का सूर्य की गति के अनुसार क्रमशः शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् और हेमन्त ऋतु ग्रहण करना चाहिये ।

इदानीं पुनरयनक्रमेण व्यवस्थोच्यते

धनुषो विंशत्यंशात् षष्ठांशकभोगसम्मिता ऋतवः ।
शिशिराद्याः षट् क्रमशः सम्प्रत्ययनक्रमेण रवेः ॥

सम्प्रति अर्थात् ग्रन्थकार के समय में सूर्य के अयनक्रम से धनु राशि के २० अंश से १२ राशियों के षष्ठांशभोग के तुल्य अर्थात् २ राशियों के भोगकाल के बराबर शिशिरादि छः ऋतु होते हैं ।

अथ वर्णफलम् । तत्र पराशरः

शिशिरे ताम्रः कपिलो वा । वसन्ते कौङ्कुमो वा हरितः । ग्रीष्मे

---

१. पौष्णार्धाद्रोहिण्यन्तम् - इति पाठः ।

२. सार्पार्धाद्धस्तान्तम् - इति पाठः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कपिलवैडूर्यः । प्रावृषि सर्ववर्णः । शरदि पद्माभः । हेमन्ते लोहितः । सर्वर्तुश्वेतः पाण्डुवर्णश्च प्रशस्यते । विपरीतो विपरीतकरः ।

विशेषः– अत्र गर्गसम्मतिरप्यस्ति ।

यदि सूर्यमण्डल शिशिर ऋतु में ताम्र या पीला वर्ण, वसन्त ऋतु में कुङ्कुम के समान या हरा, ग्रीष्म ऋतु में पीला या वैदूर्य-वर्ण, शरद् ऋतु में सुवर्ण की तरह, हेमन्त ऋतु में लाल वर्ण और सभी ऋतुओं में समान वर्ण, श्वेत और पाण्डु (कुछ-कुछ सफेद) वर्ण हो तो शुभ होता है। इसके विपरीत वर्ण अशुभ होता है।

वृद्धगर्गेण तु कार्त्तिकादिसंवत्सरं त्रिधा विभज्य ऋतुत्रयं प्रदर्श्य तद्वर्णफलं कार्त्तिकमासादिकं चोक्तम्

हेमन्तग्रीष्मवर्षासु रक्तः पीतः सितः शुभः ।
कार्त्तिके मार्गशीर्षे तु रक्तः सूर्यः प्रदृश्यते ॥

पौषे माघे यदा सूर्यो भवेन्माञ्जिष्ठसन्निभः ।
फाल्गुने चैव चैत्रे च लाक्षारुधिरसन्निभः ॥

वैशाखे च तथा ज्येष्ठे गौरः स्यादर्कमण्डलः ।
आषाढ़े श्रावणे चैव रक्ताभः सुमहद्युतिः ॥

प्रौष्ठपद्यामाश्वयुजे वैडूर्यहरितो रविः ।
स्वरूपमेतन्मासेषु वर्णाश्चोक्ता विवस्वतः ।
स्वरूपे क्षेममारोग्यं विपरीते विपर्ययः ॥

सूर्यमण्डल का हेमन्त ऋतु में लाल वर्ण, ग्रीष्म ऋतु में पीला वर्ण और वर्षाकाल में सफेद वर्ण शुभदायक होता है। वृद्धगर्ग ने मात्र तीन ऋतुओं को ही मुख्य रूप से मानकर उनके वर्ण और फल कहे हैं। पुनः कार्त्तिकादि दो-दो मासों के क्रम से वर्ण कहा है।

कार्त्तिक और अग्रहायण में लाल वर्ण का सूर्य प्रशस्त (शुभदायक) होता है। पौष और माघमासों में माञ्जिष्ठ (मजीठ) की तरह हरा वर्ण, फाल्गुन और चैत्र में लाक्षा (लाह) और रक्त की तरह लाल वर्ण, वैशाख और ज्येष्ठ महीनों में सूर्यमण्डल गौरवर्ण (सफेद) होता है। आषाढ़ और श्रावण मासों में अत्यन्त लाल वर्ण की कान्ति वाला तथा भाद्र और आश्विन मासों में वैडूर्य मणि की तरह हरा वर्ण सूर्य होता है। इस तरह १२ मासों में सूर्य के स्वरूप और वर्ण कहे गये हैं। मासानुसार सूर्य के स्वरूप और वर्ण लोगों के लिए कल्याण और आरोग्यकारक होते हैं। सूर्य के उक्त विपरीत स्वरूप-वर्ण विपरीत फल अर्थात् अकल्याण और रोगकारक होते हैं।

अशुभवर्णफलं वराहसंहितायाम्

ग्रीष्मे रक्तो भयकृद्वर्षास्वसितः करोत्यनावृष्टिम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हेमन्ते पीतोऽर्कः करोति न चिरेण रोगभयम् ॥

ग्रीष्म ऋतु में रक्त वर्ण का सूर्यमण्डल भय करने वाला होता है। वर्षा ऋतु में काला रविमण्डल अनावृष्टि करता है और हेमन्त ऋतु में पीले वर्ण का सूर्य शीघ्र रोगभय करता है।

तथा च

हितकृद्विप्रादीनां स्निग्धसितरक्तपीतकृष्णोऽर्कः ।
रूक्षस्तद्भयकारी विकारमन्यं गतो यदि वा ॥

स्निग्ध (स्वच्छ), सफेद, लाल, पीत और कृष्ण (काला) वर्ण के सूर्यमण्डल ब्राह्मणादि चारो वर्णों के लिए क्रमशः शुभकारी होते हैं। उक्त वर्ण यदि रूक्ष (रूखा) हो अथवा अन्य विकारयुक्त सूर्यमण्डल हो तो भयकारी होते हैं।

पराशरः

रविर्विवर्णो भूरिवर्णोऽन्नाभावाय। श्यावो जनमरणाय। धूमाभो वृष्टिनिग्रहाय। ताम्रो रुधिराभो वा शस्त्रकोपं करोति। कृष्णवर्णो जगतः क्षयाय। व्यामिश्रवर्णो यावत् स दृश्यते तावत् परस्परविनाशाय। कृष्णरुधिरवर्णो जगत्क्षयकरः। वैडूर्यकृष्ण-बभ्रुवर्णः पांशुवर्षणोत्पातकरः।[१]

सूर्यमण्डल यदि विवर्ण (रूक्ष या विकारयुक्त) और अनेक वर्णों से युक्त हो तो अन्न का अभाव होता है, श्याव (काला-उजला) वर्ण हो तो जनों के मरण के लिए, धूम्र वर्ण वाला वृष्टिनिग्रह के लिए (अवृष्टि के लिए), ताम्र वर्ण वाला अथवा रुधिर के सदृश कान्ति वाला शस्त्र का प्रकोप करता है। काला वर्ण संसार के नाश के लिए होता है। मिला-जुला वर्ण जितना होता है, उतने वर्णों (ब्राह्मणादि जाति के लोगों) के परस्पर विनाश के लिए होता है। काला और रुधिर (शोणित) वर्ण संसार का नाश करने वाला होता है। वैडूर्य मणि, काला और भूरा वर्ण वाला सूर्यमण्डल रज (धूलि), वृष्टि आदि उत्पात करने वाला होता है (अथवा पांशु वर्ण का सूर्यमण्डल उत्पात करने वाला होता है)।

वराहसंहितायाम्

रुधिरनिभो वियत्यवनिपान्तकरो न चिरात्।
परुषरजोऽरुणीकृततनुर्यदि वा दिनकृत् ॥
असितविचित्रनीलपरुषो जनघातकरः ।
खगमृगभैरवस्वररुतैश्च निशाद्यमुखे ॥

---

१. पांशुवर्णोत्सादकरः इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– वियति दशमे मध्याह्न इत्यर्थः। निशाद्यमुखे उदयास्तमयोरसितादिवर्णो जनघातकर इति।

मध्याह्न के समय सूर्यमण्डल रुधिर के सदृश लाल वर्ण का या धूलि के समुदाय से लाल वर्ण का हो तो राजा का शीघ्र नाश करता है।

यदि सूर्यमण्डल कृष्ण, विचित्र या नील वर्ण का होकर देखने में भयङ्कर प्रतीत हो या सन्ध्याकाल में पक्षी, जंगली जानवरों के भयङ्कर शब्द सुनाई पड़े तो लोगों का नाश होता है।

वृद्धगर्गः

उदये नीलवर्णोऽर्को मृत्युरोगकरो भवेत्।
दुर्भिक्षं कृष्णकपिलः कृष्णादीनां च वर्धनः॥

विशेषः– कृष्णादीनामिति चौरादीनाम्।

उदयकाल में नील वर्ण का सूर्य मृत्यु और रोगकारक होता है, कृष्ण और पीत वर्ण का सूर्य दुर्भिक्ष और चौरभय को बढ़ाने वाला होता है।

तथा च

वैडूर्यवर्णः सलिलं रक्तशस्त्रमुदीरयेत्।
परुषः कोपयेद्दस्यून् घर्षणं चारुणप्रभः॥

ताम्रो वस्त्रभयं कुर्यादग्निवर्णोऽग्निजं भयम्।
स्मृतो धूमावृतो रूक्षो विरश्मिर्वृष्टिहा रविः॥

विशेषः– उदयमिति सर्वत्र सम्बध्यते। उदय एव गर्गेणापि वर्णस्याग्निभयकरत्वप्रतिपादनात्।

उदयकाल में वैदूर्य वर्ण का सूर्य वृष्टिकारक, लाल वर्ण का शस्त्रभयकारक, रूक्ष वर्ण वाला डकैत-भयकारक, लाल कान्ति वाला पराजयकारक, ताम्र वर्ण वाला वस्त्रभयदायक, अग्नि वर्ण वाला अग्नि-भयकारक एवं धूआँ से ढका हुआ, रूक्ष और रश्मिहीन सूर्य वर्षा का नाश करता है।

तथा च गर्गः

उदयेऽग्निशिखाप्रख्यः कुर्यादग्निभयं रविः।
दृष्ट्वा तं रुधिरप्रख्यं संग्राममभिनिर्दिशेत्॥

उदय के समय में यदि सूर्य अग्निशिखा की तरह हो तो अग्निभय करता है और रुधिर के सदृश सूर्य युद्ध कराता है।

वराहसंहितायाम्

श्यावेऽर्के कीटभयं भस्मनिभो भयमुशन्ति परचक्रात्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्याव (कृष्ण-सफेद) वर्ण सूर्य कीटभय और भस्म के सदृश कान्ति वाला सूर्य दूसरे राजा से भय दिलाता है।

तथा च गर्गः

श्यावे नीले च दुर्भिक्षं रजतार्चिःप्रभेऽशुभम्।
पीताभे च महाव्याधिः कृष्णे मृत्युभयं भवेत्॥
अनावृष्टिर्ध्रुवा तथ षड्भिर्मासैर्न संशयः।

श्याव (कृष्ण-सफेद) और नील वर्ण वाला सूर्यमण्डल दुर्भिक्ष करने वाला, चाँदी की कान्ति वाला अशुभकारक, पीत वर्ण की कान्ति वाला महान् रोगकारक एवं कृष्ण वर्ण वाला मृत्युभयकारक होता है और वहाँ छः महीनों तक अनावृष्टि होती है।

पराशरः

मयूरचन्द्रिकाभो द्वादशवार्षिकीमनावृष्टिं विधत्ते।

मयूर की कान्ति वाला सूर्य १२ वर्षो तक अनावृष्टि करता है।

तथा च वृद्धगर्गः

मयूरचन्द्रिकाभो वा यदा भवति भास्करः।
पूर्णे तु द्वादशे वर्षे तदा वर्षति वासवः॥

मयूरपंख की कान्ति वाला यदि सूर्य दिखलाई पड़े तो १२ वर्ष पूरे होने के बाद इन्द्र वर्षा करते हैं।

विशेषः– विष्णुधर्मोत्तरवराहसंहितयोरप्येवम्। इदं चाशुभवर्णफलाभिधानमृतुस्वभावव्यवस्थावर्णपरम्।

तथा च वराहसंहितायाम्

ऊर्ध्वं करोति दिनकृत् ताम्रः सेनापतिं विनाशयति।
पीतो नरेन्द्रपुत्रं श्वेतस्तु पुरोहितं हन्ति॥

विशेषः– ऊर्ध्वकरो दिवसकर इत्युत्पलेन विलिख्य व्याख्यातम्।

सूर्य की किरणें ऊपर की ओर होने पर ताम्र वर्ण की हों तो सेनापति का, पीले वर्ण की हों तो राजा के पुत्र का और श्वेत वर्ण की हों तो राजा के पुरोहित का नाश होता है।

तथा च वराहः

चित्रोऽथ वापि धूम्रो रविरश्मिर्व्याकुलीं करोत्युर्वीम्।
तस्करशस्त्रनिपातैर्यदि न सलिलमाशु पातयति॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य की किरणें ऊपर की ओर होने पर विचित्र (अनेक) अथवा धूम्र वर्ण हों तो चोरों और शस्त्रप्रहारों से पृथ्वी व्याकुल हो जाती है अर्थात् लोग व्याकुल हो जाते हैं। यदि उक्त उत्पात दिखाई देने पर शीघ्र वृष्टि नहीं हो तो पूर्वोक्त फल होता है। यदि वर्षा हो जाय तो यह फल न होकर लोगों का कल्याण होता है।

पराशरः

रविरश्मयो रूक्षा विच्छिन्नास्तनवो ह्रस्वा धूम्रामा लोहिता विवर्णा गर्हिताः। स च निष्प्रभो जनमारकरः।

सूर्य की किरणें यदि रूखी हों, खण्डित बिम्ब हों, ह्रस्व (लघु), धूआँ की तरह कान्ति से युक्त, लाल वर्ण और विकारयुक्त हों तो अशुभकारी होती हैं। सूर्य यदि निष्प्रभ (प्रकाशहीन) हो तो लोगों का नाश करता है।

विशेषः– सप्रभो रविस्तस्य रश्मयो रौक्षादिदोषयुक्ता विगर्हिताः। तथाविधेषु रश्मिषु निष्प्रभो रविर्जनमारकर इति।

तथा चोत्तरकाण्डे इन्द्रपराजयनिमित्तम्

भास्करो निष्प्रभश्चैव।

इन्द्रपराजय के समय सूर्य निष्प्रभ (प्रकाशहीन) हो गया था।

वनपर्वणि भीमपराजयनिमित्तम्

निष्प्रभश्चाभवत् सूर्यश्छन्नरश्मिस्तमोवृतः।

विशेषः– मध्याह्नव्यतिरेकेणैतत्।

मध्याह्न काल में सूर्य प्रकाशहीन हो गया और अन्धकारमय हो गया था।

अथ तामसकीलकादिफलम्। वराहसंहितायाम्

**तामसकीलकसंज्ञा राहुसुताः केतवस्त्रयस्त्रिंशत्।
वर्णस्थानाकारैस्तान् दृष्ट्वाऽर्के फलं ब्रूयात्॥**

राहु के तैंतीस पुत्र केतु आदि हैं। ये तामस, कीलक आदि नाम से प्रसिद्ध हैं। इनको सूर्य (ग्रहणकालिक सूर्य) में देखकर इनके वर्ण, स्थान और आकृति के अनुसार फल कहना चाहिये।

गर्गः

**कृष्णाभाः कृष्णपर्यन्ताः सङ्कुलाः कृष्णरश्मयः।
राहुपुत्रास्त्रयस्त्रिंशत् कीलकाश्चातिदारुणाः॥**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राहु के ३३ पुत्र तामस-कीलक आदि कृष्ण कान्ति वाले, खग्रास ग्रहणकालिक सूर्य के कृष्ण होने तक काली रश्मियों से सूर्यबिम्ब में व्याप्त रहने वाले लोगों के लिए अत्यन्त दारुण होते हैं।

वराहसंहितायाम्

ते चार्कमण्डलगताः पापफलाश्चन्द्रमण्डले सौम्याः।
ध्वाङ्क्षकबन्धप्रहरणरूपाः पापाः शशाङ्केऽपि॥

तेषामुदये रूपाण्यम्भःकलुषं रजोवृतं[1] व्योम।
तरुनगशिखरामर्दी सशर्करो मारुतश्चण्डः॥

ऋतुविपरीतास्तरवो दीप्ता मृगपक्षिणो दिशां दाहाः।
निर्घातमहीकम्पादयो भवन्त्यत्र चोत्पाताः॥

न पृथक् फलानि तेषां शिखकीलकराहुदर्शनं यदि च।
तदुदयकारणमेषां केत्वादीनां फलं ब्रूयात्॥

ये तामस-कीलकसंज्ञक राहुपुत्र सूर्यमण्डल में प्रविष्ट होने पर अशुभ और चन्द्रमण्डल में प्रविष्ट होने पर शुभ फल देते हैं; परन्तु ध्वांक्ष (काक), कबन्ध (छिन्नमस्तक पुरुष) या प्रहरण (खड्गादि) के समान आकृति वाले तामस-कीलक आदि चन्द्रमण्डल में भी पाप फल देते हैं।

इन तामस-कीलक आदि के उदय होने से पहले विकारयुक्त जल, धूलि से व्याप्त आकाशमण्डल, पर्वत, वृक्ष, शिखर— इन सबों का नाश करने वाली मिट्टी के कणों से युक्त वायु, ऋतु के विपरीत वृक्षों में फूल-फल, दीप्त मृग-पक्षी अर्थात् सूर्य की गर्मी से पशु-पक्षी आदि जानवरों में व्याकुलता, दिक् दाह (दिशाओं का जलन), निर्घात (पवनः पवनाभिहतो गगनादवनौ यदा समापतति भवति तदा निर्घात इति), भूकम्प— ये उत्पात होते हैं।

यदि केतु, तामस, कीलक और राहु का उत्पात होने के बाद सात दिन के अन्दर दर्शन हो जाय तो पूर्वोक्त उत्पात का कोई अलग फल नहीं होता है। ये उत्पात इन केतु आदि के उदय के कारण होते हैं। अर्थात् पूर्व में इन उत्पातों के दर्शन हो जाने से केतु आदि का दर्शन निश्चित हो जाता है। यदि किसी समय किसी कारण से उत्पातों के दर्शन होने पर भी तामस-कीलक आदि का दर्शन न हो तो इन उत्पातों के अनुसार ही फल कहना चाहिये।

तथा च वराहसंहितायां तामसकीलकदर्शनफलम्

यस्मिन् यस्मिन् देशे दर्शनमायान्ति सूर्यविम्बस्थाः।

---

१. रजःकृतं व्योम इति पाठः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तस्मिन् तस्मिन् व्यसनं महीपतीनां परिज्ञेयम् ॥[१]

क्षुत्प्रम्लानशरीरा मुनयोऽप्युत्सृष्टधर्मसच्चरिताः ।
निर्मांसबालहस्ताः कृच्छ्रेण[२] हि यान्ति परदेशम् ॥

तस्करविलुप्तवित्ताः प्रदीर्घनिःश्वासमुकुलिताक्षिपुटाः ।
सन्तः सन्नशरीराः शोकोद्भववाष्परुद्धदृशः ॥

क्षामाजुगुप्समानाः स्वनृपतिपरचक्रपीडिता मनुजाः ।
स्वनृपतिचरितं कर्म न पुराकृतं प्रब्रुवन्त्यन्ये ॥

गर्भेष्वपि निष्पन्ना वारिमुचो न प्रभूतवारिमुचः ।
सरितो यान्ति तनुत्वं क्वचित् क्वचिज्जायते शस्यम् ॥

जिन-जिन देशों में सूर्यबिम्बस्थित तामस-कीलक आदि का दर्शन हो, उन-उन देशों में राजाओं को दु:ख होता है। क्षुधा से पीड़ित मुनि लोग भी स्वधर्म एवं उत्तम चरित्रों को छोड़कर मांसहीन दुर्बल बालकों को हाथ में लेकर दूसरे देश में जाते हैं। सज्जनों का धन चोर द्वारा अपहरण कर लिया जाता है। इसलिए वे सज्जन दीर्घ नि:श्वास छोड़ने से संकुचित आँख वाले, खिन्न शरीर वाले और शोक से उत्पन्न अश्रुप्रवाह के कारण बन्द नेत्र वाले हो जाते हैं। अपने राजा और दूसरे राष्ट्र से पीड़ित दुर्बल मनुष्य निन्दा करते हुए अपने राजा के पूर्वकृत कर्त्तव्य को दूसरे से कहते हैं। गर्भयुक्त होने पर भी मेघ अधिक जल नहीं देते हैं। नदियाँ अल्प जल वाली (कृश) हो जाती हैं और धान की उपज कम हो जाती है।

अथैषां विशेषफलं गार्गीये

ध्वाङ्क्षो वा कृष्णशङ्कुर्वा कबन्धो वाऽर्कमण्डले ।
दृश्यते यत्र तत्राशु भूमिपालो विनश्यति ॥

सूर्यमण्डल में तामस-कीलक, ध्वाङ्क्ष (काक), कृष्ण शङ्कु (काली रेखा) या कबन्ध (छिन्नमस्तक पुरुष) के समान जिस देश में दिखाई पड़े, वहाँ के राजा का विनाश होता है।

आग्नेयपुराणे हिरण्यकशिपोर्वधनिमित्तम्

पूर्वापरासु सन्ध्यासु कबन्धो दृश्यते रवौ ।

प्रात: और सायंकालिक दोनों सन्ध्याओं के समय सूर्यमण्डल में तामस-कीलक कबन्ध के रूप में देखा गया।

---

१. न सन्देहः इति पाठान्तरम्।
२. कृच्छ्रेणायान्ति इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महाभारते वृष्णिवंशक्षयनिमित्तम्

उदयास्तमने तस्यां पूर्यां नित्यं दिवाकरः ।
व्यदृश्यतासकृत् पुम्भिः कबन्धैः परिवारितः ॥

आदित्यो रजसा राजन् समवच्छन्नमण्डलः ।
विरश्मिरुदये नित्यं कबन्धैः समदृश्यत ॥[१]

उदयास्त-काल में उस नगर के लोगों ने सूर्यमण्डल को अनेक बार कबन्धों से व्याप्त देखा । उदयकाल में सूर्यमण्डल धूलि से ढँक गया और प्रतिदिन सूर्यमण्डल में कबन्ध देखा गया तो सूर्यबिम्ब नित्य रश्मिहीन उदित होने लगा ।

गार्गीये

अनोधनुःक्षेत्ररूपा नृपवित्तक्षयावहाः ।

विशेषः– अनः शकटः, तद्रूपाः धनुःक्षेत्ररूपाश्च ।

सूर्यमण्डल में शकट, धनुष और क्षेत्र की आकृति के तामस-कीलक राजा के धन-नाशकारक होते हैं ।

वराहसंहितायाम्

दण्डे नरेन्द्रमृत्युर्व्याधिभयं स्यात् कबन्धसंस्थाने ।
ध्वाङ्क्षे तस्करभयं दुर्भिक्षं कीलकेऽर्कस्थे ॥

सूर्यमण्डल में दण्ड की तरह केतु दिखाई पड़े तो राजा की मृत्यु, छिन्नमस्तक पुरुष की तरह दिखाई दे तो व्याधि का भय, काक की तरह दिखाई दे तो चोर का भय और कील की तरह दिखाई दे तो दुर्भिक्ष होता है ।

तथा

कीलकदण्डकबन्धध्वाङ्क्षायुधपीठसन्निभाः सूर्ये ।
दुर्भिक्षनृपभयव्याधिचौरयुद्धान्यराज्याय ॥

सूर्यमण्डल में कील, दण्ड, कबन्ध, ध्वाङ्क्ष, अस्त्र (खड्गादि) और पीठ (प्रासादादि) के समान दिखाई दे तो क्रमशः दुर्भिक्ष, राजा का भय, व्याधि, चौरभय, युद्ध और राजा का नाश होता है ।

गर्गोऽपि

श्वश्रृगालाश्वकीलानां तथा धूमकबन्धयोः ।
दर्शनं सूर्यबिम्बे चेद्विनाशो भूपतेस्तदा ॥[२]

---

१. अयं श्लोकः मुद्रितमहाभारते उक्तस्थाने न मिलति।
२. श्वश्रृङ्गविदकीलानाम् तथा श्वश्रृगालार्बुदकीलानाम् इति पाठः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सूर्यबिम्ब में कुत्ता, शृगाल, घोड़ा और कील तथा केतु और कबन्धों का दर्शन हो तो राजा का नाश होता है।

वृद्धगार्ग्यः

शृगालान् गर्दभानश्वाँस्तथाऽन्यान्मृगपक्षिणः ।
आदित्यमण्डले दृष्ट्वा देशभङ्गं विनिर्दिशेत् ॥

सूर्यमण्डल में शृगाल (सियार), गदहा, कुत्ता आदि अन्य जंगली जानवर और पक्षियों को देखकर देश का विनाश कहना चाहिये अर्थात् ये सब यदि सूर्यबिम्ब में देखे जायँ तो देश का विनाश होता है।

क्रव्यादमृगपक्षिदर्शने दोषमाह गर्गः

मण्डलाभ्यन्तरस्थैश्च क्रव्यादमृगपक्षिभिः ।
परचक्रागमो वाच्यः प्रजानाशस्तथैव च ॥

अहस्करे पताकादीन् प्रासादांस्तोरणानि च ।
सन्ध्ययोरुभयोः पश्येन्महदुत्पद्यते भयम् ॥

सूर्यमण्डल के भीतर दोनों सन्ध्याओं में क्रव्याद, मृग और पक्षियों के दर्शन होने से अन्य राजा के आक्रमण से प्रजाओं का विनाश होता है। सूर्यबिम्ब में पताका (ध्वजा), प्रासाद (गृहादि), तोरण (भीतरी फाटक) आदि दिखाई देने से महान् भय उत्पन्न होता है।

वराहसंहितायाम्

राजोपकरणरूपैश्[1]छत्रध्वजचामरादिभिर्विद्धः ।
राजान्यत्वकृदर्कः स्फुलिङ्गधूमादिभिर्जनहा ॥

यदि सूर्यमण्डल राजा के उपकरणरूप छत्र, ध्वजा, चामर आदि से वेधित हो तो राजा का परिवर्त्तन-होता है और अग्निकण (चिनगारी), धूम आदि से वेधित हो तो लोगों का नाश होता है।

वटकणिकायाम्

ज्वालास्फुलिङ्गधूमैर्जनक्षयः- इति ।

सूर्यमण्डल के अग्निज्वाला, अग्निकण और धूमादि से वेधित होने पर लोगों का नाश होता है।

हरिवंशमत्स्यपुराणपद्मपुराणेषु हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

---

१. वर्णच्छत्र इति पाठः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमुञ्चच्चासितां सूर्यो धूमवर्त्ती महाभयाम् ।

सूर्यमण्डल से महान् भय उत्पन्न करने वाली काली धूमवर्त्ती (धूआँ की बत्ती) निकली ।

वराहसंहितायाम्

एको दुर्भिक्षकरो द्व्याद्याः स्युर्नरपतेर्विनाशाय ।
सितरक्तपीतकृष्णैस्तैर्विद्धोऽर्कोऽनुवर्णघ्नः ॥

विशेषः– उक्तादन्यस्थान एको दुर्भिक्षकरः । उक्तसंस्थानोऽनुक्तसंस्थानो वा द्व्यादिर्नृपविनाशाय । अनुक्रमेण वर्णान् ब्राह्मणादीन् हन्तीत्यनुवर्णघ्नः ।

यदि पूर्वोक्त सूर्यमण्डल के वेध करने वालों में से एक से सूर्य वेधित हो तो दुर्भिक्ष, दो आदि से वेधित हो तो राजा का नाश और सफेद, लाल, पीले और काले वर्णों से वेधित हो तो क्रम से ब्राह्मणादि वर्णों का नाश करता है अर्थात् वेध करने वाले उत्पात यदि सफेद हों तो ब्राह्मणों का, लाल वर्ण से वेधित होने पर क्षत्रियों का, पीत वर्ण से वैश्यों का और काले वर्ण से शूद्रों का नाश करता है ।

विशेफलं वराहसंहितायाम्

दृश्यन्ते च यतस्ते रविविम्बस्योत्थिता महोत्याताः ।
आगच्छति लोकानां तेनैव भयं प्रदेशेन ॥

ये पूर्वकथित ध्वांक्ष आदि महा उत्पात सूर्यमण्डल में जिस तरफ दिखाई देते हैं, उस दिशा में स्थित लोगों को भय होता है । अर्थात् ये उत्पात यदि सूर्यबिम्ब में पूरब की तरफ दिखाई पड़ें तो पूर्वीय देशों में, दक्षिण की तरफ हों तो दक्षिणीय देशों में, पश्चिम की तरफ हों तो पश्चिमीय देशों में और उत्तर की तरफ हों तो उत्तरीय देशों में स्थित लोगों को भय होता है ।

अथ संस्थानफलम् । तत्र गर्गः

खण्डो वा कृष्णवर्णो वा ह्रस्वः पिङ्गलकोऽपि वा ।
आदित्यो दृश्यते यत्र राज्ञो मृत्युं विनिर्दिशेत् ॥

विशेषः– पिङ्गलक इति कृष्णमेचकाकृतिः ।

सूर्यबिम्ब जहाँ पर खण्डित या काला वर्ण या गणितागत प्रमाण से छोटा अथवा पीला दिखाई पड़े, वहाँ के राजा की मृत्यु होती है ।

तथा च वराहः

खण्डो वक्रः कृष्णो ह्रस्वः काकाद्यैर्वा चिह्नैर्विद्धः ।
यस्मिन् देशे रूक्षश्चार्कस्तस्याभावः प्रायो राज्ञः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिस देश में खण्डित, वक्र (टेढ़ा), काला, छोटा अथवा काकादि चिह्नों से सूर्य वेधित हो, उस देश के राजा का प्रायः अभाव होता है अर्थात् राजा की मृत्यु होती है।

तथा च वृद्धगर्गः

खण्डो वा कृष्णरेखा[1] वा मुण्डः पिङ्गलकोऽपि वा।
देशविभ्रममादित्यो राजमृत्युं च सूचयेत्॥

विशेषः– तत्फलं रूक्षे रवौ वक्तव्यम्।

सूर्यबिम्ब यदि खण्डित हो या बिम्ब में काली रेखा हो, मुण्ड की आकृति हो या पीला वर्ण हो तो देश का विनाश और राजा की मृत्यु होती है। ऐसा फल सूर्य के रूक्ष रहने पर भी होता है।

पराशरः

मुण्डाकारः उलूकसंस्थानः उन्मादापस्मारकृत्।

मुण्ड (मस्तक) की आकृति तथा उलूक (उल्लू) पक्षी की आकृति सूर्यबिम्ब में होने से उन्माद (पागलपन) और अपस्मार (मृगी) रोग होते हैं।

तथा च वृद्धगर्गः

विरूक्षेण भवेत् क्षेमः स्थालीपिठरसन्निभे।
अनावृष्टिश्च वैरं च संक्षिप्ते सूर्यमण्डले॥
रूक्षोऽरुणोऽञ्जनश्यामः सूर्यो वा ह्रस्वमण्डलः।

विशेषः– रूक्षोऽरुणो ह्रस्वमण्डल इत्येकनिमित्तम्।
रूक्षोऽञ्जनश्यामो ह्रस्वमण्डल इत्यपरम्।

यदि सूर्यमण्डल निर्मल और थाली के तल के सदृश हो तो कल्याणकारक होता है। छोटा सूर्यमण्डल अनावृष्टिकारक होता है। रूखा, लाल और अञ्जन की तरह श्याम वर्ण या छोटा सूर्यमण्डल अनावृष्टिकारक होता है।

तथा च

निष्प्रभे धूम्रवर्णेऽर्के सर्वतो जायते भयम्।

प्रकाशहीन और धूम्र वर्ण वाला सूर्यमण्डल सभी ओर भय देने वाला होता है।

गर्गः

अतिरूक्षे भयं ब्रूयात् स्थालीपिठरसन्निभे।
संक्षोभात् क्षीयते लोको दुर्भिक्षं वज्रसन्निभे॥

---

१. कृष्णरक्तो वा इति पाठः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सूर्यमण्डल अत्यन्त रूखा दिखाई पड़े तो लोगों को भय होता है। थाली के तल के समान रूखा दिखाई दे तो क्षोभ से (युद्ध होने से) लोगों का विनाश होता है तथा वज्र के सदृश दिखाई दे तो दुर्भिक्ष होता है।

वराहसंहितायाम्

क्षुन्मारकृद्धटनिभः खण्डो नृपहा विदीधितिर्भयदः।
तोरणरूपः पुरहा छत्रनिभो देशनाशाय॥
ध्वजचापनिभे युद्धानि भास्करे वेपनेऽतिरूक्षे च।

जिस देश में सूर्यमण्डल घड़े की आकृति की तरह दिखाई दे, वहाँ भूख से पीड़ित होकर लोग प्राण-विसर्जन करते हैं। यदि खण्डित दिखाई दे तो राजा की मृत्यु होती है। यदि रश्मिहीन दिखाई दे तो भय देने वाला होता है। भीतरी पुरद्वार (फाटक) की तरह दिखाई दे तो नगर का नाश करता है। छत्र के समान दिखाई दे तो देश का नाश करता है और ध्वजा एवं चाप (धनुष) की तरह काँपता हुआ अत्यन्त रूखा दिखाई दे तो युद्ध होता है।

पराशरस्तु

तोरणसंस्थानः पुरनाशाय। छत्राकारो देशविपर्याय शकटाकारे च। शरासनाकृतिर्वज्राभो वा सद्य आहवाय। परुषो वेपनः शस्यनाशाय।

जहाँ सूर्यमण्डल तोरण (फाटक) की तरह दिखाई दे, उस नगर का नाश करता है। जिस देश में छत्र की आकृति की तरह और शकट (गाड़ी) की आकृति की तरह दिखाई दे, उस देश का नाश करता है। शरासन या वज्र की आकृति की तरह दिखाई पड़े तो युद्ध होता है, काँपता हुआ रूखा दिखाई दे तो धान्य का नाश होता है।

महाभारते भीष्मपर्वणि कुरुक्षयनिमित्तम्

द्विधाभूत इवादित्य उदये प्रत्यदृश्यत।

महाभारत-युद्ध के समय कौरवों के विनाश के लिए सूर्योदय काल में मण्डल दो भागों में खण्डित की तरह दिखाई दिया।

वृद्धगर्गः

आदित्यमण्डलं छिन्नं द्विधा च यदि वा त्रिधा।
तद्राजमरणं ब्रूयाद्दण्डो वा यदि दृश्यते॥

जिस देश में सूर्यमण्डल दो भागों में अथवा तीन भागों में खण्डित दिखाई दे अथवा दण्डाकार दिखाई दे, उस देश के राजा की मृत्यु होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

विलग्नाकृतिर्गर्भविनाशाय। ऊर्ध्वदण्डो जटिलः शस्त्रकोपव्याधिकरः। संक्षिप्तः क्षयाय। वज्राकारो दुर्भिक्षाय। परुषाकारो रुधिरप्रभोऽनेकनृपतिहस्तोत्पाटनकरः।[१]

पराशर के इस वचन में 'विलग्नाकृतिः' इस पाठ की जगह 'विहगाकृतिः' यह पाठ शुद्ध प्रतीत होता है। बृहत्संहिता (भट्टोत्पलीय) में 'विजयाकृतिः' यह पाठ उपलब्ध है। दोनों पाठ अशुद्ध प्रतीत होते हैं। अतः 'विहगाकृतिः' मानना ही शुद्ध प्रतीत होता है।

यदि सूर्यमण्डल पक्षी की आकृति का दिखाई दे तो गर्भ का नाश होता है, ऊर्ध्व दण्डाकृति कठिन दिखाई दे तो शस्त्रकोप और व्याधि होती है, संक्षिप्त अर्थात् छोटा दिखाई दे तो लोगों का नाश होता है, वज्र की आकृति की तरह दिखाई दे तो दुर्भिक्ष होता है, रूखा और लाल वर्ण की तरह कान्ति वाला दिखाई दे तो अनेक राजाओं के हाथों को उखाड़ देता है अर्थात् राजाओं का विनाश करता है।

भीष्मपर्वणि कुरुक्षयनिमित्तम्

ज्वलन्त्या शिखया भूयो भानुमानुदितो रविः।

सूर्योदय के बाद पुनः सूर्य की तरह जलती हुई शिखा (केतु) से युक्त सूर्य उदित हुआ।

मयूरचित्रे

विषाणैरिव चादित्यस्त्रिकूट इव लक्ष्यते।
जनमाराग्निशस्त्राद्यं घोरमुत्पद्यते भयम्॥

यदि सूर्यमण्डल विषाण (शृंग = सींग) की तरह या त्रिकूट पर्वत के समान देखा जाय तो अग्नि-शस्त्र आदि से लोगों का नाश तथा घोर भय उत्पन्न होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

द्विसूर्ये गगने युद्धं क्षत्रियाणां विनिर्दिशेत्।
द्विचन्द्रे ब्राह्मणाधिक्यमाधिक्यं प्रलयाय च॥

जिस समय आकाश में दो सूर्य दिखाई दें, उस समय क्षत्रियों का युद्ध होता है और दो चन्द्रमा आकाश में दिखाई दें तो ब्राह्मणों की अधिकता (वृद्धि) होती है

---

१. नृपतिसहस्राच्छादनकरः इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और ब्राह्मणों का आधिक्य प्रलय के लिए होता है। परन्तु बृहत् संहिता के मयूरचित्रकाध्याय में दो चन्द्रमा का दर्शन ब्राह्मणों की वृद्धि के लिए और शुभ के लिए कहा गया है।

तद्यथा वराहसंहितायाम्

दिवि भाति यदा तुहिनांशुयुगं
द्विजवृद्धिरतीव तदाऽऽशु शुभम्।
तदनन्तरवर्णरणोऽर्कयुगे
जगतः प्रलयस्त्रिचतुष्प्रभृति ॥

जिस समय आकाश में दो चन्द्रमा दिखाई दें, उस समय शीघ्र ब्राह्मण की वृद्धि और शुभ होता है। यदि दो सूर्य दिखाई दे तो ब्राह्मणवर्ण के बाद वाले वर्ण में अर्थात् क्षत्रियों में संग्राम होता है तथा तीन-चार आदि सूर्य दिखाई दें तो संसार का नाश अर्थात् प्रलय होता है।

आग्नेयपुराणे रावणशक्रयुद्धे शक्रपराजयनिमित्तम्

सप्त चैवोत्थिताः सूर्याः शोषयन्तो रसातलम् ॥

आकाश में सात सूर्य उग गये थे और मानो ऐसा लगता था जैसे रसातल को शोख रहे हैं अर्थात् समस्त पृथ्वी को अपने ताप से जला रहे हों।

मात्स्यपद्मपुराणयोर्हिरण्यकशिपोर्वधनिमित्तम्

सप्तधूमनिमा घोराः सूर्या दिवि समुत्थिताः।

धूम्र की कान्ति वाले सात सूर्य आकाश में उदित हो गये, जो भयानक थे।

गर्गः

दृष्टाः सूर्यास्तु चत्वारः उदिता सर्वतो दिशम्।
शस्त्रेण जनमारेण तद्युगान्तस्य लक्षणम् ॥

विशेषः– भार्गवीयेऽप्येतदुक्तम्।

जब चार सूर्य उदित होते हैं तब शस्त्र से सभी दिशाओं में लोगों का नाश होता है, ऐसा प्रलय के समय होता है।

वृद्धगर्गः

दृष्ट्वा त्रिचतुरः सूर्यानुदितान् सर्वतो दिशम्।
शस्त्रेण निधनं तत्र तद्युगान्तस्य लक्षणम् ॥

एक साथ जब तीन या चार सूर्य को उदित देखा जाय तो सभी दिशाओं के लोगों का शस्त्र से मरण कहना चाहिए। यह युगान्त (प्रलय) का लक्षण है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथोदयास्ताद्भुतफलम् । तत्राहिमकिरण इत्यनुवृत्तौ वराहसंहितायाम्

रक्तोऽस्तमेति रक्तोदितश्च नृपतिं करोत्यन्यम् ।

विशेषः– समस्तदिन एव रक्तोऽन्यं नृपं करोति । अन्यं परं शत्रुमिति यावत् ।

जब सूर्य लाल वर्ण का होकर उदित हो और लाल ही अस्त हो अर्थात् दिन भर लाल वर्ण दिखाई दे तो राजा का नाश करता है और दूसरा राजा (शत्रुराजा) ही राजा होता है ।

वृद्धगर्गः

उच्चैरुदयते रूक्षो विरश्मिस्तु प्रकाशते ।
उच्चैरस्तमयं कुर्यान्महाभयकरः स्मृतः ॥

विशेष– हेमन्तव्यतिरेकेणोच्चैरुदयास्तसमययोः फलमेतत् ।

सूर्य यदि उच्च अर्थात् पताका गन्धर्वनगरादि देववाहिनी से आच्छादित होने से ऊपर उठकर उदित होकर रूखा और रश्मिहीन दिखाई देते हुए ऊपर ही अस्त हो जाय अर्थात् बाद में उदय और पहले अस्त दिखाई दे तो महान् भय होता है ।

वराहसंहितायाम्

भानोरुदयेऽपि दिवाऽस्तमये गन्धर्वपुरप्रतिमाध्वजिनी ।
विम्बं निरुणद्धि तदा नृपतेः प्राप्तं समरं समयं प्रवदेत् ॥

सूर्य के उदय और अस्त के समय में पताकायुक्त गन्धर्वनगर की प्रतिमा सूर्यबिम्ब को आच्छादित करे तो राजा को भयङ्कर युद्ध की प्राप्ति होगी, ऐसा कहना चाहिये ।

भार्गवीये

आदित्यस्य रथः श्वेतः सन्ध्यायां यदि दृश्यते ।
प्रत्यासन्नं भयं विद्यात् तस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥

सन्ध्या के समय में सूर्य का रथ (सूर्यमण्डल) यदि सफेद दिखाई दे तो उस उत्पात के दर्शन के अनन्तर शीघ्र ही (राजा को) भय कहना चाहिये ।

गर्गः

आदित्ये सरथा सेना सन्ध्याकाले यदा भवेत् ।
प्रत्यासन्नं विजानीयाद्भूमिपस्य पराजयम् ॥

सन्ध्या के समय में सूर्यमण्डल में यदि रथसहित सेना दिखाई दे तो उसके तुरन्त बाद राजा की पराजय होती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

अर्कमण्डले रथसेनातपत्रादिदर्शनं नृपनाशाय ।

विशेष– सन्ध्याव्यतिरेकेणाप्येतत् फलम् ।

सूर्यमण्डल में सन्ध्या के समय रथ, सेना, छत्र आदि के दर्शन होने पर राजा का विनाश होता है।

गर्गः

आदित्यस्य रथं दृष्ट्वा भ्रमन्तं वामदक्षिणे ।
देशस्य विप्लवं ब्रूयात् तस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥

विशेष– इत्येवं सन्ध्याव्यतिरेकेणापि ।

सूर्य का रथ (सूर्यमण्डल) वाम और दक्षिण (उत्तर-दक्षिण) घूमता हुआ (सन्ध्याकाल में) दिखाई दे तो देश का विनाश होता है।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिः

आदित्योत्पातेषु प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या । आदित्योत्पाते च विशेषेणादित्यः पूजनीयः ।

इस सूर्याद्भुतावर्त्त में जिन उत्पातों की शान्ति-विधि नहीं बतलायी गयी है, उसकी शान्ति के लिए अत्यधिक सुवर्ण, अन्न, गाय आदि के दान से औत्पातिक फलों की गुरुता और लाघव का ज्ञान कर सामान्य शान्ति करनी चाहिये। अर्थात् उत्पात-फलों के न्यूनाधिक्य को जानकर तदनुसार उक्त दान करने से उत्पातजन्य अशुभ फल नष्ट हो जाता है।

आदित्योत्पातों की शान्ति के लिए विशेष रूप से सूर्य की पूजा करनी चाहिये।

एतदुक्तमाथर्वणाद्भुते

सूर्यस्योदयकाले तु विकृतिर्यत्र दृश्यते ।
मण्डले तत्समीपे वा रश्मीनां वा विपर्ययः ॥

विकारस्तु यदा तेषां सूर्यः पूज्योऽत्र दैवतः ।

विशेष– इत्यविहितविशेषशान्तय आदित्योत्पाताः ।

सूर्योदय के समय में जब जहाँ उक्त विकार सूर्यमण्डल या मण्डल के निकट दिखाई दे तो वहाँ सूर्य देवता की पूजा करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ आदित्योत्पाता मयूरचित्रे

शशशोणितवर्णेऽर्के युद्धं रुधिरकर्दमम् ।

यदि आकाश में खरहे के रुधिर के समान रक्त वर्ण का सूर्यबिम्ब दिखलाई दे तो युद्ध में रुधिरधारा बहती है।

गर्गस्तु

शशशोणितवर्णाभो यदा भवति भास्करः ।
तदा भवन्ति संग्रामा घोरा रुधिरकर्दमाः ॥

विशेष– मध्याह्ने शशशोणितवर्णे सूर्ये बहवो घोराः संग्रामाः । अन्यदा त्वेक एवेति वचनद्वयसामञ्जस्यम् ।

खरहे के रुधिर के वर्ण की कान्ति के समान यदि सूर्य का वर्ण हो तो उस समय संसार में अत्यन्त भयंकर संग्राम की स्थिति होती है, जिसके कारण रुधिर का कीचड़ बन जाता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

शशरुधिरनिभे भानौ नभःस्थलस्थे भवन्ति संग्रामाः ।
शशिसदृशं नृपतिवधः क्षिप्रं चान्यो नृपो भवति ॥

विशेष– नभःस्थलस्थे दशमस्थे मध्याह्न इत्यर्थः । शशिसदृशश्च मध्याह्न एव ।

यदि मध्य आकाश में खरहे के रुधिर के समान सूर्यमण्डल दिखलाई दे तो युद्ध होते हैं। चन्द्रमा के समान वर्ण का सूर्यमण्डल दिखलाई दे तो वर्तमान राजा का विनाश होकर दूसरा राजा होता है।

यथाऽऽह वृद्धगर्गः

कांस्यपात्रीनिभः सूर्यः शशाङ्क इव लक्ष्यते ।
विरश्मिर्नभसो मध्ये महद्भयकरः स्मृतः ॥

यदि मध्याह्न काल में सूर्यमण्डल काँसे के पात्र की कान्ति के सदृश दिन में उदित चन्द्रमा की तरह प्रकाशहीन दिखलाई दे तो महान् भय होता है। अर्थात् राजा और देश दोनों का नाश होता है।

विशेष– राज्ञो देशस्य च नाशो महद्भयम् ।

तथा च मयूरचित्रे

आदर्श इव दृष्टश्च राज्ञो देशस्य चान्तकृत् ।

दर्पण की तरह सफेद सूर्यमण्डल यदि दिखलाई दे तो राजा और देश का अन्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्रैव

आदर्श इव सूर्ये च जनदेशभयं वदेत् ।

दर्पण की तरह सूर्य दिखाई देने पर लोगों और देश के लिए भय कहना चाहिये ।

गर्गः

उदयास्तमये भानौ कबन्धसदृशे भयम् ।

उदय और अस्त के समय में सूर्यमण्डल में कबन्ध (विना शिर वाला मनुष्य) की तरह दिखाई देने पर लोगों के लिए भय उत्पन्न होता है ।

अन्यसमये च पराशरः

कबन्धाकृतिर्महासंग्रामकृत् ।

किसी भी समय सूर्यमण्डल कबन्ध की तरह दिखाई देने पर घोर युद्ध कराता है ।

स्कन्दपुराणे तारकवधनिमित्तम्

दृश्यते च कबन्धाभो भास्करोऽपि तदा मृशम् ।

तारकासुर के वध होने के समय में सूर्य भी स्पष्ट कबन्ध की आकृति वाला दिखाई देने लगा ।

मयूरचित्रे तु

कबन्धसदृशे सूर्ये शस्त्रपातभयानि च ।
सेनापतेर्वधश्चैव भयं तद्देशभूपतेः ॥

विपरीताश्च धर्मिष्ठा जायन्ते निर्धनाः प्रजाः ।
गोब्राह्मणहितं कुर्यात् पुण्यं भूतसुखावहम् ॥

त्रिरात्रोपोषितो भूत्वा हविष्याशी पुरोहितः ।
अपामार्गस्य जुहुयात् समिधोऽष्टोत्तरं शतम् ॥

अच्छिन्नदर्विकां कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयेत्तदा ।
पायसं कृशरं चैव यथाकाममतन्द्रितः ॥

सुवर्ण रजतं कांस्यं दद्याद्भूरि च दक्षिणाम् ।

(इति प्रथमा शान्तिः)

सूर्यमण्डल के कबन्ध (विना मस्तक का मनुष्य) के आकृति की तरह दिखाई देने पर उस देश में शस्त्रपात (युद्ध) के भय होते हैं । उस देश के राजा और सेनापति का वध होता है, धर्मात्मा लोग विपरीत आचरण (पापकर्म) करते हैं और प्रजा निर्धन हो जाती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कबन्ध-उत्पात की शान्ति के लिए समस्त प्राणियों को सुख पहुँचाने वाले गाय और ब्राह्मणों की सेवा-पूजारूप पुण्य को करना चाहिये। हविष्यान्न भोजन कर तीन रातों तक उपवास करने के बाद अपामार्ग (चिड़चिड़ी) के १०८ समिधा (लकड़ी) से पुरोहित के द्वारा हवन कराना चाहिये और कलछुल भर (पूर्ण पात्र) पायस से इच्छा भर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये तथा सुवर्ण, चाँदी, काँसा आदि के साथ पूर्ण दक्षिणा देनी चाहिये। इसका नाम 'प्रथमा शान्ति' है।

मयूरचित्रे

शङ्खगोक्षीरवर्णे च सूर्ये युद्धं सुदुष्करम्।
कृष्णा रेखा रवेर्मध्ये भयाय मरणाय च॥

विशेष– 'कृष्णरेखो रविर्देशविभ्रमराजमृत्युसूचकः'— इति वृद्धगर्गेणोक्तम्। तद्वचनञ्च प्रागेव लिखितमस्ति।

शङ्ख और गोदुग्ध के समान सफेद सूर्यमण्डल दिखाई देने पर अति भयङ्कर युद्ध होता है। यदि सूर्यमण्डल में काली रेखा दिखलाई पड़े तो लोगों को भय उत्पन्न होता है और मृत्यु होती है। वृद्धगर्ग के वचन के अनुसार काली रेखा देश का विनाश और राजा के मृत्यु की सूचना देती है।

वराहसंहितायां तु

कृष्णा रेखा सवितरि यदि हन्ति ततो नृपं सचिवम्[१]।

विशेष– अल्पत्वेन नृपं सचिवमिति पाठो दर्शितः। नृपं हन्ति सचिवं च हन्ति इति तद्व्याख्यातम्।

यदि सूर्यमण्डल में काली रेखा दिखाई दे तो राजा और मन्त्री मारा जाता है। पाठान्तर से मन्त्री राजा को मारता है।

मयूरचित्रे

युवराजवधश्छिद्रे वधो माण्डलिकस्य च।
रविबिम्बस्थबुधाच्छादनकृतच्छिद्रस्य युवराजवधः फलम्। बुधस्य कुमारत्वात्। अधःस्थभार्गवकृतरविच्छिद्रस्य मण्डलेश्वरसचिववधः फलम्। भार्गवस्य सचिवत्वात्।

सूर्यबिम्ब में छिद्र दिखाई दे तो युवराज और मण्डलेश्वर सचिव का वध होता है। रविबिम्ब के नीचे बुध ग्रह के स्थित होने पर जब सूर्यबिम्ब में छिद्र दिखाई दे तो युवराज का वध होता है; क्योंकि बुध ग्रहों में कुमार माने जाते हैं और सूर्यबिम्ब

१. सचिवः इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के अधोभाग में शुक्र के स्थित रहने पर जब सूर्यबिम्ब में छिद्र दिखाई दे तो मण्डलेश्वर-सचिव का वध होता है; क्योंकि शुक्र का स्थान ग्रहों में मन्त्री का है।

शङ्खगोक्षीरवर्णादिषु शान्तिर्मयूरचित्रे

रवेः पूजोत्सवं कृत्वा जुहुयात् समिधां ततः।
अर्कस्याथ धृताक्तानामाकृष्णेनेति मन्त्रतः॥

द्वादशैव सहस्राणि त्वष्टाभिरधिकानि च।
पायसं मधुसंयुक्तं दध्योदनगुडोदने।
द्वादशाष्टौ द्विजान् षड्वा भोजयेद्दक्षिणां तथा॥

सुवर्णं रजतं ताम्रं वस्त्रं धान्यं च गोस्तिलान्।

(इति द्वितीया शान्तिः)

शङ्ख-गोदुग्धादि वर्णजनित सूर्यबिम्ब के उत्पात की शान्ति के लिए सूर्य की पूजा करके अकोन की समिधा में घृत लगाकर (घृत में भिंगोकर) बारह हजार आठ बार 'आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा' इस मन्त्र से हवन करना चाहिये। हवन के बाद बारह या आठ या छः ब्राह्मणों को मधु मिला हुआ पायस, दही-भात और गुड़-भात का भोजन कराकर सुवर्ण, चाँदी, ताँबा, वस्त्र, धान्य, गाय और तिल की दक्षिणा देनी चाहिये। यह द्वितीया शान्ति-विधि है।

कठश्रुतिः

यत्रादित्ये छिद्रं दृश्यते तत्र नरपतेर्वधमादिशेत्।

विशेषः– औशनसोऽपि प्रमाणान्तरेणैतदुक्तम्।

जहाँ सूर्यमण्डल में छिद्र दिखलाई दे, वहाँ राजा का मरण कहना चाहिये। ऐसा ही ऊशना ने भी कहा है।

मयूरचित्रे तु

दृष्ट्वा तु भास्करे छिद्रं भूपालस्य वधं वदेत्।
परचक्रागमं चैव यथा गर्गेण भाषितम्॥

विशेष– बुधभार्गवाच्छादनं विना रविच्छिद्रे परचक्रागमः। नृपजन्मनक्षत्रस्थ-रविच्छिद्रे तु नृपवधः।

सूर्यमण्डल में छिद्र देखकर राजा का वध (मरण) कहना चाहिये और दूसरे राजा का आक्रमण कहना चाहिये; जैसा कि गर्ग ने कहा है। अर्थात् सूर्यमण्डल में बुध या शुक्र के द्वारा ढके जाने के विना ही यदि छिद्र हो तो दूसरे राजा (शत्रु) का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आक्रमण होता है। राजा के जन्मनक्षत्र में सूर्य के स्थित रहने पर यदि छिद्र हो तो राजा का वध होता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

यस्यर्क्षेऽर्कच्छिद्रस्तस्य विनाशो महीशस्य।

जिस राजा के जन्मनक्षत्र में सूर्य के स्थित रहने पर सूर्यबिम्ब में छिद्र दिखाई दे, उस राजा का विनाश होता है।

वटकणिकायाम्

छिद्रो यस्यर्क्षेऽर्कस्तन्नक्षत्रो नृपो नश्येत्।

जिसके नक्षत्र में सूर्य के स्थित रहने पर छिद्र हो, उस नक्षत्र वाले राजा का विनाश होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

यन्नक्षत्रगते सूर्ये छिद्रं वै सम्प्रदृश्यते।
तज्जातः पार्थिवः क्षिप्रं परलोकं गमिष्यति॥

जिस नक्षत्र में सूर्य के स्थित रहने पर सूर्यमण्डल में छिद्र दिखाई दे, उस नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला राजा शीघ्र ही परलोक (स्वर्गलोक) जाता है।

विशेष– बहुच्छिद्रे तु यत्र-तत्र नक्षत्रस्थेऽपि रवौ नृपवधः।

तथा च वराहसंहितायाम्

नृपवधो बहुच्छिद्र-इति।

सूर्यमण्डल में अधिक छिद्र दिखाई देने पर किसी भी नक्षत्र में सूर्य के स्थित रहने पर राजा का वध होता है। मात्र एक छिद्र होने पर जन्मर्क्ष वाले राजा का वध होता है।

पराशरस्तु

सर्वतश्छिद्रो द्विधा वा दृश्यमानो राज्ञो मृत्युं देशविनाशं व्याचष्टे।

विशेष– अस्यार्थः— सर्वतश्छिद्रो राजमृत्युमाचष्टे। द्विधा दृश्यमानो देशविनाशं चकाराद्राजमृत्युं च।

सूर्यबिम्ब में चारो ओर छिद्र हो या दो सूर्यबिम्ब दिखाई दे तो राजा की मृत्यु और देश का विनाश होता है। अथवा अनेक छिद्र होने पर राजा की मृत्यु और दो सूर्यमण्डल दिखाई देने पर देश का विनाश होता है।

एकस्मिन्नपि सन्ध्याकालिकपाण्डुरच्छिद्रे विशेषमाह गार्ग्यः

आदित्ये पाण्डुरच्छिद्रः सन्ध्यायां यदि दृश्यते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सराष्ट्रः सपुरो राजा क्षिप्रमेव विनश्यति ॥

विशेष– भार्गवीये प्रमाणान्तरेणैतदुक्तं रविच्छिद्रे षष्ठी शान्तिः ।

यदि सन्ध्याकाल में सूर्यमण्डल में पाण्डु (कुछ-कुछ सफेद) वर्ण का छिद्र दिखाई दे तो देश और नगर के साथ राजा का भी शीघ्र विनाश होता है ।

भार्गवीय में प्रमाणान्तर के द्वारा रविच्छिद्र का फल कहा गया है । इसके लिए षष्ठि शान्ति बतलायी गयी है ।

मयूरचित्रे तु

तिलैर्दूर्वाभिराम्रस्य पत्रैश्चैव यवैस्तथा ।
धान्यैरौदुम्बरीभिश्च श्रीफलैराहुतिक्रिया ॥
समाप्तं भोजनं कृत्वा नटप्रेक्षणमादिशेत् ।
वंशदण्डांस्ततो दद्याद्वारणान् स्यात्ततः शुभम् ॥

विशेष– अपर्वग्रहणे रविच्छिद्रे दिवोल्कापातेषु मयूरचित्रे तृतीया शान्तिर्विहिता सा चापर्वग्रहणे लिखितव्या । कठश्रुतौ च रविच्छिद्रे सूर्यदेवतादिशान्तिर्विहिता; सा च कठश्रुतिरहितसूर्यदैवताद्भुतेषु लिखितव्येति ।

तिल, दूर्वा, आम के पत्ते, जौ, धान्य, उदुम्बर (गुल्लरि), नारियल आदि से हवन कर भोजन करना चाहिये और तदनन्तर नर्तक का दर्शन करना चाहिये । तत्पश्चात् वेशदण्डसहित हाथी का दान करने से शुभ होता है अर्थात् उपकरण (हौदा आदि) सहित हाथी का दान करने से उत्पातजन्य दोष का नाश होता है ।

मयूरचित्रे तु

रक्तोत्पलनिभे भानौ नभःस्थे भूपतेर्वधः ।

विशेष– एतदपि मध्याह्न एव ।

मध्याह्न के समय सूर्यमण्डल लाल कमल की कान्ति की तरह दिखाई दे तो राजा का वध होता है ।

पराशरः

अर्धं प्रजानाशाय ।

जब सूर्यबिम्ब आधा ही दृश्य हो, अर्थात् आधा उत्पात से आच्छादित हो तो प्रजा का नाश होता है ।

मयूरचित्रे तु

दृश्यते भास्करस्यार्धं गृहीतमिव चापरम् ।
कम्पते यदि वाऽप्येव तदा विद्याज्जनक्षयम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उदयास्तमये भानौ चक्रवद्भ्रमणे सति।
परचक्रागमो व्याधिर्देशस्य च परिक्षयः॥

अनयोर्वर्णसाङ्कर्यमित्यादिर्विप्लवो भवेत्।
प्रथमां वा द्वितीयां वा तेषु शान्तिं प्रयोजयेत्॥

जब सूर्यमण्डल का आधा भाग ही दृश्य हो और आधा भाग ग्रसित की तरह आच्छादित हो अथवा जल की तरह कम्पायमान हो तो लोगों का नाश होता है।

उदयास्त काल में चक्र (पहिया) की तरह सूर्यमण्डल कम्पित हो तो दूसरे राजा का आगमन (आक्रमण), व्याधि और देश का सर्वनाश होता है।

उदयास्त काल में सूर्यमण्डल में वर्णसाङ्कर्य (अनेक वर्णों का होना) राजा, प्रजा आदि का विनाश करता है। इस उत्पात की शान्ति के लिए उक्त प्रथमा या द्वितीया शान्ति करनी चाहिये।

मयूरचित्रे सप्तमी शान्तिः

व्योममध्यगतं पश्येद्यदि सूर्यद्वयं नरः।
चौरव्याघ्रभयावृष्टिदुर्भिक्षं राष्ट्रविप्लवः॥

दधिमधुघृताक्तानां जुहुयादयुतं शुचिः।
उपोष्यार्कस्य समिधां धेनुं दद्याद्द्विजातये॥

(इति सप्तमी शान्तिः)

आकाश के मध्य में सूर्य के स्थित रहने पर अर्थात् मध्याह्न समय में मनुष्य यदि दो सूर्यों को देखे तो चौर और व्याघ्रभय, अवृष्टि और दुर्भिक्ष से देश का नाश होता है। इन उत्पातों के शमन के लिए पवित्रता के साथ उपवास करके दही, मधु और घृत से अकौन (आक) की समिधा को भिंगोकर (आर्द्र करके) सूर्य का हवन करना चाहिये; तदनन्तर ब्राह्मणों को गोदान करना चाहिये। यह सप्तमी शान्ति-विधि बतलायी गई है।

नारदः

आकाशस्थो यदा भानुरुदित्वा न प्रकाशते।
व्याघ्रचौरभयं चैव दुर्भिक्षं राष्ट्रविप्लवः॥

विशेष– एतदपि मध्याह्न एव, न प्रकाशते तथाविधप्रकाशयुक्तो न भवति।

मध्याह्न के समय उदित होने पर भी सूर्यमण्डल प्रकाशित नहीं हो अर्थात् स्वाभाविक प्रकाश से अल्प प्रकाश या प्रकाशहीन सूर्य दिखाई दे तो व्याघ्र और चोर का भय, दुर्भिक्ष तथा देश का विनाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शान्तिः

इमा रुद्रायेति मन्त्रैर्जुहुयात् सर्पिषा हुतिम्।
आहुतेर्द्वे सहस्रे तु होमश्च कथितो भवेत्॥
[1]द्विजेभ्यः दक्षिणां दद्यात् ततः सम्पद्यते शुभम्।

उपर्युक्त नारदोक्त उत्पात के शमन के लिए यह शान्तिविधि बतलायी गई है— 'इमा रुद्राय तपसे कपर्द्दिने' इत्यादि मन्त्र से घृत का हवन करना चाहिये। दो हजार आहुति को होम (हवन) कहा जाता है। हवन के उपरान्त ब्राह्मणों को वृषभ (बैल) दक्षिणा के रूप में देने से उक्त उत्पातों का शमन होता है।

इति विहितविशेषशान्तय आदित्योत्पाताः। अत्रानुक्तफलपाकसमयानां सूर्याद्भुतानां पक्षेण फलपाको बोद्धव्यः।

तथा च गार्गीये

पक्षाद्विपाकः सूर्यस्य - इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-
विरचितेऽद्भुतसागरे सूर्याद्भुतावर्त्तः

जिन सूर्याद्भुत के फल का समय नहीं कहा गया है, उनका काल १५ दिन समझना चाहिये।

*

---

१. उपलब्धपुस्तकेषु वृषभं तथा द्विजानाम् इति पाठद्वयं दृश्यते। साधु पाठः द्विजेभ्य इति प्रतिभाति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ चन्द्राद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकचन्द्रलक्षणमाह पराशरः

चन्द्रमाः स्निग्धप्रसन्नो रश्मिवान् श्वेतः क्षेमसुभिक्षकरः ।

यदि चन्द्रमा निर्मल, प्रसन्न, किरणयुक्त और सफेद दिखाई दे तो कल्याण और सुभिक्ष करने वाला होता है ।

तथा च वराहसंहितायाम्

यदि कुमुदमृणालहारगौरस्तिथिनियमात् क्षयमेति वर्धते वा ।
अविकृतगतिमण्डलांशुयोगो भवति नृणां विजयाय शीतरश्मिः ॥

स्निग्धः स्थूलः समशृङ्गो विशालस्तुङ्गश्चोदग्विचरन् नागवीथ्याम् ।
दृष्टः सौम्यैरशुभैर्विप्रयुक्तो लोकानन्दं कुरुतेऽतीव चन्द्रः ॥

विशेष– अत्रैव समागमे नागवीथीं वक्ष्यामः । येषामयं स्वामी तेषामेवम्भूतो विशेषेणाभ्युदयाय । विपरीतो विशेषेण विपरीताय ।

यदि विकाररहित गति और विकाररहित किरण वाला चन्द्रमण्डल कुमद (पुष्पविशेष), मृणाल या हार (मुक्ताहार) के समान गौर वर्ण (सफेद) होकर तिथि के नियमानुसार घटता और बढ़ता हो तो मनुष्यों की विजय के लिए होता है ।

यदि निर्मल, स्थूल (मोटा), समान शृङ्ग वाला, विशाल, उत्तर शृङ्ग उन्नत होकर नागवीथी में चन्द्रमा विचरण करता हो और शुभ ग्रहों से देखा जाता हो तथा पापग्रहों से युक्त न हो तो मनुष्यों को अतिशय आनन्द देता है ।

इसके विपरीत चन्द्रमा विपरीत फल देता है ।

चन्द्रस्वामिकान्याह यवनेश्वरः

स्त्रीचित्तनिद्रारतिभक्ष्यपेयःशीतद्रवस्वादुरसौषधीनाम् ।
स्रग्वस्त्रभूषामणिमौक्तिकानां प्रभुः शशाङ्को लवणाम्बुजानाम् ॥

स्त्री, चित्त (मन), निद्रा, रति, भक्ष्य (खाने की वस्तु), पीने की वस्तु (पेय), शीत (शीतल वस्तु), द्रव एवं मीठा रस, औषधि, माला, वस्त्र, आभूषण, मणि, मोती, लवण (नमक) और जल में उत्पन्न होने वाले कमल आदि वस्तुओं के स्वामी चन्द्रमा हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपश्च

पर्वता जलदुर्गाश्च कोशलाः पुङ्गणाः हलाः ।
स्त्रीराज्यं [1]तरुकर्काद्यास्तुषारा वनवासिनः ॥

मौक्तिका मणिशङ्खाब्जमौषधीः कुसुमं फलम् ।
द्वीपा महार्णवीयाश्च मधुरा लवणादयः ॥

गोधूमाः शालयः शृङ्गिकर्षकाश्च यवा अपि ।
सोमपब्राह्मणानाञ्च याज्ञिकास्तुरगा रसः ॥

स्त्रीसौभाग्यविवित्तानि हास्यलास्येक्षितानि च ।
एतेषामधिपश्चन्द्रो हृष्टानाञ्च प्रकीर्त्तितः ॥

पर्वत, जलदुर्ग, कोशल, पुङ्गण, हल, स्त्रीराज्य, तरु, कर्कादि (ककड़ी आदि, पाठान्तर से भरुकच्छ), तुषार, वनवासी, मोती, मणि, शङ्ख, कमल या जल से उत्पन वस्तु, औषधि, फूल, फल, महासागर के द्वीप (महासागर के अन्तर्गत द्वीप), मधुर, लवण आदि, गेहूँ, धान्य, सींग वाले पशु, किसान, जौ, सोमरस पान करने वाले ब्राह्मण, यज्ञ करने वाले, घोड़ा, रस, स्त्री, सौभाग्यकारक वस्तु, हास्य-प्रेम, कटाक्ष आदि और हृष्ट-पुष्ट के स्वामी चन्द्रमा कहे गये हैं।

वराहसंहितायाम्

गिरिसलिलदुर्गकोशलभरुकच्छसमुद्ररोमकतुषाराः ।
वनवासितङ्गणहलस्त्रीराज्यमहार्णवद्वीपाः ॥

मधुररसकुसुमफललवणसलिलमणिशङ्खमौक्तिकाब्जानाम् ।
शालियवौषधिगोधूमसोमपाक्रन्दविप्राणाम् ॥

सितसुभगतुरगरतिकरयुवतिचमूनाथभोज्यवस्त्राणाम्[2] ।
शृङ्गिनिशाचरकार्षकयज्ञविदां चाधिपश्चन्द्रः ॥

पर्वतदुर्ग, जलदुर्ग, कोशल, भरुकच्छ, समुद्र, रोमक, तुषार, वनवासी, तङ्गण, हल, स्त्रीराज्य, महासागर के अन्तर्गत द्वीप, मधुर रस, पुष्प, फल, लवण, जल, मणि, शङ्ख, मोती, जल से उत्पन्न होने वाली वस्तु (कमल आदि), धान्य, जौ, ओषधी, गेहूँ, सोम रस पीने वाले, आक्रन्द (रक्षक), ब्राह्मण, सफेद वस्तु, सब जनों का प्रिय घोड़ा, कामी, स्त्री, सेनापति, भोजनसामग्री, वस्त्र, शृङ्गी पशु, निशाचर, किसान, याज्ञिक— इन सबों के स्वामी चन्द्र हैं।

---

१. भरुकच्छश्च इति पाठान्तरम्।
२. विप्राणाम् इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथाशुभसूचकचन्द्रलक्षणम्

तत्र पराशरः

खण्डः स्फुटितो, विवर्णो, वेपनोऽशशाङ्कश्चन्द्रमाः
प्रजानाशाय राज्योपप्लवाय च – इति ।

खण्डित, टूटा हुआ, विवर्ण (विकृत वर्ण), काँपता हुआ, शशक (खरहे) के चिह्न से रहित चन्द्रमा देखा जाय तो प्रजा और राज्य का विनाश होता है।

विशेष– अशशाङ्क इति लक्ष्मरहितः ।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवक्षयनिमित्तम्

अलक्ष्यः प्रभया हीनः पौर्णमासीं च कार्त्तिकीम् ।
चन्द्रोऽभूदग्निवर्णश्च पद्मवर्णे नभस्तले ॥

कार्त्तिकी पूर्णिमा को चन्द्रमा अलक्ष्य (देखने योग्य नहीं) या अलक्ष्म (चिह्नरहित), प्रकाशहीन, अग्नि के सदृश वर्ण और कमल (लाल) के वर्ण के समान आकाश में हो गया।

वराहसंहितायाम्

भस्मनिभः परुषोऽरुणमूर्त्तिः शीतकरः किरणैः परिहीनः ।
श्यावतनुः स्फुटितः स्फुरणो वा क्षुड्डमरामयचौरभयाय ॥

विशेषः– डमरः उपप्लवः ।

यदि चन्द्रबिम्ब भस्म (राख) के समान रूखा वर्ण, रक्तवर्ण, किरणों से हीन, कृष्णवर्ण, खण्डित या काँपता हुआ हो तो दुर्भिक्ष, कलह, रोग और चोरों का भय होता है।

वृद्धगर्गः

विलग्नमध्यो नीलाभो वज्रसंस्थानसंस्थितः ।
मध्यच्छिद्रो विलीनाभो भयं कारयते महत् ॥

यदि चन्द्रबिम्ब मध्य में नील वर्ण के समान वर्ण वाला हो, वज्र संस्थान में हो, बिम्बमध्य में छिद्र हो या कान्तिहीन हो तो महान् भय करता है।

अथ वर्णफलं भार्गवीये

शुक्ले शरीरे सोमस्य ब्रह्मवृद्धिं विनिर्दिशेत् ।

यदि चन्द्रबिम्ब का वर्ण सफेद दिखाई दे तो ब्राह्मणों की वृद्धि कहनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गर्गस्तु

शुक्लः स्निग्धः प्रसन्नश्च क्षेमवर्षकरः शशी ।

सफेद, निर्मल और आह्लादित चन्द्रबिम्ब कल्याणकारक और वृष्टिकारक होता है।

वृद्धगर्गस्तु

दधिशङ्खसवर्णस्तु मुक्ताराशिनिभोऽमलः ।
भ्राजिष्णुरतिसुस्निग्धः क्षेमारोग्यकरः शशी ॥

यदि चन्द्रबिम्ब दही और शङ्ख के वर्ण के समान उजला, मोती-समूह की कान्ति के समान निर्मल एवं अतिशय निर्मल प्रकाशित हो तो कल्याण और आरोग्य देने वाला होता है।

गर्गः

पाण्डुवर्णैः शशी मध्ये सुभिक्षक्षेमकारकः ।

चन्द्रबिम्ब का मध्य पाण्डुवर्ण (श्वेत; परन्तु निर्मल) हो तो सुभिक्ष और कल्याण करता है।

गार्गीयेऽपि

सुवर्णाभो वस्त्रवृद्धिः ।

सुवर्ण की कान्ति वाला चन्द्रमा वस्त्र-वृद्धि करता है।

हरिवंशे हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

विवर्णत्वं च भगवान् गतो निशि निशाकरः ।

हिरण्यकशिपु के वध के समय रात में चन्द्रमा विवर्ण (विकारयुक्त वर्ण वाला) हो गया था।

पराशरः

भस्मारुणवह्निताम्रपीतपाण्डुनीलरूक्षवर्णैः क्षुद्वैरकरः ।

भस्म के समान वर्ण, रक्तवर्ण, अग्नि के समान वर्ण, पीतवर्ण, पाण्डुवर्ण (थोड़ा श्वेत-पीत), नील वर्ण और रूक्ष (रूखा) चन्द्रबिम्ब दुर्भिक्ष और वैर (कलह) करने वाला होता है।

वृद्धगर्गसंहितागार्गीयभार्गवीयेषु

मञ्जिष्ठारुणवर्णो वा ज्वरं तीव्रं निवेदयेत् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि चन्द्रबिम्ब माञ्जिष्ठ (मजीठ वर्ण) की तरह रक्त वर्ण का हो तो तीव्र ज्वर होता है।

वृद्धगर्गसंहितायां गार्गीये च

लोहिते कुप्यते शस्त्रं दुर्भिक्षं चोपजायते।
कपिले कुप्यति त्वग्निरक्षिरोगश्च जायते॥

कृष्णवर्णो गवां हर्त्ता दुर्भिक्षस्य च कारकः।
नानाविधैर्व्याधिभिश्च तदा सम्पीड्यते प्रजा॥

हरितः सर्वशस्यानामुपद्रवकरः स्मृतः।

यदि चन्द्रबिम्ब रक्त वर्ण का दिखाई दे तो शस्त्रकोप और दुर्भिक्ष होता है। कपिल (थोड़ा पीला) वर्ण हो तो अग्निकोप और नेत्ररोग होता है। कृष्ण वर्ण हो तो गाय का नाश, दुर्भिक्ष और अनेक प्रकार की व्याधियों से प्रजा पीड़ित होती है तथा हरा वर्ण सभी धान्यों का उपद्रव (नाश) करता है।

वृद्धगर्गः

हरितोऽपीतये विद्यात् पशूनां चाप्युपद्रवम्।
पीतवर्णो गजान् हन्ति पीतो व्याधिकरस्तथा॥

हरित (हरा) वर्ण का चन्द्रमा ईति (धान्यादि को क्षति पहुँचाने वाले तित्तिर आदि) के लिए तथा पशुओं के उपद्रव के लिए होता है। पीला वर्ण वाला चन्द्रमा हाथी को मारता है तथा मनुष्यों के लिए रोग करता है।

तत्रैव

कृष्णे शरीरे सोमस्य शूद्राणां वधमादिशेत्।
पीते शरीरे सोमस्य वैश्यानां वधमादिशेत्॥

रक्ते शरीरे सोमस्य राज्ञां च वधमादिशेत्।

विशेषः– राज्ञां क्षत्रियाणाम्।

यदि चन्द्रबिम्ब काला हो तो शूद्रों का वध करता है, पीला हो तो वैश्यवर्णों का और लाल हो तो क्षत्रियों का वध करता है।

वृद्धगर्गः

नीले श्यामे च शशिनि रूक्षे धूमतमोवृते।
अनावृष्टिभयं रोगानग्निवातं विनिर्दिशेत्॥

पिण्डितस्तस्कराकर्षी रसोऽन्नार्घकरो भवेत्।[1]

---

१. रसनाशकरः इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– पिण्डितो घनः ।

यदि चन्द्रबिम्ब नील वर्ण, श्याम वर्ण, रूक्ष, धूम और अन्धकार से आच्छादित हो तो लोगों को अनावृष्टि का भय, रोगभय, अग्निभय और वायुभय होता है। पिण्डित (अतिशय मोटा) चन्द्रबिम्ब चौर-वृद्धि और रस तथा अन्न को महँगा करता है।

अथोच्चनीचस्थानोदितचन्द्रफलम्। तत्र वृद्धगर्गः

उच्चैः सुभिक्षं नीचैस्तु सोमे दुर्भिक्षलक्षणम्।

चन्द्रमा उच्च स्थानस्थ उदित हो तो सुभिक्ष और नीच स्थानस्थ होकर उदित हो तो दुर्भिक्ष होता है।

अथ प्रथमोदितचन्द्रस्य नीलमेघाद्यावरणफलम्। तत्र वृद्धगर्गः

यदा सोमः प्रतिपदि नीलैराच्छाद्यते घनैः।
अन्यर्तुकाले यात्रायां मरणं तत्र निर्दिशेत्॥

विशेषः– अन्यर्त्तुकाल इति प्रावृट्कालादन्यत्रेति।

वर्षा ऋतु के अतिरिक्त समय में जब शुक्ल पक्ष में प्रथम दर्शन के समय चन्द्र नील मेघों से ढँक जाता है तो यात्रा करने पर मृत्यु होती है।

तथा च

यदा सोमः प्रतिपदि रजसा तमसाऽथ वा।
आवृतः प्रतिदृश्येत भयं तत्र समादिशेत्॥

जब प्रथम दर्शन के समय चन्द्रमा धूलि या अन्धकार से आवृत्त (आच्छादित) दिखाई दे तो वहाँ लोगों को भय होता है।

विशेष– 'प्रतिपद्ग्रहणं प्रथमदर्शनोपलक्षणम्।' अर्थात् चन्द्रदर्शन शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि में होता है। प्रतिपत्तिथि में चन्द्रदर्शन नहीं होता है। इसलिए प्रतिपदि अर्थात् 'प्रथम चन्द्रदर्शन के समय' अर्थ युक्तियुक्त होगा।

इति चन्द्रकुष्ठादिशरीरलक्षणम्

अथ गणितागतप्रमाणादधिकन्यूनप्रमाणफलम्

वराहसंहितायाम्

ज्ञेयो विशालमूर्त्तिर्नरपतिलक्ष्मीविवृद्धये चन्द्रः।

यदि चन्द्रबिम्ब गणितागत प्रमाण से तिथिनियम के अनुपात में अधिक विस्तृत हो तो राज्यलक्ष्मी की वृद्धि होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गः

विशालः श्रीकरो भूमेः राज्ञश्चैव जयावहः।
सुवृष्टिः सुषमा चैव ब्रह्मवृद्धिस्तथोत्तरा॥

विशेषः– विशालः प्रस्तारायामाभ्यां वृहत्प्रमाणः।

यदि चन्द्रबिम्ब गणितागत प्रमाण से वृहत्प्रमाण वाला दिखलाई दे तो पृथ्वी की शोभा या लक्ष्मी बढ़ाता है, राजा की विजय होती है, अच्छी वर्षा, सुभिक्ष और ब्राह्मणों की वृद्धि होती है।

वराहसंहितायाम्

स्थूलः सुभिक्षकारी प्रियधान्यकरस्तु तनुमूर्त्तिः।
स्वल्पो दुर्भिक्षकरो महान् सुभिक्षावहः प्रोक्तः॥

विशेषः– प्रियधान्यकरः महार्घकर इति।

यदि चन्द्रमा की मोटी मूर्त्ति हो तो सुभिक्ष करने वाला और पतली मूर्त्ति हो तो महँगाई करने वाला होता है।

यदि चन्द्रबिम्ब छोटा हो तो दुर्भिक्ष और बड़ा हो तो सुभिक्ष होता है।

अथ संस्थानानि। तत्र नौसंस्थानमाह वृद्धगर्गः

ईषन्मात्रोद्यतं शृङ्गं विशालः कुक्षिमान् स च।
शशी तत् खलु नौस्थानं क्षेमसौभिक्षकारकम्॥

विशेष– उभयमेव शृङ्गं यदा किञ्चिदुन्नतं भवति तदा नौस्थानं भवति।

चन्द्रमा के दोनों शृंग जब कुछ उन्नत होकर विशाल और नाव की तरह गहरा दिखाई देते हैं तब 'नौ' नामक संस्थान होता है। यह संस्थान कल्याण और सुभिक्षकारक होता है।

तथा च पराशरः

नाभ्युच्छ्रितोभयं शृङ्गं कुक्षिमान् विशालो नौस्थानम्।

चन्द्रमा के दोनों शृङ्ग अधिक ऊँचे न हों अर्थात् थोड़े से ऊँचे हों, परन्तु विस्तृत उदर वाला (नाव की तरह) हो तो वह नौसंस्थान होता है।

गार्गीये

नातिमात्रोन्नतः पीनो विशालः शुभमण्डलः।
शुक्लः स्निग्धो यदा चन्द्रो नौस्थानं तदिहोच्यते॥

तत्र सर्वस्य लोकस्य सुखं स्यादुत्तरोत्तरम्।
नाविकानां भवेत् पीडा नौस्थाने शशिनि स्थिते॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– शुभमण्डलः शोभनं छायामण्डलं यस्येति।

यदि चन्द्रमा के शृङ्ग अधिक मात्रा में उन्नत नहीं हों; परन्तु मोटे, विस्तृत, सुन्दर छायामण्डल वाले (प्रथम चन्द्रदर्शन के समय चन्द्रमा का प्रकाशित भाग पश्चिम से कटा हुआ शृङ्ग वाला भाग के अतिरिक्त शेष चन्द्रबिम्ब छाया के समान जो दृश्य होता है। वह सुन्दर हो), सफेद और निर्मल दिखाई दे तो वह नौसंस्थान कहलाता है।

इस नौसंस्थान वाले चन्द्रमा के दर्शन होने से सभी लोगों को उत्तरोत्तर सुख होता है और नाविकों को पीड़ा होती है।

भार्गवीये

स्निग्धः पीनः सुवर्णाभः पक्षादौ यदि चन्द्रमा।
नौस्थायी सम्प्रदृश्येत [१]वस्त्रवृद्धिं विनिर्दिशेत्॥

यदि चन्द्रमा शुक्लपक्षादि में अर्थात् प्रथम चन्द्रदर्शन के दिन (द्वितीया तिथि में) नौसंस्थान में स्थित होकर निर्मल, मोटा, सुवर्ण की तरह कान्ति वाला दिखाई दे तो वस्त्रों (पाठान्तर से धनों) की वृद्धि होती है।

अथ लाङ्गलम्

तत्र पराशरः

ईषदुन्नतोत्तरशृङ्गो लाङ्गलसंस्थानम्। तत् सुभिक्षक्षेमकारकम्।

यदि चन्द्रमा का उत्तर शृङ्ग दक्षिण शृंग से थोड़ा उन्नत हो तो वह लाङ्गल (हल) संस्थान कहलाता है। यह संस्थान सुभिक्ष और कल्याणकारी होता है।

गार्गीये तु

नीचं स्याद्दक्षिणं शृङ्गं चन्द्रस्योन्नतमुत्तरम्।
तत् स्थानं लाङ्गलं नाम क्षेमारोग्यसुभिक्षकृत्॥
राज्ञां प्रीतिर्निर्निमित्तं पीडा लाङ्गलजीविनाम्।

विशेषः– उन्नतमित्यर्धोन्नतम्।

चन्द्रमा का दक्षिण शृङ्ग आधा से कम उन्नत हो और उत्तर शृङ्ग आधा उन्नत हो अर्थात् दक्षिण शृङ्ग से उत्तर शृङ्ग उन्नत हो तो लाङ्गल संस्थान (हलसंस्थान) नामक वह स्थान होता है। इससे कल्याण आरोग्य और सुभिक्ष होता है। यह संस्थान राजाओं में विना कारण स्नेह और हल (लाङ्गल) से जीवनयात्रा करने वालों की पीड़ा के लिए होता है।

---

१. वसुवृद्धिम् इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा वराहसंहितायाम्

अर्धोन्नते च लाङ्गलमिति पीडा तदुपजीविनां तस्मिन् ।
प्रीतिश्च निर्निमित्तं मनुजपतीनां सुभिक्षं च ॥

यदि चन्द्रशृङ्ग आधा उन्नत हो तो लाङ्गलसंस्थान होता है । इस हल से जीवन-यापन चलाने वाले को पीड़ा होती है और राजाओं में विना कारण स्नेह होता है तथा सुभिक्ष होता है ।

वृद्धगर्गस्तु

उत्तरं शृङ्गमुद्यम्य नीचं यद्यस्य दक्षिणम् ।
कुरुते लाङ्गलस्थानं चन्द्रमाः शुभदर्शनम् ॥

तस्मिन् क्षेमं सुभिक्षं च स्थाने भवति लाङ्गले ।
अनामयं प्रजानाञ्च राज्ञां च विजयो भवेत् ॥

पूर्वाणामुत्तराणाञ्च विनिर्देश्यस्तदा जयः ।
[१]ब्रह्मक्षत्रविवृद्धिञ्च दिशं हन्याच्च दक्षिणाम् ॥

यदि चन्द्रमा का उत्तर शृङ्ग उन्नत और दक्षिण शृङ्ग निम्न हो तो वह शुभ लाङ्गल संस्थान होता है । इसमें प्रजाओं का कल्याण, सुभिक्ष और आरोग्यता होती है तथा राजाओं की जय होती है । पूरब और उत्तर दिशाओं में रहने वालों की जय होती है । ब्राह्मण तथा क्षत्रियों की वृद्धि होती है और दक्षिण दिशा में रहने वालों का विनाश होता है ।

भार्गवीये

रूप्याभो लाङ्गलस्थायी श्रीमान् संलक्ष्य मण्डलः ।
पक्षादौ यदि दृश्येत ब्रह्मक्षत्रसुखावहः ॥

यदि पक्षादि में (प्रथम चन्द्रदर्शन के समय) चन्द्रमा का मण्डल चाँदी के कान्ति की तरह वर्ण वाला और शोभायमान, लाङ्गलसंस्थान में स्थित हो तो ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिए सुखकारक होता है ।

वृद्धगर्गस्तु

रूप्याभो लाङ्गलस्थायी ब्रह्मक्षत्रसुखावहः ।
कुङ्कुमाभो मरणदो हरिद्राभस्तथैव च ॥

चाँदी की कान्ति वाला लाङ्गलसंस्थान ब्राह्मण और क्षत्रियों के लिए सुखकारक होता है और कुङ्कुम की कान्ति की तरह पीत-रक्त तथा हरिद्रा की तरह पीला वर्ण वाला लाङ्गलसंस्थान मरणकारक होता है ।

---

१. बहुक्षत्र - इति पाठान्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत् तु

लाङ्गली ग्रसते लोकान् युगान्तं प्रतिपादयेत् ।

विशेषः– इति भार्गवीयवाक्यं दुष्टलाङ्गलपरम् ।

दुष्ट लाङ्गल (दक्षिण शृङ्गोन्नत तथा अशुभ वर्ण वाले) संस्थान में स्थित चन्द्रमा लोगों का संहार कर युगान्त (प्रलय) करता है ।

गर्गः

यदा सोमः प्रतिपदि नौस्थायी सम्प्रदृश्यते ।
उत्तरोज्ज्वलशृङ्गो वा लाङ्गली वा मनोहरः ॥
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं सर्वभूतेषु निर्दिशेत् ।
राज्ञां च विजयं ब्रूयाद्वर्धन्ते शृङ्गिणस्तथा ॥

जब चन्द्रमा प्रतिपत्तिथि अर्थात् शुक्ल पक्षादि में प्रथम चन्द्रदर्शन के दिन में नौसंस्थान रूप में या उत्तरशृङ्ग उज्ज्वल (शुक्ल) वर्ण या सुन्दर लाङ्गलसंस्थान के रूप में दृष्ट हो तब सभी प्राणियों के लिए कल्याण, सुभिक्ष और आरोग्यकारक होता है, राजाओं की विजय होती है और शृङ्गी पशुओं की वृद्धि होती है ।

अथ मृदङ्गः

तत्र वराहसंहितायाम्

चन्द्रो मृदङ्गरूपः क्षेमसुभिक्षावहो भवेत् ।

विशेषः– मृदङ्गरूपो मध्ये मृदङ्गवत् स्थूलः ।

यदि चन्द्रबिम्ब मृदङ्ग (बीच भाग मृदङ्ग वाद्यविशेष की तरह मोटा हो) की तरह देखने में आवे तो कल्याण और सुभिक्ष होता है ।

यथा चन्द्रशुभलक्षणे गर्गः

मृदङ्गमध्यः सोमो वा सौम्यायां चोन्नतो दिशि ।

यदि चन्द्रमा मृदङ्ग की तरह मध्य में स्थूल हो या उत्तर दिशा में उन्नत शृङ्ग वाला हो तो शुभ होता है ।

अथाशुभसंस्थानानि; तत्र दुष्टलाङ्गलमाह गार्ग्यः

दक्षिणं चोन्नतं शृङ्गं न्यूनं तस्य तथोत्तरम् ।
दुष्टलाङ्गलसंस्थानं प्रजाक्षयकरं स्मृतम् ॥

विशेषः– उन्नतमिति अर्धोन्नतमित्यर्थः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि चन्द्रमा का दक्षिण शृङ्ग अर्धोन्नत हो और उत्तर शृङ्ग उससे न्यून हो तो वह दुष्ट लाङ्गलसंस्थान होता है और वह प्रजा का नाश करता है।

तथा च पराशरः

अर्धोन्नतदक्षिणोन्नतशृङ्गो दुष्टलाङ्गलः पुरसैन्योद्योगनाशकृत् – इति।

विशेषः– पुरसैन्ययोरुद्योगनाशः।

यदि चन्द्रमा का दक्षिण शृङ्ग अर्धोन्नत हो और उत्तरशृङ्ग उससे न्यून हो तो वह दुष्ट लाङ्गलसंस्थान नगर के उद्यम और सेना के उद्यम का नाश करता है अर्थात् नगर और सेनाओं की यात्रा में उद्यम का नाश करता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

दक्षिणविषाणमर्धोन्नतं यदा दुष्टलाङ्गलाख्यं तत्।
पाण्ड्यनरेश्वरनिधनकृदुद्योकरं बलानां च॥

जब चन्द्रमा का दक्षिण शृङ्ग अर्धोन्नत दिखाई दे (और उत्तरशृङ्ग नत हो) तब दुष्टलाङ्गल नाम का संस्थान होता है। इसमें पाण्ड्य देश के राजा की मृत्यु होती है और सेनाओं की यात्रा (युद्ध के लिए) में उद्यम करता है।

गार्गीये

नीचमुत्तरशृङ्गं स्याद्दक्षिणं चोन्नतं यदि।
सैन्योद्वेगकरं स्थानं तदिन्दोर्दुष्टलाङ्गलम्॥
पाण्ड्यस्य नृपतेर्मृत्युं कुर्याच्चन्द्रस्तथोदितः।

जब प्रथमोदित चन्द्रमा का उत्तर शृङ्ग नीच हो तथा दक्षिण शृङ्ग उन्नत (अर्धोन्नत) हो तब वह चन्द्रमा का दुष्ट लाङ्गलसंस्थान सेनाओं को उद्वेग (कष्ट) और पाण्ड्य देश के राजा की मृत्यु कराता है।

वृद्धगर्गः

दक्षिणं शृङ्गमुद्यम्य नीचमस्य तथोत्तरम्।
सेनोद्योगकरं स्थानं कुरुते दुष्टलाङ्गलम्॥
दक्षिणाः पश्चिमाश्चैव विजयन्ते तथास्थिते।
वैश्यशूद्राभिवृद्धिश्च शस्त्रमृत्युश्च जायते॥
वाह्लीकयवनायोध्यांस्तुषारांश्च समालवान्।
शूरसेनांश्च निर्हन्ति चन्द्रश्चैव तथोत्थितः॥

यदि चन्द्रमा का दक्षिण शृङ्ग उच्च हो और उत्तर शृङ्ग नीच हो तो वह दुष्ट लाङ्गलसंस्थान होता है। इस संस्थान में सेनाओं का उद्यम (युद्ध-यात्रा में उद्योग) होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। दक्षिण और पश्चिम दिशा में रहने वालों की विजय होती है। वैश्य वर्ण और शूद्र वर्णों की वृद्धि होती है (अर्थात् ब्राह्मण और क्षत्रियों की हानि होती है तथा पूरब और उत्तर दिशाओं में स्थित लोगों की पराजय होती है)। ऐसा चन्द्रमा जब प्रथमोदित होता है तब वाह्लीक, यवन, अयोध्या, तुषार, मालव, शूरसेन आदि देशों के निवासियों का नाश करता है।

अथ धनुर्गार्गीये

धनूरूपे चन्द्रमसि युद्धं सर्वत्र जायते।
ज्यायतस्तु जयस्तेषां पृष्ठतस्तु पराजयः॥

विशेषः– ज्यौतिषपराशरवराहसंहिताद्वयेऽपि चैवम्।

यदि चन्द्रमा की आकृति धनुष के समान हो तो उसको धनु (कार्मुक) संस्थान कहते हैं। इसमें सब जगह युद्ध होता है तथा जिस तरफ धनुष की जीवा होती है, उस दिशा के राजा की जीत और विपरीत दिशा के राजा की हार होती है।

तथथा वराहसंहितायाम्

कार्मुकरूपे युद्धानि यत्र तु ज्या ततो जयस्तेषाम् (इति)

कार्मुक (धनु) रूप चन्द्रमा की आकृति होने पर युद्ध होते हैं और जिधर धनु की जीवा होती है, उधर जय होता है।

गर्गवृद्धगर्गौ

उदये च यदा सोमो दृश्यो धनुरिवोदितः।
धनुर्धराणामुद्योगो जगतश्च पराभवः॥

क्षत्रिया क्षत्रियान् हन्ति वर्णाश्चैव तथाऽपरे।
ज्यायतश्च जयस्तेषां पृष्ठतश्च पराजयः॥

यदि चन्द्रमा उदय (प्रथमोदय) के समय धनुष के आकार के समान दृश्य हो तो धनुर्धारी योद्धाओं में युद्ध का उद्यम होता है और संसार के लोगों का नाश होता है, क्षत्रिय क्षत्रियों को तथा अन्य वर्ण के लोग अन्य वर्ण के लोगों को मारते हैं। धनुष की जीवा जिस दिशा की ओर होती है, उस दिशा के राजाओं की जय होती है तथा विपरीत दिशा वालों की पराजय होती है।

भार्गवीये तु

लाक्षारुधिरवर्णाभो धनुःस्थायी यदा भवेत्।
संग्रामं योजयेत् सोमो लोके च तुमुलं भवेत्॥

जब चन्द्रमा का धनुसंस्थान लाक्षा (लाह) और रुधिरवर्ण की कान्ति वाला हो तो लोगों में घोर युद्ध होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

धनुःस्थायी रूक्षो रुधिरसदृशः क्षुद्भयकरो
बलोद्योगं चन्द्रः कथयति जयं ज्याऽस्य च यतः ॥

यदि चन्द्र धनुषाकार होकर रूक्ष और रक्त वर्ण का दिखाई दे तो दुर्भिक्ष और सेनाओं में परस्पर युद्ध का भय करता है तथा इस चन्द्र की जीवा जिस ओर रहती है, उस तरफ के राजाओं की विजय होती है।

अथावाङ्मुखम् (आवर्जितसंस्थानम्)

तत्र गर्गः

अधोमुखं यदा शृङ्गं शशिनो दृश्यते तदा।
[१]संस्थानमावर्जितकं गोघ्नं दुर्भिक्षदायकम् ॥

विशेषः– एवमेव वृद्धगर्गेणापि। शृङ्गमित्येकवचननिर्देशादेकं शृङ्गम्।

जब चन्द्रमा का एक शृङ्ग (अतिशय उन्नत होकर) अधोमुख देखा जाय तो वह अवाङ्मुख या आवर्जित नामक संस्थान होता है तथा इसमें गाय (पशु) का नाश और दुर्भिक्ष होता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

अभ्युच्छ्रायादेकं शशिनो यद्यवाङ्मुखं भवेच्छृङ्गम्।
आवर्जितमित्यसुभिक्षकारि तद्गोधनस्यापि ॥

अतिशय उन्नत होने के कारण चन्द्र का एक शृङ्ग यदि अधोमुख हो तो आवर्जित नाम का संस्थान होता है। इसमें मनुष्य और पशु दोनों के लिए दुर्भिक्ष होता है।

पराशरस्तु

क्षुच्छस्त्रभयदोऽवाक्शिराः। एतत्संस्थानश्चन्द्र
उत्तरशृङ्गोन्नतोऽप्येतत्फलं करोति।

चन्द्र का शृङ्ग जब अवाङ्मुख (आवर्जित) संस्थान हो तो दुर्भिक्ष और शस्त्रभय देता है। इसमें उत्तरशृङ्गोन्नत होने पर भी अर्थात् उत्तर शृङ्ग अतिशय उन्नत होकर जब अधोमुख हो जाय तब भी ऐसा फल करता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

प्रोक्तस्थानाभावादुदगुच्चः [१]शस्यवृद्धिवृष्टिकरः इति।

विशेषः– अन्यथा प्रोक्तस्थानाभावादित्यनर्थकं स्यात्।

---

१. संस्थानवर्जितकरे - इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वकथित संस्थानों के अभाव में यदि चन्द्र का शृङ्ग उत्तर दिशा में उन्नत हो तो धान्य की वृद्धि और वर्षा करता है। पाठान्तर से कल्याण, धान्य की वृद्धि और वृष्टि करता है।

गार्गीये त्ववाक्शिरोलक्षणमन्यथा, तद्यथा

दक्षिणेन स्थूलकायो हीनकायस्तथोत्तरे।
अवाक्शिरसि चन्द्रेऽस्मिन्नचिरान्नक्षतिः क्षितिः ॥

यदि चन्द्रमा का दक्षिण भाग (शृङ्ग) मोटा हो और उत्तर शृङ्ग पतला हो तो वह अवाङ्मुख (आवर्जित) संस्थान होता है। इसमें शीघ्र ही पृथ्वी पर अन्न की क्षति होती है अर्थात् दुर्भिक्ष होता है।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसेनाक्षयनिमित्तम्

अवाक्शिराश्च भगवानुदतिष्ठत चन्द्रमाः।

महाभारत-युद्ध के समय कौरव और पाण्डवों की सेनाओं के विनाश के निमित्त (उत्पातरूप में) भगवान् चन्द्रमा अवाङ्मुख संस्थान में स्थित होकर उदित हुए।

अथ सङ्कटं गार्गीये

तीक्ष्णसङ्कटशृङ्गाग्रो रोगशस्त्रक्षुधावहः।

यदि चन्द्रमा के दोनों शृङ्गाग्र समान और तीक्ष्ण (तेज) हों तो संकट संस्थान होता है। इसमें लोगों को रोगभय, शस्त्रभय और दुर्भिक्षभय होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

सङ्गताभ्यां समाभ्याञ्च तीक्ष्णग्राभ्यां यदा शशी।
दृश्यते सङ्कटस्थानं रोगशस्त्रक्षुधाकरम् ॥

यदि चन्द्रमा के दोनों शृङ्ग समान हों और शृङ्गाग्र तीक्ष्ण (नुकीला) हो तो संकट संस्थान होता है। यह संस्थान रोग, शस्त्र और दुर्भिक्ष करता है।

अथ कुण्डम्। तत्र गर्गः

अच्छिन्ना मण्डले रेखा शशिनो दृश्यते यदा।
कुण्डाख्यं नाम तत् स्थानं नृपविग्रहदायकम् ॥

यदि चन्द्रमण्डल में चारो तरफ अभ्युच्छिन्न (अखण्डित) रेखा दिखाई दे तो वह कुण्ड नाम का संस्थान होता है। यह राजाओं में विग्रह (विरोध) कराता है।

---

१. क्षेमवृद्धि - इति पाठान्तरम्, उपलब्धवृहत्संहितायां दृश्यते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

अव्युच्छिन्ना रेखा समन्ततो मण्डले च कुण्डाख्यम् ।
तस्मिन् माण्डलिकानां स्थानत्यागो नरपतीनाम् ॥

यदि चन्द्रमा के चारो तरफ अभ्युच्छिन्न (अखण्डित) रेखा गोलाकार दिखाई दे तो कुण्डाख्य संस्थान होता है। इसमें माण्डलिक राजाओं का स्थान छूट जाता है अर्थात् मण्डल (जिला) के बराबर वाले देश के राजाओं की स्थानच्युति होती है।

अथ दण्डः । तत्र पराशरः

दण्डवद्दण्डस्थायी दण्डकृत् प्रजानाम् ।

यदि चन्द्रमा दण्डाकार (डण्डे की तरह) दिखाई दे तो दण्डसंस्थान होता है। इसमें प्रजाओं को दण्ड कराता है।

गर्गवृद्धगर्गौ तु

चन्द्ररेखा यदा चोर्ध्वा भवेद्दण्डवदायता ।
उदक्छृङ्गाधिका चैव दण्डस्थानं तदुच्यते ॥

यदि चन्द्रमा की रेखा (शृङ्ग) दण्ड की तरह लम्बी ऊपर की ओर हो तथा उत्तर शृङ्ग अधिक हो तो वह दण्डसंस्थान होता है।

वृद्धगर्गः

उद्युक्तदण्डा राजानो विनिघ्नन्ति समन्ततः ।
पौरं जनपदं चात्र ज्वरदाहश्च जायते ॥

यदि चन्द्रमा का दण्डसंस्थान दृष्ट हो तो सभी नगरवासियों और जनपदों (ग्रामवासियों) को राजा कठोर दण्ड देते हैं और दाहज्वर से लोगों का नाश होता है।

गर्गस्तु

उद्युक्तदण्डा राजानो विनिहन्युः समन्ततः ।
गवां पीडां विजानीयाद्दण्डस्थायी यदा शशी ॥

जब चन्द्र दण्डसंस्थान में होता है तो राजा कठोर दण्ड देने वाले होते हैं, चारो ओर प्रजाओं का नाश करते हैं और गाय को पीड़ा होती है।

गार्गीये

उदितो दण्डवच्चन्द्रो गवां पीडाकरः स्मृतः ।
उग्रदण्डाश्च राजानो विनिघ्नन्ति परस्परम् ॥

यदि चन्द्रमा दण्डाकार उदित हो तो गायों को पीड़ा होती है, राजा लोग कठोर दण्ड देने वाले होते हैं और परस्पर लोग एक-दूसरे को मारते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ वज्रः । तत्र वराहसंहितायाम्

मध्यतनुर्वज्राख्यः क्षुद्भयकृत् सम्भ्रमाय राज्ञां च ।

यदि चन्द्रबिम्ब मध्यम हो तो वज्रसंज्ञक होता है । यह क्षुधाभय (दुर्भिक्ष) देने वाला और राजाओं में उद्यम (उद्वेग) उत्पन्न करने वाला होता है ।

वृद्धगर्गः

राज्ञां भयमसौ तीक्ष्णं विदध्याद्वज्रविग्रहः ।

चन्द्रमा का वज्रविग्रह (वज्रसंस्थान) राजाओं को उग्र भय देता है ।

अथ युगम् । तत्र गर्गवृद्धगर्गौ

चन्द्ररेखा यदा व्यक्ता दक्षिणोत्तरमायता ।
शुक्लादौ प्रतिदृश्येत तद्युगस्थानलक्षणम् ॥

जब चन्द्रमा के शृङ्ग दक्षिण और उत्तर विस्तीर्ण हों और मध्यम चन्द्रमण्डल होकर शुक्लपक्षादि में दृष्ट हो तो वह युगसंस्थान कहलाता है ।

गर्गः

सैन्योद्योगा भवन्त्यत्र भूमिकम्पश्च जायते ।

युगसंस्थान में सेनाओं में उद्यम (युद्ध की तैयारी) और भूकम्प होता है ।

पराशस्तु

युगसंस्थानजगद्विद्रवभूकम्पाय ।

चन्द्रमा का युगसंस्थान संसार में उपद्रव और भूकम्प कराता है ।

गार्गीये तु

सेनोद्योगो भवत्यत्र दुर्भिक्षं भूमिकम्पनम् ।
नानाविधैर्व्याधिभिश्च तदा संक्षीयते प्रजा ॥

इस संस्थान से सेना में उद्यम, दुर्भिक्ष, भूकम्प और अनेक प्रकार की व्याधियों से प्रजाओं का नाश होता है ।

अथ पार्श्वशयनम्

तत्र गर्गः

याम्यकोट्यायतः किञ्चिद्युगाकारो यदा शशी ।
पार्श्वशायीति स ज्ञेयः सार्थहाऽवृष्टिकारकः ॥

पूर्वकथित चन्द्रमा के युगसंस्थान में जब दक्षिण शृङ्ग का अग्र भाग थोड़ा ऊँचा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो तो वह पार्श्वशायी संस्थान होता है। यह संस्थान धनवान् व्यक्ति का नाश करता है और अवृष्टिकारक होता है।

विशेषः– याम्यकोट्यायतः किञ्चिदिति याम्यकोट्या किञ्चिदुन्नतः।

तथा च वराहसंहितायाम्

युगमेव याम्यकोट्यां किञ्चित् तुङ्गं स पार्श्वशायीति।
विनिहन्ति सार्थवाहान् वृष्टेश्च विनिग्रहं कुर्यात्॥

उपर्युक्त युगसंस्थान में दक्षिण शृङ्ग का अग्रभाग (कोटि) कुछ ऊँचा हो तो वह पार्श्वशायी संस्थान होता है। इसमें धनी व्यापारियों का और वृष्टि का नाश होता है।

गार्गीये तु

किञ्चित् तुङ्गं याम्यकोट्यां युगमेव यदा भवेत्।
अवृष्टिः पार्वतीयानां मरणञ्च तदा भवेत्॥

पार्श्वशायी संस्थान से अवृष्टि होती है और पर्वतवासियों की मृत्यु होती है।

भार्गवीये तु

पार्श्वशायी तु विप्राणां भवेद्विघ्नसमन्वितः।

पार्श्वशायी संस्थान ब्राह्मणों के लिए विघ्नकारक होता है।

वटकणिकायाम्

दण्डावाङ्मुखसङ्कटजर्जरकूटीकृतिर्न शुभः।

विशेषः– जर्जर इति क्वचिन्निविडः क्वचिच्चानिविडः। कूटीकृतिः फालाकृतिः।

चन्द्रमा के दण्ड, अवाङ्मुख (आवर्जित), संकट, जर्जर (कहीं मोटा तो कहीं पतला), और कूटीकृति (फाल=फार) संस्थान लोगों के लिए अशुभकारक होते हैं।

तत्रैव

उदयत्रयमपि सदृशं न शुभं बहुरूपताऽथ चैकस्य।

विशेषः– शुभमप्येकं स्थानं यदि निरन्तरमुदयत्रये भवति तदाऽप्यशुभम्। अशुभाभ्यन्तरमेवाशुभम्। एकस्मिन्नेवोदयेऽनेकरूपताऽप्यशुभा।

चन्द्रमा के शुभसूचक संस्थान का भी यदि लगातार तीन उदय होता है तो वह अशुभ करता है, एक ही उदय में अनेक संस्थान हों तो भी अशुभ फल होता है और अशुभ संस्थानों के आभ्यन्तर यदि शुभ संस्थान होता है तो भी अशुभ फल ही होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

प्रोक्तस्थानाभावादुदगुच्चः क्षेमवृद्धिवृष्टिकरः ।
दक्षिणतुङ्गश्चन्द्रो दुर्भिक्षभयाय निर्दिष्टः ॥

पूर्वकथित संस्थानों के अभाव में चन्द्रमा का शृङ्ग यदि उत्तर दिशा में उन्नत हो तो क्षेम, सस्य की वृद्धि और वृष्टि कराता है। यदि दक्षिण शृङ्ग उन्नत हो तो दुर्भिक्षभय कराता है।

विशेषः– उत्तरायणस्थयो रविचन्द्रमसोः संयोगानन्तरमुदितस्य चन्द्रमसो दक्षिणशृङ्गोन्नतिरपि नाशुभा। रवितश्चन्द्रस्योत्तरावर्जितत्वेन तस्या एव प्रकृतत्वात्। उत्तरशृङ्गोन्नतिरप्यशुभफला प्रकृतिविपरीतत्वात्। तथा चोत्तरशृङ्गोन्नतावुत्तरायणे दक्षिणायने च।

दक्षिणोत्तरशृङ्गोन्नतावशुभफलमुक्तं भार्गवीये

प्रथमे दर्शने त्विन्दोः समासाद्य यदा ग्रहम्।
उत्तरं वर्धते शृङ्गं नीचीभवति दक्षिणम्॥

एवमेव श्रविष्ठाद्ये आश्लेषाद्ये च चन्द्रमाः।
उद्गच्छेद्दक्षिणं शृङ्गं नीचीभवति चोत्तरम्॥

अत्र नश्येत राष्ट्रं च अन्तर्गिरि महागिरिः।
विदर्भान् मद्रकांश्चैव कौशिकान् द्राविडांस्तथा॥

अन्ध्रांश्चैव शकांश्चैव भारतांश्चापि सर्वशः।
सागरांस्तिरजांश्चैव समुद्रे ये तु दक्षिणे॥

एताञ्जनपदान् हन्ति यदि स्यादुत्तरोन्नतः।
काश्मीरान् दरदान् दर्भान् शूरसेनान् पटच्चरान्॥

शाल्वांश्च विरजांश्चैव समुद्रे ये च पश्चिमे।
एताञ्जनपदान् हन्ति यदा स्याद्दक्षिणोन्नतः॥

विशेषः– समासाद्य यदा ग्रहमिति भूम्यावरणानन्तरितप्रथमदर्शनव्यावृत्त्यर्थम्। चन्द्रस्योदये त्वयनरेखातः समोत्तरवर्त्तिनोः समदक्षिणवर्त्तिनोर्वा भिन्नायनस्थयोः सूर्याचन्द्रमसोः समशृङ्गता भवति तत्फलम्।

अमावस्या तिथि में सूर्य और चन्द्रमा के संयोग (कालांशाभ्यन्तर रहने) के पश्चात् भूमि के आवरण से अन्तरित होने पर धनिष्ठादि (उत्तरायण) में स्थित चन्द्रमा के प्रथम दर्शन के समय उत्तरशृङ्ग उन्नत और दक्षिणशृङ्ग नत हो तथा आश्लेषादि (दक्षिणायन) में स्थित चन्द्रमा के प्रथम दर्शन के समय दक्षिण शृङ्ग उन्नत और उत्तर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शृङ्ग नत हो तो सम्पूर्ण राष्ट्र, पर्वत के मध्य भाग के निवासियों और महापर्वत के निवासियों का नाश होता है।

उक्त स्थिति में उत्तरशृङ्ग के उन्नत होने पर विदर्भ, मद्र, कौशिक, द्रविड़, आन्ध्र, शक, सम्पूर्ण भारत, सागर और सागर के तलवासी तथा समुद्र के दक्षिण भाग के निवासियों का नाश होता है।

दक्षिण शृङ्ग के उन्नत होने पर काश्मीर, दरद, दर्भ, शूरसेन, पटच्चर, शाल्व, विरज और समुद्र के पश्चिम के जनपदों का विनाश होता है।

सामान्यतया उत्तर शृङ्ग के उन्नत और दक्षिण शृङ्ग के निम्न होने पर शुभ फल का आदेश अन्य आचार्यों ने किया है; परन्तु गोलयुक्ति से स्पष्ट प्रतीत होता है कि सूर्य से चन्द्रमा के उत्तर स्थित रहने पर दक्षिण शृङ्ग उन्नत और उत्तर शृङ्ग नत होता है। सूर्य और चन्द्रमा दोनों उत्तरायणस्थ हों तो दक्षिणशृङ्गोन्नति भी अशुभ फल नहीं देती है, प्रकृति अनुरूप होने से और उत्तरशृङ्गोन्नति भी प्रकृतिविपरीत होने से अशुभफलद होती है। यह स्थिति उत्तरायण और दक्षिणायन दोनों में होती है। चन्द्रोदय के समय अयनरेखा से सूर्य और चन्द्रमा दोनों यदि समोत्तरवर्ती हों या समदक्षिणवर्त्ती हों और भिन्न अयन में दोनों स्थित हों अर्थात् एक उत्तरायण में तथा दूसरा दक्षिणायन में हो तो समशृङ्गता होती है। प्रकृति के विपरीत नतोन्नत शृङ्ग का फल अशुभ होता है।

वटकणिकायाम्

समः समः – इति।

विशेषः– उदयदिनसमानि सुभिक्षादीनि तस्मिन् मासे करोतीति समः।

यदि चन्द्र के दोनों शृङ्ग समान हों तो उसी दिन की तरह एक महीने तक सुभिक्षादि होते हैं।

तथा च गर्गः

समशृङ्गो यदा दृश्यः शशी क्षेमसुभिक्षदः।
प्रतिपत् सदृशं तत्र वासवो वर्षते तदा॥

विशेषः– प्रतिपत्सदृशमित्युभयत्र सम्बध्यते। प्रतिपत्सदृशक्षेमसुभिक्षदः शशी भवति वासवश्च प्रतिपत्सदृशं वर्षतीति।

प्रतिपत् अर्थात् प्रथम चन्द्रदर्शन के दिन यदि चन्द्रमा के दोनों शृङ्ग समान देखे जायँ तो उसी (उदय) दिन की तरह चन्द्रमा कल्याण और सुभिक्षकारक होता है तथा वर्षा भी उसी दिन के समान होती है।

तथा च वराहसंहितायाम्

समशशिनि सुभिक्षक्षेमवृष्टयः प्रथमदिवससदृशाः स्युः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– एकायनस्थयोस्तु रविचन्द्रमसोः समशृङ्गचन्द्रोदये विकृतिस्तत्फलमशुभमेव ।

यदि चन्द्र के दोनों शृङ्ग समान हों तो प्रथम दिन की तरह सुभिक्ष, कुशल और वृष्टि होती है अर्थात् प्रतिपदा के दिन जिस तरह सुभिक्ष, क्षेम और वृष्टि होती है, उसी तरह एक महीने तक सुभिक्षादि होती रहती है ।

(परन्तु सूर्य और चन्द्रमा दोनों यदि एक ही अयन में स्थित हों और तब यदि समान शृङ्ग हो तो विपरीत अर्थात् अशुभ फल ही होता है ।)

तथा च पराशरः

समोभयशृङ्गः समस्थान इन्दुर्महाभयकृत् ।

एक अयन में स्थित चन्द्रमा के दोनों शृङ्ग यदि चन्द्रमा के समान हों तो महान् भय होता है ।

वृद्धगर्गः

पीतकच्छन्नसंस्थाने एकशृङ्गे त्वशृङ्गके ।
रोगदुर्भिक्षशस्त्राणि प्राणिनां च पराभवः ॥

यदि चन्द्रमा एक शृङ्ग वाला हो या शृङ्गरहित हो और पीले वर्ण से आच्छन्न (व्याप्त) हो तो प्राणियों को रोग, दुर्भिक्ष और शस्त्र से भय तथा पराभव (पराजय) होता है ।

पराशरः

अथैतानि शुक्लप्रतिपदि द्वितीयायां वा लक्षणानि भवन्ति ।

विशेषः– एतानीति संस्थानानि । ननु रवेर्द्वादशभिः क्षेत्रांशैरन्तरिते चन्द्रमसि शुक्लप्रतिपत्तिथिपूर्णता । द्वादशभिश्चन्द्रकालांशान्तरिते चन्द्रमसि तदुदयः क्षेत्रांशानां कालांशानां वा दूरान्तरत्वं तत्कथं शुक्लप्रतिपदि चन्द्रदर्शनम् ।

अत्रोच्यते– बृहदुदयमानराशिस्थस्य वृहत्फलदृक्कर्मद्वयसंस्कृतस्य चन्द्रमसः शुक्लप्रतिपदः किञ्चिदधिकार्धोपरि दर्शनसम्भावनेत्यतो युक्तं प्रतिपदि चन्द्रदर्शनमिति । स्वल्पोदयमानराशिस्थस्य बृहदूनफलदृक्कर्मद्वयसंस्कृतस्य चन्द्रमसः शुक्लद्वितीयायां किञ्चिदूनार्धपर्यन्तमदर्शनसम्भावनेत्यत उक्तसामग्र्यां शुक्लप्रतिपदि चन्द्रमसो दर्शने शुक्लद्वितीयायामप्यदर्शने च नोत्पातबुद्धिः कर्त्तव्येति । अत्र यानि यानि संस्थानानि चन्द्रशृङ्गोन्नतिवासनया न सम्भवन्ति तानि तान्येव दोषकराणि भवन्ति ।

उपर्युक्त चन्द्रमा के संस्थान शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या द्वितीया को देखे जाते हैं ।

(संहिताग्रन्थों में प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन कहा गया है, परन्तु यह कदाचित् होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। यह किस स्थिति में होता है, इसकी उपपत्ति पं० मुरलीधर झा कृत उपर्युक्त वक्तव्य सर्वथा समीचीन है।

अथ शृङ्गोन्नतिवासना सूर्यसिद्धान्ते[1]

तेजसां गोलकः सूर्यो ग्रहर्क्षाण्यम्बुगोलकाः।
प्रभावन्तो हि दृश्यन्ते सूर्यरश्मिप्रदीपिताः॥

सूर्यबिम्ब प्रकाश गोल है और अन्य ग्रह-नक्षत्र आदि जलमय पिण्ड हैं, ये सूर्यकिरण के द्वारा ही प्रकाशित दृश्य होते हैं।

वराहसंहितायाम्

सलिलमये शशिनि रवेर्दीधितयो मूर्च्छितास्तमो नैशम्।
क्षपयन्ति दर्पणोदरनिहिता इव मन्दिरस्यान्तः॥

जिस प्रकार दर्पणतल पर पड़े हुए सूर्य की किरणों के प्रतिबिम्ब से घर के अन्दर का अन्धकार नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार जलपिण्डात्मक चन्द्रमा के ऊपर पड़ी हुई सूर्य की किरणों के प्रतिबिम्ब से रात का अन्धकार नष्ट होता है।

सूर्यसिद्धान्ते[2]

महतश्चाप्यधःस्थस्य नित्यं कामयते[3] रविः।
अर्धं शशाङ्कविम्बस्य न द्वितीयं कथञ्चन॥

सूर्य से बहुत नीचे भाग में स्थित चन्द्रबिम्ब का हमेशा आधा भाग ही सूर्यकिरण द्वारा प्रकाशित रहता है, दूसरा (आधा) भाग कभी नहीं अर्थात् सम्पूर्ण चन्द्रबिम्ब एक साथ प्रकाशित नहीं होता है।

विशेषः– अर्धं कामयते इति अर्धविम्बकान्तिं करोतीत्यर्थः।

ब्रह्मसिद्धान्ते

रविदृष्टं सितमर्धं कृष्णमदृष्टं यथाऽऽतपस्थस्य।
कुम्भस्येवासन्नं रवेरधःस्थस्य चन्द्रस्य॥

जैसे धूप में स्थित घड़े का सूर्य की तरह का आधा भाग सित (स्वच्छ) होता है और रवि से भिन्न दिशा का आधा भाग कृष्ण (असित) होता है, वैसे ही रवि से

---

१. सम्प्रति प्रचलित सूर्यसिद्धान्त में यह पद्य नहीं उपलब्ध होता, परन्तु सिद्धान्ततत्त्वविवेक के बिम्बाधिकार में कमलाकर ने लिखा है।
२. सम्प्रति प्रचलित सूर्यसिद्धान्त में उपलब्ध नहीं है।
३. भासयते इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आधे भाग में स्थित चन्द्रमा का होता है अर्थात् सूर्य की तरफ का चन्द्रबिम्ब का आधा भाग उज्ज्वलीभूत और रवि से भिन्न दिशा का चन्द्रबिम्बार्ध अनुज्ज्वल होता है।

वराहसंहितायाम्

नित्यमधःस्थस्येन्दोर्भाभिर्भानोः सितं भवत्यर्धम्।
स्वच्छाययाऽन्यदसितं कुम्भस्येवातपस्थस्य ॥

जिस तरह धूप में स्थित घड़े का सूर्य की ओर का आधा भाग शुक्ल और सूर्य की विरुद्ध दिशा का दूसरा आधा भाग अपनी छाया से ही कृष्ण दिखाई देता है, उसी तरह सदा सूर्य के अधोभाग में स्थित चन्द्रबिम्ब का सूर्य की तरफ का आधा भाग शुक्ल और विरुद्ध दिशा में स्थित अर्धभाग अपनी छाया से ही कृष्ण होता है।

सूर्यसिद्धान्ते[३]

विप्रकर्षं यदा याति ह्यधस्ताच्चन्द्रमा रवेः।
तथा तथाऽस्य भूदृश्यमंशं भासयते रविः ॥

सूर्य के नीचे भाग में स्थित चन्द्रमा जैसे-जैसे सूर्य से दूर (पूरब) होता जाता है, वैसे-वैसे चन्द्रमा के भूदृश्यभाग को सूर्य प्रकाशित करता है अर्थात् चन्द्रमा का शुक्लभाग दृश्य होता है।

वराहसंहितायाम्

त्यजतोऽर्कतलं शशिनः पश्चादवलम्बते यथा शौक्ल्यम्।
दिनकरवशात् तथेन्दोः प्रकाशतेऽधःप्रभृत्युदयः ॥

प्रतिदिवसमेवमर्कात् स्थानविशेषेण शौक्ल्यपरिवृद्धिः।
भवति शशिनोऽपराह्ने पश्चाद्भागे घटस्येव ॥

विशेषः- नन्वादित्याधःस्थयोर्जलविम्बयोर्बुधशुक्रयोः कथमखण्डविम्बत्वमवलोक्यते। उच्यते— अधःस्थत्वेऽपि स्वल्पत्वाद्बुधशुक्रयोः सूर्यासन्नकक्षत्वाच्च सूर्यतले त्यक्ते समन्तत एवाधोगतविम्बार्धभागो रविरश्मिप्रतिभासितो भवति। अतो युक्तमनयोः सर्वदैवाखण्डविम्बत्वमिति।

सूर्य के अधोभाग को छोड़ते हुए चन्द्रमा का शुक्ल प्रदेश जैसे-जैसे पश्चिम भाग में नीचे की तरफ लटकता है, उसी तरह चन्द्रमा का उदित अधोभाग सूर्यानुसार प्रकाशित होता है।

जिस तरह अपराह्न काल में धूप में स्थित घड़े के पश्चिम भाग में शुक्ल बढ़ता

---

३. नाधुनिकसूर्यसिद्धान्तेऽस्योपलब्धिः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है, उसी तरह प्रतिदिन सूर्य से स्थानविशेष (दूर-दूर) में गमन करने से चन्द्रमा का शुक्ल बढ़ता है।

अथ समागमः

हरिवंशे हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

अयोगतश्च चारांशुः सर्वेष्वृक्षेषु चन्द्रमाः ।[1]

सभी नक्षत्रों में चन्द्रमा योग (समागम) के विना ही गमन करता था।

मत्स्यपुराणपद्मपुराणयोश्च

अयोगतश्चाप्यचरद्योगं निशि निशाकरः ।[2]
सग्रहः सह नक्षत्रैस्तारापतिररिन्दमः ॥

चन्द्रमा गमन के विना समागम करता था अर्थात् किसी अन्य नक्षत्र में रहने पर दूसरे नक्षत्र की योगताराओं से संयोग करता था। ग्रह और नक्षत्रों के साथ तारापति चन्द्रमा रात में अयोग होने पर भी योग (समागम) करता था।

योगक्रमो वराहसंहितायाम्

षडनागतानि पौष्णाद्द्वादश रौद्राच्च मध्ययोगीनि ।
ज्येष्ठादीनि नवर्क्षाण्युडुपतिनाऽतीत्य युज्यन्ते ॥

रेवती से छः नक्षत्र (रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा) अनागत (अप्राप्त) होकर चन्द्रमा से मिलते हैं अर्थात् चन्द्र जब उत्तरभाद्रपदा में जाता है, उसी समय चन्द्र का संयोग रेवती से हो जाता है। इसी तरह जब रेवती में जाता है तब अश्विनी से, अश्विनी में जाने पर भरणी से, भरणी में जाने पर कृत्तिका से, कृत्तिका में जाने पर रोहिणी से और रोहिणी में जाने पर मृगशिरा से संयोग करता है।

आर्द्रा से बारह नक्षत्र (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा) मध्यसंयोगी होकर चन्द्रमा से मिलते हैं अर्थात् इन नक्षत्रविभागों के बीच में चन्द्रमा के जाने पर संयोग होता है।

और ज्येष्ठा आदि नौ नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्र) अतिक्रान्त होकर चन्द्र से संयोग करते

---

१. ४६ अ. ८ लो. तत्र 'तारासु सर्वेष्वृक्षेषु संस्थिताः' इत्युपलभ्यते।
२. मत्स्यपुराणे १६३ अ. ३५ श्लो.। तत्र 'अन्यं गते चाप्यचरन्मार्गं निशि निशाचरः' इत्युपलभ्यते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं अर्थात् इन नक्षत्रों के अगले नक्षत्र में जाने पर ही पिछले नक्षत्र से चन्द्र का संयोग होता है; जैसे मूल में जाने पर ज्येष्ठा से, पूर्वाषाढ़ में जाने पर मूल से, उत्तराषाढ़ में जाने पर पूर्वाषाढ़ इत्यादि से .... चन्द्र का संयोग हो जाता है।

इन्हीं नक्षत्रों को गर्ग आदि आचार्यों ने अर्द्धभोगी, अध्यर्द्धभोगी और समभोगी नाम से पठित किये हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

चन्द्रमा नक्षत्राच्छादी न शस्यते।

विशेषः– अत्र नक्षत्राच्छादीति योगताराच्छादनपरम्।

यदि चन्द्रमा नक्षत्र के योगतारा को ढँक देता है तो अशुभ फल होता है।

योगतारालक्षणं तु

स्वतारागणमध्ये तु श्वेता वा दीप्तमत्तरा।
योगतारेति सा प्रोक्ता नक्षत्राणां पुरातनैः॥

अनेक तारा वाले नक्षत्रों में जो तारा शुक्ल अथवा अधिक प्रकाशमान होती है, उसे प्राचीनाचार्यों ने उन नक्षत्रों की योगतारा कहा है; जिसके साथ चन्द्रमा या ग्रह संयोग करते हैं।

वृद्धगर्गः

रमते यस्य [१]नक्षत्रे सोमो यस्य च शोभनः।
वृद्धिं तस्योत्तमां विद्याद्विपरीते विपर्ययम्॥

विशेषः– रमत इति सन्निहितो भवतीत्यर्थः। यस्येति पुरुषस्य देशस्य द्रव्यादेश्च।

जिसके जन्मनक्षत्र में शुभसूचक चन्द्रमा गमन करता है, उसकी अच्छी वृद्धि होती है; अन्यथा विपरीत अर्थात् अवनति होती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

चन्द्रमा जन्मनक्षत्रं परित्यजति यस्य च।
श्यावो रूक्षोऽपसव्यश्च तस्य विद्यादुपद्रवम्॥

जिसके जन्मनक्षत्र को छोड़ने के समय चन्द्रमा श्याववर्ण (कृष्णवर्ण), रूखा और अपसव्य (दक्षिण पार्श्व से आगे जाकर वाम पार्श्वगत) हो, तो उसका उपद्रव समझना चाहिये।

---

१. 'जन्म' इति साधु पाठः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भार्गवीये

कृत्तिकानां मघानां च रोहिण्याश्च विशाखयोः ।
एतेषामुत्तरो मार्गो नागवीथीं तु तां विदुः ॥

यदिमं मार्गमास्थाय चन्द्रमा विनिवर्त्तते ।
[१]सा वर्षा उत्तमा ज्ञेया योगक्षेमं तथैव च ॥

कृत्तिका, मघा, रोहिणी और विशाखा— इन नक्षत्रों का उत्तरमार्ग होता है, उसे नागवीथी कहते हैं। यदि चन्द्रमा इस मार्ग से गमन करता है तो वह वर्ष उत्तम सुभिक्ष और कल्याणकारी होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

चन्द्रमा ग्रहाणां समागमे उदग्गतः शस्यते ।

ग्रहों के साथ समागम में चन्द्रमा उत्तर भाग में स्थित हो तो शुभफलद होता है।

यथासम्भवचन्द्रनक्षत्राणां समागमे तत्रैव

समागमे ग्रहाणां च चन्द्रमा शस्यते ह्युदक् ।
नक्षत्राणां च राजेन्द्र दक्षिणेन न शस्यते ॥

हे राजेन्द्र! ग्रहों और नक्षत्रों के साथ समागम में चन्द्र उत्तर होकर जाय तो शुभकारक और दक्षिण होकर जाय तो अशुभकारक होता है।

वटकणिकायाम्

उदगिष्टः सर्वेषां [२]पित्र्येशविशाखयोश्चान्तः ।

चन्द्रमा सभी नक्षत्रों के उत्तर होकर गमन करने पर (समागम के बाद) शुभकारक होता है; परन्तु मघा, आर्द्रा और विशाखा के मध्य होकर गमन करने पर शुभकारक होता है।

पराशरस्तु

मघानुराधाभ्यां मध्ये गमनमभिशोभनम् ।
तथाऽऽग्नेयादुत्तरतोऽभिवर्षकरः । मैत्रसावित्राभ्यां
प्रजाहितकारी – इति ।

मघा और अनुराधा के मध्य होकर चन्द्रमा के गमन करने पर अत्यन्त शुभ

---

१. 'तद्वर्षमुत्तमं ज्ञेयम्' इति साधु पाठः ।
२. चित्राश्वविशाखयोश्चान्तः इति पाठान्तरम्'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फल होता है। कृत्तिका के उत्तर भाग से गमन करने पर सुवृष्टि होती है, अनुराधा और हस्त के उत्तर से गमन करने पर प्रजा के लिए हितकारी होता है।[१]

वराहसंहितायाम्

पित्र्यमैत्रपुरुहूतविशाखात्वाष्ट्रमेत्य च युनक्ति शशाङ्कः।
दक्षिणेन न शुभः शुभकृत् स्याद्यद्युदक् चरति मध्यगतो वा॥

यदि चन्द्रमा मघा, अनुराधा, ज्येष्ठा, विशाखा और चित्रा नक्षत्रों में जाकर दक्षिणमार्ग में होकर गमन करे तो अशुभ और उत्तरमार्ग या मध्य में होकर गमन करे तो शुभ करने वाला होता है।

तथा च

भानोर्यथासम्भवमुत्तरेण यातो ग्रहाणां यदि वा शशाङ्कः।
प्रदक्षिणं तच्छुभकृन्नृपाणां याम्येन यातो न शुभः शशाङ्कः॥

यदि नक्षत्र अथवा ग्रह के निकटवर्त्ती होकर चन्द्रमा प्रदक्षिणक्रम से उत्तर तरफ होकर गमन करे तो राजाओं के लिए शुभकारक और दक्षिण तरफ जाय तो अशुभकारक होता है।

विशेष– यह समागम जिन नक्षत्रों का शर चन्द्रशर से अल्प या तुल्य है, उन्हीं का होता है। जैसे कृत्तिका, रोहिणी, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, शतभिषा, रेवती— इन नक्षत्रों का शर चन्द्रशर से अल्प होने के कारण चन्द्र के साथ समागम होता है। जिन नक्षत्रों का उत्तरशर चन्द्रशर से अधिक है, उनके सदा दक्षिण तरफ होकर और जिनका दक्षिण शर चन्द्रशर से अधिक है, उनके उत्तर तरफ होकर चन्द्रगमन होता है।

विशेषः– तददिति उत्तरायणम्। प्रदक्षिणमित्युच्यते। नक्षत्राणि ग्रहांश्च सुदक्षिणतः कृत्वा गमनात्।

तथा च ऋषिपुत्रः

दक्षिणेनापसव्यः स्यादुत्तरेण प्रदक्षिणः।
ग्रहाणां चन्द्रमा ज्ञेयो नक्षत्राणां तथैव च॥

यदि चन्द्रमा ग्रहों और नक्षत्रों के दक्षिण होकर गमन करे तो अपसव्य और उत्तर होकर गमन करे तो प्रदक्षिण जानना चाहिये।

वृद्धगर्गश्च

नक्षत्राणां ग्रहाणां वा यदा तूत्तरतः शशी।

१. परन्तु हस्त का दक्षिणशर ११° है; इसलिए चन्द्रमा कभी भी हस्त के मध्य या दक्षिण जा ही नहीं सकता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्प्रदक्षिणमित्याहुर्भवेत् क्षेमसुवृष्टये ॥
नक्षत्राणां ग्रहाणां वा यदा दक्षिणतो व्रजेत् ।
अपसव्यस्तदैव स्यादवृष्टिभयलक्षणम् ॥

यदि चन्द्रमा नक्षत्रों और ग्रहों के उत्तर होकर जाय तो उसे प्रदक्षिण कहा जाता है, इसमें कल्याण और सुवृष्टि होती है। जब नक्षत्रों और ग्रहों के दक्षिण से चन्द्रमा गमन करे, तब वह अपसव्य होता है। उसमें अवृष्टि (दुर्भिक्ष) और भय उत्पन्न होता है।

वटकणिकायां वराहः

भवति विशाखाद्यानां याम्येन पापदश्चन्द्रः ।

विशाखा के दक्षिण से गमन करने पर चन्द्रमा पाप (अशुभ) फल देता है। यहाँ 'विशाखाद्यानां' पाठ अशुद्ध है। 'विशाखादीनां' पाठ से विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा का बोध हो सकता है ।

वृहत्संहितायां तु

दक्षिणपार्श्वेन गतः शशी विशाखानुराधयोः पापः ।

विशाखा और अनुराधा नक्षत्रों के दक्षिण पार्श्व से चन्द्रमा जाय तो पापफल होता है।

तथा च

ऐन्द्रस्य शीतकिरणो मूलाषाढाद्वयस्य चायातः ।
याम्येन बीजजलचरकाननहा वह्निभयदश्च ॥

जिस समय चन्द्रमा ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़— इन चार नक्षत्रों के दक्षिण में होकर जाता है, उस समय बीज, जलचर और जंगल का नाश होता है। इससे स्पष्ट है कि इन नक्षत्रों के उत्तर से गमन करने पर चन्द्र शुभ फल देता है।

वृद्धगर्गस्तु

ज्येष्ठामूलाप्यविश्वानां दक्षिणेन व्रजेच्छशी ।
वैश्वानरः स्मृतो मार्गो दक्षिणो भयवैरकृत् ॥

देवो न वर्षति तदा शस्यं चैवोपहन्यते ।
वाय्वग्निकोपो भवति क्षुधामृत्युश्च जायते ॥

यदि चन्द्रमा ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्रों के दक्षिण होकर गमन करे तो चन्द्र का वह वैश्वानर (दक्षिण) मार्ग होता है। यह दक्षिण दिशा के लिए भय देने वाला होता है। इसमें इन्द्र देवता वृष्टि नहीं करते हैं तथा धान्यनाश, वायु-अग्निकोप, दुर्भिक्ष और मृत्यु होती है।

भार्गवीये तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैश्वानरपथं प्राप्तः समुद्रमपि शोषयेत् ।

वैश्वानर के पथ (दक्षिण मार्ग) को प्राप्त चन्द्रमा समुद्र को भी शोषित कर लेता है ।

गर्गः

त्वष्टुरैन्द्रस्य मैत्रस्य कृत्तिकानाञ्च दक्षिणम् ।
विशाखयोर्मघानां च अजवीथीं शुभां विदुः ॥
अजवीथीं गते चन्दे शस्त्रं भ्रमति नित्यशः ।
क्षुन्निमित्तं च सहसा जायते जनमारकः ॥
विहन्याद्धनधान्यानि बलवत्त्वं च संश्रयम् ।
क्षुध्यन्ति चात्र भूतानि देवश्चैव न वर्षति ॥

जिस समय चन्द्रमा चित्रा, ज्येष्ठा, अनुराधा, कृत्तिका, विशाखा और मघा नक्षत्रों के दक्षिण होकर गमन करे तो उसे 'अजवीथी' कहते हैं । यदि चन्द्रमा अजवीथी (मार्ग) से गमन करता है तो हमेशा क्षुधा (दुर्भिक्ष) के कारण शस्त्रभ्रमण करता है और लोगों की मृत्यु होती है, धन-धान्य का नाश होता है, बली व्यक्तियों के द्वारा अनाचार होता है, सभी प्राणी क्षुब्ध (दुःखी) हो जाते हैं और वर्षा नहीं होती है ।

पराशरस्तु

ज्येष्ठाश्लेषामैत्रत्वाष्ट्राणां दक्षिणश्चरन् क्षुच्छस्त्रभयदः । उपरिष्टाद्वैरोधिकों धान्यनाशी च मघानुराधयोः । शिशिरग्रीष्मयोर्दक्षिणेनाशुभदो वर्षास्ववर्षकरः । सर्वर्त्तुषु नैर्ऋताताप्यवैश्वदेवानाम् – इति ।

यदि ज्येष्ठा, आश्लेषा, अनुराधा और चित्रा नक्षत्रों के दक्षिण तरफ चन्द्रमा होकर गमन करे तो क्षुधा (दुर्भिक्ष) और शस्त्रभय देता है । मघा और अनुराधा नक्षत्रों को आच्छादित करे तो विरोध उत्पन्न करने वाला और धान्यनाश करने वाला होता है । शिशिर और ग्रीष्म ऋतुओं में इन नक्षत्रों के दक्षिण होकर गमन करने पर अशुभकारक एवं वर्षा ऋतु में वृष्टिबाधक होता है । सभी ऋतुओं में पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ के नैर्ऋत भाग से गमन (योगतारा से संयोग) करने पर उक्त अशुभ फल होता है ।

आषाढ़मासिकरोहिणीयोगे तु विशेषो वराहसंहितायाम्

प्राजेशमाषाढतमिस्रपक्षे क्षपाकरेणोपगतं समीक्ष्य ।
वक्तव्यमिष्टं जगतोऽशुभं वा शास्त्रोपदेशाद्ग्रहचिन्तकेन ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्पृशन्नुदग्याति यदा शशाङ्कस्तदा सुवृष्टिर्बहुलोपसर्गा।
[१]असंस्पृशन् योगमुदक्समेतः करोति वृष्टिं विपुलां शिवं च॥

आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में रोहिणी-चन्द्र का समागम देखकर ग्रहचिन्तक दैवज्ञों को शास्त्र में कथित प्रकार के द्वारा जगत् का शुभाशुभ फल कहना चाहिये।

यदि चन्द्रमा रोहिणी के दक्षिण में स्पर्श करते हुए उत्तर तरफ गमन करे तो सुन्दर वर्षा और लोगों में अनेक प्रकार के उपद्रव होते हैं। यदि रोहिणी को स्पर्श नहीं करते हुए उत्तर तरफ होकर चन्द्रमा गमन करे तो सुन्दर वृष्टि और लोगों का शुभ करने वाला होता है।

पराशरः

रोहिणीनां प्राक् पश्चादनुगमनं चन्द्रमसो वर्षाभिवृद्धये। पार्श्वयोर्विपर्ययः।

रोहिणी के उदित होने के पहले या पश्चात् अनुगमन यदि चन्द्रमा का हो अर्थात् रोहिणी से आगे या पीछे यदि चन्द्रमा गमन करे तो वर्षा की वृद्धि होती है। रोहिणी के पार्श्व (बगल) होकर यदि चन्द्रगमन हो तो विपर्यय (वृष्टिहानि) होता है।

वराहसंहितायाम्

उदितं यदि शीतदीधितं प्रथमं पृष्ठत एति रोहिणी।
शुभमेव तदा स्मरातुराः प्रमदाः कामवशे च संस्थिताः॥

अनुगच्छति पृष्ठतः शशी यदि कामी वनितामिव प्रजाम्।
मकध्वजबाणखेदिताः प्रमदानां वशगास्तदा नराः॥

यदि पहले चन्द्रमा का उदय होकर पीछे से रोहिणी उदित हो तो लोगों का शुभ होता है तथा कामातुर स्त्रियाँ पति के वशीभूत हो जाती हैं।

जैसे प्रिया स्त्री के पीछे कामी पुरुष गमन करता है, उसी तरह यदि रोहिणी के पीछे चन्द्रमा गमन करे तो कामदेव के बाण से खेदित होकर मनुष्यगण स्त्री के वश में हो जाते हैं।

तथा च

प्राजेशानिलादिदिक्स्थिते हिमकरे [१]शस्यस्य मध्यस्थयो-
र्याते स्थाणुदिशं गुणास्तु बहवः शस्यार्घवृष्ट्यादयः॥
आग्नेय्यां दिशि चन्द्रमा यदि भवेत् तत्रोपसर्गो महान्
नैर्ऋत्यां समुपद्रुतानि विलयं शस्यानि यान्तीतिभिः॥

---

१. ससंस्पृशन् इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि रोहिणी के वायव्य कोण में चन्द्रमा स्थित हो तो मध्यम धान्य, ईशान कोण में स्थित हो तो धान्यों के मूल्य में कमी, सुन्दर वृष्टि आदि अनेक गुण होते हैं। नैर्ऋत्य कोण में हो तो बहुत उपद्रव, नैर्ऋत्य कोण में स्थित हो तो अतिवृष्टि आदि ईतियों से पीड़ित होकर धान्यनाश होता है।

तथा च

दूरगो निकटगोऽथ वा शशी दक्षिणे पथि यथातथास्थितः।
रोहिणीं यदि युनक्ति सर्वथा कष्टमेव जगतो विनिर्दिशेत्॥

ताडयेद्यदि च योगतारकामावृणोति वपुषा यदापि च।
ताडने भयमुशन्ति दारुणं छादनैर्नृपवधोऽङ्गनाकृतः॥

रोहिणीशकटमध्यसंस्थिते चन्द्रमस्यशरणीकृता जनाः।
क्वापि यान्ति शिशुयाचिता जनाः सूर्यतप्तपिठराम्बुपायिनः॥

यदि दूर स्थित या समीप स्थित चन्द्रमा रोहिणी के दक्षिणगत होकर रोहणी से समागम करे तो संसार को दुःखी करने वाला होता है।

यदि चन्द्रमा रोहिणी की योगतारा को भेदित (शृङ्ग के एक देश से स्पर्श) करे या अपने बिम्ब से उसे आच्छादित करे तो भेदित करने से कठोर भय और छादित करने से स्त्री के द्वारा राजा का मरण करने वाला होता है।

यदि रोहिणी शकट (रोहणी के छः ताराओं से शकट की आकृति आकाश में बनती है, उसे रोहिणीशकट कहते हैं) के मध्य में स्थित होकर चन्द्रमा गमन करे तो आश्रयरहित, बच्चों के लिए भोजन मांगते हुए, सूर्यकिरण से जलपात्र का अत्यन्त उष्ण जल पीते हुये लोग (प्रजागण) अनिश्चित स्थान पर गमन करते हैं अर्थात् लोग अन्न और जल के लिए व्याकुल होकर इधर-उधर भटकने लगते हैं।

पराशरः

शकटभेदैर्दुर्भिक्षानावृष्टिरीतिभयम्। शृङ्गोल्लेखने शस्त्रकोपः। उभयशृङ्गपरिष्वङ्गे जनमारः। शुक्रबृहस्पतिबुधसंयोगे शूकधान्यतिलमाषविनाशः। शौरस्य मध्यदेशाभावः। भौमस्य शस्त्रकोपः। केतोर्भयदुर्भिक्षप्रादुर्भावः।

यदि चन्द्रमा रोहिणी-शकट को भेदित (शृङ्ग के एक देश से स्पर्श) करे तो दुर्भिक्ष, अनावृष्टि और अतिवृष्टि आदि ईतिभय करता है। यदि एक शृङ्ग से युक्त हो तो शस्त्रकोप और दोनों शृङ्गों से शकट का आलिङ्गन करे तो लोगों का मरण करने वाला होता है। यदि शुक्र, वृहस्पति और बुध रोहिणी-शकट से संयोग करे तो शूक

१. संस्पृश्य मध्यस्थयोः इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धान्य (सूंड़ वाला धान्य, जौ आदि), तिल, माषादि का विनाश होता है। शनि से शकटभेदन हो तो मध्य देश का नाश होता है। मङ्गल से भेदित होने पर शस्त्रकोप और केतु से शकटभेद होने पर दुर्भिक्ष का प्रादुर्भाव होता है।

वराहसंहितायाम्

दृश्यते न यदि रोहिणीगतश्चन्द्रमा नभसि तोयदावृते।
रुग्भयं महदुपस्थितं तदा भूश्च भूमिजलशस्यसंवृता॥

मेघ से आच्छादित आकाश में रोहिणी के साथ योग के समय यदि चन्द्रमा दिखाई नहीं दे तो उस वर्ष में अतिशय रोगभय होता है और पृथ्वी अतिशय वृष्टि तथा धान्य से युक्त होती है।

स्वात्याषाढयोगे वराहसंहितायाम्

यद्रोहिणीयोगफलं तदेव स्वातावषाढासहिते च चन्द्रे।
आषाढशुक्ले निखिलं विचिन्त्यं योऽस्मिन् विशेषस्तदहं प्रवक्ष्ये॥

रोहिणी-चन्द्रयोग में कहे गये सभी फलों की तरह आषाढ़ शुक्ल में स्वाती-चन्द्रयोग और उत्तराषाढ़-चन्द्रयोग के सभी फलों का विचार करना चाहिये। इसके अतिरिक्त इस (स्वाती योग) में जो विशेष फल हैं, उन्हें मैं (वराहमिहिर) कहता हूँ।

विशेषः– शुक्लग्रहणमाषाढमासिककृष्णप्रतिपत्प्रभृति आषाढयोगव्यावृत्त्यर्थम्।

समुत्तरेण तारा चित्रायाः कीर्त्यते ह्यपांवत्सः।
तस्यासन्ने चन्द्रे स्वातेर्योगः शिवो भवति॥

चित्रा नक्षत्र के उत्तर में अपांवत्स नामक तारा है, उसके समीप में यदि स्वाती के साथ चन्द्र का संयोग हो तो शुभ होता है।

पराशरस्तु

प्राङ्मध्यपश्चाद्भागेष्वाषाढानां योगः शशिनो वर्षासु तत्कालमेव। वर्षासु वैश्वदेवादुत्तरतः शशी वर्षाकरो न दक्षिणतः।

उत्तराषाढ़ के पूरब, मध्य अथवा पश्चिम में स्थित होकर यदि वर्षा के समय उत्तराषाढ़ की योगतारा से चन्द्र का संयोग हो तो तत्काल वर्षा होती है। उत्तराषाढ़ के उत्तर भाग में स्थित होकर यदि चन्द्रमा वर्षाकाल में संयोग करे तो वृष्टि करने वाला और दक्षिण तरफ स्थित होकर संयोग करे तो अवृष्टि करने वाला होता है।

अपि च

सोदकं सातपं साभ्रं सविद्युत् स्तनयित्नुवान्।
प्रवातं च निरावातं प्रशस्तं तदहः स्मृतम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्र-स्वात्याषाढ़ योग के दिन यदि वर्षा हो, धूप हो, मेघ हो, बिजलीयुक्त मेघ हो, हवा चले या हवा न चले तो वह दिन प्रशस्त (शुभ) कहा गया है।

भार्गवीये

बुधाङ्गिरोऽङ्गारकसौरभार्गवान् प्रदक्षिणं याति निशाकरो यदा।
अनामयत्वं नृपसौख्यमुत्तमं विपर्यये चापि महान् जनक्षयः॥

जब चन्द्रमा बुध, गुरु, मंगल, शनि और शुक्र का प्रदक्षिण (उत्तरेण प्रदक्षिणम् = उत्तर दिशा से गमन) करे, तब आरोग्यता और राजा का सुख उत्तम होता है। इसके विपरीत अर्थात् दक्षिण तरफ से चन्द्रमा गमन करे तो महान् जनक्षय (लोगों का विनाश) होता है।

वराहसंहितायाम्

चन्द्रमा यदि कुजस्य यात्युदक् पार्वतीयबलशालिनां जयः।
क्षत्रियाः प्रमुदिताः सयायिनो भूरिधान्यमुदिता वसुन्धरा॥

यदि चन्द्रमा मङ्गल के उत्तर तरफ से होकर गमन करे तो पर्वत पर निवास करने वाले और बलशालियों की विजय होती है। यायी मनुष्यों के साथ क्षत्रियगण प्रमुदित होते हैं तथा पृथ्वी अधिक धान्यों से युक्त होती है।

वृद्धगर्गस्तु

प्रदक्षिणं यदा कुर्यात् सोमो भूमिसुतं ग्रहम्।
विवर्धते तदा क्षेत्रमैश्वर्यधनधान्यतः॥

उद्योगस्थाश्च राजानो योधाश्च बलशालिनः।
जयन्ति पर्वतीयाश्च भूश्च शस्यवती तथा॥

जब चन्द्रमा मङ्गल ग्रह का प्रदक्षिण (उत्तर तरफ से गमन) करता है, तब लोगों की खेत, ऐश्वर्य, धन-धान्य से वृद्धि होती है; युद्ध के लिए उद्यमी राजाओं, योद्धाओं और पर्वतवासियों की विजय होती है तथा पृथ्वी धान्ययुत होती है।

वराहसंहितायाम्

उत्तरतः स्वसुतस्य शशाङ्कः पौरजयाय सुभिक्षकरश्च।
शस्यचयं कुरुते जनहार्दिं कोषचयं च नराधिपतीनाम्॥

यदि बुध के उत्तर तरफ होकर चन्द्रमा गमन करे तो पुरवासी राजाओं की विजय, सुभिक्ष, धान्यों की वृद्धि, लोगों को आन्तरिक तुष्टि और राजाओं के कोष की वृद्धि होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गस्तु

आत्मजं तु यदा सोमो बुधं कुर्यात् प्रदक्षिणम्।
तदा वर्षति वै सोमः प्रीतिर्लोके च वर्धते॥
धनधान्यकोषवृद्धिर्धान्यानां च न संशयः।
आयोधनादृते चापि नागराणां जयं वदेत्॥

यदि चन्द्रमा अपने पुत्र बुध का प्रदक्षिण करे तो सोमरस की वर्षा होती है और लोगों में परस्पर प्रेम की वृद्धि होती है। धन-धान्य और कोषों की वृद्धि होती है। माष, मुद्गादि धान्यों की वृद्धि अवश्य होती है। शस्त्रादि के विना भी नागर राजाओं की विजय होती है।

विशेषः– धान्यानां माषमुद्गादीनामित्यर्थः।

वराहसंहितायाम्

बृहस्पतेरुत्तरगे शशाङ्के पौरद्विजक्षत्रियपण्डितानाम्।
धर्मस्य देशस्य च मध्यमस्य वृद्धिः सुभिक्षो मुदिताः प्रजाश्च॥

यदि बृहस्पति के उत्तर तरफ होकर चन्द्रमा गमन करे तो पुरवांसी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, पण्डित, धर्म और मध्यदेश की वृद्धि, सुभिक्ष और प्रजा हर्षयुक्त होती है।

वृद्धगर्गः

यदा बृहस्पतिं सोमः कुरुतेऽथ प्रदक्षिणम्।
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं धर्मश्चातिविवर्धते॥
विद्वांसो मध्यदेशश्च ब्रह्मक्षत्रञ्च वर्धते।
नागराणां जयश्चोग्र आगन्तूनां पराजयः॥

यदि चन्द्रमा बृहस्पति का प्रदक्षिण करे तो लोगों में कल्याण, सुभिक्ष, आरोग्य और धर्म की अभिवृद्धि होती है। विद्वान्, मध्यदेश, ब्राह्मण और क्षत्रियों की वृद्धि होती है तथा नगरवासियों की महान् जय और आगन्तुओं (युद्ध की इच्छा से आने वालों) का पराजय होता है।

वराहसंहितायाम्

भार्गवस्य यदि याम्युदक् शशी कोषयुक्तगजवाजिवृद्धिदः।
यायिनाञ्च विजयो धनुष्मतां शस्यसम्पदपि चोत्तमा तदा॥

यदि शुक्र के उत्तर तरफ होकर चन्द्रमा गमन करे तो कोष, हाथी और घोड़ों की वृद्धि, धनुर्धारी और यायी (जीतने की इच्छा रखने वालों) की विजय तथा धान्यों की अच्छी उपज होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गस्तु

भृगोः पुत्रं यदा शुक्रं सोमः कुर्यात् प्रदक्षिणम्।
शस्यानां सम्पदं क्षेमं वर्षं वा तत्र निर्दिशेत्॥

धनुष्मतो विमुक्ताश्च हस्त्यश्वरथयायिनः।
समुद्युक्ताश्च राजानो विजयन्ते च नागराः॥

जब चन्द्रमा भृगुपुत्र शुक्र का प्रदक्षिण (उत्तर तरफ से गमन) करे तो धान्यों की वृद्धि, कल्याण या वर्षा होती है— ऐसा कहना चाहिये। धनुर्धारी योद्धा, हाथी, घोड़े आदि से युक्त यायी राजा युद्ध करने के लिए उद्यमशील होते हैं तथा पुरवासियों (स्थायी) का पराजय होता है।

वराहसंहितायाम्

रविजस्य शशी प्रदक्षिणं कुर्याच्चेत् पुरभूभृतां जयः।
शकबाह्लिकसिन्धुपह्लवा मुदभाजो यवनैः समन्विताः॥

यदि शनैश्चर के उत्तर तरफ होकर चन्द्रमा गमन करे तो पुरवासी राजाओं की जय तथा शक, वाह्लिक, सिन्धु, पह्लवदेशवासी और यवन मनुष्य हर्षयुक्त होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

यदा शनैश्चरं सोमः कुरुतेऽभिप्रदक्षिणम्।
वर्धन्ते नागरा योधा यायिनामभयं ध्रुवम्॥

ह्रियते चाशु धान्यार्घः सुभिक्षं चोपजायते।
एतदेव विपर्यस्तं याम्येन गमने वदेत्॥

जब शनैश्चर के उत्तर तरफ होकर चन्द्र गमन करे तब नगरवासी योद्धाओं की वृद्धि होती है, यायी निर्भय होते हैं, धान्य की महँगाई कम होती है और सुभिक्ष होता है। जब शनैश्चर के दक्षिण तरफ होकर चन्द्र गमन हो तो उक्त के विपरीत फल कहना चाहिये।

वराहसंहितायाम्

शशिनि फलमुदक्स्थे यद्ग्रहस्योपदिष्टं
भवति तदपसव्ये सर्वमेतत् प्रतीपम्।
इति शशिसभवायाः कीर्त्तिता भग्रहाणां
न खलु भवति युद्धं सार्धमिन्दोर्ग्रहर्क्षैः॥

ग्रहों के उत्तरगत चन्द्रमा के जो फल कहे गये हैं, उनके विपरीत फल ग्रहों के दक्षिणगत चन्द्र के होते हैं। इस तरह चन्द्र के साथ ग्रह या नक्षत्रों का संयोग 'समागम'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहलाता है। चन्द्रमा के साथ ग्रह या नक्षत्रों का संयोग युद्ध नहीं होता है (किन्तु सूर्य के साथ ग्रहों का संयोग अस्त और कुजादि पञ्चताराग्रहों का परस्पर संयोग युद्ध कहलाता है)।

अथ शृङ्गाभिमर्दनम्

तत्र पराशरः

शृङ्गाभिमर्दने गुरुः प्रधाननृपतिविनाशाय। असुर-गुरुर्यायिनाम्। कुनृपाणां प्रत्यन्तनृपाणां भौमः। शौरः क्षुच्छस्त्रभयाय। दुर्भिक्षायावृष्टये सौम्यः।

यदि चन्द्रशृङ्ग बृहस्पति से अभिमर्दित (वेधित) हो तो बड़े राजाओं का विनाश, शुक्र से वेधित हो तो यायी राजाओं का विनाश एवं मङ्गल से खण्डित हो तो म्लेच्छ आदि दुष्ट राजाओं का नाश होता है। शनैश्चर से चन्द्रशृङ्ग के वेधित होने पर क्षुधा और शस्त्रभय तथा बुध से वेधित होने पर दुर्भिक्ष और अनावृष्टि होती है।

वराहसंहितायाम्

प्रत्यन्तान् कुनृपांश्च हन्त्युडुपतिः शृङ्गे कुजेनाहते
शस्त्रक्षुद्भयकृद्यमेन शशिजेनावृष्टिदुर्भिक्षकृत्।
श्रेष्ठान् हन्ति नृपान् महेन्द्रगुरुणा शुक्रेण चाल्पान्नृपान्
शुक्ले याप्यमिदं फलं ग्रहकृतं कृष्णे यथोक्तागमः॥

यदि चन्द्रशृङ्ग मङ्गल से वेधित हो तो दूर में रहने वाले म्लेच्छ आदि दुष्ट राजाओं को मारता है, शनि से वेधित होने पर शस्त्र और क्षुधा का भय करने वाला होता है, बुध से वेधित होने पर अनावृष्टि और दुर्भिक्ष करने वाला होता है, बृहस्पति से वेधित होने पर श्रेष्ठ राजाओं को मारता है, शुक्र से वेधित होने पर छोटे राजाओं का नाश करता है। यह फल शुक्लपक्ष में अल्प और कृष्ण पक्ष में सम्पूर्ण होता है।

हरिवंशमत्स्यपुराणपद्मपुराणेषु हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

सोमस्य गगनस्थस्य ग्रहास्तिष्ठन्ति शृङ्गगाः।
वामे च दक्षिणे चैव स्थितौ शुक्रबृहस्पती॥

आकाश में स्थित चन्द्रमा के शृङ्ग में सभी ग्रह स्थित थे। वाम और दक्षिण भाग में क्रमशः शुक्र और बृहस्पति स्थित थे।

आग्नेयपुराणे च

सोमस्य गगनस्थस्य ग्रहास्तिष्ठन्ति शृङ्गगाः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[१]वामशृङ्गे स्थितः शुक्रो दक्षिणे च बृहस्पतिः ॥

आकाश में चन्द्र के शृङ्ग में सभी ग्रह स्थित थे। वाम शृङ्ग में शुक्र और दक्षिण शृङ्ग में बृहस्पति थे।

पराशरः

वामेन्दुशृङ्गोन्नमनं ज्वलनं वा नृपनाशाय।

चन्द्रमा के वाम (दक्षिण) शृङ्ग उन्नत होने पर अग्निभय या राजा का नाश होता है।

अथ भेदनम्

तत्र भौमभेदनमाह पराशरः

क्षितिसुतभिन्नः कुरुशिबिमालवत्रिगर्त्तकुलिन्दायोध्याधिप-
गणाधिपतींश्च यायिभिः सह षण्मासानुपतापयति।

यदि चन्द्रबिम्ब मंगल से भेदित हो तो कुरु, शिवि, मालव, त्रिगर्त्त, कुलिन्द और अयोध्या के राजाओं, गणों के प्रधानों और यायी (युद्ध जीतने की इच्छा रखने वाले योद्धाओं) का छः मास के भीतर नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

उद्युक्तान् सह वाहनैर्नरपतींस्त्रैगर्त्तकान् मालवान्
कौलिन्दान् गणपुङ्गवानथ शिबीनायोध्यकान् पार्थिवान्।
हन्यात् कौरवमत्स्यशुक्त्यधिपतीन् राजन्यमुख्यानपि
प्रालेयांशुरसृग्ग्रहे तनुगते षण्मासमर्यादया ॥

यदि मङ्गल से चन्द्रबिम्ब वेधित हो तो छः महीने के अन्दर त्रिगर्त्त, मालव, कौलिन्द, शिवि, अयोध्या, कुरु, शुक्ति और मत्स्य देशों के घोड़े आदि वाहनों के साथ योद्धाओं, राजाओं और लोगों का तथा गणों के प्रधानों और क्षत्रियों का नाश होता है।

अथ बुधभेदनफलम्

वराहसंहितायाम्

मगधान् मथुरां च पीडयेद्वेणायाश्च तटं शशाङ्कजः।
अपरत्र कृतं युगं वदेद्यदि भित्वा शशिनं विनिर्गतः ॥

---

१. वामशृङ्गोच्छ्रितः शृङ्गो इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– अपरत्र कृतं युगमिति सत्ययुगस्येव व्यवहारो भवतीति तात्पर्यम्।

यदि चन्द्रमा को वेधित करके बुध निकलता हो तो मगधवासी, मथुरावासी और वेणा नदी के तट पर स्थित देशों के लोगों पीड़ित करता है। अन्य देशों में स्थित लोगों के लिए सतयुग के समान समय होता है, अर्थात् उन देशों में मनुष्य सब प्रकार से सुखी होते हैं।

तथा च पराशरः

बुधभिन्नः सुभिक्षक्षेमकरः ।

बुध के द्वारा चन्द्रबिम्ब वेधित हो तो लोगों में सुभिक्ष और कल्याण होता है।

अथ बृहस्पतिभेदनम्

तत्र पराशरः

अमरगुरुणा दश मासान्
[१]गान्धारवशातिसिन्धुवाह्लीकपार्वतिककाश्मीरान्– इति ।

विशेषः– उपतापयतीति सम्बन्धः ।

यदि चन्द्रबिम्ब बृहस्पति से वेधित हो तो गान्धार, सिन्धु, वह्लीक, पार्वतीक और काश्मीरवासियों का दश मासों के अन्दर नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

गान्धारसौवीरकसिन्धुकीरान् धान्यानि शैलान् द्रविडाधिपांश्च ।
द्विजांश्च मासानथ शीतरश्मिः सन्तापयेद्वाक्पतिना विभिन्नः ॥

यदि चन्द्रबिम्ब बृहस्पति से वेधित (खण्डित) हो तो गान्धार (कन्धार), सौवीरक, सिन्धु, कीर, पर्वतीय, द्रविड़— इन देशों के ब्राह्मणों और धान्यों का दस मासों तक नाश करता है।

अथ भार्गवभेदनम्

वराहसंहितायाम्

भिन्नाः सितेन मगधान् यवनान् पुलिन्दान्
नेपालभृङ्गि[२]मरुकच्छसुराष्ट्रमद्रान् ।
पाञ्चालकैकयकुलूतकपूरुषादान्
हन्यादुशीनरजनानपि सप्तमासान् ॥

---

१. गान्धारवशीति तथा गान्धारवसतिम् इति च पाठान्तरम्।
२. वंशकुरुकच्छ - इति, वंशतरुकच्छ - इति च पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि चन्द्रबिम्ब शुक्र से वेधित हो तो मगध, यवन, पुलिन्द, नेपाल, भृङ्गि, मरुदेश, कच्छ, सूरत, मद्रास, पाञ्चाल (पञ्जाब), काश्मीर, कुलूतक, पुरुषाद और उशीनर देशों के लोगों को सात महीनों तक मारता है।

पराशरस्तु

असुरगुरुभिन्नः पाञ्चालमगधकुलिन्दकुलूतककैकययवन-धूम्राम्बष्ठबङ्गनगराङ्गनाराज्यभृङ्गिमरुकच्छोशीनरपुलिन्द-पुरुषार्दनेपालान् सप्तमासानुपतापयति।

यदि चन्द्रबिम्ब शुक्र से खण्डित हो तो पञ्जाब, मगध, कुलिन्द, कुलूत, काश्मीर, यवन, धूम्र, अम्बष्ठ, वङ्गनगर, स्त्रीराज्य, भृङ्गि, मरुकच्छ, उशीनर, पुलिन्द, पुरुषार्द और नेपाल के निवासियों का सात महीने तक नाश करता है।

अथ शनिभेदनम्

वराहसंहितायाम्

यौधेयान् सचिवान् सकौरवान् [२]प्रागीशानथ चार्जुनायनान्।
विनिहन्त्यर्कजभिन्नमण्डलः शीतांशुर्दशमासपीडया॥

यदि शनैश्चर से चन्द्रबिम्ब वेधित हो तो योद्धाओं, मन्त्रियों, कुरुवंशियों (कुरुदेशवासियों), पूर्वादि दिशाओं में स्थित राजाओं (पाठान्तर से वृन्द के नायकों), अर्जुनायनों (पाण्डुवंशियों) को दश मास तक पीड़ित करके उन लोगों का नाश करता है।

पराशरः

अर्कसूनुसम्भेदे नृपतिविरोधामात्यभेदगणपयौधेयार्जुनायन-भयानावृष्टिप्रादुर्भावाश्च दशमासान्।

यदि शनैश्चर से चन्द्रबिम्ब वेधित हो तो राजाओं में विरोध, मन्त्रियों में भेद (मतान्तर), समूह के नायक, योद्धाओं और अर्जुनायनों (पाण्डुवंशियों) के लिए दस महीने तक भय और अनावृष्टि उत्पन्न होता है।

अथ केतुभेदनम्

वराहसंहितायाम्

क्षेमारोग्यसुभिक्षविनाशी शीतांशुः शिखिना यदि भिन्नः।

---

१. तरुकच्छो - इति पाठान्तरम्।

२. यूथेशान् - इति पाठान्तरम्। (वृन्देशान् इत्यर्थः)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुर्यादायुधजीविविनाशं चौराणामधिकेन च पीडाम् ॥

यदि केतु से चन्द्रमा वेधित हो तो मंगल, आरोग्य, सुभिक्षों का और शस्त्र से जीविका चलाने वालों का नाश करता है तथा चौरों को विशेषकर पीड़ा देता है।

अथ तामसकीलका वराहसंहितायाम्

तामसकीलकसंज्ञा राहुसुताः केतवस्त्रयस्त्रिंशत्।
ते चार्कमण्डलगताः पापफलाश्चन्द्रमण्डले सौम्याः ॥
ध्वाङ्क्षकबन्धप्रहरणरूपाः पापाः शशाङ्केऽपि।

राहु के तैंतीस पुत्र केतु, तामस, कीलक आदि नाम से प्रसिद्ध हैं। ये तामस, कीलकसंज्ञक राहुपुत्र सूर्यमण्डल में दिखाई दें तो अशुभ और चन्द्रमण्डल में दिखाई देने पर शुभ फल देते हैं; परन्तु ध्वाङ्क्ष (काक), कबन्ध (छिन्नमस्तक पुरुष), प्रहरण (खड्गादि अस्त्र) के समान उनकी आकृति प्रतीत हो तो चन्द्रमण्डल में प्रविष्ट होने पर भी वे पाप फल देते हैं।

अथ द्विचन्द्रादिर्विष्णुधर्मोत्तरे

द्विचन्द्रे ब्राह्मणाधिक्यमाधिक्यं प्रलयाय तु।

विशेषः– प्रलयायेति लोकस्य प्रलयाय न तु ब्राह्मणमात्रस्य।

आकाश में दो चन्द्रबिम्ब दिखाई दें तो ब्राह्मणों की अधिकता होती है और ब्राह्मणाधिक्य लोगों के प्रलय के लिए होता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

दिवि भाति यदा तुहिनांशुयुगं द्विजवृद्धिरतीव तदाऽऽशु शुभा।
तदनन्तरवर्णरणोऽर्कयुगे जगतः प्रलयस्त्रिचतुष्प्रभृति ॥

विशेषः– भाति शोभते कान्तिमत् स्निग्धं च भवतीत्यर्थः।

जिस समय आकाश में दो चन्द्रमा दिखाई दें, उस समय शीघ्र ब्राह्मणों की वृद्धि और शुभ होता है। यदि दो सूर्य दिखाई दें तो क्षत्रियों में संग्राम होता है तथा तीन-चार आदि सूर्य दिखाई दें तो संसार का नाश होता है।

भार्गवीये

द्विचन्द्रं गगनं दृष्ट्वा ब्रूयाद् ब्रह्मवधो महान्।

दो चन्द्रमा से युक्त आकाश को देखकर ब्राह्मणों का महान् वध कहना चाहिये।

द्विचन्द्रं गगनं दृष्ट्वा त्र्यहाद्ब्रह्मवधं वदेत्। इति गार्गीयवाक्यं च रूक्षविरश्मिद्विचन्द्रपरम्। ब्रह्मवधो ब्राह्मणानां विनाशः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिस समय दो चन्द्रों से युक्त आकाश दिखाई दे तो उस समय तीन दिनों के अन्दर ब्राह्मणों का नाश होता है।

(अर्थात् दो चन्द्र यदि रूक्ष, रश्मिहीन दिखाई दें तो ब्राह्मणों का नाश होता है। यदि स्निग्ध, कान्तिमान् और शुभ लक्षणों से युक्त दो चन्द्रों का दर्शन हो तो ब्राह्मणों की वृद्धि होती है)।

अथ लक्ष्मविकृतिः

तत्र भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यवधनिमित्तम्

व्यावृत्तं लक्ष्म सोमस्य भविष्यति महद्भयम्।

चन्द्रबिम्ब का विकारयुक्त चिह्न महान् भयसूचक होता है।

आश्वमेधिके सैन्धवपराजयनिमित्तम्

शशं चाशु विनिर्भिद्य मण्डलं शशिनोऽपतत्।

शश (खरहा) चिह्न को शीघ्र भेदन कर चन्द्रमण्डल गिर गया।

वटकणिकायां वराहः

उत्पातो व्याख्याता येऽर्के चन्द्रे च ते विनिर्देश्याः।
शुक्ले भवन्ति याप्याः कृष्णोऽधिकपापफलदास्ते ॥

सूर्यचाराध्याय में जो उत्पात कहे गये हैं, वे चन्द्रचाराध्याय में भी समझने चाहिये। शुक्ल पक्ष में चन्द्रोत्पात का फल अल्प होता है और कृष्ण पक्ष में अधिक पाप फल देने वाले होते हैं।

वृहत्संहितायां वराहः

शुक्ले पक्षे सम्प्रवृद्धे प्रवृद्धिं ब्रह्मक्षत्रं याति वृद्धिं प्रजाश्च।
हीने हानिस्तुल्यता तुल्यतायां कृष्णे सर्वं तत्फलं व्यत्ययेन ॥

यदि शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की वृद्धि हो अर्थात् तिथिवृद्धि हो तो ब्राह्मण, क्षत्रिय और प्रजाओं की वृद्धि होती है, घट जाने पर उनकी हानि होती है और समान रहने पर सामान्य फल होता है तथा कृष्णपक्ष में वृद्धि होने पर हानि, घटने से वृद्धि और समान रहने से साधारण फल होता है।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु चन्द्रोत्पातेषु चन्द्रपूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका शान्तिरौत्पातिकफल-गुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

इस चन्द्रोत्पात की शान्ति के लिए जहाँ विशेष शान्तिविधि नहीं कही गयी है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन उत्पातों की गुरुता और अल्पता जानकर, तदनुसार अतिशय सुवर्ण, अन्न, गाय, पृथ्वी आदि का दान करना चाहिये।

मयूरचित्रे

चन्द्रो रक्तः समो राज्ञो देशस्य च विनाशकः।
युवराजस्य सेनान्यो वधमाहुस्तथैव च॥
अधर्मिष्ठाः प्रजाश्च स्युः शान्तिश्च प्रथमैव तु।
यदा चन्द्रमसः पार्श्वे दृश्यते प्रतिचन्द्रिका॥
त्रिरात्रं जायते वृष्टिर्मासार्धेन महद्भयम्।
तत्र साधारणी शान्तिः कर्त्तव्या गर्गभाषिता॥

यदि लाल वर्ण का चन्द्रमा दिखाई दे तो राजा के लिए साधारण और देश के लिए विनाशकारी होता है। युवराज और सेनापति का वध होता है। प्रजागण अधर्मी होते हैं। इसके लिए प्रथमा शान्ति (सूर्याद्भुतावर्तोक्त) करनी चाहिये।

यदि चन्द्रमा के बगल में प्रतिचन्द्रिका (द्वितीय चन्द्र) दिखाई दे तो तीन रात के अन्दर वृष्टि होती है और १५ दिनों तक प्रजाओं में महान् भय होता है। इसके लिए गर्गोक्त साधारणी शान्ति करनी चाहिये।

गार्गीये

पाकः सोमस्य मासिकः।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे चन्द्राद्भुतावर्तः

जिस चन्द्रोत्पात का समय नहीं कहा गया है, उसका फल एक महीना तक होता है।

*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ राहोरद्भुतावर्त्तः

तत्र रविचन्द्रग्रहणनिमित्तान्याह वृद्धगर्गः

अष्टम्यां परिवेषः स्यात् तैले जलगते यदा।
प्रसारिते विजानीयाद्यतः खण्डस्ततस्तमः॥
पञ्चग्रहाणां संयोगं न दृष्ट्वा ग्रहणं वदेत्।
यदि न स्याद्बुधस्तत्र तं दृष्ट्वा ग्रहणं वदेत्॥

जब चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण होने वाला हो तो उसके स्पर्श और मोक्ष की दिशा जानने के लिए अष्टमी तिथि को पानी में तेल डालकर देखना चाहिये कि तेल किस ओर प्रसरित होता है। जिस ओर तेल प्रसरित हो, उसी भाग में ग्रहणकाल में स्पर्श और विपरीत दिशा में मोक्ष समझना चाहिये।

यदि अमावास्या या पूर्णिमा के दिन पाँच ग्रहों का संयोग हो तो ग्रहण नहीं होता है; परन्तु यदि उन पाँच ग्रहों में बुध नहीं हो तो ग्रहण होता है— ऐसा कहना चाहिये।

एतदद्वयं संवादि न भवतीत्युक्तं वराहसंहितायाम्

पञ्चग्रहसंयोगान्न किल ग्रहणस्य सम्भवो भवति।
तैलं च जलेऽष्टम्यां न विचिन्त्यमिदं विपश्चिद्भिः॥

गर्ग-वृद्धगर्गादि आचार्यों के मतानुसार जिस अमा या पूर्णिमा में पाँच ग्रहों की संयुति हो, उसमें ग्रहण का सम्भव नहीं होता है तथा ग्रहण से पूर्व अष्टमी के दिन जल में तेल डालकर स्पर्श-मोक्ष की दिशा का ज्ञान करना चाहिये अर्थात् ग्रहण से पूर्व अष्टमी के दिन जल में तेल डाले, वह जिस तरफ फैले उस तरफ स्पर्श और उसके विरुद्ध तरफ मोक्ष समझना चाहिये।

परञ्च यह मत ठीक नहीं है। अतः पण्डितों को यह मत नहीं मानना चाहिये।

(ग्रहण होने से पूर्व अनेक निमित्तों का होना वृद्धगर्गादि आचार्यों ने मुक्तकण्ठ से कहा है, जिसका खण्डन वराह ने किया है)।

निमित्तान्तराण्यपि मुक्तकण्ठेनाह वृद्धगर्गः। तद्यथा

सूर्याचन्द्रसोरुच्चैः कृतमुत्सर्पणस्पन्दनवेपनमल्परश्मित्ववै-वर्ण्यमरश्मित्वमण्डललक्ष्माहतिस्तमोरजोधूमाभ्रराजीवृतत्वा-पाण्डुत्वप्रतिसूर्यकाककीलकबन्धपरिवेषदर्शनानि क्रूरभैरव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पक्षिसङ्घानां निनादः श्वानः श्वापदा ऊर्ध्वमुखाः सततं त्रासिनः। शर्कराकर्षिणश्च वाता भूकम्पो निर्घातोल्का तारकाणां पतनानि वाऽभीक्ष्णं विद्युत्पाता गवां क्षीरिणां च क्षीरपरिहानिः – इति।

विशेषः– उत्सर्पणं विपरीतगमनम्। स्पन्दनं किञ्चिच्चलनम्। वेपनं कम्पनम्।

सूर्य और चन्द्रग्रहण से पूर्व उच्चतर स्थान में दोनों का विपरीत गमन, बिम्ब का अपने स्थान से खिसकना, काँपना, अल्प किरण होना, विकारयुक्त रश्मिहीन चिह्नयुक्त बिम्ब, अन्धकार-रज (धूलि) धुआँ-मेघखण्डों से व्याप्त, पाण्डुवर्ण, प्रतिसूर्य, काक, कीलक, कबन्ध (विना शिर के पुरुष), परिवेष आदि का आकाश में दर्शन, पक्षिसमूहों के कठोर और भयानक शब्द, कुत्ते आदि चतुष्पद हमेशा भयभीत और ऊर्ध्वमुख (ऊपर की ओर मुँह किये हुए), बालूकण-कंकड़ को उड़ाने वाली वायु (आँधी), भूकम्प, निर्घात, उल्कापात, ताराओं का पतन, पुनः-पुनः बिजली या वज्र-पतन, दूध वाली गायों के दूध का अभाव आदि होते हैं। ग्रहण के निमित्त देखे जाते हैं।

पराशरस्तु

ग्रहणनिमित्तानि उल्कापातसन्ध्यादिग्दाहभूमिकम्पाशनिवज्रनिर्घात-स्तनयित्नुपांशुवृष्टिविषमवातशीतोष्णविकृतानि। वज्रकनकरजत-मणीनां प्रभाभङ्गोऽभ्रलेखासन्दर्शनमर्कमण्डलोत्थितायाः कृष्णराज्याः सोमानुप्रवेशः शश्वच्च शिवाश्वगणरुतविकृतं नीचैरभ्रविसर्पणं रश्मिजालव्याकुलत्वं नभोऽम्भसामशीतत्वम्। क्षीरिणां क्षयोऽकस्मान्माल्यम्लानिः पञ्चताराग्रहोदयो रोहिणीपीडनं चन्द्रग्रहणेऽर्कविकृतिरर्कग्रहणे चन्द्रमसो बलवन्मध्यतनु[1]निमित्त-हेतुकारणानि सर्वार्धकिञ्चिद् ग्रहणीयान्यानुपूर्व्या यतो निमित्तोत्पात-स्ततो ग्रहणं यत एषामपसरणं ततो मोक्षः – इति।

पराशर के अनुसार ग्रहण से पूर्व उल्कापात, सन्ध्याकाल में दिग्दाह, भूकम्प, अशनि (उल्काभेद), वज्र, निर्घात, मेघगर्जन, पांशु (रज)-वृष्टि, विषम वायु, शीतल और गरम से उत्पन्न विकार अर्थात् जल और अग्नि से उत्पन्न विकार होते हैं तथा हीरा, सुवर्ण, चाँदी और मणियों की कान्ति का नाश, मेघरेखा (परिघ) का दर्शन, सूर्यमण्डल में उत्पन्न कृष्णराज्य (कबन्धादि), सोमानुप्रवेश, हमेशा गीदड़-घोड़े आदि के विकारयुक्त शब्द, मेघ का नीचे की ओर खिसकना, ग्रहों के किरणों में विकार, आकाश से गिरे जल में अशीतलता, दूध वाली (गाय आदि) की हानि, एकाएक

१. मध्यवात — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माला का मुरझाना, एक साथ पाँचों ताराग्रहों का उदय, रोहिणी नक्षत्र का ग्रहों द्वारा भेदन, चन्द्रग्रहण से पूर्व सूर्योत्पात और सूर्यग्रहण में चन्द्रोत्पात दिखाई देते हैं। इन उत्पातों के बलाबल (पूर्ण, मध्य और अल्प) के अनुसार सर्वग्रहण, अर्धग्रहण और अर्धाल्पग्रहणों का क्रमशः अनुमान करना चाहिये।

ये निमित्त जिस दिशा में दिखाई दें, उसी तरफ से स्पर्श और जिस दिशा में उत्पातों का अन्त हो, उस दिशा में मोक्ष होता है।

गजदन्तवैकृते राजपुत्रः

नीलभासे विषाणे तु तथा लोहितसप्रभे।
नीलसोमग्रहं विद्याल्लोहितेऽर्कग्रहं विदुः॥

यदि हाथी का दाँत नील वर्ण और लाल वर्ण की कान्ति वाला हो जाय तो क्रमशः नील वर्ण दाँत से चन्द्रग्रहण और लाल वर्ण दाँत के होने पर सूर्यग्रहण होता है।

अथ सूर्यग्रहणनिमित्तानि। तत्र पराशरः

आदित्यस्य वेपनं परिवेषणं दीनमन्दरश्मिताकृष्णकल्माषभावाः – इति।

सूर्यबिम्ब काँपता हुआ, परिवेष से घिरा हुआ, अल्प और मन्द किरणयुक्त, काला और पीत-कृष्णमिश्रित वर्ण की तरह दिखाई दे तो सूर्यग्रहण होता है।

अथ चन्द्रग्रहणनिमित्तानि। तत्र वृद्धगर्गः

सोमस्योदये शृङ्गयोः खण्डच्छिन्नव्यापिद्वैधीभावाः।

चन्द्रोदय-काल में चन्द्रशृङ्ग का खण्डित, छिन्न-भिन्न, दो भागों में विभक्त होना आदि लक्षण चन्द्रग्रहण के निमित्त होते हैं।

पराशरस्तु

चन्द्रमसस्तावत् प्रस्पन्दनं शशव्यावृत्तिर्दैन्यं पाण्डुत्वं सततपरिवेषणमचिरोदितज्योत्स्नाप्रभाभङ्गः[1] क्षीणता दक्षिणशृङ्गतैमिर्येतरस्यात्यर्थमुत्तुङ्गता द्विर्भावश्च - इति।

यदि चन्द्रबिम्ब प्रस्पन्दित (अगल-बगल खिसकता हुआ) हो, चन्द्रबिम्बगत शश (खरहा की आकृति) चिह्न विकृतियुक्त दिखाई दे, दीनता (रश्मिहीनता), पाण्डुवर्ण, हमेशा परिवेष से घिरा हुआ, उदय होने पर अधिक देर तक किरण का प्रकाश दिखाई नहीं देना, तिथ्यनुसार चन्द्रबिम्बमान न हो अर्थात् क्षीणबिम्ब हो, मात्र

---

१. अचिरोदितोल्काप्रभाभङ्गः इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दक्षिण शृङ्ग दिखाई दे, एक शृङ्ग अत्यन्त उच्च हो, बिम्ब दो भागों में विभक्त हो तो चन्द्रग्रहण होता है।

वृद्धगर्गः

एवमादीनि निमित्तान्यूर्ध्वमष्टम्या राहोरागमनानि ब्रूयात् – इति ।

उक्त निमित्त अष्टमी के बाद (शुक्लपक्ष में पूर्णिमा तक और कृष्णपक्ष में अमा तक) राहु के आगमन (दर्शन) के सूचक हैं, अर्थात् इन उत्पातों के दर्शन ग्रहण के निमित्त होते हैं। आशय यह है कि अष्टमी के पश्चात् होने वाले उक्त निमित्त ग्रहण के सूचक होते हैं।

भार्गवीये तु

चन्द्रग्रहणनिमित्तानि शुक्लपक्षाष्टमीपरम् ।
पौर्णमासीं च दृश्येरन् सूर्यस्य च तथेतरत् ॥

चन्द्रग्रहण के सूचक निमित्तों को शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि से लेकर पौर्णमासी तक देखना चाहिये और सूर्यग्रहण के निमित्तों को कृष्ण पक्ष की अष्टमी से अमा तक देखना चाहिये।

पराशरस्तु

शुक्लपक्षाष्टमीपञ्चदश्योरन्तरा ग्रहणनिमित्तानीन्दुभान्वोः प्रबलीभवन्ति ।

पराशर के वचन से सूर्य और चन्द्र दोनों के ग्रहणों के निमित्त शुक्ल पक्ष की अष्टमी और पौर्णमासी के मध्य ही बली होते हैं। अर्थात् कृष्ण पक्ष की अष्टमी से अमा तक के उत्पात ग्रहणसूचक निमित्त बली नहीं होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

रूक्षैः क्रूरैः सुबहुभिर्ग्रहणं क्रूरमादिशेत् ।
मध्यैर्मध्यं भवेदेवं सौम्यैश्च शुभदो ग्रहः ॥

उक्त ग्रहणसूचक निमित्त यदि अत्यन्त रूक्ष और क्रूर दिखाई दें तो ग्रहण भी क्रूर (पापफलद), मध्यम रूक्ष-क्रूर आदि निमित्त दिखाई दे तो मध्यम फल देने वाला और शुभसूचक निमित्त दिखाई दे तो ग्रहण का फल शुभ होता है।

एतदपि च वराहेण दूषितम्

न कथञ्चिदपि निमित्तैर्ग्रहणं विज्ञायते निमित्तानि ।
अन्यस्मिन्नपि काले भवन्ति चोत्पातरूपाणि ॥

विशेषः– न विज्ञायतेऽवश्यमिन्दुग्रहणं भविष्यतीति निश्चयो नोत्पद्यत इत्यर्थः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यतः कदाचिद्ग्रहणसूचकान्यप्येतानि भवन्ति कदाचित् फलान्तरसूचकानि । यदा चैतेषां दर्शनानन्तरं ग्रहणं भवति तदैतेषां पृथक् फलता । ग्रहणस्यैव फलत्वात् ।

गर्ग-पराशरादि आचार्यों ने उत्पातों के द्वारा ग्रहण के कारण कहे हैं, परन्तु उनके द्वारा ग्रहणकाल का ज्ञान नहीं हो सकता है; क्योंकि पर्वकाल से भिन्न काल में भी जो निमित्त दिखाई देते हैं, उन्हें 'उत्पात' कहते हैं। अतः उत्पात के द्वारा जो गर्गादि आचार्यों ने ग्रहण-कालादि कहे हैं, वह ठीक नहीं है। ये निमित्त कदाचित् ग्रहणसूचक भी हो सकते हैं और कदाचित् अन्य फलसूचक भी।

तथा च वराहसंहितायाम्

न पृथक् फलानि तेषां शिखिकीलकराहुदर्शनं यदि वा ।

यदि अन्य उत्पात होने के (सात दिनों के) बाद केतु, तामस-कीलक और राहु का दर्शन (चन्द्र-सूर्यग्रहण) हो तो उन पूर्व-दृष्ट उत्पातों का अलग से फल नहीं होता है। वे उत्पात केत्वादि के उदय के निमित्त ही होते हैं। यदि उत्पातों के दर्शन होने पर केतु, तामस-कीलक और राहु का दर्शन न हो तो उन उत्पातों के अनुसार ही फल कहना चाहिये।

अथ शुभसूचकराहुलक्षणं भार्गवीये

स्निग्धवर्णो यदाऽर्चिष्मान् पर्वस्थो लेहवान् ग्रहः ।
क्षिप्रं वाऽप्युदितग्राही सर्वभूतहिताय सः ॥

विशेषः– पर्वस्थ इत्यनेन पर्वग्रहणमित्यर्थः । लेहो ग्रासविशेषः । क्षिप्रमिति शीघ्रं गृहीत्वा मुञ्चतीत्यर्थः । उदितग्राहीति ग्रस्तोदयास्तनिवृत्त्यर्थम् ।

यदि पर्वस्थ राहु का वर्ण निर्मल और कान्तियुक्त हो तथा लेह नामक ग्रासविशेष (जिह्वा के समान बिम्ब को राहु चाटता हुआ) हो और बिम्ब (सूर्य और चन्द्र) के उदित होने पर ग्रहण हो तो वह ग्रहण सभी प्राणियों के लिए हित करने वाला होता है।

वृद्धगर्गस्तु

अल्पावलेही शीघ्रश्च स्निग्धः कृष्णः प्रदक्षिणः ।
राहुः प्रजाहितो ज्ञेयः क्षेमारोग्यसुभिक्षकृत् ॥

यदि ग्रहण अल्पावलेही (कम ग्रास वाला), शीघ्र समाप्त होने वाला, स्निग्ध, काला और अपसव्य हो तो प्रजाहितकारी, मङ्गलकारी, सुभिक्ष और आरोग्यकारी होता है।

वटकणिकायां तु

यातोऽपसव्यमसुरः परिपेलवश्च
शीघ्रं गतोऽल्पशकलं यदि वा बलीज्यः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सञ्छादनं विबुधमन्त्रिनिरीक्षितो वा
ताराग्रहैरसहितो हितकृत् प्रजानाम् ॥

विशेषः– अपसव्यं प्रदक्षिणम्। परिपेलवः स्वच्छः। सञ्छादनं ग्रासविशेषः। येषामयं स्वामी तेषामेवम्भूतो विशेषेण हितकृत्। विपरीतो विशेषेण विपरीतः।

यदि ग्रहण प्रदक्षिण क्रम से हो, स्वच्छ हो, शीघ्र मोक्ष हो, अल्पग्रास हो, बली गुरु से राहु दृष्ट या युक्त हो तथा ताराग्रहों से युक्त न हो तो प्रजा (जिनका राहु स्वामी होता है) के लिए हितकारी होता है।

राहुस्वामिकानि वटकणिकायाम्

राहोः कृतघ्नकुलपांसननीचशूद्रा बोक्काणशूलिकनियुद्धविदुग्रकोपाः।
गोमायुभक्षगिरिदुर्गनिवासिनश्च गर्तस्थहिंस्रपरदाररताः खलाश्च ॥

कृतघ्न (उपकार को नहीं मानने वाले), कुल में कलङ्क लगाने वाले, नीच, शूद्र जाति, वोक्काण, शूलिक, बाहुयुद्ध को जानने वाले, अति क्रोधी, सियार खाने वाले, पर्वत, गुफा (किला) में रहने वाले, गर्त्त में रहने वाले, हिंसा करने वाले, दूसरों का दान लेने में लीन रहने वाले और दुष्ट व्यक्तियों का स्वामी राहु है।

काश्यपस्तु

बुभुक्षितास्तीक्ष्णकोपा विभिन्नाः कुलपांसनाः।
[1]नीचम्लेच्छादिजातीयाः दरदाः पारदारिकाः ॥

सत्यधर्मविहीनाश्च गिरिस्थाः कन्दरास्थिताः।
[2]प्रजाताः सर्वहीनाश्च श्रृगालादा महाशनाः ॥

तिलाश्च बाहुयुद्धज्ञा माषाश्चौराः खराश्चराः।
यज्ञान् हिंसन्ति ये नित्यं राहुस्तेषामधीश्वरः ॥

अत्यधिक भूखे, उग्र क्रोधी, भिन्न रहने वाले, कुलपांसन (अपने कुल में कलङ्क लगाने वाले), नीच, म्लेच्छादि जाति के लोग, दरद (गुहा) में रहने वाले, दूसरी स्त्री के साथ रहने वाले, सत्य और धर्म से रहित, पर्वत पर रहने वाले, कन्दरा (पर्वतीय निचले भाग) में रहने वाले, सब कुछ से हीन उत्पन्न लोग, सियार खाने वाले, अधिक खाने वाले, तिल, बाहुयुद्ध (मल्लयुद्ध) को जानने वाले, माष (उड़द), चोरों, गदहे, गुप्तचर और यज्ञ को विध्वंस करने वालों का स्वामी राहु है।

---

१. नीचा म्लेच्छोत्सादकाश्च गर्तस्थाः — पाठान्तरम्।
२. प्रतापा सत्यहीनाश्च — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

गिरिशिखरकन्दरदरीविनिविष्टा म्लेच्छजातयः शूद्राः ।
गोमायुभक्षशूलिकवोक्काणश्वमुखविकलाङ्गाः ॥

कुलपांसनहिंस्रकृतघ्नचौरनिःसत्यशौचदानाश्च ।
खरचरनियुद्धवित्तीव्ररोषगर्त्ताश्रया नीचाः ।

उपहतदाम्भिकराक्षसनिद्राबहुलाश्च जन्तवः सर्वे ॥
धर्मेण च सन्त्यक्ता माषतिलाश्चार्कशशिशत्रोः ॥

पर्वत के शिखर, कन्दरा (पर्वतीय नीच स्थान) और दरी (गुहा) में रहने वाले, शूलिक, वोक्काण, अश्वमुख, अङ्गहीन मनुष्य, कुल में कलङ्क लगाने वाले, क्रूर, कृतघ्न, चोर, मिथ्या व्यवहार करने वाले, शौच (पवित्रता)-रहित, कृपण, गदहा, गुप्तचर, बाहुयुद्ध को जानने वाले, अतिक्रोधी, गर्त्त में रहने वाले, नीच, उपहत (कुत्सित पुरुष), मिथ्याधर्मी, राक्षस, अधिक सोने वाले, जन्तु, धर्महीन, उड़द, तिल— इन सबों का स्वामी राहु है।

अथ चन्द्रादिपर्वफलं वटकणिकायाम्

वृद्ध्या षाण्मासिक्या पतयः स्युः पर्वणां क्रमशः ।
ब्रह्मेन्दुशक्रधनपतिवरुणहुताशान्तका राहोः ॥

कल्पादि से छः-छः मासों की वृद्धि के क्रम से सात पर्वों के ब्रह्मा, चन्द्र, इन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम— ये देवता स्वामी होते हैं।

पराशरस्तु

अतः परं सप्तविधं पर्वानुक्रमिष्यामः । ब्राह्मसौम्येन्द्रकौवेरवारुणाग्नेययाम्यानि षण्मासान्तराणि सप्त भवन्ति । तेऽत्र ब्राह्मं शस्यजातम् । तद्वत् सौम्यं क्षेमारोग्यकरम् । ऐन्द्रं भूपालविरोधाक्षेमदुर्भिक्षफलम् । कौवेरमीश्वराणामैश्वर्यविनाशनं क्षेमशस्यकृच्च । वारुणं वृष्टिशस्यक्षेमारोग्यकरम् । आग्नेयमग्निशस्त्रकृत्[१] अनावृष्टये याम्यं च ।

इसके बाद सात प्रकार के पर्वों का क्रम कहता हूँ— ब्राह्म, सौम्य, ऐन्द्र, कौबेर, वारुण, आग्नेय, याम्य— ये सात पर्व क्रमशः छः-छः महीनों के अन्तर पर

१. आग्नेयमत्रक्षयदम् — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होते हैं। उनमें ब्राह्म पर्व में ग्रहण धान्यकारक, सौम्य में धान्य, कल्याण और आरोग्यकारक, ऐन्द्रपर्व में राजाओं में विरोध, अमङ्गल और दुर्भिक्ष करने वाला, कौबेर पर्व में ऐश्वर्यशाली राजाओं के ऐश्वर्य का नाश करने वाला, प्रजाओं का कल्याण करने वाला तथा धान्यकारक, वारुण पर्व में वृष्टि, धान्य, कल्याण और आरोग्य करने वाला, आग्नेय पर्व में अग्निभय और शस्त्रभय अथवा आग्नेयास्त्र का भय करने वाला तथा याम्यपर्व में ग्रहण अवृष्टि करने वाला होता है।

वराहेण त्वाग्नेये शुभफलमुक्तं वटकणिकायाम्। तद्यथा

ऐन्द्रमहितं प्रजानां याम्यं चान्यानि शिवसुभिक्षाय।

ऐन्द्र पर्व प्रजाओं के लिए अमङ्गल करने वाला और याम्य पर्व सभी प्रकार के मङ्गल और सुभिक्ष करने वाला होता है।

वृहत्संहितायाम्

ब्राह्मे द्विजपशुवृद्धिः क्षेमारोग्यानि शस्यसम्पच्च।
तद्वत्सौम्ये तस्मिन् पीड़ा विदुषामवृष्टिश्च॥

ऐन्द्रे भूपविरोधः शारदशस्यक्षयो न च क्षेमम्।
कौवेरेऽर्थपतीनामर्थविनाशः सुभिक्षं च॥

वारुणमवनीशाशुभमन्येषां क्षेमशस्यवृद्धिकरम्।
आग्नेयं मित्राख्यं [1]सस्यारोग्याभयाम्बुकरम्॥

याम्यं करोत्यवृष्टिं दुर्भिक्षं सङ्क्षयं च शस्यानाम्।
यदतः परं तदशुभं क्षुन्मारावृष्टिदं पर्व॥

यदि ब्राह्मपर्व में ग्रहण हो तो ब्राह्मण और पशुओं की उन्नति, कुशल, आरोग्य तथा धान्यों की वृद्धि होती है। इसी तरह चान्द्र पर्व में ब्राह्मण और पशुओं की उन्नति, कुशल, आरोग्य, धान्यों की वृद्धि, पण्डितों को पीड़ा तथा अनावृष्टि होती है। ऐन्द्रपर्व में राजाओं में विरोध, शारदीय धान्यों का नाश और लोगों में अकुशल होता है। कौबेरपर्व में धनपतियों के धन की क्षति और सुभिक्ष होता है। वारुण पर्व में राजाओं का अशुभ, दूसरे लोगों का कुशल और धान्य की वृद्धि होती है। आग्नेय पर्व को मित्र पर्व भी कहते हैं। इसमें धान्य की वृद्धि, आरोग्य, अभय और वृष्टि होती है। याम्य पर्व में वर्षा का अभाव, दुर्भिक्ष और धान्यों का नाश होता है। इन सात पर्वों से भिन्न समय में ग्रहण (अपर्वग्रहण) अशुभ फल देने वाले होते हैं। जैसे छः-छः मास की वृद्धि करके सात पर्वेश कहे गये हैं। इनमें किसी समय उत्पातवश पाँच, साढ़े पाँच, साढ़े छः या सात मास आदि पर भी पर्व की उपस्थिति हो जाती है। ऐसी

---

१. क्षेमारोग्या — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थिति में पूर्वकथित ब्राह्म आदि सात पर्व नहीं होते हैं। ब्राह्म आदि के अतिरिक्त पर्वों में दुर्भिक्ष, महामारी और अनावृष्टि होती है। यहाँ पर वृद्धगर्ग का वचन—

चन्द्रात्पञ्चममासे तु मासे त्वेकादशे तथा।
सप्तादशे वा सूर्यस्य ग्रहणं क्षुद्भयाय तत्॥ इति।

अथाद्भुतसागरारम्भशकाब्दात् पर्वेश्वरगणनम्

खनवदशो-१०९०नशकाब्दा द्विगुणाः कार्यारवावुदग्गोले।
सशरा ५ याम्येऽजाद्याः पर्वेशाः सप्तभिः शिष्टाः॥

अभीष्ट शकाब्द से १०९० (ग्रन्थारम्भ शकाब्द) घटाकर शेष को २ से गुणा कर ७ से भाग देकर एकादि शेष के क्रम से उत्तरगोल (मेष से कन्या तक) में सूर्य के रहने पर ब्रह्मा आदि गत पर्वेश होते हैं। दक्षिण गोल में सूर्य के रहने पर अभीष्ट शकाब्द से १०९० घटाकर २ से गुणा कर ५ जोड़कर ७ से भाग देने पर एकादि शेष के क्रम से ब्रह्मा आदि गत पर्वेश होते हैं। गतपर्व में १ जोड़ने से वर्त्तमान पर्वेश होता है।

उदाहरण– अभीष्ट शकाब्द १९१८। अतः— १९१८ - १०९० = ८२८ × २ = १६५६ ÷ ६ = २३६$\frac{४}{७}$। मेषादि में सूर्य की स्थिति रहने पर ४ + १ = ५ = वरुण वर्त्तमान पर्वेश हुआ।

अथायनफलं वराहसंहितायाम्

द्विजनृपतीनुदगयने विट्शूद्रान् दक्षिणायने हन्ति।

विशेषः– नृपतिशब्दोऽयं क्षत्रियपरः।

यदि उत्तरायण में चन्द्र-सूर्यग्रहण हो तो ब्राह्मण और क्षत्रियों को तथा दक्षिणायन में ग्रहण हो तो वैश्य और शूद्रों को मारता है।

तथा च वटकणिकायाम्

द्विजराजन्यान् हन्यादुदगयने दक्षिणे तु विट्शूद्रान्।

(उपर्युक्त) स्पष्ट है।

काश्यपश्च

उत्तरायणसन्दृष्टो ब्रह्मक्षत्रविनाशनः।
दक्षिणायनगो राहुर्वैश्यशूद्रप्रमर्दनः॥

यदि उत्तरायण में राहु (ग्रहण) का दर्शन हो तो ब्राह्मण और क्षत्रियों का नाश करता है और दक्षिणायन में राहु (ग्रहण) का दर्शन हो तो वैश्य और शूद्रों का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– दक्षिणायनगे कर्कटादिषड्राशिगते चन्द्रे सूर्ये वा दृष्टो राहुरिति सम्बन्धः ।

अथ मासफलं वटकणिकायाम्

आश्वयुजमाघकार्त्तिकभाद्रपदेष्वागतः सुभिक्षकरः ।
राहुरवशिष्टमासेष्वशुभकरो वृष्टिशस्यानाम् ।।

यदि आश्विन, माघ, कार्त्तिक और भाद्रपद मासों में चन्द्र या सूर्यग्रहण दिखाई दे तो सुभिक्ष होता है तथा अवशिष्ट (अग्रहायण, पौष, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावण) मासों में ग्रहण दिखाई दे तो वृष्टि और धान्यों के लिए अशुभ करने वाला होता है ।

पराशरस्तु

वैशाखेऽश्मकपौण्डोड्रम्लेच्छसौराष्ट्रेषु वृक्षशस्याभावाय ।

यदि वैशाख महीने में ग्रहण दिखाई पड़े तो अश्मक, पौण्ड, उड्र, म्लेच्छ, सौराष्ट्र— इन देशों में वृक्ष और धान्यों का अभाव (नाश) होता है ।

वराहसंहितायां तु

वैशाखमासि ग्रहणे विनाशमायान्ति कार्पासतिलाः समुद्गाः ।
इक्ष्वाकुयौधेयशकाः कलिङ्गाः सोपद्रवाः किन्तु सुभिक्षमस्मिन् ।।

यदि वैशाख मास की अमा में सूर्यग्रहण या पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण हो तो कपास, तिल और मूंग का नाश होता है । इक्ष्वाकु, यौधेय, शक और कलिङ्गदेश में उपद्रव होते हैं, किन्तु संसार में सुभिक्ष होता है ।

वृद्धगर्गस्तु

क्षेमं सुभिक्षं शस्यं च वैशाख्यां यदि गृह्यते ।
भयमेति तथेक्ष्वाकुर्माया च सह मालवैः ।।

कार्पासतिलमुद्गानां शाखानां च महीरुहाम् ।
सुभिक्षं जायते तत्र उत्तरा बलवत्तराः ।।

यदि वैशाख की अमा में सूर्यग्रहण या पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण हो तो मङ्गल, सुभिक्ष और धान्य होते हैं तथा इक्ष्वाकु, माया और मालव देशों में रहने वालों के लिए भय होता है । कपास, तिल, मूँग और वृक्षों की शाखाओं का नाश होता है; परन्तु वहाँ सुभिक्ष होता है । उक्त फल उत्तरोत्तर बली होते हैं ।

पराशरः

ज्येष्ठे ज्येष्ठनृपनृपपत्नीगणमुख्यशस्योपद्रवाय ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि ज्येष्ठ की अमा में सूर्यग्रहण या पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण हो तो ज्येष्ठ (आयु में अधिक), राजा, रानी, गणप्रधान और धान्यों के लिये उपद्रव देने वाले होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

ज्येष्ठाः श्रेष्ठाश्च पीड्यन्ते ज्येष्ठ्यामुपगते ग्रहे ।

यदि ज्येष्ठ मास में सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो ज्येष्ठ व्यक्ति और श्रेष्ठ मनुष्यों को पीड़ा होती है।

वराहसंहितायाम्

ज्येष्ठे नरेन्द्रद्विजराजपत्न्यः शस्यानि वृष्टिश्च महागणाश्च ।
प्रध्वंसमायान्ति नराश्च सौम्याः [1]साल्वैः समेताश्च निषादसंज्ञाः ॥

यदि ज्येष्ठ मास में ग्रहण हो तो राजा, ब्राह्मण, राजपत्नी, धान्य, वर्षा, महागण, सौम्य (दर्शनीय या उत्तरदिशा में रहने वाले) मनुष्य, साल्वदेशवासी, निषाद (प्राणियों के घातक) नाश को प्राप्त होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

आषाढपौर्णमास्यां तु गृहीते रजनीकरे ।
क्वचिद्वर्षति पर्जन्यस्तथा शाल्वं निपातयेत् ॥

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को यदि चन्द्रग्रहण हो तो कहीं-कहीं वर्षा होती है तथा शाल्वदेशवासी का नाश होता है।

पराशरस्तु

शाल्वनिषादवृष्टिशस्यघ्नमाषाढे ।

शाल्व, निषाद, वृष्टि और धान्य को आषाढ़ मास में ग्रहण हो तो नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

आषाढपर्वण्युदपानवप्रनदीप्रवाहान् फलमूलवर्त्तान् ।
गान्धारकाश्मीरपुलिन्दचीनान् हतान् वदेन्मण्डलवर्षमस्मिन् ॥

यदि आषाढ़ मास की अमावास्या में सूर्यग्रहण या पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण हो तो उदपान (वापी, कूप, तड़ाग आदि) के वप्र (तट) में रहने वाले मनुष्य, नदी का प्रवाह, फल-मूल खाकर समययापन करने वाले, गान्धार, काश्मीर, पुलिन्द, चीन—इन सबों का नाश करता है तथा संसार में मण्डलवृष्टि (कहीं-कहीं) वर्षा होती है।

---

१. सान्त्वैः तथा सौख्यैः — इति च पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गः

श्रावण्यां पौर्णमास्यां तु गृहीते रजनीकरे।
योगक्षेमविनाशाय शस्त्रनाशश्च जायते॥

यदि श्रावण मास की पूर्णिमा में चन्द्र-ग्रहण हो तो योग-क्षेम का विनाश और धान्य का नाश होता है।

पराशरस्तु

श्रावणे च क्षेमसुभिक्षमन्यत्र चीनकाश्मीरपुलिन्दगान्धारेभ्यः।

श्रावण मास में ग्रहण हो तो चीन, काश्मीर, पुलिन्द और गान्धार देशों को छोड़कर अन्य देशों में कल्याण और सुभिक्ष होते हैं अर्थात् उक्त देशों में अशुभ और दुर्भिक्ष होता है।

वराहसंहितायाम्

काश्मीरान् सपुलिन्दचीनयवनान् हन्यात् कुरुक्षेत्रजान्
गान्धारानपि मध्यदेशसहितान् दृष्टो ग्रहः श्रावणे।
काम्बोजैकशफांश्च शारदमपि त्यक्त्वा यथोक्तानिमा-
नन्यत्र प्रचुरान्नवृष्टिमनुजैर्धात्रीं करोत्यावृताम्॥

यदि श्रावण मास की अमा में सूर्यग्रहण या पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण हो तो काश्मीर, पुलिन्द, चीन, यवन, कुरुक्षेत्र, गान्धार, मध्यदेश, कम्बोज— इन देशों में रहने वाले, एकशफ (घोड़ा, गदहा), शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाले अन्न— इन सबों का नाश करता है। उक्त देशों से अन्यत्र देशों के मनुष्यगण अत्यधिक अन्न की उत्पत्ति से सुखी होकर सम्पूर्ण संसार को व्याप्त कर लेते हैं।

वृद्धगर्गः

प्रौष्ठपदे गृहीते तु प्रावृड्भवति पुष्कला[१]।
क्षेमं तु बङ्गमगधकाश्मीरदरदान् प्रति॥

यदि भाद्रपद मास में ग्रहण हो तो प्रचुर वर्षा होती है तथा वङ्ग, मगध, काश्मीर और दरद देशों में मङ्गल होता है अर्थात् शेष देशों में अमङ्गल होता है।

पराशरस्तु

भाद्रपदे मगधदरदकलिङ्गबङ्गानपास्य शस्यक्षेमाय च।

---

१. निष्फला — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परन्तु पराशर के अनुसार भाद्रपद मास में ग्रहण होने पर मगध, दरद, कलिङ्ग, वङ्ग देशों को छोड़कर अन्यत्र धान्य और कल्याण होता है अर्थात् इन देशों में धान्य का नाश और अमङ्गल होता है।

वराहसंहितायाम्

कलिङ्गबङ्गान् मगधान् सुराष्ट्रान्
म्लेच्छान् सुवीरान् दरदान् शकांश्च।
स्त्रीणां च गर्भानसुरो निहन्ति
सुभिक्षकृद् भाद्रपदेऽभ्युपेतः॥

यदि भाद्रपद महीने में ग्रहण हो तो कलिङ्ग, वङ्ग, मगध, सौराष्ट्र, म्लेच्छ, सुवीर, दरद, शक— इन देशों का और स्त्रियों के गर्भों का राहु नाश करता है तथा सुभिक्ष होता है।

वृद्धगर्गः

क्षेमं भवति शस्यं च गृहीतेऽश्वयुजि ग्रहे।

आश्विन मास में ग्रहण हो तो कल्याण और धान्य होता है।

पराशरस्तु

अश्वयुग्ग्रहणे सुभिक्षक्षेमायावन्तिवाह्लीकचीन-
काम्बोजसैन्धवानामभावाय च।

आश्विन मास में ग्रहण हो तो संसार में सुभिक्ष और कल्याण होता है; परन्तु अवन्ती, वाह्लीक, चीन, कम्बोज, सिन्धु— इन देशों में रहने वालों का नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

काम्बोजचीनयवनान् सह शल्यकृद्भि-
र्वाह्लीकसिन्धुतटवासिजनांश्च हन्यात्।
आनर्त्तपौण्ड्रभिषजश्च तथा किरातान्
दृष्टोऽसुरोऽश्वयुजि भूरिसुभिक्षकृच्च॥

यदि आश्विन मास में ग्रहण हो तो कम्बोज, चीन और यवन देशों में रहने वाले, शल्य चिकित्सक, वाह्लीक देश में रहने वाले, सिन्धु नद के तट में रहने वाले, आनर्त्त और पौण्ड्र देश में रहने वाले, वैद्य, किरात— इन सबों का नाश करता है तथा संसार में अधिक सुभिक्ष करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

कार्त्तिकं सुभिक्षक्षेमारोग्याय काशिकोशलशूरसेनाभावाय च।

यदि कार्त्तिक मास में ग्रहण हो तो संसार में सुभिक्ष, कल्याण और आरोग्य होते हैं; परन्तु काशी, कोशल, शूरसेन— इन देशों में रहने वालों का नाश होता है।

वराहसंहितायां तु

कार्त्तिक्यामनलोपजीविमगधान् प्राच्याधिपान् कोशलान्
कल्माषानथ शूरसेनसहितान् काशीं च सन्तापयेत्।
हन्यादाशु कलिङ्गदेशनृपतिं सामात्यभृत्यं तमो
दृष्टं क्षत्रियतापनं जनयति क्षेमं सुभिक्षान्वितम्॥

यदि कार्त्तिक मास में ग्रहण हो तो आग से आजीविका चलाने वाले (लोहार, सोनार आदि), मगध देश में रहने वाले, पूर्व दिशा के राजा, कोशल देश में रहने वाले, कल्माष, शूरसेन और काशी में रहने वालों का नाश करता है। कलिङ्ग देश के राजा को मन्त्री और नौकरों के साथ मारता है एवं क्षत्रियों को सन्ताप देता है और सम्पूर्ण संसार में क्षेम और सुभिक्ष करता है।

वृद्धगर्गः

पौर्णमास्यां यदा चन्द्रः कार्त्तिक्यामुपरज्यते।
पौण्ड्रान् कलिङ्गान् मत्स्यांश्च शूरसेनांश्च पीडयेत्॥

यदि कार्त्तिक मास की पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण हो तो पुण्ड्र, कलिङ्ग, मत्स्य और शूरसेन देशों में रहने वालों का नाश होता है।

काश्यपः

कार्त्तिके कोशला गावः प्रधानाश्चाहिताग्नयः।
वाधन्ते गणमुख्याश्च क्षत्रिया गोमिनस्तथा॥
सुवृष्टिर्जायते चापि शस्यसम्पत् तथोत्तमा।
प्राच्यां दिशि भयं ब्रूयात् क्षेममन्यत्र निर्दिशेत्॥

यदि कार्त्तिक मास में ग्रहण हो तो कोशल देश में रहने वालों, गायों, प्रधान व्यक्तियों, आहिताग्नियों (अग्निहोत्रियों), समूह के प्रमुख़ों, क्षत्रियों तथा गाय वालों का नाश करता है। सर्वत्र अच्छी वर्षा और धान्य की वृद्धि होती है। पूर्व दिशा के लोगों को भय होता है तथा अन्यत्र कल्याण होता है।

पराशरस्तु

मार्गशीर्षे मृगपौण्ड्रसोमपभयाय वृष्टये च।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि अग्रहायण मास में ग्रहण हो तो मृग, पुण्ड्र देश के निवासी और सोमरस पान करने वालों को भय तथा सर्वत्र वृष्टि होती है।

वराहसंहितायाम्

काश्मीरकान् कोशलकान् सपौण्ड्रान् मृगांश्च हन्यादपरान्तकांश्च।
ये सोमपास्तांश्च निहन्ति सौम्ये सुवृष्टिकृत् क्षेमसुभिक्षकृच्च॥

विशेषः– सौम्ये मार्गशीर्षे इति।

यदि मार्गशीर्ष मास में ग्रहण हो तो काश्मीर, कौशल और पुण्ड्र देश में रहने वाले, मृग (वन के जन्तु), पश्चिम देशवासी मनुष्य, सोमरस का पान करने वाले— इन सबों का नाश करता है तथा संसार में सुवृष्टि, क्षेम और सुभिक्ष करता है।

वृद्धगर्गस्तु

मार्गशीर्षे गृहीते तु क्षेमं शस्यं च नश्यति।
पौराश्च भयमृच्छन्ति मृगाश्च सह सोमपैः॥

औशीनरान् काश्यपांश्च ब्राह्मणांश्च तपः स्पृशेत्।
ग्रीष्मे शस्यं च भवति शारदं चोपहन्यते॥

यदि मार्गशीर्ष में ग्रहण हो तो सर्वत्र क्षेम और धान्य का नाश होता है; नगरवासी, मृग और सोमरसपान करने वाले भयभीत होते हैं। उशीनर, काश्यप-वंशीय ब्राह्मणों को तपस्या स्पर्श करती है अर्थात् वे तप करते हैं। ग्रीष्म धान्य होता है; लेकिन शारदीय धान्य का नाश होता है।

पराशरः

पौषे भयदुर्भिक्षब्रह्मक्षत्रोपरोधाय।

यदि पौष मास में ग्रहण हो तो संसार में भय और दुर्भिक्ष उत्पन्न होते हैं तथा ब्राह्मण और क्षत्रियों को उपद्रव होते हैं।

वराहसंहितायाम्

पौषे द्विजक्षत्रजनोपरोधः ससैन्धवाख्याः कुकुराः विदेहाः।
ध्वंसं व्रजन्त्यत्र च मन्दवृष्टिर्भयं च विन्द्यादसुभिक्षयुक्तम्॥

यदि पौष मास में ग्रहण हो तो ब्राह्मण और क्षत्रियों में विरोध (उपद्रव), सैन्धव, कुकुर और विदेह देशवासियों का नाश होता है तथा संसार में थोड़ी-सी वृष्टि, भय और दुर्भिक्ष होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गस्तु

पौर्णमास्यां यदा पौष्यामुपरज्येत चन्द्रमाः ।
कुरवश्च विदेहाश्च फलमश्नन्ति दारुणम् ॥

मन्दा वृष्टिर्भवत्यत्र श्रेष्ठो वर्णो विनश्यति ।
अनयान्मन्त्रिणश्चैव पीड्यन्ते नात्र संशयः ॥

पित्तज्वरोऽपि भवति श्रेष्ठः पञ्चत्वमृच्छति ।
महाबला महाविद्याः पीड्यन्ते पशुवाहनाः ॥

कुक्षिरोगोऽतिसारश्च ज्वररोगश्च वर्धते ।

यदि पौष मास की पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण हो तो कुरु और विदेह देशवासी मनुष्य अत्यन्त कष्ट भोगते हैं, अल्प वृष्टि होती है, श्रेष्ठ वर्ण (ब्राह्मण) का नाश होता है। अनीति के कारण मन्त्रियों को पीड़ा होती है। लोगों को पित्तज्वर होता है। श्रेष्ठ लोगों की मृत्यु होती है। महान् बली, महाविद्या और पशु-वाहन (घोड़ा-हाथी आदि) पीड़ित होते हैं; उदररोग, अतिसार तथा ज्वररोगों की वृद्धि होती है।

पराशरः

माघे शस्त्रप्रकोपप्रावृड्वृद्धये बङ्गाङ्गानर्त्तयवनकाशिदेशोत्सादनकृत् ।

माघ मास में यदि ग्रहण हो तो शस्त्रप्रकोप और वृष्टि में वृद्धि होती है तथा वङ्ग, अङ्ग, आनर्त्त, यवन और काशी देशवासियों में उपद्रव होते हैं।

वराहसंहितायाम्

माघे तु मातृपितृभक्तवशिष्ठगोत्रान्
स्वाध्यायधर्मनिरतान् करिणस्तुरङ्गान् ।
बङ्गान् सकाशिमनुजांश्च दुनोति राहु-
र्वृष्टिं च कर्षकजनानुमतान् करोति ॥

यदि माघ मास में ग्रहण हो तो माता-पिता के भक्त, वशिष्ठ गोत्रोत्पन्न ब्राह्मण, स्वाध्याय और धर्म में लीन मनुष्य, हाथी, घोड़ा, वङ्ग और काशी में निवास करने वाले मनुष्यों को पीड़ित करता है तथा किसानों की इच्छा के अनुकूल वृष्टि होती है।

पराशरः

फाल्गुनेऽन्नसम्पच्च ।

फाल्गुन मास में ग्रहण हो तो अन्न की वृद्धि होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गस्तु

फाल्गुन्यां कुरवश्चैव स्त्रियश्च सुभगास्तथा।
दाक्षिणात्याश्च राजानः पीड्यन्ते नात्र संशयः॥

यदि फाल्गुन मास में ग्रहण हो तो कुरुदेशवासी मनुष्य, सौभाग्यवती स्त्रियाँ, दक्षिण देश के राजा— इन सबों को निःसन्देह पीड़ित करता है।

वराहसंहितायाम्

पीडाकरं फाल्गुनमासि पर्व बङ्गाश्मकावन्तिकमेकलानाम्।
नृत्यज्ञशस्यप्रवराङ्गनानां धनुष्करक्षत्रतपस्विनां च॥

यदि फाल्गुन मास में ग्रहण हो तो बङ्गाल, अश्मक, अवन्ती और मेकल देश में रहने वाले, नाचने वाले, धान्य, उत्तम स्त्री, धनुष बनाने वाले (शिल्पी), क्षत्रिय और तपस्वियों को पीड़ित करता है।

पराशरः

नटनर्त्तकधनुर्धरशस्यविनाशाय चैत्रे।

नट (अभिनय करने वाले), नर्त्तक (नाच करने वाले), धनुषधारी और धान्य— इन सबों का चैत्र मास में ग्रहण होने पर नाश होता है।

वृद्धगर्गस्तु

पौर्णमास्यां यदा चैत्र्यां चन्द्रमा गृह्यते तदा।
शस्यानि च प्रणस्यन्ति क्षेमं च सह कारुभिः॥
लेखकांश्चित्रशिल्पांश्च सुमहानामयः स्पृशेत्॥

यदि चैत्र मास की पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण हो तो धान्य, क्षेम और कारु (काष्ठशिल्पी) का नाश करता है तथा लेखक और चित्रशिल्पज्ञों को महान् रोग स्पर्श करता है अर्थात् वे असाध्य रोग से रुग्ण होते हैं।

वराहसंहितायां तु

चैत्रे तु चित्रकरलेखकगेयसक्तान्
रूपोपजीविनिगमज्ञहिरण्यपण्यान्।
पौण्ड्रोड्रकेकयजनानथ वाऽश्मकांश्च
तापः स्पृशत्यमरपोऽत्र च चित्रवर्षी॥

यदि चैत्र मास में ग्रहण हो तो चित्रकार, लेखक, गान विद्या जानने वाले, रूपोपजीवी (वेश्या आदि), निगम (वेद) को जानने वाले, सुवर्ण बेचने वाले, पौण्ड्र,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

औड्र, कैकय और अश्मक देश में रहनेवाले पीड़ित होते हैं। संसार में अमरप (इन्द्र) विचित्रवर्षी (कहीं वृष्टि और कहीं अवृष्टि करने वाले) होते हैं।

वृद्धगर्गः

पौर्णमासीषु यत् सोमे फलमेतदुदाहृतम्।
एतदेव भवेदर्के त्वमावास्याफलं त्विति॥

वृद्धगर्ग ने जो फल सभी महीनों की पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण का कहा है, वे सभी फल अमावास्या में सूर्यग्रहण होने पर भी होते हैं।

अथ राशिफलम्। तत्र वराहसंहितायाम्

पाञ्चालकलिङ्गशूरसेनाः काम्बोजौड्रकिरातशस्त्रवार्त्ताः।
जीवन्ति तु ये हुताशवृत्त्या ते पीडामुपयान्ति मेषसंस्थे॥

गोपाः पशवोऽथ गोमिनो मनुजा ये च महत्त्वमागता।
ते पीडामुपयान्ति भास्करे ग्रस्ते शीतकरेऽपि वा वृषे॥

मिथुने प्रवराङ्गना नृपा नृपमात्रा बलिनः कलाविदः।
यमुनातटजाश्च बाह्लिका मत्स्याः सुह्मजनैः समन्विताः॥

आभीरान् शवरान् सपह्लवान् मल्लान् मत्स्यकुरून् शकानपि।
पाञ्चालान् विकलांश्च पीडयेदन्नं चापि निहन्ति कर्कटे॥

सिंहे पुलिन्दगणमेकलसिन्धुयुक्तान्
राजोपमान् नरपतीन् वनगोचरांश्च।
षष्ठे तु शस्यकविलेखकगेयसक्तान्
हन्त्यश्मकत्रिपुरशालियुतांश्च देशान्॥

तुलाधरेऽवन्त्यपरान्त्यसाधून्
वणिग्दशार्णान् मरुकच्छपांश्च।
अलिन्यथोदुम्बरमद्रचोलान्
द्रुमान् सयौधेयविषायुधीयान्॥

धन्विन्यमात्यवरवाजिविदेहमल्लान्[1]
पाञ्चालवैद्यवणिजो विषमायुधज्ञान्।
हन्यान्मृगे तु झषमन्त्रिकुलानि नीचान्
मन्त्रौषधीषु कुशलान् स्थविरायुधीयान्॥

---

१. वसुधाजि — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुम्भेऽन्तर्गिरिजान्[1] सपश्चिमजनान् भारोद्वहांस्तस्करान्
आभीरान् दरदार्यसिंहलजनान्[2] हन्यात्तथा बर्बरान्।
मीने सागरकूलसागरभवद्रव्याणि माल्यान् जनान्
प्रज्ञान् वार्युपजीविनः शुभफलं कूर्मोपदेशाद्वदेत्॥

मेष राशि में स्थित सूर्य या चन्द्र का ग्रहण होने से पञ्जाब, कलिङ्ग, शूरसेन, कम्बोज, औड्र-देश, किरात, शस्त्र से जीविका चलाने वालों और अग्नि से जीविका चलाने वालों को पीड़ित करता है।

वृष राशिगत सूर्य या चन्द्र का ग्रहण हो तो गौ का पालन करने वालों (अहीर आदियों), पशुओं, अधिक गाय वालों और पूजनीय मनुष्यों को पीड़ित करता है।

यदि मिथुन राशिगत सूर्य या चन्द्र का ग्रहण हो तो उत्तम स्त्री, राजा, नृपमात्र (राजा के समान मन्त्री आदि), प्राणधारी अन्य जीव, कलाओं (चित्र, गीत, नृत्य और वाद्य आदि) को जानने वाले, यमुना नदी के तट पर निवास करने वाले, वाह्लीक (धीर मनुष्य, 'वाह्लीकं धीरहिङ्गुनो'रिति मेदिनी), मध्यदेश ('साकेता मिथिला चम्पा कौशाम्बी कौशिकी तथा। अहिक्षेत्रं गया विन्ध्या मध्यदेशो हि कीर्त्तितः॥') और सुह्म देश में निवास करने वाले मनुष्यों को पीड़ित करता है।

यदि कर्क राशि में स्थित सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो आभीर (अहीर, 'गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाहीरबल्लवाः' इत्यमरः), पह्लव (दक्षिण देश का राजवंश), बाहुयुद्ध को जानने वाले, मत्स्य, कुरु, शक, पञ्जाब— इन देशों में निवास करने वाले और अङ्गहीन मनुष्यों को पीड़ित करता है।

यदि सिंह राशि में स्थित सूर्य या चन्द्र का ग्रहण हो तो पुलिन्द (म्लेच्छ जातियों का समूह), मेकल (पर्वतविशेष) पर निवास करने वाले, बलवान जन्तु, राजा के समान व्यक्ति, राजा और वन में निवास करने वाले मनुष्य पीड़ित होते हैं।

यदि कन्या राशि में ग्रहण हो तो धान्य, कवि, लेखक, गान विद्या जानने वाले, अश्मक देशवासी या पत्थर से आजीविका चलाने वाले, त्रिपुर नामक देश और धान्ययुक्त प्रदेश— इन सबों का नाश होता है।

यदि तुला राशि में स्थित सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण हो तो अवन्ति देश में निवास करने वाले, पश्चिम समुद्र के निकट रहने वाले, सज्जन तथा व्यापारी, दशार्ण, मरु और कच्छ देश में रहने वाले— इन सबों का नाश होता है।

---

१. गिरिजात्य — इति पाठान्तरम्।
२. सिंहपुरकान् — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि वृश्चिक राशिगत सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो उदुम्बर, मद्र और चोल देशवासी मनुष्य, वृक्ष, युद्ध करने वाले मनुष्य और कठोर शस्त्र धारण करने वाले मनुष्यों का नाश करता है।

यदि धनु राशिस्थित सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो मन्त्री, प्रधान मनुष्य, घोड़ा, विदेह देश (मिथिला) में निवास करने वाले मनुष्य, बाहुयुद्ध करने वाले, पञ्जाब में रहने वाले मनुष्य, वैद्य, व्यापारी, कठोर अस्त्र को चलाने वाले— इन सबों का नाश करता है।

यदि मकर राशिगत सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो मछली, मन्त्रियों का कुल, नीच कर्म करने वाले, मन्त्र और औषधि को जानने वाले, वृद्ध, शस्त्र से आजीविका चलाने वाले— इन सबों का नाश करता है।

यदि कुम्भ राशि में स्थित सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण हो तो पहाड़ी मनुष्य, पश्चिम देशवासी मनुष्य, बोझ ढोने वाले, चोर, अहीर, दरद देश में रहने वाले, प्रधान मनुष्य, सिंहल देशवासी मनुष्य, बर्बर देश में रहने वाले— इन सबों का नाश करता है।

यदि मीन राशि में स्थित सूर्य या चन्द्र का ग्रहण हो तो समुद्र के तट और समुद्र के जल में उत्पन्न हुए द्रव्य, जंगली मनुष्य, बुद्धिमान्, जलोपजीवी (जल के विक्रय से जीवन-यापन करने वाले मनुष्य)— इन सबों का नाश करता है।

प्रति नक्षत्र के अनुसार ग्रहण का फल कूर्मविभाग के द्वारा कहना चाहिये अर्थात् जिस नक्षत्र में सूर्य या चन्द्र का ग्रहण हो, वह नक्षत्र कूर्मविभाग से जिस देश में पड़े, उस देश में स्थित मनुष्यों को पीड़ा होती है।

अथ नक्षत्रफलं वटकणिकायाम्

कूर्मविभागेन वदेत् पीडां देशस्य वीक्ष्य नक्षत्रम्।

कूर्मविभाग के द्वारा देशक नक्षत्र के अनुसार देश को पीड़ा होती है अर्थात् जिस नक्षत्र का जो देश है, उस नक्षत्र में सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो उस देश को पीड़ा होती है।

पराशरस्तु

अश्विन्यामश्वानश्वजीविनश्च। याम्ये कलिङ्गान् दक्षिणांश्चोपतापयति। कृत्तिकासु कलिङ्गमत्स्याधिपतीन्। रोहिण्यां क्षुच्छस्त्रकोपैः प्रजाः। मृगशिरसि शाल्वनिषादकैकेयान्। रौद्रे शकान् कुकुरान् पल्वलोपजीविनश्च। पुनर्वसौ पाण्ड्यमरुकच्छकार्पासांश्च। पुष्ये गोमन्तसिन्धुसौवीरकुरुपाञ्चालान्। सार्पे काशि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कलिङ्गसिंहलराजन्यान्। पित्र्ये दण्डकारण्यवासिनः पितृधान्यं च। भाग्येषु भगान् काम्बोजान् सुराष्ट्राधिपतिं च। आर्यम्णो मगधाङ्गयवनान्। हस्ते दशार्णान्। त्वाष्ट्रे मद्रान् कुरुक्षेत्रं च। वायव्ये काश्मीरोशीनरान् वाजिनश्च। विशाखयोर्वृक्षाश्मकान्। मैत्रे काशि-कोशलान्। ज्येष्ठायां ज्येष्ठजातीयान् दरदांश्च। मूले क्षुद्रकमालवयौधेयान्, आप्ये पञ्चनदान् सुवीराधिपतिं च। वैश्वदेवे आर्जुनायनपौण्ड्रशिविमालवान्। श्रवणे शाल्वानानर्त्तकांश्च। वासवे धनिनः शकारण्यजांश्च[1]। वारुणे कैकेयान् जलचरांश्च। आजे अङ्गबङ्ग-मगधकुकुरान्। आहिर्बुध्ने अश्मकेक्षुक्षुद्रकत्रिगर्त्तान्। पौष्णे वैदेहानर्त्तकसिन्धुसौवीरान्।

यदि सूर्य या चन्द्रमा के **अश्विनी** नक्षत्र में स्थित रहने पर ग्रहण हो तो घोड़े और घोड़े से आजीविका चलाने वालों का नाश होता है। **भरणी** में रहने पर ग्रहण हो तो कलिङ्ग देश के निवासी और दक्षिण दिशा में स्थित देश के निवासी मनुष्यों को पीड़ा होती है। **कृत्तिका** में ग्रहण हो तो कलिङ्ग देशवासी, मत्स्य देशवासी मनुष्यों और राजाओं का नाश होता है। यदि **रोहिणी** नक्षत्र में ग्रहण हो तो भूख और शस्त्र के प्रकोप से प्रजाओं का नाश होता है। यदि **मृगशिरा** नक्षत्र में ग्रहण हो तो शाल्व देश के निवासी मनुष्य, अहीर और केकय देश के निवासी मनुष्यों का नाश होता है। **आर्द्रा** नक्षत्र में ग्रहण हो तो कुकुर देश और पल्वलोपजीवियों (जल के गड्ढ़ों से जीविका चलाने वालों) का नाश होता है। यदि **पुनर्वसु** नक्षत्र में ग्रहण हो तो पाण्ड्य, भरु और कच्छ देशों के निवासी मनुष्यों तथा कपासों का नाश करता है। **पुष्य** नक्षत्र में ग्रहण हो तो गोमन्त, सिन्धु, सौवीर, कुरु और पञ्जाब प्रदेश में रहने वालों का नाश होता है। **आश्लेषा** नक्षत्र में सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो काशी, कलिङ्ग, सिंहल देश के क्षत्रियों का नाश होता है। **मघा** नक्षत्र में ग्रहण हो तो दण्डकारण्य में रहने वाले मनुष्यों और पितृधान्य (जौ, तिल आदि) का नाश होता है। **पूर्वफाल्गुनी** नक्षत्र में ग्रहण हो तो भग, कम्बोज देश में रहने वाले मनुष्यों और सुराष्ट्र के राजा का नाश होता है। **उत्तरफाल्गुनी** में ग्रहण हो तो मगध, अङ्ग और यवन देशवासियों का नाश करता है। **हस्त** नक्षत्र में ग्रहण हो तो दशार्ण देश-निवासी मनुष्यों का नाश होता है। **चित्रा** में ग्रहण हो तो मद्र और कुरुक्षेत्र-निवासियों को पीड़ा होती है। **स्वाती** नक्षत्र में ग्रहण होने पर काश्मीर और उशीनर देश में रहने वालों तथा घोड़ों का नाश होता है। **विशाखा** और **अनुराधा** नक्षत्रों में ग्रहण हो तो वृक्ष और अश्मक देशवासियों

१. शकानन्त्यजांश्च — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का नाश होता है। **अनुराधा** में ग्रहण हो तो काशी और कोसल देश के निवासी मनुष्यों का नाश होता होता है। **ज्येष्ठा** नक्षत्र में ग्रहण हो तो श्रेष्ठ जाति (ब्राह्मणादि) के मनुष्य और दरददेश के मनुष्यों का नाश होता है। **मूल** नक्षत्र में ग्रहण हो तो क्षुद्रक और मालव देशवासियों तथा योद्धाओं का नाश होता है। **पूर्वाषाढ़** नक्षत्र में ग्रहण हो तो पञ्जाब के निवासी मनुष्यों और सुवीर देश के राजा का नाश होता है। **उत्तराषाढ़** में ग्रहण हो तो आर्जुनायन, पौण्ड्र, शिवि और मालव देश के मनुष्यों का नाश होता है। **श्रवण** नक्षत्र में ग्रहण हो तो शाल्व और आनर्त्त देश में रहने वालों का नाश होता है। **धनिष्ठा** नक्षत्र में ग्रहण हो तो धनी लोग, शकदेश-निवासी और जंगली मनुष्यों का नाश होता है। **शतभिषा** नक्षत्र में ग्रहण हो तो केकय देश के निवासियों और जलचर जन्तुओं का नाश होता है। **पूर्वभाद्र** नक्षत्र में ग्रहण हो तो अङ्ग, बङ्ग, मगध और कुकुर देश में रहने वाले मनुष्यों का नाश होता है। **उत्तरभाद्र** नक्षत्र में ग्रहण हो तो अश्मक, इक्षु, क्षुद्र और त्रिगर्त्त देशों में रहने वाले मनुष्यों का नाश होता है और यदि **रेवती** नक्षत्र में सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण हो तो विदेहदेश (मिथिला), आनर्त्त, सिन्धु और सौवीर देशों में रहने वाले मनुष्यों का नाश होता है।

ज्यौतिषपराशरविष्णुधर्मोत्तरयोः

ग्रहोपश्लिष्टे नक्षत्रे ग्रहणं तु यदा भवेत्।
तदा पीडा विनिर्देश्या सैनिकानां नृपैः सह॥

जिस नक्षत्र में स्थित सूर्य या चन्द्र का ग्रहण हो, उस नक्षत्र वाले (कूर्मविभाग द्वारा) देश के राजाओं के साथ सैनिकों को पीड़ा होती है।

अथ दिक्फलम्। तत्र पराशरः

उदक्पूर्वदक्षिणप्रत्यक् ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्रोत्सादनायानुपूर्व्या।

यदि चन्द्र या सूर्य का ग्रहण उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम दिशाओं में दिखाई दे तो क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियों का नाश होता है। बिम्ब की उत्तर दिशा में राहु (ग्रहण) दिखाई दे तो ब्राह्मण, पूर्व में क्षत्रिय, दक्षिण में वैश्य और पश्चिम में शूद्र का नाश करता है।

काश्यपः

सौम्यपार्श्वगते विप्रान् पूर्वस्यां क्षत्रजातयः।
वैश्यान् दक्षिणतो राहुर्हन्ति पश्चिमतोऽपरान्॥

यदि उत्तर दिशा में राहु (ग्रहण) दिखाई दे तो ब्राह्मणों को, पूर्व दिशा में क्षत्रियजातियों को, दक्षिण दिशा में वैश्यों को और पश्चिम दिशा में शूद्रों को मारता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वटकणिकायां तु

उदगादिषु दिक्षु शुभो विप्रादीनां सितादिवर्णघ्नः ।

यदि उत्तरादि (उत्तर-पूरब-दक्षिण-पश्चिम आदि क्रम से) दिशाओं में राहु का दर्शन होने पर ब्राह्मणादि का शुभ होता है तथा सितादि (शुक्ल आदि = सफेद, लाल, पीत और कृष्ण) वर्णों का नाश करता है अर्थात् शुक्लादि वर्ण (रंग) वाले जीवों का नाश करता है ।

काश्यपः

पूर्वे सलिलजान् हन्यात् पश्चाद्धन्यात् कृषीबलान् ।
याम्ये वरगजान् हन्ति सौम्ये गोनाशकृन्मतः ॥

यदि चन्द्र या सूर्यबिम्ब में पूरब में ग्रहण दिखाई दे तो जल से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं एवं जीवों का नाश करता है। पश्चिम में दिखाई दे तो कृषीवलों (किसानों) का नाश करता है। दक्षिण में दिखाई दे तो श्रेष्ठ हाथियों का नाश करता है और उत्तर में दिखाई दे तो गायों का नाश करता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

पूर्वेण सलिलपूर्णां करोति वसुधां समागतो दैत्यः ।
पश्चात् कर्षकसेवकबीजविनाशाय निर्दिष्टः ॥
[1]सलिलचरदन्तिघाती याम्येनोदग्गवामशुभः ।

यदि पूरब में राहु दिखाई दे तो पृथ्वी को जल से पूर्ण करता है एवं पश्चिम में दिखाई दे तो किसान, भृत्य और बीजों का नाश करता है। दक्षिण में दिखाई दे तो जलचर और हाथियों का नाश करता है तथा उत्तर में दिखाई दे तो गाय-बैलों का नाश करता है।

वटकणिकायाम्

विदिगादिगतो हन्याद्राहुर्म्लेच्छान् सविजिगीषून् ।

यदि विदिशा (ईशान, आग्नेय, नैर्ऋत्य और वायव्य कोण) में राहु दिखाई दे तो म्लेच्छ जातियों और यायियों का नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

म्लेच्छान् विदिक्स्थितो यायिनश्च हन्याद्धुताशसक्तांश्च ।

विदिशा में स्थित राहु म्लेच्छ जाति, यायी और अग्निहोत्री अर्थात् अग्नि से जीविका चलाने वालों का नाश करता है।

---

१. सलिलवरदन्तिघाती — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ ग्रासविशेषो वराहसंहितायाम्

सव्यापसव्यलेहग्रसननिरोधावमर्दनारोहाः ।
आघ्रातं मध्यतमस्तमोऽन्त्य इति ते दश ग्रासाः ॥

सव्य, अपसव्य, लेह, ग्रसन, निरोध, अवमर्दन, आरोह, आघ्रात, मध्यतम, तमोन्त्य— ये सूर्य और चन्द्रग्रहण के दस ग्रास होते हैं।

पराशरेणान्यथा दश ग्रासा दर्शितास्तद्यथा

देशोपद्रवा ग्रसनारोहणोपघ्राणोन्मर्दननिरोधपरिलेहनापसव्य-सव्यान्तमध्यतमउपप्लवाश्च इति।

विशेषः– अत्रान्तमध्य इत्येकः । तमउपप्लव इत्यपरः ।

ग्रसन, आरोहण, उपघ्राण, उन्मर्दन, निरोध, परिलेह, अपसव्य, सव्य, अन्तमध्य और तम-उपप्लव— ये दश ग्रास देशों में उपद्रव करते हैं।

अथैतेषां लक्षणानि फलञ्च । तत्र पराशरः

प्रदक्षिणं सव्यं प्रजाहिताय ।

यदि सूर्य या चन्द्र के ग्रहण के समय में राहु प्रदक्षिण क्रम (दक्षिण भाग) से गमन करे तो सव्य ग्रास कहलाता है। यह ग्रास प्रजा के लिए शुभ फल देने वाला होता है।

भार्गवीये तु

प्रदक्षिणे-तु सौमनस्यम् ।

यदि सव्य ग्रास हो तो प्रजाओं को सौमनस्य (सुख) होता है।

वराहसंहितायां तु

सव्यं गते तमसि जगज्जलप्लुतं भवति मुदितमभयं च ।

यदि ग्रहण के समय में सूर्य या चन्द्रमा के सव्य (दक्षिण भाग) में होकर राहु गमन करे तो संसार जल से पूर्ण, हर्षित और भयरहित होता है।

पराशरः

अप्रदक्षिणमपसव्यं प्रजाभावाय ।

यदि वाम भाग (उत्तरभाग) में होकर राहु गमन करे तो अपसव्य ग्रास होता है, जो प्रजा के लिए अशुभ करता है।

वराहसंहितायां तु

अपसव्ये नरपतितस्करावमर्दैः प्रजानाशः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि अपसव्य (वाम भाग) में होकर राहु गमन करे तो राजा और चोरों के द्वारा पीड़ित होकर प्रजाओं का नाश होता है।

पराशरः

समन्ताज्जिह्वयाऽभिलेहनं समानफलं पूर्वेण – इति।

विशेषः– पूर्वेण निरोधेनेत्यर्थः। निरोधनान्तरस्याभिधानात्।

यदि सूर्य या चन्द्रबिम्ब को चारो ओर जिह्वा से (जीभ के समान) राहु चाटता हुआ दिखाई दे तो लेह नाम का ग्रास होता है। इसमें पूर्व के समान अर्थात् परिलेह से पूर्वोक्त निरोध ग्रास के समान फल होता है।

वराहसंहितायाम्

जिह्वावलेढि परितस्तिमिरनुदो मण्डलं स यदि लेहः।
प्रमुदितसमस्तभूता[1] प्रभूततोया च तत्र मही॥

यदि सूर्य या चन्द्रबिम्ब को जिह्वा के समान राहु चाटता हुआ दिखाई दे तो लेह नाम का ग्रास होता है। इसमें आनन्दित सभी प्राणियों से युत और जलपूर्ण पृथ्वी होती है।

पराशरः

अर्धत्रिभागपादग्रहणं ग्रसनप्रख्यातं नृपतिप्रच्युतये।

यदि सूर्यबिम्ब या चन्द्रबिम्ब का आधा या तृतीयांश या चतुर्थांश भाग राहु से ग्रसित हो तो ग्रसन नाम का ग्रास कहलाता है। इसमें राजा का नाश होता है।

वराहसंहितायाम्

ग्रसनमिति यदा त्र्यंशः पादो वा गृह्यतेऽथ वाऽप्यर्धम्।
स्फीतनृपतिवित्तहानिः पीडा च स्फीतदेशानाम्॥

यदि सूर्य या चन्द्रबिम्ब का तृतीयांश या चतुर्थांश या आधा भाग राहु से ग्रसित होता है तो वह ग्रसन नामक ग्रास होता है। इसमें स्फीत (बहुत ऐश्वर्यशाली) राजा का धननाश होता है और स्फीत (धनयुक्त) देशों में रहने वालों को पीड़ा होती है।

तत्रैव

पर्यन्तेषु गृहीत्वा मध्ये पिण्डीकृतं तमस्तिष्ठेत्।
स निरोधो विज्ञेयः प्रमोदकृत् सर्वभूतानाम्॥

---

१. समस्तभूप — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सूर्य या चन्द्र मण्डल को चारो तरफ से ग्रसित कर राहु मध्यप्रदेश में पिण्डाकार होकर बैठा हो तो निरोध नामक ग्रास होता है। यह भूमिस्थ सभी प्राणियों के लिए आनन्द देने वाला होता है।

पराशरेण त्वन्यथा निरोधोऽभिहितः

सर्वमण्डलधूमावरणं निरोधस्तदारोग्यक्षेमसुभिक्षलक्षणम्।

यदि सूर्य या चन्द्रबिम्ब का सम्पूर्ण मण्डल धुयें से ढक जाय तो निरोध नामक ग्रास होता है। इसमें आरोग्य, कल्याण और सुभिक्ष होते हैं।

पराशरः

उन्मर्दनं चिरमर्केन्दुसकलमण्डलाक्रमणं प्रजाविद्रवकरम्।

यदि सूर्य या चन्द्रमा मण्डल के सम्पूर्ण बिम्ब को ढककर राहु बहुत समय तक ठहरे तो उन्मर्दन (अवमर्द) नामक ग्रास होता है। इसमें प्रजाओं का नाश होता है।

काश्यपस्तु

अवमर्दे पापमर्दात् स्वयं संक्षुभ्यते नृपः।

राहु के द्वारा अवमर्द नामक ग्रास में स्वयं राजा क्षुब्ध होता है।

वराहसंहितायाम्

अवमर्दनमिति निःशेषमेव सञ्छाद्य यदि चिरं तिष्ठेत्।
हन्यात् प्रधानभूपान् प्रधानदेशांश्च तिमिरमयः॥

यदि सूर्य या चन्द्र के मण्डल को पूरा ढँककर राहु बहुत देर तक ठहरे तो अवमर्द नामक ग्रास होता है। यह प्रधान राजाओं और प्रधान देशों का नाश करता है।

भार्गवीये

सर्वं सङ्गृह्य च ज्योतिश्चिरमन्तर्दधाति च।
हन्ति स्फीतानि राष्ट्राणि प्रधानञ्च नराधिपम्॥

यदि सूर्य या चन्द्रबिम्ब के मण्डल को पूरा ग्रसित कर बहुत समय तक राहु रहता है तो ग्रसन नामक ग्रास होता है। यह स्फीत (समृद्ध) देशों और प्रधान राजा का नाश करता है।

पराशरः

मण्डलमध्ये ग्रहणावर्त्तनमारोहणं नरपतिविक्षोभः प्रजानाशकरः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सूर्य या चन्द्र के बिम्बमध्य में ग्रहण के तुरन्त बाद फिर ग्रहण दिखाई दे तो वह आरोहण नाम का ग्रास होता है। इसमें राजा को विक्षोभ (पीड़ा) और प्रजाओं का नाश होता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

वृत्ते ग्रहे यदि तमस्तत्क्षणमावृत्य दृश्यते भूयः।
आरोहणमित्यन्योऽन्यमर्दैर्भयकरं राज्ञाम्॥

यदि सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण के बाद उसी क्षण में पुनः राहु (ग्रहण) दिखाई दे तो आरोहण नामक ग्रास होता है। इसमें राजाओं को परस्पर विरोध के कारण भय होता है।

काश्यपः

आरोहे नृपसंक्षयः।

आरोह नामक ग्रास में राजा का नाश होता है।[१]

पराशरः

ईषद्ग्रहणमुपघ्राणं जगद्धिताय।

यदि ग्रहण थोड़ा-सा हो तो उपघ्राण (आघ्रात) नामक ग्रास होता है।

वराहसंहितायाम्

दर्पण इवैकदेशे सवाष्पनिश्वासमारुतोपहतः।
दृश्येताघ्रातं तत् सुवृष्टिवृद्ध्यावहं च जगतः॥

यदि सूर्य अथवा चन्द्रबिम्बमण्डल का एक देश वाष्पयुत निःश्वास वायु से मलिन दर्पण की तरह दिखाई दे तो उसे आघ्रात (उपघ्राण) नामक ग्रास कहते हैं। इसमें संसार में सुवृष्टि और वृद्धि होती है।

काश्यपः

मध्ये तमसि सन्दृष्टे पीडयेन्मध्यदेशजान्।

यदि सूर्य या चन्द्रबिम्ब के मध्य भाग में राहु (ग्रहण) दिखाई दे तो मध्यदेश के निवासियों को पीड़ित करता है (यह मध्यतम नामक ग्रास है)।

---

१. आरोहण-नामक ग्रास गणित से नहीं आ सकता है। यदि कदाचित् यह ग्रास देखने में आवे तो उसे उत्पातरूप मानना चाहिये। आचार्य वराह ने भी पूर्वशास्त्रानुसार यही लक्षण कहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

मध्ये तमः प्रविष्टं वितमस्कं मण्डलं च यदि परितः ।
तन्मध्यदेशनाशं करोति कुक्ष्यामयभयं च ॥

यदि छाद्य बिम्ब का मध्य भाग राहु से ढका हो और चारो तरफ का भाग निर्मल हो तो मध्यतम नामक ग्रास होता है। यह ग्रास मध्यदेश का नाश और पेट के रोगों को उत्पन्न करता है।

काश्यपः

दृष्टे तमसि पर्यन्ते शस्यानामीतिजं भयम् ।

यदि छाद्य बिम्ब के प्रान्तभाग में राहु दिखाई दे अर्थात् मध्यभाग में ग्रहण नहीं दिखाई दे तो तमोन्त्य नामक ग्रास होता है। यह अतिवृष्टि-अनावृष्टि आदि ईतियों से धान्यों का नाश करता है।

वराहसंहितायां तु

पर्यन्तेष्वतिबहुलं [1]स्वल्पं मध्ये तमस्तमोऽन्त्याख्ये ।
शस्यानामीतिभयं भयमस्मिँस्तस्कराणां च ॥

विशेषः– पर्यन्ते तमोमध्ये स्वच्छमिति सम्बन्धः ।

यदि सूर्य या चन्द्रबिम्ब के प्रान्तभाग में बहुत अधिक और मध्य भाग में थोड़ा (पाठान्तर से मध्य भाग स्वच्छ) राहु देखने में आवे तो तमोन्त्य नाम का ग्रास होता है। इसमें धान्यों को ईति का भय और प्राणियों को चोरों का भय होता है।

पराशरेण त्वन्यथाऽवमर्दनग्रासावुक्तौ । तद्यथा

मण्डलान्त[2]मध्ययोर्ग्रहणमन्तम[3]ध्यनृपतिक्षोभकरम् । महा-
तमसाऽऽवरणं तम उपप्लवः परस्परं म्लेच्छसङ्गरकृत् ।

छाद्य बिम्ब के अन्त (प्रान्त) और मध्य (बीच भाग) में राहु दिखाई दे तो अन्तमध्य नामक ग्रास होता है। यह ग्रास अन्त और मध्य देश (प्रान्त्य और मध्य देश) के राजाओं को क्षुभित करता है अर्थात् नाश करता है।

महान् राहु के द्वारा यदि सूर्य या चन्द्रमा का बिम्ब ढक जाय तो तम उपप्लव नामक ग्रास होता है। यह म्लेच्छ जातियों में परस्पर युद्ध कराता है।

यहाँ 'मण्डलान्तर्मध्ययो:' की जगह 'मण्डलान्तमध्ययो:' तथा 'ग्रहणमन्तर्मध्य' की जगह 'ग्रहणमन्तमध्य' पाठ शुद्ध प्रतीत होता है।

---

१. स्वच्छम् — इति पाठान्तरम्।
२. मण्डुसार्मध्य — इति पाठान्तरम्।
३. मन्तर्मध्य — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भार्गवीये

रश्मिभेदे भयं घोरमुल्लेखे मन्त्रिणां वधः ।
वयसां मरणं छिद्रे प्रकीर्णे रक्षसां वधः ॥

विशेषः– रश्मिभेदे भिन्नरश्मितायां विरश्मित्वे इत्यर्थः । उल्लेखे रेखारूपे छिद्रे छिद्ररूपेऽथवा ग्रस्तदेशे छिद्रयुक्ते ।

यदि सूर्य या चन्द्रग्रहण के समय बिम्ब में किरणभिन्नता अर्थात् किरणहीनता हो तो रश्मिभेद नामक ग्रास होता है। इसमें प्राणियों को घोर भय होता है। यदि उल्लेख अर्थात् रेखारूप ग्रहण हो तो मन्त्रियों का वध होता है। यदि छिद्ररूप ग्रहण या ग्रसित भाग छिद्रयुक्त हो तो पक्षियों का मरण तथा प्रकीर्ण रूप में ग्रहण हो तो राक्षसों का वध होता है।

अथ चिरग्राससर्वग्रासयोः फलम्

तत्र ऋषिपुत्रः

चिरं गृह्णाति सोमार्कौ सर्वं वा ग्रसते यदा ।
हन्यात् स्फीतान् जनपदान् वरिष्ठांश्च नराधिपान् ॥
शस्यैर्न तत्र जीवन्ति नरा मूलफलोदकैः ।

यदि चन्द्र या सूर्यग्रहण बहुत देर तक दिखाई दे अथवा यदि सर्वग्रास ग्रहण दिखाई दे तो स्फीत जनपदों (ऐश्वर्यशाली देशों) और वरिष्ठ (श्रेष्ठ) राजाओं का नाश करता है तथा लोग धान्यों के विना फल-मूल और पानी से जीवन-यापन करते हैं अर्थात् धान्य की उत्पत्ति नहीं होती है ।

काश्यपः

भयं दुर्भिक्षरोगश्च तदा जगति जायते ।
सर्वग्रस्तो यदा दृश्यो दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥

यदि सूर्य या चन्द्रमा का सर्वग्रास ग्रहण दिखाई दे तो लोगों में भय, दुर्भिक्ष और रोग होते हैं। (यहाँ चतुर्थ चरण में दुर्भिक्ष शब्द पुनः आया है; अतः पाठ अशुद्ध है, परन्तु अन्यत्र बृहत्संहितादि ग्रन्थ में काश्यप का यह वचन उपलब्ध नहीं होने के कारण अपनी ओर से शुद्ध करना उचित नहीं समझता हूँ। फिर भी दराहादि ने 'मरक' शब्द का प्रयोग अपने ग्रन्थ में किया है, अतः 'मरकं' होना उचित प्रतीत होता है, इसलिए विद्वान् लोग अपनी बुद्धि से यथोचित विचार करेंगे)।

वराहसंहितायां तु

सर्वग्रस्तौ दुर्भिक्षमरकदौ पापसन्दृष्टौ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य या चन्द्रग्रहण में यदि सर्वग्रास हो तथा पापग्रह (मंगल या शनि) से दृष्ट हो तो लोगों में दुर्भिक्ष और मरकी होती है।

भार्गवीये

दर्शयित्वा तु रूपाणि यदा राहुर्न दृश्यते।
शस्त्रशस्यान्नदुर्भिक्षैर्भयं घोरं विनिर्दिशेत्॥

यदि राहु दर्शन देकर पुनः नहीं देखा जाता हो अर्थात् सर्वग्रास हो जाय, (सर्वग्रास की स्थिति में सूर्य या चन्द्रबिम्ब अन्धकारमय हो जाता है, अतः उस स्थिति में राहु का दर्शन नहीं हो सकता), तो शस्त्र, धान्य, अन्न (माष, मुद्ग, गोधूमादि अन्य अन्न) और दुर्भिक्ष से महान् भय होता है।

अथ वर्णफलम्

तत्र भार्गवीये

श्वेतो वर्णो ब्राह्मणानां क्षत्रियाणान्तु लोहितः।
वैश्यानां पीतको वर्णः शूद्राणां कृष्ण उच्यते॥

एतेषां येन वर्णेन राहुश्चरति भास्करे।
या जातिस्तस्य वर्णस्य तां तां सम्पीडयेद्ग्रहः॥

विशेषः– भास्कर इत्युपलक्षणं चन्द्रेऽप्येतदेव फलम्। चन्द्रग्रहणमेवोपक्रम्य वृद्धगर्गेण वर्णफलस्य चोक्तत्वात्।

श्वेत वर्ण ब्राह्मणों का होता है, लाल वर्ण क्षत्रियों का, पीला वर्ण वैश्यों का तथा काला वर्ण शूद्रों का होता है। सूर्यग्रहण के समय राहु का जो वर्ण हो, उसकी जो जाति कही गयी है, उस वर्ण की जाति वाले मनुष्यों को वह पीड़ित करता है अर्थात् यदि ग्रहण के समय राहु का वर्ण श्वेत हो तो ब्राह्मणों को, लाल हो तो क्षत्रियों को, पीत हो वैश्यों को और काला हो तो शूद्रों को पीड़ा होती है। यहाँ केवल सूर्यग्रहण का उल्लेख किया गया है, परन्तु यही फल चन्द्रग्रहण में भी जानना चाहिये।

तद्यथाह वृद्धगर्गः

लोहितस्ताम्रवर्णो वा ग्रहश्चन्द्रं यदा ग्रसेत्।
सुभिक्षक्षेमकृच्छ्रं स्यात् क्षत्रियांश्च प्रपीडयेत्॥

पीतकः कपिलो वाऽपि राहुर्वैश्यघ्न उच्यते।
दाहज्वरः कुक्षिरोगो मरकश्चात्र जायते॥

तदा न वर्षेत् पर्जन्योऽन्त्यजाञ्छूद्रांश्च पीडयेत्।
श्वेतो वा पाण्डुवर्णो वा द्विजघ्नः पार्श्वरोगकृत्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि लाल वर्ण अथवा ताम्र वर्ण राहु चन्द्रमा को ग्रसित करे तो सुभिक्ष और क्षेम का नाश तथा क्षत्रियों को पीड़ित करता है। यदि पीला या कपिल वर्ण का राहु चन्द्रबिम्ब में दिखाई दे तो वैश्य, अन्त्यज और शूद्रजातियों को पीड़ित करता है तथा लोगों में दाहज्वर, उदररोग और मरकी होती है; साथ ही मेघ बरसता नहीं है। यदि राहु श्वेत या पाण्डु वर्ण का दिखाई दे तो ब्राह्मणों का नाश और पार्श्वरोग करता है।

विष्णुधर्मोत्तरेऽप्युपरागमात्रवर्णफलमुक्तम्। तद्यथा

उपरागे श्वेतरक्तः पीतः कृष्णो राहुर्ब्राह्मणक्षत्रिय-
विट्शूद्रपीडाकरो भवति।

यदि ग्रहण (राहु) श्वेत, रक्त, पीला और कृष्ण (काला) वर्ण का दिखाई दे तो क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णों को पीड़ित करता है।

ज्यौतिषपराशरेऽपि

पांशुर्ब्रह्मघ्नः। लोहितः क्षत्रियविनाशाय।
कृष्णः कापोतकश्च शूद्रघ्नः, क्षयकुक्षिरोगाय।

यदि राहु पांशु (धूलि) वर्ण का दिखाई दे तो ब्राह्मण का नाश करता है, लाल वर्ण का दिखाई दे तो क्षत्रिय का विनाश करता है एवं काला और कपोत वर्ण का दिखाई दे तो शूद्र का नाश, क्षयरोग और उदररोग करता है।

वराहेणापि सामान्येनैव वर्णफलमुक्तम्

श्वेते क्षेमसुभिक्षं ब्राह्मणपीडां च निर्दिशेद्राहौ।
पांशुविलोहितरूपे क्षत्रध्वंसाय भवति वृष्टेश्च॥
विमलमणिपीताभो वैश्यध्वंसी भवेत् सुभिक्षाय।
कापोतः शूद्राणां व्याधिकरः कृष्णवर्णश्च॥
अग्निभयमनलवर्णे पीडा च हुताशवृत्तीनाम्।

यदि सूर्य या चन्द्र के ग्रहणकाल में राहु का वर्ण श्वेत (सफेद) हो तो क्षेम, सुभिक्ष और ब्राह्मणों को पीड़ा होती है। यदि पांशु (धूलि) या विलोहित (मिश्रित) वर्ण हो तो क्षत्रियों और वृष्टि का नाश करता है। यदि निर्मल मणि के समान पीला वर्ण हो तो वैश्यों का नाश और सुभिक्ष करता है। कपोत के समान या काला वर्ण दिखाई पड़े तो शूद्रों के लिए रोग करने वाला होता है एवं अग्नि के सदृश राहु दिखाई दे तो अग्नि से जीविका चलाने वालों को अग्निभय और पीड़ा होती है।

भार्गवीये

धूम्रवर्णोऽग्निवर्णो वा ग्रामेषु नगरेषु च।
अग्न्युत्पातं गृहस्थानां सदा स कुरुते ग्रहः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि ग्रहणकाल में राहु का वर्ण धूम्र (धुयें) अथवा अग्नि के वर्ण के समान दिखाई दे तो गाँव और नगरों में गृहस्थों के लिए अग्नि का उत्पात (उपद्रव) करता है।

वृद्धगर्गस्तु

धूम्रवर्णोऽग्निवर्णो वा मारीमग्निं च कोपयेत्।

यदि राहु धूम्रवर्ण अथवा अग्नि के समान वर्ण का दिखाई दे तो मारी (महामारी) और अग्नि का भय होता है।

वराहसंहितायां तु

सार्चिष्मत्यग्निभयं गैरिकरूपे तु युद्धानि।

विशेषः– अर्चिष्मान् अग्निस्तद्वति सार्चिष्मति।

यदि ग्रहण के समय राहु अग्निज्वाला के समान दिखाई दे तो अग्निभय और गेरु (गेरुआ) वर्ण का हो तो युद्ध होता है।

पराशरः

पाटलकुसुमसङ्काशोऽशनिभयदो भवति।

यदि पाटलपुष्प के समान वर्ण (श्वेत-लोहित वर्ण) का राहु हो तो अशनि (वज्र गिरने) का भय होता है।

वराहसंहितायाम्

अशनिभयसम्प्रदायी पाटलकुसुमोपमो राहुः।

पाटलकुसुम के समान यदि राहु दृष्टिगोचर हो तो अशनि (वज्रपात) गिरने का भय देने वाला होता है।

भार्गवीये

ताम्रो भवति शस्त्राय रूक्षो भवति मृत्यवे।
नीलो लोहितपर्यन्तो राहुश्चरति भास्करे॥

पीडयेदाहिताग्नींश्च ये चाऽन्येऽग्न्युपजीविनः।
यदा त्विन्द्रधनुर्वर्णो राहुश्चरति भास्करे॥

अमात्यो हन्ति राजानं राजा वाऽमात्यमात्मनः।

यदि सूर्यमण्डल में राहु ताम्र वर्ण का दिखाई दे तो शस्त्रभय एवं रूक्ष दिखाई दे तो मृत्युकारक होता है तथा प्रान्त्यभाग में नील-लोहित वर्ण दिखाई दे तो आहिताग्नि (अग्निहोत्री) और अग्नि से जीवनयापन करने वाले अन्य (लोहार, सोनार आदि) लोगों को पीड़ित करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि इन्द्रधनुष की तरह अनेक वर्ण का राहु दिखाई दे तो मन्त्री अपने राजा को अथवा राजा अपने मन्त्री को मारता है (यह फल चन्द्रग्रहण में भी समझना चाहिये। सूर्य यहाँ उपलक्षणमात्र है)।

वृद्धगर्गस्तु

राहुरिन्द्रधनुष्प्रख्यो भयादिव्याधिवर्धनः।
भयं घोरं विजानीयाद्रूक्षो यदि च दृश्यते॥

यदि राहु इन्द्रधनुष के समान दिखाई दे तो भय, व्याधि आदि की लोगों में वृद्धि करता है। यदि राहु रूक्ष दिखाई दे तो लोगों में घोर (महान्) भय होता है।

पराशरः

बालार्कांशुकपिलो दुर्भिक्षाय।

बाल (प्रातःकालिक) सूर्य किरण के समान कपिल वर्ण का राहु दुर्भिक्ष करता है।

वराहसंहितायाम्

बालरविकमलसुरचापरूपभृच्छस्त्रकोपाय।

बालसूर्य, कमलपुष्प और इन्द्रधनुष के समान कान्ति वाला राहु शस्त्रकोप (युद्ध) कराता है।

पराशरः

नीलः स्तेयवृद्धये चैत्यविनाशाय। दूर्वाङ्कुरहरितो
जनमरणाय। हरितो व्याधये।

नील वर्ण का राहु स्तेय (चोरी) की वृद्धि और चैत्य (प्रासाद) का नाश करता है। दूर्वा के अङ्कुर के समान हरे वर्ण का राहु लोगों को मारता है। हरित वर्ण का राहु व्याधिकारक होता है।

वराहसंहितायाम्

हरिते रोगोल्बणता शस्यानामीतिभीश्च विध्वंसः।
दूर्वाकाण्डश्यामे हारिद्राभे च निर्दिशेन्मरकम्॥

यदि राहु हरे वर्ण का हो तो रोगों की वृद्धि और ईतियों के द्वारा धान्यों का नाश करता है। यदि दूर्वा दल के समान श्याम वर्ण और हरिद्रा के समान पीला वर्ण का हो तो मरकी होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भार्गवीये तु

श्यामो भवति वाताय धूम्रो भवति वृष्टये।
हारिद्रः सर्वरोगाणां कोपं सृजति दारुणम् ॥

यदि ग्रहण के समय में राहु श्याम वर्ण का प्रतीत हो तो वायु (आँधी) की वृद्धि, धूम्र वर्ण का हो तो वृष्टि और हरिद्रा की कान्ति के समान पीला हो तो सभी प्रकार के रोगों का दारुण प्रकोप उत्पन्न करता है।

वराहसंहितायाम्

कापोतारुणकपिलश्यावाभे क्षुद्भयं विनिर्देश्यम्।
आधूम्रे क्षेमसुभिक्षमादिशेन्मन्दवृष्टिश्च ॥

यदि ग्रहण काल में राहु कबूतर के समान, लाल, कपिल और श्याम वर्ण का हो तो क्षुधा (दुर्भिक्ष) का भय होता है। धूम्र वर्ण हो तो क्षेम, सुभिक्ष और थोड़ी वृष्टि होती है।

भार्गवीये

चक्राकारस्तु लोकानां घोरं जनयति ज्वरम्।

यदि ग्रहण के समय राहु चक्र के समान दिखाई दे तो दारुण ज्वर उत्पन्न करता है।

स्वाभाविकवर्णानाह ब्रह्मगुप्ताचार्यः

आद्यन्तयोः स धूम्रः कृष्णः खण्डग्रहेऽर्धतोऽत्यधिके।
ग्रासः कृष्णाताम्रः सर्वग्रहणे कपिलवर्णः ॥

ग्रहण के आदि में और अन्त में चन्द्र का धूम्र वर्ण होता है। खण्डग्रहण में कृष्ण वर्ण होता है। अर्धाधिक ग्रहण में कृष्ण-ताम्र (कालापनयुक्त लाल) वर्ण होता है। सर्वग्रहण में कपिल वर्ण होता है। ब्रह्मगुप्त का यह कथन चन्द्रग्रहण के लिये प्रयुक्त है; परन्तु इसे सूर्यग्रहण में भी समझना चाहिये।

अथाङ्गारकादीनां ग्रहराशिस्थितफलं च वराहसंहितायाम्

आवन्तिका जनपदाः कावेरीनर्मदातटाश्रयिणः।
[1]दृप्ताश्च मनुजपतयः पीड्यन्ते क्षितिसुते ग्रस्ते ॥

विशेषः– ग्रस्ते ग्रहणराशिस्थिते, न तु चन्द्रादित्यवद्ग्रस्ते। चन्द्रग्रहणे छादिकाया भूच्छायाया भौमकक्षापर्यन्तमनुत्थानात्।

---

१. दृष्टाश्च इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि मङ्गल ग्रस्त हो तो अवन्ती देश में स्थित मनुष्य, कावेरी और नर्मदा नदी के तीर में रहने वाले तथा गर्वयुक्त राजाओं को पीड़ित करता है।

परन्तु सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण की तरह कुजादि ताराग्रहों के ग्रहण दर्शन सम्भव नहीं हैं। क्योंकि भूच्छाया (भूभा) कुजादि ग्रहों की कक्षा तक नहीं पहुँच सकती है। इसलिए सूर्य या चन्द्र के साथ एक राशि में अल्पांशान्तर पर यदि कुजादि ग्रहों का शराभाव हो तो वे ग्रस्त कहे जाते हैं।

अथ भूछायापरिमाणम्

खतिथिनगानललोचन२३७१५०योजनदीर्घा च भवति भूच्छाया।
स्पृशति च बुधकक्षोपरि गजरसनृपयमशैल७२१६६८ योजनान्येव॥

विशेषः– रविग्रहे च सूर्यासन्नस्थानां ग्रहाणामस्तमितत्वाद् ग्रहणादर्शनात्। न च गणितानुमानमात्रेण ग्रहणफलं भवति।

पृथ्वी की छाया (भूभा) २३७१५० योजन लम्बी होती है और बुधकक्षा को ७२१६६८ योजन की छाया स्पर्श करती है। अतः बुध को भी पृथ्वी की छाया (राहु) ढक नहीं सकती है; जबकि कुजादि ग्रहों में सबसे निकट (पृथ्वी से) बुध ही है; अतएव अन्य ताराग्रहों में कदापि राहु द्वारा ग्रहण सम्भव नहीं है।

अतएव ग्रहसहितत्वमात्रमुक्तं वटकणिकायाम्

सहितो ग्रहेण येन च तद्देशश्चाप्नुयात् पीडाम्।

ग्रहणकालिक सूर्य या चन्द्र जिस ग्रह से युक्त (अल्पांशान्तर और शराभाव की स्थिति में) हो, उस ग्रह के देश (कूर्मविभाग के अनुसार) के निवासियों को पीड़ा होती है।

वराहसंहितायाम्

अन्तर्वेदीं सरयूं नेपालं पूर्वसागरं शोणम्।
स्त्रीनृपयोधकुमारान् सह विद्वद्भिर्बुधो हन्ति॥

ग्रहणोपगते जीवे विद्धं नृपमन्त्रिगजहयध्वंसः।
सिन्धुतटवासिनामप्युदग्दिशं संश्रितानां च॥

भृगुतनये राहुगते [1]दशार्णकाः कैकयाः सयौधेयाः।
आर्यावर्त्ताः शिवयः स्त्रीसचिवगणाश्च पीड्यन्ते॥

यदि बुध ग्रस्त हो तो अन्तर्वेदी (गंगा-यमुना के मध्य देश), सरयू, नेपाल, पूर्वी समुद्र, शोण नद, स्त्री, राजा, योद्धा, बालक और विद्वानों का नाश करता है।

१. दाशेरक — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि गुरु ग्रस्त हो तो राजा, मन्त्री, हाथी, घोड़ा, सिन्धु नद के तट पर रहने वालों और उत्तर दिशा में रहने वालों का नाश करता है।

यदि शुक्र ग्रस्त हो तो दशार्ण, केकय (काश्मीर), यौधेय, आर्यावर्त्त और शिवि देश के रहने वाले मनुष्य, स्त्री, मन्त्रीगण— इन सबों का नाश होता है।

विशेषः– बुधभार्गवयोगफलं सूर्यग्रहण एव बोद्धव्यम्। चन्द्रग्रहणे तद्योगासम्भवात्।

तथा च वराहः

सौरे मरुभवपुष्करसौराष्ट्रिकधातवोऽर्बुदान्त्यजनाः।
गोमन्तपारियात्राश्रिताश्च नाशं व्रजन्त्याशु॥

यदि शनैश्चर ग्रस्त हो तो मरुभूमि, पुष्कर और सौराष्ट्र देश के निवासी लोग, अर्बुद पर्वत पर निवास करने वाले लोग, अन्त्यजन (निकृष्ट जाति के मनुष्य), गोस्वामी, पारियात्र पर्वत पर रहने वाले— इन सबों का नाश होता है।

अथ ग्रहदृष्टिफलं वराहसंहितायाम्

पश्यन् ग्रस्तौ[१] सौम्यो घृतमधुतैलक्षयाय राज्ञां च।

विशेषः– यदा रविचन्द्रौ ग्रस्तौ भवतस्तदा ग्रहैर्दर्शनादेतानि फलानि भवन्तीति व्याख्येयम्। पश्यन्तीति यथासम्भवं सम्बन्धनीयम्। तत्र सौम्यश्चन्द्रं पश्यन्निति सम्बन्धः, बुधस्यादित्यदर्शनासम्भवत्वादिति।

ग्रहण के समय में सूर्य या चन्द्रमा को यदि बुध देखता हो तो घृत, तेल, शहद और राजाओं का नाश करता है; परन्तु बुध सूर्य को कभी भी पूर्ण दृष्टि से नहीं देख सकता। इसलिए चन्द्रमा को बुध के देखने पर भी उक्त फल ही समझना चाहिये।

भौमः समरविमर्दं शिखिकोपं तस्करभयं च।
शुक्रः शस्यविमर्दं नानाक्लेशञ्च जनयति धरित्र्याम्॥

रविजः करोत्यवृष्टिं दुर्भिक्षं तस्करभयं च।
यदशुभमवलोकनाभिरुक्तं ग्रहजनितं ग्रहणे प्रमोक्षणे वा।
सुरपतिगुरुणाऽवलोकिते तच्छममुपयाति जलैरिवाग्निरिद्धः॥

यदि मङ्गल की दृष्टि ग्रहणकालिक सूर्य या चन्द्र पर हो तो युद्ध, अग्निभय और चौरभय होते हैं। यदि शुक्र की दृष्टि हो तो पृथ्वी पर धान्यों का नाश और अनेक प्रकार के क्लेश होते हैं। यदि शनैश्चर से दृष्ट हो तो अवृष्टि, दुर्भिक्ष और चौरभय करता है। ग्रहदृष्टिवश स्पर्श और मोक्ष में जो अशुभ फल कहे गये हैं, उनका गुरु की दृष्टि से उसी तरह शमन हो जाता है; जैसे प्रज्वलित अग्नि को जल शान्त कर देता है।

---

१. ग्रस्तम्— इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ हीनातिरिक्तवेलाफलम्

तत्र गर्गः

वेलाहीने शस्त्रभयं गर्भाणां स्रावणं[1] तथा।
अतिवेले फलानां तु शस्यानां क्षयमादिशेत्॥

वेलाहीन (गणितागत ग्रहणकाल से पूर्व) में ग्रहण दृष्टिगोचर हो तो शस्त्रभय तथा गर्भ का नाश होता है और अतिवेल (गणितागत ग्रहणकाल के पश्चात्) में ग्रहण दृश्य हो तो फल और धान्यों का नाश होता है।

वराहसंहितायां तु

वेलाहीने पर्वणि गर्भविपत्तिश्च शस्त्रकोपश्च।
अतिवेले कुसुमफलक्षयो भयं शस्यनाशश्च॥

वेलाहीन पर्व में ग्रहण दृष्टिगोचर हो तो गर्भ का नाश और शस्त्रकोप (युद्ध) होता है तथा अतिवेल में ग्रहण दृश्य होने पर पुष्प-फलों का क्षय, भय और धान्यनाश होता है।

काश्यपस्तु

अनागतमतीतं वा वेलाहीनाधिकं च यत्।
गर्भस्रावस्त्वनावृष्टिः फलं पुष्पं विनश्यति॥

अनागत (गणितागत काल के पश्चात्) और अतीत (गणितागत काल के पूर्व) में अथवा वेलाहीन और वेलाधिक काल में ग्रहण दृश्य हो तो गर्भ का स्राव, अनावृष्टि तथा फल-पुष्पों का नाश होता है।

अथ खांशफलम्

तत्र दृश्यनभोभागं त्रिधा विभज्य फलमुक्तं भार्गवीये

यौवनस्थांश्च पूर्वाह्णे हन्ति यज्ञविदाङ्गनान्।
औदकानि च सत्त्वानि नागेन्द्रश्चात्र दुःखितः॥

अथ मध्यपथं प्राप्तः शूद्रान् हन्ति सतस्करान्।
उपरक्तो नृपं हन्ति चन्द्रश्च वरवारणान्॥

प्रलम्बः प्रमदां हन्ति क्षत्रं राष्ट्रं च सर्वशः।
त्रिगर्त्ताश्चात्र पीड्यन्ते मत्स्याश्च कुरवो जनाः॥

---

१. श्रवणमिति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिन या रात में दृश्य आकाश को तीन भागों में विभक्त कर अर्थात् दिनमान या रात्रिमान को तीन भागों विभक्त कर प्रथम, द्वितीय और तृतीय खांशमान के अनुसार भार्गव ने ग्रहण का फल बताया है। यदि पूर्वाह्ण (प्रथम खांश) ग्रहण हो, तो वह युवकों, यज्ञ को जानने वाले लोगों और जलचर जीवों का नाश करता है तथा गजेन्द्र दुःखी होता है। यदि मध्यपथ (द्वितीय खांश भाग) में ग्रहण दिखाई पड़े तो शूद्र, चोर, राजा और उत्तम हाथियों का नाश करता है। प्रलम्ब (तृतीय खांश भाग) में ग्रहण हो तो स्त्री, सभी क्षत्रिय राष्ट्र, त्रिगर्त्त, मत्स्य और कुरु देश के लोगों का नाश होता है।

वटकणिकायाम्

पीडयति विप्रराजन्यसत्रिनृपवैश्यशूद्रदस्युगणान्।
खांशेष्वसुरः सप्तसु दृष्टो नष्टः शिवायोक्तः॥

वटकणिक में वराह ने दृश्याकाश को सात भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग का अलग-अलग फल कहा है—

यदि प्रथम भाग में राहु दृश्य हो तो ब्राह्मण को पीड़ित करता है, द्वितीय भाग में राजा को, तृतीय भाग में सत्री (गृहपति) को, चतुर्थ भाग में राजा (क्षत्रिय) को, पाँचवें भाग में वैश्य को, छठे में शूद्र को और सातवें खांश में दस्यु (चोर-डकैत) समूहों को पीड़ित करता है। जिस भाग में राहु का नाश होता है अर्थात् मोक्ष होता है, उसका कल्याण करता है।

वृद्धगर्गस्तु

गवां तु प्रथमं क्षेत्रं द्वितीयं ब्रह्मवादिनाम्।
क्षत्रियाणां तृतीयं स्यान्मध्यमं सार्वलौकिकम्॥

पञ्चमं पुरवैश्यानां षष्ठं स्याच्छूद्रयोषिताम्।
सर्वासामन्त्यजातीनां सप्तमं क्षेत्रमुच्यते॥

येषां सोमो युगे ग्रस्तो विमर्दो यत्र वा भवेत्।
तेषां पीडां विजानीयान्मोक्षे क्षेममथादिशेत्॥

प्रथम क्षेत्र (खांश) गायों का, द्वितीय ब्रह्मज्ञानियों (ब्राह्मणों) का, तृतीय क्षत्रियों का, मध्यम (चतुर्थ) सर्वलोकों का, पञ्चम वैश्यों का, छठा शूद्रों और स्त्रियों का तथा सातवाँ क्षेत्र सभी अन्त्यज जातियों का होता है। जिस युग (सम क्षेत्र) में चन्द्रमा का ग्रहण दिखाई पड़े, उस क्षेत्र के प्राणिलोगों को पीड़ा होंती है और जहाँ मोक्ष हो, उनके लिए कल्याणकारी होता है। यही फल सूर्यग्रहण में भी जानना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपस्तु

प्रथमांशे विप्रपीडा क्षत्रियाणां द्वितीयके ।
तृतीये चान्त्यजानां तु चतुर्थे मध्यदेशजान् ॥
वैश्यानां पञ्चमे खांशे षष्ठांशे प्रमदाभयम् ।
दस्युप्रत्यन्तिकान् म्लेच्छान् नाशयेत् सप्तमांशके ॥
येषामंशे भवेन्मोक्षस्तज्जातीनां शुभं वदेत् ॥

यदि प्रथम खांश में ग्रहण हो तो ब्राह्मणों को पीड़ा होती है, द्वितीय में क्षत्रियों को, तृतीय में अन्त्यजों को, चतुर्थ में मध्यदेशवासियों को एवं पाँचवें में वैश्यों को पीड़ा होती है। छठे खांश में स्त्री को भय होता है और सातवें खांश में दस्युगण, गुहा में रहने वाले तथा म्लेच्छों का नाश होता है। जिस खांश में मोक्ष होता है, उस खांश की जातियों के लिये शुभ कहना चाहिये।

हन्तीत्यनुवृत्तौ वराहसंहितायां तु

अग्न्युपजीविगुणाधिकविप्राश्रमिणोऽयुगाऽभ्युदितः ।
कर्षकपाखण्डवणिक्क्षत्रियबलनायकान् द्वितीयांशे ॥

विशेषः– अयुग्माऽभ्युदितः प्रथमांशोदितः।

यदि प्रथम खांश में उदित चन्द्र या सूर्य ग्रस्त हो तो अग्नि से जीविका चलाने वाले, गुणी, ब्राह्मण और आश्रमवासियों का नाश करता है। द्वितीय खांश में किसान, पाखण्डी, व्यापारी, क्षत्रिय और सेनापति का नाश करता है।

विनाशाय ग्रहणमित्यनुवृत्तौ पराशरः

क्षत्रियबलाध्यक्षयोर्मध्याभिलाषिणः – इति ।

विशेषः– मध्याभिलाषी तृतीयखांशस्थः।

यदि तृतीय खांश में ग्रस्त हो तो क्षत्रिय और सेनापति का नाश करता है।

वराहसंहितायां तु

कारुकशूद्रान् म्लेच्छांस्तृतीयखांशे च मन्त्रिजनान् ।

यदि तीसरे खांश में ग्रस्त हो तो चित्र बनाने वाले, शूद्र जाति, म्लेच्छ जाति और मन्त्रियों का नाश करता है।

पराशरः

श्वेतभवानां मध्यप्राप्तस्य ।

चतुर्थ खांश में सूर्य या चन्द्र ग्रस्त हो तो सफेद वस्तुओं का नाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

मध्यांशे नरपतिमध्यदेशहा शोभनश्च धान्यार्घः ।

चतुर्थ खांश में राजा और मध्यदेश का नाश करता है तथा अन्नों के मूल्य में समानता करता है ।

मध्याह्नरेखायां विशेषमाह वृद्धगर्गः

नभोमध्यगतो राहुः सोमे सूर्येऽथ वा स्थितः ।
प्रजानामथ राज्ञां च भयं कुर्याद्विसर्पतः ॥

खमध्यगत सूर्य या चन्द्रमा में यदि राहु स्थित हो (ग्रहण हो) तो प्रजाओं और राजाओं का नाश करता है ।

पञ्चमषष्ठसप्तमखांशफलमाह पराशरः

चतुर्थात्किञ्चिदावृत्तस्य क्षत्रियस्त्रीणां व्यालम्बितस्य शूद्रतस्कराणामस्तमये ।

चतुर्थ खांश के कुछ आगे अस्तक्षितिजाभिमुख सूर्य या चन्द्र के पञ्चम, षष्ठ और सप्तम खांश में ग्रस्त होने पर क्षत्रियों और स्त्रियों का नाश होता है तथा अस्त के समय ग्रस्त होने पर शूद्र और चोरों का नाश होता है ।

वराहसंहितायाम्

तृणभुगमात्यान्तःपुरवैश्यघ्नः पञ्चमे खांशे ।
स्त्रीशूद्रान् षष्ठेंऽशे दस्युप्रत्यन्तहाऽस्तमयकाले ॥
यस्मिन् खांशे मोक्षस्तत्रोक्तानां शिवं[1] भवति ॥

पञ्चम खांश में ग्रस्त होने पर तृणभुक् (चतुष्पद), अमात्य (मन्त्री), अन्तःपुर और वैश्यों का नाश होता है । छठे खांश में स्त्री और शूद्रों का नाश करता है । सप्तम खांश में (अस्तकाल में) चोर और गुहा में रहने वालों का नाश करता है । जिस खांश में मोक्ष होता है, उस खांश में तत्तद् व्यक्तियों के लिए कथित अशुभ फल न होकर शुभ फल होता है ।

अथ ग्रस्तोदयास्तफलम्

तत्र काश्यपः

उदितास्तमितौ ग्रस्तौ सर्वशस्यक्षयङ्करौ ।

---

१. फलम् — इति पाठान्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सूर्य या चन्द्र ग्रस्त होकर उदित या अस्त हो तो सभी प्रकार के अन्नों का नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

ग्रस्तावुदितास्तमितौ शारदधान्यावनीश्वरक्षयदौ।

यदि सूर्य या चन्द्र का ग्रस्त होकर उदय अथवा अस्त हो तो शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों (अन्न) और राजा का नाश होता है।

हरिवंशे च कंसवधनिमित्तम्

ग्रस्तः स्वर्भानुना सूर्यो दिवा नक्तमजायत।

कंसवध के समय राहु से ग्रस्त सूर्य के उदित होने पर दिन रात की तरह (अन्धकारमय) हो गया।

पराशरस्तु

गृहीतो यद्युदागच्छेदस्तं वा यदि गच्छति।
अयोगक्षेममाचष्टे त्रीणि वर्षाण्यसंशयम्॥

यदि ग्रस्तोदित या ग्रस्तास्त सूर्य या चन्द्र दिखाई दे तो निःसन्देह तीन वर्षों तक संसार में योग-क्षेम नहीं होता है।

बार्हस्पत्ये

गृहीतो राहुणा सार्धमुत्तिष्ठति यदा शशी।
तदा धर्मपरिक्षीणा कलिमाविशति प्रजा॥

अमुक्तो राहुणा सार्धमस्तं गच्छति चन्द्रमाः।
तदा तमोमयस्तस्मान्मृत्युमाविशति प्रजा॥

यदि ग्रस्त चन्द्रमा राहु के साथ (राहु से ग्रसित चन्द्रमा का उदय) उदित हो तो प्रजा में धर्म का नाश और पाप की वृद्धि होती है। यदि अमुक्त (ग्रस्त) राहु के साथ चन्द्रमा का अस्त हो तो राहुरूप मृत्यु प्रजा में प्रवेश करती है अर्थात् प्रजा की मृत्यु होती है।

वृद्धगर्गस्तु

गृहीतो यद्युदागच्छेदस्तं वा यदि गच्छति।
शारदं तु तदा शस्यं जातमात्रं विनश्यति॥

ग्रैष्मेण तत्र जीवन्ति नरा मूलफलेन वा।
भयदुर्भिक्षरोगैश्च तदा संक्षिप्यते जगत्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि ग्रस्तोदित या ग्रस्तास्त सूर्य या चन्द्रमा हो तो शारदीय अन्नों का उत्पन्न होते ही नाश हो जाता है। लोग ग्रीष्मकालिक अन्न अथवा फल-मूल से जीवन-यापन करते हैं। भय, दुर्भिक्ष और रोगों से संसार का संक्षेप (संहार) होता है अर्थात् लोगों का नाश होता है।

भार्गवीये

गृहीतो यद्युदागच्छेद्यदि वा प्रतितिष्ठति।
अयोगक्षेम आदेश्यस्त्रिषु लोकेषु दारुणः॥

विशेषः– प्रतितिष्ठत्यस्तमेति।

सूर्य या चन्द्रमा यदि ग्रस्तोदित अथवा ग्रस्तास्त दिखाई दे तो तीनों लोकों में दारुण (विनाशकारी) अयोग-क्षेम (अशुभ) कहना चाहिये।

शारदं त्रीणि वर्षाणि शस्यजातं न पच्यते।
निदाघेनात्र जीवन्ति प्रजा मूलफलेन वा॥

शारदीय अन्न तीन वर्षों तक (वर्षा के अभाव में) उत्पन्न नहीं होते हैं। प्रजा फल-मूल और ताप से उत्पन्न पसीने से किसी तरह जीवन-यापन करती है।

आदित्यस्य ग्रस्तोदयास्तमये विशेषो बार्हस्पत्ये

पराजितो राहुनिपीतमण्डलो
विवर्णभावाधिगतोऽपि[1] निष्प्रभः।
यदाऽस्तमायाति हि वै दिवाकर-
स्तदाऽऽशु विद्यात्तु महज्जनक्षयम्॥

विशेषः– पराजितो ग्रस्यमानः। निष्प्रभमण्डलः सर्वग्रस्तः।

यदि सूर्य उदयास्त के समय में राहु से पराजित (ग्रस्यमान) हो, आच्छादित हो, विवर्ण हो, सर्वग्रस्त हो तो शीघ्र ही महान् जनक्षय जानना चाहिये।

अथार्धोदयास्तग्रहणफलम्

तत्र पराशरः

यज्ञनैकृतिकविनाशायार्धोदितग्रहणम्।

यदि अर्धोदित चन्द्र या सूर्य का ग्रहण हो तो यज्ञ और निषाद जाति के लोगों का नाश करता है।

---

१. विवर्णसन्ध्याधिगतोऽपि — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां च

अर्धोदितोपरक्तो नैकृतिकान् हन्ति सर्वयज्ञांश्च ।

यदि अर्धोदित सूर्य या चन्द्र ग्रस्त हो तो निषाद जाति और सभी यज्ञों का नाश करता है ।

भार्गवीये तु

उदितो गृह्यमाणश्च हन्ति वेदविदो जनान् ।
बालांश्च जटिलान् हन्ति ये च काषायवाससः ॥

यदि उदित होने पर तुरन्त ग्रहण होने वाला हो अर्थात् पूरा उदित होने पर ग्रहण दिखाई दे तो वेद के जानकारों (ब्राह्मणों), बच्चों, जटाधारियों और गेरु वस्त्रधारियों (संन्यासियों) का नाश करता है ।

ऋषिपुत्रस्तु

उदयेऽस्तमये वाऽपि सूर्यस्य ग्रहणं भवेत् ।
तदा नृपभयं विद्यात् परचक्रस्य चागमम् ॥

सूर्य के उदय या अस्त के समय में यदि ग्रहण हो तो राजा का भय और दूसरे राजा का देश पर आक्रमण होता है ।

अथोदितग्रहणफलम्

तत्र वृद्धगर्गः

उदितो गणमुख्यांश्च ब्राह्मणांश्चापि पीडयेत् ।

विशेषः– उदितो नीललोहितः ।

यदि उदित ग्रहण (उदय के अनन्तर ग्रहण हो, नील-रक्तवर्ण ग्रहण दिखाई पड़े) तो समूह के प्रधान और ब्राह्मणों को पीड़ित करता है ।

विनाशाय ग्रहणमित्यनुवृत्तौ पराशरस्तु

गुणाधिकगणमुख्यानामुदितस्य ।

यदि उदित ग्रहण हो तो गुणी और गण के प्रमुखों का नाश करता है ।

सन्ध्याग्रहणफलम्

तत्र वृद्धगर्गः

सन्ध्याकाले तु गर्भस्था गृहीतः पीडयेत् प्रजाः ।
गावो गर्भं विमुञ्चन्ति न च वर्षेत् पुरन्दरः ॥

विशेषः– सन्ध्यापरिमाणं सन्ध्यालक्षणञ्च वक्ष्यामः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सन्ध्या के समय सूर्य या चन्द्रमा ग्रस्त हो तो गर्भस्थ शिशु और प्रजा को पीड़ा होती है। गायें गर्भ त्याग देती हैं और इन्द्र वर्षा नहीं करते हैं।

अथ मोक्षलक्षणम्

तत्र पराशरः

षड्विधो मोक्षो वामदक्षिणच्छर्दनाभिनिर्वहणान्तमध्यो नृपक्षयाभिवर्षणसुभिक्षशस्त्रकोपमध्यजनाक्षेमशरच्छस्यनाशकरः। इति मोक्षषट्कस्य क्रमेणैतानि फलानि।

वाम, दक्षिण, छर्दन, अभिनिर्वहण, अन्त और मध्य— ये छः प्रकार के मोक्ष होते हैं। ये क्रमशः राजा का नाश, सुवृष्टि, सुभिक्ष, शस्त्रकोप (युद्ध), मध्य देश के लोगों का नाश और शरद् ऋतु के अन्नों का नाश करते हैं।

वरहासंहितायां तु

हनुकुक्षिपायुभेदा द्विर्द्विः सञ्छर्दनं च मरणञ्च।
मध्यान्तयोर्विदरणमिति दश शशिसूर्ययोर्मोक्षाः॥

विशेषः– अस्यार्थः— हनुभेदादयस्त्रयो द्विर्द्विर्द्विधाकारा भवन्ति। दक्षिणो वामश्च मध्यान्तयोश्च विदारणमिति मध्यविदारणमन्तविदारणं च।

दक्षिण हनु, वाम हनु, दक्षिण कुक्षि, वाम कुक्षि, दक्षिण वायु, वाम वायु, सञ्छर्दन, मरण, मध्य विदारण और अन्त्य विदारण— ये दश मोक्ष होते हैं।

काश्यपः

दक्षिणे हनुभेदः स्यादाग्नेय्यां यदि गच्छति।
शस्यनाशं च कुरुते नृपभङ्गं सुदारुणम्॥

यदि ग्रहण में राहु का गमन अग्निकोण में हो अर्थात् अग्निकोण में मोक्ष हो तो उसे **दक्षिण हनु** नामक मोक्ष कहते हैं। इसमें धान्यनाश और राजा का दारुण नाश होता है।

वराहसंहितायां तु

आग्नेय्यामपगमनं दक्षिणहनुसंज्ञितं शशिनः।
शस्यविमर्दो मुखरुग् नृपपीडा स्यादवृष्टिश्च॥[1]

यदि चन्द्रग्रहण में अग्निकोण में राहु निवर्त्तित हो अर्थात् मोक्ष हो तो **दक्षिण** हनुभेद नामक मोक्ष होता है। इसमें धान्य का नाश, मुख का रोग, राजा को पीड़ा और अवृष्टि होती है। पाठान्तर से सुवृष्टि भी होती है।

---

१. सुवृष्टिश्च — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपः

पूर्वोत्तरहनुभेदो[१] नृपपुत्रवधप्रदः ।

पूर्वोत्तर (ईशान कोण) में यदि राहु निवर्त्तित हो अर्थात् मोक्ष हो तो **वाम हनुभेद** नामक मोक्ष होता है, इसमें राजकुमार का वध होता है।

वराहसंहितायां तु

पूर्वोत्तरेण वामो हनुभेदो नृपकुमारभयदायी ।
मुखरोगः शस्त्रभयं तस्मिन् विन्द्यात् सुभिक्षं च ॥

यदि पूर्वोत्तर (ईशान कोण) में होकर राहु निवर्त्तित हो अर्थात् ईशान कोण में मोक्ष हो तो **वाम हनुभेद** नाम का मोक्ष होता है। इसमें राजकुमार को भय, मुखरोग, शस्त्रभय और सुभिक्ष होते हैं।

काश्यपः

दक्षिणः कुक्षिभेदः स्याद्याम्ये मोक्षो भवेद्यदि ।
राजपुत्रभयं तत्र दक्षिणाशापतेर्वधः ॥

यदि ग्रहण में दक्षिण पार्श्व में मोक्ष हो तो **दक्षिण कुक्षिभेद** नाम का मोक्ष होता है। इसमें राजकुमार को भय और दक्षिण दिशा के राजा का वध होता है।

वरहासंहितायां तु

दक्षिणकुक्षिविभेदो दक्षिणपार्श्वे यदि भवेन्मोक्षः ।
पीडा नृपपुत्राणामभियोज्या दक्षिणा रिपवः ॥

यदि दक्षिण पार्श्व में मोक्ष हो तो **दक्षिण कुक्षिभेद** नामक मोक्ष होता है। इसमें राजकुमार को पीड़ा और दक्षिण दिशा में स्थित शत्रुओं में लड़ाई होती है अर्थात् दक्षिण दिशा के शत्रुओं का वध होता है।

काश्यपः

सौम्यायां तु यदा मोक्षो वामकुक्षिविभेदनम् ।
स्त्रीणां गर्भविनाशाय सौम्याशाधिपतेर्भयम् ॥

यदि ग्रहण में उत्तर दिशा में मोक्ष हो तो **वाम कुक्षिभेद** नाम का मोक्ष होता है। इसमें स्त्रियों का गर्भनाश और उत्तर दिशा के राजा का वध होता है।

वराहसंहितायां तु

वामस्तु कुक्षिभेदो यद्युत्तरमार्गसंस्थितो राहुः ।
स्त्रीणां गर्भविपत्तिः शस्यानि च तत्र मध्यानि ॥

---

१. पूर्वोत्तरेऽपरोभेदः — इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि ग्रहणकाल में उत्तर तरफ होकर राहु निकलता (मोक्ष) हो तो **वाम कुक्षि**भेद नाम का मोक्ष होता है। इसमें स्त्रियों के गर्भों का नाश और मध्यम रूप से धान्य होता है।

काश्यपः

पायुभेदगतो राहुर्वायव्यो निर्ऋताश्रयः।
गुदरोगभयं विन्द्याद्वामे राज्ञीभयं भवेत्॥

विशेषः– वायव्यो मोक्षो पायुभेदो नैर्ऋत्यो दक्षिणः। उभयोरेव गुदारोगफलं पायुभेदत्वात्। वामे तु राज्ञीभयमधिकम्।

यदि वायव्य कोण में मोक्ष हो तो **वामपायु** भेद और नैर्ऋत्य कोण में मोक्ष हो तो **दक्षिणपायु**भेद नाम का मोक्ष होता है। इन दोनों मोक्षों में गुदा में रोग-भय होता है। वामपायुभेद मोक्ष में राजा की पत्नी को भी भय होता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

नैर्ऋतवायव्यस्थौ दक्षिणवामौ तु पायुभेदौ द्वौ।
गुह्यरुगल्पा वृष्टिर्द्वयोस्तु राज्ञीक्षयो वामे॥

नैर्ऋत कोण और वायव्य कोण में यदि मोक्ष हो तो क्रमशः **दक्षिण पायु**भेद और **वामपायुभेद** नामक मोक्ष होते हैं। इन दोनों में गुदा रोग, लिंगरोग और अल्पवृष्टि होती है। वामपायुभेद में राजा की पत्नी का भी नाश होता है।

काश्यपः

ग्रासो मोक्षो यदा पूर्वे छर्दनं तु तदा भवेत्।
क्षेमहार्दिप्रदो ज्ञेयः शस्यनिष्पत्तिकारकः॥

यदि छाद्य बिम्ब के पूरब भाग में ही स्पर्श और मोक्ष हो तो **छर्दन** (सञ्छर्दन) नामक मोक्ष होता है। यह संसार में क्षेम, सन्तोष एवं धान्यकारक होता है।

वराहसंहितायां तु

पूर्वेण प्रग्रहणं कृत्वा प्रागेव चापसर्पेत।
सञ्छर्दनमिति तत्क्षेमशस्यहार्दिप्रदं जगतः॥

यदि बिम्ब के पूर्व भाग में स्पर्श करके राहु उसी तरफ से निकलता (पूर्व भाग में ही स्पर्श और मोक्ष) हो तो **सञ्छर्दन** नामक मोक्ष होता है। यह मोक्ष संसार में क्षेम और धान्य देने वाला होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपः

पूर्वेण ग्रसते राहुरपरस्यां विमुञ्चति।
क्षुत्तस्करभयं[१] तत्र मोक्षस्तु जरणं स्मृतम्॥

राहु यदि बिम्ब को पूर्वभाग में ग्रसित कर पश्चिम भाग में छोड़ता हो (पूर्व में स्पर्श और पश्चिम में मोक्ष हो) तो **जरण** नामक मोक्ष होता है। इसमें क्षुधा और चोर-भय होता है।

वराहसंहितायां तु

प्राक्प्रग्रहणं यस्मिन् पश्चादपसर्पणं तु तज्जरणम्।
क्षुच्छस्त्रभयोद्विग्ना न शरणमुपयान्ति तत्र जनाः॥

मध्ये यदि प्रकाशस्तन्मध्यविदारणं नाम।
अन्तःकोपकरं स्यात् सुभिक्षदं नातिवृष्टिकरम्॥

विशेषः– तदिति वृष्टिकरं सुभिक्षदं न भवति। दुर्भिक्षमेव करोतीत्यर्थः।

यदि बिम्ब के पूर्व भाग में स्पर्श और पश्चिम भाग में मोक्ष हो तो **जरण** नामक मोक्ष होता है। इसमें क्षुधा और युद्ध के भय से उद्विग्न होकर मनुष्य निःशरण होते हैं अर्थात् कोई उनकी रक्षा करने वाला नहीं होता है।

यदि ग्रहण के प्रारम्भ काल में ही मण्डल के मध्य भाग में प्रकाश मालूम पड़े तो **मध्य विदारण** नामक मोक्ष होता है। यह राजा की अपनी सेनाओं में ही परस्पर क्षोभ (कोप) उत्पन्न करने वाला, सुभिक्ष और थोड़ी वृष्टि देने वाला होता है।

तथा च काश्यपः

यदा प्रकाशते मध्ये दुर्भिक्षमरकौ तदा।

यदि बिम्ब के मध्य भाग में ग्रहण के प्रारम्भ काल में प्रकाश दिखाई पड़े तो दुर्भिक्ष और मरकी होती है।

विशेषः– पराशरेण चाऽस्य शरच्छस्यनाशकत्वमात्रमुक्तम्। तद्वचनं प्रागेव लिखितम्।

काश्यपः

पर्यन्ते विमलत्वं स्यात्तमो मध्य यदा भवेत्।
मध्याख्यदेशनाशः स्याच्छरच्छस्यं विनाशयेत्॥

---

१. क्षुधाशस्त्रभयम् इति वराहसम्मतः पाठः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि ग्रहण के समय बिम्ब का प्रान्तभाग निर्मल और मध्य भाग अन्धकार (राहु) से युक्त हो तो मध्यदेश और शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश होता है।

वराहसंहितायां च

पर्यन्तेषु विमलता बहुलं मध्ये तमोऽन्त्यदरणाख्यम्।
मध्याख्यदेशनाशः शारदशस्यक्षयश्चास्मिन्॥
एते सर्वे मोक्षा वक्तव्या भास्करे किन्तु।
पूर्वा दिक् शशिनि यथा तथा रवौ पश्चिमा कल्प्या॥

यदि ग्रहण के समय चन्द्र-बिम्बप्रान्त निर्मल और मध्य भाग अधिक श्यामल हो तो **अन्त्य विदारण** नामक मोक्ष होता है। इसमें मध्य देश और शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश होता है।

इन पूर्वकथित चन्द्रग्रहण के सभी मोक्षों का विचार सूर्यग्रहण में भी करना चाहिये। पर वहाँ की पूर्व दिशा के स्थान पर सूर्यग्रहण में पश्चिम दिशा, पश्चिम दिशा की जगह पूर्व दिशा, उत्तर के स्थान पर दक्षिण और दक्षिण दिशा के स्थान पर उत्तर दिशा की कल्पना करनी चाहिये। इस तरह दिग्वैपरीत्य करके दश मोक्षों का लक्षण और फल देखना चाहिये।

पराशरः

मोक्षागमो दिग्भ्यो राज्ञां जयपराजयौ वेदितव्यौ।
गृहीत्वा ततः पूर्वनिवर्त्तनमभियोक्तृवधाय विपर्य-
येणाभियुक्तस्य।

मोक्ष और स्पर्श की दिशा के अनुसार राजा का जय और पराजय जानना चाहिये। स्पर्श की दिशा से पूर्व में मोक्ष होने पर अभियोक्ता राजा का वध होता है; अन्यथा विपरीत होने पर अभियुक्त का वध होता है।

अथ ग्रहणसमयाद् ग्रहणफलम्

तत्र गर्गः

दिग्दाहोल्कामहीकम्पास्तमोधूमरजांसि च।
सूचयन्त्यागमं राहोः पुनः पर्वण्युपस्थिते॥

यदि सूर्य या चन्द्रग्रहण के समय में दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अन्धकार, धूआँ और धूलि-वर्षण दिखाई पड़े तो पुनः पर्वकाल (अमावास्या में सूर्यग्रहण और पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण) में राहु के आगमन को सूचित करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

ग्रस्ते क्रमान्निमित्तैर्पुनर्ग्रहो मासषट्कपरिवृद्ध्या ।
पवनोल्कापातरजःक्षितिकम्पतमोऽशनिनिपातैः ॥

यदि सूर्य या चन्द्रग्रहण के समय में वायु, उल्कापात, धूलिवर्षण, भूकम्प, अन्धकार और वज्रपात हो तो क्रम से छः-छः मास की वृद्धि से (पर्वकाल में) पुनः ग्रहण सम्भव कहना चाहिये। जैसे— ग्रहण के समय वायुप्रकोप हो तो वर्त्तमान ग्रहणकाल से छः मासों के बाद, उल्कापात हो तो बारह मासों के बाद, धूलि-वर्षण हो तो १८ मासों के बाद, भूकम्प हो तो २४ मासों के बाद, अन्धकार हो तो ३० मासों के बाद और वज्रपात हो तो ३६ मासों के बाद फिर ग्रहण कहना चाहिये।

पराशरस्तु

उपरक्ते यदा चन्द्रे बलवान् वाति मारुतः ।
मासे षष्ठे तदा विन्द्याद्राहोरागमनं ध्रुवम् ॥

उल्कायां द्वादशे मासि रजस्यष्टादशे तथा ।
भूमिकम्पे चतुर्विंशे त्रिंशे तमसि निर्दिशेत् ॥
षड्विंशेऽशनिपातेऽस्मात् सर्वेषां स्यात् षडन्तरे ।

विशेषः– एवं सर्वेषामुक्तनिमित्तानां सम्भवे क्रमेण षडन्तरे भवतीत्युक्तस्यैव संक्षेपः। अथवा सर्वेषामुक्तनिमित्तानामेकस्मिन् ग्रहणे सम्भवे षडुत्तरे षड्विंशे ग्रासे द्वाचत्वारिंशन्मासे पुनर्ग्रहणं भवतीत्यर्थः।

यदि चन्द्रग्रहण के समय प्रबल वायु का प्रकोप हो तो आगे छः मास में निश्चित रूप से पुनः राहु (ग्रहण) का आगमन जानना चाहिये। यदि उल्कापात ग्रहण के समय में हो तो १२वें मास में, धूलिवर्षण हो तो १८वें मास में, भूकम्प हो तो २४वें मास में और अन्धकार दिखाई दे तो ३०वें मास में पुनः ग्रहण होता है। यदि वज्रपात हो तो २६वें मास में पुनः ग्रहण होता है। यदि एक ग्रहण में उक्त सभी लक्षण (वायु, उल्कापात, धूलि-वर्षण, भूकम्प, अन्धकार, वज्रपात) दिखाई दें तो सभी के षडन्तर (६ x ६ = ३६) अर्थात् ४२वें मास में पुनः ग्रहण होता है।

पराशरः

षण्मास्या चन्द्रमसस्ततोऽर्धषष्ठे चादित्यस्याभिपूजितमाहुराचार्याः ।

छः महीनों पर होने वाले चन्द्रग्रहण से साढ़े छः मास में होने वाले सूर्यग्रहण को आचार्यों ने अभिपूजित अर्थात् शान्ति करने योग्य बताया है।

वृद्धगर्गस्तु

स्वर्भानुरिन्दुं षष्ठे तु मासे यद्युपतिष्ठति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तदा क्षेमं सुभिक्षं च योगक्षेमं च निर्दिशेत् ॥

यदा त्वष्टादशे मासि राहुः सोममुपक्रमेत् ।
रसक्षयो व्याधिभयं विनाशः फलपुष्पयोः ॥

चतुर्विंशे यदा सोमो दैत्येन ग्रस्यते यदि ।
अनावृष्टिभयं घोरं दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत् ॥

यदा तु त्रिंशतितमे मासि संगृह्यते शशी ।
तदा क्षयः समुत्पद्येत् प्रचलेद्वाऽपि मेदिनी ॥

चन्द्रात् पञ्चममासे तु मासे त्वेकादशे तथा ।
सप्तदशे तु सूर्यस्य ग्रहणं क्षुद्भयाय तु ॥

यदि चन्द्रग्रहण के अनन्तर पुनः छठे मास में चन्द्रग्रहण हो तो क्षेम, सुभिक्ष और योगक्षेम होता है। यदि १८वें मास में राहु चन्द्रमा में प्रवेश करता है (ग्रहण होता है) तो रस का नाश, रोगभय और फल-पुष्पों का विनाश होता है। यदि २४वें मास में चन्द्रग्रहण होता है तो अवृष्टि का भय और दारुण दुर्भिक्ष होता है। यदि ३०वें मास में चन्द्रग्रहण होता है तो लोगों का नाश अथवा भूकम्प होता है। यदि चन्द्रग्रहण से ५वें या ११वें या १७वें मास में सूर्यग्रहण हो तो क्षुधा का भय होता है।

पराशरस्तु

सप्तदशत्रयोदशपञ्चत्रिंशन्मासिकानि चेन्दोस्त्रीणि विसन्धिग्रहणानि क्षुद्व्याधिमरकदुर्भिक्षोपद्रवाय वेदितव्यानि ।

ग्रहण के अनन्तर यदि १७वें, १३वें और ३५वें मास में चन्द्रमा के तीनों विसन्धि (६, १२, १८, २४, ३० और ३६वें मास में होने वाले सन्धिग्रहण कहलाते हैं; इसीलिए सन्धिमास से पूर्व या बाद में होने वाले ग्रहण को 'विसन्धिग्रहण' कहा गया है) ग्रहण हों तो क्षुधा, व्याधि, मरकी, दुर्भिक्ष और उपद्रव होते हैं।

एवमेवैतानि प्राकृतग्रहणानि वटकणिकायाम्

वर्षस्य व्यतीतान्यतिकष्टानि पर्वाणि ।

पराशरोक्त विसन्धिग्रहण को वटकणिका में 'प्राकृत ग्रहण' कहा गया है। ऐसे ग्रहण जिस वर्ष में होते हैं, वे अति कष्टदायक होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

अत्यन्तादर्शने राहोस्तथा चात्यन्तदर्शने ।
प्रजापीडा विनिर्देश्या व्याधिदुर्भिक्षतस्करैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि राहु (ग्रहण) का अत्यन्त अदर्शन हो अर्थात् बहुत दिनों पर ग्रहण दिखाई पड़े तथा यदि अत्यन्त दर्शन (बहुत अधिक ग्रहण हो) अर्थात् शीघ्र-शीघ्र ग्रहण हो तो व्याधि, दुर्भिक्ष और चोरों से प्रजा को पीड़ा होती है।

अथ ग्रहणनिर्मुक्तावद्भुतफलम्

तत्र वराहसंहितायाम्

परुषपवनाभ्रगर्जितविद्युत्परिवेषभूमिकम्पाद्याः ।
सप्ताहान्तर्न शुभा ग्रहणनिवृत्तौ शुभा वृष्टिः ॥

यदि मोक्ष के अनन्तर सात दिनों के अन्दर प्रचण्ड हवा, मेघ-गर्जन, बिजली, परिवेष, भूकम्प आदि उत्पात दिखाई दें तो संसार में अशुभ होता है। यदि वर्षा हो तो शुभ होता है।

विशेषः– यह श्लोक उपलब्ध बृहत्संहिता में वराह का वचन नहीं है; अपितु समाससंहिता का वचन है।

वृद्धगर्गपराशरौ तु

अथेन्द्रग्रहनिर्मुक्ते सप्ताहान्तर्भवेद्यदि ।
पांशुवर्षोऽन्ननाशः स्यान्नीहारो रोगवृद्धये ॥

नृपनाशाय भूकम्पः उल्का मन्त्रिविपत्तये ।
रोगाय परिवेषः स्याद्भयायैवाभ्रसम्प्लवः ॥

विद्युद्गर्भविनाशाय दिग्दाहश्चाग्निवृद्धये ।
निर्घातेन्द्रधनुर्दण्डो दुर्भिक्षाय भयाय च ॥

पवनः परुषो रूक्षश्चौरोपद्रवसूचकः ।

यदि मोक्ष के अनन्तर सप्ताह के भीतर पांशुवर्षण (धूलि-वर्षण) हो तो अन्ननाश, नीहार (हिमपात) हो तो रोग की वृद्धि, भूकम्प हो तो राजा का नाश, उल्कापात हो तो मन्त्री का नाश, परिवेष हो तो रोग, मेघगर्जन हो तो भय, बिजली दिखाई दे तो गर्भ का नाश, दिग्दाह हो तो अग्निभय, निर्घात और इन्द्रधनुष हो तो दुर्भिक्ष और भय तथा प्रचण्ड और रूक्ष वायु का प्रकोप हो तो चोर के उपद्रव को सूचित करता है।

वराहसंहितायाम्

मुक्ते सप्ताहान्तः पांशुनिपातोऽन्नशस्यसंक्षयं कुरुते ।
नीहारो रोगभयं भूकम्पः प्रबलनृपमृत्युं च ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उल्का मन्त्रिविनाशं नानावर्णाश्च भयमतुलम्।
स्तनितं गर्भविनाशं विद्युन्नृपदंष्ट्रिपरिपीडाम्॥

परिवेषो रुक्पीडां दिग्दाहो नृपभयं च साग्निभयम्।
रूक्षो वायुः प्रबलश्चौरसमुत्थं भयं धत्ते॥

निर्घातः सुरचापो दण्डश्च क्षुद्भयं सपरचक्रम्।
ग्रहयुद्धे नृपयुद्धं केतुश्च तदैव सन्दृष्टः॥

मोक्ष के बाद सात दिनों के आभ्यन्तर रजोवर्षण हो तो अन्न का नाश, नीहार (हिमवर्षण) हो तो रोग का भय, भूकम्प हो तो प्रधान राजा का मरण, उल्कापात हो तो मन्त्री का नाश, अनेक वर्ण का मेघ हो तो अतिशय भय, मेघ का गर्जन हो तो गर्भ का नाश, विद्युत्पात हो तो राजा, सर्प, सूकर आदि को पीड़ा, परिवेष हो तो रोग और पीड़ा, दिग्दाह हो तो राजभय और अग्निभय, कठोर प्रचण्ड वायु बहे तो चोर का भय, निर्घात, इन्द्रधनुष और दण्ड (रवि के किरण, मेघ और वायु का संघात) हो तो दुर्भिक्ष और परराष्ट्र का भय, ग्रहयुद्ध या केतु का दर्शन हो तो राजाओं में युद्ध होता है।

वृद्धगर्गपराशरौ

सर्वोपद्रवनाशः स्यात् सम्यग्वृष्टिर्भवेद्यदि।

ग्रहण के बाद सात दिन के अन्दर यदि अच्छी वर्षा हो तो सभी प्रकार के उपद्रवों का नाश होता है।

वराहसंहितायां तु

अविकृतसलिलनिपातैः सप्ताहान्तः सुभिक्षमादेश्यम्।
यच्चाशुभं ग्रहणजं तत्सर्वं नाशमायाति॥

ग्रहण के बाद यदि सात दिनों के अन्दर विकाररहित (निर्मल) जल की वर्षा हो तो सुभिक्ष होता है तथा ग्रहण में उत्पन्न अशुभ फलों का नाश होता है।

अथोभयपक्षीयग्रहणफलं वटकणिकायाम्

समरागमाय राहुर्यदि पक्षान्ते पुनर्दृश्यः।

यदि दोनों पक्षों में ग्रहण हो अर्थात् एक मास के दोनों पक्षों में सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण हो तो युद्ध होता है।

भार्गवीये

यदि च राहुरुभौ शशिभास्करौ ग्रसति पक्षमनन्तरगं ततः।
पुरुषशोणितकर्दमवाहिनी भवति भूर्न च वर्षति वासवः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि एक ही मास के दोनों पक्षों में राहु चन्द्रमा और सूर्य को ग्रसित करे अर्थात् पूर्णिमा में चन्द्रग्रहण और अमावास्या में सूर्यग्रहण हो तो पुरुषों के खून से भरी नदी बहती है अर्थात् दारुण युद्ध होता है और वर्षा नहीं होती है।

विशेषः– एकस्मिन् मासे उभयपक्षीयग्रहणफलमेतत्।

तथा च काश्यपः

एकमासेऽर्कचन्द्राभ्यां ग्रहणं न प्रशस्यते।
परस्परवधं कुर्युः स्वबलक्षोभिता नृपाः॥

एक मास में सूर्य और चन्द्रमा दोनों के ग्रहण शुभकारक नहीं होते हैं अर्थात् अशुभ फलकारक होते हैं।

राजाओं की अपनी सेनाओं में हलचली मच जाने से राजा और सेना परस्पर (एक-दूसरे का) वध करती हैं।

वराहसंहितायां तु

यद्येकस्मिन् मासे ग्रहणं रविसोमयोस्तदा क्षितिपाः।
स्वबलक्षोभैः संक्षयमायान्त्यतिशस्त्रकोपं च॥

यदि एक ही मास में सूर्य-चन्द्र दोनों के ग्रहण हो तो अपनी सेना में हलचली मच जाने से राजाओं का नाश होता है।

मासभेदे तु फलमुक्तं भार्गवीये

गृहीत्वा भास्करं पूर्वं गृह्णाति शशिनं यदि।
तत्र मासोत्तरं नाम आराध्यन्ते हि देवताः॥

यदि सूर्यग्रहण के बाद चन्द्रग्रहण हो अर्थात् अमावस्या में सूर्यग्रहण हो और उसके बाद की प्रथम पूर्णिमा में ही चन्द्रग्रहण हो तो **मासोत्तर** नामक (भिन्नमासीयोभयपक्षीय) ग्रहण होता है। इसमें देवता की आराधना की जाती है।

मास की गणना— 'अमान्तादमान्तावधि चान्द्रमासः' इस परिभाषा के अनुसार शुक्लपक्ष की प्रतिपदादि से अमावास्या तक ३० तिथियों का एक चान्द्रमास होता है। यदि चन्द्रग्रहण के १५ दिनों पर सूर्यग्रहण होता है तो एक मास में ही दोनों ग्रहण पड़ते हैं। इसका फल आचार्यों ने अशुभ कहा है, परन्तु सूर्यग्रहण के अनन्तर १५ दिनों पर चन्द्रग्रहण हो तो उभयपक्षीय ग्रहण होने पर मासभेद स्पष्ट है; जिसका फल शुभ बताया गया है।

वराहसंहितायां तु

अर्कग्रहात्तु शशिनो ग्रहणं यदि दृश्यते ततो विप्राः।
नैकक्रतुफलभाजो भवन्ति मुदिताः प्रजाश्चैव॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमग्रहे निवृत्ते पक्षान्ते यदि भवेद्ग्रहोऽर्कस्य ।
[१]तत्रामयः प्रजानां दम्पत्योर्वैरमन्योन्यम् ॥

यदि सूर्यग्रहण के पन्द्रह दिन बाद चन्द्रग्रहण हो तो ब्राह्मण लोग अनेक यज्ञफल को भोगने वाले होते हैं और प्रजागण आनन्दित होते हैं ।

यदि चन्द्रग्रहण के पन्द्रह दिन बाद सूर्यग्रहण हो तो प्रजाओं में रोग (पाठान्तर से अनीति) और स्त्री-पुरुषों में परस्पर द्वेष उत्पन्न होता है ।

वृद्धगर्गपराशरौ

यद्राहुचरितं प्रोक्तं चन्द्रग्रहणहेतुकम् ।
तदेव सकलं सूर्ये वेदितव्यं शुभाशुभम् ॥

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु राहूत्पातेषु रविग्रहणे रविराहुपूजापूर्विका चन्द्रग्रहणे चन्द्रराहुपूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या इति ।

राहु के द्वारा चन्द्रग्रहण में जो फल कहे गये हैं, वे ही शुभाशुभ फल सूर्यग्रहण होने पर भी समझने चाहिये । जिस ग्रहण से उत्पन्न होने वाले अशुभ फलों की शान्ति नहीं बतायी गयी है, उसकी शान्ति के लिए सूर्यग्रहण में सूर्य और राहु की पूजा कर तथा चन्द्रग्रहण में चन्द्रमा और राहु की पूजा करके अतिशय सुवर्ण, अन्न, गाय, पृथ्वी आदि सामान्य शान्ति उत्पातों के बलाबल के अनुसार अशुभ फलों की गुरुता (अधिकता) और लघुता (अल्पत्व) जानकर करनी चाहिये ।

अथ विहितविशेषशान्तये राहूत्पाताः

तत्रापर्वग्रहणे वृद्धगर्गः

अपर्वणि भयं यस्माद्ग्रहणं शशिसूर्ययोः ।

भिन्नपर्व (अमावास्या और पूर्णिमा) के भिन्न दिनों में यदि चन्द्र और सूर्य का ग्रहण हो तो भय होता है ।

पराशरस्तु

अपर्वण्युपरक्तः प्रजानाशाय ।

पर्वभिन्न तिथियों में यदि ग्रहण दृश्य हो तो प्रजा का नाश होता है ।

मयूरचित्रे

अपर्वग्रहणे दस्युशस्त्रकोपा भवन्ति च ।

१. तत्रानयः इति पाठान्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वधो मुख्यस्य भूपस्य तथा राष्ट्रस्य जायते ॥

पर्वतिथि से भिन्न तिथियों में यदि ग्रहण हो तो चोरभय, शस्त्रकोप (युद्ध), प्रधान राजा का वध तथा राष्ट्र का नाश होता है।

अरण्यकाण्डे खरादिवधनिमित्तम्

सकबन्धः सपरिघः स्वर्भानुश्च दिवाकरः ।
जग्राह कालपर्यन्तमपर्वणि महाग्रहः ॥

पर्वभिन्न समय में कबन्ध और परिघ के साथ महाग्रह (त्वष्टा) और राहु के द्वारा सूर्य को ग्रसित किया गया। ऐसा अपर्वग्रहण खर आदि राक्षसों के वध के निमित्त हुआ था।

त्रयोदशीग्रहणे तु विशेषः, तथा च मुशलपर्वणि यदुकुलोत्सादननिमित्तम्

चतुर्दशीपञ्चदशीकृतेयं राहुणा पुनः ।
प्राप्ते तु भारते युद्धे दृष्टा चाद्यक्षयाय नः ॥

महाभारत-युद्ध के समय तेरह दिनों का पक्ष हुआ था और त्रयोदशी तिथि में (दो तिथियों के क्षय होने से) ग्रहण हुआ था। आज पुनः यदुवंशियों के नाश के लिए पञ्चदशी की जगह चतुर्दशी में (एक तिथिक्षय होने से) अपर्व-ग्रहण देखा गया है।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यवधनिमित्तम्

चतुर्दशीं पञ्चदशीं भूतपूर्वां च षोडशीम् ।
चन्द्रसूर्यावुभौ ग्रस्तावेकपक्षे त्रयोदशीम् ॥[1]
अपर्वणि ग्रहेणोभौ प्रजासंक्षिपयिष्यतः ।

पर्व (दर्श) पन्द्रह दिनों (१५ तिथियों) का पक्ष होने पर होता है। परन्तु एक तिथि का क्षय होने पर चतुर्दशी को और एक तिथि की वृद्धि होने पर १६वें दिन में भी पर्व का दर्शन होता है। दो तिथियों के क्षय होने पर १३ दिन के पक्ष में पूर्णिमा और अमावास्या में दुर्योगवशात् ग्रहण पूर्व में कभी हुआ होगा, इसकी जानकारी नहीं है; परन्तु महाभारत-युद्ध के समय एक पक्ष की त्रयोदशी तिथि में सूर्य और चन्द्रमा दोनों ग्रहों के ग्रहण हुए। इन दोनों ग्रहणों से प्रजा का नाश होता है।

विशेष– परन्तु एक दिवसीय सूर्य और चन्द्र दोनों के ग्रहण सम्भव ही नहीं हो सकते हैं। छाद्य और छादक दोनों में ग्रहण सम्भव नहीं है और

---

१. ग्रस्तावेकमासीं त्रयोदशीम् इति महाभारते उपलभ्यते। ३ अ० ३२ श्लो०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमावास्या तिथि में दोनों ग्रहों के एक स्थान पर रहने से चन्द्रबिम्ब दृश्य नहीं होता तथा पूर्णिमा की रात में चन्द्रग्रहण के समय सूर्य का दृश्य ही सम्भव नहीं है। अतएव दुर्योग से भी एक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी में दो तिथियों के क्षय होने की स्थिति में सूर्यग्रहण और शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी में चन्द्रग्रहण उत्पातवशात् हुआ होगा।

वृद्धगर्गस्तु

दृश्येते च त्रयोदश्यां चन्द्रार्कौ ग्रहणं गतौ।
छत्राण्यनेकानि तदा मृज्यन्ते भूमिपक्षये॥
सपुत्रदारा नश्यति संग्रामे लोमहर्षणे।
अनेन वनितायाः स वैधव्यान्तकरोऽधिकम्॥

विशेषः– त्रयोदश्यां चन्द्रार्कौ ग्रहणं गताविति एकस्यामेव त्रयोदश्यां युगपद्ग्रस्तावित्यर्थः।

यदि एक ही त्रयोदशी तिथि में सूर्य और चन्द्र दोनों के ग्रहण हों (यद्यपि गणित से एक त्रयोदशी में दोनों ग्रहण असम्भव है, यदि हो तो उत्पात समझना चाहिये) तो अनेक छत्रपति राजाओं का नाश होता है। राजा के नाश के साथ-साथ सेना और प्रजाओं के स्त्री-पुत्रसहित रोंगटे खड़े करने वाले युद्ध में विनाश होता है। इससे स्त्रियों के अतिशय वैधव्य का अन्त होता है अर्थात् पति की मृत्यु के बाद स्त्री भी मर जाती है।

तथा च भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

चन्द्रादित्यावुभौ ग्रस्तावेकाह्ना हि त्रयोदशीम्।
अपर्वणि ग्रहौ जातौ प्रजासंक्षयमिच्छतः॥

उस समय एक ही त्रयोदशी में चन्द्र और सूर्य दोनों ग्रस्त हो गये, वे अपर्व ग्रहण प्रजाओं के सहार के लिए हुए थे।

विशेषः– ग्रहौ जातौ मुखपुच्छाभ्यां ग्रासौ जातावित्यर्थः। एतच्चापर्वग्रहणं द्विविधं राहुकृतं त्वष्टृकृतं च।

तथा च कठश्रुतिः

यच्चापर्वणि राहुदर्शनं तत्र नरपतेर्वधमादिशेत्।

पर्वभिन्न समय में जब राहु का दर्शन (ग्रहण) हो तो राजा की मृत्यु कहनी चाहिये।

विशेष– अमावास्या और पूर्णिमा से भिन्न समय में राहकृत ग्रहण गणित से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कभी भी सम्भव नहीं हो सकता है; फिर भी उत्पातवश या त्वष्टा नामक महाग्रह द्वारा सूर्य-चन्द्रग्रहण त्रयोदशी आदि में होता है।

सभापर्वणि तु पाण्डवानां वनप्रवेशे कुरुक्षयनिमित्तम्

राहुरग्रसदादित्यमपर्वणि विशाम्पते।

उस समय पर्वभिन्न समय में राहु ने सूर्य को ग्रस लिया।

ज्योतिषपराशरविष्णुधर्मोत्तरयोः

अपर्वणि शशाङ्कार्कौ त्वष्टा नाम महाग्रहः।
आवृणोति तमः श्यामः सर्वलोकविपत्तये॥

पर्व से भिन्न समय में त्वष्टा नाम का महाग्रह चन्द्र और सूर्य को अन्धकारयुक्त करे तो सभी लोगों पर विपत्ति आती है।

वराहसंहितायां तु

सतमस्कं पर्व विना त्वष्टा नामार्कमण्डलं कुरुते।
स निहन्ति सप्तभूपाञ्जनांश्च शस्त्राग्निदुर्भिक्षैः॥

पर्वभिन्न समय में त्वष्टा नाम का ग्रह सूर्यमण्डल को अन्धकारयुक्त करता हो तो सात (नक्षत्रकूर्मविभाग से नौ देशों के नौ राजाओं में से) राजाओं और अग्नि, शस्त्र तथा दुर्भिक्ष से लोगों का नाश करता है।

अथ राहुयुक्तराशिस्थितयोस्तत्सप्तमराशिस्थितयोश्च रविचन्द्रमसोरपर्वग्रहणं राहुकृतमिति राहुकृतपर्वग्रहणशान्तिमाह नारदः

अकस्माल्लक्ष्यते चन्द्रेऽपर्वणि राहुदर्शनम्।
अद्भुतं तत्र विज्ञेयं शान्तिं चेमां प्रयोजयेत्॥

औदुम्बर्याः सहस्राणि अष्टौ च जुहुयाद्द्विजः।
मध्वक्तानि घृतान्यत्र जातवेदसि मन्त्रवित्॥

विप्राय दक्षिणां दद्याद्धेनुं च वृषभं तथा।
एकरात्रोषितो भूत्वा ततः सम्पद्यते ध्रुवम्॥

विशेषः– इति कोटिहोमशक्तावियं शान्तिः। राहुकृतापर्वग्रहे कठश्रुतिविहिता सूर्यदैवताऽपि शान्तिः कर्त्तव्या; सा च कठश्रुत्युक्ताऽद्भुतमिश्रके लिखितव्या।

जब चन्द्रमण्डल में पर्वभिन्न समय में राहु का दर्शन (ग्रहण) हो तब यह शान्ति करनी चाहिये। १००८ (एक हजार आठ) गूलर की लकड़ी (समिधा) को मधु और घृत में भिगोकर अग्नि में मन्त्रवेत्ता को हवन करना चाहिये। ब्राह्मणों को दक्षिणा, गाय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और बैल दान में देना चाहिये तथा एक रात उपवास करना चाहिये। ऐसा करने पर उक्त अशुभ ग्रहण का फल शुभ होता है।

त्वष्टृकृतापर्वग्रहणे तु

प्रभूतफलकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्तिः कर्त्तव्या-इति।

पर्वभिन्न समय में यदि त्वष्टा नाम के ग्रह द्वारा सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण हो तो अतिशय फल, सुवर्ण, अन्न, गाय, पृथ्वी आदि दान कर सामान्य शान्ति करनी चाहिये।

अथाग्नेयमण्डलग्रहणफलं मयूरचित्रे

आग्नेयमण्डलं सूर्यचन्द्रयोर्ग्रहणे सति।
पित्तदाहोऽतिसारश्च शिरोरोगस्तथैव च॥

ज्वरस्तापस्तथा कुष्ठं कासश्वासस्तथैव च।
कुक्षिरोगादयो रोगाः प्रभवन्तीह देहिनाम्॥

भूमिदोहोऽत्र कर्त्तव्यो नगरे भ्रमणे तथा।
कार्यो दूर्वासमिद्धोमो जपश्चैव विशेषतः॥

नटप्रेक्षणकं कुर्यान्नोपघातः कथञ्चन।
(इति चतुर्थी शान्तिः)

यदि आग्नेय मण्डल में सूर्य और चन्द्र का ग्रहण हो तो पित्तरोग, दाहरोग, अतिसार, शिरोरोग, ज्वर-ताप, कुष्ठ, कास-श्वास, उदररोग आदि मनुष्यों में होते हैं। इसकी शान्ति के लिए नगर में जगह-जगह पर गाय का दुग्धदोहन पृथ्वी पर करना चाहिये; दूर्वा-समित् से नगर में हवन करना चाहिये। विशेष रूप से जप करना चाहिये और नट (नर्त्तक) का अवलोकन करना चाहिये। इससे कभी भी अशुभ फल नहीं होता है।

यह चतुर्थी शान्ति है।

अथ वायव्यमण्डलग्रहणफलं मयूरचित्रे

वायव्यमण्डले वायोः क्षोभो वृष्टिर्न जायते।
प्रासादामरवेश्मानि शैला वृक्षाः पतन्ति च॥

दुर्भिक्षमशुभं रोगो मूढगर्भाः स्त्रियस्तथा।
भूमिदोहो गवां दानं हेमदानं जपस्तथा॥

होमाश्च नगरस्थाने ततः सम्पद्यते सुखम्।

विशेषः– होमाः कोटिहोमाः। आहुतिबहुत्वाद्बहुवचनम्। इति पञ्चदशी शान्तिः। आग्नेयादिमण्डलानि भूमिकम्पे लिखिष्यामः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि वायव्य मण्डल में ग्रहण हो तो वायु का क्षोभ (प्रकोप) होता है, वर्षा नहीं होती है। प्रासाद (पक्का घर), देवालय, वृक्ष और पर्वत गिरते हैं। दुर्भिक्ष, अशुभ रोग तथा स्त्री गूढ़ (गुप्त) गर्भ वाली होती है। इसकी शान्ति के लिए नगर के भीतर भूमि-दोहन (पृथ्वी पर गाय को दूहना), गोदान, सुवर्णदान, जप और हवन (कोटिहवन) करना चाहिये। इससे प्रजाओं में सुख उत्पन्न होता है।

यह पञ्चदशी शान्ति है। आग्नेय मण्डल भूमिकम्पाद्भुतावर्त्त में लिखा गया है।

अथ जन्मराशिस्थचन्द्रादित्यग्रहणशान्तिः

मत्स्यपुराणे

यस्य राशिं समासाद्य भवेद्ग्रहणसम्भवः।
तस्य स्नानं प्रवक्ष्यामि मन्त्रौषधिविधानवत्॥

चन्द्रोपरागं सम्प्राप्य कृत्वा ब्राह्मणवाचनम्।
संगृह्य चतुरो विप्रान् शुक्लमाल्यानुलेपनैः॥

पूर्वमेवोपरागस्य समासाद्यौषधादिकम्।
स्नापयेच्चतुरः कुम्भान् ब्राह्मणान् सागराननिति[1]॥

गजाश्वरथ्यावल्मीकसङ्गमाद् ह्रदगोकुलात्।
राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्॥

पञ्चगव्येन कुम्भेषु शुद्धमुक्ताफलानि च।
रोचनापद्मशङ्खौ च पञ्चभङ्गसमन्वितौ॥

विशेषः– पञ्चगव्येनेति पञ्चगव्येन सह निःक्षिपेदित्यर्थः।

जिसकी जन्मराशि में चन्द्र या सूर्य का ग्रहण सम्भव हो, उसका स्नान (अशुभ फल-शमन के लिए) मन्त्र-औषधि आदि विधि से कहता हूँ।

चन्द्रोपराग (चन्द्रग्रहण) से पूर्व ही औषधि आदि का संग्रह करके ग्रहण के समय चार घटों और ब्राह्मणों को स्नान कराना चाहिये। स्नान के बाद चारो ब्राह्मणों को सफेद माला-चन्दन-वस्त्रादि से अलंकृत (पूजित) कर स्वस्तिवाचन कराना चाहिये। कलशों (घटों) में सप्तमृत्तिका (हथिसार, घोड़सार, रथ्या (रथस्थान), वल्मीक (दीमक की मिट्टी) नदीसङ्गम, ह्रद (अथाह जल वाले तालाब), गोशाला, राजद्वारप्रवेशस्थानों की मिट्टी), पञ्चगव्य (गोमूत्र, गोमय, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत), शुद्ध मुक्ताफल (मोती), रोचन (गोरोचन), कमल, शङ्ख, पञ्चभङ्ग आदि डालना चाहिये।

---

१. मागधानपि इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ पञ्चभङ्गः

पलाशाश्वत्थकपित्थविल्वोदुम्बरपल्लवैः ।
पञ्चभङ्ग इति ख्यातो बालानां शान्तिकारकः ॥

पलाश, पीपल, कपित्थ, बिल्व और गूलर— इन पाँचों पल्लवों को **पञ्चभङ्ग** कहा गया है। यह बालकों के लिए शान्तिकारक है।

स्फटिकं चन्दनं श्वेतं तीर्थवारि ससर्षपम् ।
गजदन्तं सकुमुदं तथैवोशीरगुग्गुलम् ॥

एतत्सर्वं विनिःक्षिप्य कुम्भेष्वावाहयेत् सुरान् ।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥

आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ।
योऽसौ वज्रधरो देव आदित्यानां प्रभुर्मतः ॥

सहस्रनयनश्चन्द्रग्रहपीडां व्यपोहतु ।
मुखं यः सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युतिः ॥

चन्द्रोपरागसम्भूतामग्निपीडां व्यपोहतु ।
यः कर्मसाक्षी लोकानां धर्मो महिषवाहनः ॥

यमश्चन्द्रोपरागोत्थां पीडामत्र व्यपोहतु ।
रक्षोगणाधिपः साक्षात् प्रभयाऽनलसप्रभः ॥

खड्गव्यग्रोऽतिभीमश्च रक्षःपीडां व्यपोहतु ।
नागपाशधरो देवः सदा मकरवाहनः ॥

स जलाधिपतिश्चन्द्रग्रहपीडां व्यपोहतु ।
प्राणरूपेण यो लोकान् पाति कृष्णमृगाश्रयः ॥

वायुश्चन्द्रोपरागोत्थां ग्रहपीडां व्यपोहतु ।
योऽसौ निधिपतिर्देवः खड्गशूलगदाधरः ॥

चन्द्रोपरागकलुषं धनदोऽत्र व्यपोहतु ।
योऽसाविन्दुप्रभो रुद्रः पिनाकी वृषवाहनः ॥

चन्द्रोपरागपापानि स नाशयतु शङ्करः ।
त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ॥

ब्रह्मविष्ण्वर्कयुक्तानि तानि पापं दहन्तु च ।
एवमामन्त्रितैः कुम्भैरभिषिक्तो गुणान्वितैः ॥

ऋग्यजुःसाममन्त्रैश्च शुक्लमाल्यानुलेपनैः ।
पूजयेद्वस्त्रगोदानैर्ब्राह्मणानिष्टदेवताम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एतानेव ततो मन्त्रान् विलिख्य कनकान्वितान्।
वस्त्रे पट्टेऽथ वा[1] भूर्जे पञ्चरत्नसमन्विते ॥

यजमानस्य शिरसि निदध्युस्ते नरोत्तमाः।
ततोऽतिवाहयेद्वेलामुपरागानुगामिनीम् ॥

प्राङ्मुखः पूजयित्वा तु सम्पश्यन्निष्टदेवताम्।
चन्द्रग्रहे निवृत्ते तु कृत्वा गोदोहमङ्गलः ॥

कृतस्नानस्तु तत् पट्टं ब्राह्मणाय[2] निवेदयेत्।
अनेन विधिना यस्तु ग्रहस्नानं समाचरेत् ॥

न तस्य ग्रहपीडा स्यान्न च बन्धुधनक्षयः।
परमां सिद्धिमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभाम् ॥

सूर्यग्रहे सूर्यनाम सदा मन्त्रेषु कीर्त्तयेत्।
अधिकाः पद्मरागाः स्युः कपिला च सुशोभना ॥

य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वाऽपि मानवः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शक्रलोके महीयते ॥

उक्त कुम्भों में पञ्चभङ्गादि के साथ-साथ स्फटिक, सफेद चन्दन (श्रीखण्डादि), तीर्थजल, सरसों, गजदन्त, कुमुद (पुष्पविशेष), उशीर, गुग्गुल (धूप) आदि सुगन्धित वस्तु डालकर देवताओं, सभी समुद्रों, सरोवरों, तीर्थों, मेघों या जलस्रोतों, नदों आदि का आवाहन कर 'सर्वे समुद्राः सरितः' से लेकर 'ब्रह्मविष्ण्वर्कयुक्तानि तानि पापं दहन्तु च' तक इन अभिषेक मन्त्रों से अभिमन्त्रित कुम्भों के जल से अभिषिक्त होकर, गुणयुक्त ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के मन्त्रों से, सफेद फूलों की माला और सफेद चन्दनों से तथा वस्त्र और गोदानों से ब्राह्मणों और इष्टदेवता की पूजा करनी चाहिये। इसके बाद कपड़े की पट्टी या भोजपत्र में कथित इन्हीं सुवर्णयुक्त मन्त्रों को लिखकर अर्थात् सुवर्ण की लेखनी से लिखकर, पञ्चरत्नयुक्त पट्टे को उन उत्तम मनुष्यों (वरण किये गये पूजित ब्राह्मण) द्वारा यजमान के मस्तक में बाँध देना चाहिये। तदनन्तर ग्रहण के मोक्ष होने तक के समय को व्यतीत करना चाहिये।

चन्द्रग्रहण के समाप्त (मोक्ष) होने पर पूर्वाभिमुख होकर इष्टदेवता की पूजा, मङ्गल करने वाला गोदोहन (भूमि पर गोदोहन) करके पुनः स्नान कर पट्टे को ब्राह्मण को दान करना चाहिये। इस विधि से जो ग्रहणस्नान करता है, उसे ग्रहणपीड़ा और बन्धु तथा धनक्षय नहीं होता है और उसे परम सिद्धि प्राप्त होती है। यह शान्ति बार-बार करना दुर्लभ है।

---

१. वर्णपट्टेऽथ वा पट्टे इति पाठान्तरम्।
२. गणकाय इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उक्त चन्द्रग्रहणस्नान सूर्यग्रहण में भी करना चाहिये; परन्तु सूर्यग्रहण में मन्त्रों में सदा सूर्यनाम का उच्चारण (कीर्त्तन) करना चाहिये। पद्मराग (रत्नविशेष) और सुन्दर कपिला (गाय) का दान सूर्यग्रहण में अधिक बताये गये हैं।

इन मन्त्रों का जो व्यक्ति नित्य श्रवण करता है अथवा दूसरों को सुनाता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर अन्त में इन्द्रलोक (स्वर्ग) को प्राप्त करता है।

अथ जन्मनक्षत्रग्रहणफलं ज्यौतिषपराशरविष्णुधर्मोत्तरयोः

यन्नक्षत्रगतो राहुर्ग्रसते चन्द्रभास्करौ।
तज्जातीनां भवेत् पीडा यदि ते शान्तिवर्जिताः॥

विशेषः– अत्र जन्मनाडीनक्षत्रोपतापविहिता शान्तिः कर्त्तव्या। ताश्च नाडीनक्षत्रोपशान्तौ वक्ष्यामः।

जिस नक्षत्र में स्थित होकर राहु चन्द्र और सूर्य को ग्रसित करता है, उस नक्षत्र की जाति (ब्राह्मणादि) के लोगों को पीड़ा देता है; यदि वे लोग शान्ति नहीं करते हैं अर्थात् शान्ति करने पर पीड़ा नहीं होती है। इसके लिए नाड़ीनक्षत्रोपताप के लिए कही गयी शान्ति करनी चाहिये, नाड़ी-नक्षत्रोपताप शान्ति आगे कही जायगी।

भार्गवीये

यस्य राज्यस्य नक्षत्रे स्वर्भानुरुपरज्यते।
राज्यभ्रंशं सुहृन्नाशं मरणं चात्र निर्दिशेत्॥

विशेषः– राज्यस्य नक्षत्रेऽभिषेकः। तदभिषेकनक्षत्रं यदि जन्मनक्षत्रमपि नृपतेः स्यात् तदा मरणं फलम्। अथाभिषेकनक्षत्रोपशान्तिश्च कर्त्तव्या फलपाकसमये।

जिसके राज्य के नक्षत्र (कूर्मविभागानुसार) में ग्रहण हो, उसका राज्य-नाश, मित्रनाश और मरण कहना चाहिये।

इसकी शान्ति के लिए राज्यनक्षत्र में अभिषेक करना चाहिये। यदि अभिषेक-नक्षत्र ही राजा का जन्मनक्षत्र भी हो तो राजा का मरण होता है। इसमें अभिषेकनक्षत्रोपताप शान्ति फल-पाककाल के अन्दर ही करनी चाहिये।

वराहसंहितायां तु

सुरद्विषोऽब्दार्धाद्वर्षात् सूर्यग्रहणे – इति।

विशेषः– एतान्याहुतानि राहुकृतग्रहणे गर्गादिभिरभिहितानि। वराहादिभिस्तु ग्रहणमेव राहुकृतं न भवतीत्युक्तम्।

चन्द्रग्रहण का पाककाल छः मास और सूर्यग्रहण का पाककाल १ वर्ष का होता है। यह पाककाल गर्गादि आचार्योक्त राहुकृत ग्रहण के निमित्त वराह ने बताया है। वराहादि आचार्यों ने तो असुरविशेष राहु के द्वारा ग्रहण नहीं होता है— ऐसा प्रतिपादित किया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च वराहसंहितायाम्

अमृतास्वादविशेषाच्छिन्नमपि शिरः किलासुरस्येदम्।
प्राणैरपरित्यक्तं ग्रहतां यातं वदन्त्येके ॥

इन्द्वर्कमण्डलाकृतिरसितत्वात्किल न दृश्यते गगने।
अन्यत्र पर्वकालाद्वरप्रसादात् कमलयोनेः ॥

मुखपुच्छविभक्ताङ्गं भुजङ्गप्राकारमुपदिशन्त्येके।
कथयन्ति मूर्त्तमपरे तमोमयं सैंहिकेयाख्यम् ॥

यदि मूर्त्तो भविचारी शिरोऽथ वा भवति मण्डली राहुः।
भगणार्धेनान्तरितो गृह्णाति कथं नियतचारः ॥

अनियतचारो यदि चेदुपलब्धिः संख्यया कथं तस्य।
पुच्छाननाभिधानोऽन्तरेण कस्मान्न गृह्णाति ॥

अथ तु भुजगेन्द्ररूपः पुच्छेन मुखेन वा स गृह्णाति।
मुखपुच्छान्तरसंस्थं स्थगयति कस्मान्न भगणार्धम् ॥

राहुद्वयं यदि स्याद्ग्रस्तेऽस्तमितेऽथ वोदिते चन्द्रे।
तत्समगतिनाऽन्येन ग्रस्तः सूर्योऽपि दृश्येत ॥

भूच्छायां स्वग्रहणे भास्करमर्कग्रहे प्रविशतीन्दुः।
प्रग्रहणमतः पश्चान्नेन्दोर्भानोश्च पूर्वार्धात् ॥

वृक्षस्य स्वच्छाया यथैकपार्श्वे न भवति दीर्घचया।
निशि निशि तद्वद्भूमेरावरणवशाद्दिनेशस्य ॥

सूर्यात् सप्तमराशौ यदि चोदग्दक्षिणेन नातिगतः।
चन्द्रः पूर्वाभिमुखश्छायामौर्वीं तदा विशति ॥

चन्द्रोऽधःस्थः स्थगयति रविमम्बुदवत् समागतः पश्चात्।
प्रतिदेशमतश्चित्रं दृष्टिवशाद्भास्करग्रहणम् ॥

किसी का मत है कि राहु नामक राक्षस का मस्तक कट जाने पर भी अमृत पी जाने के कारण उसका प्राणनाश नहीं हुआ; वरन् राहु ने ग्रहत्व प्राप्त किया।

ब्रह्माजी के वरदान से काला होने के कारण राहु पर्वकाल से भिन्न समय में आकाश में चन्द्र और सूर्यमण्डल के समान दिखाई नहीं देता है।

किसी आचार्य का मत है कि मुख और पुच्छ से विभक्त अङ्ग वाला शूर्प की तरह राहु का आकार है। किसी का मत है कि राहु का कोई भी आकार नहीं है, बल्कि वह केवल अन्धकारमय ही है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि राहु मूर्त्तिमान, राशि में चलने वाला, शिर वाला और बिम्ब वाला होता तो निश्चित गति वाला होकर भगणार्द्ध पर स्थित सूर्य और चन्द्रमा को कैसे ग्रसता अर्थात् कभी भी नहीं ग्रसता।

यदि राहु अनिश्चित गति वाला होता तो गणित से उसका ज्ञान कैसे हो सकता था अथवा यदि मुख-पुच्छ-विभक्ताङ्ग वाला यदि वह है तो अपने से दूसरी, तीसरी, चौथी या पाँचवीं राशि पर स्थित सूर्य या चन्द्र को क्यों नहीं ग्रसता है।

यदि राहु सर्पाकार होता तो मुख या पुच्छ से छः राशि के अन्तर पर स्थित रवि-चन्द्र को ग्रहण के समय में मुख और पुच्छ के बीच में स्थित भगणार्ध को भी आच्छादित कर देता।

यदि दो राहु होते तो चन्द्र के ग्रस्तास्त या ग्रस्तोदय समय में चन्द्रमा से षड्भान्तर पर स्थित सूर्य उसके समान गति वाले द्वितीय राहु से ग्रसित देखने में आते। अर्थात् जो कोई दो राहु— एक नियत चार वाला और दूसरा अनियत चार वाला मानते हैं, वह ठीक नहीं है; क्योंकि जब अनियत चार वाले राहु के द्वारा ग्रसित चन्द्र का उदय या अस्त हो, तो उस समय में क्षितिज के ऊपर विरुद्ध दिशा में नियत चार वाले राहु से सूर्य का भी ग्रहण होना सम्भव है; परन्तु ऐसा देखने में नहीं आता है।

चन्द्रमा अपने ग्रहण (चन्द्रग्रहण) में भूच्छाया में और सूर्यग्रहण में सूर्यबिम्ब में प्रविष्ट होता है। अतः चन्द्र का स्पर्श पश्चिम भाग से और सूर्य का स्पर्श पूर्व भाग से नहीं होता है।

जिस तरह सूर्य के आवरण से वृक्ष की छाया एक तरफ (सूर्य की विरुद्ध दिशा में) फैलती है, उसी तरह सूर्य के आवरणवश पृथ्वी की छाया प्रत्येक रात्रि में लम्बी होती है।

जब सूर्य से सप्तम राशि में स्थित होकर पूर्वाभिमुख गति वाला चन्द्र क्रान्तिवृत्त से अत्यल्प उत्तर या दक्षिण शर पर स्थित रहता है तो उस समय पूर्वाभिमुख चलता हुआ चन्द्र पृथ्वी की छाया में प्रवेश करता है।

सूर्यबिम्ब से अधोभाग में स्थित चन्द्रमा मेघ की तरह पश्चिम तरफ से आकर सूर्यबिम्ब को ढकता है; इसलिए प्रत्येक देश (स्थान) में सूर्यग्रहण विभिन्न रूप में देखने में आता है अर्थात् कहीं सर्वग्रहण, कहीं खण्डग्रहण और कहीं ग्रहणाभाव देखने में आता है। जैसे मेघखण्ड से आच्छादित सूर्यबिम्ब होने पर ठीक नीचे के लोगों के लिए अदृश्य, पार्श्ववर्त्तियों के लिए किञ्चित् दृश्य और दूरवर्त्तियों के लिए सर्व दृश्य होता है।

परन्तु चन्द्रग्रहण सर्वदेशाभिप्रायिक होता है।

तथा च भट्टबलभद्रः

भूच्छाया शशिकक्षास्था विधौ भार्धेऽर्कतः स्थिते।
यदा विशत्यविक्षिप्ता चन्द्रस्य स्यात्तदा ग्रहः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्दुना छादितं सूर्यमधोविक्षिप्तगामिना ।
न पश्यन्ति तदा लोकास्तदा स्याद्भास्करग्रहः ॥

भूच्छाया चन्द्रकक्षा होकर गमन करती है । जब चन्द्रमा सूर्य से छः राशि पर स्थित हो और क्रान्तिवृत्त से उत्तर या दक्षिण अत्यल्प शर पर स्थित होकर भूच्छाया में प्रवेश करता हो तो चन्द्रग्रहण होता है ।

जब अधःस्थित विक्षिप्त (मानैक्यार्धाधिक शरान्तर पर स्थित) चन्द्रमा के द्वारा सूर्यबिम्ब आच्छादित होता है तब सूर्यग्रहण दृश्य नहीं होता है ।

वराहसंहितायाम्

आवरणं महदिन्दोः कुण्ठविषाणस्ततोऽर्धसञ्छन्नः ।
स्वल्पं रवेर्यतोऽतस्तीक्ष्णविषाणो रविर्भवति ॥

एवमुपरागकारणमुपदिष्टं दिव्यदृग्भिराचार्यैः ।
राहुरकारणमस्मिन्नित्युक्तः शास्त्रसद्भावः ॥

योऽसावसुरो राहुस्तस्य वरो ब्रह्मणा समाज्ञप्तः ।
आप्यायनमुपरागे दत्तहुताशेन ते भविता ॥

तस्मिन् काले सान्निध्यमस्य तेनोपचर्यते राहुः ।
याम्योत्तरा शशिगतिर्गणितेऽप्युपचर्यते तेन ॥

चन्द्र का आवरण (छादिका=भूच्छाया) महान् होने के कारण अर्धग्रसित चन्द्रबिम्ब में कुण्ठविषाण (स्थूल शृङ्ग) होता है और सूर्य का आवरण (छादक=चन्द्र) लघु (सूर्यबिम्ब से अल्प) होने के कारण अर्धग्रसित सूर्यबिम्ब में तीक्ष्णविषाण (सूक्ष्म शृङ्ग) होता है ।

दिव्य दृष्टि वाले आचार्यों ने इस तरह उपराग (ग्रहण) का कारण कहा है । इसमें राहु को कारण न मानना शास्त्रमर्यादा की रक्षा करना है ।

(इससे स्पष्ट है कि राहु (असुरविशेष) कृत ग्रहण नहीं होता है; परन्तु सर्वत्र पामर से लेकर बड़े-बड़े ज्ञानियों तक में राहुकृत ग्रहण प्रसिद्ध है तथा श्रुति-स्मृति-पुराणादि में भी राहुकृत ग्रहण ही प्रसिद्ध है)।

पूर्व काल में ब्रह्माजी ने राहु को ऐसा वर दिया था कि ग्रहणसमय में लोगों के द्वारा दिये गये हुतांश से तेरी तृप्ति होती रहेगी । इसलिए ग्रहण-समय में सूर्य-चन्द्र को राहु का सान्निध्य प्राप्त होता है और राहु के कारण ही चन्द्रमा में दक्षिणोत्तरा गति उत्पन्न होती है ।

ब्रह्मसिद्धान्ते तु

एवं वराहमिहिरश्रीषेणार्यभटविष्णुचन्द्राद्यैः ।
लोकविरुद्धमभिहितं वेदस्मृतिसंहिताबाह्यम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यद्येवं ग्रहणफलं गर्गाद्यैः संहितासु यदभिहितम् ।
तत्काले होमजपस्नानादिफलस्य चाभावः ॥

राहुकृतं ग्रहणद्वयमागोपालाङ्गनाप्रसिद्धमिदम् ।
बहुफलमिदमपि सिद्धं जपहोमस्नानफलमत्र ॥

स्मृतिषूक्तं न स्नानं राहोरन्यत्र दर्शनाद्रात्रौ ।
राहुग्रस्ते सूर्ये सर्वं गङ्गासमं तोयम् ॥

स्वर्भानुरासुरिरिनं तमसा विव्याध वेदबाह्यमिदम् ।
श्रुतिसंहितास्मृतीनां भवति यथैक्यात् तदुक्तिरतः ॥

राहुस्तच्छादयति प्रविशति यच्छुक्लपञ्चदश्यन्ते ।
भूच्छायातमसीन्दोर्वरप्रसादात् कमलयोनेः ॥

आचार्य ब्रह्मगुप्त ने अपने ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त (ग्रहणवासना) में राहुकृत सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण का खण्डन किया है। उनका कथन है कि ये बातें वराहमिहिर-श्रीषेण-आर्यभट-विष्णुचन्द्र आदि आचार्यों ने लोकविरुद्ध और वेद-स्मृति-संहिता से बहिर्भूत कही हैं (यदि राहुकृत सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण होता है तो चन्द्रमा के पूरब तरफ और सूर्य के पश्चिम तरफ स्पर्श क्यों होता है; क्योंकि राहु एक ही है। चन्द्रग्रहण में पश्चिम में मोक्ष होता है, फिर सूर्यग्रहण में पूर्व तरफ से क्यों ? अर्थात् दोनों ग्रहणों में स्पर्श और मोक्ष आदि का दर्शन समान होना चाहिये। परन्तु ऐसा नहीं होता है। अर्धखण्डित रविबिम्ब के शृङ्गद्वय की तीक्ष्णता और स्थिति लघु, रविग्रहण कहीं दृश्य होता है, कहीं नहीं, इत्यादि राहुकृतग्रहण से उपपन्न नहीं होता है)।

यदि वराहमिहिर आदि के इस प्रकार मत हैं तब संहिताओं में राहुवश जो ग्रहणफल कहा गया है, वह व्यर्थ है। राहुकृत ग्रहण के अभाव में हवन-जप-स्नान आदि का भी फलाभाव होता है।

राहु द्वारा सूर्य और चन्द्र के ग्रहण होते हैं, यह विषय गोपालों (ग्वालों) की स्त्रियों में भी प्रसिद्ध है अर्थात् ग्वालों की स्त्रियाँ भी इस बात को जानती हैं कि दोनों ग्रहण राहु से होते हैं और ग्रहण के समय जप-हवन-स्नानादि करने से बहुत फल होता है— यह भी उन लोगों (ग्वालों की स्त्रियों) में प्रसिद्ध है अर्थात् इस बात को साधारण लोग भी जानते हैं।

राहु द्वारा सूर्य के ग्रस्त होने पर अथवा चन्द्र के ग्रस्त होने पर समस्त जल गङ्गाजल के समान हो जाता है। राहुदर्शन से भिन्न समय में रात्रि में स्नान नहीं करना चाहिये, ऐसा धर्मशास्त्रों में कहा गया है।

आसुरि (राक्षसकुलोत्पन्न) स्वर्भानु (सिंहिकापुत्र राहु) ने अन्धकार से सूर्यबिम्ब को भेदित किया— यह वेदवाक्य है ('स्वर्भानुर्हवा आसुरिः सूर्यं तमसा विव्याध' यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माध्यन्दिनी श्रुति है)। श्रुति (वेद), संहिता और स्मृति (धर्मशास्त्र) में जैसे ऐक्य (समता-एकवाक्यता) हो, वैसे ही कहना उचित है। अतः एकता प्रतिपादन के लिए उक्ति यहाँ उचित है।

पूर्णान्तकाल में चन्द्रबिम्ब भूभा के अन्धकार में प्रवेश करता है। ब्रह्मा के वरप्रदान के प्रभाव से भूच्छाया (भूभा) का आश्रयण कर अर्थात् भूभा में प्रविष्ट होकर राहु उसी चन्द्रबिम्ब को आच्छादित करता है अर्थात् चन्द्रग्रहण होता है।

तथा च गर्गः

तपःप्रवृत्तस्य राहोर्ब्रह्मा वरं ददौ पञ्चदश्यन्ते चन्द्रमुपसर्प–इति।

पर्वान्तकाल में चन्द्रमा को ग्रसित करने हेतु तपस्या में प्रवृत्त राहु को ब्रह्माजी ने वरदान दिया।

ब्रह्मसिद्धान्ते

चन्द्रोऽम्बुमयोऽधःस्थो यदग्निमयभास्करस्य मासान्ते।
छादयति शमिततापो राहुश्छादयति तत्सवितुः॥

मासान्तकाल (अमान्तकाल) में सूर्यबिम्ब के अधोभाग में स्थित चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्ब को आच्छादित करता है। ब्रह्मा के वरप्रदान से राहु चन्द्रबिम्ब में प्रविष्ट होकर उसी सूर्यबिम्ब को आच्छादित करता है अर्थात् पूर्णान्त काल में भूभामण्डलगत राहु चन्द्रबिम्ब को आच्छादित करता है तथा अमान्तकाल में चन्द्रमण्डलगत राहु सूर्यबिम्ब को आच्छादित करता है।

सूर्यसिद्धान्ते

तमोमयस्य तमसो रविरश्मिपलायिनः।
भूच्छाया चन्द्रविम्बं च स्थाने द्वे परिकल्पिते॥[१]

सूर्यकिरण से उत्पन्न भूच्छाया में और चन्द्रबिम्ब में— ये दो स्थान अन्धकारमय राहु के लिए कल्पित (निर्धारित) हैं।

ब्रह्मसिद्धान्ते

भूच्छायाव्याससमः शशिकक्षायां स्थितः शशिग्रहणे।
राहुश्छादयतीन्दुं सूर्यग्रहणेऽर्कमिन्दुसमः॥

यत्तदधिकं तमोमयराहुव्यासस्य सूर्यदृष्टत्वात्।
नश्यति भूच्छायेन्द्वोर्व्याससमोऽस्माद्भवति राहुः॥

---

१. प्रचलितसूर्यसिद्धान्तेऽस्योपलब्धिर्नास्ति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूच्छाया नेन्दुमतो ग्रहणे छादयति नार्कमिन्दुर्वा।
तत्स्थस्तद्व्याससमो राहुश्छादयति शशिसूर्यौ॥

चन्द्रग्रहण में चन्द्रकक्षा में स्थित भूभाव्यास के बराबर राहु चन्द्रबिम्ब को ग्रस्त करता है तथा सूर्यग्रहण में चन्द्रव्यास के बराबर राहु सूर्यबिम्ब को ग्रसित करता है।

भूभा और चन्द्र से सूर्यबिम्ब के अधिक होने के कारण सूर्यबिम्ब के तेज से अन्धकारमय राहु का अन्धकार नष्ट हो जाता है; अतः भूभाबिम्ब-व्यास के बराबर तथा चन्द्रबिम्ब-व्यास के बराबर ही तमोमय राहु का व्यास होता है। वह अन्धकार के बीच में रहने के कारण दृश्य नहीं होता है। इसी कारण से ग्रहण में भूभा चन्द्रबिम्ब को अथवा चन्द्र सूर्यबिम्ब को आच्छादित नहीं करते हैं; अपितु उनके व्यास के बराबर उपस्थित राहु ही चन्द्रबिम्ब और सूर्यबिम्ब को आच्छादित करता है।

वीरभद्रः

सिंहिकातनयस्यास्य राहोः पुच्छमुखादृते।
नान्यदस्त्युदरं बाहुपादादिकमिति श्रुतिः॥

सिंहिका राक्षसी के पुत्र राहु के पुच्छ और मुख को छोड़कर उदर, बाहु, पाँव आदि अंग शरीर में नहीं है— ऐसा वेदवाक्य है।

वसिष्ठः

स्वर्भानुः प्रत्यासन्नभगणार्धान्तरितः सूर्याचन्द्रमसौ मुखपुच्छाभ्यां गृह्णाति – इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे राहोरद्भुतावर्त्तः

भगणार्ध (छः राशि) दूरी पर स्थित राहु अपने मुख और पुच्छ से सूर्य और चन्द्रमा को ग्रसित करता है अर्थात् अमान्त काल में सूर्य जिस राशि के जिस बिन्दु पर रहता है और पूर्णान्त काल में चन्द्रमा जिस राशि के जिस स्थान पर रहता है, मात्र उन्हीं दोनों स्थानों पर भगणार्धान्तरित राहु रहता है और उसके मध्य में राहु के अन्य शरीरावयव के अभाव में राहु की सत्ता नहीं होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ मङ्गलाद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकमङ्गललक्षणमाह पराशरः

वर्णरश्मिप्रमाणतेजोयुक्त उदङ्मार्गगः स्नेहवान्
सर्वलोकहिताय भवति चात्र ।

प्रदक्षिणगतिः कान्तः स्निग्धः स विपुलोऽमलः ।
तप्तकाञ्चनसङ्काशो भवेल्लोकस्य वृद्धये ॥

विशेषः– प्रदक्षिणगतिर्ग्रहाणामुदग्गामी ।

वर्ण (स्वाभाविक वर्ण), किरण, प्रमाण (बिम्बमान) और तेज से युक्त, उत्तर मार्गगामी, स्नेहवान् मंगल सभी लोगों के लिए कल्याणकारक होता है ।

प्रदक्षिणगतिक (उत्तर मार्ग से गमन करने वाला), सुन्दर, स्निग्ध, विशाल, निर्मल और तपाये हुए सोने के समान कान्ति वाला मङ्गल संसार की वृद्धि के लिए होता है ।

वराहसंहितायां तु

विपुलविमलमूर्त्तिः किंशुकाशोकवर्णः
स्फूटरुचिरमयूखस्तप्तताम्रप्रभाभः ।
विचरति यदि मार्गं चोत्तरं मेदिनीजः
शुभकृदवनिपानां हार्दिदश्च प्रजानाम् ॥

अधिक निर्मल मूर्त्ति वाला, किंशुक और अशोक पुष्प के समान वर्ण वाला, स्पष्ट और सुन्दर किरण वाला तथा तपाये हुए ताम्बे के सदृश वर्ण वाला मङ्गल यदि उत्तर मार्ग (उत्तरा क्रान्ति) में विचरण करे तो राजाओं का शुभ करने वाला और प्रजाओं को सन्तोष देने वाला होता है ।

विशेषः– अत्र मध्यमार्गचारी मध्यमफलः । दक्षिणमार्गचारी भयद इत्यूहनीयम् ।

अर्थात् मध्यम मार्ग में विचरण करने वाला मङ्गल मध्यम फल और दक्षिण मार्ग में विचरण करने वाला भय देने वाला होता है ।

यथाऽऽह गर्गः

याम्यादिपित्र्यपर्यन्तं नवर्क्षं मार्गमुत्तरम् ।
भाग्यादिनैर्ऋतान्तं तु मध्यमं मार्गमुच्यते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आषाढपौष्णभान्तं तु दक्षिणं समुदाहृतम्।
सौम्यमार्गस्थितो भौमः प्रजानां हितकारकः ॥

मध्ये तु मध्यफलदो याम्ये तु भयदः स्मृतः।

विशेषः– येषामयं स्वामी तेषां वर्णरश्मिप्रभादिशुभलक्षणयुक्तो विशेषेण शुभकरः। विपरीतो विशेषेण विपरीतकरः।

भरणी से लेकर मघापर्यन्त नौ नक्षत्र मङ्गल का उत्तर मार्ग, पूर्वफाल्गुनी से मूलपर्यन्त नौ नक्षत्र मध्यमार्ग और पूर्वाषाढ़ से रेवती तक आठ नक्षत्र दक्षिण मार्ग है (यहाँ दक्षिण मार्ग में मात्र ८ नक्षत्र कहा गया है; जवकि अश्विनी का किसी भी मार्ग में उल्लेख नहीं है; अतः पूर्वाषाढ़ से अश्विनी तक नौ नक्षत्र दक्षिण मार्ग में भी होना चाहिये)।

उत्तर मार्ग में यदि मङ्गल विचरण करता है तो प्रजाओं के लिए हितकारक, मध्यम मार्ग में विचरण करता है तो प्रजाओं के लिए मध्यम फल देने वाला और दक्षिण मार्ग में विचरण करता है तो प्रजाओं के लिए भय देने वाला होता है।

मङ्गलस्वामिकान्याह यवनेश्वरः

चमूनृपस्तेन हुताशवृत्तिविषाग्निशस्त्रक्षतजक्षितीनाम्।
प्रवालधात्वाकरपुष्पजातिचामीकराणां क्षितिसूनुरीशः ॥

मङ्गल सेना, राजा, चोर, स्वर्णकार-लौहकार आदि अग्निजीवी, विष, अग्नि, शस्त्र से आहत, पृथिवी, प्रवाल (मूँगा), धातुओं (सुर्वणादि) के स्थान, पुष्पजाति, (मालतीपुष्प) और चामीकर (सुवर्ण) आदि का स्वामी है।

काश्यपस्तु

महेन्द्रमलयं विन्ध्यं सिप्रा वेणा महानदी।
गोदावर्या नर्मदाया भीमायाः पश्चिमा दिशः ॥

चेदिकाः कौङ्कणा दुर्गा द्रविडा वेत्रवन्नदी।
मन्दाकिनी पयोष्णी च मालती सिन्धुपारकाः ॥

सपाण्ड्याश्चोलदेशस्था [1]विदेहान्ध्राश्मकास्तथा।
भासापराः कुन्तलाश्च केरला दण्डकास्तथा ॥

नागराः पौरवाश्चैव कर्षकाः शस्त्रवृत्तयः।
हुताशनाजीविनो ये कुञ्जराः पशुपास्तथा ॥

सांग्रामिका नृशंसाश्च सङ्कराश्चोपघातकाः।
कुमारा भूमिपतयो दाम्भिकास्तस्करा अपि ॥

---

१. द्रविडा वा० इति अशुद्धं पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एतेषां भूमिजः स्वामी तथैवाग्न्युपजीविनाम् ।

महेन्द्रपर्वत, मलयगिरि, विन्ध्यपर्वत, सिप्रा नदी, वेणा, महानदी तथा गोदावरी-नर्मदा-भीमा नदी के पश्चिम का भाग, चेदिदेश, कोङ्कण, दुर्ग, द्रविड़ देश, वेत्रवती नदी, मन्दाकिनी, पयोष्णी, मालती, सिन्धु और पारा नदी, पाण्ड्य और चोल देश के निवासी, विदेह देश (मिथिला), आन्ध्र, अश्मक देश, भासापर, कुन्तल, केरल, दण्डकारण्य, नागर (नगरनिवासी), पौरव (पुरवासी), किसान, शस्त्र से जीविका चलाने वाले, अग्निजीवि (लोहार-सोनार आदि), हाथी, पशुपालक, योद्धा, नृशंस (क्रूर), सङ्कर जाति, हिंसक, कुमार (बालक), राजा, दाम्भिक, चोर— इन सबों का स्वामी मंगल होता है।

वराहसंहितायाम्

शोणस्य नर्मदाया भीमरथायाश्च पश्चिमार्धस्थाः ।
निर्विन्ध्या वेत्रवती सिप्रा गोदावरी वेणा ॥

मन्दाकिनी पयोष्णी महानदी सिन्धुमालतीपाराः ।
उत्तरपाण्ड्यमहेन्द्राद्रिविन्ध्यमलयोपगाश्चोलाः ॥

द्रविडविदेहान्ध्राश्मकभासापरकौङ्कणाः समन्त्रिषिकाः ।
कुन्तलकेरलदण्डककान्तिपुरम्लेच्छसङ्करिणः ॥

नागरकृषिकरपारतहुताशनाजीविशस्त्रवार्त्तानाम् ।
आडविकदुर्गकर्वटवधिकनृशंसावलिप्तानाम् ॥

नरपतिकुमारकुञ्जरदम्भिकडिम्भाभिघातपशुपानाम् ।
रक्तफलकुसुमविद्रुमचमूपगुडमद्यतीक्ष्णानाम् ॥

कोषभवनाग्निहोत्रिकधात्वाकरशाक्यभिक्षुचौराणाम् ।
शठदीर्घवैरबह्वाशिनां च वसुधासुतोऽधिपतिः ॥

शोणनद, नर्मदा नदी और भीमरथा नदी के पश्चिम में स्थित देश, निर्विन्ध्या, वेत्रवती, सिप्रा, गोदावरी, वेणा, मन्दाकिनी (गंगा), पयोष्णी, सिन्धु, मालती और पारा नदी, उत्तर पाण्ड्य, महेन्द्र पर्वत, विन्ध्याचल और मलयगिरि-निवासी, चोल, द्रविड, विदेह, आन्ध्र, अश्मक, भासापर, कोङ्कण, समन्त्रिक, कुन्तल, केरल, दण्डकारण्य, कान्तिपुर, म्लेच्छ, सङ्करजाति, नासिक्य, भोगवर्द्धन, तर्कराट, विन्ध्याचल के समीपस्थ देश, तापी और गोमती नदी के मधुर जल पीने वाले, नागरजन, किसान, पारत, अग्निहोत्री, सोनार आदि अग्निजीवी, शस्त्र से आजीविका चलाने वाले, वनवासी, दुर्ग, कर्वटदेशवासी लोग, वधिक, पापी, कामों में असंलग्न, राजा, बालक (युवराज), हाथी, दाम्भिक, बालकों को मारने वाले, पशुपालक, लाल रंग वाले फल, रक्त पुष्प, प्रवाल, सेनापति, गुड़, मदिरा, तीक्ष्ण (निम्ब आदि),

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोषागार, अग्निहोत्री, धातुओं की खान, शाक्य (रक्तपट), भिक्षु, चोर, शठ (परकार्य से विमुख), दृढ़ द्वेष और अधिक भोजन करने वालों का स्वामी मंगल होता है।

अथ वर्णफलम्

तत्र वृद्धगर्गः

पीतकः कृष्णवर्णो वा विरश्मिर्वा विगर्हितः ।

पीत वर्ण, कृष्ण वर्ण अथव रश्मिहीन मंगल विगर्हित (अशुभ फलदायक) होता है।

अथ चारफलम्

तत्र वृद्धगर्गः

त्रिंशद्भिर्लोहितो मासैर्विचरेद्राशिविंशकम् ।
यदा स पूजितश्चारो न च न्यूनो न चाधिकः ॥

यदि मंगल तीस मासों में बीस राशियों का भोग करता है तब वह चार पूजित अर्थात् शुभफलद होता है। इससे न्यून वा अधिक गति वाला मंगल शुभकारक नहीं होता है।

अथास्य नक्षत्रविशेषेषु चारादिफलं वराहसंहितायाम्

चारोदयाः प्रशस्ताः श्रवणमघादित्यमूलहस्तेषु ।
[1]एकपदाश्विविशाखाप्राजापत्येषु च कुजस्य ॥

प्राजापत्ये श्रवणे मूले त्रिषु चोत्तरेषु शक्रे च ।
विचरन् धननिवहानामुपघातकरः क्षमातनयः ॥

श्रवण, मघा, पुनर्वसु, मूल, हस्त, पूर्वभाद्रपद, अश्विनी, विशाखा और रोहिणी नक्षत्रों में मङ्गल का चार तथा उदय अधिक प्रशस्त (उत्तम फलदायक) होता है; परन्तु रोहिणी, श्रवण, मूल, तीनों उत्तरा और ज्येष्ठा में विचरण करता हुआ मङ्गल मेघों का नाश करता है।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

ध्रुवेषु वैष्णवे मूले शाक्रे च विचरन् कुजः ।
घोरां करोत्यनावृष्टिं कृत्तिकासु मघासु च ॥

विशेषः– ध्रुवेषु उत्तरात्रयरोहिणीषु ।

---

१. एकपदादि इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा, रोहिणी), श्रवण, मूल, ज्येष्ठा, कृत्तिका और मघा नक्षत्रों में यदि मंगल विचरण करता है तो घोर अनावृष्टि (दुर्भिक्ष) होती है।

वराहसंहितायाम्

दक्षिणतो रोहिण्याश्चरन्महीजोऽर्घवृष्टिनिग्रहकृत्।
धूमायन् सशिखो वा विनिहन्यात् पारियात्रस्थान्॥

विशेषः– अर्घकृदधिकमूल्यकृदित्यर्थः।

यदि रोहिणी नक्षत्र के दक्षिण भाग से मङ्गल विचरण करे तो महँगाई और अनावृष्टि करता है। यदि धूमयुक्त या शिखायुक्त दिखाई दे तो पारियात्र पर्वत पर रहने वालों का नाश करता है।

तथा च वराहः

भित्त्वा मघां विशाखां भिन्दन् भौमः करोति दुर्भिक्षम्।
मरकं करोति घोरं यदि भित्त्वा रोहिणीं याति॥

मंगल यदि मघा नक्षत्र को भेदकर विशाखा को भेदित करे तो दुर्भिक्ष करता है। यदि रोहिणी नक्षत्र को भेदता हुआ मंगल गमन करता है तो लोगों में भयङ्कर मरक (मरकी) होता है।

वृद्धगर्गः

वक्रकाले तु सम्प्राप्ते स्थूलो भवति लोहितः।
हर्षितश्चातिरक्तश्च ज्वलिताग्निशिखोपमः॥

वक्रारम्भ में मंगल स्थूल बिम्ब वाला, प्रसन्न और प्रज्ज्वलित अग्निशिखा की तरह अत्यन्त रक्त दिखाई देता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

गतागतं यदा कुर्यान्मघामध्येन लोहितः।
तदा भवत्यनावृष्टिः पाण्ड्यो राजा विनश्यति॥

मघा नक्षत्र के मध्य में यदि मङ्गल वक्र होता है अर्थात् मघा में जाकर यदि वक्र होता है तब अनावृष्टि होती है और पाण्ड्य देश के राजा का नाश होता है।

वराहसंहितायाम्

मध्येन यदि मघानां गतागतं लोहितः करोति ततः।
पाण्ड्यो नृपो विनश्यति शस्त्रोद्योगाद्भयमनावृष्टिः॥

यदि मघा नक्षत्र में जाकर मङ्गल उसी में वक्री होता है तो पाण्ड्यदेशीय राजा का नाश करता है तथा शस्त्रभय और अनावृष्टि करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवक्षयनिमित्तम्

वक्रानुवक्रं कृत्वा च श्रवणं यावकप्रभः ।
ब्रह्मराशिं समावृत्य लोहिताङ्गो व्यवस्थितः ॥

श्रवण नक्षत्र में वक्र और अनुवक्र (स्पष्ट गति) होकर ब्रह्मराशि (अभिजित् नक्षत्र) में पहुँचकर मङ्गल स्थित हो गया ।

वृद्धगर्गः

यद्वारे कुरुते वक्रमनुवक्रं च लोहितः ।
नक्षत्रसप्तजान् देशांस्तद्वारं च निहन्ति सः ॥

नाधोभात् सप्तजान् द्रुह्यान्न चाष्टादशतोऽधिकान् ।
उदयर्क्षान्महीजस्य भवेद्वक्रं कथञ्चन ॥

मङ्गल जिस दिन में वक्री और अनुवक्री (मार्गी) होता है, उस दिन जिस नक्षत्र में मंगल स्थित रहता है, उससे सात नक्षत्र के देशों का और उस दिन (ग्रह) से सम्बन्धित देशों (वस्तुओं) का नाश करता है । जिस नक्षत्र में मङ्गल का उदय होता है, उससे सात नक्षत्र से पूर्व और अट्ठारह नक्षत्र से अधिक पर वक्री नहीं होता है ।

अथास्य पञ्चवक्त्राणि वराहसंहितायाम्

उष्णमश्रुमुखं व्यालं लोहिताननमेव च ।
निस्त्रिंशमुशलं चेति पञ्चवक्त्रकुजस्य तु ॥

उष्णमुख, अश्रुमुख, व्यालमुख, लोहितानन और निस्त्रिंशमुसल (असिमुसल)— ये पाँच मुख मङ्गल के होते हैं ।

तत्रोष्णमुखम्

तत्र गर्गः

उदयात् सप्तमे कुर्यादष्टमे नवमेऽपि वा ।
निवृत्तिं लोहिताङ्गस्तु तदुष्णं वक्त्रमुच्यते ॥

नरोऽग्निजीविनो ये च पचन्ति च दहन्ति च ।
तेषामेवोच्यते तापो जायते च धनक्षयः ॥

जिस नक्षत्र में मङ्गल का उदय हो; उससे सप्तम, अष्टम या नवम नक्षत्र में जाकर निवृत्ति (वक्री) हो तो वह मङ्गल का उष्णमुख कहलाता है । इस उष्णमुख वाले मङ्गल के उदय-काल में अग्नि से आजीविका करने वाले (सोनार, लोहार आदि), रसोइया और जो दाहकार्य करते हैं, उनको ताप (दुःख) होता है और धन का नाश होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

अथ यस्मिन् नक्षत्रे भौमोदयं प्रतिद्यते । तस्मात् सप्ताष्टनवमर्क्षेषूष्णमुखं नाम वक्त्रं करोति, येनाग्निमन्तो ब्राह्मणा अग्निजीविनश्च पीड्यन्ते ।

जिस नक्षत्र में मङ्गल उदित होता है, उससे सातवें, आठवें या नवें नक्षत्र में मंगल के वक्र होने से उष्णमुख नामक वक्त्र होता है; जिससे अग्निहोत्री ब्राह्मणों और अग्नि से आजीविका चलाने वालों को पीड़ा होती है ।

वृद्धगर्गः

कुर्यादुदयनक्षत्रात् सप्तमादष्टमादपि ।
निवृत्तिं नवमाद्वाऽपि वक्त्रमुष्णं तदुच्यते ॥

अग्निहोत्रपरा विप्राः पीड्यन्ते चाग्निजीविनः ।
प्रजासु प्रायशश्चात्र ज्वरदाहश्च जायते ॥

उदयनक्षत्र से सप्तम, अष्टम और नवम नक्षत्र में भी जाकर यदि मंगल वक्री हो तो वह 'उष्णवक्त्र' कहलाता है । इस उष्णवक्त्र मंगल के उदयकाल में अग्निहोत्रकार्य में संलग्न ब्राह्मणवर्ग एवं अग्नि से अपनी आजीविका चलाने वाले लोग पीड़ित होते है; साथ ही इस समय में प्रजाओं में प्राय: ज्वर एवं दाह का प्रकोप होता है ।

पराशरस्तु

उदयर्क्षात् सप्ताष्टनवमेषु नक्षत्रेषु निवृत्तः प्रजानां सक्षयं विशेषतः पचतां दहतां च पीडां धत्ते ।

यदि उदय नक्षत्र से आगे सप्तम, अष्टम या नवम नक्षत्र में जाकर मङ्गल निवृत्त (वक्री) होता है तो प्रजाओं का नाश, विशेषत: पाचक और दाहक को पीड़ित करता है ।

अथाश्रुमुखम्

तत्तु विष्णुधर्मोत्तरे

दशमैकादशद्वादशेऽश्रुमुखं नाम मरककारकम् ।

यदि उदय नक्षत्र से आगे दशम, एकादश या द्वादश नक्षत्र में जाकर मंगल वक्री होता है तो अश्रुमुख कहलाता है । यह मरक (मरकी) करता है ।

गर्गस्तु

दशमैकादशे चापि निवृत्ते द्वादशेऽपि वा ।
लोहिताङ्गे ग्रहे ज्ञेयं वक्त्रमश्रुमुखं च तत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्र वर्षति पर्जन्ये दूषयन् वै शुभान् रसान्।
दुष्टास्ते दूषयन्त्याशु नृणां धातूंस्तथा दृशम्॥
बहवो व्याधयो दुष्टा उत्पाद्यन्ते शरीरिणाम्।
चतुर्भिः कारणैरेतैस्ततो धातुः प्रलीयते॥

विशेषः– दूषयति वर्षति दुष्टवर्षे रसान् दूषयतीत्यर्थः।

औदयिक नक्षत्र से दशम, एकादश या द्वादशतम नक्षत्र में यदि मङ्गल वक्री होता है तो वह अश्रुमुख कहलाता है। यह वर्षा वाले मेघ को दूषित करता है अर्थात् वर्षा नहीं होती है और सुन्दर रसों में दोष उत्पन्न करता है। मनुष्यों को दुष्ट सताते हैं, धातुओं का नाश होता है, बहुत भयङ्कर व्याधियों से शरीरधारियों को पीड़ा होती है। इन चारो कारणों से धातु विनष्ट होता है।

तथा च पराशरः

दशमैकादशद्वादशेषु प्रदुष्टवर्षैर्द्रव्यरसान् दूषयन् प्रजानां धातून् प्रकोपयति व्याधीन् प्रवर्त्तयति।

दशम, एकादश या द्वादशवें नक्षत्र में (औदयिक नक्षत्र से) जाकर वक्री होने वाला मंगल दोषयुक्त वर्षा (अतिवृष्टि-अनावृष्टि) से द्रव्यों और रसों को दूषित करते हुए प्रजाओं के धातुओं का नाश करता है तथा रोगों को बढ़ाता है।

अथ व्यालमुखं विष्णुधर्मोत्तरे

त्रयोदशचतुर्दशयोर्व्यालाख्यं व्यालवृद्धिकरम्।

औदयिक नक्षत्र से त्रयोदश या चतुर्दश नक्षत्र में जाकर यदि मंगल वक्री होता है तो वह व्यालमुख नामक वक्त्र कहलाता है, यह सर्पवृद्धि करता है।

पराशरस्तु

त्रयोदशचतुर्दशयोः शस्यव्यालदंष्ट्रिप्राबल्यं हिरण्यसञ्चयम्।

तेरहवें या चौदहवें नक्षत्र में वक्र होने से धान्य, सर्प, दंष्ट्रि (सूकर, कुत्ता, व्याघ्र आदि) का आधिक्य होता है तथा सुवर्ण का सञ्चय होता है अर्थात् सुभिक्ष होने से लोग सुवर्ण खरीदते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

त्रयोदशगतः कुर्याच्चतुर्दशगतोऽपि वा।
निवृत्तिमुदयाद्भौमो वक्त्रं व्यालं तदुच्यते॥
भवेत्तत्र मृगव्यालदंष्ट्रिभ्यः सर्वतो भयम्।
औदकानि च सत्त्वानि शस्यमुत्तमतां व्रजेत्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

औदयिक नक्षत्र से आँगे १३वें या १४वें नक्षत्र में जाकर मंगल वक्री होता है तो वह व्यालमुख कहलाता है। इस समय में मृग, सर्प, दंष्ट्रि (सूकर, कुत्ता आदि) से चारो ओर भय होता है तथा जल-जन्तु और धान्य की वृद्धि होती है।

गर्गस्तु

त्रयोदशे वा नक्षत्रे यदि चापि चतुर्दशे।
निवृत्तिं कुरुते भौमस्तद्वक्त्रं व्यालमुच्यते॥
भवन्ति प्रचुरा व्यालास्तस्मिन् सर्पा ह्यशेषतः।
नृपाणां च भयं विन्द्याच्छस्यसम्पत्तिमादिशेत्॥

यदि औदयिक नक्षत्र से १३वें या १४वें नक्षत्र में मंगल वक्री होता है तो वह व्यालमुख वक्त्र कहलाता है। इस समय में सभी प्रकार के सर्पों की वृद्धि होती है और राजाओं का भय होता है तथा सस्य-सम्पत्ति अर्थात् सुभिक्ष होता है।

विशेष– वराहमिहिर ने औदयिक नक्षत्र की जगह अस्तंगत नक्षत्र से भी व्यालमुख की गणना की है; जैसे बृहत्संहिता में—

व्यालं त्रयोदशर्क्षाच्चतुर्दशाद्वा विपच्यतेऽस्तमये।
दंष्ट्रिव्यालमृगेभ्यः करोति पीडां सुभिक्षं च॥

अर्थात् जिस नक्षत्र में मङ्गल अस्त हो, उससे तेरहवें वा चौदहवें नक्षत्र में जाकर वक्री हो तो वह व्यालमुख कहलाता है। इससे दंष्ट्री (सूकर, कुत्ता आदि), सर्प और मृग से पीड़ा होती है तथा संसार में सुभिक्ष होता है। परन्तु वराहमिहिर के श्लोक का उपयुक्त अभिप्राय यह बैठता है कि उदयनक्षत्र से व्यालमुख होता है तथा उसका फल मंगल के अस्त होने के समय में घटित होता है।

अथ लोहितमुखम्

तत्तु विष्णुधर्मोत्तरे

पञ्चदशषोडशयो रुधिरमुखं संग्रामकारकम्।

औदयिक नक्षत्र से पन्द्रहवें तथा सोलहवें नक्षत्र में यदि मंगल वक्री होता है तो वह लोहितमुख (रुधिरानन) कहलाता है। यह संग्रामकारक होता है।

गर्गः

यदि पञ्चदशे भेऽथ भूसुतः षोडशेऽपि वा।
निवृत्तिं कुरुते भौमस्तद्वक्त्रं लोहिताभिधम्॥
दीप्तिमन्तः पार्थिवाश्च भवन्ति प्रस्थिता भुवि।
क्षुद्ररोगश्च सुमहान् मुखरोगा भवन्ति च॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि पञ्चदश या षोडश नक्षत्र में जाकर मंगल वक्री होता है तो वह वक्त्र-रुधिरानन कहलाता है। इससे राजा दीप्तिमान होते हैं और पृथ्वी सुभिक्षयुक्त होती है तथा क्षुद्र (छोटे-छोटे) अनेक रोग और मुखरोग होते हैं।

पराशरस्तु

पञ्चदशषोडशयोर्मुखरोगनृपक्षोभशस्त्रकोपाश्च।

पन्द्रहवें तथा सोलहवें नक्षत्र में मंगल के वक्री होने से मुखरोग, राजाओं में क्षोभ (कोप) और शस्त्र का प्रकोप (भय) होता है।

वृद्धगर्गस्तु

यदि स्यात् पञ्चदशभात्तथा षोडशभादपि।
निवृत्तिं लोहिताङ्गस्य तद्वक्त्रं लोहिताननम्॥

उद्योगं यान्ति राजानः शस्त्रमूर्च्छा प्रवर्त्तते।
वैराणि चात्र वर्धन्ते मुखरोगा भवन्ति च॥

यदि पन्द्रहवें वा सोहलवें नक्षत्र में (उदयनक्षत्र के बाद) जाकर मंगल का वक्रत्व हो तो वह लोहितानन कहलाता है। इसमें राजा लोग युद्ध के लिए उद्यमी होते हैं, शस्त्राघात से मूर्च्छा (शस्त्रभय) होती है, परस्पर वैरभाव की वृद्धि होती है और मुखरोग होते हैं।

अथासिमुशलम्

तत्तु विष्णुधर्मोत्तरे

सप्तदशाष्टादशयोरसिमुशलं चौरप्राबल्यकरम्।

यदि औदयिक नक्षत्र से आगे सत्रहवें या अठारहवें नक्षत्र में जाकर मङ्गल वक्री हो तो वह असिमुशल नामक वक्त्र कहलाता है। यह वक्त्र चोरों को बढ़ाता है।

पराशरस्तु

सप्तदशेऽष्टादशे वा दस्युगणैः प्रजानामुपद्रवमवृष्टिं शस्त्रभयञ्च।

(औदयिक नक्षत्र से) सत्रहवें या अट्ठारहवें नक्षत्र में वक्री मंगल प्रजा में दस्युसमूहों का उपद्रव, अवृष्टि एवं शस्त्रभय उत्पन्न करता है।

गर्गस्तु

सप्तदशेऽष्टादशे वा लोहितो विनिवर्त्तते।
निस्त्रिंशमुशलं नाम तद्वक्त्रं भूमिजस्य तु॥

पशून् पुत्रधनं धान्यं व्याहरन्तेऽत्र दस्यवः।
प्राणिनां जीवितं नास्ति जायते शस्त्रसम्भ्रमः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

औदयिक नक्षत्र से आगे जाकर सत्रहवें या अठारहवें नक्षत्र में यदि मंगल वक्री होता है तो वह असिमुशल वक्त्र कहलाता है। इसमें लोगों के पशु, पुत्र, धन और धान्यों को डकैत-चोर हरते हैं। प्राणी जीवित नहीं रहते हैं अर्थात् प्राणियों का संहार होता है और शस्त्र का भयङ्कर भय होता है।

वृद्धगर्गस्तु

अष्टादशात् सप्तदशान्निवृत्तिं कुरुते यदा।
निस्त्रिंशमुशलं नाम तद्वक्त्रं पञ्चमं स्मृतम्॥
योद्धा युद्धेषु वर्त्तन्ते भिद्यन्ते सौहृदानि च।
दस्युभिर्वध्यमानाश्च वर्णा गच्छन्ति संक्षयम्॥

यदि अठारहवें या सत्रहवें नक्षत्र में (औदयिक नक्षत्र से) मंगल वक्री होता है तो वह असिमुशल नामक पञ्चम वक्त्र कहलाता है। इस वक्त्र के होने से योद्धा युद्ध में संलग्न होते हैं, मित्रों में भेद होता है और चोर-डकैतों के द्वारा मारे जाने से सभी वर्णों का नाश होता है।

अथ वक्त्राणां फलपाकसमयः

तत्र वृद्धगर्गः

आदावेव फलं विन्द्याद्दुष्टस्याश्रुमुखस्य च।
व्यालस्य निधने वक्रेऽनुवक्रे शेषयोः फलम्॥

विशेषः– आदौ उदयाद्वक्रारम्भपर्यन्तम्। निधने भविष्यदस्तमये। वक्रे यावद्वक्रमनुवक्रवक्रनिवृत्तितोऽस्तारम्भपर्यन्तम्।

उष्णमुख और अश्रुमुख मङ्गल का फल उदयकाल से लेकर वक्रारम्भपर्यन्त होता है। व्यालमुख का फल मङ्गल के अस्त के समय में, शेष दोनों रुधिरानन और असिमुशल का पाककाल क्रमशः वक्रारम्भ से वक्रान्त काल तथा वक्रनिवृत्ति से अस्तारम्भ काल तक होता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

यद्युदयर्क्षाद्वक्रं करोति नवमाष्टसप्तमर्क्षेषु।
तद्वक्त्रमुष्णमुदये पीडाकरमग्निवार्त्तानाम्॥
द्वादशदशमैकादशनक्षत्राद्वक्रिते कुजेऽश्रुमुखम्।
दूषयति रसानुदये करोति रोगानवृष्टिं च॥
व्यालं त्रयोदशर्क्षाच्चतुर्दशाद्वा विपच्यतेऽस्तमये।
दंष्ट्रिव्यालमृगेभ्यः करोति पीडां सुभिक्षं च॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुधिराननमिति वक्त्रं पञ्चदशात् षोडशाच्च विनिवृत्तेः ।
तत्कालं मुखरोगं समयं च सुभिक्षमावहति ।।

असिमुशलं सप्तदशाष्टादशतोऽपि वा तदनुवक्रे ।
दस्युगणेभ्यः पीडां करोत्यवृष्टिं सशस्त्रभयाम् ।।

यदि औदयिक नक्षत्र से सातवें, आठवें या नवें नक्षत्र में जाकर मंगल वक्री हो तो वह उष्णमुख कहलाता है । इसमें अग्नि से आजीविका वाले को पीड़ा होती है ।

यदि दशम, एकादश या द्वादशवें नक्षत्र में जाकर वक्री हो तो वह अश्रुमुख कहलाता है । इसमें रसों में दोष उत्पन्न होता है तथा रोगों की वृद्धि और अनावृष्टि होती है ।

यदि तेरहवें या चौदहवें नक्षत्र में मंगल वक्री होता है तो वह व्यालमुख कहलाता है । इस वक्त्र वाले मंगल के अस्त होने के समय में दंष्ट्री, सर्प और मृगों से लोगों को पीड़ा होती है तथा संसार में सुभिक्ष होता है ।

यदि पन्द्रहवें या सोलहवें नक्षत्र में जाकर मङ्गल वक्री हो तो वह रुधिरानन कहलाता है । इसके समय में मुख का रोग, भय और सुभिक्ष होते हैं ।

यदि औदयिक नक्षत्र से सत्रहवें या अठारहवें नक्षत्र में जाकर मंगल वक्री हो तो वह असिमुशल वक्त्र कहलाता है । वह वक्त्र वक्रान्त काल से अस्तारम्भ काल तक चोरों से पीड़ा, अनावृष्टि और शस्त्रभय करता है ।

ज्यौतिषपराशरविष्णुधर्मोत्तरयोः

फल्गुन्योरुदयं कृत्वा वक्रं स्याद्वैश्वदैवते ।
प्राजापत्ये प्रवासः स्यात्त्रैलोक्यं तत्र पीड्यते ।।

यदि मङ्गल पूर्वफाल्गुनी या उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र में उदित होकर उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जाकर वक्री हो और उसके बाद रोहिणी में सूर्य के सान्निध्य से अस्तङ्गत हो तो तीनों लोकों (स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और पाताललोक) को पीड़ित करता है ।

तथा च वराहसंहितायाम्

भाग्यार्यमोदितो यदि निवर्त्तते वैश्वदैवते भौमः ।
प्राजापत्येऽस्तमितस्त्रीनपि लोकान् निपीडयति ।।

पूर्वफाल्गुनी अथवा उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र में यदि मङ्गल उदित होकर उत्तराषाढ़ नक्षत्र में जाकर वक्री हो और उसके बाद में रोहिणी में जाकर अस्तङ्गत हो तो तीनों लोकों को पीड़ित करता है ।

पराशरस्तु

उदितः श्रवणे भौमः पुष्ये वक्रमियाद्यदि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राजापत्योदितश्चैव नाशाय स्यान्महीक्षिताम् ॥

यदि श्रवण नक्षत्र में उदित होकर मंगल पुष्य में जाकर वक्री हो और बाद में रोहिणी में जाकर (अस्त होकर) उदित हो तो राजाओं का नाश करता है।

हरिवंशे कंसवधनिमित्तम्

एवं घोरो ग्रहः स्वातीमुल्लिखन् खे गभस्तिभिः ।
वक्रमङ्गारकश्चक्रे चित्रायां घोरदर्शनः ॥

इस तरह भयानक ग्रह मङ्गल आकाश में अपनी रश्मियों से स्वाती नक्षत्र को उल्लिखित करते हुए (उदित होकर) चित्रा में जाकर वक्री हुआ, जो अत्यन्त भयानक दृष्टिगोचर हुआ।

बाणयुद्धे च

वक्रमङ्गारकश्चक्रे कृत्तिकासु भयङ्करः ।
गणस्य जन्मनक्षत्रं भर्त्सयन्निव सर्वशः ॥

उक्त समय में मंगल कृत्तिका नक्षत्र में वक्री हुआ, जो भयङ्कर था। कृत्तिका जन्मनक्षत्र वाले सभी गणों को भयभीत कर रहा था।

वृद्धगर्गः

त्रैमासिकः क्षुद्भयाय भयकृत् पाञ्चमासिकः ।
प्रवासो लोहताङ्गस्य चतुर्मासस्तु पूजितः ॥

यदि तीन मास तक मंगल अस्त रहता है तो क्षुधाभय (दुर्भिक्ष) होता है और पाँच महीनों तक अस्त रहता है तो भयकारक होता है; परन्तु चार महीनों का प्रवास (अस्त) शुभकारक होता है।

वराहसंहितायाम्

यस्मिन्नृक्षेऽभ्युदितस्तद्दिग्व्यूहान् जनान् हन्ति ।

मङ्गल जिस नक्षत्र में उदित हो, उस नक्षत्र की दिशा (नक्षत्रकूर्मोक्त दिशा) और व्यूह (नक्षत्रव्यूह) जहाँ हो, वहाँ के निवासी लोगों का नाश करता है।

पराशरः

यथा जनपदव्यूहे दिग्विभागः प्रकल्पितः ।
नक्षत्रे मोहितं कुर्याल्लोहिताङ्गस्तथाऽऽमयम् ॥

जिस नक्षत्र में मङ्गल उदित हो, उस नक्षत्र का दिग्विभाग और जनपद-व्यूह जहाँ होता है, वहाँ के निवासी लोगों को मोहित (दु:खी) और रोगी बनाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु मङ्गलोत्पातेषु मङ्गलपूजापूर्विका-प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिकसामान्यशान्तिरौत्पातिकफलगुरु-लाघपमवगम्य कर्त्तव्या ।

इस मङ्गलाद्भुतावर्त्त में मङ्गलोत्पात की शान्ति जहाँ नहीं बतलायी गयी है, वहाँ उत्पात की गुरुता एवं लाघवता को जानकर तदनुसार मङ्गल की पूजा के साथ-साथ प्रचुर सुवर्ण-अन्न-गाय-पृथ्वी आदि ब्राह्मणों को दान कर सामान्य शान्ति करनी चाहिये ।

फलपाफसमयो गार्गीये

त्रिभिर्मासैस्तु भौमस्य ।

मङ्गलोत्पात का फल तीन महीनों के भीतर घटित होता है ।

वराहसंहितायां तु

अङ्गारकस्य च वक्रोक्तः – इति ।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे मङ्गलाद्भुतावर्त्तः

मङ्गलोत्पात का फल उसके वक्र के समय में कहा गया है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ बुधाद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकबुधलक्षणमाह पराशरः

विमलजलरजतस्फटिकाभः प्रशस्यते ।

निर्मल जल, चाँदी और स्फटिक के समान कान्ति वाला बुध शुभदायक होता है।

वराहसंहितायाम्

हेमकान्तिरथ वा शुकवर्णः शस्यकेन मणिना सदृशो वा ।
स्निग्धमूर्तिरलघुश्च हिताय व्यत्ययेन शुभकृच्छशिपुत्रः ॥

सुवर्ण के सदृश कान्ति वाला, तोता के समान वर्ण वाला, शस्यक मणि के समान नील वर्ण अथवा धान्य या नीलमणि के सदृश वर्ण वाला, निर्मल तथा विस्तीर्ण बिम्ब वाला बुध दिखाई दे तो संसार के लिए हितकारक होता है; लेकिन यदि इसके विपरीत वर्ण का दिखाई दे तो अशुभ करने वाला होता है।

विशेषः– 'शस्यको मणिर्नीलवर्णः शस्याख्यो मणिः । येषामयं स्वामी तेषामेवंविधो विशेषेण हिताय विपरीतो विशेषेण विपरीताय ।' अर्थात् शुभकारक बुध जिनके स्वामी होते हैं, उनके लिए शुभ फल और अशुभकारक होने पर अशुभ फल देते हैं।

बुधस्वामिकान्याह यवनेश्वरः

नानागुणद्रव्यविकल्पयुक्तिनैपुण्यशिल्पश्रुतिवेसराणाम् ।
माहात्म्यमन्त्रार्थविदाब्दिकानां प्रभुर्बुधश्चैत्यवनस्पतीनाम् ॥

अनेक गुण वाले द्रव्य, उपाय, युक्ति, निपुणता, वेद, वेसर (अश्वविशेष), माहात्म्य-मन्त्रार्थवेत्ता, आब्दिक (वर्षफल जानने वाले), चैत्य (वाटिका, यज्ञस्थानविशेष) आदि का स्वामी बुध होता है।

वटकणिकायां तु

बुधस्य सौराष्ट्रकभोजबङ्गा गङ्गाश्रिताश्चोत्तरकूलनद्यः ।
सिन्धोश्च मध्या मथुरापुरस्ताद्गोमन्तसिन्ध्वद्रिगुहाश्रिताश्च ॥

सौराष्ट्र, भोज, वङ्गदेश, गंगा नदी की उत्तर तटवर्त्ती नदी, सिन्धु नद का मध्य भाग, मथुरा का पूर्वार्ध भाग, गोमन्त पर्वत और सिन्धु पर्वत की गुफा में रहने वालों का स्वामी बुध होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपस्तु

चित्रकूटगिरी रम्यो हिमवान् कौशिकी तथा।
मथुरायाश्च पूर्वार्धे लोहित्यः सिन्धुरेव च॥
गाम्भीरिका च सरयू रथाख्या गण्डकी नदी।
गान्धर्वा लेख्यहाराश्च दर्दुराश्चोपकृत्रिमाः॥
विदेहाः सर्वजलजाः काम्बोजाश्च सुराष्ट्रिकाः।
गन्धयुक्तिविदो ये च सौगन्धिकप्रलेपकाः॥
सुवर्णरजतं रत्नमातङ्गतुरगादि यत्।
पौरा जनपदाः सौम्याः सोमपुत्रोऽधिपः स्मृतः॥

चित्रकूट पर्वत, रम्य पर्वत, हिमालय, कौशिकी नदी, मथुरा के पूर्वार्ध, लोहित्य और सिन्धु नद, गाम्भीरिका, सरयू, रथाख्या, गण्डकी नदी, गन्धर्वा, लेख्यहारा, कृत्रिम दर्दुर (मेढक), विदेहनगर, सभी जलोत्पन्न वस्तु, कम्बोज और सौराष्ट्रवासी, सुगन्ध की युक्ति को जानने वाले, सुगन्ध बनाने वाले, चित्रकार, सुवर्ण, चाँदी-रत्न, हाथी, घोड़े, पुरवासी, जनपद, सौम्य (सज्जन)— इन सबों का स्वामी बुध होता है।

वराहसंहितायाम्

लोहित्यः सिन्धुनदः सरयूर्गाम्भीरिका रथाख्या च।
गङ्गाकौशिक्याद्याः सरितो वैदेहकाम्बोजाः॥
मथुरायाः पूर्वार्धं हिमवद्गोमन्तचित्रकूटस्थाः।
सौराष्ट्रसेतुजलमार्गपण्यविलपर्वताश्रयिणः॥
उदपानयन्त्रगान्धर्वलेख्यमणिरागगन्धयुक्तिविदः।
आलेख्यशब्दगणितप्रसाधकायुष्यशिल्पज्ञाः॥
चरपुरुषकुहकजीवकशिशुकविशठसूचकाभिचाररताः।
दूतनपुंसकहास्यज्ञभूततन्त्रेन्द्रजालज्ञाः॥
आरक्षकनटनर्त्तकघृततैलस्नेहबीजतिक्तानि।
व्रतचारिरसायनकुशलवेसराश्चन्द्रपुत्रस्य॥

लोहित्य और सिन्धु नद, सरयू, गाम्भीरिका, रथाख्या, गङ्गा, कौशिकी, विपाशा, सरस्वती और चन्द्रभागा नदी, मथुरा के पूर्वार्ध भाग, हिमालय पर्वत, गोमन्त पर्वत और चित्रकूट पर्वत के प्रान्त में स्थित मनुष्य, सौराष्ट्र देश-स्थित मनुष्य, सेतु के आश्रय में रहने वाले, जलमार्ग के आश्रय में रहने वाले, पण्यवृत्ती, विल में निवास करने वाले, पर्वत पर रहने वाले, वापी, कूप, तड़ाग आदि यन्त्र को जानने वाले,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गानविद्या जानने वाले, लेखक, मणि के लक्षण को जानने वाले, रंगरेज, सुगन्धित द्रव्य की युक्ति को जानने वाले, चित्रकार, वैयाकरण, गणितज्ञ, आयुष्य (रसायन वाजीकरण आदि) को जानने वाले, शिल्पकार, गुप्तचर, कुहक (अद्भुत प्रसेन आदि के दिखाने से जीवन-यापन करने वाले), बालक, कवि, शठ (परोपकार से विमुख), चुगलखोर, अभिचार (वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, मारण आदि को जानने वाले), दूत, नपुंसक, हँसी उड़ाने वाले, भूत-प्रेत के तन्त्र को जानने वाले, इन्द्रजाल के ज्ञाता, रक्षक, नाचने वाले, घृत, तेल, स्नेह (तिल, अक्षोट आदि), बीज, तिक्त (निम्बादि), व्रती (ब्रह्मचारी-प्रभृति), रसायन को जानने वाले, वेसर (अश्व-विशेष)— इन सबों का स्वामी बुध होता है।

अथास्य नक्षत्रविशेषचारफलं वराहसंहितायाम्

विचरन् श्रवणधनिष्ठाप्राजापत्येन्द्रवैश्वदेवानि।
मृद्नन् हिमकरतनयः करोत्यवृष्टिं सरोगभयाम्॥

यदि श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा या उत्तराषाढ़ नक्षत्र को भेदित करते हुए बुध विचरण करे तो अवृष्टि और रोग का भय करता है।

तथा च काश्यपः

सौम्यं विष्णुं धनिष्ठां च रोहिणीं विष्णुमेव च।
शशिजश्च यदा हन्ति प्रजा रोगैश्च पीड्यते॥

श्रवण, मृगशीर्ष, धनिष्ठा, रोहिणी एवं उत्तराषाढ़ नक्षत्र को विदारित करता हुआ बुध यदि विचरण करे तो प्रजा विभिन्न रोगों से पीड़ित होती है।

विशेष– इस श्लोक में 'विष्णुं' और 'विष्णुमेव' दो बार एक ही शब्द, जो श्रवण नक्षत्र का स्वामी है, आया है तथा उत्तराषाढ़ का नाम नहीं है।

अत: 'विष्णुं' की जगह 'वैश्वं' ही शुद्ध पाठ होगा। भट्टोत्पल टीकायुक्त वृहत्संहिता में काश्यप का वचन निम्न है—

रोहिणीं वैश्वदेवं च सौम्यवैष्णववासवार।
शशिजश्च यदा हन्ति प्रजा रोगैश्च पीड्यते॥

मृगशिरा, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा, रोहिणी और श्रवण को बुध जब भेदित करता है तब प्रजा रोगों से पीड़ित होती है।

वराहसंहितायाम्

रौद्रादीनि मघान्तान्युपाश्रिते चन्द्रजे प्रजापीड़ा।
शस्त्रनिपातक्षुद्भयरोगानावृष्टिसन्तापैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आर्द्रा से मघा तक ५ नक्षत्रों में से किसी में भी बुध सञ्चार करता है तो शस्त्रनिपात (युद्ध), क्षुधा, रोग, अनावृष्टि और अनेक दुःखों से प्रजा को पीड़ित करता है।

काश्यपस्तुः

रौद्रादीनि यदा पञ्च भेदितानि समन्ततः।
चन्द्रजेन तदा पीडा शश्वत् क्षुद्भयव्याधिभिः॥

हस्तादिषु यदा षट्सु नक्षत्रेष्विन्दुजः स्थितः।
गवामशोभनः प्रोक्तः सुभिक्षं शस्यसम्पदः॥

आर्द्रा से मघा तक के पाँच नक्षत्र यदि बुध के द्वारा भेदित हों तो हमेशा क्षुधा, भय और व्याधि से पीड़ा होती है।

हस्त नक्षत्र से ज्येष्ठा नक्षत्र तक के छः नक्षत्रों में से किसी में भी बुध स्थित हो अर्थात् योगतारा का भेद करता हो तो गाय के लिए अशुभकारक तथा सस्य-सम्पत्तिकारक होता है।

वराहसंहितायां तु

हस्तादीनि चरन् षड्क्षाण्युपपीडयन् गवामशुभः।
स्नेहरसार्घविवृद्धिं करोति चोर्वीं प्रभूतान्नाम्॥

आर्यम्णं हौतभुजं भाद्रपदामुत्तरां यमेशं च।
चन्द्रस्य सुतो निघ्नन् प्राणभृतां धातुसङ्क्षयकृत्॥

हस्त से छः (हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा) नक्षत्रों के योगताराओं का भेद करते हुए बुध विचरण करे तो गौओं को अशुभ करता है। स्नेह (तेल, घृत आदि) तथा रस (मधुर आदि) के मूल्य में वृद्धि और पृथिवी को अनेक प्रकार के अन्नों से परिपूर्ण करता है।

उत्तरफाल्गुनी, कृत्तिका, उत्तरभाद्रपद या भरणी को बुध भेदित करे तो प्राणियों के धातु (वसा, रक्त, मांस, मेद, मज्जा और शुक्र) का नाश करता है।

काश्यपस्तु

भरणीकृत्तिकार्यम्णमाहिर्बुध्नं च चन्द्रजः।
धातुद्रव्यविनाशाय धनवार्त्तांश्च पीडयेत्॥

भरणी, कृत्तिका, उत्तरफाल्गुनी या उत्तरभाद्रपद को बुध भेदित करे तो धातु, द्रव्य और धन का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च

रेवतीं वारुणं मूलमश्विनीं चैव सोमजः ।
वणिजां जलजानाञ्च तुरङ्गानाञ्च पीडनम् ॥
निघ्नन् करोतीति सम्बन्धः ।

बुध यदि रेवती, शतभिषा, मूल या अश्विनी को भी भेदे तो व्यापारी, जल से उत्पन्न होने वाले द्रव्य और घोड़े का नाश करता है।

वराहसंहितायां तु

आश्विनवारुणमूलान्युपमृद्नन् रेवतीं च चन्द्रसुतः ।
पण्यभिषग्गोजाविकसलिलजतुरगोपघातकरः ॥

पूर्वाद्यृक्षत्रितयादेकमपीन्दोः सुतोऽभिमृद्नीयात् ।
क्षुच्छस्त्रतस्करामयभयप्रदायी चरन् जगतः ॥

यदि बुध अश्विनी, शतभिषा, मूल या रेवती को भेदे तो व्यापारी, वैद्य, गाय और बकरे से जीविका चलाने वाले, जल से उत्पन्न द्रव्य और घोड़ों का नाश करता है। यहाँ बृहत्संहिता में 'पण्यभिषग्नौजीविक' यह पाठ है, जिसका अर्थ व्यापारी, वैद्य, नौका से जीविका चलाने वाला होता है।

यदि बुध पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ या पूर्वभाद्र को भेद कर विचरण करे तो क्षुधा, शस्त्र, चोर और रोगों का भय देने वाला होता है।

काश्यपस्तु

पूर्वाद्यृक्षत्रये सौम्यो भेदं कृत्वा यदि व्रजेत् ।
क्षुच्छस्त्रतस्करभयं करोति प्राणिनां वधम् ॥

तीनों पूर्वा में से किसी भी नक्षत्र को भेद करके यदि बुध विचरण करे तो क्षुधा, शस्त्र और चोर का भय तथा प्राणियों का वध करता है।

पराशरस्तु

विशेषस्तु सौम्यादिषड्नक्षत्रचारी सुवृष्टये ।
श्रविष्ठावारुणयोश्च । दक्षिणतो नैर्ऋतेन्द्रपूर्वासु
भयकृत् । अश्विन्यां वणिग्विनाशाय । त्वाष्ट्रे
शरच्छस्यानाम् । रोहिणीश्रवणाग्नेयब्रह्म-
राशिष्वम्भोदविनाशाय ।

पराशर के मतानुसार मृगशिरा से छः नक्षत्रों (मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा और मघा) तथा धनिष्ठा और शतभिषा में विचरण करने वाला बुध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुवृष्टिकारक होता है। मूल, ज्येष्ठा और तीनों पूर्वा में यदि दक्षिण भाग से विचरण करे तो भय देने वाला होता है। अश्विनी में यदि विचरण करे तो व्यापारी का विनाश करता है, चित्रा में विचरण करने पर शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश करता है। रोहिणी, श्रवण, कृत्तिका और अभिजित् नक्षत्र में विचरण करे तो मेघ का विनाश करता है।

अथास्य देवलमतेनोदयदिनैर्गतिचतुष्टयं वराहसंहितायाम्

ऋज्वतिवक्रा वक्रा विकला च मतेन देवलस्यैताः।
पञ्चचतुर्द्व्येकाहा ऋज्व्यादीनां षडभ्यस्ताः॥

देवता के मतानुसार बुध की ऋज्वी, अतिवक्रा, वक्रा और विकला— ये चार प्रकार की गतियाँ होती हैं। इन गतियों का प्रमाण इस प्रकार है—

उदय या अस्त दिन से ऋज्वी गति ५ x ६=३० दिन, अतिवक्रा गति ४ x ६=२४ दिन, वक्रा गति २ x ६=१२ दिन और विकला गति १ x ६=६ दिन तक रहती है।

तथा च देवलः

दिनानि त्रिंशदुदितस्तिष्ठेद्यदि च सोमजः।
ऋज्वी गतिः सा विज्ञेया प्रजानां हितकारिणी॥

चतुर्विंशद्दिनान्येवं यदि तिष्ठेच्च सोमजः।
अतिवक्रा गतिर्ज्ञेया दुर्भिक्षभयलक्षणा॥

अहानि द्वादश यदा बुधस्तिष्ठेत्तथोद्गतः।
वक्रा गतिस्तु विज्ञेया शस्त्रसम्भ्रमकारिणी॥

षड्दिनानि यदि तिष्ठेदुद्गतः सोमनन्दनः।
विकला सा गतिर्ज्ञेया भयरोगविवर्धिनी॥

यदि बुध ३० दिनों तक उदित दिखाई दे तो वह बुध की ऋज्वी गति कहलाती है। यह प्रजाओं का शुभ करती है। यदि २४ दिनों तक उदित रहे तो अतिवक्रा गति होती है। यह दुर्भिक्ष और भय देने वाली है। यदि उदित होकर १२ दिनों तक रहे तो वक्रा गति होती है। यह शस्त्रसम्भ्रम (युद्ध) कराती है और यदि छः दिनों तक उदित रहे तो वह विकला गति कहलाती है। यह भय और रोग को बढ़ाने वाली होती है।

अथास्योदयदिनैर्गतिसप्तकमाह वृद्धगर्गः

प्रकृता च विमिश्रा च संक्षिप्ता तीक्ष्णसंज्ञिता।
बुधस्य घोरा पापा च गतिर्योगान्तिकी तथा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राकृतीं गतिमास्थाय त्रिपक्षं दृश्यते ग्रहः ।
मासं मासं च पादोनं मिश्रासंक्षिप्तयोर्भवेत् ॥

अष्टादशाहं तीक्ष्णायां पक्षं योगान्तिकी गतिः ।
एकादशाहं पापायां दर्शयित्वाऽस्तमृच्छति ॥

अह्नां द्वाविंशतिं सार्धां संक्षिप्तामेत्य लक्ष्यते ।
अष्टादशाहं तीक्ष्णायां घोरायां दशपञ्च च ॥

पापायां पादहीनानि तथैकादश तिष्ठति ।
योगान्तिक्यामिन्दुसूनुर्नवाहं लक्ष्यते तथा ॥

चारकाले य एवोक्ताः सोमपुत्रस्य भागशः ।
अस्तकाले त एव स्युः सूर्यमण्डलचारिणः ॥

विशेषः– चारकाले उदयकाले इति ।

वृद्धगर्ग के मतानुसार बुध की प्रकृता, विमिश्रा, संक्षिप्ता, तीक्ष्णा, घोरा, पापा और योगान्तिकी— ये सात प्रकार की गतियाँ होती हैं ।

बुध उदित होकर तीन पक्षों (४५ दिनों) तक प्रकृता गति में दिखाई देता है । १ मास (३० दिन) तक विमिश्रा गति और पादोनमास (२२$\frac{१}{२}$ दिन) तक संक्षिप्ता गति वाला होता है । तीक्ष्णा गति वाला बुध १८ दिनों तक, १५ दिनों तक योगान्तिकी गति में एवं पापा गति में ११ दिनों तक दर्शन देकर बुध अस्त हो जाता है ।

साढ़े बाईस दिनों तक संक्षिप्ता गति में बुध दिखाई देता है । तीक्ष्णा गति में १८ दिनों तक, घोरा गति में १५ दिनों तक तथा पापा गति में पौने ग्यारह दिनों (१०$\frac{३}{४}$ दिन) और योगान्तिकी गति में नौ दिनों तक भी बुध दिखाई देता है । उपर्युक्त बुध की गति के दिनप्रमाण जो उदयकाल से कहे गये हैं, वही दिनप्रमाण सूर्यमण्डलगत (अस्त) बुध के भी होते हैं अर्थात् अस्त होने के बाद भी यदि उक्त दिनप्रमाण तक बुध अस्तङ्गत हो तो उसकी प्रकृता आदि गति होती है ।

पराशरश्च

अथ चत्वारिंशत्त्रिंशद्द्वाविंशत्यष्टादशपञ्चदशैकादशनवरात्राणि गतिक्रमादुदितोऽभिदृश्यते तान्येवास्तमिते भवन्तीति ।

विशेषः– उदयदिनान्नवदिनपर्यन्तं योगान्तिकी । तदुपरि एकादशाहपर्यन्तं पापा । तदुपरि पञ्चदशपर्यन्तं घोरा । एवमन्या अपि । अत्र यान्युदयास्तदिनानि गणिते न सम्भवन्ति तान्युत्पातवशाद्भवन्ति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि बुध उदित होकर ४० दिनों तक, ३० दिनों तक, २२ दिनों तक, १८ दिनों तक, १५ दिनों तक, ११ दिनों तक और ९ दिनों तक दिखाई दे तो गतिक्रम से (क्रमशः) प्रकृता, विमिश्रा, संक्षिप्ता, तीक्ष्णा, घोरा, पापा और योगान्तिकी गति होती है। उक्त दिनप्रमाण अस्तङ्गत बुध के भी होते हैं।

उदयश्चास्य सोत्पात एव, तथा च वराहसंहितायाम्

नोत्पातपरित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।
जलदहनपवनभयकृद्धान्यार्घक्षयविवृद्ध्यै च॥

उत्पातरहित होकर किसी समय में भी बुध का उदय नहीं होता है अर्थात् जब बुध का उदय होता है तब किसी न किसी प्रकार का उत्पात अवश्य होता है। बुध के उदित होने से जल, अग्नि, वायु का भयरूप उत्पात तथा अनाज की महँगी या सस्ती होती है।

वृद्धगर्गस्तु

स्नेहशस्यरसादीनां तथाऽर्घक्षयवृद्धयोः।
ग्रहाणामुदयार्थं वा दृश्यते ह्युदितो बुधः॥

अत्युष्णमतिशीतं च वर्षं वायुरथोभयम्।
फलं बुधोदयस्यैतद्रसधान्यविनाशकम्॥

स्नेह (तेल, घृत आदि), अनाज और रस आदि की महँगी या सस्ती के लिए अथवा सूर्य और चन्द्र के ग्रहण के लिए या अन्य ग्रहों के उदय के निमित्त ही बुध का उदय होता है। अत्यधिक गर्मी और अत्यधिक ठण्ढ़ी एवं वर्षा और वायु (आँधी) के लिए बुध का उदय होता है और रस तथा अनाज का बुधोदय से विनाश होता है।

पराशरस्तु

उष्णाशीतवाय्वभ्रसूर्येन्दुग्रहणायोदयते शस्यविघाताय च।

उष्णता (गर्मी), शीत, वायु, मेघ, सूर्य-चन्द्रग्रहण और धान्यनाश के लिए बुध का उदय होता है।

अथैतासां फलमाह गर्गः

क्षेमारोग्यसुभिक्षेषु लक्षणा प्रकृता गतिः।
संक्षिप्ता च विमिश्रा च शुभाऽशुभफलोदये॥

विशेषः– शुभमशुभं च मिलितमेतयोः फलम्।

प्रकृता गति वाला बुधोदय कल्याण, आरोग्य और सुभिक्ष करने वाला होता है। संक्षिप्ता और विमिश्रा गति वाले उदय में शुभाशुभ फल (मिश्र) होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च नक्षत्रदिनाभ्यां प्राकृतां गतिमभिधायोक्तं वराहसंहितायाम्

संक्षिप्तमिश्रयोर्मिश्राम् – इति।

संक्षिप्ता और विमिश्रा गति में स्थित बुध मध्यम फल (साधारण आरोग्य, साधारण वृष्टि, साधारण धान्य-वृद्धि और साधारण क्षेम) देता है।

गर्गः

तीक्ष्णा घोरा च पापा च तथा योगान्तिकी परा।
एताश्चतस्रः सौम्यस्य दुर्भिक्षक्षेमलक्षणाः॥

तीक्ष्ण, घोरा, पापा और योगान्तिकी बुध की ये चारो गतियाँ दुर्भिक्ष और कल्याण की द्योतिका हैं।

नक्षत्रविशेषे चारैरपि प्राकृतादिगतयो भवन्ति। तथा च वराहसंहितायाम्

प्राकृतविमिश्रसंक्षिप्ततीक्ष्णयोगान्तघोरपापाख्याः।
सप्त पराशरतन्त्रे नक्षत्रैः कीर्त्तिता गतयः॥

प्राकृतसंज्ञा वायव्ययाम्यपैतामहानि बहुलाश्च।
मिश्रा गतिः प्रदिष्टा शशिशिवपितृभुजगदेवानि॥

संक्षिप्तायां पुष्यः पुनर्वसुः फाल्गुनीद्वयं चेति।
तीक्ष्णायां भाद्रपदाद्वयं सशक्राश्वयुक् पौष्णम्॥

घोरा श्रवणं त्वाष्ट्रं वसुदेवं वारुणं चैव।
पापाख्या सावित्रं मैत्रं चन्द्राग्निदैवतं चेति॥

योगान्तिकी तु मूलं द्वे आषाढ़े गतिः सुतस्येन्दोः।
प्राकृतगत्यामारोग्यवृष्टिशस्यप्रवृद्धयः क्षेमम्॥
संक्षिप्तमिश्रयोर्मिश्रमेतदन्यासु विपरीतम्॥

प्राकृत, विमिश्र, संक्षिप्त, तीक्ष्ण, योगान्तिक, घोर, पाप— ये पराशरतन्त्रोक्त नक्षत्रचार के अनुसार बुध की सात गतियाँ होती हैं।

स्वाती, भरणी, रोहिणी या कृत्तिका में प्राकृता गति से; मृगशिरा, आर्द्रा, मघा या आश्लेषा में मिश्रा (विमिश्रा) गति से; पुष्य, पुनर्वसु, पूर्वफाल्गुनी या उत्तरफाल्गुनी में सक्षिप्ता गति से; पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, ज्येष्ठा, अश्विनी या रेवती में तीक्ष्णा गति से; श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा या शतभिषा में घोरा गति से; हस्त, अनुराधा या विशाखा में पापा नाम की गति से एवं मूल, पूर्वाषाढ़ या उत्तराषाढ़ में योगान्तिकी गति से बुध विचरण करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राकृता गति में स्थित बुध आरोग्य, वृष्टि, धान्यवृद्धि और क्षेम करता है। संक्षिप्ता और विमिश्रा गति में स्थित बुध मिश्र फल देता है। शेष (तीक्ष्णा, योगान्तिकी, घोरा और पापा) गति में स्थित बुध उक्त के विपरीत फल देता है।

तथा च पराशरः

अथास्य गतीः सप्त वक्ष्यन्ते प्राकृता, विमिश्रा, संक्षिप्ता, तीक्ष्णा, घोरा, पापा योगान्तिकी चेति। प्राकृता याम्याग्नेयरोहिणीवायव्यानि सा क्षेमारोग्यशस्यवती। विमिश्रा सौम्यार्द्रामघाऽश्लेषा च। संक्षिप्ता पुष्यार्यम्णभाग्यादित्यानि। तीक्ष्णाऽजपादश्चत्वारि ज्येष्ठा च। घोरा त्रीणि श्रवणादीनि त्वाष्ट्रं च। पापा सावित्र्यैन्द्राग्न्यमित्राणि। योगान्तिकी मूलमाषाढे। एताश्चतस्रो दुर्भिक्षाक्षेमाय।

प्राकृता, विमिश्रा, संक्षिप्ता, तीक्ष्णा, घोरा, पापा, योगान्तिकी— ये सात प्रकार की गतियाँ बुध की कही गयी हैं।

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी या स्वाती में स्थित बुध की प्राकृता गति होती है; वह क्षेम, आरोग्य और धान्य-वृद्धि करती है। मृगशिरा, आर्द्रा, मघा या आश्लेषा में विमिश्रा (विभिन्ना) गति; पुष्य, उत्तरफाल्गुनी, पूर्वफाल्गुनी या पुनर्वसु नक्षत्र में संक्षिप्ता गति; पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती, अश्विनी या ज्येष्ठा में तीक्ष्णा गति; श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा या चित्रा में घोरा गति; हस्त, विशाखा या अनुराधा में पापा गति तथा मूल, पूर्वाषाढ़ या उत्तराषाढ़ में बुध के स्थित (विचरण) रहने पर योगान्तिकी गति कहलाती है। इनमें चार (तीक्ष्णा, घोरा, पापा और योगान्तिकी) गतियाँ दुर्भिक्ष और अकल्याणकारी होती हैं।

अथोदयास्तफलम्

तत्र पराशरः

हस्तोदितो मैत्रमनुचरन् पशुगोकोशलानभिहन्ति।
विशाखामध्यगस्तु शस्यम्।

हस्त नक्षत्र में उदित होकर बुध अनुराधा तक विचरण करे अर्थात् हस्त में उदित होकर अनुराधा में अस्तङ्गत हो तो पशु, गाय और कोशलदेशवासियों का नाश करता है। विशाखा के मध्य में बुध के रहने पर शस्य का नाश होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

कार्त्तिकेऽश्वयुजे पौषे आषाढ़े श्रावणे बुधः।
दृष्टो लोकभयाय स्यान्माघवैशाखयोस्तथा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्त्तिक, आश्विन, पौष, आषाढ़, श्रावण, माघ तथा वैशाख में बुध के दृष्ट (उदित) होने पर लोक (संसार) में भय होता है।

वृद्धगर्गस्तु

वैशाखे पौर्णमासे च श्रावणाषाढयोरपि।
न दृश्यते बुधः प्रायो मासेष्वन्येषु दृश्यते॥

यदाऽदृश्येषु दृश्यः स्याद्दृश्येषु च न दृश्यते।
गवां रोगमनावृष्टिं दुर्भिक्षं चातिनिर्दिशेत्॥

वैशाख, कार्त्तिक, श्रावण और आषाढ़ मासों में प्रायः बुध नहीं देखा जाता एवं इनसे भिन्न मासों में दृश्य होता है।

यदि अदृश्य (वैशाख, कार्त्तिक, श्रावण, आषाढ) मासों में बुध देखा जाय और दृश्य मासों में नहीं देखा जाय तो गायों के लिए रोग, अनावृष्टि और दुर्भिक्ष होता है।

अथोदयदिनफलम्

तत्र वृद्धगर्गः

पुरस्तादुदितः सौम्यो धान्यस्नेहार्घवर्धनः।
अर्घह्रासकरः स्निग्धो भवत्ययनमास्थितः॥

जिस दिन पूर्व में बुध का उदय हो, उस दिन धान्य और स्नेह (तेल, घृत आदि) की महँगी होती है। अयनदिन (उत्तरायण और दक्षिणायन) के समय यदि बुध का उदय हो तो महँगी कम करता है।

अथ वक्त्रफलम्

तत्र वृद्धगर्गः

अवर्षे कुरुते वर्षं वर्षे वर्षं न यच्छति।
भयं च कुरुते क्षेमं सर्वत्र प्रतिलोमगः॥

जिस उत्पात के साथ बुध का अस्त होता है, उसके विपरीत फल बुधोदय के समय होता है। अर्थात् अस्त के समय यदि अवृष्टि होती है तो उदयकाल में वर्षा, वर्षा के बदले अवृष्टि और भय के बदले क्षेम होता है। इस प्रकार सभी कुछ विपरीत ही होता है।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु बुधोत्पातेषु बुधग्रहपूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहाँ बुध के द्वारा उत्पन्न उत्पातों की अनुक्ता शान्ति के लिए बुधग्रह की पूजा के साथ-साथ प्रचुर मात्रा में सुवर्ण, अन्न, गाय और पृथिवी-दान आदि सामान्य शान्ति उत्पातों की गुरुता एवं लघुता को जानकर करनी चाहिये।

फलपाकसमयो गार्गीये

बुधे यावत्तु दर्शनम् – इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे बुधाद्भुतावर्त्तः

बुधोत्पात का फल बुध के उदय के बाद जब तक वह बुध दृश्य रहता है, घटित होता है।

❁

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ बृहस्पत्यद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकबृहस्पतिलक्षणं वराहसंहितायाम्

अकलुषांशुजटिलः पृथुमूर्त्तिः कुमुदकुन्दकुसुमस्फटिकाभः ।
ग्रहहतो न यदि सत्पथवार्त्ती हितकरोऽमरगुरुर्मनुजानाम् ॥

विशेषः– येषामयं स्वामी तेषामेवंविधो विशेषेण हितकरः । विपरीतो विशेषेण विपरीतकरः ।

निर्मल किरण से युक्त, जटिल (सघन किरण वाला), विशाल बिम्ब वाला, कुमुदपुष्प, कुन्दपुष्प या स्फटिक मणि के समान कान्ति वाला, ग्रह से अनाहत (ग्रहयुद्ध में अविजित) होकर सत्पथ (ग्रह-नक्षत्रों के उत्तरमार्ग) में स्थित बृहस्पति मनुष्यों का हितकारी होता है ।

बृहस्पति जिनका स्वामी होता है, उनके लिए उक्त शुभ लक्षणयुक्त होने से विशेष रूप में शुभदायी तथा विपरीत स्थिति में रहने पर विशेष रूप से अनिष्टकारी होता है ।

बृहस्पतिस्वामिकान्याह यवनेश्वरः

माङ्गल्यधर्मद्विजवेदयज्ञधान्याकरस्थानगुणात्मजानाम् ।
सुवर्णयानासनपौष्टिकानां प्रभुर्गुरुर्मन्त्रिमहत्तराणाम् ॥

मङ्गलकार्य (उपनयन, विवाहादि), ब्राह्मण, वेद, यज्ञ, धान्य, आकरस्थान (खजाना), गुणी, सुवर्ण, सवारी, आसन, पौष्टिक, मन्त्री एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों के स्वामी बृहस्पति होते हैं ।

काश्यपस्तु

त्रैगर्त्ताः सिन्धुसौवीराः शतद्रुर्मथुरा नदी ।
शुघ्नौदीच्या विपाशा च दारुकाम्बष्ठका अपि ॥

राजा पुरोहितो मन्त्री माङ्गल्यं पौष्टिकं व्रतम् ।
कारुण्यकर्मसिद्धानां विद्याशौचतपस्विनाम् ॥

मत्स्याश्च वाटधानाश्च यौधेयाश्चार्जुनायनाः ।
सारस्वताः पारतकाः हस्त्यश्वध्वजचामराः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दार्थविदुषः पौरा नीतिज्ञाः शीलसंयुताः ।
मांसी तगरकुष्ठं च शैलेयं लवणं सुरा ॥
मधुरस्वादुवल्लीजविप्राणां चाधिपो गुरुः ।

त्रिगर्त्त, सिन्धु नद, सौवीर, शतद्रु, मथुरा नदी, स्रुघ्न, उत्तर भाग में रहने वाले, विपाशा, दारुक, अम्बष्ठ, राजा, पुरोहित, मन्त्री, मङ्गलकार्य, पौष्टिककार्य (जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, पुंसवन आदि), व्रत, दयालु, कर्मसिद्ध, विद्या, शौच (पराये धन से विमुख), तपस्वी, मत्स्यदेश, वाटधान, यौधेय, अर्जुनायन, सारस्वत, पारत, हाथी, घोड़े, ध्वज, चामर, शब्द और अर्थ को जानने वाले विद्वान्, पौर (ग्रामवासी), नीतिज्ञ, शीलयुक्त, मांसी, तगर, कुष्ठ, पर्वत से उत्पन्न, नमक, सुरा (मदिरा), मधुर, स्वादयुक्त, लता से उत्पन्न और ब्राह्मणों का स्वामी बृहस्पति है।

वराहसंहितायाम्

सिन्धुनदपूर्वभागो मधुरापश्चार्धभरतसौवीराः ।
स्रुघ्नौदीच्यविपाशासरिच्छतद्रूरमठशाल्वाः ॥
त्रैगर्त्तपौरवाम्बष्ठपारता वाटधानयौधेयाः ।
सारस्वतार्जुनायनमत्स्यार्धग्रामराष्ट्राणि ॥
हस्त्यश्वपुरोहितनृपतिमन्त्रिमाङ्गल्यपौष्टिकासक्ताः ।
कारुण्यसत्यशौचव्रतविद्यादानधर्मरताः ॥
पौरमहाधनशब्दार्थवेदविदुषोऽभिचारनीतिज्ञाः ।
मनुजेश्वरोपकरणं छत्रध्वजचामराद्यं च ॥
शैलेयकमांसीकुष्ठतगररससैन्धवानि वल्लीजम् ।
मधुररसमधूच्छिष्टानि चोरकश्चेति जीवस्य ॥

सिन्धु नद के पूर्व भाग, मथुरा के पश्चिमार्ध, भरत, सौवीर, स्रुघ्न के उत्तर दिशा में रहने वाले, विपाशा नदी, शतद्रु नदी, रमठ, शाल्व, त्रैगर्त, पौरव, अम्बष्ठ, पारत, वाटधान, यौधेय, सारस्वत, अर्जुनायन और मत्स्य देशों के ग्राम तथा राष्ट्र का आधा भाग, हाथी, घोड़ा, पुरोहित, राजा, मन्त्री, मङ्गलकार्य (विवाह, उपनयन आदि) में सक्त, पौष्टिक कार्य में संलग्न, दयालु, सत्यवादी, शौचयुत (शुद्ध-पराये धन को नहीं चाहने वाले), तपस्वी, विद्वान्, दानी, धर्मी, ग्राम में उत्पन्न होने वाले, शब्दार्थ को जानने वाले (वैयाकरण), वेदज्ञ, अभिचारज्ञ, नीति-शास्त्र को जानने वाले, राजोपकरण (आयुध, सन्नाह आदि), छत्र, ध्वज, चामर आदि, सुगन्ध द्रव्य (पर्वत से उत्पन्न), कुष्ठ, मांसी, तगर, रस (बोल), नमक, लता से उत्पन्न (मूँगा आदि), मधुर रस, मधूच्छिष्ट (सिक्थक = मोम), चोरक— इन सबों का स्वामी बृहस्पति है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ वर्णफलम्

तत्र पराशरः

श्वेतरक्तपीतकृष्णवर्णो ब्राह्मणादिवर्णजयाय ।

श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण वाला बृहस्पति क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णों की जय के लिए होता है।

वराहसंहितायाम्

धूम्राभेऽनावृष्टिस्त्रिदशगुरौ नृपवधो दिवा दृष्टे।
विपुलेऽमले सुतारे रात्रौ दृष्टे [१]नृपाः स्वस्थाः ॥

अनलभयमनलवर्णे व्याधिः पीते रणागमः श्यावे।
हरिते च तस्करेभ्यः पीडा रक्ते च शस्त्रभयम् ॥

यदि बृहस्पति धूम वर्ण का हो तो अनावृष्टि करता है, दिन में दिखाई दे तो राजा का वध करता है, विशाल और निर्मल बिम्ब वाला बृहस्पति सुन्दर ताराओं से युक्त रात में दिखाई दे तो राजाओं को स्वस्थ करता है, पाठान्तर से प्रजाओं को स्वस्थ करता है। यदि अग्नि वर्ण का हो तो अग्नि का भय, पीत वर्ण का हो तो व्याधि, श्याम वर्ण का हो तो युद्ध, हरा हो तो चोरों से पीड़ा और लाल वर्ण का दिखाई दे तो शस्त्र का भय होता है।

अथ नक्षत्रफलम्

तत्र पराशरः

मध्यदक्षिणोत्तरमार्गप्रविचारी मध्यदारुणोत्तमप्रजाभावकरः ।

मङ्गलाद्भुतावर्त्तोक्त गर्ग-वचनानुसार मध्य मार्ग में स्थित नक्षत्रों में विचरण करने वाला बृहस्पति मध्यम फल, दक्षिण मार्ग में विचरण करने वाला प्रजाओं के लिए दारुण भय और उत्तर मार्ग में विचरण करने वाला प्रजाओं के लिये हितकारक होता है।

वराहसंहितायाम्

उदगारोग्यसुभिक्षक्षेमकरो वाक्पतिश्चरन् भानाम्।
याम्ये तद्विपरीतो मध्येन तु मध्यफलदायी ॥

उत्तरमार्ग में स्थित नक्षत्रों में विचरण करने वाले बृहस्पति संसार में आरोग्य, सुभिक्ष और कल्याण करते हैं, दक्षिणमार्ग में चलने वाले उक्त के विपरीत फल देते हैं तथा मध्य मार्ग में चलने वाले संसार में मध्यम फल देते हैं।

---

१. प्रज्ञा इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

प्रच्छादनेऽवरोहिण्याः प्रजापीडां विनिर्दिशेत्।
शकटारोहणे विद्याज्जगतः सम्भ्रमं बुधः ॥

यदि बृहस्पति रोहिणी शटक-भेद करे तो उसके अन्त में प्रजा को पीड़ित और आरोहण (आरम्भ) काल में संसार को भ्रान्तियुक्त करता है।

अथ राशिफलं विष्णुधर्मोत्तरे

जीवस्त्रयोदशभिर्मासै राशिं विचरन् शुभफलो भवति; अन्यथा कष्टफलः।

बृहस्पति किसी एक राशि में १३ महीनों तक विचरण करता है तो संसार के लिए शुभ फल; अन्यथा कष्ट फल देता है।

पराशरस्तु

सपादमृक्षद्वयमब्देन प्रविचरन् सम्पत्करो विपर्ययाद्विपरीतः।

सवा दो नक्षत्र अर्थात् नौ चरणों का भोग यदि बृहस्पति १ वर्ष में करे तो प्रजा के लिए सम्पत्तिकारक; अन्यथा विपरीत फल देता है।

वराहसंहितायान्तु

विचरन् नक्षत्रद्वयमिष्टस्तत्सार्धवत्सरेण मध्यफलः।
शस्यानां विध्वंसी विचरेदधिकं यदि कदाचित्॥

यदि बृहस्पति १ वर्ष के अन्दर दो नक्षत्रों में विचरण करे तो शुभ फल, ढाई नक्षत्रों में विचरण करे तो मध्य फल और यदि कदाचित् ढाई से अधिक नक्षत्रों में विचरण करे तो धान्यों का नाश करता है।

अथ बार्हस्पत्याब्दफलं वराहसंहितायाम्

वर्षाणि कार्त्तिकादीन्याग्नेयाद्भद्वयानुयोगीनि।
क्रमशस्त्रिभं च पञ्चममुपान्त्यमन्त्यं च यद्वर्षम्॥

कृत्तिका आदि दो-दो नक्षत्रों में बृहस्पति के रहने से कार्त्तिकादि १२ महीनों की तरह कार्त्तिकादि १२ वर्ष होते हैं। परन्तु इनमें पञ्चम फाल्गुन वर्ष, उपान्त्य (एकादश) भाद्रपद और अन्त्य (कार्त्तिक का अन्त्य) आश्विन वर्ष तीन-तीन नक्षत्रों के होते हैं।

विशेष– यहाँ 'उपान्त्यमन्त्यं' का उक्त प्रकार से अर्थ करने पर अन्य आचार्यों के कथन से सङ्गति नहीं बैठती है। इसलिए भट्टोत्पल ने भी उपान्त्य (११) का अन्त्य दशवाँ ही माना है। तदनुसार पञ्चम फाल्गुन, दशम श्रावण और ग्यारहवें भाद्रपद में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही तीन-तीन नक्षत्रों में बृहस्पति भोग करते हैं। काश्यप के वचन में दो तरह के पाठ देखे जाते हैं।

तथा च काश्यपः

कर्त्तिकादिसमा ज्ञेया द्विद्विनक्षत्रचारिणः।
त्रिभं भाद्रपदं ज्ञेयं फाल्गुनाश्वयुजौ तथा॥

पाठान्तर से उत्तरार्ध निम्न भाँति है—

त्रिभं भाद्रपदे ज्ञेयं फाल्गुने श्रावणे तथा॥

कृत्तिकादि दो-दो नक्षत्रों में बृहस्पति के रहने पर क्रमशः कार्त्तिकादि वर्ष होते हैं; परन्तु इनमें भाद्रपद, फाल्गुन और आश्विन (पाठान्तर से— भाद्रपद, फाल्गुन और श्रावण) वर्ष तीन-तीन नक्षत्रों में बृहस्पति के रहने पर होते हैं।

विशेषः– 'नक्षत्रचारिण इति चारशब्द उदयचारपरः।' अर्थात् 'नक्षत्रचारिणः' का अभिप्राय यह है कि जिस नक्षत्र में बृहस्पति का उदय होता है, उस नक्षत्र के अनुसार वर्ष होता है।

तथा च काश्यपः

प्रवासान्ते समर्क्षेण तूदितो युगपच्चरन्।
तस्मात् कालात्तदृक्षाद्यो गुरोरब्दः प्रवर्त्तते॥

प्रवासान्त (अस्तान्त) के बाद जिस नक्षत्र में बृहस्पति का उदय होता है, उससे दो नक्षत्रों तक विचरण करते हुए वृहस्पति का उदित नक्षत्रसंज्ञक वर्ष होता है।

वराहसंहितायां च

नक्षत्रेण सहोदयमुपगच्छति येन देवपतिमन्त्री।
तत्संज्ञं वक्तव्यं वर्षं मासक्रमेणैव॥

जिस नक्षत्र के साथ (जिस नक्षत्र में) बृहस्पति का उदय होता है, उस नक्षत्र के अनुसार मास के क्रम से द्वादश मासों की तरह द्वादश वर्ष होते हैं।

विशेषः– पराशरेणाप्युदयादेव फलमुक्तं तद्वाक्यमत्रैव लिखिष्यामः। अतो यत्र चारमात्रेण बार्हस्पत्याब्दं तत्रोदयचारपरता। पराशरवृद्धगर्गाभ्यां तु श्रवणादित्रये श्रावणः। पूर्वभाद्रपदादित्रये भाद्रः। अश्विनीभरण्योराश्विन इत्युक्तम्। तद्वाक्यमनन्तरमेव लिखितम्।

अथैतेषां फलम्

तत्र पराशरः

तस्मिन् कृत्तिकारोहिणीषूदिते क्षुच्छस्त्राग्न्यनावृष्टिप्राबल्यं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोशाकटिकपीडा च। सौम्यरौद्रयोरेतदेव गवादिवर्जम्। तिष्यपुनर्वस्वोरुक्तविपर्ययः। पुष्यवन्मघाऽऽश्लेषासु राज्ञामुपतापश्च। फाल्गुनीसावित्रेषु क्वचित् क्षेमसुभिक्षं नारीदौर्भाग्यं च। चित्रास्वात्युदितो नृपशस्यवर्षक्षेमारोग्यकरः। एवमेवैन्द्राग्न्यमैत्रयोः। ऐन्द्रनैर्ऋतयोर्वनस्पतिवर्षश्रेष्ठनृपतिप्रधानविनाशायेतरवृद्धये। आषाढयोः प्राक्परशस्यानां वृद्धिक्षयौ मध्यक्षेमवर्षणमन्योन्यभेदश्च। श्रवणश्रविष्ठावारुणेषु यज्ञनृपशस्यवर्षक्षेमारोग्यवृद्धये। अजाहिर्बुध्न्यपौष्णेष्वाषाढफलं प्राक्शस्यविपर्ययः। प्रभूतशस्यविक्षेप[1]क्षेमाण्यश्वयुग्भरण्योः।

उक्त कृत्तिका या रोहिणी नक्षत्रों में यदि बृहस्पति उदित होता है तो उस कार्त्तिक नामक गुरु वर्ष में क्षुधा, शस्त्र, अग्नि तथा अनावृष्टि का प्राबल्य (भय) एवं गाय और शाकटिक (गाड़ी चलाने वाले) को पीड़ा होती है। मृगशिरा और आर्द्रा में क्षुधा, शस्त्र, अग्नि और अनावृष्टि का भय होता है। पुष्य और पुनर्वसु (पौषवर्ष) में उक्त के विपरीत फल अर्थात् संसार के लिए बृहस्पति का उदय शुभ होता है। मघा और आश्लेषा में उदय होने पर पौष वर्ष की तरह (माघ वर्ष में) शुभ फल होता है। पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी और हस्त में (फाल्गुन वर्ष में) किसी-किसी स्थान पर मंगलकार्य और सुभिक्ष होते हैं तथा किसी स्थान पर मंगलकार्य और सुभिक्ष नहीं होते हैं एवं स्त्रियों की अभाग्यता होती है। चित्रा और स्वाती (चैत्र वर्ष) में बृहस्पति के उदित होने पर राजा, धान्य, वर्षा, कल्याण और आरोग्य होता है। इसी तरह विशाखा और अनुराधा (वैशाख वर्ष) में गुरु के उदित होने पर शुभ फल होते हैं। ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रों (ज्येष्ठ वर्ष) में गुरु के उदित होने पर वनस्पति, वर्षा, श्रेष्ठ व्यक्ति, राजा, गणप्रधान का विनाश करता है तथा इससे भिन्न निकृष्ट वस्तुओं-व्यक्तियों की वृद्धि करता है। पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्रों (आषाढ़ वर्ष) में पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में क्रमशः धान्यों की वृद्धि और नाश करता है तथा मध्यम कल्याण, मध्यम वर्षा और राजाओं में परस्पर भेद (युद्ध) होता है। श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा (श्रावण) में बृहस्पति के उदित होने पर यज्ञ, राजा, धान्य, वर्षा, क्षेम और आरोग्यता की वृद्धि होती है। पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र और रेवती (भाद्र वर्ष) में आषाढ़वर्षोक्त फल और पूर्वार्ध में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश होता है। अश्विनी और भरणी में यदि बृहस्पति का उदय होता है तो (आश्विन नामक वर्ष में) प्रचुर मात्रा में धान्योत्पत्ति एवं कल्याणकारी कार्य आदि होते हैं।

---

१. प्रभूतजलशस्यर्द्धिजल इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

आग्नेयकेशगे जीवे वर्षे स्याद्वह्निदैवतम् ।
अहितं तु विनिर्दिष्टं गोद्विजाग्न्युपजीविनाम् ॥

विशेषः– केशगे रोहिणीगते ।

कृत्तिका और रोहिणी में बृहस्पति के उदित होने पर वह्निदैवत नामक (कार्त्तिक) वर्ष कहलाता है । इसमें गाय, ब्राह्मण और अग्नि से जीविका चलाने वाले का अनिष्ट होता है ।

गर्गस्तु

कार्त्तिकः प्रचुरातङ्कः क्षुच्छस्त्राग्निभयप्रदः ।
गोशाकटिकपीडाकृद्दारुणोऽवर्षकृन्मतः ॥

उक्त कार्तिक नामक वर्ष अत्यधिक आतङ्क, क्षुधा, शस्त्र और अग्निभयकारक, गाय, शाकटिक (गाड़ी चलाने वाले) के लिए पीड़ाकारक तथा अवृष्टिकारक और दारुण भयकारक होता है ।

वराहसंहितायाम्

शकटानलोपजीविकगोपीडाव्याधिकोपश्च ।
वृद्धिस्तु रक्तपीतककुसुमानां कार्त्तिके वर्षे ॥

कार्त्तिक नामक वर्ष में गाड़ी से तथा अग्नि से आजीविका चलाने वाले (लोहार, सोनार आदि) और गाय आदि को पीड़ा होती है । लोगों में व्याधि और लड़ाई होती है तथा लाल और पीले फूलों की वृद्धि होती है ।

वृद्धगर्गस्तु

कृत्तिकां रोहिणीं चापि चरेद्यदि बृहस्पतिः ।
अब्दः स कार्त्तिको नाम भयव्याधिसमाकुलः ॥

अग्निः कुप्यति शस्त्रं च चित्रं वर्षति वासवः ।
अपरं पुष्कलं विन्द्यात् पूर्वशस्यमपुष्कलम् ॥

कृत्तिका और रोहिणी में भी यदि बृहस्पति विचरण करता है तो वह कार्त्तिक नामक वर्ष होता है । यह वर्ष भय और व्याधि से लोगों को आकुल करता है । अग्निकोप और शस्त्रप्रकोप होता है । कहीं वर्षा होती है तो कहीं नहीं होती । वर्ष के उत्तरार्ध में बोये जाने वाले धान्य प्रचुर मात्रा में होते हैं और पूर्वार्ध में बोये जाने वाले धान्य प्रचुर मात्रा में नहीं होते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

सौम्यरौद्रोपगे जीवे सौम्यं वर्षमुदाहृतम् ।
ईतयः सकलास्तत्र अनावृष्टिभयं तथा ॥

मृगशिरा और आर्द्रा में जब बृहस्पति रहता है तो वह सौम्य नामक (अग्रहायण) वर्ष कहा जाता है। इसमें सभी ईतियों और अनावृष्टि का भय होता है।

गर्गस्तु

वर्षाहन्ता विशुष्काम्बु मिथोभेदभयावहः ।
शलभाद्याकुलः सौम्यो दुर्भिक्षभयकारकः ॥

सौम्य नामक वर्ष वर्षा का नाश करने वाला, जल (नदी, तालाब आदि जलस्थान) को सुखाने वाला, राजाओं में परस्पर भयङ्कर भेद (युद्ध) कराने वाला, शलभ (टिड्डी), चूहा, पक्षी आदि ईतियों से आकुल (धान्यनाश) करने वाला तथा दुर्भिक्ष-भय करने वाला होता है।

वराहसंहितायाम्

सौम्येऽब्देऽनावृष्टिर्मृगाखुशलभाण्डजैश्च शस्यवधः।
व्याधिभयं मित्रैरपि भूपानां जायते वैरम् ॥

मार्गशीर्ष वर्ष में अनावृष्टि होती है। मृग (जङ्गली जानवर), चूहा, शलभ (टिड्डी) और पक्षियों से धान्यनाश होता है। मनुष्यों में व्याधि का भय होता है तथा मित्रों से भी राजाओं को द्वेष होता है।

वृद्धगर्गस्तु

सौम्यं रौद्रं च नक्षत्रं चरेद्यदि बृहस्पतिः ।
भवेत् स मार्गशीर्षोऽब्दः सर्वदोषसमन्वितः ॥

न वर्षति तदा देवः शुष्यन्ति च जलाशयाः ।
न समृद्ध्यन्ति शस्यानि जातं चैव विहन्यते ॥

दुर्भिक्षभयरोगैश्च विविधैश्चाप्युपद्रवैः ।
चराचराणां भूतानामनयः सम्प्रवर्त्तते ॥

मृगशिरा और आर्द्रा में यदि बृहस्पति विचरण करता है तो मार्गशीर्ष नामक वर्ष होता है। यह वर्ष सभी प्रकार के दोषों से युक्त होता है। वर्षा नहीं होती है, जलाशय सूख जाता है, धान्य नहीं उपजते हैं, उगे हुए धान्यों का नाश हो जाता है, दुर्भिक्ष, भय, रोग और अनेक प्रकार के उपद्रवों से समस्त चराचर प्राणियों में अनाचार फैल जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

आदित्यपुष्यगे चाब्दं विज्ञेयं गुरुदैवतम्।
आतङ्करहिते लोके क्षेमारोग्यसुखप्रदम्॥

यदि पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्र में वृहस्पति रहता है तो वह गुरुदैवत नामक (पौष) वर्ष होता है। इसमें संसार आतङ्करहित होता है तथा क्षेम, आरोग्य और सुख होता है।

वराहसंहितायाम्

शुभकृज्जगतः पौषो निवृत्तवैराः परस्परं क्षितिपाः।
द्वित्रिगुणो धान्यार्घः पौष्टिककर्मप्रसिद्धिश्च॥

विशेषः– द्वित्रा गुणा हि यस्मात् स द्वित्रिगुणो हि धान्यार्घः। यावता मूल्येन यावद्धान्यं लब्धमासीत् तावता तद्द्विगुणं त्रिगुणं वा लभ्यत इत्यर्थः।

पौष वर्ष में संसार का शुभ होता है, राजा लोग पारस्परिक द्वेष त्याग देते हैं, धान्य का मूल्य द्विगुणित या त्रिगुणित हो जाता है और पौष्टिक कर्म की सिद्धि होती है।

गर्गस्तु

पुनर्वसुं च पुष्यं च चरेद्यदि बृहस्पतिः।
पौषः संवत्सरः स स्यात् सर्वौषधिसमन्वितः॥

शस्यं सम्पद्यते सर्वं सम्यग् वर्षति वासवः।
उत्तमं क्षेमसौभिक्षं भवेद्धर्मस्तदा सताम्॥

यदि पुनर्वसु और पुष्य में वृहस्पति विचरण करता है तो वह पौष संवत्सर होता है। यह वर्ष सभी औषधियों से युक्त होता है, धान्य की अच्छी ऊपज होती है, वर्षा अच्छी होती है, क्षेम और सुभिक्ष अच्छे होते हैं एवं सज्जनों में धर्माचरण होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

सार्पपित्रोपगे जीवे पित्र्यं वर्षमुदाहृतम्।
हार्दिवृष्टिप्रदं लोके शिवसौभिक्षकारकम्॥

आश्लेषा और मघा में वृहस्पति के विचरण करने पर पितृ (माघ) वर्ष कहा जाता है। यह वर्ष संसार में तुष्टि, वृष्टि, क्षेम और कल्याणकारी होता है।

वराहसंहितायां तु

पितृपूजापरिवृद्धिर्माघे हार्दिश्च सर्वभूतानाम्।
आरोग्यवृष्टिधान्यार्घसम्पदो मित्रलाभश्च॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माघ नामक वर्ष में पितरों की पूजा में वृद्धि, समस्त प्राणियों को तुष्टि, आरोग्य, सुन्दर वृष्टि, धान्यों के मूल्य में समता और मित्रों का लाभ होता है।

गर्गस्तु

क्षेमारोग्यसुभिक्षाणि वर्षाणि च शुभानि च।
पितृपूजाः प्रवर्त्तन्ते माघे राज्ञां च सन्धयः॥

माघ वर्ष में क्षेम, आरोग्य, सुभिक्ष और वर्षा तथा शुभकार्य होते हैं, पितरों की पूजा और राजाओं में परस्पर सन्धि होती है।

वृद्धगर्गस्तु

आश्लेषां च मघां चैव चरेद्यदि बृहस्पतिः।
माघसंवत्सरः स स्यात् सर्वभूतहितोदयः॥

सम्यग्वर्षति पर्जन्यः शस्यमुत्तमतां भजेत्।
क्षेमारोग्यसुभिक्षाणि प्रजा धर्मकरी तदा॥

आश्लेषा और मघा में यदि वृहस्पति विचरण करता है तो वह माघ नामक वर्ष होता है। इसमें सभी प्राणियों के हित का उदय होता है, मेघ ठीक से बरसता है, धान्य की उपज उत्तम होती है, क्षेम, आरोग्य, सुभिक्ष और प्रजा धर्म करने वाली होती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

फाल्गुनीद्वयहस्तस्थे वर्षं भाग्यमुदाहृतम्।
चौरप्राबल्यदं घोरं नारीदौर्भाग्यकारकम्॥

पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी और हस्त नक्षत्र में गुरु के रहने पर भाग्य (फाल्गुन) वर्ष होता है। इसमें चोरों की भयङ्कर प्रबलता और स्त्रियों की अभाग्यता होती है।

गर्गस्तु

नारीदौर्भाग्यकृद्घोरः फाल्गुनः शस्यवर्षदः।
क्वचित् क्षेमसुभिक्षाणि क्वचिदक्षेमकारकः॥

फाल्गुन वर्ष स्त्रियों के लिए भयंकर दुर्भाग्य करने वाला होता है, इसमें कहीं-कहीं धान्य, वर्षा, सुभिक्ष और क्षेम होते हैं तथा कहीं-कहीं नहीं भी होते हैं।

वराहसंहितायाम्

फाल्गुनवर्षे विन्द्यात् क्वचित्क्वचित् क्षेमवृष्टिशस्यानि।
दौर्भाग्यं प्रमदानां प्रबलाश्चौरा नृपाश्चोग्राः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फाल्गुन वर्ष में किसी-किसी स्थान पर मङ्गल कार्य, वृष्टि और धान्य होते हैं, किन्तु सर्वत्र नहीं होते। स्त्रियों की अभाग्यता, चोरों की प्रबलता और राजाओं की उग्रता होती है।

वृद्धगर्गः

फाल्गुन्यौ चैव हस्तं च चरेद्यदि बृहस्पतिः।
स फाल्गुनोऽतिक्रूरः स्याद्धान्यमुत्कर्षतां व्रजेत्॥

क्वचिन्निष्पद्यते शस्यं क्वचिच्छस्यं विपद्यते।
क्वचित् सुभिक्षं भवति क्वचित् क्षेमः क्वचिद्द्वयम्॥

पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी और हस्त में यदि बृहस्पति विचरण करता है तो वह फाल्गुन नामक वर्ष अतिक्रूर होता है। धान्य की उत्कर्षता (महर्घता) होती है। किसी जगह धान्य होती है तो कहीं धान्य का नाश होता है, कहीं सुभिक्ष और कहीं मङ्गलकार्य होते हैं तो कहीं नहीं होते और कहीं दोनों (सुभिक्ष और मङ्गल) होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

चित्रास्वातिगते जीवे त्वाष्ट्रं वर्षमुदाहृतम्।
शूकधान्यक्षयकरं भूपानां भयवर्धनम्॥

चित्रा और स्वाती में गुरु रहता है तो त्वाष्ट्र (चैत्र) वर्ष होता है। इसमें शूकधान्य (सूंड़ वाला धान्य— जौ आदि) का नाश और भय की वृद्धि होती है।

गर्गस्तु

मृदुभावाश्च राजानः स्त्रियः कामपरायणाः।
क्षेमारोग्ये च मृदुनी चैत्रो वर्षस्तदा मृदुः॥

चैत्र वर्ष में राजा सरल स्वभाव के होते हैं, स्त्रियाँ कामासक्त होती हैं, क्षेम और आरोग्य स्वल्प होते हैं तथा वर्षा स्वल्प होती है।

वृद्धगर्गस्तु

चित्रां स्वातीं च नक्षत्रं चरेद्यदि बृहस्पतिः।
चैत्रः संवत्सरः सोऽल्पक्षेमारोग्यसुभिक्षकृत्॥

मृदवः पार्थिवाश्चात्र चित्रं च मृदु वर्षति।

चित्रा और स्वाती का यदि बृहस्पति भोग करता है तो वह चैत्र संवत्सर होता है। यह क्षेम, आरोग्य और स्वल्प सुभिक्ष करने वाला होता है। राजाओं में कोमलता होती है और वर्षा कम होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

चैत्रे मन्दा वृष्टिः प्रियमन्नं क्षेममवनिपा मृदवः ।
वृद्धिस्तु कोशधान्यस्य भवति पीडा च रूपवताम् ॥

चैत्र वर्ष में मन्द वृष्टि (थोड़ी वृष्टि), दुर्लभ अन्न, क्षेम मृदु (स्वल्प), राजा दयालु, कोश वाले धान्य (मुद्गादि) की वृद्धि और रूपवान् मनुष्यों को पीड़ा होती है ।

विष्णुधर्मोत्तरे

विशाखामैत्रगे जीवे वर्षमिन्द्राग्निदैवतम् ।
सौभिक्षानन्दजनकं यज्ञधर्मप्रवर्धनम् ॥

विशाखा और अनुराधा नक्षत्र में वृहस्पति के विचरण करने पर इन्द्राग्नि, दैवत (वैशाख) वर्ष होता है । यह सुभिक्षकारक, आनन्ददायक एवं यज्ञ और धर्मवर्धक होता है ।

वराहसंहितायां तु

वैशाखे धर्मपरा विगतभयाः प्रमुदिताः प्रजाः सर्वाः ।
यज्ञक्रिया प्रवृत्तिर्निष्पत्तिः सर्वशस्यानाम् ॥

वैशाख वर्ष में सभी प्रजागण धर्मनिरत, भयरहित, आनन्दयुक्त और यज्ञकार्य में प्रवृत्त होते हैं तथा समस्त धान्यों की वृद्धि होती है ।

गर्गस्तु

ईतयः प्रशमं यान्ति सन्धिं कुर्वन्ति पार्थिवाः ।
वैशाखे शस्यजनना वृष्टयः सम्भवन्ति च ॥

वैशाख वर्ष में सभी ईतियाँ (शलभादि) शान्त (नष्ट) हो जाती हैं, राजा लोग सन्धि करते हैं और धान्य की उपज के लिए आवश्यकतानुसार वृष्टि होती है ।

वृद्धगर्गस्तु

विशाखां चैव मैत्रं च चरेद्यदि बृहस्पतिः ।
निरीतिकः स वैशाखो हायनः प्राणवर्षकृत् ॥

सर्वशस्यानि पुष्यन्ति सुभिक्षं क्षेममेव च ।
नरेन्द्राश्चाविरोधेन प्रजा रक्षन्ति धर्मतः ॥

विशाखा और अनुराधा में यदि बृहस्पति विचरण करता है तो वह वैशाख वर्ष ईतिरहित और जलवृष्टिकारक होता है । इसमें सभी धान्यों की वृद्धि, सुभिक्ष तथा कल्याण होते हैं एवं राजा धर्मपूर्वक प्रजाओं की रक्षा करते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

ज्येष्ठामूलोपगे जीवे वर्षं स्याच्छक्रदैवतम् ।
पीडाकरं धर्मभृतां सम्यक् श्रेष्ठमहीभृताम् ॥

ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रों में बृहस्पति के स्थित रहने पर वह वर्ष शक्रदैवत (ज्येष्ठ) नामक होता है। इसमें धर्मरत लोग, सभ्य, श्रेष्ठजन और राजाओं को पीड़ा होती है।

गर्गः

वृक्षगुल्मलताशस्यक्षेमकर्मविनाशनः ।
क्रूराज्ञादीप्तिजननो ज्येष्ठः श्रेष्ठनरान्तकृत् ॥

ज्येष्ठ वर्ष में वृक्ष, गुल्म, लता, धान्य और मङ्गलकार्यों का नाश, क्रूरता और उत्तेजना की वृद्धि तथा श्रेष्ठ व्यक्तियों का नाश होता है।

वरासंहितायां तु

ज्येष्ठे ज्ञातिकुलधनश्रेणीश्रेष्ठा नृपाः ससर्वधर्मज्ञाः ।
पीड्यन्ते धान्यानि च हित्वा कङ्गुं शमीजातिम् ॥

ज्येष्ठ वर्ष में अच्छे कुल में उत्पन्न, जाति-धनी, बहुतों में प्रधान, राजा लोग, सभी धर्मों को जानने वाले और कङ्गु तथा शमी जाति के अतिरिक्त सभी प्रकार के धान्य पीड़ित होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

ज्येष्ठे मूले च नक्षत्रे चरेद्यदि बृहस्पतिः ।
ऐन्द्रसंवत्सरः स स्यात् सर्वभूतहिते शिवः ॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं वैरं चैव प्रवर्त्तते ।
न च वर्षेत्तदा देवो न च निर्वर्त्तते सदा ॥

यदि ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र में बृहस्पति विचरण करे तो ऐन्द्र संवत्सर (ज्येष्ठ वर्ष) होता है। यह सभी प्राणियों के हित के लिए मङ्गलदायी होता है। इसमें भयङ्कर दुर्भिक्ष और परस्पर लोगों में वैरभाव उत्पन्न होते हैं, वर्षा नहीं होती है और उक्त अशुभ का नाश नहीं होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

आषाढद्वयगे जीवे वैश्वदेवमुदाहृतम् ।
नाशुभं न शुभं लोके राजविग्रहकारणम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आषाढ़द्वय (पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़) के साथ बृहस्पति का योग (गमन) होने से वैश्वदेव (आषाढ़) वर्ष कहा गया है। इस वर्ष में संसार में न शुभ और न अशुभ अर्थात् मध्यम फल होता है तथा राजाओं में विरोध होता है।

वराहसंहितायाम्

आषाढे जायन्ते शस्यानि क्वचिदवृष्टिरन्यत्र।
योगक्षेमं मध्यं व्यग्राश्च भवन्ति भूपालाः॥

आषाढ़ वर्ष में कहीं-कहीं पर धान्य और कहीं-कहीं पर वर्षा का अभाव होता है। योगक्षेम (अलब्ध का लाभ और लब्ध का पालन) मध्यम रूप से होता है तथा राजा लोग अपने काम में व्यग्र रहते हैं।

गर्गस्तु

दुर्भिक्षाक्षेमजनन आषाढोऽन्योऽन्यभेदकृत्।
भूपालयुद्धजननो मध्यमक्षेमकारकः॥

आषाढ़ वर्ष दुर्भिक्ष, अमङ्गल और परस्पर भेद (विरोध) उत्पन्न करता है। यह राजाओं में युद्धकारक और मध्यम क्षेमकारक होता है।

वृद्धगर्गस्तु

पूर्वोत्तरे च आषाढे चरेद्यदि बृहस्पतिः।
आषाढः स तु विज्ञेयस्तस्य संवत्सरोऽशुभः॥
मिथो भेदाः प्रवर्त्तन्ते बलक्षोभा भवन्ति च।
शारदं पच्यते धान्यं ग्रीष्मधान्यं न पच्यते॥

यदि पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ में बृहस्पति विचरण करता है तो उसे आषाढ़ वर्ष जानना चाहिये। यह वर्ष लोगों के लिए अशुभकारक होता है। लोगों में परस्पर विरोध और युद्ध होते हैं, शारदीय धान्य पकते हैं और गर्मी ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्य नहीं पकते हैं। अर्थात् शरद ऋतु के धान्य होते हैं, लेकिन ग्रीष्मकालीन धान्य नहीं होते।

विष्णुधर्मोत्तरे

विष्णुवासवभस्थे तु वैष्णवं परिकीर्त्तितम्।
क्षेमसौभिक्षदं लोके पाखण्डपरिपीडनम्॥

श्रवण और धनिष्ठा में बृहस्पति के विचरण करने से वैष्णव (श्रावण) वर्ष होता है। इस वर्ष में लोक में क्षेम और सुभिक्ष होते हैं तथा पाखण्डी लोग पीड़ित होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष– वृद्धगर्गादि के मतानुसार श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा— ये तीन नक्षत्र श्रावण वर्ष में होते हैं; जो पूर्व में कहा जा चुका है।

वराहसंहितायां तु

श्रावणवर्षे क्षेमं सम्यक् शस्यानि पाकमुपयान्ति।
क्षुद्रा ये पाखण्डास्ते पीड्यन्ते च तद्भक्ताः॥

श्रावण नामक वर्ष में सभी धान्य अच्छी तरह पक जाते हैं तथा क्षुद्र (क्रूर), पाखण्डी गण (वेदनिन्दक) और उनके भक्त लोग पीड़ित होते हैं।

गर्गस्तु

श्रावणः शस्यसम्पन्नः क्षेमारोग्यविवर्धनः।
धान्यमाहार्घ्यमायाति सम्यग्वर्षति वासवः॥
क्षुद्राः पाखण्डिनः सर्वान् सद्भक्तांश्चोपतापयेत्।

श्रावण वर्ष धान्यसम्पन्न (युक्त), क्षेम और आरोग्य बढ़ाने वाला होता है, धान्य की महँगी होती है, वर्षा अच्छी होती है और क्रूर पाखण्ड लोग सद्भक्त को पीड़ित करते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

श्रवणादीनि च त्रीणि चरेद्यदि बृहस्पतिः।
श्रावणो नाम सोऽब्दः स्यात् क्षेमसौभिक्षपुष्टिमान्॥

श्रवण आदि तीन नक्षत्रों (श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा) में यदि बृहस्पति विचरण करे तो वह श्रावण नामक वर्ष होता है; जो क्षेम, सुभिक्ष और पुष्टि (बल)-कारक होता है।

गर्गस्तु

प्रौष्ठपादे वरं शस्यं विनश्यत्यपरं च यत्।
निष्पद्यते क्वचित् क्षेमं क्वचिदक्षेमकारकम्॥

विशेषः– वरं शस्यं श्रेष्ठशस्यं सम्भवति। अपरं भावि तद्विनश्यतीति योजनम्।

भाद्रवर्ष में श्रेष्ठ धान्यों की उत्पत्ति होती है, शेष उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश होता है। इस वर्ष में कहीं-कहीं मङ्गलकार्य और कहीं-कहीं अमङ्गलकार्य होते हैं।

तथा च विष्णुधर्मोत्तरे

प्रौष्ठपादद्वयोपगे जीवे वारुणगे तथा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वशस्यप्रदं त्वाजं पश्चाद्धान्यविनाशकम् ॥

पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र और शतभिषा में बृहस्पति के स्थित रहने पर आज (भाद्र) वर्ष होता है। यह वर्ष पूर्वार्ध में उत्पन्न होने वाले धान्य के लिए वृद्धिकारक और उत्तरार्ध में होने वाले धान्यों के लिये नाशकारक होता है।

विशेष– परन्तु वृद्धगर्गादि के अनुसार शतभिषा श्रावण वर्ष होता है।

वराहसंहितायां तु

भाद्रपदे वल्लीजं निष्पत्तिं याति पूर्वशस्यं च।
न भवत्यपरं शस्यं क्वचित् सुभिक्षं क्वचिच्च भयम् ॥

भाद्रपद वर्ष में वल्लीज (मूँग आदि अन्न) और पहले के बोये हुए धान्य पक जाते हैं, परन्तु इस वर्ष के आरम्भ के बाद (उत्तरार्ध) में बोये जाने वाले धान्य नहीं होते हैं तथा संसार में कहीं-कहीं पर सुभिक्ष और कहीं-कहीं पर भय होता है।

वृद्धगर्गस्तु

रेवतीं च प्रौष्ठपदं चरेद्यदि बृहस्पतिः।
प्रौष्ठपाद इति ज्ञेयो मध्यः संवत्सरो भवेत् ॥

सम्पद्यते शस्यपूर्वमुत्तरं नोपपद्यते।
योगक्षेमो भवेन्मध्यो धान्यमुप्तार्घतां व्रजेत् ॥

पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र और रेवती नक्षत्रों में यदि गुरु विचरण करे तो प्रौष्ठपाद (भाद्र) वर्ष जानना चाहिये। यह वर्ष मध्यम फल देता है। इस वर्ष में पूर्वशस्य पक जाता है, परन्तु उत्तरशस्य नहीं उत्पन्न होता है। योगक्षेम (अलब्ध का लाभ और लब्ध का पालन) मध्यम होता है तथा बोया हुआ धान्य आधा हो जाता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

पौष्णाश्वियाम्यगे जीवे वर्षं स्यादश्विदैवतम्।
सुवृष्टिक्षेमदं लोके सर्वातङ्कविवर्जितम् ॥

रेवती, अश्विनी और भरणी में गुरु के रहने पर अश्विदैवत (आश्विन) नामक वर्ष होता है। यह संसार में सुवृष्टि और क्षेमकारक तथा सभी आतङ्कों से रहित करने वाला होता है।

वराहसंहितायां तु

अश्वयुगब्देऽजस्रं पतति जलं प्रमुदिताः प्रजाः क्षेमः।
प्राणचयः प्राणभृतां सर्वेषामन्नबाहुल्यम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आश्विन वर्ष में हमेशा वृष्टि, प्रमुदित प्रजागण, कल्याणकारी कार्य, सभी प्राणियों में प्राणचय (अत्यधिक बल की वृद्धि) और सभी अन्नों की अधिकता होती है।

पराशरस्तु

भवेच्छस्याम्बुजलजक्षेमश्चाश्वयुजः शिवः।
संवृत्तो वत्सरः श्रीमान् सर्वकामसुखावहः॥

आश्विन वर्ष धान्य, जल, जल से होने वाले द्रव्य, मङ्गलकार्य, लक्ष्मीवान् आदि के लिए शुभकारक तथा सभी प्रकार की कामनाओं से सुख देने वाला होता है।

वृद्धगर्गस्तु

अश्विनीं चैव याम्यं च चरेद्यदि बृहस्पतिः।
संवत्सरः सोऽश्वयुजः सर्वभूतहितावहः॥
सुभिक्षारोग्यक्षेमं च भवेत् स हि सदोत्तमः।

अश्विनी और भरणी में यदि बृहस्पति विचरण करे तो वह आश्विन नामक वर्ष सभी प्राणियों के लिए सुखकारक, सुभिक्ष, आरोग्य और क्षेमकारक होता है; साथ ही वह वर्षपर्यन्त सदा उत्तम फल देता है।

अथ बार्हस्पत्ये द्वादशयुगानि

विष्णुधर्मोत्तरे

तथा खण्डयुगानीह द्वादशोक्तानि भूपते।
षष्ट्यब्दे च निवर्त्तन्ते पञ्चाब्दानि पृथक् पृथक्॥

एतेषां तु प्रवक्ष्यामि दैवतानि पृथक् पृथक्।
विष्णुर्बृहस्पतिः शक्रो वह्निस्त्वष्टा तथैव च॥

अहिर्बुध्नश्च [1]मरुतो विश्वेदेवा निशाकरः।
इन्द्राग्नी चैवं नासत्यौ भगश्चैव महाबलः॥

इति द्वादश ये प्रोक्ता मया खण्डयुगे खलु।

बार्हस्पत्य षष्टिसंवत्सरों में १२ खण्डयुग कहे गये हैं। प्रत्येक खण्डयुग में पाँच-पाँच वर्ष होते हैं। इनके अलग-अलग देवता होते हैं, जो इस प्रकार हैं— विष्णु, बृहस्पति, शक्र (इन्द्र), वह्नि, त्वष्टा (प्रजापति), अहिर्बुध्न्य, मरुत् (पाठान्तर से

१. पितरः इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पितर), विश्वेदेव, निशाकर (चन्द्र), इन्द्र और अग्नि, अश्विनीकुमार और महाबली भग (सूर्य)। ये बारह क्रमशः खण्डयुग के स्वामी कहे गये हैं (प्रत्येक खण्डयुग में प्रभवादि पाँच-पाँच संवत्सर होते हैं)।

वटकणिकायाम्

चत्वारि युगान्यादौ शुभानि चत्वारि मध्यानि।
चत्वारि तान्यशुभानि बुधैर्विशेषः कृतो वर्षे॥

पूर्वकथित १२ युगों में प्रारम्भ के चार (विष्णु, बृहस्पति, इन्द्र और अग्नि जिनके देवता हैं, वे) उत्तम शुभ, मध्य के चार (त्वष्टा, अहिर्बुध्न्य, मरुत् या पितर और विश्वेदेव जिनके देवता हैं, वे) मध्यम और अन्त्य के चार (चन्द्र, शक्राग्नि, अश्विनीकुमार और भग जिनके देवता हैं, वे युग) अशुभ होते हैं।

प्रभवादिनिर्विशेषो विष्णुधर्मोत्तरे

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदश्च प्रजापतिः।
वैष्णवे तु युगे पञ्च प्रोक्ताः संवत्सराः शुभाः॥

प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद और प्रजापति— ये पाँच संवत्सर वैष्णव नामक युग के हैं, जो शुभ कहे गये हैं।

वराहसंहितायाम्

क्वचित्त्ववृष्टिः पवनाग्निकोपः सन्तीतयः श्लेष्मकृताश्च रोगाः।
संवत्सरेऽस्मिन् प्रभवे प्रवृत्ते न दुःखमाप्नोति जनस्तथापि॥

यद्यपि प्रभव संवत्सर में कहीं पर अवृष्टि, कहीं पर वायु का प्रकोप, कहीं पर अग्नि का कोप, कहीं पर अतिवृष्टि आदि ईतियों का भय और कहीं पर कफजन्य रोग होते हैं; तथापि इस संवत्सर में संसारस्थित प्राणियों को विशेष कष्ट नहीं होता है।

तथा च

तस्माद्द्वितीयो विभवः प्रदिष्टः शुक्लस्तृतीयः परतः प्रमोदः।
प्रजापतिश्चेति यथोत्तराणि शस्तानि वर्षाण्यथ पञ्च चैवम्॥

सम्पन्नशस्यां खलु रोगशोकभयैर्विमुक्तामुपशान्तवैराम्।
संहृष्टलोकां कलिदोषमुक्तां क्षत्रं तथा शास्ति च भूतधात्रीम्॥

इसके (प्रभव के) बाद दूसरे वर्ष का नाम विभव, तीसरे का नाम शुक्ल, चौथे का प्रमोद और पाँचवें का नाम प्रजापति है। ये चारो वर्ष उत्तरोत्तर शुभ फल देने वाले होते हैं। इन वर्षों में राजाओं की शासनपद्धति ऐसी होती है कि पृथ्वी धान्यों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से सम्पन्न, रोग, शोक, भय आदि से मुक्त, वैरभाव से रहित, आनन्दयुक्त, कलिदोष (अधर्म, व्याधि, दारिद्र्य, शोक, कलह, मृत्यु आदि) से विमुक्त रहती है।

क्रमेण पञ्चानां फलं पञ्चकम्

विष्णुधर्मोत्तरे

अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च।
अब्दा जीवयुगे पञ्च तेषामाद्याः शुभास्ततः॥

अङ्गिरा, श्रीमुख, भाव, युवा और धाता जीवदैवत नामक इन पाँच संवत्सरों में आदि के (अङ्गिरा, श्रीमुख और भाव) तीन संवत्सर शुभ होते हैं।

वराहसंहितायां तु

आद्योऽङ्गिराः श्रीमुखभावसंज्ञौ युवा च धातेति युगे द्वितीये।
वर्षाणि पञ्चैव यथाक्रमेण त्रीण्यत्र शस्तानि समे परे द्वे॥

त्रिष्वङ्गिराद्येषु निकामवर्षी देवो निरातङ्कभयश्च लोकः।
अब्दद्वयेऽप्येव समा सुवृष्टिः किन्त्वत्र रोगाः समरागमश्च॥

द्वितीय खण्डयुग के अन्तर्गत अङ्गिरा, श्रीमुख, भाव, युवा और धाता— ये पाँच संवत्सर होते हैं। इनमें अङ्गिरादि (अङ्गिरा, श्रीमुख और भाव) तीन वर्ष शुभ और शेष (युवा और धाता) वर्ष मध्यम हैं। इनमें अङ्गिरादि तीन वर्षों में देव (इन्द्र) पर्याप्त वर्षा करते हैं और सब लोग निर्भय होते हैं। अन्त के दो वर्षों में मध्यम रूप से सुवृष्टि होती है, किन्तु इन दोनों वर्षों में रोग और युद्ध होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः।
शाक्रेऽब्दाः पञ्च निर्दिष्टा येषामाद्यौ शुभावहौ॥

ईश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी, विक्रम और वृष नाम के वर्षों के देवता इन्द्र हैं। इस तृतीय युग के आदि के दो (ईश्वर और बहुधान्य) वर्ष शुभकारक हैं।

वराहसंहितायां तु

शाक्रे युगे पूर्वमथेश्वराख्यं वर्षं द्वितीयं बहुधान्यमाहुः।
प्रमाथिनं विक्रममप्यथान्यद्वृषं च विन्द्याद् गुरुचारयोगात्॥

आद्यं द्वितीयं च शुभे तु वर्षे कृतानुकारं कुरुतः प्रजानाम्।
पापः प्रमाथी वृषविक्रमौ तु सुभिक्षदौ रोगभयप्रदौ च॥

विशेषः– कृतानुकारं सत्ययुगसादृश्यम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तृतीय (ऐन्द्र) युग में ईश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी, विक्रम, वृष— ये पाँच वर्ष बृहस्पति के सञ्चारवश होते हैं। इनमें प्रथम (ईश्वर) और द्वितीय (बहुधान्य) वर्ष शुभ हैं तथा इनमें प्रजागण कृतयुग की तरह (धर्म में निरत, सुखी और दीर्घजीवी) होते हैं। प्रमाथी (तृतीय) वर्ष पाप फल देने वाला होता है। वृष और विक्रम नामक वर्ष सुभिक्ष तो करता है; परन्तु रोग और भय देने वाला भी होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

वर्ही सुभानुस्तरणो वारिदश्च तथा नृपः।
आग्नेये पञ्च निर्दिष्टा द्वितीयं तेषु शोभनम्॥

आग्नेय (चतुर्थ), युगान्तर्गत वर्ही (चित्रभानु), सुभानु, तारण, वारिद (मेघ) और नृप— ये पाँच वर्ष कहे गये हैं। इनमें द्वितीय (सुभानु) वर्ष शुभ होता है।

विशेष– यहाँ वराहमिहिर ने तृतीय वर्ष का नत, चतुर्थ का तारण और पञ्चम वर्ष का नाम व्यय रखा है। सूर्यसिद्धान्त के सुधावर्षिणी टीकाकार म०म०पं० सुधाकर द्विवेदी ने तृतीय का नाम तारण, चतुर्थ का पार्थिव और पञ्चम का व्यय कहा है।

तथा च वराहसंहितायाम्

श्रेष्ठं चतुर्थस्य युगस्य पूर्वं यच्चित्रभानुं कथयन्ति वर्षम्।
मध्यं द्वितीयं तु सुभानुसंज्ञं रोगप्रदं मृत्युकरं नतञ्च॥
तारणं तदनु भूरिवारिदं शस्यवृद्धिमुदितं च पार्थिवम्।
पञ्चमं व्ययमुशन्ति शोभनं मन्मथप्रबलमुत्सवाकुलम्॥

चतुर्थ (हुताश) युग के अन्तर्गत चित्रभानु नामक प्रथम वर्ष शुभ फल देता है। द्वितीय सुभानु नामक वर्ष मध्यम फल देने वाला और तृतीय नत नामक वर्ष रोगप्रद और मृत्युकारक होता है। चतुर्थ तारण नाम का वर्ष बहुत जल, धान्यों की वृद्धि और राजाओं में आनन्द की वृद्धि करता है तथा पञ्चम व्यय नामक वर्ष शुभ होता है। इसमें काम की प्रबलता तथा उत्सव (उपनयन, विवाहादि मङ्गलकार्य) होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतः खरः।
त्वाष्ट्रे पञ्चयुगे येषां द्वितीयस्तु शुभप्रदः॥

त्वाष्ट्र (प्राजापत्य) नामक पञ्चम युग में सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृत और खर— ये पाँच वर्ष क्रमशः होते हैं; जिनमें द्वितीय (सर्वधारी) वर्ष शुभ फल देने वाला होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

त्वाष्ट्रे युगे सर्वजिदाद्य उक्तः संवत्सरोऽन्यः खलु सर्वधारी।
तस्माद्विरोधी विकृतः खरश्च शस्तो द्वितीयोऽत्र भयाय शेषाः ॥

पञ्चम (त्वाष्ट्र) युग के अन्तर्गत सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृत और खर— ये पाँच संवत्सर होते हैं, इनमें दूसरा (सर्वधारी) शुभ और शेष चार भय देने वाले होते हैं।

नन्दनोऽथ विजयो जयस्तथा मन्मथश्च परतश्च दुर्मुखः।
कान्तमत्र युग आदितस्त्रयं मन्मथः समफलोऽधमः परः ॥

षष्ठ (अहिर्बुध्न्य = प्रौष्ठपद) युग में नन्दन, विजय, जय, मन्मथ और दुर्मुख— ये पाँच संवत्सर होते हैं। इनमें आदि के तीन (नन्दन, विजय और जय) शुभ, मन्मथ मध्यम और शेष (दुर्मुख) अशुभ होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

नन्दनो विजयश्चैव जयः कामश्च दुर्मुखः।
अहिर्बुध्न्ययुगे पञ्च येषामाद्या हितास्त्रयः ॥

अहिर्बुध्न्य नामक षष्ठ युग में नन्दन, विजय, जय, काम (मन्मथ) और दुर्मुख— ये पाँच संवत्सर होते हैं; जिनमें आदि के तीन हितकारक होते हैं।

वराहसंहितायां तु

हेमलम्ब इति सप्तमे युगे स्याद्विलम्बि परतो विकारि च।
शर्वरीति तदनु प्लवः स्मृतो वत्सरो गुरुवशेन पञ्चमः ॥

ईतिप्रायाः प्रचुरपवना वृष्टिरब्दे तु पूर्वे
मन्दं शस्यं न बहु सलिलं वत्सरेऽत्र द्वितीये।

अत्युद्वेगः प्रचुरसलिलः स्यात्तृतीयश्चतुर्थो
दुर्भिक्षाय प्लव इति ततः शोभनो भूरितोयः ॥

सप्तम (पितृसंज्ञक) युग में हेलम्ब, विलम्बी, विकारी, शर्वरी और प्लव— ये पाँच संवत्सर होते हैं। इनमें प्रथम (हेलम्ब) संवत्सर में अतिवृष्टि आदि छः ईतियों का भय और अधिक वायु से युक्त वर्षा होती है। दूसरे (विलम्बी) संवत्सर में थोड़ा धान्य और थोड़ा जल बरसता है। तृतीय (विकारी) संवत्सर बहुत उद्वेग (दुःख) और अत्यधिक वृष्टि करता है। चतुर्थ (शर्वरी) संवत्सर दुर्भिक्ष देता है एवं पञ्चम (प्लव) संवत्सर शुभ फल और बहुत वृष्टि करने वाला होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

शोककृच्छुभकृत् क्रोधी विश्वावसुपरावसू ।
वैश्वे पञ्च शुभौ येषामब्दौ राजन् द्विपञ्चमौ ॥

वैश्व (अष्टम) युग में शोककृत्, शुभकृत्, क्रोधी, विश्वावसु और परावसु— ये पाँच संवत्सर होते हैं; जिनमें द्वितीय (शुभकृत्) और पञ्चम (परावसु) नाम के दोनों संवत्सर शुभ होते हैं।

विशेष– वराहमिहिर ने प्रथम का नाम शोकहृत् कहकर शुभप्रद और पञ्चम को पराभव कहकर मध्यम फलदायी बताया है।

वराहसंहितायां तु

वैश्वे युगे शोकहृदित्यथाद्यः संवत्सरोऽतः शुभकृद्द्वितीयः ।
क्रोधी तृतीयः परतः क्रमेण विश्वावसुश्चेति पराभवश्च ॥

पूर्वापरौ प्रीतिकरौ प्रजानामेषां तृतीयो बहुदोषदोऽब्दः ।
अन्त्यौ समौ किन्तु पराभवेऽग्निः शस्त्रामयार्त्तिर्द्विजगोभयं च ॥

अष्टम (वैश्व) युग में शोकहृत्, शुभकृत्, क्रोधी, विश्वावसु और पराभव— ये पाँच संवत्सर होते हैं। इनमें प्रथम (शोकहृत्) और द्वितीय (शुभकृत्) संवत्सर प्रजाओं को आनन्द देने वाले होते हैं। तृतीय (क्रोधी) संवत्सर बहुत अशुभकारी होता है। अन्त्य के चतुर्थ (विश्वावसु) और पञ्चम (पराभव) संवत्सर मध्यम फल देने वाले होते हैं। किन्तु पराभव संवत्सर में अग्नि का भय, शस्त्र से पीड़ा, रोग से पीड़ा एवं ब्राह्मणों और गौओं को भय होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः समो रोधकृदेव च ।
सौम्ये पञ्च शुभौ येषां प्रथमानन्तरावुभौ ॥

सौम्य (नवम) युग में प्लवङ्ग, कीलक, सौम्य, सम (साधारण) और रोधकृत्— ये पाँच संवत्सर होते हैं। इनमें प्रथम (प्लवङ्ग) के अनन्तर के दोनों अर्थात् कीलक और सौम्य संवत्सर मात्र शुभ होते हैं अर्थात् शेष तीन (प्लवङ्ग सम और रोधकृत्) अशुभ होते हैं।

वराहसंहितायाम्

आद्यः प्लवङ्गो नवमे युगेऽब्दः स्यात् कीलकोऽन्यः परतश्च सौम्यः ।
साधारणो रोधकृदित्यथैवं शुभप्रदौ कीलकसौम्यसंज्ञौ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कष्टः प्लवङ्गो बहुशः प्रजानां साधारणोऽल्पं जलमीतयश्च।
यत् पञ्चमं रोधकृदित्यथाब्दं चित्रं जलं तत्र च शस्यसम्पत्॥

नवम (सौम्य) युग में प्लवङ्ग, कीलक, सौम्य, साधारण एवं रोधकृत्— ये पाँच संवत्सर होते हैं। इनमें कीलक और सौम्य नामक संवत्सर शुभप्रद हैं। प्लवङ्ग संवत्सर में प्रजाओं को कष्ट होता है। साधारण संवत्सर में थोड़ा जल और अनावृष्टि आदि ईति का भय होता है। रोधकृत् संवत्सर में चित्रजल (कहीं-कहीं पर वृष्टि और कहीं पर अनावृष्टि) और चित्र (कहीं-कहीं) धान्य की उत्पत्ति होती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

धावनं मथनं वीरं राक्षसं चानलं तथा।
इन्द्राग्निदैवते पञ्च सर्व एवाशुभप्रदाः॥

इन्द्राग्निदैवत नामक (दशम) युग में धावन, मथन, वीर, राक्षस और अनल संवत्सर होते हैं। ये सभी संवत्सर अशुभप्रद ही होते हैं।

वराहसंहितायां तु

इन्द्राग्निदेवं दशमं युगं यत् तत्राद्यवर्षं परिधाविसंज्ञम्।
प्रमाथिनं विक्रममप्यतोऽन्यत् स्याद्राक्षसं चानलसंज्ञितं च॥

परिधाविनि मध्यदेशनाशो नृपहानिर्जलमल्पमग्निकोपः।
अलसस्तु जनः प्रमाथिसंज्ञे मरकं रक्तकपुष्पबीजनाशः॥

विक्रमः सकललोकनन्दनो राक्षसः क्षयकरोऽनलस्तथा।
ग्रीष्मधान्यजननोऽथ राक्षसो वह्निकोपमरकप्रदोऽनलः॥

दशम (शक्राग्नि) युग में परिधावी, प्रमादी, विक्रम, राक्षस, अनल— ये पाँच संवत्सर होते हैं। परिधावी में मध्यदेश का नाश, राजा का मरण, थोड़ा जल और अग्नि का प्रकोप होता है। प्रमादी संवत्सर में आलसी मनुष्य, मरकी, रक्त पुष्प और रक्त बीज वाले वृक्षों का नाश होता है। विक्रम संवत्सर में सभी मनुष्यों को आनन्द होता है।

राक्षस और अनल संवत्सर में सब लोगों का नाश होता है; पर राक्षस संवत्सर में ग्रीष्मधान्य (जौ, गेहूँ, चना आदि) की उत्पत्ति और अनल संवत्सर में अग्निकोप और मरक होता है।

विशेष– प्रमादी की जगह प्रमाथी और विक्रम की जगह आनन्द पाठान्तर है। प्रमाथी और विक्रम नामक संवत्सर तृतीय युग में भी पठित हैं; अतः प्रमादी और आनन्द पाठ ही शुद्ध होना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थो रौद्रदुर्मती।
आश्विने तु युगे पञ्च तृतीयस्तेषु शस्यते॥

एकादश (आश्विन) युग में पिङ्गल, कालयुक्त, सिद्धार्थ, रौद्र और दुर्मति संवत्सर होते हैं। इनमें तृतीय (सिद्धार्थ) संवत्सर शुभप्रद होता है।

वराहसंहितायाम्

एकादशे पिङ्गलकालयुक्तसिद्धार्थरौद्राः खलु दुर्मतिश्च।
आद्ये त्ववृष्टिर्महती सचौरा श्वासो हनूकम्पयुतश्च कासः॥

यत्कालयुक्तं तदनेकदोषं सिद्धार्थसञ्ज्ञे बहवो गुणाश्च।
रौद्रोऽतिरौद्रः क्षयकृत्प्रदिष्टो यो दुर्मतिर्मध्यमवृष्टिकृत्सः॥

एकादश (आश्विन) युग में पिङ्गल, कालयुक्त, सिद्धार्थ, रौद्र और दुर्मति— ये पाँच संवत्सर होते हैं। इनमें प्रथम (पिङ्गल) संवत्सर में अनावृष्टि, चोरों का भय, श्वासरोग और ठोढ़ी को हिलाने वाला कास (खाँसी) रोग होता है। कालयुक्त संवत्सर में अनेक दोष (अशुभ फल) होते हैं। सिद्धार्थसंज्ञक संवत्सर में अनेक गुण (सम्पत्ति आदि) होते हैं। रौद्र संवत्सर में अतिशय अशुभ फल और प्रजाओं का नाश कहा गया है तथा दुर्मति नामक संवत्सर में मध्यम वृष्टि होती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

दुन्दुभ्यङ्गारकौ रक्तः क्रोधश्चापि क्षयस्तथा।
भाग्ये पञ्चाशुभाः सर्वे विशेषेण च पञ्चमः॥

भाग्य (द्वादश) युग में दुन्दुभि, अङ्गार, रक्त, क्रोध और क्षय— ये पाँच संवत्सर होते हैं। ये सभी अशुभप्रद होते हैं; परन्तु पञ्चम (क्षय) संवत्सर विशेष रूप से अशुभ होता है। पाठान्तर में 'पञ्च शुभाः' पढ़ा गया है; जिसकी संगति नहीं बैठती है।

वराहसंहितायाम्

भाग्ये युगे दुन्दुभिसञ्ज्ञमाद्यं शस्यस्य वृद्धिं महतीं करोति।
अङ्गारसञ्ज्ञं तदनु क्षयाय नरेश्वराणां विषमा च वृष्टिः॥

रक्ताक्षमब्दं कथितं तृतीयं यस्मिन् भयं दंष्ट्रिकृतं गदाश्च।
क्रोधं बहुक्रोधकरं चतुर्थं राष्ट्राणि शून्यं कुरुते विरोधैः॥

द्वादश (भाग्य) संवत्सर में प्रथम **दुन्दुभि** नामक संवत्सर धान्य की अधिक वृद्धि करता है। द्वितीय **अङ्गार** संवत्सर में राजाओं का नाश और भयङ्कर वृष्टि होती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। तृतीय **रक्ताक्ष** नामक संवत्सर में दंष्ट्री (सूकर, सर्प आदि) का भय और रोग होते हैं। चतुर्थ **क्रोध** नामक संवत्सर में लोगों में बहुत क्रोध होता है तथा राष्ट्र को परस्पर विरोध से शून्य करता है।

क्षयमिति युगस्यान्त्यस्यान्त्यं बहुक्षयकारकं
जनयति भयं तद्विप्राणां कृषीबलवृद्धिदम्।
उपचयकरं विट्शूद्राणां परस्वहृतां तथा
कथितमखिलं षष्ट्यब्दे यत्तदत्र समासतः॥

बारहवें युग का **क्षय** नामक अन्तिम संवत्सर बहुत प्रकार से लोगों का नाश करने वाला, ब्राह्मणों को भय देने वाला, किसानों, वैश्यों, शूद्रों तथा दूसरे के धन का अपहरण करने वालों को बढ़ाने वाला होता है। शास्त्रान्तर में षष्ट्यब्दों का जो फल वर्णित है, उसको संक्षेप में वराहमिहिर ने कहा है।

षष्ट्यब्दारम्भसमयो विष्णुधर्मोत्तरे

माघशुक्लसमारम्भे चन्द्रार्कौ वासवर्क्षगौ।
जीवयुक्तौ यदा स्यातां षष्ट्यब्दादिस्तदा भवेत्॥

जब माघ मास के शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा और सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में स्थित होकर बृहस्पति से युक्त होते हैं अर्थात् माघ शुक्ल में जब बृहस्पति धनिष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करता है तब से षष्ट्यब्द का प्रारम्भ होता है अर्थात् प्रभव नामक बार्हस्पत्य संवत्सर होता है।

विशेषः– अतः कल्पादौ नास्यारम्भः। तत्राश्विन्याद्यस्थत्वाद्ग्रहाणाम्। कल्पारम्भाच्चत्वारिंशल्लक्षाधिकसप्ततिकोटि७०४००००००भिर्वर्षैर्माघशुक्लप्रतिपदादौ रविचन्द्रबृहस्पतीनां धनिष्ठाद्यवस्थाने षष्ट्यब्दप्रवेशो भवति। अपरं चत्वारिंशल्लक्षाधिकषडशीतिकोटि८६४००००००भिर्वर्षैः पुनरेवंविधो योगो भवति। एवमस्यारम्भपञ्चकं कल्पे। पञ्चमारम्भानन्तरं षोडशकोटिभि१६००००००० वर्षैः कल्पसमाप्तिः। ततो द्वात्रिंशत्कोट्यधिकपद्मचतुष्क४३२००००००००वत्सरैः कल्पसमाप्तिरिति।

अथाद्भुतसागरारम्भशकाब्दात् षष्ट्यब्दयुगगणनम्

खनवदशो – १०९० शकाब्दात्
षड् – ६गुणितात् पुनः कृताब्धि – ४४गुणात्।
षट्त्रिगुणाश्वि – २३३६ समेता–
दयुतत्रय – ३००००लब्ध्ययुतो गताब्दगणः॥
तस्मादिषुभि – ५र्लब्धानि पञ्चयुक्तानि सूर्य –१२शिष्टानि।
वृत्तानि वैष्णवादीन्यधःप्रविष्टस्य वर्षाणि॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभीष्ट शकाब्द वर्षसंख्या से १०९० (ग्रन्थारम्भ शकाब्दसंख्या) घटा कर जो शेष हो, उसे ६ से गुणा कर, पुनः ४४ से गुणा कर, गुणनफल में २३३६ जोड़कर ३००० से भाग देने पर जो लब्धि वर्षादि हो, उसे गतवर्ष (अभीष्ट शकाब्द—१०९०) में जोड़कर ५ से भाग देना चाहिये। भागफल में ५ जोड़कर १२ से भाग देने पर शेषतुल्य विष्णु आदि युग और पूर्व शेषतुल्य संवत्सर होता है।

परन्तु उक्त विधि में स्थूलता रहने से वास्तविक संवत्सर नहीं आता है।

वास्तविकसंवत्सरायनविधिः

शाकेन्द्रकालः पृथगाकृतिघ्नः शशाङ्कनन्दाश्वियुगैः समेतः ।
शराद्रिवस्विन्दुहृतः सलब्धः षष्ट्याप्तशेषे प्रभवादयोऽब्दाः ॥

अर्थात् इष्ट शकाब्द को दो स्थानों पर लिखकर प्रथम स्थान में २२ से गुणा कर ४२९१ जोड़ दें, उसमें १८७५ से भाग देने पर जो लब्धि हो, उसको द्वितीय स्थानस्थित शाकवर्ष में जोड़कर ६० से भाग देने पर शेषतुल्य प्रभव आदि गतवर्ष होंगे अर्थात् एक जोड़ने से वर्त्तमान वर्ष होगा। वर्षसंख्या में ५ से भाग देने पर लब्धि-तुल्य विष्णु, वृहस्पति आदि गत युग और शेष वर्त्तमान युग के वर्ष आदि होंगे।

उदाहरण— इष्ट शाके १९१८ को २२ से गुणा करने पर गुणनफल = ४२१९६, इसमें ४२९१ जोड़ने पर = ४६४८७, इसमें १८७५ से भाग देने पर लब्धि २४ वर्ष, शेष १४८७ को १२ से गुणा कर १८७५ से भाग देने पर लब्धि ९ मास, शेष ९६९ को ३० से गुणा कर १८७५ से भाग देने पर लब्धि १५ दिन, शेष ९४५ को ६० से गुणा कर १८७५ से भाग देने पर लब्धि ३० दण्ड, शेष ४५० को ६० से गुणा कर १८७५ से भाग देने पर लब्धि १४ पल सावयव हुआ। इस प्रकार २४/९/१५/३०/१४ सावयव वर्षादि लब्धि को गत वर्ष (इष्ट शकाब्द) १९१८ में जोड़ने पर १९४२/९/१५/३०/१४ हुए। अब गत वर्षसंख्या १९४२ में ६० से भाग देने पर शेष २२ हुआ। अर्थात् १ जोड़ने पर (२२ + १) = २३ वर्तमान विरोधि संवत्सर हुआ और वर्तमान १९१८ शाकारम्भकाल में विरोधी नामक संवत्सर का ९ मास १५ दिन ३० दण्ड १४ पल सावयव व्यतीत हो चुका था। इसी प्रकार युगानयन हेतु गत संवत्सरसंख्या २२ में ५ का भाग देने पर ४ लब्धि तुल्य विष्णु आदि अग्नि (हुताश) दैव तक युग गत हुआ। १ जोड़ने पर ५वाँ त्वष्टा अधिदैवतक युग हुआ। उक्त प्रकार से लाया गया प्रवभादि संवत्सर पञ्चाङ्गादि में लिखित संवत्सर से सर्वथा तुल्य है।

वृहत्संहितोक्त 'गतानि वर्षाणि शकेन्द्रकालाद्धतानि' इत्यादि से सूक्ष्मासन्न संवत्सर आता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शान्तिविधिः

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु बृहस्पत्युत्पातेषु बृहस्पति-पूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्य-शान्तिरौत्पातिकगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या – इति ।

बृहस्पति-सम्बन्धी जिन उत्पातों की शान्ति-विधि नहीं कहीं गई है, उनकी शान्ति के लिए बृहस्पति ग्रह की पूजा के साथ-साथ प्रचुर सुवर्ण, अन्न, गाय, भूमि आदि दानपूर्वक सामान्य शान्ति उत्पातों के अनुसार (गुरुता-लाघवता के अनुसार) करनी चाहिये ।

फलपाकसमयो वराहसंहितायाम्

जीवस्य वर्षेण – इति ।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे बृहस्पत्यद्भुतावर्त्तः

बृहस्पति के शुभाशुभ का फल एक वर्ष के भीतर होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ भार्गवाद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकभार्गवलक्षणमाह पराशरः

हिमकनकरजतशङ्खस्फटिकवैदूर्यमुक्तामधुघृतमेदमांससमवपुरच्छ-स्निग्धदीपकान्तिप्रकाशः प्रसन्नार्चिरणुरवनिपतिहितकरः प्रशान्तवैरदुर्भिक्षरोगावृष्टिश्च ।

वर्फ, सुवर्ण, चाँदी, शङ्ख, स्फटिक, वैदूर्य, मोती, मधु, घृत, मेद (चर्बी), मांस के समान स्वच्छ मूर्त्ति वाला, निर्मल, दीप की कान्ति के समान प्रकाश वाला, आनन्ददायक किरण वाला, विपुल मूर्त्ति वाला शुक्र राजा के लिए हितकारी एवं शत्रु, दुर्भिक्ष, रोग और अवृष्टि का नाश करने वाला होता है।

अपि च

कूटाङ्गारनिभः स्निग्धो मार्गस्थो रजतप्रभः ।
भार्गवो विसृतो विश्वप्रजाभावकरः स्मृतः ॥

विशेषः– कूटाङ्गारनिभः तप्तलौहसदृशः ।

यदि शुक्र तपाये हुए लोहे के समान, निर्मल, मार्गी, चाँदी के समान कान्ति वाला विपुल एवं मूर्त्ति वाला हो तो संसार में प्रजाओं के लिए हितकारी होता है।

वराहसंहितायां तु

दधिकुमुदशशाङ्ककान्तिभृत् स्फुटविकसन् किरणो बृहत्तनुः ।
सुगतिरविकृतो जयान्वितः कृतयुगरूपकरः सिताह्वयः ॥

विशेषः– येषामयं स्वामी तेषामेवम्भूतो विशेषेणाभ्युदयाय विपरीतो विशेषेण विपरीताय ।

यदि दही, कुमुदपुष्प या चन्द्रमा की तरह कान्ति वाला, स्पष्ट, विस्तृत किरण वाला, विपुल मूर्त्ति वाला, सुन्दर गति वाला (मार्गी), विकाररहित, ग्रहयुद्ध में विजयी शुक्र हो तो कृतयुग की तरह (भय, रोग, दारिद्र्य आदि से रहित, दीर्घजीवी) प्रजाओं को सुखी करता है।

भार्गवस्वामिकान्याह यनेश्वरः

वज्रादिरत्नाकरगोसुतस्त्रीविवादगन्ध्याम्बरभूषणानाम् ।
सौभाग्यसौख्यश्रुतिसञ्चयानां प्रभुर्निधीनां धनिनां च शुक्रः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वज्र आदि रत्नों के स्थान, गाय, पुत्र, स्त्री, विवाद, सुगन्ध, वस्त्र, आभूषण, सौभाग्य, सुख, वेद, सञ्चय और धनिकों का स्वामी शुक्र है।

काश्यपस्तु

चन्द्रभागां वितस्तां च ऐरावतीं पिबन्ति ये।
पुष्कलावर्त्तकैकेया गान्धारं प्रस्थलास्तथा॥

तक्षशिला मालवका दशार्णा मौक्तिकं [1]गिरिः।
धान्याढ्याः कुञ्जरा गावः प्रस्थापनविलेपने॥

सुरूपं सुभगोद्यानं कामुकाः कामचारिणः।
पेशला मधुरा हृद्याः सलिलाशयजीविनः॥

तरुणा योषितः क्रीडा विदुषां जनगोष्ठिका।
[2]चित्राण्डजाः कुशास्तरणपत्रोर्णं नालिकामलम्॥

पिप्पल्यश्चन्दनं जातीफलमामलकं तथा।
गन्धपत्रं च लोध्रं च शुक्र एषां पतिः स्मृतः॥

चन्द्रभागा, वितस्ता और ऐरावती नदियों के जल पीने वाले, पुष्कलावर्त्त, केकय, गान्धार, प्रस्थल, तक्षशिला, मालव, दशार्ण, मौक्तिक और गिरि (बहुगिरि) देशवासी, धन-धान्यों से युक्त (धनी), हाथी, गाय, आरम्भ और विसर्जन, सुन्दर रूप, सुभग उद्यान, कामी, इच्छाचारी, कोमल, मधुर, आनन्ददायक वस्तु, जल के आश्रय में रहने वाले, युवती स्त्री, क्रीड़ा, विद्वान् लोगों की सभा, चित्राण्डज (नाना प्रकार के पक्षी), कुशास्तरण (कुश की शय्या), पत्रोर्ण (कौश्य धौत) या पत्र (सुगन्ध पत्र), ऊर्ण (ऊन), नालिकामल (पाठान्तर से-काशी और कोसल देश), पिप्पली (पीपर), चन्दन, जातीफल (जायफल), आमलकी (आँवला = धात्रीफल), गन्धपत्र, लोध्र (एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य)— इन सबों का स्वामी शुक्र है।

वराहसंहितायां तु

तक्षशिलमार्त्तिकावतबहुगिरिगान्धारपुष्कलावतकाः।
प्रस्थलमालवकैकयदशार्णकोशीनराः शिवयः॥

ये च पिबन्ति वितस्तामैरावतीं चन्द्रभागसरितश्च।
रथरजताकरकुञ्जरतुरगमहामात्रधनयुक्ताः॥

सुरभिकुसुमानुलेपनमणिवज्रविभूषणाम्बुरुहशय्याः।
वरतरुणयुवतिकामोपकरणमृष्टान्नमधुरभुजः॥

---

१. गिरिर्बहुगिरिर्नाम देशः।
२. चित्राण्डजाश्च कौशेयं पत्रोर्णं काशिकौशलम् इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उद्यानसलिलकामुकयशःसुखौदार्यरूपसम्पन्नाः ।
विद्वदमात्यवणिग्जनपटकृच्चित्राण्डजास्त्रिफलाः ॥

कौशेयपट्टकम्बलपत्रौर्णिकलोध्रगन्धपत्रचोचानि ।
जातीफलागुरुवचापिप्पल्यश्चन्दनं च भृगोः ॥

तक्षशिला नगरी, मार्त्तिकावत देश, बहुगिरि, गान्धार, पुष्कलावतक, प्रस्थल, मालव, केकय, दशार्ण, उशीनर, शिवि, वितस्ता, ऐरावती और चन्द्रभागा नदी के जल पीने वाले, रथ, चाँदी, आकर (धनस्थान), हाथी, घोड़ा, महामात्र (हस्ती के अधिप), धनी, सुगन्धित वस्तु, पुष्प, चन्दन, मणि (पद्मरागादि), वज्र (हीरक), भूषण, अम्बुरुह (कमल आदि), शय्या, प्रधान, युवा, स्त्री, कामोपकरण (पुष्प, धूप, माला, चन्दन, इत्र आदि), मृष्ट (शोधित) अन्न का भोजन करने वाले, मधुर भोजन करने वाले, उद्यान, जल, कामी, यशस्वी, सुखी, दाता, सुन्दर, विद्वान्, मन्त्री, क्रय-विक्रय से जीवन चलाने वाले, कुम्भकार, चित्राण्डज (अनेक पक्षी), फलत्रय (एला, लवङ्ग, कल्लोल), कौशेयपट्ट (नेत्रपट), कम्बल, पत्रौर्णिक (धौतकौशेय), लोध्र, पत्र (सुगन्धपत्र), चोच (नारियल), जायफल, अगुरु, वचा (वच), पीपर, चन्दन आदि का स्वामी शुक्र है।

वटकणिकायां तु

देशा भृगोस्तक्षशिला वितस्ता गान्धारकाः पुष्कलमालवाश्च ।
दशार्णकोशीनरचन्द्रभागाश्चैद्याश्च सम्प्रस्थलकैकयाख्याः ॥

तक्षशिला, वितस्ता नदी, गान्धार, पुष्कल, मालव, दशार्णक, उशीनर, चन्द्रभागा नदी, चेदिदेश, सम्प्रस्थल और केकय देश शुक्र का है।

अशुभसूचकभार्गवलक्षणमाह पराशरः

श्यावनीलरूक्षकपिलरक्तध्वस्तदीनाल्पलोध्रसन्निभः
शस्त्रवैरव्याध्यवर्षान्नक्षयकरः ।

श्याव (कृष्ण) वर्ण, नील वर्ण, रूक्ष (रूखा), कपिल (पिङ्गल) वर्ण, लाल वर्ण, अस्त, दीन (क्षीण), अल्प मूर्त्ति वाला और लोध्र (लोध वृक्ष) की कान्ति के समान शुक्र शस्त्र, वैर, व्याधि और अवृष्टि से अन्नों का नाश करता है।

अथ वर्णफलम्

तत्र वृद्धगर्गः

सुवर्णरजताभश्च घृतमण्डनिभो महान् ।
शुक्रो माञ्जिष्ठवर्णश्च दधिवर्णश्च वर्षकः ॥

सुवर्ण और चाँदी की कान्ति वाला, घृतमण्ड की तरह स्वच्छ, विपुल, मजीठे का वर्ण (लाल) और दधि (दही) का वर्ण वाला शुक्र वर्षा करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

शिखिभयमनलाभे शस्त्रकोपश्च रक्ते
कनकनिकषगौरे व्याधयो दैत्यपूज्ये।
हरितकपिशरूपे श्वासकासप्रकोपः
पतति न सलिलं खाद्भस्मरूक्षासिताभे॥

यदि शुक्र का वर्ण अग्नि की तरह हो तो अग्निभय, रक्त हो तो शस्त्रकोप, कसौटी पर घिसे हुए सुवर्ण की रेखा की तरह हो तो व्याधि एवं हरित (तोते के समान) और पीला हो तो श्वास और कास (खाँसी) की उत्पत्ति होती है तथा भस्म के समान रूक्ष या काला हो तो आकाश से जल नहीं गिरता है अर्थात् अवृष्टि होती है।

वृद्धगर्गश्च

नीले कपिलवर्णे वा भयं भवति भार्गवे।
ताम्रवर्णे तथा रूक्षे मेघेष्वम्बु न विद्यते॥
श्यामवर्णोऽभिघाताय नीलपीतस्तु रोगकृत्।
चित्रे भयान्युदीर्यन्ते दुर्भिक्षं कपिले भवेत्॥
धूम्रवर्णोऽग्निवर्णो वा कुर्याद्वस्त्राग्निसम्भवम्॥

यदि शुक्र का वर्ण नील या पीला हो तो भय उत्पन्न करता है तथा रूक्ष हो तो मेघों में जल नहीं होता है। श्याम वर्ण का शुक्र लोगों को मारने वाला, नील और पीत वर्ण का रोगोत्पत्ति करने वाला, चित्र (अनेक वर्ण) वर्ण का भय उत्पन्न करने वाला, कपिल (पीत) वर्ण वाला शुक्र दुर्भिक्षकारक तथा धूम्र (धूआँ) वर्ण या अग्नि के समान वर्ण का शुक्र अस्त्र और अग्नि का प्रकोप करता है।

अथ नक्षत्रगतफलम्

तत्र काश्यपः

अश्विन्यां तुरगे पीडा याम्ये तु कृषिजीविनाम्।

यदि अश्विनी नक्षत्र में शुक्र स्थित हो तो घोड़े को और भरणी में हो तो किसानों को पीड़ा होती है।

वराहसंहितायां तु

अश्विन्यां हयपीडा याम्ये तु किरातयवनानाम्।

यदि शुक्र अश्विनी में स्थित हो तो घोड़े को तथा भरणी में हो तो किरात और यवनों को पीड़ा होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

अनलमभिव्रजन् पुरविरोधाय ।

यदि कृत्तिका नक्षत्र में शुक्र विचरण करता हो तो पुरवासियों में विरोध होता है ।

काश्यपस्तु

भेदयेत् कृत्तिकां शुक्रो बहुतोयं हि पातयेत् ।
रोहिणीतुरगं घोरं गृद्धाकुलभयावहम् ।।

यदि कृत्तिका नक्षत्र का भेदन करता हुआ शुक्र गमन करे तो अत्यधिक वर्षा होती है । यदि रोहिणी शकट का भेद करता हुआ विचरण करे तो पृथ्वी पर भयङ्कर जनमरकी होने से गिद्धों का भय होता है ।

वराहसंहितायां तु

भिन्दन् गतोऽनलर्क्षं कूलातिक्रान्तवारिवाहाभिः ।
अव्यक्ततुङ्गनिम्ना समा सरिद्भिर्भवति धात्री ।।

यदि शुक्र कृत्तिका नक्षत्र का भेदन करता हुआ गमन करे तो किनारा काटने वाली नदियों के द्वारा पृथ्वी पर बाढ़ से ऊबड़-खाबड़ की पहचान नहीं हो पाती और समस्त पृथ्वी जल से समतल दिखाई देती है ।

काश्यपः

मृगे तु सर्वशस्यानां क्षयं कुर्याद्भृगोः सुतः ।
आर्द्रायां कलिङ्गजातान् कोशलांश्च निपीडयेत् ।।

शुक्र यदि मृगशिरा नक्षत्र में गमन करता है तो सभी प्रकार के धान्यों का क्षय करता है । आर्द्रा में विचरण करता है तो कलिङ्ग और कोसल देश के निवासियों को पीड़ित करता है ।

वराहसंहितायां तु

सौम्योपगतो रसशस्यसंक्षयायोशनाः समादिष्टः ।
आर्द्रागतस्तु कोशलकलिङ्गहा सलिलनिकरकरः ।।

शुक्र यदि मृगशिरा नक्षत्र में आता है तो रस (मधुर आदि) और धान्यों का नाश करता है । यदि आर्द्रा नक्षत्र में आता है तो कोसल तथा कलिङ्ग देश का नाश और अतिवृष्टि करता है ।

काश्यपः

पुनर्वसौ विदर्भांश्च पीडयत्युशनाः शुभः ।
पुष्ये तु वृष्टिमाख्याति पुष्टां शस्यविवृद्धये ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में स्थित रहता है तो विदर्भ देश को पीड़ित करता है तथा अन्य लोगों के लिए शुभ होता है। वही यदि पुष्य में स्थित हो तो प्रचुर वृष्टि और शस्यवृद्धि करता है।

वराहसंहितायां तु

अश्मकवैदर्भाणां पुनर्वसुस्थे सिते महाननयः।
पुष्ये पुष्टा वृष्टिर्विद्याधररणविमर्दश्च॥

यदि शुक्र पुनर्वसु नक्षत्रगत हो तो अश्मक और विदर्भ देश में अनय (उपद्रव) होता है। यदि शुक्र पुष्य नक्षत्र में स्थित हो तो अधिक वृष्टि और विद्याधरों के युद्ध में विमर्द होता है।

काश्यपः

आश्लेषासु च सर्पाणां पीडां कुर्याद् भृगोः सुतः।
मघायां तु गते घोरं भयं विन्द्यात्तु भार्गवे॥

सलिलं च भवेद्भूरि येन धात्री न दृश्यते।

यदि आश्लेषा में शुक्र हो तो सर्पों से पीड़ा होती है। यदि शुक्र मघा में स्थित हो तो भयङ्कर भय लोगों को होता है और अत्यधिक वर्षा होती है; जिससे पृथ्वी दिखाई नहीं देती है।

वराहसंहितायां तु

आश्लेषासु भुजङ्गमदारुणपीडावहश्चरन् शुक्रः।
भिन्दन् मघां महामात्रदोषकृद्भूरिवृष्टिकरः॥

आश्लेषा नक्षत्र में गमन करता हुआ शुक्र लोगों को सर्पों से अत्यन्त पीड़ित करता है। मघा को भेदन करता हुआ शुक्र महामात्र (हस्तिपति) को पीड़ित करता है और अतिवृष्टि करता है।

काश्यपस्तु

भाग्ये पुलिन्दशवरान् नाशयेत् सलिलं पतेत्।
आर्यम्णे तु भवेत् पीडा पाञ्चालकुरुजाङ्गले॥

सुवृष्टिश्च सुभिक्षश्च चरत्यस्मिन् भृगोः सुते।

यदि शुक्र भाग्य (पूर्वफाल्गुनी) नक्षत्र में गमन करता है तो पुलिन्द और शबरों का नाश करता है एवं वर्षा करता है तथा उत्तरफाल्गुनी में गमन करे तो पाञ्चाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(पञ्जाबनिवासी), कुरु देशवासी और जाङ्गल (स्वल्पोदक स्थान) में निवास करने वालों को पीड़ा तथा सुन्दर वर्षा और सुभिक्ष करता है।

वराहसंहितायां तु

भाग्ये शवरपुलिन्दप्रध्वंसकरोऽम्बुनिवहमोक्षाय।
आर्यम्णे कुरुजाङ्गलपाञ्चालघ्नः सलिलदायी॥

पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र को भेदन करता हुआ शुक्र शबर-पुलिन्दजनों का नाश और अतिवृष्टि करता है। उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र का भेदन करता हुआ शुक्र कुरु देशवासी, जाङ्गल और पञ्जाब के निवासियों का नाश तथा वृष्टि करता है।

काश्यपः

हस्ते प्राप्ते कौरवाणां पीडां चित्रकरेषु च।
जलस्य तु निरोधं वै कुर्यादेवं तु भार्गवः॥

सुवृष्टिं कूपकृत्पीडां चित्राभेदं यदा व्रजेत्।

हस्त नक्षत्र में स्थित शुक्र कौरवों और चित्रकारों को पीड़ित करता है तथा अवृष्टि करता है। यदि शुक्र चित्रा नक्षत्र का भेदन करता है तो सुवृष्टि और कुआँ बनाने वालों को पीड़ित करता है।

वराहसंहितायाम्

कौरवचित्रकराणां हस्ते पीडा जलस्य च निरोधः।
कूपकृदण्डजपीडा चित्रास्थे शोभना वृष्टिः॥

हस्त नक्षत्र में स्थित शुक्र कौरवों और चित्रकारों को पीड़ित तथा अतिवृष्टि करता है। चित्रा में स्थित शुक्र कुआँ खोदने वालों और पक्षियों को पीड़ित करता है तथा सुन्दर वृष्टि करता है।

काश्यपः

स्वातिं स्थित्वा सुवृष्टिं च वणिङ्नाविकभीतिकृत्।

स्वाती नक्षत्र में स्थित होकर शुक्र सुवृष्टि करता है और वाणिज्य करने वालों तथा नाविकों को भयभीत करता है।

वराहसंहितायान्तु स्वातिगतिमात्रेण फलमुक्तम्

स्वातौ प्रभूतवृष्टिर्दूतवणिङ्नाविकान् स्पृशत्यनयः।

स्वाती नक्षत्र में स्थित शुक्र अतिवृष्टि करता है तथा दूत, वणिक् और नाविक लोगों में अनय (उपद्रव) फैलाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपः

विशाखायां सुवृष्टिश्च मैत्रे मैत्रं विकाश्यते।
ऐन्द्रे पौरविरोधः स्यान्मूले तु भिषजां भयम्॥

विशाखा नक्षत्र में स्थित शुक्र सुवृष्टि करता है और अनुराधा में स्थित शुक्र लोगों में मित्रता बढ़ाता है; परन्तु ज्येष्ठा में स्थित शुक्र पुरवासियों में विरोध और मूल में वैद्यों को भय देता है।

वराहसंहितायां तु

ऐन्द्राग्नेऽपि सुवृष्टिर्वणिजां च भयं विजानीयात्।
मैत्रे क्षत्रविरोधो ज्येष्ठायां क्षत्रमुख्यसन्तापः॥

मौलिकभिषजां मूले त्रिष्वपि चैतेष्वनावृष्टिः।

विशाखा नक्षत्र में स्थित शुक्र सुन्दर वृष्टि करता है और वाणिज्य कर्म करने वालों को पीड़ित करता है। अनुराधा नक्षत्र में स्थित शुक्र क्षत्रियों में विरोध, ज्येष्ठा में क्षत्रियों के प्रधान का नाश और मूल में स्थित शुक्र प्रधान वैद्यों का नाश करता है तथा इन तीनों (अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल) नक्षत्रों में जब तक शुक्र बैठा रहता है तब तक अनावृष्टि करता है।

काश्यपः

आषाढयोर्व्याधिभयं वैष्णवे श्रवणे रुजः।
धनिष्ठायां कर्मकृतां वारुणे शौण्डिकक्षयः।
प्रौष्ठपादे व्याघ्रहिंसा आहिर्बुध्न्ये फलक्षयः।
पापिनां सनृपाणां च पौष्णे विन्द्यान्महाभयम्॥

पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्रों में स्थित शुक्र लोगों में व्याधिभय, श्रवण और धनिष्ठा में रोग, धनिष्ठा में कर्म करने वालों का क्षय, शतभिषा में शौण्डिकों (मद्यविक्रेताओं = कलवारों) का क्षय, पूर्वभाद्र में व्याघ्रहिंसा (व्याघ्रभय), उत्तरभाद्र में फलों का नाश और रेवती में शुक्र के रहने पर पापियों तथा राजाओं को महान् भय होता है।

वराहसंहितायां तु

आप्ये सलिलजपीडा विश्वेशे व्याधयः प्रकुप्यन्ति।
श्रवणे श्रवणव्याधिः पाखण्डभयं धनिष्ठासु॥

शतभिषजि शौण्डिकानामजैकभे द्यूतजीविनां पीडा।
कुरुपाञ्चालानामपि करोति चास्मिन् सितः सलिलम्॥

आहिर्बुध्न्ये फलमूलतापकृद्यायिनां च रेवत्याम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में स्थित शुक्र जल में उत्पन्न जीवों को पीड़ित करता है, उत्तराषाढ़ नक्षत्र में रोगों का प्रकोप, श्रवण में कर्णरोग, धनिष्ठा में पाखण्डियों (वेदनिन्दकों) को भय, शतभिषा में शौण्डिकों (मद्यविक्रेताओं) को पीड़ित, पूर्वभाद्रपद में जुआरियों, कुरुदेशवासियों और पञ्जाबियों को भी पीड़ित करता है तथा वृष्टि करता है। उत्तरभाद्रपद में फल-मूलों का नाश और रेवती नक्षत्र में यात्रियों (पथिकों) को पीड़ित करता है।

पराशरः

भार्ग्वार्यमानिलेन्द्राग्नेयप्रौष्ठपादरौद्रयाम्यतिष्यगतः
स्निग्धो रश्मिवान् वर्षकरः ।

पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, स्वाती, विशाखा, पूर्वभाद्र, आर्द्रा, भरणी और पुष्य नक्षत्रों में स्थित शुक्र यदि निर्मल किरण से युक्त हो तो वृष्टि करता है।

वटकणिकायाम्

भाद्रपदानिलचित्रा याम्यविशाखे सफाल्गुन्यौ ।
समुपेत्य वर्षति सितो भिन्दंश्च गतो मघाग्नेये ॥

मूलज्येष्ठाषाढापुनर्वसूनां यदैति मध्येन ।
भौमहते चामार्गे यावत्तावत् कुतः सलिलम् ॥

पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, स्वाती, चित्रा, भरणी, विशाखा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी में स्थित होकर अर्थात् उक्त नक्षत्रों में पहुँचकर और मघा तथा कृत्तिका नक्षत्रों को भेद करता हुआ शुक्र वृष्टि करता है। मूल, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ और पुनर्वसु नक्षत्रों के मध्य में विचरण करता हुआ शुक्र मङ्गल से आहत होकर अमार्ग (दक्षिणगत) में जबतक स्थित रहता है तब तक वर्षा नहीं होती है।

पराशरः

प्राजापत्यत्वाष्ट्रेन्द्राग्नेयमैत्राणामुदङ्मध्यदक्षिणेन च व्रजन् क्षेमशस्यवृष्टीनां प्रकृष्टमध्यान्तफलो भवति । मित्र्याग्नेययोरुदङ्मध्यगतः प्रजाहिताय । एवमेवाषाढादित्यरोहिणीमध्यगत इन्दोर्दक्षिणतः सुवृष्टये सूर्यादुत्तरतः ।

अवर्षके भे विचरन् यदि वर्षति भार्गवः ।
वर्षकर्क्षगतो वर्षं षोडशार्चिर्न वर्षति ॥

विशेषः– षोडशार्चिरिति सम्पूर्णरश्मिरपि न वर्षतीत्यर्थः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रोहिणी, चित्रा, विशाखा और अनुराधा नक्षत्रों के उत्तर, मध्य तथा दक्षिण से शुक्र गमन करता हो तो क्रमशः उत्तम, मध्यम और अधम क्षेम, धान्य तथा वृष्टि होती है। अनुराधा और कृत्तिका के उत्तर और मध्यगत होकर शुक्र गमन करे तो प्रजाओं के लिए हितकारक होता है। इसी तरह पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, पुनर्वसु और रोहिणी नक्षत्रों के मध्य होकर चन्द्र के दक्षिण और सूर्य के उत्तर से गमन करे तो सुन्दर वृष्टि होती है।

यदि शुक्र अवर्ष नक्षत्र (जिसमें शुक्र के रहने पर वर्षा नहीं कही गई है) में स्थित रहने पर वृष्टि करता है तो सम्पूर्ण रश्मि से युक्त रहने पर भी वर्षा वाले नक्षत्रों में जाने पर वर्षा नहीं करता है।

वृद्धगर्गस्तु

आग्नेयत्वाष्ट्रमैत्राणि रोहिणीं पित्र्यमेव च।
ऐन्द्राग्नं चापि रौद्रं च शुक्रो दक्षिणतश्चरन्॥

करोत्यर्थकृतां वृद्धिमवृष्टिं शस्यनिग्रहम्।
शस्त्रं रोगं च कोपं च ग्रीष्मे चाग्निभयं भवेत्॥

आषाढरोहिणीनां च भेदने च पुनर्वसोः।
एतदेव फलं कुर्यात् पुराणं चापि विद्रवन्॥

एषामेवोत्तरेणेह चरन् सौभिक्षवृष्टिकृत्।
भार्गवो मध्यगश्चापि कुर्यान्मध्यशुभाशुभम्॥

यदि शुक्र कृत्तिका, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, मघा, विशाखा और आर्द्रा नक्षत्रों से दक्षिण होकर विचरण करे तो धनी व्यक्तियों की वृद्धि, अवृष्टि, शस्यनिग्रह (नाश), शस्त्र और रोग का प्रकोप तथा ग्रीष्म ऋतु में अग्निभय होते हैं। पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, रोहिणी और पुनर्वसु नक्षत्रों का यदि शुक्र भेदन करे तो उक्त अशुभ फलों के साथ पुराण का नाश भी करता है। उक्त नक्षत्रों के उत्तर से यदि शुक्र विचरण करे तो सुभिक्ष और वर्षा करता है तथा मध्य होकर विचरण करे तो मध्यम फल देता है।

अथास्य वीथिनिर्णयो वराहसंहितायाम्

नागगजैरावतवृषभगोजरद्गवमृगाजदहनाख्याः।
अश्विन्याद्याः कैश्चित त्रिभाः क्रमाद्वीथयः कथिताः॥

अश्विनी आदि तीन-तीन नक्षत्रों में क्रम से नाग, गज, ऐरावत, वृष, गो, जरद्गव, मृग, अज, दहन— ये नौ वीथियाँ होती हैं। जैसे— अश्विनी, भरणी और कृत्तिका में नागवीथी; रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा में गजवीथी; पुनर्वसु, पुष्य और श्लेषा में ऐरावतवीथी; मघा, पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी में वृषवीथी; हस्त, चित्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और स्वाती में गोवीथी; विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा में जरद्गववीथी; मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ में मृगवीथी; श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा में अजवीथी; पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र और रेवती में दहन नाम की वीथी होती है। यह कुछ आचार्यों ने बताया है।

स्फुटार्थ चक्र

वीथियाँ	नाग	गज	ऐरावत	वृष	गो	जरद्गव	मृग	अज	दहन
न	अश्विनी	रोहिणी	पुनर्वसु	मघा	हस्त	विशाखा	मूल	श्रवण	पू.भा.
क्ष	भरणी	मृगशिरा	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनुराधा	पू.षा.	धनिष्ठा	उ.भा.
त्र	कृत्तिका	आर्द्रा	आश्लेषा	उ.फा.	स्वाती	ज्येष्ठा	उ.षा.	शतभि.	रेवती

तथा च काश्यपः

त्रिष्वश्विन्यादिकर्क्षेषु विज्ञेया नागवीथिका।
गजा तु रोहिणी चैवमादित्यैरावती स्मृता॥

मघाद्या वृषभा ज्ञेया गोवीथी हस्तसंज्ञिता।
जारद्गवी विशाखाद्या मूलाद्या मृगवीथिका॥

अजा तु विष्णुदैवत्या भाद्राद्या दहना स्मृता।

विशेषः– अश्विन्यादिभिस्त्रिभिर्नक्षत्रैर्भार्गवस्यैता वीथयो भवन्ति। गजा तु रोहिणी चैवेति। रोहिण्यादिनक्षत्रत्रयेण गजवीथी भवतीत्यर्थः। एवमन्यत्रादिशब्दोऽध्याहार्यः।

अश्विनी आदि तीन नक्षत्रों (अश्विनी, भरणी और कृत्तिका) में नागवीथी समझना चाहिये। इसी तरह रोहिण्यादि तीन नक्षत्रों में गजवीथी एवं पुनर्वसु आदि तीन नक्षत्रों तक ऐरावती वीथी कही गई है। मघा आदि तीन नक्षत्र में वृषवीथी जाननी चाहिये। हस्त आदि तीन नक्षत्र गोवीथिसंज्ञक हैं। विशाखा आदि तीन नक्षत्र जरद्गव वीथी, मूलादि तीन नक्षत्र मृगवीथी, श्रवणादि तीन नक्षत्र अजवीथी तथा पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र और रेवती— ये तीन नक्षत्र दहनवीथी कही गयी हैं।

तथा चासितः

अश्विन्यादित्रिभाः सर्वा नागाद्या दहनान्तिकाः।
वीथयो भृगुपुत्रस्य नव प्रोक्ताः मनीषिभिः॥

अश्विनी से तीन-तीन नक्षत्रों में क्रमशः नाग से दहनपर्यन्त शुक्र की नौ वीथियाँ मनीषियों के द्वारा कही गयी हैं।

विशेष– वराहेण त्वेता एव वीथयो नक्षत्रान्तरैः कथिताः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च वटकणिकायाम्

वीथी नागानाम्नी स्वातिर्भरणी च कृत्तिका चैव।
स्वायम्भुवात् त्रिभा स्याद्गजा तथैरावती वृषभा॥

अजपादादिचतुष्कं गौः स्याज्जारद्गवी त्रिभा श्रवणात्।
मैत्रादित्रिमृगाऽजा हस्ता चित्रा विशाखा च॥

द्वे आषाढे दहना तिस्र उदग्वीथयः क्रमाच्छुभदाः।
तिस्रो मध्या मध्या याम्याः पापा मृगाद्यास्तु॥

वराहमिहिर के मतानुसार वीथियों में नक्षत्रविभाग इस प्रकार है—

स्वाती, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रों में नागवीथी; रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा में गजवीथी; पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा में ऐरावत वीथी; मघा, पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी में वृषवीथी; पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती और अश्विनी— इन चार नक्षत्रों में गोवीथी; श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा में जरद्गव वीथी; अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल में मृगवीथी; हस्त, चित्रा और विशाखा में अजवीथी तथा पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ में दहनवीथी होती है। उक्त नाग आदि नौ वीथियों में उत्तर की तीनों (नाग, गज, ऐरावत) वीथियाँ क्रमशः शुभ फलप्रद, मध्य की तीन (वृष, गो, जरद्गव) क्रमशः मध्यम फलदायी और दक्षिण की तीन मृग, अज और दहन वीथियाँ क्रमशः पापफल देती हैं।

बृहत्संहितायाञ्च

नागा तु पवनयाम्यानलानि पैतामहात् त्रिभास्तिस्रः।
गोवीथ्यामश्विन्यः पौष्णं द्वे चापि भाद्रपदे॥

जारद्गव्यां श्रवणात् त्रिभं मृगाख्या त्रिभं च मैत्राद्यम्।
हस्तविशाखात्वाष्ट्राण्यजा त्वषाढाद्वयं दहना॥

तिस्रस्तिस्रस्तासां क्रमादुदङ्मध्ययाम्यमार्गस्थाः।
तासामप्युत्तरमध्यदक्षिणावस्थितैकैका।
उत्तरवीथीषु सितः सुभिक्षशुभकृद्गतोऽस्तमुदयं वा।
मध्यासु मध्यफलदः कष्टफलो दक्षिणस्थासु॥

अत्युत्तमोत्तमोनं सममध्यन्यूनमधमकष्टफलम्।
कष्टतरं सौम्याद्यासु वीथीषु यथाक्रमं ब्रूयात्॥

स्वाती, भरणी और कृत्तिका में नागवीथी; रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा में गजवीथी; पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा में ऐरावत वीथी; मघा, पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी में वृषवीथी; अश्विनी, रेवती, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्र— इन चार नक्षत्रों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में गोवीथी; श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा में जरद्गववीथी; अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल में मृगवीथी; हस्त, विशाखा और चित्रा में अजवीथी तथा पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़— इन दो नक्षत्रों में दहनवीथी होती है।

नाग आदि तीन-तीन वीथियाँ क्रमश: उत्तर, मध्य और दक्षिणमार्ग में स्थित हैं। जैसे— नाग, गज और ऐरावत उत्तरमार्ग में; वृष, गो और जरद्गव— ये तीनों मध्य मार्ग में तथा मृग, अज और दहन— ये तीनों दक्षिण मार्ग में स्थित हैं।

इन नागादि वीथियों में तीन-तीन में एक-एक वीथी क्रम से उत्तर, मध्य और दक्षिण मार्ग में स्थित है। जैसे— नाग उत्तर मार्ग में, गज मध्यमार्ग में और ऐरावत दक्षिण मार्ग में। पुन: वृष उत्तर मार्ग में, गो मध्यमार्ग में और जरद्गव दक्षिण मार्ग में तथा मृग उत्तरमार्ग में, अज मध्य मार्ग में और दहन दक्षिण मार्ग में स्थित है अर्थात् नाग उत्तरोत्तर मार्ग में, गज उत्तर-मध्य मार्ग में, ऐरावत उत्तर-दक्षिण मार्ग में, वृष मध्योत्तर मार्ग में, गो मध्य-मध्य मार्ग में, जरद्गव मध्य-दक्षिण मार्ग में, मृग दक्षिणोत्तर मार्ग में, अज दक्षिण-मध्य मार्ग में और दहन दक्षिण-दक्षिण मार्ग में स्थित है।

यदि उत्तरवीथी में स्थित शुक्र का उदय या अस्त हो तो सुभिक्ष और मङ्गल कार्य करने वाला, मध्यवीथी में मध्यम फल और दक्षिणवीथी में कष्ट देने वाला होता है।

नाग आदि वीथियों में क्रमश: अत्युत्तम, उत्तम, ऊन (कुछ कम शुभ फल), सम, मध्यम, न्यून (किञ्चित् शुभ फल), अधम, कष्ट और कष्टतम फल होते हैं। यथा-— नागवीथी में अत्युत्तम फल, गजवीथी में उत्तम, ऐरावत में ऊन, वृषवीथी में सम, गोवीथी में मध्यम, जरद्गववीथी में न्यून, मृगवीथी में अधम, अजवीथी में कष्ट और दहनवीथी में कष्टतम फल होता है।

विशेषः– पराशरेण त्वस्य वीथयो न कथिताः। सामान्यग्रहवीथय एवास्य वीथय इति तत्सुरसः। ताश्च मार्गनिर्णये लिखिष्यामः। वीथीफलानि तु लिख्यन्ते।

तद्यथाह पराशरः

तत्र नागवीथीगतो नागाजामाश्रितांश्च पीडयति। गजकुलानि गजवीथ्याम्। ऐरावत्यां नृपतिबलविरोधः। आर्षभ्यां वयोवित्तज्ञानबलाधिकशस्यपीडा श्लेष्मव्याधिप्रादुर्भावश्च। गोवीथ्यां शस्यगोमतां हानिः। जरद्गववीथ्यां शास्त्रविदाम्। मृगवीथ्यां मृगव्याधिः शस्यतपस्विनां पित्तरोगोद्भवश्च। अजायां शस्यकर्षब्रह्मचारिणामाधिक्यम्। दहनवीथ्यां शस्यमेघविलपनमग्निपित्तव्याधिसम्भवश्च। दीप्तिमदृक्षमपि चरन् सुभिक्षक्षेमाय निष्प्रभं विपरीतः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नागवीथी में स्थित रहने पर नाग (सर्प) और अज (भेड़-बकरे) आदि पर आश्रितों (सर्प, भेड़-बकरे से जीविका चलाने वालों) को पीड़ित करता है। गजवीथी में हस्तीसमूह को पीड़ित करता है। ऐरावत वीथी में रहने पर राजा के सैन्यबल में विरोध होता है। वृषवीथी में वय (आयुवृद्धि), धन, ज्ञान और बल की अधिकता, धान्यनाश और कफरोग की उत्पत्ति होती है।

गोवीथी में रहने पर धान्य और गाय वालों की हानि होती है। जरद्गववीथी में विद्वानों को पीड़ा होती है। मृगवीथी में मृगों में व्याधि, धान्य और तपस्विजनों का नाश तथा पित्त रोग की उत्पत्ति होती है। अजवीथी में धान्य, किसान और ब्रह्मचारियों की अधिकता होती है। दहनवीथी में रहने पर धान्य और मेघ (वर्षा) का नाश, अग्नि का प्रकोप और पित्तरोग की उत्पत्ति होती है। स्फुट किरण से युक्त होकर ग्रह यदि विचरण करे तो सुभिक्ष और मङ्गल करता है तथा प्रकाशहीन होकर विचरण करे तो उक्त के विपरीत (अशुभ) फल देता है।

अथ मण्डलफलं वटकणिकायाम्

भरणीरौद्रमघानिलशाक्रधनिष्ठादिसम्प्रवृतेषु।
चारोदयः शुभो मण्डलेषु हित्वेन्द्रपित्राद्ये॥

भरणी, आर्द्रा, मघा, स्वाती, ज्येष्ठा और धनिष्ठादि से प्रवृत्त होने वाले क्रमशः छः मण्डलों में ज्येष्ठादि और मघादि मण्डलों को छोड़कर शेष मण्डलों में शुक्र का चार और उदय शुभ होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

अथोदयास्तमयचरैः शुक्रस्य याम्याद्यं नक्षत्रचतुष्टयाद्यं मण्डलं सुभिक्षजननम्। रौद्राद्यमपि चतुष्टयं द्वितीयं सुभिक्षजननमेव। मघाद्यं पञ्चर्क्षं तृतीयं शस्यम्। स्वात्याद्यं त्रिनक्षत्रं चतुर्थमभयप्रदम्। शाक्रात् पञ्चर्क्षं पञ्चमं च रोगजननम्। धनिष्ठाद्यं षड् नक्षत्रं वसुमतिवृद्धिकरम्।

यदि शुक्र का उदय, अस्त या चार (गमन) भरणी आदि चार नक्षत्र (भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा) वाले प्रथम मण्डल में हो तो सुभिक्ष होता है। आर्द्रा आदि चार नक्षत्र (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा) वाला द्वितीय मण्डल सुभिक्ष ही करता है। मघादि पाँच नक्षत्रों (मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त और चित्रा) तक तृतीय मण्डल धान्यवृद्धि करता है। स्वाती से तीन नक्षत्र (स्वाती, विशाखा और अनुराधा) तक चतुर्थ मण्डल अभय करता है। ज्येष्ठा से पाँच नक्षत्रों (ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ और श्रवण) तक पञ्चम मण्डल रोगोत्पत्ति करता है और धनिष्ठा से छः नक्षत्रों (धनिष्ठा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती और अश्विनी) तक षष्ठ मण्डल में शुक्र पृथ्वी पर वृद्धि करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गस्तु

भरण्यादीनि चत्वारि प्रथमं शुक्रमण्डलम्।
सर्वभूतहितं नाम क्षेमसौभिक्षवर्षदम्॥

शाल्वाधिपः शूरसेनः पीड्यते मगधाधिपः।
मत्स्याधिपः शिम्बिपतिर्गवां रोगं च निर्दिशेत्॥

आर्द्रादिरोहिणीं नाम द्वितीयं शुक्रमण्डलम्।
चण्डातिवर्षी पर्जन्यः सर्वशस्यानि भावयेत्॥

क्षेमारोग्यसुभिक्षैश्च मोदन्ते सर्वतः प्रजाः।
कलिङ्गाश्मकविप्राणामनयस्तत्र जायते॥

मघादिदारुणं नाम्ना तृतीयं शुक्रमण्डलम्।
अहितं सर्वभूतानां दारुणव्याधिसङ्कुलम्॥

सञ्जातान्यपि नश्यन्ति सर्वशस्यानि चेतिभिः।
उद्योगाश्चापि जायन्ते वायुरग्निश्च कुप्यति॥

वैरोचनं चतुर्थं तु स्वात्याद्यं शुक्रमण्डलम्।
शिवाभिवर्षी पर्जन्यः सर्वशस्यानि भावयेत्॥

सुभिक्षं जायते लोके सन्धिं कुर्वन्ति पार्थिवाः।
यज्ञोत्सवसमाजैश्च प्रजा नन्दति भूरिशः॥

ज्येष्ठाद्यमूर्धदण्डं च पञ्चमं शुक्रमण्डलम्।
उद्युक्तदण्डा राजानस्तत्र यान्ति पराभवम्॥

जायन्ते विविधा रोगा दुर्भिक्षं चापि जायते।
वैश्वानरपथे ह्येष मण्डलः स्यादवृष्टिमान्॥

षट्कं षट्कं श्रविष्ठादि मण्डलं तीक्ष्णसंज्ञितम्।
तत्रोत्तमा शस्यसम्पद्वर्षते वाऽतितीक्ष्णतः॥

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा— यह चार नक्षत्र प्रथम शुक्रमण्डल होता है। यह मण्डल सभी प्राणियों के लिए शुभकारक, क्षेम, सुभिक्ष और वृष्टिकारक होता है। इसमें शाल्व राजा, शूरसेन, मगधनरेश, मत्स्य देशाधिप, शिम्बिपति को पीड़ा और गौओं को रोग होता है। इस मण्डल का नाम सर्वभूतहित है। आर्द्रा से पुनर्वसु एवं पुष्य और आश्लेषा नक्षत्रों में रोहिणी नामक द्वितीय शुक्रमण्डल होता है। इसमें मेघ से प्रचण्ड और अत्यधिक वर्षा होती है, सभी धान्यों की वृद्धि होती है एवं क्षेम, आरोग्य और सुभिक्ष होने से चारो ओर प्रजा सुखी होती है। कलिङ्ग और अश्मक देश के ब्राह्मणों में उपद्रव होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त और चित्रा नक्षत्रों में शुक्र के रहने पर तृतीय शुक्रमण्डल दारुण नाम का होता है। यह मण्डल सभी प्राणियों के लिए अशुभकारक, भयङ्कर व्याधि से व्याप्त करने वाला, उत्पन्न होने पर भी सभी धान्यों को अतिवृष्टि आदि ईतियों के द्वारा नष्ट करने वाला होता है तथा इसमें सैन्योद्योग (युद्ध) भी होते हैं और वायु तथा अग्नि कुपित होती है अर्थात् आँधी और अगलगी होती है।

स्वाती, विशाखा, अनुराधा— यह तीन नक्षत्र वैरोचन नामक चतुर्थ शुक्रमण्डल है। इसमें मेघ मङ्गलकारी वृष्टि करता है; सभी धान्यों की वृद्धि, संसार में सुभिक्ष, राजाओं में परस्पर सन्धि, यज्ञ, उत्सव आदि समाज (समूह) से प्रजा अत्यधिक आनन्दित होती है।

ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण— यह पाँच नक्षत्र ऊर्ध्वदण्ड नामक पञ्चम शुक्रमण्डल है। इस मण्डल में शुक्र के स्थित होने पर राजा लोग उग्र दण्ड देने वाले और पराजय को प्राप्त करने वाले होते हैं और अनेक रोग तथा दुर्भिक्ष होते हैं। वैश्वानर (दक्षिण) मार्गगत नक्षत्रमण्डल में अवृष्टि होती है।

धनिष्ठा से छः नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती और अश्विनी) तीक्ष्ण नामक छठा मण्डल होता है। इसमें धान्योत्पत्ति उत्तम और तीक्ष्ण (प्रचुर) वर्षा होती है।

वराहसंहितायां तु

भरणीपूर्वं मण्डलमृक्षचतुष्कं सुभिक्षकरमाद्यम्।
बङ्गाङ्गमगधवाह्लिककलिङ्गदेशेष्वभयजननम्[१] ॥

अत्रोदितमारोहेद् ग्रहोऽपरो यदि सितं ततो हन्यात्।
भद्राश्वशूरसेनकयौधेयककोटिवर्षनृपान् ॥

भचतुष्टयमार्द्राद्यं द्वितीयममिताखुशस्यसम्पत्त्यै।
विप्राणामशुभकरं विशेषतः क्रूरचेष्टानाम् ॥

अन्येनात्राक्रान्ते म्लेच्छाटविकश्वजीविगोमन्तान्।
गोनर्दनीचशूद्रान् वैदेहांश्चानयः स्पृशति ॥

विचरन् मघादिपञ्चकमुदितः शस्यप्रणाशकृच्छुक्रः।
क्षुत्तस्करभयजननो नीचोन्नतिसङ्करकरश्च ॥

पित्र्याद्येऽवष्टब्धो हन्त्यशमकनाविकान्[२] शवरशूद्रान्।
पौण्ड्रापरान्त्यमौलिकवनवासिद्रविडसामुद्रान् ॥

१. देवेषु भयजननम् इति पाठान्तरम्।
२. शूलिक इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वात्याद्यं भत्रितयं मण्डलमेतच्चतुर्थमभयकरम् ।
ब्रह्मक्षत्रसुभिक्षाभिवृद्धये मित्रभेदाय ॥
अत्राक्रान्ते मृत्युः किरातभर्त्तुः पिनष्टि चेक्ष्वाकून् ।
प्रत्यन्तावन्तिपुलिन्दतङ्गणान् शूरशेनांश्च ॥
ज्येष्ठाद्यं पञ्चर्क्षं क्षुत्तस्कररोगप्रदं प्रबाधयति ।
काश्मीराश्मकमत्स्यान् सचारुदेवीमवन्तींश्च ॥
अत्रारोहेद् द्रविडाभीराम्बष्ठत्रिगर्त्तसौराष्ट्रान् ।
नाशयति सिन्धुसौवीरकांश्च काशीश्वरस्य वधः ॥
षष्ठं षण्नक्षत्रं शुभमेतन्मण्डलं धनिष्ठाद्यम् ।
भूरिधनगोकुलाकुलमनल्पधान्यं क्वचित्सभयम् ॥
अत्रारोहेच्छौलिकगान्धारावन्तयः प्रपीड्यन्ते ।
वैदेहवधः प्रत्यन्तयवनशकदासपरिवृद्धिः ॥

भरणी से चार नक्षत्र (भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा) प्रथम मण्डल के होते हैं। यदि इस मण्डल में शुक्र का उदय या अस्त हो तो संसार में सुभिक्ष होता है तथा वङ्ग, अङ्ग, मगध, वाह्लीक और कलिङ्ग देशों में अभय होता है (पाठान्तर से इन देशों में भय होता है)। यदि प्रथम मण्डल में शुक्र के ऊपर कोई ग्रह हो तो भद्राश्व, शूरसेन, यौधेयक और कोटिवर्ष देशों के राजाओं का नाश होता है।

आर्द्रा से चार नक्षत्र (आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा) तक द्वितीय मण्डल होता है। यदि इस मण्डल में शुक्र का उदय या अस्त होता है तो अधिक वृष्टि और धान्यों की अधिक उत्पत्ति होती है। लेकिन ब्राह्मणों के लिए यह अशुभकारी और दुष्टों के लिए विशेष अनिष्टकारी है। इसमें यदि शुक्र किसी अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो म्लेच्छ, वन में रहने वाले, कुत्तों से आजीविका करने वाले, गो रखने वाले, गोनर्द (पतञ्जलि की जन्मभूमि) में निवास करने वाले, अधम कर्म करने वाले, नीच (शूद्र), विदेह देश (मिथिला) में रहने वाले— इन सबों को अनीति स्पर्श करती है (ये सब उपद्रवग्रस्त होते हैं)।

मघा से पाँच नक्षत्र (मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त और चित्रा) तक तृतीय मण्डल होता है। इसमें उदित शुक्र धान्य का नाश करने वाला, दुर्भिक्ष और चोरों को भय देने वाला, अधम कर्म करने वालों की उन्नति करने वाला और वर्णसङ्कर की उत्पत्ति करने वाला होता है। यदि इस मघादि मण्डल में स्थित शुक्र अन्य ग्रह से आक्रान्त होता है तो अश्मक देशवासी, नाविक, शबर, शूद्र, पुण्ड्र देशवासी, पश्चिम वन के मूल निवासी (आदिवासी), द्रविड़ तथा समुद्र तीर में रहने वालों का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वाती से तीन नक्षत्र (स्वाती, विशाखा और अनुराधा) तक चतुर्थ मण्डल होता है। यदि इसमें शुक्र का उदय या अस्त होता है तो वह ब्राह्मण और क्षत्रियों के लिए सुभिक्ष और उन्नति करने वाला होता है। परम मित्रों में परस्पर द्वेष उत्पन्न करता है। यदि इस मण्डल में स्थित शुक्र किसी अन्य ग्रह से आक्रान्त होता है तो किरातों के स्वामी की मृत्यु, इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न होने वालों, प्रत्यन्त (म्लेच्छ देश), अवन्ती, पुलिन्द, तङ्गण और शूरसेन देश में निवास करने वालों का नाश करता है।

ज्येष्ठा से पाँच नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ और श्रवण) तक पञ्चम मण्डल होता है। यदि इसमें शुक्र का उदय या अस्त हो तो दुर्भिक्ष, चोर और रोग का भय होता है तथा काश्मीर, अश्मक, मत्स्य, चारुदेवी नदी के तट और अवन्ती देशवासियों को पीड़ित करता है। यदि इस मण्डल में स्थित शुक्र किसी अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो द्रविड़, आभीर (शबर), अम्बष्ठ, त्रिगर्त्त, सौराष्ट्र, सिन्धु और सौवीरक देशवासियों का तथा काशिराज का नाश करता है।

धनिष्ठा से छः नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती और अश्विनी) तक षष्ठ मण्डल होता है। इसमें यदि शुक्र का उदय या अस्त होता है तो शुभ करता है। पृथ्वी बहुत धन, गौ और धान्यों से व्याप्त होती है; परन्तु कहीं-कहीं पर भय होता है। यदि इस मण्डल में शुक्र किसी अन्य ग्रह से आक्रान्त होता है तो शूलिक, गान्धार और अवन्ती देशों में निवास करने वालों को पीड़ा होती है। विदेह देश (मिथिला) में स्थित जनों की मृत्यु होती है तथा गुहा में निवास करने वाले, यवन, शक और दासों की वृद्धि होती है।

पराशरस्तु वैरोचनाख्यं चतुर्थमण्डलं चित्राद्यमाह। तद्यथा

आद्यरोहितदारुणवैरोचनोर्ध्वदण्डतीक्ष्णानि षण्मण्डलानि। तत्र भरण्यादीनि चत्वारि चतुर्नक्षत्राणि। ज्येष्ठाश्रविष्ठाद्ये द्वे पञ्चषण्नक्षत्रे। अथैतेषु मण्डलेषु प्रविचरन् क्रमात् गोब्रह्मचारिनृपपत्नीतनयसुहृद्भूपालप्रजानामुपतापाय। तथैवोदयास्तमयौ कुर्वन् प्रथमेऽतीव सुभिक्षायाङ्गबङ्गशवरकलिङ्गाननयैः स्पृशति। अत्रैवान्यग्रहारूढ़ोऽसौ माञ्जिष्ठपुरुषादशूरसेनपटच्चरपण्यागाराभावाय। द्वितीयेऽन्नसम्पत्प्रदोऽवन्त्यश्मकमालवपाण्ड्यकैकयोपद्रवाय। तृतीये शकसौराष्ट्रनृपानयायान्यग्रहारूढः काश्मीरयवनक्षुद्रमालवकिरातशकाननयेन युनक्ति। चतुर्थेषु वर्षशस्यक्षेमाणि विधत्ते। अन्यग्रहारूढः सुभगान् शिक्षितांश्चोपतापयति।

पञ्चमे मगधान् शूद्रान् जनाननयैः स्पृशति। अत्रैवान्यग्रहारूढ़ो व्याधिभयदुर्भिक्षाय वर्षाणि सृजति। विशेषतस्तु कुरुपाञ्चाल-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शाल्वेयशूरसेनपटच्चराहारप्रभृतयोऽभिपीड्यन्ते। षष्ठे बालगर्भान् बालशूद्रान् हिनस्ति। यद्यारोहेत तदा काम्बोजैः सैन्धवो नृपतिः पराजायेत। आवन्त्यश्मकाधिपती चोपसृज्येते।

प्रथम, रोहित, दारुण, वैरोचन, ऊर्ध्वदण्ड और तीक्ष्ण— ये छः शुक्र के मण्डल होते हैं। (पराशर के अनुसार) प्रथम, रोहित, दारुण और वैरोचन— ये चार मण्डल भरणी से चार-चार नक्षत्रों में होते हैं तथा ज्येष्ठादि और धनिष्ठादि से पाँच और छः नक्षत्र क्रमशः ऊर्ध्वदण्ड और तीक्ष्ण नामक मण्डल होते हैं। अर्थात् भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा तक प्रथम मण्डल; आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा तक रोहित मण्डल; मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी और हस्त तक दारुण मण्डल; चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा तक वैरोचन मण्डल; ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ और श्रवण तक ऊर्ध्वदण्डमण्डल तथा धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती और अश्विनी तक तीक्ष्ण मण्डल होते हैं। इन छः मण्डलों में विचरण करता हुआ शुक्र क्रमशः गौ, ब्रह्मचारी, राजा की पत्नी और पुत्र, मित्र, भूपाल और प्रजाओं का नाश करता है।

इसी तरह प्रथम मण्डल में यदि शुक्र उदय या अस्त करे तो अतिशय सुभिक्ष होता है तथा अङ्ग, वङ्ग, शबर और कलिङ्ग देश के निवासियों को अनीति स्पर्श करती है (ये लोग उपद्रव से युक्त होते हैं)। इस मण्डल में शुक्र के स्थित रहने पर यदि वह अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो माञ्जिष्ठ, पुरुषाद, शूरसेन, पटच्चर आदि देशवासी, पण्यागार (व्यापारियों का धनस्थान)— इन सबों का नाश होता है।

द्वितीय मण्डल में यदि शुक्र का उदय या अस्त हो तो अन्नों की उत्पत्ति अच्छी होती है; परन्तु अवन्ती, अश्मक, मालवा, पाण्ड्य, केकय— इन देशों में उपद्रव होता है।

तृतीय मण्डल में शुक्र का उदय या अस्त हो तो शक और सौराष्ट्र के राजाओं के लिए उपद्रव होता है। इस मण्डल में शुक्र अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो काश्मीर, यवन, क्षुद्र (नीच), मालव, किरात और शक देशवासियों में उपद्रव होता है।

चतुर्थ मण्डल में वर्षा, क्षेम और धान्य होते हैं। शुक्र अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो सौभाग्यवान् और शिक्षितों को पीड़ित करता है।

पञ्चम मण्डल में शुक्र मगध देशवासियों और शूद्र लोगों को उपद्रवग्रस्त करता है। इस मण्डल में शुक्र के स्थित रहने पर यदि अन्य ग्रहारूढ़ हो तो रोगभय, दुर्भिक्ष और वर्षा करता है। विशेष रूप से कुरु, पञ्जाब, शाल्व, शूरसेन, पटच्चर, अहीर (शबर) आदि देशवासियों को पीड़ित करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

षष्ठ मण्डल में यदि शुक्र का उदय या अस्त हो तो बालगर्भ और बालशूद्रों का नाश करता है। इस मण्डल में स्थित शुक्र यदि अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो सिन्धु देश का राजा कम्बोज देश के राजा से पराजित होता है और अश्मक एवं अवन्ती के राजा पीड़ित होते हैं।

वराहसंहितायाम्

अपरस्यां स्वात्याद्यं ज्येष्ठाद्यं चापि मण्डलं शुभदम्।
पित्र्याद्यं पूर्वस्यां शेषाणि यथोक्तफलदानि॥

पूर्वोक्त स्वाती आदि (चतुर्थ) और ज्येष्ठा आदि (पञ्चम) मण्डल पश्चिम दिशा में शुभ करने वाले होते हैं। मघा आदि (तृतीय) मण्डल पूर्व दिशा में शुभद होता है। शेष तीन मण्डलों (प्रथम, द्वितीय और षष्ठ) का यथोक्त फल समझना चाहिये।

पराशरः

आद्यमेव मण्डलं वातमार्गमाहुस्तीक्ष्णम्।
व्यालमार्गमूर्ध्वदण्डं वैश्वानरमृते श्रवणात्।
वातमार्गगोऽतिरूक्षो वातरिक्ताम्भोदाशनिदः।
व्यालेन विषाग्निचौरप्राबल्यम्। वैश्वानरेण
तीव्रवर्णनिग्रहकर्त्ता च।

प्रथम मण्डल को ही वातमार्ग कहा गया है, जो तीक्ष्ण फल देता है। ऊर्ध्वदण्ड को व्यालमार्ग और श्रवण को छोड़कर शेष मण्डलगत नक्षत्रों को वैश्वानर मार्ग कहा गया है। वातमार्ग में अत्यन्त रूक्ष होकर शुक्र यदि गमन करे तो वात (आँधी-तूफान) मेघ के विना भी वज्र गिराने वाली होती है। व्यालमार्ग से विचरण करे तो विष, अग्नि और चोरों की प्रबलता होती है। वैश्वानर मार्ग से शुक्र के गमन करने पर तीव्र वर्ण ब्राह्मण आदि (तेजयुक्त) वर्णों का नाश करता है।

हरिवंशे कंसवधनिमित्तम्

वैश्वानरपथे शुक्रो ह्यतिचारं चचार ह।

वैश्वानर मार्ग में शुक्र ने अतिचार किया। अतिचारी अर्थात् अधिक तीव्र चलने वाला।

अथास्यायनक्रमेण पञ्चमार्गानाह पराशरः; तद्यथा

प्राक्प्रतीच्योरुदयास्तमयादुदङ्मध्यदारुणास्त्रयो मार्गा-स्तेषां दक्षिणोत्तरमध्यमोत्तरमध्यममध्यमदक्षिणा गत्यन्तरालदेशं पञ्चधा विभज्य पञ्च मार्गाः कल्पनीयाः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– एतदुक्तं भवति — दक्षिणायनादनुलोमविलोमाभ्यां षट्त्रिंशद्भिरंशकैरुत्तर-मध्यमोत्तरमध्यममध्यमदक्षिणदक्षिणाः पञ्च मार्गा भवन्तीति। एतेष्वस्तमितस्य भार्गवस्य क्रमेणास्तदिनान्याह।

शुक्र के पूर्व और पश्चिम दिशाओं में उदय या अस्त होने से उत्तर मध्यम और दारुण (दक्षिण) तीन भागों (मुख्य) में गति के अनुसार पाँच मार्ग-दक्षिण, उत्तर, मध्यम, उत्तरमध्यम और मध्यमदक्षिण— इस प्रकार गमन प्रदेश को पाँच भागों में विभाजित करके जानना चाहिये।

अर्थात् दक्षिणायन से अनुलोम और विलोम (मार्ग-वक्र) से ३६-३६ अंशों में उत्तर, मध्यमोत्तर, मध्य, मध्यमदक्षिण और दक्षिण— ये पाँच मार्ग होते हैं। इन मार्गों में अस्तङ्गत शुक्र के अस्तदिनों की संख्या भी पराशर ने कही है।

पराशरः

प्रागस्तमित उत्तरोत्तरमध्यमध्यमानुत्तरदक्षिणेषु मार्गेषु पञ्चपञ्चाशत् षष्टिपञ्चसप्तत्येकाशीतिनवतिभिर्दिवसैः पश्चाद्दर्शनमुपैति। प्रतीच्यामस्तमितः षडष्टद्वादश-पञ्चदशचतुर्विंशतिभिरहोभिः प्रागुदयते। अन्यथा जगदशिवकरो भवति।

यदि शुक्र पूरब दिशा में अस्त हो तो अस्त दिन के अनन्तर उत्तर, उत्तरमध्य, मध्यम, मध्यमानुत्तर (मध्यम-दक्षिण) और दक्षिण मार्गों के अनुसार क्रमशः ५५ दिन, ६० दिन, ७५ दिन, ८१ दिन और ९० दिनों के बाद पश्चिम में दर्शन देता है। पश्चिम दिशा में अस्त होने के बाद मार्गानुसार उत्तर मार्ग में रहने पर छः दिनों के बाद, उत्तर-मध्यमार्ग में ८ दिन, मध्यम मार्ग में १२ दिन, मध्यम-दक्षिण मार्ग में १५ दिन और दक्षिण मार्ग में २४ दिनों के बाद पूर्व दिशा में दर्शन देता है। उक्त के विपरीत स्थिति में यह शुक्र संसार के लिए अशुभ करने वाला होता है।

अथोदयास्तफलम्। तत्र पराशरः

प्रागुदितो नवभिर्मासैरेकविंशतिनक्षत्राणि चरति। प्रतीच्यामष्टभिरेकोनविंशतिनक्षत्राण्याप्तः शुभा-शुभफलः।

कार्त्तिके तु यदा मासि कुरुतेऽस्तमनोदयौ।
तदाऽह्नां नवतिं पूर्णां देवो भुवि न वर्षति॥

शुक्र पूरब में उदित होकर नौ मासों में २१ नक्षत्रों में विचरण करता है। पश्चिम दिशा में उदित होकर आठ मासों में १९ नक्षत्रों का भोग करता है और तदनुसार ही शुभाशुभ फल देता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि कार्त्तिक मास में शुक्र का उदय या अस्त होता है तो ९० दिनों (३ महीनों) तक देवता (इन्द्र) पृथ्वी पर वर्षा नहीं करते हैं।

काश्यपः

कृष्णपक्षे पञ्चदशीचतुर्दश्यष्टमीषु च।
शुक्रो यदोदयं कुर्यात् तदा वृष्टिं विमुञ्चति॥

यदि कृष्ण पक्ष की अमावास्या, चतुर्दशी और अष्टमी तिथियों में शुक्र का उदय हो तो वर्षा होती है।

वराहसंहितायां

चतुर्दशे पञ्चदशेऽथ वाऽष्टमे तमिस्रपक्षस्य तिथौ भृगोः सुतः।
यदा व्रजेद्दर्शनमस्तमेव वा तदा मही वारिमयी च लक्ष्यते॥

यदि कृष्ण पक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी या अमावास्या तिथि में शुक्र का उदय अथवा अस्त हो तो पृथ्वी जलमग्न दिखाई देती है।

शान्तिः

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु भार्गवोत्पातेषु भार्गव-पूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्य-शान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

शुक्र द्वारा उत्पन्न उत्पातों की विशेष शान्तिविधि नहीं कहे जाने से उत्पातफल की गुरुता और लघुता का ज्ञान कर शुक्र की पूजा और प्रचुर मात्रा में सुवर्ण, अन्न, गौ, पृथ्वी आदि का दान करके सामान्य शान्ति करनी चाहिये।

फलपाकसमयो गार्गीये

षाण्मासिकस्त्वौशनसः – इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे भार्गवाद्भुतावर्त्तः

शुक्रोत्पात का शुभाशुभ फल छः महीनों में घटित होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ शनैश्चराद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकलक्षणमाह पराशरः

पाण्डुः स्निग्धोऽमलः श्यामो विशुद्धार्चिः शनैश्चरः ।
मार्गस्थश्चापि सव्यश्च नक्षत्राद्धित इष्यते ॥

विशेषः– मार्गस्थश्चापि सव्यश्चेति उत्तरमार्गस्थः ।

यदि शनैश्चर पाण्डु वर्ण वाला, स्निग्ध, निर्मल, श्याम वर्ण और विपुल किरण से युक्त हो तथा नक्षत्र के उत्तर से विचरण करता हो तो शुभ फल देता है ।

येषामयं स्वामी तेषामेवंविधो विशेषेण हितो विपरीतो विशेषेण विपरीतः ।

शनैश्चरस्वामिकान्याह यवनेश्वरः

आनर्त्तवाहाहत[१]वृद्धनीचपुंस्त्वोनसत्त्वालसदीक्षितानाम् ।
विद्धान्नदासाञ्जनसीसलौहकाष्ठायसानां प्रभुरर्कसूनुः ॥

आनर्त्त, भार से आहत, वृद्ध, नीच, नपुंसक प्राणी, आलसी, अदीक्षित, विद्धान्न (निकृष्ट अन्न), दास, अञ्जन, सीसा, लोहा, काष्ठ, अयस् (लौहपत्र)— इन सबों का स्वामी शनि है ।

वटकणिकायान्तु

सरस्वती यत्र गता प्रणाशं वेदस्मृती मालवकं सुराष्ट्रम् ।
पाश्चात्त्यदेशो विदिशाननं च शौरेः स्मृतं पुष्करमर्बुदं च ॥

सस्वती नदी जहाँ पर अलक्षित हुई, वह प्रदेश (पश्चिम देश), वेदस्मृती नदी, मालवा देश, सौराष्ट्र, पाश्चात्य देश (पश्चिम देश), विदिशा नगरी, पुष्कर और अर्बुद देश का स्वामी शनि है ।

काश्यपस्तु

अर्बुदो रैवतगिरिः सौराष्ट्राभीरकास्तथा ।
क्रतुभुजो प्रभासं सरस्वती दक्षिणा दिशः ॥[२]

आनर्त्तशूद्रविदिशः खलतैलिकनीचकाः ।
वेदस्मृती शौकरिका मलिनश्च नदीतटम् ॥

---

१. मृतदाहनं इति पाठान्तरम् ।
२. सरस्वती पश्चिमाशा प्रभासं कुरुजाङ्गलम् इति पाठान्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुःशीलकाः शाकुनिकाः पशुपालवधास्तथा।
पाखण्डिनश्च वैतण्डा निर्ग्रन्था शवराः शकाः॥

विरूपाः कटुतिक्ताश्च रसायनविघातकाः।
पुलिन्दास्तस्कराः सर्पा महिषोष्ट्रखरा अपि॥

चणका वातला वल्लाः पुंस्त्वसत्त्वविवर्जिताः।
काकगृद्धश्रृगालानां मृगाणां च शनैश्चरः॥

अर्बुद, रैवत पर्वत, सौराष्ट्र, आभीर, क्रतुभुज, प्रभासक्षेत्र, सरस्वती नदी की दक्षिण दिशा, आनर्त्त, शूद्र, विदिशा नगरी, खल, तेली, नीच, वेदस्मृती नदी, सूअर पालने वाले (डोम), मलिन रहने वाले, नदी का किनारा, दुःशील, शाकुनिक (पक्षी को पालने वाले या मारने वाले), पशुपालन करने वाले, पशु-वध करने वाले, पाखण्डी, वितण्डी, निर्ग्रन्थ (मूर्ख या बन्धनमुक्त), शबर, शक, कुरूप, कटु (मरीच, मिर्च आदि), तिक्त (निम्ब आदि), रसायन, घातक, पुलिन्द, चोर, सर्प, महिष, ऊँट, गदहा, चना, वातल (मटर, राजमाष आदि) धान्य, वल्ला, नपुंसक, कौआ, गृध्र, गीदड़ और मृगों का स्वामी शनि है।

वराहसंहितायां तु

आनर्त्तार्बुदपुष्करसौराष्ट्राभीरशूद्ररैवतकाः।
नष्टा यस्मिन् देशे सरस्वती पश्चिमो देशः॥

कुरुभूमिजाः प्रभासं विदिशा वेदस्मृती नदीतटजाः।
खलमलिननीचतैलिकविहीनसत्त्वोपहतपुंस्काः॥

बन्धनशाकुनिकाशुचिकैवर्त्तविरूपवृद्धशूकरिकाः।
गणपूज्यस्खलितव्रतशवरपुलिन्दार्थपरिहीनाः॥

कटुतिक्तरसायनविधवयोषितो भुजगतस्करमहिष्यः।
खरकरभचणकवातुलमाषतिलाश्चार्कपुत्रस्य॥

आनर्त्त, अर्बुद, पुष्कर, सौराष्ट्र, आभीर, शूद्र, रैवतक, सरस्वती नदी जहाँ पर नष्ट (अलक्षित) हो जाती है वह (पश्चिम प्रदेश), कुरुभूमि में उत्पन्न होने वाले (थानेश्वर में निवास करने वाले), प्रभास क्षेत्र, विदिशा नगरी, वेदस्मृती नदी के तट पर उत्पन्न होने वाले (निवासी), खल, मलिन, नीच, तेली, निर्बल, नपुंसक, बन्धस्थान (कारागार) स्थित, पक्षियों को मारने वाले, अपवित्र, धीवर, कुरूप, वृद्ध, सूअर पालने वाले, गणों में प्रधान, नियम-व्रत का पालन नहीं करने वाले, शबर, पुलिन्द (म्लेच्छ), दरिद्र, कटु द्रव्य (मरीच आदि), तिक्त द्रव्य (निम्ब आदि),

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रसायन, विधवा स्त्री, सर्प, चोर, महिष, गदहा, ऊँट, चना, वातल धान्य, माष, तिल— इन सबों का स्वामी सूर्यपुत्र (शनि) है।

अशुभसूचकशनिलक्षणमाह वृद्धगर्गः

वपुष्मात्रश्मिमाली च सूर्यचन्द्रसमीपगः ।
नातीव च विनिर्भाति नित्यं च परिवेषवान् ॥

भवत्यथ सधूमश्च यदा स्यात्तु शनैश्चरः ।
राजानश्च विनश्यन्ति तदा देशाश्च मानुषाः ॥

कृष्णः कषायवर्णो वा पीतको लोहितोऽपि वा ।
श्यामो वा धूम्रवर्णो वा वैश्वानरपथे स्थितः ॥

त्रीणि वर्षाणि नक्षत्रं पीडयन्नुपगच्छति ।
तदा देशो निराधारः शून्यो भवति नित्यशः ॥

शनि यदि किरणों से युक्त होकर मूर्त्तिमान हो और चन्द्र तथा सूर्य के निकट हो, नित्य परिवेष से घिरा हो और स्पष्ट दिखाई नहीं दे या सधूम (धूम्र-सा या धूम्र वर्ण) दिखाई दे तो राजा, देश और मनुष्यों का नाश होता है। यदि शनि का वर्ण कृष्ण या कषाय हो, पीला या लाल हो, श्याम या धूम्र हो और वैश्वानर (दहन) मार्ग में स्थित हो तथा किसी एक नक्षत्र को तीन वर्षों तक भेदन करते हुए गमन करे तो देश निराधार होता है और नित्य (दिन-प्रतिदिन) शून्य (क्षय) होता है।

अथ वर्णफलं वराहसंहितायाम्

वैदूर्यकान्तिरमलः शुभदः प्रजानां [१]बालातसीकुसुमवर्णनिभश्च शस्तः ।
यञ्चापि वर्णमुपगच्छति तत्सवर्णान् सूर्यात्मजः क्षपयतीति मुनिप्रवादः ॥

यदि शनैश्चर का वर्ण वैदूर्य मणि के समान निर्मल हो तो वह प्रजाओं के लिए शुभ करने वाला होता है। बाल अतसी (तीसी) के पुष्प के समान (पाठान्तर से बाण या अतसी के पुष्प के समान) काला-नीला वर्ण हो तो शुभ होता है तथा शनि जो वर्ण धारण करे, उस वर्ण के मनुष्यों का नाश करता है अर्थात् यदि श्वेत वर्ण का शनि हो तो ब्राह्मणों का, रक्त वर्ण का हो तो क्षत्रियों का, पीत वर्ण का हो तो वैश्यों का और कृष्ण वर्ण का हो तो शूद्रों का नाश करता है। यह मत प्राचीन मुनियों का है।

तथा च पराशरः

यद्यद्वर्णस्तत्तद्वर्णविनाशको भवति ।

शनि का जो वर्ण होता है, उस वर्ण के लोगों का नाश करता है।

---

१. वाणातसी इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गर्गस्तु

भवत्यर्कात्मजे रूक्षे श्यामपीतारुणप्रभे।
तदाऽऽत्मजानां भावानां क्षुच्छस्त्राग्निकृतं भयम्॥

शनैश्चर का वर्ण यदि श्याम, पीत और रक्त होकर रूक्ष दिखाई दे तो अपने आत्मीय (जिसका स्वामी होता है) जनों को क्रमशः क्षुधा, शस्त्र और अग्नि से भय प्रदान करता है।

पराशरः

नीलपीतः क्षुधे। रक्तभस्मचित्रवर्णः शस्त्रवैरदोऽण्डजनिहन्ता – इति।

विशेषः– शस्त्रदो वैरदश्चेति सम्बन्धः। रक्तादिवर्णत्रयस्यैतत्क्रमेण फलत्रयम्।

यदि शनि का वर्ण नील और पीत हो तो लोगों में क्षुधाभय होता है। रक्त वर्ण, भस्म के समान वर्ण या चित्रवर्ण (अनेक वर्ण) का शनि दिखाई दे तो क्रमशः शस्त्रभय, वैरभयदायक और अण्डज (पक्षियों) का नाश करता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

अण्डजहा रविजो यदि चित्रः क्षुद्भयकृद्यदि पीतमयूखः।
शस्त्रभयाय च रक्तसवर्णो भस्मनिभो बहुवैरकरश्च॥

यदि शनैश्चर का वर्ण अनेक वर्णों का हो तो पक्षियों का नाश, पीला हो तो दुर्भिक्ष, रक्त वर्ण का हो तो युद्ध और भस्म के सदृश हो तो प्रजाओं में द्वेष होता है।

वृद्धगर्गस्तु

मांसशोणितसङ्काशो यदा स्यात्तु शनैश्चरः।
अयुध्यमानाः शस्त्रेण वधमृच्छन्ति मानवाः॥

यदि शनैश्चर का वर्ण मांस और शोणित (रक्त) की तरह हो तो मनुष्य शस्त्रों से युद्ध करते हुए मृत्यु को प्राप्त करते हैं।

हरिवंशे मत्स्यपुराणे च हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

शनैचरो लोहिताङ्गो लोहिताङ्गसमद्युतिः।

हिरण्यकशिपु के वध के समय शनैश्चर रक्त के समान लाल वर्ण का दिखाई दिया।

अथ नक्षत्रचारफलं विष्णुधर्मोत्तरे

यद्देशद्रव्यपुरुषनक्षत्रेषु शौरिर्विचरति तत्पीडावहो भवति।

शनैश्चर जिन देश, द्रव्य और मनुष्यों के नक्षत्रों में विचरण करता है, उन्हें पीड़ा होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वटकणिकायां तु

यस्मिन्नृक्षे विचरति सौरो बलवाञ्छुभैरयुतदृष्टः ।
तद्देशजन्यकर्मद्रव्यघ्नोऽतीव पापयुतः ॥

शनैश्चर जिस नक्षत्र में विचरण करता हुआ बलवान शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट नहीं हो तो उस नक्षत्र वाले देश (स्थान) के कार्य और द्रव्यों का नाश करता है। यदि पाप ग्रह से युक्त हो तो अतिशय विनाशकारी होता है।

वराहसंहितायां तु

श्रवणानिलहस्तार्द्राभरणीभाग्योपगः सुतोऽर्कस्य ।
प्रचुरसलिलोपगूढां करोति धात्रीं यदि स्निग्धः ॥

यदि शनैश्चर श्रवण, स्वाती, हस्त, आर्द्रा, भरणी या पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र में स्थित होकर निर्मल हो तो पृथ्वी को वर्षा के जल से परिपूर्ण करता है।

तथा च गर्गः

याम्यवायव्यसावित्र्यरौद्रश्रवणसंस्थितः ।
भवेत् स्निग्धवपुः सौरो [1]मार्गो चैवातिवर्षदः ॥

यदि शनैश्चर मार्गी और निर्मल शरीर वाला होकर भरणी, स्वाती, हस्त, आर्द्रा या श्रवण नक्षत्र में स्थित हो तो अत्यन्त वर्षा होती है।

विशेष– 'मार्गो' की जगह 'भाग्ये' पाठ ही शुद्ध है। भाग्य (पूर्वफाल्गुनी) का उल्लेख वराहवचन से स्पष्ट है।

वराहसंहितायाम्

अहिवरुणपुरन्दरदैवतेषु सुक्षेमकृन्न चातिजलम् ।
क्षुच्छस्त्रावृष्टिकरो मूले प्रत्येकमपि वक्ष्ये ॥

यदि शनि आश्लेषा, शतभिषा या ज्येष्ठा में स्थित हो तो सुन्दर क्षेम और थोड़ी वृष्टि होती है। यदि मूल में स्थित हो तो क्षुधा (दुर्भिक्ष), युद्ध और अवृष्टि होती है। इस तरह संक्षेप में फल कहकर अब प्रत्येक नक्षत्र का फल कहते हैं।

गर्गस्तु

सार्पवारुणमाहेन्द्रनक्षत्रेषु च संस्थितः ।
स्निग्धः सौरः क्षेमकरो नातिवर्षं प्रमुञ्चति ॥
क्षुच्छस्त्रावृष्टिदो मूलं सूर्यपुत्रः समाश्रितः ।

---

१. भाग्ये इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मसन्तानान्नाहाथर्वमुनिः

ब्रह्मसन्तानका नाम द्वे शते चतुरुत्तरे ।

ब्रह्मसन्तान नामक दो सौ चार केतु हैं। फल अनुक्त रहने पर भी ये पापफलद होते हैं।

वराहसंहितायां तु

द्वे शते चतुरधिके चतुरस्रा ब्रह्मसन्तानाः ।

विशेषः– अत्रापि पापफला इति सम्बन्धः ।

दो सौ चार प्रकार के ब्रह्मसन्तान नामक चतुरस्र (चतुर्भुज) मूर्त्ति वाले केतु हैं। ये पाप फल देते हैं।

तथा च गर्ग

चतुरस्रास्त्र्यस्रा वा सोष्णीषा रूप्यरश्मयः ।
द्वे शते चतुरश्चैव ब्रह्मजातसुतास्तथा ॥

विशेषः– तथेति भयवेदिनः ।

चतुर्भुज या त्रिभुज की तरह, पगड़ी वाले, चाँदी की कान्ति के समान रश्मि वाले दो सौ चार प्रकार के ब्रह्मजातसुत (ब्रह्मपुत्रों से उत्पन्न = ब्रह्मसन्तान) संज्ञक केतु हैं। ये भय देने वाले हैं।

अथ विदिक्पुत्रा वराहसंहितायाम्

शुक्ला विपुलैकतारा नव विदिशां केतवः समुत्पन्नाः ।

विशेषः– अत्रापि भयदा इति सम्बन्धः । एते विदिक्पुत्रा विदिक्ष्वेव दृश्यन्ते ।

श्वेत वर्ण वाले, विशाल मूर्त्ति वाले, एक तारा वाले नौ प्रकार के विदिशा के पुत्र केतु हैं। ये विदिशा में ही उदित होते हैं और भय देने वाले होते हैं।

तथा च गर्गः

शुक्लैकतारा विपुला विदिक्पुत्रा नव ग्रहाः ।
विदिशासु स्थिता ह्येते दृश्यन्ते भयदायकाः ॥

श्वेत वर्ण, एक तारा वाले, विपुल मूर्त्ति वाले विदिशा के पुत्र नौ प्रकार के केतु हैं। ये विदिशा में ही उदित होते हैं। ये उदित होने पर भयदायक होते हैं।

अथ भूमिसुता वराहसंहितायाम्

दर्पणवृत्ताकारा विशिखाः किरणान्विताः धरातनयाः ।
क्षुद्भयदा द्वाविंशतिरैशान्यामम्बुतैलनिभाः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दर्पण के समान, वृत्ताकार, शिखारहित, किरणों से युक्त, जल और तेल के सदृश बाईस प्रकार के भूमिपुत्र केतु हैं। ये ईशान कोण में उदित होते हैं तथा दुर्भिक्ष करते हैं।

तथा च गर्गः

समस्तवृत्ताः विशिखाः रश्मिभिः परिवारिताः।
अम्बुतैलप्रतीकाशा द्वाविंशद्भूसुताः स्मृताः।
ऐशान्यां दिशि दृश्यन्ते दुर्भिक्षभयदास्तु ते॥

पूर्ण वृत्ताकार, शिखारहित, रश्मियों से संयुक्त, जल और तेल के समान भूसुत केतु बाईस प्रकार के हैं। ये ईशान कोण में उदित होते हैं और उदित होने पर दुर्भिक्ष करते हैं।

इति गर्गोक्तसहस्रकेतवः।

अथापरानेकविंशतिजातीयान्
पञ्चत्रिंशदधिकपञ्चशतकेतूनाहाथर्वमुनिः
तत्र भृगुपुत्राः

अर्चिष्माँश्च प्रभासश्च रोमशो विषमस्तथा।
अष्टकश्चातिकायश्च किंशुको राजशीर्षकः॥

ऋषभैरावतौ चैव कुमुदः फेनको घनः।
ऐशानश्चेति विज्ञेयास्तारात्रयविसर्पकाः॥

नक्षत्रा वारुणा ह्येते भृगुपुत्राश्चतुर्दश।

तीन ताराओं से युक्त, अर्चिष्मान्, प्रभास, रोमश, विषम, अष्टक, अतिकाय, किंशुक, राजशीर्षक, ऋषभ, ऐरावत, कुमुद, फेन, घन, ऐशान— ये चौदह प्रकार के वारुण नामक केतु भृगुपुत्र हैं।

अथ वायुसुताः

पाण्डुराभिः सुदीर्घाभिः शिखाभिः शीतरश्मिभिः।
मिश्रीभूतास्तु विज्ञेया गुण्डिता इव रेणुभिः॥

अतिसन्तानकास्त्वन्ये षष्टिर्वायोः सुता ग्रहाः।

पाण्डु वर्ण वाले, लम्बी शिखाओं से युक्त, शीत किरण वाले, धूलियों से ढके हुए की तरह मिश्रीभूत अधिक सन्तान वाले साठ प्रकार के वायुसुत केतु हैं।

अथ धूमकेतुसुताः

विकेशकाः प्रकाशन्ते कृष्णलोहितरश्मयः।
मिश्रीभूतास्तु ते ज्ञेया गुण्डिता इव रेणुना॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धूमकेतोः सुता घोराः शतमेकाधिकं च यत्।

केशरहित, प्रकाशित होते हुए कृष्ण-रक्तमिश्रित रश्मि वाले, धूलियों से अवगुण्ठित की तरह एक सौ एक प्रकार के धूमकेतु के पुत्र केतु हैं। ये भय देने वाले हैं।

अथानूरुपुत्राः

अत्यर्थकरकास्त्वन्ये प्रतप्तकनकप्रभाः।
अनूरुपुत्रकाः षष्टी रात्रिका मध्यचारिणः॥

तपाये हुए सुवर्ण के समान कान्ति वाले, अनर्थ करने वाले, मध्यदेश में (आकाशमध्य में) दृश्य होने वाले साठ प्रकार के अनूरुपुत्र रात्रिक नामक केतु हैं।

अथ व्यालपुत्राः

ये तु नक्षत्रवर्गस्य भागमुत्तरमाश्रिताः।
एकतारा वपुष्मन्तो महाकायाः प्रभान्विताः॥

व्यालकस्य तु ते पुत्राः सप्तषष्टिः समन्ततः।
नामतो विकचा नाम तन्त्रज्ञैः परिकीर्त्तिताः॥

नक्षत्र-कूर्मविभाग के अनुसार पृथ्वी का जो देश उत्तर भाग में स्थित है, उस भाग में दृश्य होने वाले, एक तारा वाले, मूर्त्तिमान्, महान् शरीर वाले, कान्ति से युक्त सड़सठ प्रकार के व्यालपुत्र केतु हैं। ये विकच नाम से तन्त्रज्ञों द्वारा कहे गये हैं।

अथ ब्रह्मराशिपुत्राः

सन्तानकनिभा ये तु दृश्यन्ते सूक्ष्मरश्मयः।
एकतारा द्विताराश्च अथवा पञ्चतारकाः॥

ब्रह्मराशेस्तु ते पुत्रा ग्रहास्तत्स्थानसंस्थिताः।
सञ्चरन्ति नभः सर्वमुत्पन्ने पुरुषक्षये॥

ब्रह्मा के सन्तान की तरह आकृति वाले, सूक्ष्म रश्मि वाले, एक तारा, दो तारा या पञ्चतारा वाले ब्रह्मराशि के पुत्र केतुग्रह हैं। ये पूरे आकाश अर्थात् सभी दिशाओं में दृश्य होते हैं तथा जिस स्थान (दिशा) पर इनका दर्शन होता है, वहाँ के पुरुषों का नाश होता है।

अथ प्रजापतिसुताः

अणवो लोहितास्त्वन्ये प्रकाशन्ते विकेशकाः।
कनकाः पञ्चषष्टिस्ते प्राजापत्या ग्रहाः स्मृताः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अति सूक्ष्म मूर्त्ति वाले, प्रकाशमान रक्त वर्ण वाले, केशरहित कनकसंज्ञक पैंसठ प्रजापतिसुत केतु ग्रह हैं।

अथादित्यादिसप्तग्रहपरिवेषमण्डलगताः

परिवेषेषु जातेषु ग्रहाणां मण्डलेषु च।
दृश्यन्ते कार्मुका नाम सप्तान्ये ते समाश्रिताः ॥

सूर्यादि सातों ग्रहों के परिवेषमण्डलगत सात प्रकार के कार्मुकसंज्ञक केतु देखे जाते हैं।

अथाधर्मसम्भवाः

अधर्मसम्भवास्त्वन्ये चतुर्दश समाश्रिताः।
अधःशिखाः प्रकाशन्ते विवर्णा घोरतारकाः ॥

निम्न शिखा वाले, विवर्ण (विकारयुक्त), भयङ्कर तारा वाले अधर्म के पुत्र चौदह प्रकार के केतु हैं, ये प्रकाशित और पाप फल देने वाले होते हैं।

अथ राहुपुत्राः

कर्णच्छिद्रप्रतीकाशाः कृष्णास्ते तारकाकृतौ।
कीलका राहुपुत्राश्च चन्द्रसूर्यतलाश्रयाः ॥

वज्रः कबन्धस्त्रिशिखः शङ्खो भेरी खगो धनुः।
दण्डः श्वा राहुपुत्रास्ते नव ते तुल्यवर्चसः ॥

सदा सोमार्कयोर्ह्येते मण्डलाभ्याससेविनः।
राजान्यत्वाय दृश्यन्ते प्रजानां संक्षयाय च ॥

तत्र मन्दफला ज्ञेयाः शशाङ्कतलसेविनः।
दिवाकरतलाभ्याससेविनो भृशदारुणाः ॥

चन्द्र और सूर्य बिम्बतल में आश्रित तारा की आकृति वाले, काले वर्ण वाले, कान के छिद्र के समान आकृति वाले कीलक नामक राहुपुत्र केतु वज्र, कबन्ध, त्रिशिख, शङ्ख, भेरी (मृदङ्ग), खग (पक्षी), धनुष, दण्ड, श्वा आदि नौ प्रकार की कान्ति के समान कान्ति वाले हैं। ये हमेशा चन्द्र और सूर्यमण्डल में ही दिखाई देते हैं। जब इनका दर्शन होता है तब राजा दूसरा होता है अर्थात् वर्त्तमान राजा का नाश करता है। ये प्रजाओं का नाश करते हैं। ये चन्द्रबिम्बतल में उदित होने पर मन्द फल तथा सूर्यबिम्बतल में उदित होने पर दारुण भय देते हैं।

अथ दिक्पुत्राः

पन्नगाख्याश्चतुर्विंशद्द्वात्रिंशत् कृष्णका ग्रहाः।
विंशतिः सप्त च श्वेता अरुणा विंशतिर्ग्रहाः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दक्षिणाद्यासु वीक्ष्यन्ते नीचैर्विभ्रान्तमण्डलाः ।
केवलं तारकाकारा दृश्यन्ते निष्प्रभा ग्रहाः ॥

पीतरक्ता ग्रहाः पञ्च पूर्वदक्षिणतः स्मृताः ।
दक्षिणापरतश्चापि पीतरक्तौ ग्रहौ स्मृतौ ॥

उत्तरापरतस्त्वेकः पीतरक्तो ग्रहः स्मृतः ।
ऐशान्यां श्वेतरक्ताभ एकस्तिष्ठति सूर्यभः ॥

यः सान्ध्यवेलास्वर्काभो दिक्षु सर्वासु दृश्यते ।
नातिदूरं च वै स्निग्धः स वर्षाभयदायकः ॥

अधोविभ्रान्त मण्डल वाले, केवल तारा की आकृति वाले, निष्प्रभ (कान्तिहीन = प्रकाशहीन) दक्षिण-पश्चिम-उत्तर और पूर्व दिशाओं में क्रमशः चौबीस प्रकार के पन्नगसंज्ञक, बत्तीस प्रकार के कृष्णकेतुसंज्ञक, सत्ताईस प्रकार के श्वेतकेतु और बीस प्रकार के अरुणसंज्ञक केतु हैं। पीत और रक्त वर्ण वाले पाँच प्रकार के केतु पूर्व-दक्षिण भाग (अग्निकोण) में, दक्षिण-पश्चिम भाग (नैर्ऋत्य कोण) में दो प्रकार के पीत और रक्त वर्ण वाले केतु, उत्तर-पश्चिम भाग (वायव्य कोण) में मात्र एक प्रकार का पीत-रक्त केतु और ईशान कोण में श्वेत और रक्त के कान्ति की तरह, सूर्य के समान केतु होते हैं। इनमें से जो केतु सन्ध्या के समय सूर्य की कान्ति से युक्त सभी दिशाओं में दृश्य होता है और थोड़ा निर्मल होता है, वह वर्षा और अभय देने वाला होता है अर्थात् रूक्ष केतुओं के दर्शन से भय और अवृष्टि होती है।

अथ मृत्युनिःश्वासजाः

मृत्योर्निःश्वासजाश्चान्ये ज्ञेयाः षोडश केतवः ।
कूष्माण्डविम्बवत्संस्था निर्दिष्टा दक्षिणे पथि ॥

उक्त केतुओं के अतिरिक्त कूष्माण्ड (कोम्हड़ा) की तरह बिम्ब वाले सोलह प्रकार के मृत्यु के निःश्वास से उत्पन्न केतु हैं। ये दक्षिण मार्ग (दक्षिण दिशा) में उदित होते हैं।

अथादित्यजाः

एकादशैव विज्ञेया द्वादशादित्यसम्भवाः ।
सूर्यचन्द्रनिरीक्ष्यास्ते तेजोधातुमया ग्रहाः ॥

धातुमय तेजों से युक्त, सूर्य और चन्द्र की तरह निरीक्ष्य (देखने योग्य) द्वादशादित्य के पुत्र ग्यारह प्रकार के ही हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ रुद्रक्रोधजाः

दक्षयज्ञे तु रुद्रस्य क्रोधादन्ये तु निःसृता।
भीमरूपा दशैकश्च जालाङ्कुशधरास्तथा॥

दक्षयज्ञ के समय रुद्र के क्रोध से अन्य ग्यारह प्रकार के केतु उत्पन्न हुए। ये भयङ्कर मूर्त्ति वाले, जाल और अङ्कुश धारण करने वाले होते हैं।

अथ पैतामहाः

सप्त पैतामहाश्चान्ये निर्याता जर्जरा ग्रहाः।
शिखाः सृजन्तो विनताततशुक्लपटोपमाः॥

अन्य सात प्रकार के पैतामह नामक केतु हैं। ये निम्न शिखाओं से युक्त, सफेद वस्त्र से व्याप्त की तरह जर्जर शरीर वाले होते हैं, जो भयदायक होते हैं।

अथौद्दालकिसुताः

श्वेताः केतव इत्यन्ये व्याख्याता दश पञ्च च।
उद्दालकऋषेः पुत्रास्ते नीचैर्भ्रान्तमण्डलाः॥

ते तु श्वेतशिखाः सर्वे सौम्याकारास्तनुप्रभाः।

पन्द्रह प्रकार के उद्दालक ऋषि के पुत्र श्वेत नामक केतु हैं। ये अधोभाग से भ्रान्त मण्डल वाले, श्वेत शिखा वाले और अल्प प्रकाश वाले होते हैं तथा ये सभी शुभ फल देते हैं।

अथामृतजाः

चतुर्दशेन्दुना सार्द्धं मथ्यमाने पुराऽमृते।
केतवः कुन्दपुष्पाभाः क्षीरोदार्णवसम्भवाः॥

विरश्मयस्ते विशिखा ह्रस्वकाया निरर्चिषः।
रौप्यकुन्दनिभाः सौम्या ग्रहास्ते सिततेजसः॥

प्राचीन काल में देवता और राक्षसों के द्वारा समुद्रमन्थन के समय चन्द्रमा के साथ चौदह प्रकार के अमृत से उत्पन्न केतु हैं। ये कुन्दपुष्प के समान कान्ति वाले, क्षीरसमुद्र से उत्पन्न, कान्तिहीन, शिखारहित, लघु शरीर वाले, प्रकाशहीन, चाँदी और कुन्दपुष्प के समान कान्ति से युक्त, सफेद तेज वाले होते हैं तथा सौम्य (शुभ फल देने वाले) होते हैं।

अथ ब्रह्मकोपजः

ब्रह्मकोपभवस्त्वेको विश्वात्मा सबलो ग्रहः।
चतुर्युगान्ते लोकानामुदयस्तस्य दृश्यते॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मकोप से उत्पन्न एकमात्र विश्वात्मारूप बलवान केतु ग्रह संसार में चतुर्युगान्त के समय उदित होता है अर्थात् इसके उदित होने से संसार में सभी प्राणियों का विनाश होता है।

अथ नाभसाः

नक्षत्रपथमुत्सृज्य नाभसाः पार्श्वचारिणः।
पूर्वतोऽभ्युदिता वा स्युर्नीचैरुत्तरतस्तथा॥

याम्याद्यभ्युदिता वा स्युर्ह्रस्वाः स्नेहपरिप्लुताः।
सर्व एव तु विज्ञेया ग्रहा मन्दफलोदयाः॥

नक्षत्रमार्ग को छोड़कर पार्श्व से (नक्षत्रमार्ग के दक्षिण या उत्तर से) विचरण करने वाले अथवा पूरब में उदित होने वाले या नीचे से या उत्तर दिशा में या दक्षिण दिशा में उदित होने वाले, छोटे और स्नेह से युक्त (स्निग्ध) मूर्त्ति वाले नाभससंज्ञक केतु हैं। ये मन्द फल देने वाले होते हैं।

अथ फलनिर्णयः

सर्वेषां पैतृकं रूपं प्रजाभाग्योद्भवं भवेत्।
तत्कर्मजन्ममाहात्म्यशीलाभिजनमेव च॥

तद्रूपांस्तद्गुणांश्चापि तद्देशांस्तत्परिग्रहान्।
सर्व एव क्षुधारोगमृत्युशस्त्राग्नितस्करैः॥

पशुशस्योपघातैश्च हन्युरन्यैश्च कारणैः।
धूपनात् स्पर्शनात् स्थानादुदयादस्तसम्भवात्॥

हन्युः पञ्चविधाः सर्वे केतवो नात्र संशयः।
सुक्रादीनां च चे पुत्राः ग्रहाणां परिकीर्त्तिताः॥

तेषां बीजानि जानीयात् पितृभ्योऽभ्यधिकानि च।
मृत्योः कालस्य सूर्यस्य ब्रह्मणस्त्र्यम्बकस्य च॥

भौमस्य राहोरग्नेश्च ग्रहा वायोश्च दारुणाः।
प्रजापतेरधर्मस्य सोमस्य वरुणस्य च॥

दिशां च विदिशां पुत्राः विज्ञेया मृदुदारुणाः।
कश्यपस्य च मारीचेरुद्दालकत्र्क्रषेस्तथा॥
पुत्रा मन्दफला ज्ञेयाः सौम्या अमृतसम्भवाः॥

पैतृक (अपने पिता की तरह) रूप वाले केतुओं के दर्शन से प्रजाओं का भाग्योदय होता है तथा प्रजाओं के कर्म, जन्म, माहात्म्य, शील (स्वभाव) आदि का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुभ होता है। परन्तु केतु के वर्ण वाले, गुण वाले, देश (जिस नक्षत्र को स्पर्श करता हो तथा जिस दिशा में दृश्य हो उस देश के निवासी) एवं उपकरण आदि सबों का क्षुधा, रोग, मृत्यु, शस्य, अग्नि, चोर, पशुघात, धान्यनाश एवं अन्य कारणों से नाश होता है। केतु धूपन (श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्णों के द्वारा), स्पर्श (जिस नक्षत्र को स्पर्श करता हो, उस नक्षत्र वाले देश में स्थित निवासियों), स्थान (जिस नक्षत्र में हो), उदय और अस्त के अनुसार पाँच प्रकार से अशुभ फल देता है। शुक्रादि ग्रहों के पुत्र जो केतु हैं, उनके फलों का बीज (आधार) उनके पिता से तथा अन्य प्रकार से जानना चाहिये। मृत्यु, काल, सूर्य, ब्रह्मा, त्र्यम्बक, मंगल, राहु, अग्नि और वायु के पुत्र केतु दारुण फल देते हैं। दिशा और विदिशा के पुत्र केतु मृदु दारुण (थोड़ा न्यून अशुभ) होते हैं। कश्यप, मरीचि और उद्दालक ऋषि के पुत्र केतु मन्द फल देने वाले होते हैं। अमृतपुत्र केतु सौम्य (शुभ) फल देते हैं।

अथैकादशजातय एकोत्तरशतकेतवो भवन्तीति पराशरादीनां मतम्
तथा च पराशरः

शतमेकोत्तरं केतूनां भवति तेषां षोडशमृत्युनिःश्वासजाः। द्वादशादित्यसम्भवाः। दश दक्षयज्ञविलयेन रुद्रक्रोधजाः। षट् पैतामहाः। पञ्चदश क्रुद्धोद्दालकसुताः। पञ्च प्रजापतेर्हासजाः। सप्तदश मारीचिकश्यपललाटजाः। त्रयो विभावसुजाः। चतुर्दश मथ्यमाने समुद्रे सोमेन सह सम्भूताः। धूमोद्भव एकः। एकस्तु ब्रह्मकोपजः इति।

पराशर के मतानुसार एक सौ एक केतु हैं। उनमें मृत्यु के निःश्वास से उत्पन्न सोलह प्रकार के, द्वादशादित्य से उत्पन्न बारह प्रकार के, दक्षयज्ञ के विध्वंस के समय रुद्रकोप से उत्पन्न दस प्रकार के, पैतामह (पितामह के पुत्र) छः प्रकार के, क्रुद्ध उद्दालक मुनि के पुत्र पन्द्रह प्रकार के, पितामह के हास (क्रोध) से उत्पन्न पाँच प्रकार के, मरीचि और कश्यप के ललाट से उत्पन्न सत्रह प्रकार के, विभावसु के पुत्र तीन प्रकार के, समुद्रमन्थ के समय चन्द्रमा के साथ उत्पन्न चौदह प्रकार के, धूम से उत्पन्न एक और ब्रह्मकोप से एक— ये पराशरोक्त १०१ केतु हैं। परन्तु वृद्धगर्ग के अनुसार द्वादशादित्य के औरस पुत्र ग्यारह केतु तथा रुद्रक्रोध से उत्पन्न ग्यारह प्रकार के ही हैं।

वृद्धगर्गस्त्वौरसा द्वादशादित्यसम्भवा एकादश केतवो भवन्ति।
रुद्रक्रोधजाश्चैकादशेति। तद्यथा

मृत्योर्निःश्वासजास्तेषां केतवः षोडश स्मृताः।
एकादश च विज्ञेया द्वादशादित्यसम्भवाः॥

दक्षयज्ञे तु रुद्रस्य क्रोधादन्ये विनिःसृताः।
एकादशैते विख्याताः सप्त पैतामहाः स्मृताः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋषेरुद्दालकस्यापि पुत्रा दश च पञ्च च।
ते च यौवनसंवृद्धाः श्वेतकेतुत्वमागताः ॥
तथा प्रजापतेर्हासात् केतवः पञ्च निस्सृताः।
षोडशैकश्च मारीचिकश्यपस्य ललाटजाः ॥
अग्निपुत्रास्त्रयस्तेषां केतवस्तिग्मतेजसः।
सप्त पञ्च च द्वौ चाब्धेर्मथ्यमाने तदाऽमृते ॥
सोमेन सह सम्भूताः केतवो मध्यतः स्मृताः।
अन्तकस्योग्ररूपस्य क्रोधादेको विनिस्सृतः ॥
धूमकेतुरिति ख्यातो ब्रह्मकोपात् तथाऽपरः।

उन एक सौ एक केतुओं में मृत्यु के निःश्वास से सोलह, द्वादशादित्य से ग्यारह, दक्षयज्ञ के समय रुद्रक्रोध से उत्पन्न ग्यारह, पितामहपुत्र सात, उद्दालक ऋषि के पुत्र युवावस्था प्राप्त श्वेतकेतु के नाम से प्रसिद्ध पन्द्रह, प्रजापति के क्रोध से उत्पन्न पाँच, मरीचि और कश्यप के ललाट से उत्पन्न सत्रह, प्रखर तेज वाले अग्निपुत्र तीन, समुद्रमन्थन के समय चन्द्रमा के साथ अमृत से उत्पन्न चौदह, अन्तक (यम) के उग्र क्रोध से उत्पन्न धूमकेतु नाम से विख्यात एक तथा संवर्त्तक नाम से ख्यात दूसरा ब्रह्मकोप से उत्पन्न एक— इस प्रकार वृद्धगर्गोक्त एक सौ एक केतु हैं।

एतेषामेकादशजातीयानामेकोत्तरशतकेतूनां प्रत्येकानां नामान्याह वृद्धगर्गः

अतः परं प्रवक्ष्यामि केतूनां नामनिश्चयम्।
विस्तरेण यथाशास्त्रं ब्रुवतो मे निबोधत ॥

इसके बाद मैं (वृद्धगर्ग) उक्त ग्यारह जातियों के एक सौ एक केतुओं का शास्त्रानुसार विस्तारपूर्वक नाम कहता हूँ।

तत्र मृत्युपुत्राः

दरस्तब्धः श्रमो मोहः श्यावः सर्वोऽत्ययस्तथा।
पराशरस्तमो वृष्टिः शोषणोऽतिप्रभञ्जकः ॥
अस्थिकेतुर्वसाकेतुः शस्त्रकेतुरदर्शनः।
एते निःश्वासजाः मृत्योर्नामतः परिकीर्त्तिताः ॥

दर, स्तब्ध, श्रम, मोह, श्याव, सर्व, अत्यय, पराशर, तम, वृष्टि, शोषण, अतिप्रभञ्जक, अस्थिकेतु, वसाकेतु, शस्त्रकेतु और अदर्शन नाम वाले केतु मृत्यु के निःश्वास से उत्पन्न कहे गये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथादित्यजाः

**जृम्भाकेतुश्च दृष्टश्च वृक्षः कौम्भी ह्रदो रविः ।
तीक्ष्णो व्यालः कपालश्च तीव्रः प्रमथनस्तथा ॥**

**केतवस्ते दशैकश्च नामतस्तान् निबोधत ।
एकादशैते विख्याता द्वादशादित्यसम्भवाः ॥**

जृम्भाकेतु, दृष्टकेतु, वृक्षकेतु, कौम्भीकेतु, ह्रदकेतु, रविकेतु, तीक्ष्णकेतु, व्यालकेतु, कपालकेतु, तीव्रकेतु तथा प्रमथन केतु के नाम वाले ग्यारह केतु जाने जाते हैं। ये द्वादश आदित्यों के पुत्ररूप में विख्यात हैं।

अथ रुद्रक्रोधजाः

**दक्षयज्ञे तु रुद्रस्य क्रोधादेवाभिनिस्सृताः ।
दंशस्तुण्डो व्रती क्रोधश्चलकेतुर्जलोदरः ॥**

**व्याधः कटाहो नक्रश्च शान्तिदश्च शतोदरः ।
दम्भो भवनकेतुश्च कलिर्वृषभगोशराः ॥**

दक्षयज्ञ में रुद्रक्रोध से उत्पन्न होने वाले तुण्डाकृति वाले दंशकेतु, क्रोधी व्रती, चलकेतु, जलोदर, व्याध, कटाह, नक्र, शान्ति देने वाले शतोदर, दम्भ, भवनकेतु और वृष, गौ तथा शर की आकृति वाले कलिकेतु— ये ग्यारह केतु हैं।

अथ पैतामहाः

एते पैतामहाः सप्त शिखण्डी चेति कीर्त्तिताः ।

शिखण्डी नामक सात पैतामह केतु कहे गये हैं। यहाँ पैतामह केतुओं का पृथक्-पृथक् नाम उल्लिखित नहीं है।

अथोद्दालकिजाः

**अग्निः श्वेतः कुशः क्षारी जटी क्रोधी निषूदनः ।
भस्मो भुवनकेतुश्च गोपो मृत्युः पराभवः ॥**

**गदः प्रमथनः शोकः पञ्च वै पञ्च पञ्च च ।
ऋषेरुद्दालकस्यैते पुत्रा वै नामतः स्मृताः ॥**

अग्नि, श्वेत, कुश, क्षारी, जटी, क्रोधी, निषूदन, भस्म, भुवनकेतु, गोप, मृत्यु, पराभव, गद, प्रमथन और शोक— ये पन्द्रह नाम वाले उद्दालक ऋषिपुत्र केतु कहे गये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ प्रजापतिहासजाः

पिङ्गलो जटिलश्चैव विश्वरूपो महोदरः ।
कः प्रजापतिहासात्तु केतवः पञ्च निस्सृताः ॥

पिङ्गल, जटिल, विश्वरूप, महोदर और क— ये पाँच केतु प्रजापति के हास (क्रोध) से उत्पन्न होने वाले हैं।

अथ मारीचिकश्यपप्रजाः

बलः केतुर्द्रुमः श्वासः स्वधी चारी सुधीः क्षमः ।
कबन्धस्तापनः शम्भुश्चण्डो ग्राहो जटाधरः ॥

रक्षकौटपुटैरेभिर्नामतः परिकीर्त्तिताः ।
षोडशैकश्च मारीचाः कश्यपस्य ललाटजाः ॥

मरीचि और कश्यप के ललाट से उत्पन्न बल, केतु, द्रुम, श्वास, स्वधी, चारी, सुधी, क्षम, कबन्ध, तापन, शम्भु, चण्ड, ग्राह, जटाधर, रक्षक, ओट और पुट नाम वाले सत्रह प्रकार के केतु कहे गये हैं।

अथ विभावसुजाः

विभावसोस्तु ये पुत्रास्त्रयश्चैव तु कीर्त्तिताः ।
श्रुतकेतुर्मोहनश्च रश्मिकेतुश्च ते त्रयः ॥

विभावसु के जो तीन पुत्र कहे गये हैं, वे तीनों श्रुतकेतु, मोहनकेतु और रश्मिकेतु हैं।

अथामृतजाः

चतुर्दश तु ये चैते केतवोऽमृतसम्भवाः ।
नामतस्तु यथाशास्त्रं कीर्त्यमानान् निबोधत ॥

जलकेतुर्महाशङ्खः पद्मकेतुर्मणिस्तथा ।
रक्षो विसर्पणश्चैव हिमः शीतस्तथैव च ॥

आवर्त्तकेतुरूर्मिश्च कुक्षिः कुमुद एव च ।
कोपश्च भवकेतुश्च एते प्रोक्ताश्चतुर्दश ॥

अमृत से उत्पन्न चौदह प्रकार के जो केतु हैं, उनके नाम शास्त्रानुसार निम्नलिखित रूप में जानना चाहिये—

जलकेतु, महाशङ्ख, पद्मकेतु, मणिकेतु, रक्षकेतु, विसर्पणकेतु, हिमकेतु, शीतकेतु, आवर्त्तककेतु, ऊर्मिकेतु, कुक्षिकेतु, कुमुदकेतु, कोपकेतु और भवकेतु।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथान्तकक्रोधजः

अन्तकस्य च यः क्रोधादेक एव विनिःसृतः ।
नामतस्तं वदन्तीह धूमकेतुरिति द्विजाः ॥

अन्तक के क्रोध से जो केतु उत्पन्न हैं, उसे धूमकेतु नाम से कहा जाता है ।

अथ ब्रह्मकोपजः

अथैको ब्रह्मकोपात्तु पृथगेव विनिःसृतः ।
एवं संवर्त्तको नाम केतुः परमदारुणः ॥
एकदैकशतं घूर्णन् नामतः परिकीर्त्तितः ।

ब्रह्मकोप से पृथक् निकला हुआ एक संवर्त्तक नामक केतु है, जो परम दारुण (भयानक) होता है । इस प्रकार नामानुसार चक्कर लगाने वाले एक सौ एक केतु कहे गये हैं ।

एतेभ्यो ये उदयन्ते तानाह पराशरः

एभ्यः षड्विंशतिरुदयैः फलमावेदयन्ति । तन्नामतो रूपतः फलतस्तत्कालतोऽभिधास्यामः । तत्र मार्त्त्यवास्त्रय उदयन्ति । एकैकशो वसाकेतुरस्थिकेतुः शस्त्रकेतुर्वा ।

पराशर-वृद्धगर्गादि आचार्यों के मतानुसार उपर्युक्त केतुओं में मात्र २६ केतुओं का उदय समयचक्रानुसार होता है । शेष केतुओं का समयचक्रानुसार उदय या अस्त नहीं होता अर्थात् यदा-कदा औत्पातिक रूप में उनका उदय या अस्त होता है । उदित होने वाले २६ केतुओं के स्वरूप, फल और काल (उदयास्त समय) कहे गये हैं । उनमें मृत्युनिःश्वास से उत्पन्न तीन केतु (वसाकेतु, अस्थिकेतु और शस्त्रकेतु) दृश्य होते हैं । तीनों एक-एक करके (वसाकेतु के बाद अस्थिकेतु, अस्थिकेतु के बाद शस्त्रकेतु) उदित होते हैं ।

वृद्धगर्गस्तु

मृत्युनिःश्वासजा ये ते पूर्वमेवानुकीर्त्तिताः ।
तेषां दृश्यास्त्रयः प्रोक्ता विज्ञेया नभसि स्थिताः ॥
तेषां त्रयाणामेकैकं त्रिंशद्वर्षशते गते ।
केतूनामुदयो व्योम्नि दृश्यते तु गभस्तिमान् ॥
प्रथमस्तु वसाकेतुरस्थिकेतुरनन्तरम् ।
शस्त्रकेतुरिति ख्यातस्तृतीयो ज्ञानकोविदैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृत्यु के निःश्वास से उत्पन्न होने वाले सोलह केतुओं में से तीन ही आकाश में स्थित दृश्य होते हैं। उन तीनों में एक के बाद दूसरा १३० वर्षों के अन्तराल पर प्रकाशित दिखाई देता है। पहले वसाकेतु दृश्य होता है, उसके बाद अस्थिकेतु और अस्थिकेतु के उदित होने के बाद शस्त्रकेतु दृश्य होता है। प्रत्येक केतु का प्रवासकाल १३० वर्ष होता है।

अथैषामुदये पूर्वनिमित्तान्याह वृद्धगर्गः

उत्थानसमये चैषां निमित्तान्युपलक्षयेत्।
अप्रमत्तः सदा विद्वानुद्युक्तः शास्त्रकोविदः॥

देवतायतने देवीं चलन्तीं रुदतीमपि।
धूमायन्तीं श्वसन्तीं वा दृष्ट्वा केतुं निवेदयेत्॥

व्यभ्रे नभसि वर्षाणि विद्युतोऽशनिमारुताः।
भौमान्तरिक्षाश्चोत्पाता दृश्यन्ते चातिभैरवाः॥

श्मशाननिलयानां च श्मशाने चोपजीविनाम्।
सत्त्वानामामिषादानां श्रूयते सुमहान् स्वनः॥

उत्पातैरीदृशैर्घोरैर्दृश्यद्भिरनिशं ततः।
याम्यानां क्षुद्भयं विन्द्यात् केतूनां केतुशास्त्रवित्॥

इन वसाकेतु, अस्थिकेतु और शस्त्रकेतुओं के उदय के पूर्व निमित्तों (शकुनोत्पातादि) को जानना चाहिये। विद्वान् अप्रमत्त होते हैं, शास्त्रकार उद्युक्त (उद्यमशील अर्थात् व्यग्र) होते हैं, देवमन्दिर में देवी की मूर्त्ति के चलने, रोने, धूपन (धूँआमय) या श्वसन को देखकर इन केतुओं का उदय कहना चाहिये। मेघरहित आकाश के होने पर भी वृष्टि, विद्युत्, अशनिपात (वज्रपात), मारुत (निर्घातादि शब्द) और अन्य भौम तथा आन्तरिक्ष उत्पात अतिभयङ्कर होते हैं। श्मशान में रहने वाले, श्मशान से जीविका चलाने वाले और मांसभक्षण करने वाले प्राणियों के महान् शब्द सुनाई पड़ते हैं। इस प्रकार के घोर उत्पातों के अहर्निश दर्शन होने पर केतुशास्त्रज्ञाता को मृत्युनिःश्वास से उत्पन्न केतुओं का उदय होने वाला है— ऐसा जानना चाहिये। इसके उदय से दक्षिण दिशा में स्थित लोगों को क्षुधाभय (दुर्भिक्षभय) होता है।

वसाकेत्वादीनां लक्षणं फलानि च वराहसंहितायाम्

उदगायतो महान् स्निग्धमूर्त्तिरपरोदयी वसाकेतुः।
सद्यः करोति मरकं सुभिक्षमप्युत्तमं कुरुते॥

तल्लक्षणोऽस्थिकेतुः स तु रूक्षः क्षुद्भयावहः प्रथितः।
स्निग्धस्तादृक् प्राच्यां शस्त्राख्यो डमरमरकाय॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तर तरफ विस्तृत, स्थूल, निर्मल और पश्चिम दिशा में उदित होने वाला वसा नामक केतु है। इसके उदयकाल से ही पृथ्वी पर मरी होती है और उत्तम सुभिक्ष होता है। इसी तरह (वसाकेतु की तरह) उदगायतादि लक्षणों से युक्त और निर्मल तथा पूरब दिशा में उदित होने वाला शस्त्रकेतु है। यह शस्त्रों से युद्ध और लोगों को मारने वाला होता है।

पराशरस्तु

तत्र वसाकेतुः स्निग्धो महानुदगायतशिखस्त्रिंशद्वर्षशतं प्रोष्य सम्प्लवेषु पश्चिमेनोदितः स सद्यो मरकफलः सौभिक्षकरः। रूक्षोऽस्थिकेतुरसौभिक्षकरस्तुल्यप्रवासकालफलः। पूर्वेण स्निग्ध एव शस्त्रकेतुः शस्त्रवृत्तराजविरोधमरकफलः समो रूक्षः – इति।

इनमें वसाकेतु निर्मल, स्थूल, उत्तर दिशा की ओर विस्तृत शिखा वाला, १३० वर्षों तक प्रवास (अस्तङ्गत) के बाद पश्चिम दिशा में उदित होने वाला है। वह उदित होते ही लोगों का मरण और सुभिक्ष करने वाला होता है। रूक्ष और वसाकेतु के समान (१३० वर्ष) प्रवास और फल (मरकफल) वाला अस्थिकेतु असुभिक्ष करता है। यह पश्चिम दिशा में उदित होता है। शस्त्रकेतु पूर्व दिशा में उदित होने वाला, निर्मल और वसाकेतु की तरह होता है। यह शस्त्रयुद्ध, राजविरोध और मरण करता है। रूक्ष शस्त्रकेतु भी इसी तरह का फल देने वाला होता है।

वृद्धगर्गस्तु

उदगायतो महान् स्निग्धो वारुण्यामुदितो निशि।
वसाकेतुरिति ख्यातः सद्यो मरककारकः॥

स दृष्ट एव कुरुते सौभिक्षमिति चोत्तमम्।
उग्रया शिखया भीमो दक्षिणेन नताग्रया॥

अस्थिकेतुर्जनान् हन्याद्दुर्भिक्षमरकाग्निभिः।
स दृष्ट एव पृथिवीमाप्लावयति वारिणा॥

रूक्षया शिखयाऽत्यर्थं क्षतजार्द्रप्रकाशया।
शस्त्रकेतुर्भवेत् प्राच्यां शस्त्रमृत्युकरो महान्॥

उत्तर दिशा की ओर विस्तृत, स्थूलकाय, निर्मल, रात में पश्चिम दिशा में उदित होने वाला वसाकेतु प्रसिद्ध है। यह उदित होते ही मरक करने वाला तथा उत्तम सुभिक्ष करने वाला होता है। अस्थिकेतु उग्र शिखा से युक्त, भयङ्कर, दक्षिण तरफ नत एवं पश्चिम दिशा में उदित होने वाला होता है। यह दुर्भिक्ष, मरी और अग्नि से लोगों को मारता है तथा उदित होते ही पृथिवी को जल से आप्लावित (जलमग्न) करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शस्त्रकेतु अत्यन्त रूक्ष शिखा वाला और रक्तार्द्र प्रकाश वाला होता है। यह पूरब दिशा में दृश्य होता है और शस्त्रयुद्ध तथा लोगों की मृत्यु कराता है।

अथापरेषामुदितानां मृत्युसुतानां फलमाह वृद्धगर्गः

निकुटालयसंस्था ये ये च उत्तरवासिनः।
चतुष्पथनिकेताश्च पुरत्रयनिवासिनः॥

एते चान्ये च बीभत्साः पुरुषादा निशाचराः।
लोकानन्तर्हिता घ्नन्ति केतवो मृत्युसम्भवाः॥

उपर्युक्त तीन (वसाकेतु, शस्त्रकेतु और अस्थिकेतु) केतुओं के अतिरिक्त मृत्युकेतुओं के उदित होने पर निकुटालय में रहने वाले, उत्तर दिशा में निवास करने वाले, चतुष्पथ पर घर बनाकर रहने वाले, तीनों लोकों में रहने वाले तथा वीभत्स (घिनौने), मांसभक्षी और निशाचरों का नाश होता है।

वसादिकेतूनामुदयानन्तरममृतस्य कुमुदकेतोरुदयः। तल्लक्षणं वराहसंहितायाम्

कुमुद इति कुमुदकान्तिर्वारुण्यां प्राक्शिखो निशामेकाम्।
दृष्टः सुभिक्षमतुलं दश किल वर्षाणि स करोति॥

कुमुदपुष्प की भाँति कान्ति वाला, पश्चिम दिशा में उदित होने वाला, पूर्व दिशा की ओर शिखा वाला और केवल एक रात्रि में दिखाई देने वाला कुमुदकेतु है। इसका दर्शन होने से दस वर्षों तक पृथ्वी पर सुभिक्ष होता है।

वृद्धगर्गस्तु

तेषां कर्मफलस्यान्ते प्रफुल्लकुमुदप्रभः।
नामतः परिसङ्ख्यातः कुमुदः सम्प्रदृश्यते॥

पश्चिमेनोदितः श्रीमान् शिखां कृत्वाऽतिसुप्रभाम्।
याम्यैः केतुभिरातप्तं लोकमाश्वासयन्निव॥

शङ्खगोक्षीरमुक्ताभां पूर्वेणाभिनतां शिखाम्।
दर्शयित्वा निशामेकां ततो गच्छत्यदर्शनम्॥

सुभिक्षं जायते चात्र विरुध्यन्ते च पार्थिवाः।
ज्वरा नानाविधाश्चात्र भवन्ति प्रबला नृणाम्॥

पाण्डुरोगः प्रतिश्यायो मुखरोगावरोधकः।
महिषान् वारणान् मत्स्यान् वराहानथ सारसान्॥

मर्कटान् मकरान् नक्रानन्यांस्तोयचरानथ।
सर्वान् प्रतापयत्येतान् केतुः कुमुदसम्भवः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दशा वर्षाणि वा प्राहुः फलं मासांश्च षोडश ॥

विशेषः– अयमुदितः क्षेमसुभिक्षावहः । पश्चिमोदितत्वात् पश्चिमदिग्देशस्थानां च पीडाकरः ।

कुमुदकेतु विकसित कुमुदपुष्प की कान्ति वाला, नाम और संख्या (गुण) के अनुसार दिखाई देने वाला, पश्चिम दिशा में उदित होने वाला, शोभायुक्त, अत्यन्त सुन्दर कान्ति वाली शिखा से युक्त, दक्षिण केतुओं से पीड़ित, लोकों को आश्वासन देते हुए की तरह, शङ्ख, गोदुग्ध, मुक्ता (मोती) की कान्ति वाला, पूर्व दिशा की ओर नत शिखा वाला, एक रात में दर्शन देकर अदृश्य होने वाला होता है । इसके उदित होने पर सुभिक्ष होता है । राजाओं में परस्पर विरोध होता है । लोगों को अनेक प्रकार के प्रबल ज्वर, पाण्डुरोग, पीनस (नासारोग), मुखरोगादि से पीड़ा होती है । महिष, हाथी, मछली, सूअर, सारस पक्षी, बन्दर, सोंस, घड़ियाल आदि अन्य जलचर जीवों को भी कुमुदकेतु के उदित होने पर पीड़ा होती है । कुमुदकेतु के उदय का फल पृथ्वी पर दस वर्ष या सोलह मासों तक होता है । कुमुदकेतु का उदय पश्चिम दिशा में होता है; इसलिए पश्चिम दिशा में स्थित देशवासियों को पीड़ा होती है ।

यथा पराशरः

तत्र कुमुदकेतुर्वसाकेतुचारसमाप्तौ वारुण्यां दर्शनमुपैति । गोक्षीरविमलस्निग्धप्रभां पूर्वेणाभिनतां शिखां कृत्वैकरात्रं चरन् स दृष्ट एव सुभिक्षमुत्पादयति दश वर्षाणि प्रजानामविरोधम् । प्रतीच्यां च मुखरोगावरोधकप्रतिश्याय-पाण्डुरोगज्वरैः प्रजां बाधते – इति ।

वसाकेतु के अस्त होने के बाद ही कुमुदकेतु का दर्शन पश्चिम दिशा में होता है । गाय के दूध की तरह निर्मल दुग्ध की कान्ति वाला, पूरब की ओर नत शिखा वाला, एक रात्रिमात्र विचरण करते हुए दिखाई देने वाला, उदित होते ही सुभिक्ष उत्पादन करने वाला और प्रजाओं में अविरोध (परस्पर प्रेम-भाव) उत्पन्न करने वाला कुमुदकेतु दस वर्षों तक फल देता है और पश्चिम दिशा में स्थित लोगों (प्रजाओं) को मुखरोग, अवरोधक, नासारोग, पाण्डुरोग और ज्वरों से पीड़ित करता है ।

अथापरकपालकेतोरुदयः
तल्लक्षणमाह वृद्धगर्गः

ततः कुमुदकेतोस्तु व्यतीतेऽमलदर्शने ।
द्वादशादित्यसम्भूतः केतुरन्यः प्रदृश्यते ॥

एकादश तु ये प्रोक्ता द्वादशादित्यसम्भवाः ।
तेषामप्युत्तरः केतुः सधूमार्चिः प्रदृश्यते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि आश्लेषा, शतभिषा या ज्येष्ठा नक्षत्रों में स्थित शनैश्चर निर्मल हो तो क्षेम करता है, पर अधिक वृष्टि नहीं करता। यदि मूल में सूर्यपुत्र (शनि) स्थित हो तो दुर्भिक्ष, शस्त्रभय और अवृष्टि करता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

सौम्यत्वाष्ट्रश्रविष्ठासु स्थिते सौरे महीस्थिताः।
सर्वे पीडां समृच्छन्ति जना यान्ति यमालयम्॥

यदि मृगशिरा, चित्रा या धनिष्ठा में शनैश्चर स्थित हो तो पृथ्वी पर स्थित सभी लोग पीड़ित होते हैं और यमालय (मृत्यु) को प्राप्त करते हैं।

अथ प्रत्येकनक्षत्रचारफलं वराहसंहितायाम्

तुरगतुरगोपचारककविवैद्यामात्यहाऽर्कजोऽश्विगतः।
याम्ये नर्त्तकवादकगेयज्ञक्षुद्रनैकृतिकान्॥

यदि शनैश्चर अश्विनी नक्षत्र में स्थित हो तो घोड़ा, घोड़े का उपचारक, कवि, वैद्य और मन्त्रियों का नाश करता है। यदि भरणी नक्षत्र में स्थित हो तो नाचने वालों, बाजा बजाने वालों, गाने वालों, क्षुद्र (अन्यान्य पथ पर चलने वालों) और निषादों का नाश करता है।

पराशरस्तु

अश्विन्यामश्वारोहाश्वपालवैद्यामात्यकविनायकान्। भरणीषु वादकगायननर्त्तकक्षुद्रनैकृतिकान् पीडयति।

यदि शनैश्चर अश्विनी नक्षत्र में स्थित हो तो अश्वारोही, अश्वपालनकर्त्ता, वैद्य, मन्त्री, कवि और नायक का नाश करता है। यदि भरणी में स्थित हो तो वाद्य बजाने वालों, गवैयों, नाचने वालों, क्षुद्रों और निषादों का नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

बहुलास्थे पीड्यन्ते सौरेऽग्न्युपजीविनश्चमूपाश्च।
रोहिण्यां कोशलमद्रकाशिपाञ्चालशाकटिकाः॥

यदि कृत्तिका नक्षत्र में शनैश्चर स्थित हो तो आग से आजीविका चलाने वालों (सोनार, लोहार आदि) और सेनापति का नाश करता है। यदि रोहिणी में बैठा हो तो कोशल, मद्र, काशी तथा पाञ्चाल देश में रहने वाले मनुष्यों और गाड़ी से आजीविका चलाने वालों का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरस्तु

आग्नेये प्रविचरन्नर्कजोऽग्निस्थलशूरसेनाहिताग्नि-लोहकारधात्वाकराङ्गनाशौण्डिकाग्न्युपजीविन उप-तापयति। प्राजापत्ये मद्रकपाञ्चालकाशि-कोशलाङ्गशाकटिकाश्चालोड्यन्ते।[१]

यदि कृत्तिका में शनैश्चर विचरण करता हो तो अग्निस्थान, शूरसेन देश, आहिताग्नि (अग्निहोत्री), लोहार, धातुओं का आकरस्थान, स्त्री, शौण्डिक (मद्यविक्रेता), अग्नि से आजीविका चलाने वाले— इन सबों का नाश होता है। यदि रोहिणी में विचरण करता हो तो मद्र, पञ्जाब, काशी, कोशल और अङ्ग देशवासी तथा गाड़ी से आजीविका वालों का नाश होता है।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यवधनिमित्तम्

रोहिणीं पीडयन्नेव स्थितो राजन् शनैश्चरः॥

विशेषः– यद्यपि 'चारेण पीडां कुरुतेऽर्कपुत्रः'— इत्यनेन चारमात्रेण शनैश्चरः पीडयतीत्युक्तं, तथाऽपि कुरुपाण्डवसैन्यवधस्य गुरुत्वादत्र रोहिणीपीडनमवगन्तव्यम्।

महाभारत-युद्ध के समय कौरव और पाण्डवों की सेनाओं के वध के निमित्त कहा गया है कि उस समय शनैश्चर रोहिणी नक्षत्र का भेदन करते हुए स्थित था।

तथा च वराहसंहितायाम्

रोहिणीशकटमर्कनन्दनो यदि भिनत्ति रुधिरोऽथ वा शिखी।
किं वदामि यदनिष्टसागरे जगदशेषमुपयाति संक्षयम्॥

यदि शनैश्चर, मंगल या केतु रोहिणी शकट का भेदन करे तो होने वाले अमङ्गल को क्या कहूँ? सम्पूर्ण संसार अनिष्टरूपी समुद्र में पड़कर (डूबकर) नष्ट होता है अर्थात् सर्वत्र अमङ्गल ही अमङ्गल दिखाई देते हैं।

गर्गः

रोहिणीशकटं भौमो भिनत्त्यर्कसुतोऽथ वा।
केतुर्वा जगतो ब्रूयात् प्रलयं समुपस्थितम्॥

यदि रोहिणी शकट का भेदन मङ्गल, शनि या केतु करे तो संसार में प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित हो जाता है।

---

१. कन्यकाश्चोपताप्यन्ते इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

मृगशिरसि वत्सयाजकयजमानार्यजनमध्यदेशाश्च ।
रौद्रे पारतरमठास्तैलिकरजकचौराश्च ॥[१]

यदि मृगशिरा में शनैश्चर स्थित हो तो वत्स देश में रहने वाले मनुष्य, याजक (यज्ञ कराने वाले), यजमान, श्रेष्ठ मनुष्य और मध्य देश को पीड़ित करता है। यदि शनैश्चर आर्द्रा नक्षत्र में स्थित हो तो पारतर देश में रहने वाले मनुष्य, मद्र देश में रहने वाले, तेली, रजक (धोबी, रंगरेज) और चोरों को पीड़ित करता है।

पराशरस्तु

सौम्ये यजमानयाजकार्यजनमध्यदेशवत्सजनपदाः ।
रौद्रे पारतरमठतैलिकरजकदस्यवः ॥

यदि मृगशिरा नक्षत्र में शनि स्थित हो यजमान, याजक, प्रधान मनुष्य, मध्य देश और वत्सदेश के निवासियों को पीड़ित करता है। आर्द्रा में रहने पर पारतर देश, मद्रदेश, तेली, रजक और चोरों को पीड़ित करता है।

वराहसंहितायाम्

आदित्ये पाञ्चनदप्रत्यन्तसुराष्ट्रसिन्धुसौवीराः ।
पुष्ये घाण्टिकघौषिकयवनवणिक्कितवकुसुमानि ॥

यदि पुनर्वसु नक्षत्र में शनैश्चर स्थित हो तो पञ्जाब, गुहा, सौराष्ट्र, सिन्धु के समीप और सौवीर देश में रहने वाले— इन सबों को पीड़ित करता है। यदि शनैश्चर पुष्य नक्षत्र में स्थित हो तो घण्टा बजाने वाले, उद्घोषक, यवन, व्यापारी, धूर्त्त और फूलों को पीड़ित करता है।

पराशरस्तु

आदित्ये सुराष्ट्रसिन्धुसौवीरपञ्चनदप्रत्यन्ता विधवाश्च। पुष्येषु पुष्यमाणवकघाण्टिकघौषिकपोतयात्रियवनवणिग्दूतान् ।

यदि पुनर्वसु नक्षत्र में शनि स्थित हो तो सौराष्ट्र, सिन्धु प्रदेश, सौवीर, पञ्जाब और गुहा में निवास करने वालों को तथा विधवाओं को पीड़ित करता है। यदि पुष्य नक्षत्र में शनि विचरण करे तो पौष्टिक द्रव्य और कर्म, घण्टा बजाने वाले, उद्घोषक, नाव में यात्रा करने वाले, यवन, व्यापारी और दूतों को पीड़ित करता है।

---

१. रौद्रे पारतहरे मलतैलिकरजकचौराश्च इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

सार्पे जलरुहसर्पाः पित्र्ये वाह्लीकचीनगान्धाराः ।
[१]शूलिकपारतवैश्याः कोष्ठागाराणि वणिजश्च ॥

यदि आश्लेषा नक्षत्र में शनैश्चर बैठा हो तो जल में उत्पन्न होने वाले प्राणियों और सर्पों को पीड़ित करता है । यदि मघा नक्षत्र में शनि बैठा हो तो वाह्लीक, चीन, गान्धार, शूलिक और पारतर देश में रहने वाले मनुष्य, वैश्य, कोष्ठागार और वणिक् इन सबको पीड़ित करता है ।

पराशरश्च

आश्लेषासु च सर्पाः सलिलजाः । मघासु मौलिक-चीनगान्धारवैश्यपारतदरदशिविकोष्ठागाराणि ।

यदि आश्लेषा नक्षत्र में शनि स्थित हो तो सर्पों और जल में उत्पन्न होने वाले वस्तु या जीवों को पीड़ित करता है । मघा नक्षत्रगत शनैश्चर चीन और गान्धारदेश के मूल निवासी, वैश्य, पारतर, दरद, शिबिदेश और कोष्ठागारों का नाश करता है ।

वराहसंहितायाम्

भाग्ये रसविक्रयिणः पण्यस्त्रीकन्यकामहाराष्ट्राः ।
आर्यम्णे नृपगुडलवणभिक्षुकाम्बूनि तक्षशिला ॥

पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र में स्थित शनैश्चर रस (मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषाय) बेचने वालों, पण्यस्त्री (वेश्या), कुमारी और महाराष्ट्र देश में निवास करने वाले मनुष्यों को पीड़ित करता है । उत्तरफाल्गुनी में शनि के स्थित रहने पर राजा, गुड़, नमक, भिक्षुक, जल और तक्षशिला नगरी को पीड़ा होती है ।

पराशरस्तु

भाग्ये रसविक्रयिकपण्यस्त्रीकन्यकामहाराष्ट्राः आर्यम्णे नृपनृपति-पत्नीसुततिललवणगुडभिक्षुकपूजककूर्चधरतक्षशिलादरदवासिनः ।

पूर्वफाल्गुनी में शनि के स्थित रहने पर रस बेचने वाले, वेश्या स्त्री, कुमारी और महाराष्ट्र के निवासी पीड़ित होते हैं । उत्तरफाल्गुनी में शनैश्चर स्थित हो तो राजा, रानी, राजा का पुत्र, तिल, नमक, गुड़, भिक्षुक, पुजारी, कूर्चधर, तक्षशिला और दरद देशवासी को पीड़ा होती है ।

वराहसंहितायाम्

हस्ते नापितचाक्रिकचौरभिषक्सूचिकद्विपग्राहाः ।
बन्धक्यः कौशलका मालाकाराश्च पीड्यन्ते ॥

---

१. मौलिक इति पाठान्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हस्त नक्षत्र में स्थित शनैश्चर हजाम, चाक्रिक (तेली, कुम्भकार आदि), चोर, वैद्य, शिल्पी या दर्जी, हाथी पकड़ने वाले, वेश्या, कोशलदेशवासी और माली को पीड़ित करता है।

पराशरस्तु

हस्ते हस्तिहस्तिग्राहस्तेनभिषग्रजकसूचिकनापित-
मालाकारबन्धकीकोशलाः ।

हस्त नक्षत्र में स्थित शनि हाथी, हाथी को पकड़ने वाले, चोर, वैद्य, रजक (धोबी, रंगरेज आदि), शिल्पी या दर्जी, हजाम, माली, वेश्या और कोशल देशवासी— इन सबों को पीड़ित करता है।

वराहसंहितायाम्

चित्रास्थे प्रमदाजनलेखकचित्रज्ञचित्रभाण्डानि ।
स्वातौ मागधचरदूतसूतपोतप्लवनटाद्याः ॥

चित्रा में स्थित शनैश्चर स्त्रीगण, लेखक, चित्रकार, चित्रभाण्ड (अनेक प्रकार के वैश्यों के धन = 'भाण्डवणिङ्मूलधने भूपाश्वभूषयोरि'ति मेदिनी) ये सब पीड़ित होते हैं। स्वाती में शनि के रहने पर मगध, गुप्तचर, दूत, सारथी, नाव पर चलने वाले, नट आदि को पीड़ा होती है।

पराशरस्तु

त्वाष्ट्रे प्रमदालेखकचित्रकारचित्रभाण्डानि । स्वातौ दूत-
चरसूतमागधप्लवकनटनर्त्तकगायकवादकपोतयात्रिकाः ।

चित्रा में शनि के स्थित रहने पर स्त्री, लेखक, चित्रकार, अनेक प्रकार के वैश्यों के धन, स्वाती में गुप्तचर (दूत), सारथी, मगध देशवासी या कीर्त्ति गाने वाले (भाँट), तैरने वाले, नट, नाचने वाले, गाने वाले, बजाने वाले, जलयान पर यात्रा करने वाले— इन सबों को पीड़ा होती है।

वराहसंहितायां तु

ऐन्द्राग्नाख्ये त्रैगर्त्तचीनकौलूतकुङ्कुमं लाक्षा ।
शस्यान्यथ माञ्जिष्ठं कौसुम्भं च क्षयं याति ॥

यदि विशाखा नक्षत्र में शनि बैठा हो तो त्रिगर्त्त, चीन और कुलूत देश में निवास करने वाले, कुङ्कुम, लाह, धान्य, मञ्जीठ और कुसुम्भ के पुष्पों का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परशरस्तु

ऐन्द्राग्ने त्रिगर्त्तचीनकौलूतलाक्षाकुङ्कुमकुसुम्भमाञ्जिष्ठ-पीतकुसुमशस्यानि विग्रहकामाश्च।

यदि विशाखा नक्षत्र में शनि स्थित हो तो त्रिगर्त्त, चीन और कुलूत देशवासी, लाख, कुङ्कुम, कुसुम्भ पुष्प, पीला पुष्प, धान्य— इन सबों का क्षय होता है।

वराहसंहितायाम्

मैत्रे कुलूततङ्गणखसकाश्मीराः समन्त्रिचक्रचराः।
उपतापं यान्ति च घाण्टिकाः विभेदश्च मित्राणाम्॥

यदि शनैश्चर अनुराधा नक्षत्र में स्थित हो तो कुलूत, तङ्गण, खस (नेपाल) और कश्मीर देशों में स्थित मनुष्य, मन्त्री और चक्र चलाने वाले (कुम्भकार, तेली आदि), घण्टा बजाने वाले— इन सबों को पीड़ित करता है तथा मित्रों में परस्पर भेदभाव उत्पन्न करता है।

पराशरस्तु

अनुराधासु खसतङ्गणकूलूतकाश्मीरसमचक्रिचरमन्त्रि-घाण्टिकाः। मित्रभेदं च विन्द्यात्।

अनुराधा में शनि के स्थित रहने पर खस (नेपाल), तङ्गण, कुलूत और कश्मीर देशों में निवास करने वाले, समचक्रिचर (चक्र चलाने वाले), मन्त्री और घण्टा बजाने वाले पीड़ित होते हैं तथा मित्रों में परस्पर विभेद होता है।

वराहसंहितायाम्

ज्येष्ठासु नृपपुरोहितनृपसत्कृतशूरगणकुलश्रेण्यः।
मूले च काशिकोशलपाञ्चालफलौषधीयोधाः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र में स्थित शनैश्चर राजा, पुरोहित, राजा से पूजित, शूरवीर, गण (समूह या संन्यासियों के मठ), प्रधान कुल और श्रेणियों (जनसन्धियों) को पीड़ित करता है। मूल में स्थित शनि काशी, कोशल, पञ्जाब— इन देशों में रहने वाले मनुष्य, फल, औषधि और युद्ध करने वालों को पीड़ित करता है।

पराशरस्तु

ऐन्द्रे जातिगणकुलश्रेणीज्येष्ठनृपनृपतिसत्कृतपुरोहितान्।
मूले काशिकोशलपाञ्चालमूलफलौषधीयोधान्।

ज्येष्ठा नक्षत्र में स्थित शनि उत्तम जाति, गण, प्रधान कुल, श्रेणी, प्रधान राजा, राजाओं से पूजित— इन सब लोगों को पीड़ित करता है। मूल नक्षत्रगत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनैश्चर काशी, कोशल और पञ्जाब देश के निवासियों, मूल फल (फल-मूल) औषधि और योद्धाओं को पीड़ित करता है।

वराहसंहितायाम्

आप्येऽङ्गबङ्गकोशलगिरिव्रजा मगधपुण्ड्रमिथिलाश्च।
उपतापं यान्ति जना वसन्ति ये ताम्रलिप्त्यां च॥

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में स्थित शनि अङ्ग, वङ्ग, कोशल, गिरिव्रज, मगध, पुण्ड्र, मिथिला और ताम्रलिप्ती देशों में निवास करने वाले लोगों को पीड़ित करता है।

तथा च पराशरः

पूर्वाषाढास्वङ्गमगधबङ्गपुण्ड्रकोशलमिथिलागिरिव्रजताम्रलिप्तिवासिनः।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्रगत शनैश्चर अङ्ग, मगध, बङ्गाल, पुण्ड्र, कोशल, मिथिला, गिरिव्रज और ताम्रलिप्ति के निवासियों को पीड़ा देता है।

वराहसंहितायाम्

विश्वेश्वरेऽर्कपुत्रश्चरन् दशार्णान् निहन्ति यवनांश्च।
उज्जयिनीं शवरान् पारियात्रकान् कुन्तिभोजांश्च॥

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में शनैश्चर स्थित हो तो दशार्ण देश में रहने वाले मनुष्य, यवन, उज्जयिनी देश, शबर, पारियात्र पर्वत पर रहने वाले और कुन्तिभोज देश में स्थित मनुष्यों को पीड़ित करता है।

पराशरस्तु

उत्तरास्ववन्तिशवरकुन्तिभोजदशार्णयवनपारियात्रिकान्।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र में स्थित शनैश्चर अवन्ती, शबर, कुन्तिभोज, दशार्ण, यवन और पारियात्र पर्वत के निवासियों को पीड़ित करता है।

वराहसंहितायाम्

श्रवणे तु गजाधिकृतान् विप्राग्र्यभिषक्पुरोहितकलिङ्गान्।
वसुभे मगधेशजयो वृद्धिश्च धनेष्वधिकृतानाम्॥

यदि श्रवण नक्षत्र में शनैश्चर स्थित हो तो हाथी के अधिकारियों, प्रधान ब्राह्मणों, वैद्यों, पुरोहितों और कलिङ्ग देशवासियों को पीड़ित करता है। धनिष्ठा नक्षत्र में स्थित शनि मगधनरेश की विजय और धनाधिकारियों की वृद्धि करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

वैष्णवेऽग्निवेशकलिङ्गेशविद्वद्विप्राश्रमभिषग्राजाधिकृतपुरोहितान्। श्रविष्ठासु मगधाधिपतिविजयाय विविधवसुनिचयाय तदधिकृतानां देशांश्च निपीडयति।

यदि श्रवण नक्षत्र में शनैश्चर स्थित हो तो अग्निदेश और कलिङ्ग देश के राजाओं, विद्वान्, ब्राह्मण जाति, वैद्य, राजा के अधिकारी और पुरोहितों को पीड़ा होती है। धनिष्ठा में शनि स्थित हो तो मगध के राजा की विजय और अनेक प्रकार के धनों का सञ्चय होता है; परन्तु उनके अधिकृत देशों (स्थानों) को पीड़ा होती है।

वराहसंहितायाम्

साजे शतभिषजि भिषक् कविशौण्डिकपण्यनीतिवार्त्तांश्च।
आहिर्बुध्न्ये नद्यो यानकराः स्त्रीहिरण्यञ्च॥

यदि शनि पूर्वभाद्रसहित शतभिषा नक्षत्र में स्थित हो तो वैद्य, कवि, शौण्डिक (मद्यविक्रेता, मद्यपानरत), क्रय-विक्रय करने वाले और नीतिशास्त्र को जानने वाले पीड़ित होते हैं। उत्तरभाद्र में शनि के स्थित रहने पर नदी (नदी-तीर में रहने वाले), रथाधिकारी, शिल्पी, स्त्री और सुवर्ण का नाश होता है।

पराशरस्तु

शतभिषजि भिषङ्मद्यसुरासवक्रयविक्रयवनितोपजीविदस्युपाखण्डिनिवासिनः। प्राक्प्रौष्ठपदायां द्रविडकैवर्त्तावन्तिचोलपाण्ड्यसिंहलमहेन्द्रनगनिवासिनः। उत्तरायां स्त्रीहिरण्यनिचयतस्करशमीधान्यनदनदीयानयुग्यकरान्।

यदि शतभिषा में शनि स्थित हो तो वैद्य, मादक द्रव्य, सुरा, मदिरा का क्रय-विक्रय करने वाले, स्त्री से जीविका चलाने वाले, चोर, पाखण्डी— इन सबों को पीड़ित करता है। यदि पूर्वभाद्र नक्षत्र में शनि स्थित हो तो द्रविड़, कैवर्त्त, अवन्ती, चोल, पाण्ड्य, सिंहल आदि देशों में रहने वाले मनुष्य और महेन्द्र पर्वत पर रहने वाले लोग पीड़ित होते हैं। उत्तरभाद्र नक्षत्र में शनि स्थित हो तो स्त्री, सुवर्ण, कोशस्थान, चोर, शमी, धान्य, नद, नदी, वाहन आदि का नाश होता है।

वराहसंहितायाम्

रेवत्यां राजभृतः क्रौञ्चद्वीपाश्रिताः शरच्छस्यम्।
शवराश्च निपीड्यन्ते यवनाश्च शनैश्चरे चरति॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि रेवती नक्षत्र में शनैश्चर विचरण करता हो तो राजा के आश्रय में रहने वाले, क्रौञ्च द्वीप में रहने वाले, शारदीय धान्य, शबर जाति और यवन लोग पीड़ित होते हैं।

पराशरस्तु

रेवत्यां शरच्छस्यराजभृतकशवरवनवासिक्रौञ्चद्वीपनिवासिनः।

रेवती नक्षत्र में शनि हो तो शारदीय धान्य, राजा के आश्रय में रहने वाले, शबर, वनवासी, क्रौञ्च द्वीप में रहने वाले लोग पीड़ित होते हैं।

अथ नक्षत्रचारविशेषफलं वराहसंहितायाम्

एकर्क्षचरो वर्षाच्छुभप्रदो द्विभगतिश्च मध्यफलः।
त्रिभगतिरधमफलकरो दिनकरतनयो विनिर्दिष्टः॥

यदि शनैश्चर एक वर्ष में एक नक्षत्र का भोग करे तो शुभ, एक वर्ष में दो नक्षत्रों का भोग करे तो मध्यम और एक वर्ष में तीन नक्षत्रों का भोग करे तो अधम फल देने वाला कहा गया है।

वृद्धगर्गस्तु

एकर्क्षचारी वर्षात्तु स्निग्धो मन्दगतिग्रहः।
क्षेमशस्यसुभिक्षाणामाख्याता द्विगुणं चरन्॥

प्रजाहितानां भावानां विदध्यान्मध्यमं गुणम्।
त्रिनक्षत्रगतं चारं यदा सौरो निषेविते॥

तदा भयान्युदीर्यन्ते धूमकेतुरुदेति वा।
यदि चोर्ध्वं सनक्षत्रं सौरः प्रत्यवसर्पति॥

समस्तानां भयं विद्यात्तदा चित्रं च वर्षति।

यदि निर्मल होकर शनैश्चर एक वर्ष में एक नक्षत्र का भोग करे तो संसार में क्षेम, धान्य और सुभिक्ष होते हैं। यदि एक वर्ष में दो नक्षत्रों का भोग करे तो प्रजाओं के लिए मध्यम फल देने वाला होता है। यदि शनैश्चर का एक वर्ष में तीन नक्षत्रों में चार (गमन) हो या धूमकेतु का उदय हो तो प्रजाओं में भय उत्पन्न होता है। यदि एक वर्ष में तीन नक्षत्रों से अधिक नक्षत्रों में शनि विचरण करे तो समस्त संसार में भय उत्पन्न होता है और कहीं-कहीं वर्षा होती है अर्थात् सर्वत्र वर्षा नहीं होती।

अथ मार्गफलम्

तत्र वृद्धगर्गः

कुर्यात् प्रजानां सौभिक्षमुत्तरं मार्गमास्थितः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुर्भिक्षं चाग्निमूर्च्छा च दक्षिणं मार्गमास्थितः ॥

चरन् कृत्तिकारोहिण्योरुत्तरे चापि दारुणः ।

उत्तर मार्ग से गमन करने वाला शनैश्चर प्रजाओं के लिए सुभिक्षकारक तथा दक्षिण में स्थित शनैश्चर दुर्भिक्ष और अग्निमूर्च्छा (अग्निप्रकोप) करता है; परन्तु कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्रों के उत्तर से भी गमन करने पर शनैश्चर दारुण (भयङ्कर) फल देता है।

पराशरस्तु

सममन्यैर्मार्गफलमन्यत्रार्द्रासावित्रश्रवणयाम्यानिलभाग्येभ्यः ।

विशेषः– अन्यत्रार्द्रेति । आर्द्रासावित्रयाम्यानिलानां तीक्ष्णसम्भ्रमः । लम्बायमाने पुरस्तादेव तेन भाग्यस्य चोग्रं वाऽस्य चोग्रं तदुत्तरेणापि गमनमशोभनम् । एवमशोभनमध्यपतित्वाच्छ्रवणस्य तदुत्तरगमनमप्यशोभनमिति ।

आर्द्रा, हस्त, श्रवण, भरणी, स्वाती और पूर्वफाल्गुनी नक्षत्रों के अतिरिक्त नक्षत्रों में मार्गफल यथोक्त (उत्तर मार्ग से गमन करने पर शुभ और दक्षिण मार्ग से गमन करने पर अशुभ) समझना चाहिये। अर्थात् इन नक्षत्रों में मार्गभेद से फल में अन्तर नहीं होता है। इन नक्षत्रों में शनैश्चर का फल प्रचुर वृष्टिकारक बताया गया है; परन्तु पराशर का यह मत वृद्धगर्गादि के मत से सम्मत है।

वृद्धगर्गः

नक्षत्रपृष्ठतः सौरो यदा प्रत्यक् प्रलम्बते ।
तदा भवति दुर्भिक्षमुत्तरेण तु सम्भ्रमः ॥

लम्बमाने पुरस्तात्तु भयं भवति शस्त्रतः ।
व्याधिस्तु [१]सुमहायासो जायते दक्षिणाश्रये ॥

अधस्ताद्राजमरणमुपरिष्टात् पराजयः ।

यदि शनैश्चर नक्षत्र के पृष्ठभाग (पश्चिम भाग) से पश्चिम की ओर लम्बित होता है तो दुर्भिक्ष, उत्तर से लम्बित होने पर सम्भ्रम (संशय), आगे (पूरब) से लम्बायमान होने पर शस्त्रभय (युद्ध) और दक्षिणाश्रित होने पर महान् आयास करने वाली व्याधि प्रजाओं में होती है। अधोभाग से लम्बायमान होने पर राजा का मरण और ऊपर से लम्बित होने पर राजा की पराजय होती है।

अथोदयास्तफलं विष्णुधर्मोत्तरे

रोद्रे हस्ते तथा चाप्ये आहिर्बुध्न्ये शनैश्चरः ।

---

१. बहूनामायासं करोतीति सुमहायासाः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदोदयं प्रपद्येत तदा नश्यन्ति पार्थिवाः ॥

आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ़ और उत्तरभाद्र नक्षत्रों में जब शनि उदित होता है तब राजाओं का नाश होता है।

वृद्धगर्गस्तु

द्वयोर्नक्षत्रयोर्मध्ये यदोदेति शनैश्चरः।
दिशानां मध्यदेशानां प्रत्यन्तानवमर्दति ॥
विरश्मिश्चोदितो हन्याद्दुष्टान् सर्वान् सुजातिषु।
उदितो वा पुनः सौरो वैश्वानरपथे स्थितः।
पुरपर्वतदुर्गाणि कुधान्यानि च मर्दति ॥

शनैश्चर यदि दो नक्षत्रों के मध्य (सन्धिस्थान) में उदित होता है तो दिशाओं, मध्यदेशों और गुहाओं में रहने वालों को पीड़ित करता है। यदि शनैश्चर उदित होकर रश्मिहीन दिखाई दे तो सुजातियों (उच्च जाति के लोगों) में स्थित सभी दुष्टों का नाश करता है। यदि उदित होकर वैश्वानर मार्ग (दक्षिणमार्ग) में शनैश्चर स्थित हो तो पुर, पर्वत, दुर्ग और कुधान्यों का नाश करता है।

पराशरस्तु

तस्याष्टाविंशतिवार्षिकः सप्तविंशतिनक्षत्रचारः। त्रिमार्गस्तत्र। प्रवासक्रमात् सप्तविंशतिस्त्रिंशदधिकोना चाह्नामन्यथा त्वहितः।

विशेषः– अस्यार्थः— प्रवासोऽस्तमयः। तत्समयोऽह्नां त्रिंशत्। अधिकोना एकेनाधिका ऊना वेति।

शनैश्चर का सत्ताईस नक्षत्रों में अट्ठाईस वर्षों में चार (एक भभ्रम = भगण) होता है, जिनमें (मुख्य) तीन मार्ग (उत्तर, मध्य और दक्षिण) होते हैं। सत्ताईसों नक्षत्रों में प्रवास (अस्त) होने पर २९ या ३० या ३१ दिनों तक शनि अस्तङ्गत रहता है। इससे अधिक या न्यून अस्तकाल अशुभ होता है।

अथ वक्रफलं वराहसंहितायाम्

प्राग्द्वारेषु चरन् रविपुत्रो नक्षत्रेषु करोति च वक्रम्।
दुर्भिक्षं कुरुते भयमुग्रं मित्राणां च विरोधमवृष्टिम् ॥

शनि यदि प्राग्द्वार (कृत्तिका आदि सात नक्षत्रों) में विचरण करता हुआ वक्री हो जाय तो दुर्भिक्ष, घोर भय, मित्रों में परस्पर विरोध और अवृष्टि करता है।

गर्गश्च

विलोमितगतिः सौरः प्राग्द्वारेषु यदा भवेत्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनावृष्टिभयं घोरं दुर्भिक्षं मित्रविग्रहः ॥

यदि प्राग्द्वार में विचरण करता हुआ शनि वक्रगतिक हो जाय तो अनावृष्टि का उग्र भय, दुर्भिक्ष और मित्रों में परस्पर विरोध होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

प्राग्द्वारेषु चरंस्तेषु सौरो वक्रमियाद्यदि।
पृथिवीं पीडयेत् सर्वां पूर्वदेशं विशेषतः ॥

यदि पूर्व द्वार में विचरण करता हुआ शनि वक्री हो जाय तो सम्पूर्ण पृथिवी को पीड़ित करता है; परन्तु पूर्व दिशा में स्थित देशों को विशेष रूप से पीड़ित करता है।

शान्तिविधिः

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु शनैश्चरोत्पातेषु शनैश्चरपूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्तिरौत्पातिक-फलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या – इति।

शनैश्चराद्भुतावर्त्तोक्त उत्पातों की जहाँ शान्ति नहीं बतलायी गई है, उनकी शान्ति के लिए उत्पात-फल की गुरुता और लघुता को जान कर तदनुसार शनैश्चर ग्रह की पूजा और प्रचुर मात्रा में सुवर्ण, अन्न, गौ, भूमि आदि का दान कर सामान्य शान्ति करनी चाहिये।

फलपाकसमयो वराहसंहितायाम्

अब्देन शनेः– इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्वल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे शनैश्चराद्भुतावर्त्तः

शनैश्चरोत्पात का फल एक वर्ष तक प्राप्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ केत्वद्भुतावर्त्तः

पौर्णिमायां तु यदृक्षं तस्मात् पञ्चदशो रविः ।
रवेर्द्वादशगः केतुः केतोः सप्तमगो बुधः ॥
बुधाद्द्वितीयगः शुक्रः शुक्रादष्टमगः कुजः ।
शनिः सुरगुरू राहुर्ज्ञेयाः शास्त्रात् स्थिरा नव ॥

पूर्णिमा तिथि को जो नक्षत्र रहता है, उस नक्षत्र से पन्द्रहवें नक्षत्र में उस दिन सूर्य स्थित रहता है। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से बारहवें नक्षत्र में केतु, केतु से सातवें नक्षत्र में बुध, बुध से दूसरे नक्षत्र में शुक्र और और शुक्र से आठवें नक्षत्र में मङ्गल स्थित रहता है। इस तरह शनि, बृहस्पति और राहु की स्थिति शास्त्रानुसार जाननी चाहिये। अर्थात् शनि, गुरु और राहु का स्थान स्वतन्त्र है। परन्तु यह ठीक नहीं है; क्योंकि केतु से छः राशि की दूरी पर राहु का स्थान निश्चित है तथा दोनों की गति भी समान है। सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर शेष ग्रहों की उक्त स्थिति प्रति पूर्णिमा में नहीं होती है। यह गणित से सिद्ध है। अतः संहिताकारों के मतानुसार उक्त स्थिति धूमकेतु की है, जो औत्पातिक होता है।

तत्र शुभसूचककेतुलक्षणमाह पराशरः

स्निग्धः प्रसन्नो विमलः प्रदक्षिणगतिस्तथा ।
दृश्यते येषु देशेषु शिवं तेषां विनिर्दिशेत् ॥

जहाँ पर निर्मल, आनन्ददायक, स्वच्छ तथा प्रदक्षिण गति (दक्षिण से उत्तर तरफ गमनशील) वाले केतु का दर्शन हो, वहाँ के निवासियों का शुभ होता है।

वराहसंहितायाम्

ह्रस्वतनुः प्रसन्नः स्निग्धस्त्वृजुरचिरसंस्थितः शुक्लः ।
उदितो वाऽप्यभिवृष्टः सुभिक्षसौख्यावहः केतुः ॥

यदि छोटा, पतला, निर्मल, स्निग्ध, सरल, थोड़े ही दिनों में अदृश्य होने वाला, श्वेत वर्ण वाला और उदय के समय वर्षा करे तो वह केतु सुभिक्ष और सुख देने वाला होता है।

तथा च समाससंहितायाम्

अचिरस्थितोऽभिवृष्टस्त्वृजुस्तनुः स्निग्धमूर्त्तिरुदगुदितः ।
ह्रस्वः स्मितः प्रसन्नः केतुर्लोकस्य भावाय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष:– येषामयं स्वामी तेषामेवंविधो विशेषेण शुभकर: । विपरीतो विशेषेण विपरीतकर: ।

यदि थोड़े दिनों तक दिखाई देने वाला, उदय के समय वर्षा करने वाला, सरल, स्निग्ध, उत्तर में उदित, पतला, छोटा, स्वच्छ, प्रसन्न केतु दिखाई दे तो वह प्रजाओं के लिए शुभदायक होता है।

उक्त शुभसूचक केतु जिनका स्वामी होता है, उनका विशेष रूप से शुभ होता है और उक्त के विपरीत (अशुभ) केतु उनके लिए अशुभकारक होता है।

अशुभसूचककेतुलक्षणं वराहसंहितायाम्

उक्तविपरीतरूपो न शुभकरो धूमकेतुरुत्पन्नः ।
इन्द्रायुधानुकारी विशेषतो द्वित्रिचूडो वा ॥

उक्त लक्षण से विपरीत लक्षण वाले धूमकेतु का उदय हो तो वे शुभ करने वाले नहीं होते हैं तथा इन्द्रधनुष की आकृति वाले, दो या तीन शिखा वाले केतु विशेष कर अशुभ फल देते हैं।

वटकणिकायाम्

न शुभो विपरीतोऽतो विशेषतः शक्रचापसङ्काशः ।
द्वित्रिचतुश्चूडो वा दक्षिणदिक्स्थश्च मृत्युकरः ॥

उक्त शुभसूचक लक्षण वाले के विपरीत अर्थात् अशुभसूचक केतु, विशेष कर इन्द्रधनुष की तरह, दो, तीन या चार शिखा वाले केतु, दक्षिण दिशा में उदित केतु मृत्युकारक होते हैं।

हरिवंशे बाणयुद्धनिमित्तम्

दक्षिणां दिशमास्थाय धूमकेतुः स्थितोऽभवत् ॥

बाणयुद्ध के समय दक्षिण दिशा में धूमकेतु उदित दिखाई दिया।

केतुस्वामिकान्याह काश्यपः

प्राकाराभ्युच्छ्रिताः श्रृङ्गगिरिस्थाः विजिगीषवः ।
प्रत्यन्तवासनिरताः परच्छिद्रविशारदाः ॥

मूर्खा विज्ञानहीनाश्च निर्मर्यादा नरास्तथा ।
परदाररता नीचाः केतोरेतान् विनिर्दिशेत् ॥

अत्यधिक ऊँचे प्राकार (बाँस या कटीले तार या दीवाल का घेरा) के अन्दर के निवासी, श्रृंग पर्वत पर रहने वाले, जीतने की इच्छा रखने वाले, गुहा में रहने में निरत, दूसरे के दोषों को जानने में विशारद (निपुण), मूर्ख, विज्ञानहीन, अमर्यादित मनुष्य, परस्त्री में रत रहने वाले, नीच— इन सबों का स्वामी केतु है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

गिरिदुर्गपह्लवश्वेतहूणचोलावगाणमरुचीनाः ।
प्रत्यन्तनिग्रहेच्छा व्यवसायपराक्रमोपेताः ॥

परदारविवादरताः पररन्ध्रकुतूहला मदोत्सिक्ताः ।
मूर्खाधार्मिकविजिगीषवश्च केतोः समाख्याताः ॥

गिरि दुर्ग, पह्लव, श्वेत, हूण, चोल, आवगाण, मरुभूमि, चीन, गुहा में निवास करने वाले, धन की इच्छा वाले व्यवसायी, पराक्रमी, परस्त्रीगामी, विवादी, दूसरे का दोष सुनने के लिए उत्कण्ठित, मदमत्त (पागल), मूर्ख, अधार्मिक, जीतने की इच्छा रखने वाले— इन सबों का स्वामी केतु है।

वटकणिकायां तु

शिखिनो गिरिसंस्थितावगाणा मरुभूः पह्लवचोलसुह्महूणाः ।
व्यवसायपराक्रमोपपन्नाः परदारार्थरता मदोत्कटाश्च ॥

पर्वत पर रहने वाले, आवगाण, मरुभूमि, पह्लव, चोल, सुह्म, हूण के निवासी, व्यवसायी, पराक्रमी, परस्त्री और परधन में लीन, मदोत्कट (पागल)— इन सबों का स्वामी केतु है।

अथ वर्णफलं गार्गीये

सर्वेषामेव केतूनामष्टौ वर्णाः प्रकीर्त्तिताः ।
श्वेतो रक्तस्तथा पीतः कृष्णश्चेति चतुष्टयम् ॥

अर्चिषो धूमकेतूनामुदयेषूपलक्षयेत् ।
हरितो धूम्रवर्णश्च कपिलो वह्निसन्निभः ॥
हन्ति वर्णांस्तथा सर्वान् धूमकेतुश्चराचरान् ॥

सभी प्रकार के केतुओं के मुख्य आठ रंग (श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण, हरित, धूम्र, कपिल और अग्नि की तरह) के वर्ण कहे गये हैं। ये वर्ण धूमकेतु के उदय के समय जानने चाहिये।

उक्त आठ वर्णों में चार वर्ण (श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण) क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों का नाश करते हैं और शेष चार हरित, धूम्र, कपिल और अग्निसदृश वर्ण वाला केतु सभी वर्ण के लोगों और चराचरों का नाश करते हैं।

भार्गवीये तु

विप्रान् श्वेताकृतिर्हन्ति क्षत्रियान् हन्ति लोहितः ।
वैश्यांस्तु पीतको हन्ति शूद्रान् हन्ति तथाऽसितः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतरान् पीडयेत् केतुरन्यवर्णो यदा भवेत्।
षण्मासाभ्यन्तरे राज्ञो मरणं च तथा दिशेत्॥

श्वेतः शस्त्राकुलं कुर्याल्लोहितस्त्वग्नितो भयम्।
क्षुद्भयं पीतकः कुर्यात् कृष्णो रोगमथोल्बणम्॥

श्वेत आकृति (वर्ण) वाला केतु ब्राह्मणों को मारता है, लोहित (रक्त) वर्ण का केतु क्षत्रियों को मारता है, पीले वर्ण का वैश्यों को मारता है तथा कृष्ण वर्ण का धूमकेतु शूद्रों को मारता है। अन्य वर्ण (श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण) के अतिरिक्त वर्ण वाला केतु अन्य सभी लोगों को पीड़ित करता है। अशुभ वर्ण के केतु का उदय होने पर छः मास के भीतर राजा का मरण कहना चाहिये। श्वेत वर्ण का केतु शस्त्राकुल (युद्ध से आकुल) करता है। रक्त वर्ण का प्रजाओं को अग्निभय उत्पन्न करता है। पीले वर्ण का दुर्भिक्ष और कृष्ण वर्ण वाला केतु भयानक रोग उत्पन्न करता है।

अथाकृतिफलं भार्गवीये

वृक्षाकारो विनाशाय सुखाय मुशलाकृतिः।
दीर्घसूक्ष्मः सुखायैव ह्रस्वः स्थूलो विनाशकृत्॥

केतु यदि वृक्ष की तरह दिखाई दे तो प्रजाओं का विनाश, मुशल के समान दिखाई दे तो सुख, लम्बा और पतला दिखाई दे तो सुख और छोटा तथा मोटा केतु दिखाई दे तो विनाश करता है।

अथ केतूनामुदये पूर्वनिमित्तानि भार्गवीये

उष्णं वा यदि वा शीतं निर्घातः पांशुवृष्टयः।
नीहारो भूमिकम्पश्च दिशां दाहस्तथैव च॥

उल्काया दर्शने केतो रूपं विन्द्यादनागतम्।
अशुभस्य मयोक्तं ते शुभस्य च निबोध मे॥

मृदुस्निग्धाः शुभा वाता निर्मलाः सकला दिशः।
शान्ता मृगविहङ्गाश्च ग्रहाः स्फुटमरीचयः॥
कुवेरवायुवरुणसूर्याग्नियमपुत्रकाः ॥

यदि तीव्र गर्मी या तीव्र शीत (ठण्ढ़ी), निर्घात, पांशुवृष्टि (धूलिवर्षण), नीहार (हिमपात), भूकम्प, दिग्दाह, उल्कापात का दर्शन हो तो आगे अशुभ फलदायक धूमकेतु का उदय जानना चाहिये। यदि कोमल निर्मल सुन्दर हवा चले, सभी दिशायें निर्मल दिखाई दें, पशु-पक्षी शान्त हों, स्पष्ट किरण से युक्त ग्रह दिखाई दे तो शुभ फल देने वाले केतु का उदय होने वाला है, यह जानना चाहिये। ऐसे शुभाशुभ कुबेर, वायु, वरुण, सूर्य, अग्नि और यम के पुत्र अनेक केतु हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

षड्विधाः केतवो वसन्तादिषु षडृतुषूदयन्ते यदुक्तं भार्गवीये

चैत्रवैशाखयोर्मध्ये कौवेरांस्तु विनिर्दिशेत् ।
तेषां चैव तु कार्याणि लक्षणैः शृणु यादृशैः ॥

उद्धृतैर्यूपवेदीभिरुच्छ्रितैर्ध्वजतोरणैः ।
हविर्धूमाकुला तत्र दृश्यते च वसुन्धरा ॥

त्रिविष्टपं समापन्नस्तदा शक्रो महीपतिः ।
एवं प्रजास्तु मन्यन्ते कुवेरो गृहमागतः ॥

उदये कुवेरपुत्राणामेतद्भवति लक्षणम् ।
ज्येष्ठे चैव तथाऽऽषाढे वायुपुत्रान् विनिर्दिशेत् ॥

तेषामेव तु कर्माणि लक्षणैः शृणु यादृशम् ।
वान्ति चैव महावाता महायुद्धं महाभयम् ॥

भज्यन्ते च महावृक्षास्तोरणाट्टालकानि च ।
गृहाणि रमणीयानि क्षयं यान्ति जलानि च ॥

उदये वायुपुत्राणामेतद्भवति लक्षणम् ।
श्रावणप्रौष्ठपदयोर्वारुणांस्तु विनिर्दिशेत् ॥

तेषां चैव तु कर्माणि लक्षणैः शृणु यादृशैः ।
आवाहयन्ति ते मेघान् पूर्णां कुर्याद्वसुन्धराम् ॥

उन्मार्गाः सरितो यान्ति जलवेगसमाहताः ।
धान्यं समर्घतां याति ईतयो न भवन्ति हि ॥

उदये वरुणानां तु एतद्भवति लक्षणम् ।
आश्विने कार्त्तिके चैव सूर्यपुत्रान् विनिर्दिशेत् ॥

तेषां चैव तु कर्माणि लक्षणैः शृणु यादृशैः ।
ततो दहति शीतांशुः सर्वान्नानि दिवाकरः ॥

म्रियन्ते च तदा गावः श्वापदाश्च विशेषतः ।
विषं च प्रबलं तत्र सर्वदंष्ट्रिषु दारुणम् ॥

उदये सूर्यपुत्राणामेतद्भवति लक्षणम् ।
मार्गशीर्षे च पौषे च वह्निपुत्रान् विनिर्दिशेत् ॥

तेषां चैव तु कर्माणि लक्षणैः शृणु यादृशैः ।
अग्निर्दहति राष्ट्राणि हरितश्च वनानि च ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्रवन्ति ततो देशाः समन्ताद्भयपीडिताः ।
कस्मिँश्चिज्जायते क्षेमं कस्मिंश्चिज्जायते भयम् ॥

उदये वह्निपुत्राणामेतद्भवति लक्षणम् ।
माघफाल्गुनयोर्मध्ये यमपुत्रान् विनिर्दिशेत् ॥

तेषां चैव तु कर्माणि लक्षणैः शृणु यादृशैः ।
शीघ्रं भवति दुर्भिक्षं हाहाभूतमचेतनम् ॥

छर्दिज्वरातिसाराश्च ग्लानिश्चैवाक्षिवेदना ।
उदये यमपुत्राणामेतद्भवति लक्षणम् ॥

चैत्र और वैशाख महीनों में (वसन्त ऋतु में) कौबेर केतुओं (कुबेर के पुत्र) का उदय होता है। कौबेर केतु के उदित होने पर अनेकों सुन्दर यज्ञ के यूप, वेदी, ऊँचे-ऊँचे ध्वज, तोमर और हवन के धूमों (धुयें) से समस्त पृथ्वी आकुल (व्याप्त) देखी जाती है। पृथ्वी स्वर्ग के समान (सुख-सौमनस्य से युक्त) हो जाती है। राजा मानो इन्द्र ही हो जाते हैं। प्रजा ऐसा मानती है, जैसे कुबेर ही घर में आ गये हों अर्थात् सभी लोग धन-धान्य से सुखी हो जाते हैं। इन लक्षणों और कार्यों से कौबेर केतु की पहचान होती है।

ज्येष्ठ और आषाढ़ (ग्रीष्म ऋतु) में वायुपुत्र नामक केतु का उदय होता है। उनके उदित होने पर महावात (आँधी-तूफान) बहता है, महान् भयकारक महायुद्ध होता है, बड़े-बड़े वृक्ष, बड़ी-बड़ी अट्टालिकायें, सुन्दर घर गिरकर नष्ट हो जाते हैं और जल (वृष्टि) का नाश होता है। इन लक्षणों और कार्यों से वायुपुत्र केतुओं को पहचाना जाता है।

श्रावण और भाद्र (वर्षा ऋतु) में वारुण केतुओं (वरुणपुत्रों) का उदय होता है। यदि वर्षा ऋतु में वारुण केतुओं का उदय हो तो वे मेघों का आवाहन करते हैं और पृथ्वी को जलमग्न करते हैं। तेज धाराओं से युक्त नदियों में बाढ़ आती है। धान्य की समर्घता (सस्ती) होती है अर्थात् धान्य की अच्छी ऊपज होती है तथा अनावृष्टि, अतिवृष्टि, शलभ आदि ईतियाँ नहीं होती हैं। इन कार्यों और लक्षणों से वारुण केतुओं को जाना जाता है।

आश्विन और कार्त्तिक (शरद ऋतु) मासों में सूर्यपुत्र केतुओं का उदय होता है। इनके उदित होने से चन्द्रमा, सूर्य और अन्न जलते हैं अर्थात् सूर्य-चन्द्र की रश्मि में दाहकता आ जाती है और वर्षा के अभाव में सभी अन्न (धान्य) नष्ट हो जाते हैं। गौओं की मृत्यु होती है। कुक्कुरों की अधिकता होती है। सभी दंष्ट्रियों (सूअर, कुत्ते आदि) में विषों की प्रबलता होती है। सूर्यपुत्र केतुओं के उदित होने पर उक्त कार्य एवं लक्षण देखे जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्रहायण और पौष (हेमन्त ऋतु) मासों में अग्निपुत्र केतुओं का उदय होता है। इनके लक्षण एवं कार्य इस प्रकार हैं—

इनके उदित होने पर राष्ट्र और हरे-भरे वन आग से जलते हैं। देश में चारो ओर भय और पीड़ा होती है। कहीं-कहीं क्षेम और कहीं-कहीं भय होता है। अग्निपुत्र केतुओं के ये लक्षण होते हैं।

माघ और फाल्गुन (शिशिर ऋतु) मासों में यमपुत्र केतुओं का उदय होता है। उनके कार्य और लक्षण इस प्रकार हैं—

इनके उदित होने पर शीघ्र दुर्भिक्ष होता है। जिससे समस्त लोकों में हाहाकार मच जाता है और लोग अचेतन हो जाते हैं। विषमज्वर, अतिसार, क्षयरोग, नेत्ररोग आदि होते हैं। यमपुत्र के उदित होने पर ये लक्षण देखे जाते हैं।

देवलस्त्वाग्नेयाद्या नवविधा अष्टोत्तरशतकेतवः। कृत्तिकादिषु त्रिषु नक्षत्रेषु स्थिता उदयन्ते इत्याह। तद्यथा

कृत्तिका रोहिणी सौम्यं पृथिवीमध्यमुच्यते।
केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते आग्नेया दश पञ्च च॥

आग्नेयेषु च दृष्टेषु लोकानां च क्षयो ध्रुवम्।
नित्योद्विग्नाश्च राजानो जनमारस्तदा भवेत्॥

रौद्रं पुनर्वसुः पुष्यः पृथिव्यां पूर्वमुच्यते।
केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते रौद्रास्तेऽप्येकविंशतिः॥

यदा रौद्राः प्रदृश्यन्ते दुर्भिक्षं निर्दिशेत्तदा।
घूर्णन्ते च प्रजाः सर्वा मृत्युक्षुद्रोगपीडिता॥

आश्लेषापित्र्यभाग्यानि विन्द्याद्दक्षिणपूर्वतः।
केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते उद्दालकिसुता दश॥

केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते शिखिनो मुनिसम्भवाः।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सुवृष्टिः शस्यसम्पदः॥

आर्यम्णादीनि च त्रीणि विन्द्याद्दक्षिणभागतः।
केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते काश्यपेयाश्चतुर्दश॥

अनावृष्टिभयं घोरं प्रजानामतिदारुणम्।
स्वाती विशाखा मैत्रं च भागो दक्षिणपश्चिमः॥

केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते चत्वारो मृत्युसम्भवाः।
भयं च विविधं विन्द्याद्गर्गस्य वचनं यथा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुर्भिक्षं मरकं घोरमनावृष्टिश्च दारुणा।
उपद्रवश्च भूतानां तदा भवति दारुणः॥

ज्येष्ठा मूलपूर्वाषाढ़ा भाग एषां तु पश्चिमः।
केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते सुतास्ते सोमसम्भवाः॥

सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च मही यज्ञोत्सवाकुला।
उत्तरा श्रवणं चैव नक्षत्रं वसुदैवतम्॥

केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते माहेयाः पञ्चविंशतिः।
माहेयेषु च दृष्टेषु लोकानां संक्षयो ध्रुवम्॥

तदा राजसहस्राणां मही पिबति शोणितम्।
वारुणं चैव नक्षत्रं तथा भाद्रपदद्वयम्॥

केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते वारुणास्त्रय एव तु।
ऊर्मिकेतुः श्वेतकेतुर्धूमकेतुस्तृतीयकः॥

ऊर्मिकेतुर्यदा दृश्यस्तदा ह्युदकजं भयम्।
श्वेतकेतुर्यदा दृश्यः श्वेतास्थिं कुरुते महीम्॥

तदा मानुषमांसानि भक्षयन्तीह मानुषाः।
न माता मन्यते पुत्रं पुत्रो वा मातरं तथा॥

न पिता पुत्रसम्भूतं स्नेहं सम्प्रतिपद्यते।
न पतिं मन्यते नारी न बन्धुर्बान्धिवं तथा॥

क्षुद्भयार्त्तं जगत् कृत्स्नं चक्रवद्भ्रमते तदा।
धूमकेतुर्यदा दृश्यस्तस्य वक्ष्यामि लक्षणम्॥

स हन्ति तारया योधान् राजानं मन्त्रिणं तथा।
स हन्ति शिखया देशान् सराष्ट्रजनकाननान्॥

रेवत्याश्वयुजं चैव नक्षत्रं यमदैवतम्।
केतवो ह्यत्र दृश्यन्ते यमपुत्रास्त्रयोदश॥

यमपुत्रेषु दृष्टेषु लोकानां संक्षयो ध्रुवम्।
स्थावरा मानुषाः सर्वे पशवः पक्षिणस्तथा॥

चतुर्विधानां भूतानां संक्षयो जायते तदा॥

देवल ने नौ प्रकार के कुल १०८ केतुओं का उदय कृत्तिकादि तीन-तीन नक्षत्रों में बताया गया है, जो इस प्रकार है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र पृथिवी के मध्य भाग में कहे गये हैं। इन नक्षत्रों में १५ आग्नेय केतुओं का उदय होता है। आग्नेय केतु देखे जाने पर प्रजाओं का निश्चित क्षय होता है। राजा लोग हमेशा उद्विग्न और लोगों की मृत्यु होती है।

आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्र पृथिवी के पूर्वभाग में कहे गये हैं। इन नक्षत्रों में २१ रौद्र केतु देखे जाते हैं। जब रौद्र केतु देखे जाते हैं तब दुर्भिक्ष होता है और मृत्यु, क्षुधा तथा रोग से पीड़ित होकर सभी प्रजा इतस्ततः पलायन करती है।

आश्लेषा, मघा और पूर्वफाल्गुनी नक्षत्रों को पृथिवी के दक्षिण-पूर्व भाग (अग्निकोण) में जानना चाहिये। इन नक्षत्रों में उद्दालकिपुत्र नामक १० केतु देखे जाते हैं। यदि मुनिपुत्र केतुओं का उदय हो तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य, सुवृष्टि और धान्यों की उत्पत्ति अच्छी होती है।

उत्तरफाल्गुनी, हस्त और चित्रा नक्षत्रों को पृथिवी की दक्षिण दिशा में जानना चाहिये। इन नक्षत्रों में काश्यपपुत्र नामक १४ केतुओं का उदय होता है। इनके उदित होने पर प्रजाओं में भयङ्कर अनावृष्टिभय और दारुण कष्ट होते हैं।

स्वाती, विशाखा और अनुराधा नक्षत्र का देश पृथिवी के दक्षिण-पश्चिम भाग में समझना चाहिये। इन नक्षत्रों में मृत्युपुत्र नामक ४ केतु देखे जाते हैं। गर्गाचार्य के अनुसार इन केतुओं का दर्शन होने पर प्रजाओं को अनेक प्रकार के भय होते हैं। दुर्भिक्ष, घोर मरकी, दारुण अनावृष्टि और प्राणियों में दारुण उपद्रव होते हैं।

ज्येष्ठा, मूल और पूर्वाषाढ़ नक्षत्रों का देश पृथिवी की पश्चिम दिशा में है। इन नक्षत्रों में सोमपुत्र नामक केतुओं का उदय होता है। इनके उदित होने पर पृथिवी सुवृष्टि, सुभिक्ष और यज्ञोत्सव से व्याप्त रहती है।

उत्तराषाढ़, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्रों में २५ माहेय केतु (मङ्गल के पुत्र) देखे जाते हैं। माहेय केतुओं के देखे जाने पर प्रजाओं का नाश होता है। हजारों राजाओं के शोणित (रक्त) को पृथिवी पीती है अर्थात् विश्वयुद्ध छिड़ता है।

शतभिषा, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्र नक्षत्रों में वारुण (वरुण के पुत्र) नामक ३ केतु देखे जाते हैं। वारुण केतुओं में प्रथम ऊर्मिकेतु, द्वितीय श्वेतकेतु और तीसरा धूमकेतु है। यदि ऊर्मिकेतु दृश्य हो तो जल का भय होता है। श्वेतकेतु के दृश्य होने पर पृथिवी सफेद हड्डियों से व्याप्त हो जाती है एवं मनुष्य दूसरे मनुष्यों के मांस को खाते हैं, माता पुत्र को और पुत्र माता को नहीं मानते हैं, पिता-पुत्र स्नेह नहीं दिखाते हैं, पति स्त्री को नहीं मानते हैं, बन्धु अपने बान्धवों को भी नहीं मानते हैं अर्थात् सभी मनुष्य अपने सम्बन्धों को छोड़कर क्षुधा से आकुल होने पर एक-दूसरे को मारकर खा जाते हैं। सम्पूर्ण संसार क्षुधा और भय से आर्त्त (पीड़ित) होकर चक्र की तरह भ्रमण करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि धूमकेतु का दर्शन होता है तो वह शीघ्र ही योद्धाओं, राजाओं और मन्त्रियों का नाश करता है और अपनी शिखा से सभी देशों के लोगों और जंगलवासी प्राणियों का नाश करता है।

रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्रों में यमपुत्र नामक १३ केतुओं का दर्शन होता है। इनके देखे जाने पर प्रजाओं का नाश निश्चित रूप से होता है और स्थावर, मानव, पशु तथा पक्षियों— इन चतुर्विध प्राणियों का नाश होता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

आग्नेयरुद्रजौद्दालकिकाश्यपमृत्युसोमजाश्चैव ।
क्षितितनयवरुणपुत्रा यमजाताः केतवश्चोक्ताः ॥

आग्नेये नृपमरणं क्षुद्भयमतुलं वदन्ति रौद्रेषु ।
औद्दालकिजे शस्यक्षेमे कश्यपसुते त्वनावृष्टिः ॥

क्षुच्छस्त्रमनारोग्यं यमतनये शस्यमुत्तमं सौम्ये ।
माहेये नृपमरणं वरुणसुते क्षुद्भयं च शस्त्रं च ॥[1]

आग्नेय (अग्निपुत्र), रुद्रपुत्र, औद्दालकि (उद्दालक मुनिपुत्र), काश्यप (कश्यपपुत्र), मृत्युपुत्र, सोमज (चन्द्रपुत्र), मङ्गलपुत्र, वरुणपुत्र, यमपुत्र— ये नौ प्रकार के केतु कहे गये हैं। आग्नेय केतु दृश्य होने पर राजा का मरण, रौद्र केतु अत्यन्त दुर्भिक्ष, औद्दालिक केतु धान्य और क्षेम, काश्यप केतु अनावृष्टि, यमपुत्र दुर्भिक्ष, युद्ध और अनारोग्य, सौम्य केतु उत्तम धान्य, माहेय केतु राजा का मरण तथा वारुण केतु दुर्भिक्ष और युद्ध कराता है।

गर्गश्च केतूनां सहस्रसंख्यामाह । तथा च तद्वाक्यम्

अनित्योदयचाराणामशुभानां च दर्शनम् ।
आगन्तूनां सहस्रं स्याद्ग्रहाणां तन्निबोध मे ॥

विशेषः– चकाराच्छुभाः केतवो न विंशतिजातयो भवन्ति ।

अनित्य उदय और चार वाले (जिनके उदय, अस्त या चार की गणना नहीं की जा सकती है, उत्पातवश उनका उदय होता है) अशुभ फलदायक एक हजार केतुओं का दर्शन होता है। अर्थात् केतु एक हजार प्रकार के (गर्गमतानुसार) हैं।

तत्रादित्यपुत्रा वराहसंहितायाम्

हारमणिहेमरूपाः किरणाख्याः पञ्चविंशतिः सशिखाः ।
प्रागितरदिशोर्दृश्या नृपतिविरोधप्रदा रविजाः ॥

१. नैतानि वचनानि बृहत्संहितायामुपलभ्यन्ते प्रायो वटकणिकायां भवेयुः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुक्ताहार, मणि (चन्द्रकान्त आदि) और सुवर्ण के समान वर्ण वाले शिखासहित किरणसंज्ञक पच्चीस प्रकार के केतु हैं। ये सूर्यपुत्र केतु पूर्व और पश्चिम दिशाओं में दृश्य होते हैं। इनका दर्शन हो तो राजाओं में परस्पर द्वेष उत्पन्न होता है।

गर्गस्तु

शुद्धस्फुटिकसंकाशा मृणालरजतप्रभाः।
मुक्ताहारसुवर्णाभा सशिखाः पञ्चविंशतिः॥
किरणाख्यार्कपुत्रास्ते दृश्यन्ते प्राग्दिशि स्थिताः।
तथा चापरभागस्था नृपतेर्भयदाश्च ते॥

विशुद्ध स्फटिक रत्नसमान, मृणाल (कमलतन्तु), चाँदी, मुक्ताहार और सुवर्ण के समान कान्ति वाले शिखासहित किरणसंज्ञक पच्चीस सूर्यपुत्र केतु होते हैं। ये केतु पूरब और पश्चिम दिशाओं में दृश्य होते हैं एवं राजाओं के लिए भय देने वाले हैं।

चन्द्रसुतानाह गर्गः

चन्द्ररश्मिसवर्णाभा हिमकुन्देन्दुसप्रभाः।
त्रयस्ते शशिनः पुत्राः सौम्याशास्थाः शुभावहाः॥

विशेषः– सौम्याशास्था उत्तरदिक्स्था इत्यर्थः।

चन्द्ररश्मि, हिम, कुन्दपुष्प और चन्द्रमा के समान वर्ण वाले तीन प्रकार के चन्द्रपुत्र केतु हैं। ये उत्तर दिशा में उदित होते हैं और शुभ फल देते हैं।

तथा च वराहसंहितायाम्

शशिकिरणरजतहिमकुमुदकुन्दकुसुमोपमाः सुताः शशिनः।
उत्तरतो दृश्यन्ते त्रयः सुभिक्षावहाः शिखिनः॥

चन्द्रकिरण, चाँदी, हिम या कुमुदपुष्प के समान वर्ण वाले तीन प्रकार के चन्द्रपुत्र केतु हैं। ये उत्तर दिशा में दृश्य होते हैं। इनका दर्शन होने पर सुभिक्ष होता है।

भौमात्मजानाहाथर्वमुनिः

कुङ्कुमा लोहिताङ्गस्य पुत्रा विद्रुमवर्चसः।
त्रिशिखा वा त्रितारा वा षष्टिरित्युत्तरे पथि॥

विद्रुम (मूँगा) के समान लाल वर्ण वाले, तीन शिखा या तीन तारे वाले कुङ्कुम नामक ६० मंगलपुत्र केतु हैं। ये उत्तर मार्ग (उत्तर दिशा) में देखे जाते हैं।

विशेष– 'त्रिशिखा वा त्रितारा वा इति वाशब्दौ समुच्चये।' अर्थात् उक्त केतु तीन शिखा और तीन तारे वाले होते हैं; जो अशुभ फल देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

क्षतजानलानुरूपास्त्रिचूलताराः कुजात्मजाः षष्टिः ।
नाम्ना च कौङ्कुमास्ते सौम्याशासंस्थिताः पापाः ॥

विशेषः– त्रिचूलाश्च त्रिताराश्चेति त्रिचूलताराः ।

रक्त या अग्नि के समान कान्ति वाले, तीन शिखा और तीन तारे वाले साठ प्रकार के मङ्गलपुत्र कौङ्कुम नामक केतु होते हैं। ये उत्तर दिशा में उदित होते हैं। इनका दर्शन होने से अशुभ फल होता है।

तथा च गर्गः

त्रिशिखाश्च त्रिताराश्च रक्ता लोहितरश्मयः ।
प्रायेणोत्तरमार्गं तु सेवन्ते नित्यमेव ते ॥

लोहिताङ्गात्मजा ज्ञेया ग्रहाः षष्टिः समासतः ।
नामतः कौङ्कुमा ज्ञेया राज्ञां संग्रामकारकाः ॥

तीन शिखा और तीन तारे वाले रक्त वर्ण या रक्त किरण वाले मङ्गलपुत्र केतु ग्रह ६० प्रकार के हैं। कौङ्कुम नाम वाले वे केतु प्रायः उत्तर मार्ग (उत्तर दिशा) में दृश्य होते हैं और युद्धकारक होते हैं।

बुधात्मजानाहाथर्वमुनिः

एकपञ्चाशतो ज्ञेयास्तस्कराः सूक्ष्मरश्मयः ।
बौधाः कमलगर्भाभाः किञ्चित्पाण्डुरतेजसः ॥

सूक्ष्म रश्मि वाले, कमलपुष्प के गर्भ के समान वर्ण वाले थोड़ा-सा पाण्डु वर्ण वाले तस्करसंज्ञक बुधपुत्र इक्यावन केतु हैं।

गर्गश्च

अरुन्धतीसमा रूक्षाः किञ्चिदव्यक्ततारकाः ।
सपाण्डुवर्णाः श्वेताभाः सूक्ष्मरश्मिभिरावृत्ताः ॥

एते बुधात्मजा ज्ञेयास्तस्कराख्या भयावहाः ।
एकाधिकास्तु पञ्चाशद्यथोत्पथचरा ग्रहाः ॥

विशेषः– यथोत्पथचरा यथेष्टदिक्चराः ।

अरुन्धती तारा के समान रूक्ष, कुछ अव्यक्त (अस्पष्ट) तारे वाले, पाण्डु वर्ण वाले, श्वेत वर्ण वाले, सूक्ष्म रश्मियों से व्याप्त तस्कर नामक बुधपुत्र केतु ५१ हैं। ये सब दिशाओं में उदित होने वाले और भयकारक होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च वराहसंहितायाम्

नातिव्यक्ताः सूक्ष्माः दीर्घाः शुक्ला यथेष्टदिक्प्रभवाः ।
बुधजास्तस्करसंज्ञाः पापफलास्त्वेकपञ्चाशत् ॥

अस्पष्ट, सूक्ष्म शरीर वाले, लम्बे, श्वेत, सभी दिशाओं में उदित होने वाले, तस्करसंज्ञक बुध के पुत्र इक्यावन केतु हैं। इनका दर्शन होने से अशुभ फल होता है।

बृहस्पतिपुत्रानाहाथर्वमुनिः

मुक्तानिकरगौराभास्त्यजन्त इव चार्चिषः ।
स्फुरन्त इव चाकाशे विकचा रश्मिभिर्वृताः ॥
प्रायशो दक्षिणे मार्गे नीचैर्विख्यातमण्डलाः ।
विकचाः पञ्चषष्टिस्ते बृहस्पतिसुताः स्मृताः ॥

मुक्ताहार के समान गौर वर्ण वाले किरणों से युक्त, प्रकाशमान, विकच (शिखारहित), रश्मियों से परिपूर्ण, दक्षिण मार्ग (दक्षिण दिशा) में उदित होने वाले, निम्न भाग विस्तृत मण्डल वाले, विकच नामक वृहस्पति के पुत्र पैंसठ केतु हैं।

गर्गस्तु

शुक्लाः स्निग्धाः प्रसन्नाश्च महारूपाः प्रभान्विताः ।
एकतारा वपुष्मन्तो विकचा रश्मिभिर्वृताः ॥
एते बृहस्पतेः पुत्राः प्रायशो दक्षिणाश्रयाः ।
नामतो विकचा घोराः पञ्चषष्टिर्भयावहाः ॥

विशेषः- अत्र विकचा केशरहिताः। शिखाया अनभिधानात् शिखाशून्यास्तारकामात्ररूपा एते बोद्धव्याः।

श्वेत वर्ण वाले, निर्मल, प्रसन्न, विपुल शरीर वाले, कान्तियुक्त, एक तारा वाले, विकच (केश एवं शिखा से रहित) शरीर वाले, रश्मियों से युक्त, प्रायः दक्षिण दिशा में दृश्य होने वाले बृहस्पतिपुत्र विकच नामक ६५ केतु हैं। ये घोर भयकारक हैं।

तथा च वराहसंहितायाम्

विकचा नाम गुरुसुताः सितैकताराः शिखापरित्यक्ताः ।
षष्टिः पञ्चभिरधिकाः स्निग्धाः याम्याश्रिताः पापाः ॥

श्वेत, एक तारा वाले, शिखारहित, निर्मल शरीर वाले पैंसठ प्रकार के गुरुपुत्र केतु हैं। ये विकचसंज्ञक और दक्षिण दिशा में उदित होने वाले हैं तथा इनका दर्शन होने से पाप (अशुभ) फल होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भार्गवसुतानाहाथर्वमुनिः

गोक्षीरकुसुमप्रख्यास्तीव्रेण वपुषाऽन्विताः ।
चरन्त्यन्तरवीथीषु स्निग्धा विपुलतेजसः ॥

एते विसर्पका नाम अर्चिष्मन्तो महाप्रभाः ।
विज्ञेयाश्चतुराशीतिः शुक्रपुत्रा महाग्रहाः ॥

गाय के दूध के समान श्वेत वर्ण वाले, पुष्प के समान, तीव्र (तेजयुक्त) शरीरधारी, निर्मल, विस्तीर्ण तेज से युक्त, प्रकाशित, महान् कान्ति वाले विसर्पक नाम के चौरासी शुक्रपुत्र केतु हैं। ये एक से अधिक वीथियों (मार्ग अर्थात् दिशाओं) में उदित होते हैं।

वराहसंहितायां तु

सौम्येशान्योरुदयं शुक्रसुता यान्ति चतुरशीत्याख्याः ।
विपुलसिततारकास्ते स्निग्धाश्च भवन्ति तीव्रफलाः ॥

विस्तीर्ण, शुक्ल और निर्मल तारे वाले चौरासी प्रकार के शुक्रपुत्र केतु हैं। ये उत्तर और ईशान कोण में उदित होते हैं। ये अतिशय अशुभ फल देते हैं।

विशेषः– तीव्रफलाः अतिविरुद्धफलाः ।

गर्गस्तु पूर्वस्यामेतेषामुदयमाह । तद्यथा

स्थूलैकतारकाः श्वेताः स्नेहवन्तश्च सप्रभाः ।
अर्चिष्मन्तः प्रसन्नाश्च तीव्रेण वपुषान्विताः ॥

एते विसर्पका नाम शुक्रपुत्राः पुरोदयाः ।
अशीतिश्चतुरश्चैव लोकक्षयकराः स्मृताः ॥

स्थूल और एक तारे वाले, श्वेत वर्ण वाले, प्रकाशयुक्त, निर्मल, कान्तिमान्, प्रसन्न और तीव्र शरीर वाले विसर्पक नामक चौरासी शुक्रपुत्र केतु हैं। ये पूरब दिशा में उदित होते हैं और प्रजाओं का नाश करते हैं।

शनैश्चरपुत्रानाहाथर्वमुनिः

ये श्वेताः किञ्चिदाकृष्णाः द्विशिखाः सिततारकाः ।
ते षष्टिः कनका गौराः शनैश्चरसुता ग्रहाः ॥

श्वेत वर्ण वाले, किञ्चित् कृष्ण वर्ण वाले, दो शिखा वाले, श्वेत तारे वाले, गौर वर्ण वाले साठ शनैश्चरपुत्र कनक नामक केतु ग्रह हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गर्गस्तु

सुस्निग्धा रश्मिसंयुक्ता द्विशिखाः सिततारकाः ।
षष्टिस्ते कनका घोराः शनैश्चरसुताः ग्रहाः ॥

विशेषः– अनुक्तत्वादेषां दिङ्नियमो नास्ति ।

अत्यन्त निर्मल शरीर वाले, किरणों से युक्त, दो शिखा वाले, श्वेत तारे वाले साठ शनैश्चर के पुत्र कनक नामक केतु ग्रह हैं। वे सभी दिशाओं में उदित होते हैं और पापफल देते हैं।

तथा च वराहसंहितायाम्

स्निग्धाः प्रभासमेता द्विशिखाः षष्टिः शनैश्चराङ्गरुहाः ।
अतिकष्टफला दृश्याः सर्वत्रैते कनकसंज्ञाः ॥

निर्मल, कान्ति से युक्त, दो शिखा वाले शनैश्चर के पुत्र साठ प्रकार के केतु हैं। ये कनकसंज्ञक और सभी दिशाओं में उदित होते हैं तथा बहुत अनिष्ट फल देते हैं।

राहुपुत्रानाहाथर्वमुनिः

कृष्णाभा कृष्णपर्यन्ताः कलुषाकृतिरश्मयः ।
राहुपुत्रास्त्रयस्त्रिंशत् कीलकाश्चातिदारुणाः ॥

कृष्ण वर्ण की कान्ति वाले, अत्यधिक कृष्ण वर्ण वाले, रूक्ष वर्ण और रूक्ष रश्मि से युक्त तैंतीस राहुपुत्र केतु हैं। ये कीलक (तामस-कीलक) नामक और दारुण (अधिक अनिष्टकारी) होते हैं।

वराहसंहितायां तु

त्रिंशत्यधिका राहोस्ते तामसकीलका इति ख्याताः ।
रविशशिगा दृश्यन्ते तेषां फलमर्कचारोक्तम् ॥

तामसकीलकसंज्ञा राहुसुताः केतवस्त्रयस्त्रिंशत् ।
ते चार्कमण्डलगताः पापफलाश्चन्द्रमण्डले सौम्याः ॥

ध्वाङ्क्षकबन्धप्रहरणरूपाः पापाः शशाङ्केऽपि ॥

राहु के पुत्र तामस-कीलकसंज्ञक तैंतीस प्रकार के केतु हैं। ये सूर्य और चन्द्रमण्डल में दिखाई देते हैं। इनका फल बृहत्संहिता के सूर्यचाराध्याय में कहा गया है। ये तैंतीस प्रकार के राहुसुत तामस-कीलक नामक केतु सूर्यमण्डल में प्रविष्ट होने पर शुभ फल देते हैं। परन्तु ध्वाङ्क्ष (काक), कबन्ध (छिन्नमस्तक पुरुष) और प्रहरण (खड्गादि आयुध) के समान चन्द्रमण्डल में भी दिखाई देने पर पाप फल देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ कालसुताः वराहसंहितायाम्

षण्णवतिः कालसुताः कबन्धसंज्ञाः कबन्धसंस्थानाः ।
पुण्ड्रा भयप्रदाः स्युर्विरूपताराश्च ते शिखिनः ॥

विशेषः– पुण्ड्राश्चित्रवर्णाः । पुण्ड्रा नाम ये जनपदास्तेषामभयप्रदा इत्युत्पलेन व्याख्यातम् । तदयुक्तम् ।

काल के पुत्र कबन्धसंज्ञक कबन्ध (छिन्नमस्तक पुरुष) के समान आकृति वाले, अस्पष्ट तारे वाले, छियानवे प्रकार के केतु हैं । ये अनेक वर्ण वाले और सब दिशाओं में उदित होते हैं और भय देने वाले हैं (अथवा ये सब दिशाओं में उदित होते हैं और इनका दर्शन होने पर पुण्ड्र देश में शुभ और अन्य देश में अशुभ फल होता है); परन्तु पुण्ड्राः = चित्राः (अनेक वर्ण) का समर्थन गर्गादि आचार्यों के वचन से होता है ।

यदाहाथर्वमुनिः

पुण्ड्रताराः कबन्धाः स्यू रूक्षा भस्मरश्मयः ।
कालपुत्राः कबन्धास्ते स्मृताः षण्णवतिर्ग्रहाः ॥

चित्र वर्ण तारा वाले, कबन्ध के समान, रूक्ष वर्ण वाले, भस्म वर्ण के समान किरण वाले कबन्ध नामक छियानबे काल के पुत्र केतु हैं ।

गर्गश्च

पुण्ड्रतारा विरूपाश्च कबन्धाकृतिसंज्ञिताः ।
पीतारुणसवर्णाश्च भस्मकर्बुररश्मयः ॥
कालपुत्राः कबन्धाश्च नवतिः षट् च ते स्मृताः ।
लोके मृत्युकरा घोरा भवन्त्यशुभदर्शनाः ॥[१]

चित्र वर्ण तारा वाले, कुरूप शरीर वाले, कबन्ध के समान आकृति वाले और कबन्धसंज्ञक, पीत और रक्त वर्ण वाले, भस्म और कर्बुर (चित्र वर्ण) रश्मि वाले, छियानवे प्रकार के काल के पुत्र कबन्धकेतु हैं । ये संसार में घोर मृत्युकारी और अशुभ फल देते हैं ।

अथ मृत्युसुता वराहसंहितायाम्

वक्रशिखा मृत्युसुताः कृष्णा रूक्षाश्च तेऽपि तावन्तः ।
दृश्यन्ते याम्यायां जनमरकावेदिनस्ते च ॥

विशेषः– तावन्तः पञ्चविंशतिरित्यर्थः । वराहेण पञ्चविंशतिसंख्यानां रविपुत्रकेतूनां पूर्वोक्तत्वात् ।

---

१. पुण्ड्राणामभयप्रदा इति पाठान्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुटिल शिखा वाले, रूक्ष और काले पच्चीस प्रकार के मृत्यु के पुत्र केतु हैं। ये दक्षिण दिशा में उदित होते हैं। इनका दर्शन होने से पृथ्वी पर मरकी होती है।

गर्गश्च

रूक्षाः कृष्णा वक्रशिखा दृश्यन्ते याम्यदिक्स्थिताः ।
पञ्चविंशा मृत्युसुताः प्रजानां भयकारिणः ॥

रूखे, काले, कुटिल शिखा वाले पच्चीस प्रकार के मृत्यु के पुत्र केतु हैं। ये दक्षिण दिशा में उदित होते हैं और प्रजाओं में भय उत्पन्न करने वाले हैं।

अग्निपुत्रा वराहसंहितायाम्

[1]शुकदहनबन्धुयावकलाक्षाक्षतजोपमा हुताशसुताः ।
आग्नेय्यां दृश्यन्ते तावन्तस्तेऽपि शिखिभयदाः ॥

विशेषः– तावन्तः पञ्चविंशतिः ।

तोता (पाठान्तर से तोता के मुख के समान = लाल वर्ण), अग्नि, बन्धूक पुष्प, यावकपुष्प, लाक्षा (लाख) और रक्त के समान वर्ण वाले अग्नि के पुत्र पच्चीस प्रकार के केतु हैं। ये अग्निकोण में दृश्य होते हैं। इनका दर्शन होने पर अग्निभय होता है।

तथा च गर्गः

अग्निपुत्रा ग्रहा ज्ञेयास्तत्राग्निभयवेदिनः ।
आग्नेय्यां दिशि दृश्यन्ते लोहिताः पञ्चविंशतिः ॥

पच्चीस प्रकार के अग्नि के पुत्र रक्त वर्ण वाले केतु ग्रह हैं। ये अग्निकोण में दृश्य होते हैं और अग्निभय प्रदान करते हैं।

अथान्यान् विश्वरूपसंज्ञानग्निपुत्रानाहाथर्वमुनिः

नानावर्णाग्निसङ्काशा ज्वालामाला विसर्पिणः ।
विश्वरूपाः सुता अग्नेर्ग्रहा विंशच्छतं स्मृताः ॥

अनेक वर्ण वाले अग्नि के समान जाज्वल्यमान मूर्त्ति वाले अग्नि के पुत्र एक सौ बीस प्रकार के विश्वरूपसंज्ञक केतु भयंकर अग्निभय देने वाले होते हैं।

गर्गस्तु

नानावर्णाग्निसङ्काशाः दीप्तिमन्तो विशालिनः ।
सृजन्त्यग्निमिवाकाशे सर्वज्योतिर्विनाशनाः ॥

---

१. शुकवदन इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेऽप्यग्निपुत्रा विज्ञेयास्तीव्राग्निभयवेदिनः ।
विंशद्ग्रहशतं घोरं विश्वरूपेति नामतः ॥

विशेषः– विंशद्ग्रहशतं विंशत्यधिकं शतमित्यर्थः ।

अनेक वर्ण वाले, अग्नि के समान प्रकाशमान, विशाल आकाश में अग्नि उत्पन्न करने वाले की तरह, सभी ज्योतियों (प्रकाशबिम्बों) को अपने प्रकाश के द्वारा नष्ट करने वाले अर्थात् सर्वाधिक प्रकाशयुक्त विश्वरूपसंज्ञक एक सौ बीस प्रकार के अग्निपुत्र केतु हैं। ये तीव्र अग्निभय देने वाले होते हैं।

तथा च वराहसंहितायाम्

विंशत्याऽधिकमन्यच्छतमग्नेर्विश्वरूपसंज्ञानाम् ।
तीव्रानलभयदानां ज्वालामालाकुलतनूनाम् ॥

अतिशय जाज्वल्यमान मूर्ति वाले अग्नि के पुत्र एक सौ बीस प्रकार के केतु हैं। ये विश्वरूपसंज्ञक और बड़ा भयङ्कर अग्निभय देने वाले हैं।

वरुणपुत्रानाहाथर्वमुनिः

वंशगुल्मप्रतीकाशाश्चन्द्ररश्मिसरश्मयः ।
शुकतुण्डनिभैश्चापि रश्मिभिः किञ्चिदावृताः ॥

उदयेऽहः सृजन्तीव स्निग्धत्वात् सौम्यदर्शनात् ।
एते नाम्ना स्मृताः कङ्का द्वात्रिंशद्दारुणा ग्रहाः ॥

वंश (बाँस) और गुल्म (लता) के समान आकृति वाले, चन्द्रमा की रश्मि की तरह रश्मि वाले, तोता की चोंच के समान कान्ति वाले, थोड़ी रश्मियों से युक्त, निर्मल सौम्य दर्शन के कारण उदित होने पर दिन उत्पन्न करने वाले (इनके उदय के प्रकाश से रात में दिन का आभास होता है) बत्तीस प्रकार के वरुणपुत्र केतुग्रह हैं। इनका नाम कङ्क है। ये सभी दिशाओं में दृश्य होते हैं।

वराहसंहितायां तु

कङ्का नाम वरुणजा द्वात्रिंशद्वंशगुल्मसंस्थानाः ।
शशिवत् प्रभासमेतास्तीव्रफलाः केतवः प्रोक्ताः ॥

वंश और गुल्म के समान आकृति वाले, वरुण के पुत्र कङ्कसंज्ञक और चन्द्रमा के समान कान्ति वाले बत्तीस प्रकार के केतु हैं। ये सब दिशाओं में दृश्य होते हैं और इनका दर्शन अशुभ फल देता है।

गर्गस्तु

वंशगुल्मप्रतीकाशा बृहन्तश्चारुरश्मयः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[1]कीरतुण्डनिभैर्युक्ता रश्मिभिस्तेऽतिदारुणाः ॥
[2]उदयेऽहः सृजन्तीव स्निग्धत्वात् सौम्यदर्शनाः ।
एते कष्टफलाः कङ्का द्वात्रिंशद्वारुणा ग्रहाः ॥

वंश और गुल्म के समान आकृति वाले, विस्तीर्ण मूर्त्ति वाले, सुन्दर रश्मि वाले, तोता की चोंच की कान्ति से युक्त, रश्मियों से युक्त, अत्यन्त भयङ्कर मूर्त्ति वाले, अपने उदय से दिन उत्पन्न करने वाले अर्थात् अत्यन्त प्रकाश वाले, निर्मलता से देखने में सुन्दर बत्तीस प्रकार के वरुणपुत्र केतु कङ्कसंज्ञक हैं। ये पाप फल देते हैं।

वायुपुत्रानाहाथर्वमुनिः

अरुणास्तु सुता वायोः परुषाः सप्तसप्ततिः ।
वातेरिता भ्रमन्तीव रूक्षा विस्तीर्णरश्मयः ॥

रूक्ष, विस्तीर्ण किरण वाले सतहत्तर वायुपुत्र वायु की तरह आकाश में भ्रमण करने वाले अरुणसंज्ञक केतु हैं। ये पाप फल देते हैं।

वराहसंहितायां तु

श्यामारुणा वितारा धूसररूपा विकीर्णदीधितयः ।
अरुणाख्या वायुसुताः पापफलाः सप्तसप्ततिः परुषाः ॥

श्याम-रक्त वर्ण वाले, ताराओं से रहित, धूसर वर्ण वाले, विस्तृत किरण वाले सतहत्तर वायुपुत्र केतु हैं। ये अरुणसंज्ञक और पाप फल देने वाले हैं।

गर्गस्तु

अताररूपप्रतिमा धूम्रवर्णाः सवर्णिनः ।
वातरूपा इवाभान्ति शुष्कविस्तीर्णरश्मयः ॥
सप्ततिः सप्त चैवान्ये वायोः पुत्राः प्रकीर्त्तिताः ।
लोकविध्वंसनाः रूक्षा नामतस्त्वरुणा ग्रहाः ॥

ताराओं से रहित मूर्त्ति वाले, धूम्र वर्ण के समान वर्ण वाले, शुक्ल और विस्तीर्ण किरण वाले, रूक्ष, हवा की तरह विचरण करने वाले वायुपुत्र केतु सतहत्तर प्रकार के हैं। अरुण नामक ये केतुपुत्र लोकविध्वंसी (लोगों का नाश करने वाले) होते हैं।

---

१. काक इति पाठान्तरम्।
२. मयुखानुत्सृजन्तीव इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रजापतिपुत्रानाहाथर्वमुनि:

तारापुञ्जप्रतीकाशास्तारामण्डलमण्डिता: ।
प्राजापत्या ग्रहास्त्वष्टौ गणका नाम नामत: ।।

तारापुञ्ज के समान, तारामण्डलों से मण्डित प्रजापति के पुत्र आठ प्रकार के केतु हैं, ये गणकसंज्ञक हैं (ये सभी दिशाओं में दृश्य तथा अशुभ फलदायक होते हैं)।

वराहसंहितायाम्

तारापुञ्जनिकाशा गणका नाम प्रजापतेरष्टौ ।

विशेष:– एतेऽपि पापफलदा इति सम्बन्ध: ।

तारापुञ्ज के समान गणक नामक आठ प्रकार के प्रजापति के पुत्र केतु हैं (ये पापफलद हैं)।

तथा च गर्ग:

तारापुञ्जप्रतीकाशास्तारामण्डलमण्डिता: ।
प्रजापतेर्ग्रहास्त्वष्टौ गणका भयवेदिन: ।।

तारापुञ्ज के समान तारामण्डलों से मण्डित गणक नामक आठ प्रकार के प्रजापति के पुत्र केतु हैं, जो भय देने वाले होते हैं।

ब्रह्मसुतमाह गर्ग:

एको ब्रह्मसुत: क्रूरस्त्रिवर्णस्त्रिशिखान्वित: ।
सर्वास्वाशासु दृश्येत ब्रह्मदण्डो भयावह: ।।

क्रूर प्रकृति वाला, तीन वर्ण और तीन शिखा वाला ब्रह्मदण्डसंज्ञक एक ब्रह्मसुत केतु है। यह सभी दिशाओं में दृश्य होता है। यदि दृश्य होता है तो क्रूर भय उत्पन्न करता है।

तथा च वराहसंहितायाम्

ब्रह्मसुत एक एव त्रिशिखो वर्णैस्त्रिभिर्युगान्तकर: ।
अनियतदिक्प्रभवोऽसौ विज्ञेयो ब्रह्मदण्डाख्य: ।।

तीन शिखा वाला और तीन वर्णो वाला ब्रह्मा का पुत्र ब्रह्मदण्डसंज्ञक एक केतु है। यह सभी दिशाओं में उदित होता है और जब उदित होता है तब पृथ्वी के सभी देशों का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पञ्चभिः पञ्चदशभिर्वर्षाणां पञ्चभिः शतैः।
पुरस्तात् त्रिषु पक्षेषु गतेषु प्रतिदृश्यते॥
निर्घातपांशुवर्षाद्यैः पूर्वरूपैः सुदारुणैः।
कपालकेतुरूपेण कालो दर्शयते दिवि॥
स दृष्ट एव दुर्भिक्षमनावृष्टिं प्रजाक्षयम्।
शस्त्रव्याधिभयं मृत्युं करोत्येव सुदारुणम्॥
यावद्दर्शयते मासांस्तावद्वर्षाणि बाधते।
त्रिभागं नभसश्चार्धं गत्वा प्रतिनिवर्त्तते॥
प्रस्थार्धे उभयोरर्धं कृत्वैवमनयं तदा।
कृतकर्मा भवत्येष प्रजार्धमुपयुज्य च॥

निर्मल कुमुदकेतु के अस्त होने के बाद दूसरा द्वादशादित्य से उत्पन्न एकादश केतुओं में से धूम्रवर्ण किरण वाला कपालकेतु उदित होता है। यह केतु १२५ वर्ष, तीन पक्ष (४५ दिन) प्रवास (अस्तङ्गत) में रहकर उदित होता है। इसके उदय से पूर्व ही निमित्तरूप में निर्घात, रजोवृष्टि आदि उत्पात देखे जाते हैं। कपालकेतु के रूप में साक्षात् काल (अन्त करने वाला) ही आकाश में दिखाई देता है। यह उदित होते ही दुर्भिक्ष, अनावृष्टि, प्रजाक्षय, शस्त्र (युद्ध) और व्याधिभय तथा दारुण मृत्युभय करता है। यह जितने महीनों तक उदित दिखाई देता है, उतने वर्षों तक उक्त अशुभ फल देता है। यह आकाश के तीसरे भाग या आधे (मध्य) भाग में जाकर अस्त होता है। यह उभय (शारदीय और ग्रीष्म ऋतु में उत्पन्न होने वाले) धान्यों का आधा प्रस्थ (प्राचीनकालीन मगध देश में व्यवहृत धान्यमापक संज्ञा 'प्रस्थश्चतुर्थांश इहाढकस्य') के बराबर महँगाई करके अनीति फैलाता है तथा आधी प्रजा का विनाश कर लोगों को कृतयुग की तरह आचरण करने वाला बनाता है।

पराशरेण त्वमावास्यायामस्योदय उक्तः। तद्यथा

आदित्यजानां कपालकेतुरुदयते। अमावास्यायां पूर्वस्यां दिशि सधूमार्चिःशिखो नभोविषयार्धे चरन् दृश्यते। पञ्चविंशतिवर्षशतं प्रोष्य त्रींश्च पक्षानमृतजस्य कुमुदकेतोश्चारान्ते स दृष्ट एव दुर्भिक्षानावृष्टिव्याधिभयमृत्यूपद्रवान् जनयति। यावतो मासान् दृश्यते तावतो मासान् मासैर्वत्सरान् सप्तपञ्चप्रस्थं च शारदधान्यस्यार्धं कृत्वा प्रजानामर्धमुपयुङ्क्ते।

आदित्यपुत्रों में कपालकेतु अमावास्या तिथि में आकाश के पञ्चम मध्य भाग में पूर्व दिशा में धूम वर्ण किरण वाली शिखा से युक्त विचरण करता हुआ उदित होता देखा जाता है। एक सौ पच्चीस वर्ष, तीन पक्ष (४५ दिन) तक प्रवास में रहकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमृतोत्पन्न कुमुदकेतु के चारान्त के बाद उदित होते ही वह दुर्भिक्ष, अनावृष्टि, व्याधिभय और मृत्युजन्य उपद्रव उत्पन्न करता है। यह जितने दिनों तक दृश्य होता है, उतने महीनों तक तथा जितने मासों तक दृश्य होता है, उतने वर्षों तक फल देता है। यहाँ उपलब्ध ग्रन्थों में 'यावतो मासान् दृश्यते तावतो मासान्' पाठ ही है, जिसकी संगति नहीं बैठती है। अतः 'यावतो दिवसान् दृश्यते तावतो मासान्' पाठ होना चाहिये। इसके दृश्य होने पर फलपाककालावधि में १२ प्रस्थ (एक प्रकार का प्राचीन धान्यमाप) अर्थात् १२ गुना तक शारदीय धान्यों की महँगी होती है तथा आधी प्रजा का नाश होता है।

वराहसंहितायां च

दृश्योऽमावास्यायां कपालकेतुः स धूमताम्रशिखः।
प्राङ्नभसोऽर्धविचारी क्षुन्मरकावृष्टिरोगकरः॥

धूम्र वर्ण की किरणों से युक्त, अमावास्या तिथि में पूर्व दिशा में उदित होकर आकाश के अर्ध भाग तक विचरण करने वाला कपालकेतु होता है। इसका दर्शन होने पर पृथ्वी पर दुर्भिक्ष, मरकी, अवृष्टि और रोग उत्पन्न होते हैं।

अथादित्यजानामदृश्यकेतूनां फलमाह वृद्धगर्गः

तेषामेकादशानां तु ये चापि दश केतवः।
अनेनैकेन विख्याता नामतः फलतस्तथा॥

तेऽपि रूक्षाभया ख्याता वनस्थाः पर्वताश्रयाः।
कीटाः पतङ्गा कण्टस्था वृश्चिका नकुलाः खगाः॥

एते नानाविधा लोकान् विषवीर्यपराक्रमाः।
केतवो घ्नन्ति भूमिष्ठानन्तरिक्षचरांस्तथा॥

द्वादशादित्य पुत्रों में कपालकेतु के अतिरिक्त शेष दस केतु नामानुसार फल देने में विख्यात हैं। वे रूक्ष, भय, वनस्थ, पर्वताश्रयी, कीट, पतङ्ग, कण्टकस्थ, वृश्चिक (विच्छू), नकुल (नेवला) और खग (पक्षी) आदि अनेक नाम और स्वरूप वाले होते हैं एवं भूवासियों तथा अन्तरिक्ष में विचरण करने वाले प्राणियों का नाश करते हैं।

अथापरमणिशिखस्य केतोरुदयः। यथाऽऽह वृद्धगर्गः

अस्य च प्रतिषेधार्थं कपालस्योपहिंसतः।
केतुर्मणिशिखः श्रीमान् पश्चिमेनोदयिष्यति॥

उत्थानसमये चास्य पूर्वरूपाणि लक्षयेत्।
पूर्वरूपैर्हि शक्यः स्याद्विज्ञातुमुदितो ग्रहः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्निग्धजीमूतजालौघैः सम्पतद्भिरितस्ततः।
स्रावद्भिर्वै सहस्राक्षो वर्षेणार्दयते जनान्॥

न किञ्चिदपसव्यं स्यान्न किञ्चिदशुभं तथा।
श्रूयते दृश्यते चापि तस्य दर्शनलक्षणैः॥

उक्त कपालकेतु के अशुभ फलों द्वारा लोगों की हिंसा के निवारण के लिए पश्चिम दिशा में सुशोभित मणि के समान शिखा वाला मणिकेतु उदित होता है। अर्थात् कपालकेतु के अस्त होने के अनन्तर यदि मणिकेतु का उदय हो तो तज्जन्य अशुभ फलों का नाश हो जाता है। मणिशिख केतु के उदय के समय उत्पन्न पूर्वनिमित्तों का ज्ञान करना चाहिये। पूर्वनिमित्तों के अवलोकन से ही इसके उदय का ज्ञान हो जाता है। इसके उदय के पूर्व निर्मल मेघसमूहों द्वारा जहाँ-तहाँ (सर्वत्र) वर्षा होती है। देवराज इन्द्र के द्वारा निरन्तर वर्षा करने से लोग आर्द्र हो जाते हैं। कुछ अपसव्य (विपरीत) और अशुभ दिखाई नहीं देता है अर्थात् सब कुछ शुभ लक्षण ही दीखते हैं। इन लक्षणों से मणिकेतु का उदय होता है— ऐसा सुना जाता है और देखा भी जाता है।

पराशरस्तु

मणिकेतुरपि कपालकेतोश्चारावसाने प्रतीच्यामुदयन्नुपतापयति। प्रसूक्ष्मोऽरुन्धतीतारकामात्रः क्षीरप्रतीकाशया पूर्वाभिनतया स्तब्धया स्निग्धया शिखया शर्वर्यामेकामदृश्यः। स उदयात् प्रभृत्यर्धोनपञ्चमान् मासान् क्षेमसुभिक्षमुत्पादयति। क्षुद्रजन्तुप्रादुर्भावं करोत्यतिमात्रकालदृष्टः – इति।

कपालकेतु के अस्त होने के बाद पश्चिम दिशा में मणिकेतु उदित होते ही लोगों की पीड़ा को दूर करता है। यह अत्यन्त सूक्ष्म (पतला) अरुन्धती के समान तारा वाला, दूध की तरह कान्ति वाला, पूर्व की ओर नत और निर्मल शिखा वाला, स्तब्ध एवं मात्र एक रात्रि ही दृश्य होता है। यह उदयकाल से साढ़े चार मासों तक क्षेम और सुभिक्ष उत्पन्न करता है। अधिक समय तक दृश्य रहने पर क्षुद्र जन्तुओं की उत्पत्ति करता है।

वराहसंहितायाञ्च

सकृदेकयामदृश्यः सुसूक्ष्मतारोऽपरेण मणिकेतुः।
ऋज्वी शिखाऽस्य दृश्या स्तनोद्गता क्षीरधारेव॥

उदयन्नेव सुभिक्षं चतुरो मासान् करोत्यसौ सार्धान्।
प्रादुर्भावं प्रायः करोति स क्षुद्रजन्तूनाम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– प्रायो बहुकालं दृष्टः क्षुद्रजन्तूनां मशकदंशादीनां प्रादुर्भावं करोति।

एक प्रहरमात्र शेष रात्रि में पश्चिम दिशा में एक बार दिखाई देने वाला और स्तन से निकली हुई दुग्धधारा की तरह सरल (स्पष्ट) शिखा वाला मणिकेतु है। यह केतु उदयकाल से ही साढ़े चार महीनों तक सुभिक्ष करता है और अधिक देर तक दिखाई देने पर क्षुद्रजन्तुओं (मशक-दंशादियों) की उत्पत्ति करता है।

क्षुद्रजन्तुलक्षणम्

क्षुद्रजन्तुरनस्थिः स्यादथवा क्षुद्र एव यः।
शतं वा प्रसवो येषां केचिदानकुलादपि॥

हड्डियों से रहित जीव या जो अत्यन्त छोटे प्राणी (जैसे— मच्छर, कीट, पतंग, चींटी आदि) हैं या जो एक बार में सैकड़ों बच्चे उत्पन्न करते हैं, वे क्षुद्र जन्तु होते हैं। कुछ आचार्यों के मतानुसार नेवला, सरीसृप आदि भी क्षुद्र जन्तु हैं।

वृद्धगर्गस्तस्य रात्रियामत्रयोपरि दर्शनं सार्धचतुर्वर्षाणि सुभिक्षक्षेमादिकं चाह। यथा

यातेषु त्रिषु यामेषु दर्शयत्यनिमित्ततः।
अरुन्धतीसमश्चापि सूक्ष्मत्वाद्रूपतः स्मृतः॥

तनुस्निग्धां शिखां कृत्वा याममेकं प्रदर्शयेत्।
एवं वर्षाणि चत्वारि पक्षान् द्वादश चापरान्॥

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं कुरुते नभसि स्थितः।

रात के तीन प्रहर बीतने के बाद विना पूर्वनिमित्त का ही मणिकेतु अति सूक्ष्म शरीर वाला, अरुन्धती के समान उदित होकर निर्मल तथा छोटी शिखा वाला एक प्रहर तक दिखाई देता है। यह चार वर्ष और बारह पक्ष (छः महीने) अर्थात् साढ़े चार वर्षों तक पृथ्वी पर सुभिक्ष, क्षेम और आरोग्य प्रदान करता है।

याममात्रातिरिक्तकालदृष्टस्य तस्य फलम्

नानाव्यालसमाकीर्णाः सरीसृपसमाकुलाः।
जानीयात्ताः समाः सर्वा माक्षिकादंशसङ्कुलाः॥

भवत्यन्नमनास्वाद्यं नित्यं चैवाथ रोचकम्।
केतौ मणिशिखे दृष्टे प्रजानामिति निर्दिशेत्॥

यदि एक प्रहर से अधिक समय तक मणिकेतु दृश्य हो तो उक्त पाककाल (साढ़े चार वर्षों) तक प्रजाओं में अनेक प्रकार के सर्पों, सरीसृपों और मच्छर आदि डंक मारने वाले क्षुद्र जन्तुओं के व्याप्त होने से भय और रुचिकर भोजन स्वादहीन होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथापरकलिकेतोरुदयः । तत्र वृद्धगर्गः

दक्षयज्ञे तु रुद्रस्य क्रोधाद्ये चाभिनिःसृताः ।
तेषामेकादशानां तु केतुरेकः प्रदृश्यते ॥
अष्टादशेषु पक्षेषु शतैश्चान्यैस्त्रिभिर्गतः ।
वर्षाणां दारुणाकारः कलिकेतुः प्रदृश्यते ॥

दक्षयज्ञ के समय रुद्र के कोप से उत्पन्न ग्यारह केतुओं में मात्र एक कलिनामक रौद्रकेतु तीन सौ वर्ष और नौ महीनों तक प्रवास में रहकर उदित होता है। यह दारुण (अत्यन्त भयङ्कर) आकार वाला होता है।

अस्योदये पूर्वरूपाण्याह वृद्धगर्गः

पूर्वरूपाणि चाग्नेये रौद्रे चाऽपि निशामय।
अपसव्यानि सर्वाणि न तु कश्चित् प्रदक्षिणः ॥
सधूमा दारुणाकारा ज्वलदङ्गारसप्रभाः ।
ताराः पतन्ति गगनान्निर्घातोल्का दिशो दश ॥
एतैरेतादृशैर्घोरैः पूर्वरूपैः सुदारुणैः ।
केतोरुदय आचष्टे कलिरन्य उपस्थितः ॥

आग्नेय केतु और रौद्र केतु के उदय के पूर्व सभी ग्रहादि अपसव्य (दक्षिण तरफ होकर गमन करने वाले) हो जाते हैं; कोई भी प्रदक्षिण गति (उत्तर तरफ गमन) वाला नहीं होता है। धूआँ से युक्त, भयङ्कर आकृति वाले, जलती हुई आग की कान्ति (रूप) वाले तारागण आकाश से गिरते हैं और दशो दिशाओं में निर्घात शब्द तथा उल्कापात होते हैं। इस तरह की भयानक स्थिति (पूर्वनिमित्त) देखे जाने पर कलिकेतु का उदय होने वाला है, ऐसा कहना चाहिये।

कलिकेतुलक्षणं वराहसंहितायाम्

प्राग्वैश्वानरमार्गे शूलाभः श्यावरूक्षताम्रार्चिः ।
नभसस्त्रिभागगामी रौद्र इति कपालतुल्यफलः ॥

विशेषः– रौद्र केतुः।

पूर्व और अग्निकोण में उदित होने वाला शूलाग्र (तीन शिखा वाला), कपिश, रूक्ष या ताम्र के समान किरण वाला और आकाश के तीन भाग में गमन करने वाला रौद्रकेतु है। यह कपालकेतु की तरह फल देता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च पराशरः

अथ दक्षयज्ञे रुद्रक्रोधोद्भवः कलिकेतुस्त्रीणि वर्षशतानि नव मासान् प्रोष्योदयते। पूर्वेण वैश्वानरपथेऽमृतजस्य मणिकेतोश्चारान्ते श्यावरूक्षताम्रारुणां शूलाग्राकारसदृशीं शिखां कृत्वा नभसस्त्रिभागचारी शस्त्रभयरोगदुर्भिक्षानावृष्टिमरकैर्विद्रावयन् दिशान्तेऽदृश्यते। यावन्मासान् दृश्यते तावद्वर्षाणि त्रिभागशेषां प्रजां कृत्वाऽर्घं च शारदधान्याष्टाढकं व्रजति – इति।

दक्षयज्ञ के समय रुद्रकोप से उत्पन्न कलिकेतु तीन सौ वर्ष और नौ मासों तक प्रवास (अस्तंगत) में रहकर उदित होता है। यह पूर्व-दक्षिण मार्ग (अग्निकोण) में अमृतोत्पन्न मणिकेतु के अस्त होने पर कपिश, रूक्ष या ताम्र के समान रक्त वर्ण वाला, शूलाग्र (तीन शिखा वाला) के सदृश शिखा करके आकाश के तीन भागों में विचरण करता है तथा पृथ्वी पर लोगों को शस्त्रभय, रोग, दुर्भिक्ष, अनावृष्टि और मरकी के भयों से पीड़ित करता हुआ दिशा के अन्त में अदृश्य होता है। यह जितने महीनों तक दृश्य होता है, उतने वर्षों में प्रजाओं का एक तृतीयांश मात्र शेष करके, शारदीय धान्यों का अर्घ (महँगी) आठ आढ़क (प्राचीन धान्यमापक) करता है।

वृद्धगर्गस्तु

ज्येष्ठामूलानुराधासु या वीथी सम्प्रकीर्त्तिता।
तां वीथीं समुपारुह्य केतुः संक्रीडते भृशम्॥

दक्षिणाभिनतां कृत्वा शिखां घोरां भयङ्करीम्।
शूलाग्रसदृशीं तीक्ष्णां श्यावताम्रारुणप्रभाम्॥

पूर्वेणोदयते चैष नक्षत्राण्युपधूपयन्।
प्रजासु सृजते घोरं फलं मासे त्रयोदशे॥

त्रिभागं नभसो गत्वा ततो गच्छत्यदर्शनम्।
यावतो दिवसांस्तिष्ठेत् तावद्वर्षाणि तद्भयम्॥

शस्त्राग्निभयरोगैश्च दुर्भिक्षमरकैर्हताः।
शीर्यमाणाः प्रजास्तत्र विद्रवन्ति दिशो दश॥

कलिकेतुर्यदा चैष पूर्वेणोदयते शिखी।
कृत्तिकास्वपि चाग्नेयः पश्चिमेन प्रदृश्यते॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तावुभौ दर्शयित्वा तु कर्म कृत्वा सुदारुणम्।
प्रजाक्षयकरैर्घोरैर्गच्छतोऽस्तमनं सह॥

शरद्धान्याढके चार्घं कृत्वाऽष्टौ स महाकृतिः।
क्षपयित्वा जगत् कृत्स्नं विनिवृत्तौ ततस्तु तौ॥

तयोरन्तर्हिता ये च केतवो नभसि स्थिताः।
यद्यद् घ्नन्ति विशेषेण तत्तच्छृणुत शास्त्रतः॥

अजातमेव कार्पासमजातमतसी शणम्।
हन्यात् पशूनथ च्छागान् नागान् केसरिणस्तथा॥

एतानेवंविधांश्चैव केतवोऽन्तर्हिता दिवि।
घ्नन्ति रौद्रास्तथाऽऽग्नेया रौद्रसत्त्वाश्रिताञ्जनान्॥

ज्येष्ठा, मूल और अनुराधा नक्षत्रों में जो वीथी (मैत्रादित्रिमृगा = मृगवीथी) कही गयी है, उस वीथीगत उक्त नक्षत्रों में यदि दक्षिण तरफ नत घोर भयङ्कर शिखा वाला, शूलाग्र के समान तीक्ष्ण और कपिश या ताम्र के समान वर्ण वाला केतु नक्षत्रों को धूपित करता हुआ पूर्व दिशा में उदित होकर आकाश के तीसरे भाग में जाकर अदृश्य हो तो उसके बाद तेरहवें मास में प्रजाओं में घोर (भयङ्कर) फल देता है। केतु उदित होकर जितने दिनों तक दृश्य होता है, उतने वर्षों तक उसका भय होता है। यह शस्त्र (युद्ध) भय, अग्निभय, रोग और दुर्भिक्ष से प्रजाओं का नाश होता है। प्रजा शिथिल हो जाती है और दशो दिशाओं में उपद्रव मच जाते हैं।

यह कलिकेतु पूर्व दिशा में तथा आग्नेय केतु पश्चिम दिशा में कृत्तिका नक्षत्र में दृश्य हो तो ये दोनों केतु प्रजाक्षय आदि घोर एवं अत्यन्त दारुण कर्म करके एक साथ अस्त होते हैं। विस्तृत मूर्त्ति वाले केतु शारदीय धान्यों की आठ आढ़क महँगी तथा सम्पूर्ण जगत् को ग्रसित करके अस्त होते हैं। इन दोनों (रौद्र और आग्नेय) केतुओं के अन्तर्गत (दोनों के उदय के समय) अन्य केतु आकाश में दृश्य होने पर जिनका नाश करते हैं, उन्हें शास्त्रानुसार विशेष रूप से कहा जाता है। वे उदित होने से पूर्व ही कपास के वृक्ष, अतसी (तीसी) और शण (जूट आदि) पशुओं, छागों (बकरे-भेंड़ आदि), सर्पों, हाथियों, सिंहों आदि का नाश करते हैं। इस तरह रौद्र केतु और आग्नेय केतु के आकाश में एक साथ दृश्य होने पर रौद्र सत्त्वों (उग्र स्वभाव और गुण वाले) के आश्रय में रहने वाले लोगों का नाश होता है।

अथातः परममृतजस्य शङ्खकेतोरुदयमाह वृद्धगर्गः

तयोस्तु द्वादशे पक्षे वर्षे चाष्टादशे गते।
शिखया स्निग्धया स्निग्धः प्रदक्षिणनताग्रया॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुक्ताहाराभया श्रीमानालोकं परतो व्रजेत् ।
नव मासान् स सौभिक्षं दृश्यमानं करोति वै ॥

आरोग्यं जनवृद्धिश्च दर्शनादस्य वर्धते ।
यज्ञोत्सवसमृद्धा च तदा भवति मेदिनी ॥

एतैर्निमित्तैर्विज्ञेयः प्रजानां भावनः शुभः ।
लोकोद्योतकरः श्रीमान् शङ्खकेतुरिहोदितः ॥

विशेषः– पराशरः शङ्खकेतुः पृथङ्नोक्तः । ऊर्म्यादिष्वेवास्यान्तर्भावः कृत इति ।

कलिकेतु और आग्नेय केतुओं के अस्त होने के साढ़े अट्ठारह वर्षों के बाद निर्मल शिखा वाला, निर्मल मूर्त्ति वाला, दक्षिण की ओर नताग्र वाला, मुक्ताहार की कान्ति से युक्त, शोभायुक्त प्रकाश वाला पश्चिम दिशा में शङ्खकेतु आकाश में दृश्य होता है। यह दृश्य होने पर पृथ्वी पर नौ मासों तक सुभिक्ष, आरोग्य और जनवृद्धि उदयकाल से ही करता है। पृथ्वी यज्ञादि उत्सव से समृद्ध होती है और प्रजाओं का शुभ होता है। इन निमित्तों से संसार को उद्यमशील बनाने वाला श्रीमान् शङ्खकेतु के उदय का फल जानना चाहिये।

अथातः परं चलकेतोरुदयः । तस्योदयपूर्वनिमित्तान्याह वृद्धगर्गः

पैतामहानां सप्तानां चलकेतुः प्रदृश्यते ।
प्रपातैः पञ्चदशभिः शतैः संवत्सरैर्दिवि ॥

उत्थाने चास्य लिङ्गानि यथावदुपधारयेत् ।
अनिष्टमशुभं तुच्छं नदन्ति मृगपक्षिणः ॥

अन्योन्यमभिसंरब्धाः पुरुषाः पुरुषैः सह ।
विग्रहं दारुणं यान्ति राजानश्च परस्परम् ॥

उभे सन्ध्ये च विकृते रूक्षवर्णे सुलोहिते ।
न भ्राजति तदा व्योम पांशुध्वस्तं तमोवृतम् ॥

सात पैतामह केतुओं में मात्र चलकेतु दृश्य होता है। यह एक सौ पन्द्रह वर्षों तक प्रवास में रहकर आकाश में दृश्य होता है ('पञ्चदशभिः शतैः संवत्सरैः' का अर्थ पन्द्रह सौ वर्ष भी किया जा सकता है, परन्तु पराशरोक्त 'पञ्चदशवर्षशतं' का अभिप्राय ११५ वर्ष ही है तथा पन्द्रह सौ वर्षों के बाद उदित होने वाले केतुओं की गणना एवं फलकथन मनुष्य द्वारा सम्भव भी नहीं है। अतः ११५ वर्ष मानना ही युक्तियुक्त है)। इसके उदय के समय पृथ्वी पर अनेक प्रकार के अनिष्ट, अशुभ, क्षुद्र जन्तु की उत्पत्ति एवं वृद्धि, मृग (पशु) एवं पक्षियों की भयानक आवाज होती है तथा एक पुरुष दूसरे पुरुष से विरोध करते हैं, राजा लोगों में परस्पर भयङ्कर विरोध (युद्ध)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है, दोनों सन्ध्यायें विकारयुक्त, रूक्ष और रक्तवर्ण होती हैं एवं रजोवर्षण से अन्धकारमय आकाश दिखाई नहीं देता है।

अथ चलकेतुलक्षणं वराहसंहितायाम्

अपरस्यां चलकेतुः शिखया याम्याग्रयाऽङ्गुलोच्छ्रितया।
गच्छेद्यथायथोदक् तथा तथा दैर्घ्यमायाति॥

सप्त मुनीन् संस्पृश्य ध्रुवमभिजितमेव च प्रतिनिवृत्तः।
नभसोऽर्धमात्रमित्वा याम्येनास्तं समुपयाति॥

हन्यात् प्रयागकूलाद्यावदवन्तीं च पुष्करारण्यम्[१]।
उदगपि च देविकामिति भूयिष्ठं मध्यदेशाख्यम्॥

अन्यानपि च स देशान् क्वचित् क्वचिद्धन्ति रोगदुर्भिक्षैः।
दश मासान् फलपाकः कैश्चिदिहाष्टादश प्रोक्तः॥

पश्चिम दिशा में उदित होने वाला, दक्षिण दिशा में एक अङ्गुल उन्नत शिखा वाला, जैसे-जैसे उत्तर तरफ जाय वैसे-वैसे लम्बा होने वाला, सप्तर्षि, ध्रुव और अभिजित् नक्षत्र को स्पर्श करके लौटने वाला और आकाश के अर्धभाग में जाकर दक्षिण दिशा में अस्त होने वाला चलकेतु होता है। इसका दर्शन होने से प्रयाग से लेकर अवन्ती तक के देश, पुष्करारण्य नामक स्थान और उत्तर दिशा में देविका नदी तक के देश का नाश होता है तथा मध्य देश का विशेषकर नाश होता है। इसी तरह अन्य देशों का भी रोग एवं दुर्भिक्ष से नाश होता है। इस केतु का फल दर्शनकाल से दस महीनों तक होता है। किसी आचार्य का मत है कि इसका फल अट्ठारह मासों तक होता है।

पराशरस्तु

अथ पैतामहश्चलकेतुः। पञ्चदशवर्षशतं प्रोष्योदितः पश्चिमेनाङ्गुलिपर्वमात्रां शिखां दक्षिणाभिनतां कृत्वा कलिकेतोश्चारान्ते नभसस्त्रिभागमनुचरन् यथा यथा चोत्तरेण व्रजति तथातथा शूलाग्राकारां शिखां दर्शयन् ब्राह्मनक्षत्रमपसृज्यात्मना ध्रुवं ब्रह्मराशिं सप्तर्षीन् स्पृशन् नभसोऽर्धमात्रं दक्षिणमनुक्रम्यास्तं व्रजति। यः स्ववर्गे दारुणकर्मा स्ववर्गप्राप्तत्वादेवं कृत्स्नमभिहिनस्ति। लोकमपि वा भूमिं कम्पयित्वा दशमासान् मध्यदेशे भूयिष्ठं

---

१. त्रिपुष्करारण्यम् - इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनपदमवशेषं कुरुते। अन्येष्वपि च क्वचिच्छत्रुदुर्भिक्ष-व्याधिमरकभयैः क्लिश्नात्यष्टादशमासान् – इति।

अब पैतामह चलकेतु कहते हैं। यह एक सौ पन्द्रह वर्षों तक प्रवास में रहकर उदित होने वाला, पश्चिम दिशा में अङ्गुल के एक पर्व के तुल्य दक्षिण की ओर नत शिखा वाला, कलिकेतु के चारान्त में आकाश के तीन भागों में विचरण करने वाला, जैसे-जैसे उत्तर तरफ जाता है वैसे-वैसे शूलाग्र की तरह शिखा दिखाते हुए ब्राह्मनक्षत्र (ब्रह्मानामक तारा) को धूपित करके, ध्रुव, ब्रह्मराशि (अभिनित् नक्षत्र) और सप्तर्षियों का स्पर्श करके दक्षिण की ओर लौटने वाला और आकाश के मध्य भाग में अस्त होने वाला चलकेतु है। यह अपने वर्ग में दृश्य होने से अपने वर्ग के लोगों का नाश करता है। अर्थात् ऋषि-मुनि, स्वर्गवासियों, तीर्थस्थान के निवासियों का नाश करता है तथा पृथ्वी पर स्थित प्रजा का भी नाश करता है और भूकम्प कराता है। यह दस मासों तक मध्यदेश के जनपदों का अधिक नाश करता है। अन्यत्र (समस्त) पृथ्वी पर भी अट्ठारह मासों तक कहीं-कहीं शत्रु, दुर्भिक्ष, व्याधि और मरकी के भय से प्रजाओं को पीड़ित करता है।

वृद्धगर्गः

पश्चिमेनाङ्गुलीमात्रां शिखां परमदारुणाम्।
दक्षिणाभिनतां कृत्वा चलकेतुः प्रदृश्यते॥

यथायथा दर्शयति त्रिभागं नभसश्चरन्।
तथातथा शिखा चास्य सुदीर्घाऽत्युपजायते॥

सुदीर्घां शूलसदृशीं शिखां कृत्वा सुदारुणाम्।
धूपयेदथ नक्षत्रं ब्राह्मं पैतामहं शिखी॥

धूपयेदथ नक्षत्रमेकं द्वे त्रीणि वा पुनः।
स ब्रह्महृदयं स्पृष्ट्वा ध्रुवं सप्तर्षिभिः सह॥

दिशं वैश्रवणाक्रान्तामेवं विपरिवर्त्तते।
स चार्धमेव नभसः परिक्रम्य प्रदक्षिणम्॥

सप्तर्षिभिः प्रतिहतस्ततोऽस्तमुपगच्छति।
स्ववर्गे दारुणं कर्म कुरुते स महाग्रहः॥

गङ्गायाः पश्चिमात् कूलाद्यावदावन्तिकान् जनान्।
पश्चिमान् पुष्करारण्यमुत्तरेण च वैदिकम्॥

अत्रैव दारुणं कर्म कुर्वन् हि परिवाधते।
शस्त्रदुर्भिक्षमरकैः क्वचिदन्यैरुपद्रवैः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स तथा दारुणं कर्म कृत्वा वै सुमहाद्युतिः ।
लोकं चैवाखिलं सोऽथ सम्पीड्य स निवर्त्तते ॥

आढका आढकाः प्रस्थं धृत्वाऽर्घं सुमहत्तदा ।
कम्पयित्वा महीं कृत्स्नां चलकेतुर्निवर्त्तते ॥

चलकेतु पश्चिम दिशा में एक अङ्गुलमात्र परम दारुण शिखा वाला, दक्षिण दिशा की तरफ झुका हुआ उदित होता है। यह जैसे-जैसे आकाश के तीन भागों में विचरण करने लगता है वैसे-वैसे इसकी शिखा अत्यन्त लम्बी होने लगती है। यह अत्यन्त लम्बी, शूल के समान, अति दारुण (भयङ्कर) शिखा करके ब्राह्म (ब्रह्मा नामक नक्षत्र) और पैतामह (अभिजित् या प्रजापति) नक्षत्र को धूपित करता है। उसके बाद पुनः एक, दो या तीन नक्षत्रों को धूपित करता है तथा ब्रह्महृदय, ध्रुव और सप्तर्षियों का स्पर्श करके कुबेर की दिशा (पश्चिमोत्तर दिशा) को आक्रान्त करता हुआ लौट जाता है और वह आधे आकाश की प्रदक्षिणक्रम से परिक्रमा करके सप्तर्षियों से प्रतिहत (आहत = पराजित) होकर अस्त होता है। वह अपने वर्ग में दारुण कर्म करने वाला महाग्रह है। गंगा नदी के पश्चिम तट से लेकर अवन्ती देश तक के निवासी मनुष्यों को, पश्चिम के पुष्करारण्य के उत्तर से वेदिका नदी तक के लोगों को दारुण फल देकर उनका नाश करता है। कहीं-कहीं शस्त्र (युद्ध), दुर्भिक्ष, मरकी एवं अन्य उपद्रवों के द्वारा समस्त पृथ्वी पर लोगों को पीड़ित करता है। एक आढ़क या कई आढ़क या प्रस्थ के बराबर अर्घवृद्धि होती है तथा समस्त पृथ्वी पर चलकेतु भूकम्प कराता है।

अतःपरममृतजस्य जलकेतोरुदयः । यथाऽऽह वृद्धगर्गः

चलकेतोरतीते तु यथावत् फलदर्शने ।
अमृतेयोऽपरः श्रीमान् जलकेतुः प्रदृश्यते ॥

उत्थानसमये चास्य निमित्तान्युपधारयेत् ।
स्निग्धगम्भीरमधुरा वाचः शृण्वन्ति सर्वतः ॥

मृगाणां पक्षिणां चैव वन्यानां सन्ध्ययोर्द्वयोः ।
एतैर्निमित्तैर्विज्ञेयः प्रजानां भावनः शुभः ॥

जलकेतोरिह श्रीमानुदयः शास्त्रकोविदैः ।

चलकेतु के यथोक्त फलदर्शन के अन्त होने पर पश्चिम दिशा में श्रीमान् जलकेतु उदित होता है। इसके उदय के समय में मृग (पशु), पक्षी और जंगली जीवों के दोनों सन्ध्याओं में निर्मल, गम्भीर और मधुर शब्द सर्वत्र सुनाई पड़ते हैं। इन निमित्तों से प्रजाओं का शुभ करने वाला सुन्दर जलकेतु का उदय शास्त्रकारों ने बताया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जलकेतुलक्षणं वराहसंहितायाम्

जलकेतुरपि च पश्चात् स्निग्धः शिखयाऽपरेण चोन्नतया ।
नव मासान् स सुभिक्षं करोति शान्तिं च लोकस्य ॥

पश्चिम दिशा में दिखाई देने वाला, निर्मल और पश्चिमोन्नत शिखा वाला जलकेतु है। यह उदित होने पर नौ मासों तक सुभिक्ष और प्रजाओं का कुशल करता है।

पराशरस्तु

अथ जलकेतुः पैतामहस्य चलकेतोर्नवमासावशिष्टे कर्मणि कृतं प्रवर्त्तयति। पश्चिमेनोदितः स्निग्धः सुजाततारः पश्चिमाभिनतशिखः स नवमासाभ्यन्तरे क्षेमसुभिक्षारोग्याणि प्रजाभ्यो धत्ते। अन्यग्रहकृतानां चाशुभानां व्याघाताय – इति।

पैतामह चलकेतु के अस्त होने के नौ मासों के बाद जलकेतु उदित होता है। यह पश्चिम दिशा में उदित होने वाला, निर्मल, सुन्दर तारा वाला एवं पश्चिमाभिनत शिखा वाला है तथा उदयकाल से नौ मासों के भीतर प्रजाओं को क्षेम, सुभिक्ष और आरोग्य देने वाला होता है। इसके उदित होने से अन्य ग्रहकृत अशुभ फलों का नाश होता है अर्थात् कुछ भी अशुभ फल नहीं होता है।

वृद्धगर्गस्तु

स्निग्धः पश्चाच्छिखः श्रीमान् दृश्यते दिशि पश्चिमे ।
अन्यकेतुभिरातप्तं जगत् प्रह्लादयन्निव ॥

प्राप्तिः कृतयुगस्येव जलकेतौ नभोगते ।
चतुर्मासोदितश्चैव ततः फलति कर्मभिः ॥

कर्म चास्य शुभं शस्यमारोग्यं क्षेम एव च ।
राहुणा केतुना वाऽपि बुधेनाऽन्यग्रहेण वा ॥

यदि पापं कृतं कर्म दर्शनादस्य नश्यति ।
जलकेतुः प्रभुः प्रोक्तः शेषाः सौम्यास्त्रयोदश ॥

शुभास्तमनुगच्छन्ति केतुमन्ये च केतवः ।
सूक्ष्मरूपप्रभाश्चैव तथैवाक्रूरदर्शनाः ॥

तारारूपास्तथा सर्वे विचरन्त्यस्य पार्श्वतः ।
केतुज्ञास्तांस्तु पश्यन्ति ये चान्ये निपुणा जनाः ॥

चतुर्दशानामेतेषां शेषा रौद्राः प्रकीर्त्तिताः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पश्चिम दिशा में दिखाई देने वाला, निर्मल और पश्चिम शिखा वाला श्रीमान् जलकेतु है। इसके दृश्य होने पर अन्य केतुओं के अशुभ फलों से पीड़ित संसार को आह्लादित (प्रसन्न) करते हुए कृतयुग की तरह सुख, सौमनस्य, सुभिक्ष, धर्मवृद्धि, आयुवृद्धि आदि शुभ फल होते हैं। यह उदित होने पर चार मासों तक अपने कर्मों से फल देता है। इसके कर्म का फल धान्यवृद्धि, आरोग्य और क्षेम है। इसके दर्शनमात्र से राहु, केतु, बुध तथा अन्य ग्रहकृत अशुभ फलों का नाश होता है। अमृतोत्पन्न चौदह केतुओं में जलकेतु को प्रभु (स्वामी) कहा गया है और अन्य तेरह सौम्यसंज्ञक शुभकारक इसका अनुकरण करते हैं तथा वे (तेरह केतु) पतले रूप और सूक्ष्म कान्ति वाले, सौम्य दर्शन, तारारूप में इसके बगल से विचरण करते हैं। केतु को पहचानने वाले तथा अन्य निपुण लोग ही उन्हें देख पाते (पहचान पाते) हैं। इन चौदह केतुओं में जलकेतु के अतिरिक्त शेष रौद्रसंज्ञक भी कहे गये हैं।

ऊर्म्यादयोऽवशिष्टा अमृतजा जलकेतूदयानन्तरमुदयन्ते इति।
पराशरो यथाऽऽह

अथ जलकेतोश्चारसमाप्तावूर्म्यादयः शीतान्ता अन्ये प्रादुर्भवन्ति। ते त्रयोदशचतुर्दशाष्टादशवर्षान्तरिता दृश्यन्ते। स्निग्धाः सुभिक्षक्षेमाय विपर्ययाय विपरीताः। क्षुद्रजन्तूनां वधाय च – इति।

जलकेतु के चारान्त के अनन्तर ऊर्मि, शंख, हिम, रक्त, कुक्षि, काम, विसर्पण, शीत आदि अन्य अमृतकेतु दृश्य होते हैं। वे तेरह, चौदह या अट्ठारह वर्षों के अन्तराल में दृश्य होते हैं। उनमें निर्मल कान्ति वाले केतु सुभिक्ष और कल्याणकारी होते हैं; विपरीत (रूक्ष) केतु दृश्य होने पर दुर्भिक्ष और अमङ्गल तथा क्षुद्रजन्तुओं का नाश करते हैं।

वृद्धगर्गस्तु ऊर्म्यादीनामुदये विशेषमाह

ऊर्मिकेतुः प्रदृश्येत मध्ये चन्द्रमसोऽसितः।
राहोर्दर्शनमास्थाय लोकं सम्मोहयन्निव॥

शोभनं तस्य नक्षत्रे दर्शनं पौर्णमासिके।
बालेन्दुसदृशीं सौम्यां शिखां दर्शयते शुभाम्॥

सोमस्य सप्तमे भागे नाम्ना चन्द्रसखः शिखी।
अमृतेयो ग्रहः श्रीमानानन्दजलदो नृणाम्॥

राहुमार्गमपावृत्य निशाः सप्त प्रदृश्यते।
दर्शनं चास्य शंसन्ति विप्राः शास्त्रविशारदाः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– राहुमार्गमपावृत्येति यस्मिन् कृत्तिकादिसप्तनक्षत्रात्मकमार्गे राहुस्तिष्ठति तन्मार्गमाश्रित्येत्यर्थः ।

ऊर्मिकेतु का दर्शन चन्द्रबिम्ब के मध्य में राहुदर्शन के समय (ग्रहणकाल में) होता है। राहु का दर्शन पूर्णिमा तिथि में होता है, उस समय लोक को मोहित करने वाला, बालचन्द्र की तरह सौम्य और शुभसूचक शिखा वाला, चन्द्रमा के सातवें भाग में दृश्य होने वाला, चन्द्रसखा नाम वाला, लोगों को आनन्द और जल (वृष्टि) देने वाला, कृत्तिकादि सात नक्षत्रात्मक राहुमार्ग का आश्रय लेकर सात रातों तक दिखाई देने वाला यह ऊर्मिकेतु है। इसके दर्शन की प्रशंसा शास्त्रविशारद ब्राह्मण लोग करते हैं।

वृद्धगर्गः

ततः प्रभृति भूयिष्ठा आमृतेयाश्च केतवः ।
सुभिक्षाय तु ते सर्वे प्रदृश्यन्तेऽमृतोद्भवाः ॥

यस्य स्नेहो यथा वर्णः सुभिक्षाय स कल्प्यते ।
स एव रूक्षः कुरुते दुर्भिक्षं व्याध्युपद्रवम् ॥

ऊर्मिकेतु के बाद दृश्य होने वाले सभी अमृतोत्पन्न केतु सुभिक्ष देने वाले हैं। जिस वर्ण का केतु निर्मल होता है, उस वर्ण वालों के लिए वह शुभ होता है और सुभिक्ष करता है। यदि वह रूक्ष वर्ण वाला दृश्य होता है तो दुर्भिक्ष और रोग आदि उपद्रव करता है।

अतःपरममृतजस्य भवकेतोरुदयः । तत्र वृद्धगर्गः

ततः पर्यायशेषस्तु लोकानां हितकाम्यया ।
दर्शनेऽत्युत्तमः केतुर्भ्राजन् नभसि संस्थितः ॥

भवाय जगतः श्रीमान् भवकेतुः प्रदृश्यते ।
उत्थाने चास्य लिङ्गानि वेदितव्यानि पूर्वतः ॥

शास्त्रज्ञेनाभियुक्तेन प्राज्ञेनैतद्विजानता ।
न रौद्रं न च बीभत्सं न दीना न तु पापिनः ॥

व्याहरन्ति मृगारिष्टा ग्राम्यारण्याश्च पक्षिणः ।
एतैर्निमित्तैर्विज्ञेयं भवकेतुरुदेष्यति ॥

संसार के सभी अनिष्टों का नाश करने वाला, लोकों का हित चाहने वाला, देखने में उत्तम, प्रकाशयुक्त, संसार में मंगल करने वाला भवकेतु आकाश में ऊर्म्यादि आठ केतुओं के बाद दृश्य होता है। इसके उदय के पूर्व शास्त्रज्ञ विद्वानों को पूर्वनिमित्तों को जानना चाहिये। उस समय रौद्र, वीभत्स, दीन और पापी नहीं होते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं। ग्राम्य और जंगली पशु-पक्षी शान्त होते हैं, कोई भी अनिष्ट के लक्षण नहीं होते हैं। इन निमित्तों से यह जाना जाता है कि अब भवकेतु उदित होगा।

अथास्य लक्षणं वराहसंहितायाम्

भवकेतुरेकरात्रं दृश्यः प्राक् सूक्ष्मतारकः स्निग्धः।
हरिलाङ्गूलोपमया प्रदक्षिणावर्त्तया शिखया॥

पूर्व दिशा में केवल एक रात में दिखाई देने वाला, सूक्ष्म तारा से युत, निर्मल और सिंह की पूँछ की तरह, दक्षिणावर्त्त शिखा से युत भवकेतु है।

पराशरः

तेषामष्टानां कर्मण्यतीते भवकेतुर्दृश्यते पूर्वेणैकरात्रम्। या कृत्तिकानामुत्तरतारा तत्प्रमाणया स्निग्धया रूक्षप्रभया सिंहलाङ्गूलसंस्थानया प्रदक्षिणनताग्रया शिखयोदितः स यावन्मुहूर्त्तान् दृश्यते तावन्मासान् भवत्यतीव सुभिक्षम्। सुभिक्षाय रूक्षः प्राणहराणां रोगाणां प्रादुर्भावाय च – इति।

उक्त ऊर्म्यादि आठ अमृतोत्पन्न केतुओं के दर्शन एवं फलपाक के बाद भवकेतु पूर्व दिशा में मात्र एक रात दृश्य होता है। यह छः तारा वाला, कृत्तिका की उत्तर दिशा वाली तारा के समान निर्मल, रूक्ष कान्ति वाला, सिंह की पूँछ की तरह दक्षिण नताग्र शिखा वाला होता है। यह निर्मल मूर्त्ति का होकर जितने मुहूर्त्तों (क्षणों) तक दृश्य होता है, उतने मासों तक अत्यन्त सुभिक्ष और रूक्ष मूर्त्ति होकर जितने क्षणों तक दिखाई देता है, उतने मासों तक प्राण हरने वाले रोगों की उत्पत्ति और दुर्भिक्ष करता है।

वृद्धगर्गस्तु

हरिलाङ्गूलसदृशीं शिखां कृत्वा तु भास्वतीम्।
पूर्वेणैव निशामेकां दृष्टोऽस्तमुपगच्छति॥

स सुभिक्षमथारोग्यं करोत्यथ महाद्युतिः।
व्याधयश्चात्र बहव उत्पद्यन्ते सवेदनाः॥

दन्तरोगप्रतिश्यायमुखरोगगलग्रहाः।
एतानेवंविधांश्चान्यान् व्याधीन् दारुणदर्शनात्॥

प्रजानीयाद्रूक्षवर्णादन्नप्राणभयं नृणाम्।

सिंह-पूँछ की तरह शिखा वाला, प्रकाशयुक्त, पूर्व दिशा में मात्र एक रात्रि में उदित होकर अस्त होने वाला भवकेतु है। यह अधिक कान्ति वाला (निर्मल) होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दृश्य होने पर सुभिक्ष और आरोग्यकारक होता है तथा दारुण एवं रूक्ष वर्ण होकर उदित होने पर वेदना (कष्ट) से युक्त अनेक रोगों की उत्पत्ति करता है; जैसे— दन्तरोग, प्रतिश्याय (नासारोग), मुखरोग, गलग्रह आदि अन्य अनेक रोगों को उत्पन्न करता है तथा मनुष्यों को अन्नभय और प्राणभय होता है।

अतः परं श्वेतकेतोः 'क'संज्ञितस्य च केतोरुदयः।
तथा च वृद्धगर्गः

ऋषेरुद्दालकस्यापि पुत्रा ये सम्प्रकीर्त्तिताः।
तेषां पञ्चदशानां तु श्वेतकेतुः प्रदृश्यते॥

दशोत्तरे वर्षशते सम्प्रयाति ततो दिवि।
उत्थानसमये चास्य निमित्तान्युपलक्षयेत्॥

अनिष्टलक्षणान्यत्र निमित्तानि भवन्ति वै।
अनिष्टसन्धयो भूपा वैरमायान्ति दारुणम्॥

शोणितौघपरिक्लिन्ना मही तत्र च दृश्यते।
एतैरेवंविधैर्घोरैः पूर्वरूपैः सुदारुणैः॥

श्वेतकेतोः समुदयः परिज्ञेयः सुदारुणः।
शोभनः स तु विज्ञेयो लक्षणैश्च सुशोभनैः॥

उद्दालक मुनि के पुत्र नामक पन्द्रह केतुओं में श्वेतकेतु उदित होता है। यह ११० (एक सौ दस) वर्षों के बाद आकाश में दृश्य होता है। इसके उदय के समय राजाओं में अनिष्टकारी सन्धि तथा परस्पर दारुण वैरभाव होते हैं और खून की धाराओं से पृथ्वी आर्द्र हो जाती है। इस प्रकार के अनेक अनिष्टकारी निमित्तों और लक्षणों से श्वेतकेतु के उदय का ज्ञान करना चाहिये। यदि शुभ लक्षणों से युक्त श्वेतकेतु का उदय हो तो प्रजाओं के लिए शुभकारी होता है।

अथ लक्षणम्

पूर्वेणोदयते चैष पश्चिमेनानतद्युतिः।
कः प्रजापतिपुत्रश्च पश्चिमेन प्रपद्यते॥

स तुल्यमुदितस्तेन प्रजाः शस्त्रेण हिंसति।
निशार्धे दर्शनं चास्य प्रमाणं परिकीर्त्तितम्॥

श्वेतः सप्त निशा दृश्यस्ततो गच्छत्यदर्शनम्।
तावुभौ दश वर्षाणि प्रजाः पीडयतो भृशम्॥

व्याधिभिर्दारुणैस्तैस्तैः प्रजानां मरणं ध्रुवम्।
राजानश्च विरुध्यन्ते नानाव्याधिभयं क्वचित्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्वचित् पञ्चमिकी खारी क्वचिदर्घेण षष्टिका।
क्षुद्भिरुत्सादितो देशो यत्र केतुः प्रदृश्यते ॥

यह श्वेतकेतु पूरब दिशा में उदित होकर पश्चिम दिशा में द्युतिहीन (अस्त) होता है तथा 'क' नामक प्रजापति का पुत्र केतु पश्चिम में उदित होकर पूर्व में अस्त होता है। ये दोनों साथ-साथ उदित होकर प्रजाओं का नाश करते हैं। ये दोनों अर्धरात्रि के समय सात रातों तक दिखाई देते हैं और उसके बाद अदृश्य होते हैं तथा दस वर्षों तक प्रजाओं को पीड़ित करते हैं। अनेक व्याधियों से प्रजाओं का मरण, राजाओं में परस्पर विरोध (युद्ध), कहीं-कहीं अनेक प्रकार की व्याधियों का भय, कहीं-कहीं पाँच खारी धान्यों की महँगी तो कहीं साठी धान्य की महँगी होती है और जहाँ केतु दृश्य होता है, उस देश में दुर्भिक्ष से लोगों का नाश होता है।

पराशरस्तु

औद्दालिकिश्वेतकेतुर्दशोत्तरं वर्षशतं प्रोष्य भवकेतोश्चारान्ते पूर्वस्यां दिशि दक्षिणाभिनतशिखोऽर्धरात्रकाले दृश्यः। तेनैव सह द्वितीयः प्रजापतिसुतः पश्चिमेन कनामा ग्रहः केतुर्युगसंस्थायी युगपदेव दृश्यते। तावुभौ सप्तरात्रदृश्यौ दशवर्षाणि प्रजाः पीडयतः। कः प्रजापतिपुत्रो यदा ह्यधिकं दृश्येत तदा दारुणं प्रजानां शस्त्रकोपं कुर्यात्। तावेव स्नेहवर्णयुक्तौ क्षेमारोग्यसुभिक्षदौ भवतः।

उद्दालक मुनिपुत्र श्वेतकेतु ११० वर्षों तक प्रवास में रहकर भवकेतु के चारान्त के अनन्तर पूरब दिशा में दक्षिण की ओर नतशिखा वाला आधी रात में दृश्य होता हैं। इसी के साथ पश्चिम दिशा में 'क' नामक प्रजापति का पुत्र केतुग्रह गाड़ी के जुए की आकृति वाला होकर दृश्य होता है। ये दोनों सात रात्रि तक दृश्य होकर अस्त होते हैं और दस वर्षों तक प्रजाओं को पीड़ित करते हैं। 'क' नामक प्रजापति का पुत्र यदि सात दिनों से अधिक दिखाई दे तो प्रजाओं में दारुण शस्त्रकोप होता है। ये दोनों केतु यदि निर्मल वर्ण कान्ति वाले हों तो क्षेम, आरोग्य और सुभिक्ष देने वाले होते हैं।

वराहसंहितायाम्

प्रागर्धरात्रदृश्यो याम्याग्रः श्वेतकेतुरन्यश्च।
क इति युगाकृतिरपरे युगपत्तौ सप्तदिनदृश्यौ ॥

स्निग्धौ सुभिक्षशिवदावथाधिकं दृश्यते कनामा यः।
दशवर्षाण्युपतापं जनयति शस्त्रप्रकोपकृतम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्वेतकेतु पूर्व दिशा में अर्द्धरात्रि के समय दृश्य होने वाला और दक्षिणाग्र शिखा वाला है तथा अन्य 'क' संज्ञक केतु गाड़ी के जुए के समान आकृति वाला और पूर्व दिशा में अस्त होने वाला है। यदि निर्मल होकर सात दिनों तक ये दोनों दिखाई दें तो सुभिक्ष और कल्याण करते हैं। यदि सात दिनों से अधिक 'क' नामक केतु दिखाई दे तो दस वर्षों तक शस्त्र के कोप (युद्ध) से मनुष्यों को पीड़ित करता है।

अथादृश्यकेतूनां लक्षणमाह वृद्धगर्ग

सप्त सप्त च ये शेषाः श्वेतस्वान्तर्हिता दिवि।
कः प्रजापतिपुत्रस्तु चत्वारस्तस्य चापरे॥

तेऽपि चान्तर्हिताः सर्वे समन्तात् केतवो दिवि।
श्रृणुयाद्दिवि हिंसन्ति द्रव्याणि च फलानि च॥

तपस्विजनभोज्यानि मूलानि च फलानि च।
गैरिकानि च धातूंश्च पीडयेत् पुनरेव च॥

स्त्रीणां गर्भान् गवां गर्भानण्डस्थान् पक्षिपन्नगान्।
एतानन्तर्हिता घ्नन्ति केतवो भृशदारुणः॥

श्वेतकेतु के अतिरिक्त १४ उद्दालक मुनिपुत्र केतु (जो दृश्य नहीं होते हैं) श्वेतकेतु में अन्तर्हित होकर तथा प्रजापति के हास से उत्पन्न शेष चार केतु यदि 'क' नामक केतु के साथ अन्तर्हित होकर आकाश में दृश्य हों अर्थात् दोनों अपने सहजों को अन्तर्हित करके यदि आकाश में दृश्य हों तो द्रव्यों और फलों का नाश करते हैं। तपस्वी लोगों के भोजनयोग्य मूलों और फलों, गैरिक वर्ण के धातुओं, स्त्रियों के गर्भों, गौओं के गर्भों, अण्डा देने वाले पक्षी और सर्पों— इन सबों का अन्तर्हित केतु नाश करते हैं और अत्यन्त दारुण फल देते हैं।

अतः परममृतजस्य पद्मकेतोरुदयः। यथाऽऽह वृद्धगर्गः

श्वेतकेतावतीते तु पद्मगर्भवपुः शुभः।
पद्मकेतुरिति ख्यातश्चरन् नभसि दृश्यते॥

तस्य चोत्थानसमये निमित्तान्युपलक्षयेत्।
पर्वतो वै नभश्चैव दिशो भूमिरथापि वा॥

चन्द्रादित्यौ ग्रहाश्चैव भवन्ति विमला दिवि।
एतैरन्यैश्च सल्लिङ्गैरुदयं तस्य निर्दिशेत्॥

श्वेतकेतु के अस्त होने के बाद कमलपुष्प के गर्भ (मृणाल) के समान श्वेत मूर्त्ति वाला शुभ फल देने वाला पद्मकेतु आकाश में विचरण करता हुआ दिखाई देता है। इसके उदय के समय में पर्वत, आकाश, सभी दिशा, पृथ्वी, चन्द्रमा, सूर्य और सभी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह आकाश में निर्मल (विकाररहित) दिखाई देते हैं। इस प्रकार के निमित्तों से तथा अन्य शुभसूचक चिह्नों के देखे जाने पर इसका उदय कहना चाहिये।

पद्मकेतुलक्षणं वराहसंहितायाम्

अपरेण पद्मकेतुर्मृणालवर्णो भवेन्निशामेकाम्।
सप्त करोति सुभिक्षं वर्षाण्यतिहर्षयुक्तानि॥

विशेषः– मृणालवर्णो मृणालशिख इति।

पश्चिम दिशा में मृणाल (बिसतन्तु) की तरह गौर वर्ण वाला अर्थात् मृणाल की तरह शिखा वाला मात्र एक रात्रि में दिखाई देने वाला पद्मकेतु होता है। यह दिखाई देने पर सात वर्षों तक आनन्द और सुभिक्ष देने वाला होता है।

तथा च पराशरः

अथातः पद्मकेतुः श्वेतकेतुफलसमाप्तौ पश्चिमेनाह्लादयन्निव मृणालकुमुदाभया शिखयैकरात्रं चरन् सप्तवर्षाण्युच्छ्रितं हर्षमावहति।

श्वेतकेतु के फल के समाप्त होने पर पश्चिम दिशा में आह्लादित होता हुआ (निर्मल) मृणाल और कुमुदपुष्प की कान्ति से युक्त मात्र एक रात विचरण (दृश्य) करने वाला पद्मकेतु उदित होता है। यह सात वर्षों तक प्रजाओं में अत्यन्त हर्ष प्रदान करता है।

वृद्धगर्गस्तु

मृणालमुक्ताशीतांशुर्जगत् प्रह्लादयन्निव।
पश्चिमेनोदितः श्रीमानेकां दर्शयते निशाम्॥

स सुभिक्षं स चारोग्यं प्रजानां हर्षमेव च।
नित्योत्सवसमाजश्च नित्यं यज्ञपरा नराः॥

देशे देशे मनुष्याणां भवन्ति विविधाः क्रियाः।
आमृतेयोऽपरः केतुः फलं सृजति दर्शनात्॥

तस्य पञ्च च वर्षाणि मासान् पञ्चैव चापरान्।
फलं दृष्टं च षण्मासान् महर्षिवचनं यथा॥

मृणाल और मुक्ता (मोती) के समान शीत किरण वाला, संसार को आनन्दित करते हुए पश्चिम दिशा में श्रीमान् (सुन्दर कान्तियुत) पद्मकेतु मात्र एक रात्रि दृश्य होता है। यह प्रजाओं में सुभिक्ष, आरोग्य और हर्ष देता है। पृथ्वी पर प्रतिदिन सामाजिक उत्सव (जन्मदिन, मुण्डनोपनयनविवाहादि) होते हैं, मनुष्य यज्ञ करने में तल्लीन रहते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं और सभी देशों में मनुष्यों के विविध सत्कार्य होते हैं। यह अमृतोत्पन्न पद्मकेतु अन्य के विपरीत उदयकाल से ही फल उत्पन्न करता है और पाँच वर्ष, पाँच मासों तक फल देता है। किसी महर्षि का कथन है कि यह छः मासों तक फल देता है।

अथातः परं स्वधिकेतोरुदयः। तत्र वृद्धगर्गः

षोडशैकश्च मारीचेः कश्यपस्य ललाटजाः।
तेषामेकः स्वधिर्नाम चरन् पूर्वेण दृश्यते॥

ततस्तु पञ्चदशभिः संवत्सरशतैर्गतैः।
कृतान्तसदृशः क्रूरः प्रजानां च भयावहः॥

तस्य चोत्थानसमये निमित्तान्युपलक्षयेत्।
पतन्त्युल्काः सनिर्घाता वाता वान्ति सुदारुणाः॥

महीकम्पा दिशां दाहाः परिवेषांशुमर्दनाः।
स्त्रीणां च विकृता गर्भाः प्रदृश्यन्ते समन्ततः॥

मरीचि और कश्यप के ललाट से उत्पन्न सत्रह केतुओं में एक स्वधि केतु पूर्व दिशा में उदित होता है। पद्मकेतु के चारोदयास्त के बाद ११५ वर्षों तक प्रवास में रहकर यमराज की तरह क्रूर और प्रजाओं को भय देने वाला यह दृश्य होता है। इसके उदय होने के समय में उल्कापात, निर्घात शब्द, महावात (आँधी-तूफान), भूकम्प, दिग्दाह, परिवेष, अंशुमर्दन आदि ग्रहयुद्ध और स्त्रियों के गर्भ में विकार— ये सब दारुण निमित्त देखे जाते हैं।

तस्य लक्षणं वराहसंहितायाम्

श्वेत इति जटाकारो रूक्षः श्यामो वियत्त्रिभागगतः।
विनिवर्त्ततेऽपसव्यं त्रिभागशेषाः प्रजाः कुरुते॥

विशेषः– श्वेत इति स्वधिकेतोरेव संज्ञान्तरम्।

श्वेत नामक केतु जटा के समान, रूक्ष, श्याम वर्ण और आकाश के तीन भाग तक जाकर बायीं तरफ से होकर लौट आता है। इसका दर्शन होने से प्रजा का तृतीयांश मात्र शेष रहता है अर्थात् दो भाग नष्ट हो जाते हैं। श्वेतकेतु ही स्वधिकेतु होता है।

तथा च पराशरः

अथ काश्यपः स्वधिकेतुः पञ्चदशवर्षशतं प्रोष्यैन्द्र्यां सोमसहजस्य पद्मकेतोश्चारान्ते श्यावरूक्षो नभसस्त्रि-भागमाक्रम्यापसव्यनिवृत्तोर्ध्वप्रदक्षिणजटाकारशिखः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स यावतो मासान् दृश्यते तावन्ति वर्षाणि दुर्भिक्षमावहति। मध्यदेश आर्यगणानामादानमौदीच्यैश्च भूयिष्ठां सत्रिभागशेषां प्रजामवशेषयति – इति।

कश्यपपुत्र स्वधिकेतु एक सौ पन्द्रह वर्षों तक प्रवास में रहकर पूरब दिशा में चन्द्रमा के साथ उत्पन्न होने वाले पद्मकेतु के चारसमाप्ति के अनन्तर कपिश और रूक्ष वर्ण वाला, आकाश के तीन भागों में विचरण करके ऊपर और दक्षिण तरफ जटाकार शिखा वाला दृश्य होता है। वह जितने मासों तक आकाश में दृश्य होता है, उतने वर्षों तक पृथ्वी पर दुर्भिक्ष करता है। मध्यदेशों में आर्यगणों का नाश और उत्तर दिशा में स्थित देशों के लोगों का अधिक नाश करता है तथा मात्र एक तिहाई प्रजा शेष रहती है अर्थात् दो भाग नष्ट हो जाते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

स कृत्वैव जटां रूक्षां शिखामूर्ध्वां प्रदर्शयेत्।
वैष्णवं पदमाक्रम्य श्यावरूक्षसमद्युतिः॥

त्रिभागं नभसो गत्वा अपसव्यं निवर्त्तते।
याम्याग्रशिखया भौमो नक्षत्राण्युपधूपयेत्॥

दर्शनादेव लोकानां भयं जनयते भृशम्।
अस्य दर्शनतो म्लेच्छाः शका ये च महाशकाः॥

तगणा बहवः सर्वे परस्परजिगीषवः।
क्रोधाविष्टाः समेष्यन्ति शस्त्रैर्घ्नन्तः परस्परम्॥

ततः प्रथमसंग्रामे कबन्धैश्चित्रिता क्षितिः।
वैमुख्यं क्षत्रियाः सर्वे गमिष्यन्ति कृतान्ततः॥

तेषां रत्नानि पत्नींश्च क्षत्रियाणां महाशकाः।
प्रतिगृह्य प्रयास्यन्ति मध्यदेशं विलुप्य च॥

विप्राद्यांश्चतुरो वर्णान् कुरुक्षेत्रं तथैव च।
अन्योन्यं ते तु सन्तुष्टाः प्रयास्यन्ति यमालयम्॥

ये चाप्यन्तर्हिताः शेषाः केतवः षोडशैव तु।
ते च भूमिगता व्याला वनपर्वतवासिनः॥

सागराणां च सर्वेषां दुष्टसत्त्वांस्तथैव च।
मानुषान् भक्षयिष्यन्ति दारुणं रूपमास्थिताः॥

वह एक जटा वाला, रूक्ष, ऊर्ध्व शिखा वाला, आकाश को आच्छादित करने वाला, कपिश और रूक्ष कान्ति वाला पूर्व में उदित होकर आकाश के तीन भाग में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाकर बाँयीं तरफ लौट जाता है। यह दक्षिण तरफ शिखा करके नक्षत्रों को धूपित करता है। इसके उदित होते ही लोगों में भय उत्पन्न हो जाता है तथा म्लेच्छ, शक, महाशक (महान् शक्तिशाली), तगण— ये सब एक-दूसरे को जीतने की इच्छा रखने वाले और क्रोधाभिभूत होकर परस्पर एक-दूसरे को शस्त्रों से मारते हैं। प्रथम युद्ध में ही कबन्धों (शिर कटे हुए शरीरों) से पृथ्वी चित्रित (कबन्धमय) हो जाती है। सभी क्षत्री वैमुख्य (प्रधानरहित) होकर यमलोक को प्राप्त करते हैं (मर जाते हैं)। लोगों के रत्न (धन) और स्त्रियों को लेकर तथा मध्यदेशों को घर्षित कर महाशक (महान् शक्तिशाली) लोग चले जाते हैं। ब्राह्मणादि चारो वर्णों के लोग तथा कुरुक्षेत्र के निवासी परस्पर (एक-दूसरे को मारने से) सन्तुष्ट होकर सभी यमद्वार जाते हैं (मर जाते हैं)। स्वधिकेतु के अन्तर्हित अन्य सोलह केतु भूमिगत तथा वन-पर्वतवासी सर्पों और समुद्रों के सभी दुष्ट (हिंसक) जीवों के द्वारा दारुण रूप धारण करके मनुष्यों को खा जाते हैं।

अतःपरममृतोद्भवस्यावर्त्तकेतोरुदयः। तत्र वृद्धगर्गः

अतिक्रान्ते स्वधौ केतौ निर्गते घोरदर्शने।
आवर्त्तकेतुरात्मानं दर्शयत्यमृतोद्भवः॥

उत्थानसमये चास्य निमित्तान्युपलक्षयेत्।
यानि पूर्वाणि चोक्तानि पद्मकेतोः प्रदर्शने॥

स्वधिकेतु के अस्त होने तथा उसके घोर दर्शनजन्य अशुभ फलों के अन्त होने के बाद अमृतोत्पन्न आवर्त्तकेतु अपना रूप दिखाता है। इसके उदय के समय पद्मकेतु की तरह पूर्वनिमित्तों का ज्ञान करना चाहिये अर्थात् जो पूर्वनिमित्त पद्मकेतु के उदय के समय दिखाई देते हैं, वे ही आवर्त्तकेतु के उदय के समय भी दिखाई देते हैं।

अथास्य लक्षणम्

पश्चिमेनोदितः श्रीमान् शिखां शङ्खोदरारुणान्।
पूर्वेणाभिनतां कृत्वा रात्र्यर्धे सम्प्रदृश्यते॥

प्रदक्षिणावर्त्तगतिः शिखया प्रहसन्निव।
दर्शयित्वा निशामेकां ततो गच्छत्यदर्शनम्॥

स दृष्ट एव षण्मासान् पक्षं चैव परं शिखी।
सुवृष्टिं क्षेममारोग्यं सुभिक्षं कुरुते महत्॥

यज्ञोत्सवप्रदानैश्च मही भवति सङ्कुला।

पश्चिम दिशा में उदित होने वाला, पूर्व दिशा की ओर नत शिखा वाला, शङ्ख के उदर की तरह रक्त वर्ण शरीर वाला श्रीमान् (निर्मल) आवर्त्तकेतु रात्र्यर्ध में दृश्य होता है। यह दक्षिणावर्त्त गति से चलने वाला, निर्मल शिखा से हँसते हुए की तरह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मात्र एक रात दृश्य होकर अदृश्य हो जाता है। यह उदयकाल से ही साढ़े छः मासों तक सुवृष्टि, क्षेम, आरोग्य और सुभिक्ष करता है तथा यज्ञादि उत्सवों से पृथ्वी संकुल (व्याप्त) हो जाती है।

पराशरस्तु

अथावर्त्तकेतुः स्वधिकेतोः कर्मण्यतीते अपरस्यामर्धरात्रेण शङ्खोदरारुणाभया प्रदक्षिणनताग्रया शिखयोदितः स यावन्मुहूर्त्तान् निशि दृश्यते तावन्मासान् भवत्यतीव सुभिक्षं नित्यं यज्ञोत्सवश्च जगतः ॥

स्वधिकेतु के कर्म (दर्शन-फल) के अनन्तर पश्चिम दिशा में मध्यरात्रि के समय शङ्ख के उदर की तरह रक्त वर्ण की कान्ति वाला, दक्षिणाग्र नत शिखा वाला आवर्त्तकेतु उदित होता है। यह जितने क्षणों तक रात में दृश्य होता है, उतने महीनों तक संसार में अत्यन्त सुभिक्ष और नित्य यज्ञोत्सव समान होता है।

वराहसंहितायाञ्च

आवर्त्त इति निशार्धे सव्यशिखोऽरुणनिभोऽपरे स्निग्धः।
यावत्क्षणान् स दृश्यस्तावन्मासान् सुभिक्षकरः ॥

पश्चिम दिशा में मध्य रात्रि के समय उदित होने वाला, बाँयीं तरफ शिखा वाला, रक्त वर्ण की कान्ति वाला और निर्मल मूर्त्ति वाला आवर्त्तकेतु है। यह जितने क्षणों तक दृश्य होता है, उतने मासों तक सुभिक्ष करने वाला होता है।

अतःपरं रश्मिकेतोरुदयः। तत्र पराशरः

अथ रश्मिकेतुर्विभावसुजः प्रोष्य वर्षशतमावर्त्तकेतोश्चारान्ते कृत्तिकासु धूम्रशिखः श्वेतकेतोः सदृशफलः।

विभावसु से उत्पन्न रश्मिकेतु आवर्त्तकेतु के चारान्त के समय एक सौ वर्ष तक प्रवास में रहने के अनन्तर कृत्तिका नक्षत्र में उदित होने वाला है। यह धूम्र की तरह शिखा वाला और श्वेतकेतु के समान फल देने वाला होता है।

स्वधिकेतुफलं वराहसंहितायाम्

आधूम्रया तु शिखया दर्शनमायाति कृत्तिकासंस्थः।
ज्ञेयः स रश्मिकेतुः श्वेतसमानं फलं धत्ते ॥

विशेषः– वृद्धगर्गेण तस्य कलिकेतुना सह तुल्यकालमुदयः प्रोक्तः। तल्लक्षणं फलं च तत्रैवोक्तमिति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धूम्र वर्ण की शिखा वाला और कृत्तिका नक्षत्र में स्थित होकर रश्मिकेतु दृश्य होता है। यह श्वेतकेतु के समान फल देता है।

वृद्धगर्ग के अनुसार रश्मिकेतु कलिकेतु के साथ उदित होता है और उसके समान फल देने वाला होता है।

अथाग्निकेतोरुदयः । तत्र वृद्धगर्गः

अतिक्रान्तैस्त्रिभिर्वर्षैर्मासैः षड्भिस्तथा परैः ।
किंशुकाशोकसदृशः सौदामिन्या समद्युतिः ॥

पद्मकिञ्जल्कवर्णोऽयमग्निकेतुः प्रदृश्यते ।
दर्शनं तस्य जानीयान्नक्षत्रे शक्रदैवते ॥

अध्यर्धमाससन्दृष्टस्ततो गच्छत्यदर्शनम् ।
तस्योदयनकाले तु वर्त्तमानेऽग्निसङ्कुले ॥

गणाश्च गणमुख्याश्च तथा पुरनिवासिनः ।
उद्युक्ता घ्नन्ति राजानः परस्परवधैषिणः ॥

नियुद्धं घोरमायान्ति क्रोधलोभपरायणाः ।
त एव दृष्टाः सर्वे च विसर्पन्ति परस्परम् ॥

केचित् स्वदेशं गच्छन्ति परिश्रान्ता निरर्थकाः ।
एवमेव नरेन्द्राणां तथा ग्रामनिवासिनाम् ॥

परस्परं पीडयतां कालो गच्छति दारुणः ।
एष पञ्च च वर्षाणि मासान् पञ्चैव चापरान् ॥

दारुणं कुरुते कर्म न तु दुर्भिक्षतो भयम् ।

साढ़े तीन वर्षों के बाद पश्चिम दिशा में किंशुक और अशोक पुष्प के समान रक्त वर्ण वाला, बिजली के समान कान्ति वाला, पद्मकिञ्जल्क (कमलपुष्प के मध्यस्थ भाग) के समान वर्ण वाला अग्निकेतु दृश्य होता है। यह ज्येष्ठा नक्षत्र में जाने पर उदित होकर डेढ़ मास तक दृश्य होता है। इसके उदय के समय पृथ्वी पर अग्निकोप, गण, गण के प्रधान, पुरवासी एवं राजा लोग क्रोध और लोभ से अभिभूत होकर परस्पर (एक-दूसरे को) वध करने की इच्छा से घोर युद्ध करते हैं। सभी पलायन करते हैं, कोई निरर्थक परिश्रान्त होकर अपने-अपने देश को लौट जाते हैं। इस तरह राजाओं और ग्रामवासियों का दारुण समय एक-दूसरे को पीड़ित करते हुए व्यतीत होता है। यह केतु पाँच वर्ष, पाँच महीनों तक दारुण कर्म करता है; परन्तु दुर्भिक्ष का भय नहीं होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ गदाकेतोरुदयः । तत्र वृद्धगर्गः

मार्गशीर्ष्यामिमावास्यां गदाकेतुः प्रदृश्यते ।
आदित्यरौद्रसार्पाणि बार्हस्पत्यं तथैव च ॥

कोष्ठागारं च शिखया धूमयन्नरुणाभया ।
गदानिभो गदाकेतुर्हन्याद्दृश्यो नभोगतः ॥

गान्धारकाशीचीनांश्च शकांश्च दरदैः सह ।
शवरानेकपादांश्च पुलिन्दान् सूर्पकर्णकान् ॥

एतानेवंविधान् हन्याद् विशेषेणान्त्यवासिनः ।
यावद्दर्शयते पक्षांस्तावन्मासान् निहन्ति च ॥

मासैर्वर्षाणि जानीयादिति शास्त्रस्य निश्चयः ।

अग्रहायण मास की अमावास्या तिथि में पुनर्वसु, आर्द्रा, श्लेषा, पुष्य और मघा को धूपित करते हुए रक्त कान्ति वाला, गदा के समान आकृति वाला गदाकेतु दृश्य होता है। यह आकाश में दृश्य होने पर गान्धार, काशी, चीन, शक, दरद, शबर, एकपाद, पुलिन्द, शूर्पकर्ण तथा समुद्रतट-स्थित देशवासी लोगों का नाश करता है। यह जितने पक्षों तक दिखाई देता है, उतने मासों तक तथा जितने मास तक दिखाई देता है उतने वर्षों तक लोगों का नाश करता है। यही शास्त्र का निश्चय (कथन) है।

एवं केतुचक्रस्य पुनःपुनः परिवृत्तिर्भवति । यथाऽऽह वृद्धगर्गः

नक्षत्रचक्रमाकाशे यथैव परिवर्त्तते ।
केतुचक्रं तथैवेदमाकाशात् परिवर्त्तते ॥

जिस तरह नक्षत्रचक्र (भचक्र) आकाश में परिभ्रमण (प्रवहवायु से प्रेरित होकर ६० घटी में एक चक्कर लगाता है) करता है, उसी तरह लगभग एक हजार वर्षों में एक के बाद एक केतु के दृश्य होने के बाद में पुनः केतुचक्र परिवर्त्तित (क्रम से उदित) होता है।

अथ धूमकेतुसंवर्त्तकेत्वोर्युगपदुदयः । तत्र वृद्धगर्गः

ततो वर्षसहस्रान्ते दृश्येते चोदितौ दिवि ।
केतुमालाग्रहस्यान्ते धूमसंवर्त्तकौ ग्रहौ ॥

एतयोरुदये चापि निमित्तान्युपलक्षयेत् ।
स्त्रियो गर्भान् विमुञ्चन्ति प्रतिरूपाण्यभीक्ष्णशः ॥

अभीक्ष्णं कम्पते वापी सशैलवनकानना ।
ससागरपुरद्विपाऽनेकधातुधरा धरा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पततामिव शैलानां नागानां बृहतामिव।
नर्दतां क्षुद्रजातीनां श्रूयन्ते सुमहास्वनाः॥

बालकानां कुमारीणां नराणां स्त्रीजनस्य च।
क्रीडितस्याप्रशस्तानि व्याहृतानि तथैव च॥

पतन्ति गगने चोल्काः सनिर्वाता दिशो दश।
सज्वालाङ्गारधूमाद्याः सूर्यस्याभिमुखा इव॥

एतैरेतादृशैर्घोरैः पूर्वरूपैर्भयावहैः।
उदयं धूमकेतोश्च ब्रूयात् संवर्त्तकस्य च॥

एक हजार वर्षों के बाद मालारूपी केतुचक्र में सभी केतुओं के उदित होने के अनन्तर आकाश में धूमकेतु और संवर्त्तक केतुओं का उदय होता है। इनके उदय के समय होने वाले पूर्वनिमित्त इस प्रकार हैं—

स्त्रियाँ बारम्बार अपना गर्भ त्याग देती हैं। वापी (कूप), पर्वत, वन, उपवन, समुद्र, द्वीप आदि सहित अनेक प्रकार के रत्नों को धारण करने वाली पृथिवी पुनः-पुनः काँपती है अर्थात् बार-बार भूकम्प होता है। भयङ्कर भूकम्प होने से, पर्वतों के गिरने से, बड़े-बड़े हाथियों (दिग्गजों) के चिघ्घाड़ने से और क्षुद्र जन्तुओं के चिल्लाने से घोर आवाज सुनाई पड़ती है। बालक, बालिका, स्त्री और पुरुषों के क्रिया-कलापों में अशुभ होने लगते हैं। आकाश में उल्कापात होते हैं और दशो दिशाओं में हवा के विना ही धधकती हुई अग्निज्वाला, धूँआ आदि सूर्याभिमुख दिखाई देते हैं। इस प्रकार भयानक पूर्वनिमित्तों के दर्शन होने पर धूमकेतु और संवर्त्तककेतु का उदय कहना चाहिये।

अथ लक्षणम्

अथातोऽव्यक्तचारस्तु धूमकेतुः सुलक्षणः।
दावाग्निसदृशीं रूक्षां दक्षिणाभिनतां शिखाम्॥

कृत्वास्तमनकाले तु रवेर्धूमं विमुञ्चति।
दीर्घया शिखया भीमो ग्रसतीव नभस्तलम्॥

याम्यामर्धप्रदोषे तु गगने सम्प्रदृश्यते।
नास्य तारामयं रूपं पश्यन्त्यज्ञानचक्षुषः॥

विषादं जनयत्येष लोकानां दर्शनाद्ग्रहः।
नभस्यभ्युदितः क्रूरो भीमरूपो भयावहः॥

दारुणं कुरुते कर्म प्रजाक्षयकरं महत्।
ब्रह्मकोपसमुद्भूतः क्रूरः परमदारुणः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केतुः पूर्वेण रात्र्यन्ते तथैवान्यः प्रदृश्यते।
दीप्तया शिखयाऽत्यर्थं क्षतजार्द्राभया दिवि॥
संवर्त्तक इति ख्यातः क्षयाय जगतामिति।
यावद्दिनानि रात्र्यन्ते पूर्वसन्ध्यासु दृश्यते॥
तावद्वर्षाणि राजानः शस्त्रैर्घ्नन्ति परस्परम्।
अर्घमष्टगुणं कृत्वा शरद्धान्यस्य दारुणः॥
शेषयित्वा च षड्भागं जगत् प्रतिनिवर्त्तते।

धूमकेतु और संवर्त्तककेतु का उदय पृथक्-पृथक् होता है। धूमकेतु के चारादि अव्यक्त हैं अर्थात् इसके रूप, गति, प्रमाण, वर्ण, दिशा, संस्थान आदि निश्चित नहीं हैं। इसीलिए इसे अव्यक्तचार कहा गया है।

संवर्त्तककेतु दावानल के समान रूक्ष तथा दक्षिण दिशा की ओर नतशिखा करके सूर्यास्त के समय सूर्य से धूँआ छोड़ता हुआ अपनी लम्बी और भयङ्कर शिखा से सम्पूर्ण आकाश को ग्रसित करने वाला अर्धप्रदोष के समय दक्षिण भाग में उदित होता है। अज्ञानी (सामान्य मनुष्य) अपनी आँखों से इसके तारामय शरीर को नहीं देख पाते हैं। भयङ्कर मूर्त्ति वाला, क्रूर, दारुण कर्म करने वाला, प्रजाओं का नाश करने वाला, भय दिखाने वाला, उदय की पूर्वरात्रि में अन्य केतु को दिखाने वाला, रक्त वर्ण की कान्ति से युक्त शिखा के प्रकाश से अत्यधिक प्रकाशित होने वाला, ब्रह्मकोप से उत्पन्न होने वाला और संसार का नाश करने वाला संवर्त्तक नामक केतु प्रसिद्ध है। यह जितने दिनों तक रात्र्यन्त में प्रातः-सन्ध्या काल में दृश्य होता है, उतने वर्षों तक राजा लोग परस्पर शस्त्रों से एक-दूसरे को मारते हैं। शारदीय धान्यों की महँगी आठ गुणा होती है और प्रजाओं का नाश कर मात्र छठा भाग शेष रहने देता है। इस तरह यह अत्यन्त दारुण फल देता है।

पृथक्पृथगप्यनयोरुदयो भवति तत्र केवलस्य संवर्त्तकस्योदयः पश्चिमायां दिशि भवति। धूमकेतोर्न दिङ्नियमः केवलं संवर्त्तककेतोरुदयमाह पराशरः

अथ संवर्त्तको वर्षशतमष्टोत्तरं प्रोष्य पश्चिमेनास्तं गते सवितरि सन्ध्यायां दृश्यते। तन्वीं ताम्ररूक्षशूलाभां धूमं विमुञ्चन्तीं सुदारुणां शिखां कृत्वा नभसस्त्रिभागमाक्रम्य स यावन्मुहूर्त्तान् निशि तिष्ठति तावद्वर्षाणि परस्परं शस्त्रैर्घ्नन्ति पार्थिवाः। यानि नक्षत्राणि धूपायति यत्र चोदेति तानि दारुणतरं पीडयति तदाश्रितांश्च देशान् – इति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संवर्त्तक केतु एक सौ आठ वर्षों तक प्रवास में रहकर (वृद्धगर्गादि के मतों के साथ इसकी संगति नहीं होती है, तदनुसार 'वर्षसहस्रमष्टोत्तरं' शुद्ध पाठ प्रतीत होता है) पश्चिम दिशा में सूर्यास्त के बाद सायं सन्ध्या के समय उदित होता है। यह छोटी, ताम्र वर्ण और रूक्ष वर्ण की कान्ति वाली, शूल के समान धूम छोड़ती हुई अत्यन्त भयङ्कर शिखा करके, आकाश के तीसरे भाग में जाकर जितने क्षणों तक दृश्य होता है, उतने वर्षों तक राजा लोग परस्पर शस्त्रों से एक-दूसरे को मारते हैं। जो नक्षत्र धूपित होते हैं तथा जिस भाग में यह उदित होता है, उन नक्षत्रों के आश्रित देश तथा उस दिशा में रहने वालों को यह अत्यधिक दारुण पीड़ा देता है।

वराहसंहितायाम्

पश्चात् सन्ध्याकाले संवर्त्तोनाम धूम्रताम्रशिखः।
आक्रम्य वियत्त्र्यंशं शूलाग्रावस्थितो रौद्रः॥

यावत एव मुहूर्त्तान् दृश्यो वर्षाणि हन्ति तावन्ति।
भूपान् शस्त्रनिपातैरुदयर्क्षं चापि पीडयति॥

पश्चिम दिशा में सन्ध्याकाल में उदित होकर आकाश के तीसरे भाग में जाकर दिखाई देने वाला धूम्र या ताम्र वर्ण की शूलाग्र (तीन शिखा) की तरह शिखा वाला संवर्त केतु है। यह जितने क्षणों तक दिखाई देता है, उतने वर्षों तक युद्ध के द्वारा राजाओं का नाश करता है तथा उदयकालिक (जिस नक्षत्र में उदय होता है) नक्षत्र को पीड़ित करता है।

अथ केवलधूमकेतोरुदयः। तत्रोदयपूर्वनिमित्तान्याह पराशरः

धूमकेतोः प्रागुदयनिमित्तानि। अवनेर्विचलनमग्नेः प्रभामान्द्यं प्रधूमनं दिशां शीतोष्णविपर्यासोऽतिरूक्षवायुसम्भवश्च।

धूमकेतु के उदय से पूर्व भूकम्प, आग की कान्ति में मलिनता, दिशाओं का प्रधूमन, शीत और उष्ण में विपरीतता अर्थात् ठण्ढ़ी वस्तु में गरमी का तथा गरम में ठण्ढ़ का आभास और अत्यन्त रूक्ष वायु का प्रकोप होता है।

धूमकेतुलक्षणं फलञ्च भार्गवीये

धूमध्वजो धूमशिखो धूमार्चिर्धूमतारकः।
एवं तावद्धूमकेतोर्लक्षणं समुदाहृतम्॥

धूम्र के ध्वज (पताका) वाला, धूमशिखा वाला, धूम्र वर्ण की कान्ति वाला और धूम वर्ण तारा वाला धूमकेतु होता है। यह अशुभ फल देता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धूमकेतुलक्षणमाह पराशरः

अथानियतदिक्कालरूपवर्णप्रमाणसंस्थानो धूमकेतुः पराभविष्यतां देशानां राज्ञां जनपदानां च वृक्षपुरपर्वतवेश्मध्वजपताकाशस्त्रवर्मायुधावरणरथनागोष्ट्रपुरुषशयनभाण्डेषु वा दृश्यते। स एव दिवि स्निग्धो विमलः प्रदक्षिणजटाकारशिखो गोगजाजनागवीथीं चोत्तरेण व्रजन् सुभिक्षं क्षेममारोग्यं चावहति।

धूमकेतु के उदय के स्थान, समय, रूप, वर्ण, प्रमाण और संस्थान (आकृति) अनियत (अनिश्चित) हैं। यह नाश होने वाले राजाओं, देशों और जनपदों के वृक्ष, नगर, घर, ध्वज, पताका, शस्त्र, वर्म आदि आयुध; रथ, हाथी, ऊँट, पुरुष, शय्या, भाण्ड (वर्त्तन) आदि में दृश्य होता है। यही धूमकेतु आकाश में निर्मल, विमल, दक्षिणावर्त्त जटा की आकृति की शिखा से युक्त, गो, गज, अज, नागवीथियों के उत्तर भाग से विचरण करे तो सुभिक्ष, क्षेम और आरोग्य करता है; अन्यथा अशुभ फल देता है।

वराहसंहितायां तु धूमकेतोरेव ध्रुवकेतुसंज्ञया फलमुक्तम्

ध्रुवकेतुरनियतगतिप्रमाणवर्णाकृतिर्भवति विष्वक्।
दिव्यान्तरिक्षभौमो भवत्ययं स्निग्ध इष्टफलः॥

सेनाङ्गेषु नृपाणां गृहतरुशैलेषु चापि देशानाम्।
गृहिणामुपस्करेषु च विनाशिनां दर्शनं याति॥

ध्रुवकेतु अनिश्चित गमन, प्रमाण, वर्ण और आकृति वाला, सभी दिशाओं में दिखाई देने वाला, दिव्य, अन्तरिक्ष और भौम तीन प्रकार से दिखाई देने वाला, यदि निर्मल हो तो शुभ फल देता है। यह ध्रुवकेतु नाश होने वाले राजाओं के सेनाङ्गों (अश्व, लगाम, आयुध आदि) में, नाश होने वाले देशों के गृह, वृक्ष और पर्वतों में तथा नाश होने वाले गृहस्थों के उपस्कर द्रव्यों में दिखाई देता है।

गार्गीये

मृत्व्यात्मजः स एवेह धूमकेतुः क्षयावहः।
दिव्यन्तरिक्षे भूमौ च जले चासौ प्रदृश्यते॥

नाश करने वाले मृत्यु (अन्तक) का पुत्र ही धूमकेतु है। यह दिव्य, अन्तरिक्ष, भूमि और जल में दिखाई देता है।

विशेष— 'अपरेऽपि ये केतवः कथितास्ते दिव्यान्तरिक्षभौमाश्च भवन्ति, अत एव शास्त्रे केतूनां गणनमशक्यत्वान्नोक्तम्।' अर्थात् धूमकेतु की तरह अन्य केतु भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिव्यान्तरिक्षभौम भेद से तीन प्रकार के होते हैं। इसलिए केतुओं की संख्या शास्त्र में अनगिनत होने के कारण केतुओं की गणना करना सम्भव नहीं है।

तथा च वराहसंहितायाम्

दर्शनमस्तमनं वा न गणितविधिनाऽस्य शक्यते ज्ञातुम्।
दिव्यान्तरिक्षभौमास्त्रिविधाः स्युः केतवो यस्मात्॥

अहुताशेऽनलरूपं यस्मिँस्तत्केतुरूपमेवोक्तम्।
खद्योतपिशाचालयमणिरत्नादीन् परित्यज्य॥

ध्वजशस्त्रभवनतरुतुरगकुञ्जराद्येष्वथान्तरिक्षास्ते।
दिव्या नक्षत्रस्था भौमाः स्युरतोऽन्यथा शिखिनः॥

गणित के द्वारा केतु का अस्त या उदय नहीं जाना जा सकता; क्योंकि दिव्य (आकाश में उत्पन्न), आन्तरिक्ष (ग्रह और नक्षत्रों के स्थान से भिन्न आकाश में उत्पन्न) और भौम (पृथ्वी पर उत्पन्न)— ये तीन प्रकार के केतु होते हैं। इसलिए उत्पातरूप होने के कारण केतुओं का उदयास्त नहीं जान सकते हैं।

खद्योत, पिशाचालय (यक्ष का स्थान), मणि (चन्द्रकान्त आदि), रत्न (मरकत इत्यादि), आदि (काच आदि) को छोड़कर अग्निरहित स्थान में अग्नि के समान रूप दृष्टिगोचर हो तो वहाँ केतु का रूप समझना चाहिये।

ध्वज, शस्त्र, गृह, वृक्ष, घोड़ा, हाथी आदि में जिस केतु का दर्शन हो, वह आन्तरिक्ष केतु, नक्षत्रों में दिव्य और उक्त स्थानों से अन्यत्र स्थानों में (पृथ्वी पर) भौम केतु होता है।

गार्गीये तु

अन्तरिक्षे यदा धूमो ज्वाला वा सम्प्रपद्यते।
आन्तरिक्षः स केतुः स्याद्दिव्यस्ताराश्रितः स्मृतः॥

पर्वताश्चैव वृक्षाश्च प्रासादनगराणि च।
अकस्माद्यत्र धूम्यन्ते ध्वजवर्मायुधानि च॥

रसवर्णविपर्यासः शब्दसंस्पर्शयोस्तथा।
वृक्षौषधितृणे गुल्मे विकृतिर्यत्र दृश्यते॥

तत्र भौमं विजानीयाद्धूमकेतुमुपस्थितम्।
आन्तरिक्षोऽथ भौमो वा यत्र केतुः प्रदृश्यते॥

तस्य देशस्य षण्मासाद्विनाशं परिनिर्दिशेत्।
दिवा वा यदि वा रात्रौ दृश्यते ज्वलनं यदि॥

यत्रासौ केतुरुदितस्तस्य देशस्य नाशकृत्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्तरिक्ष (ग्रह-नक्षत्र कक्षा से नीचे और पृथ्वी से ऊपर अर्थात् भूवायुमण्डल के भीतर) में यदि धूम या आग की ज्वाला दिखाई दे तो वह आन्तरिक्ष केतु कहा जाता है। नक्षत्रों में आश्रित केतु दिव्य कहा गया है और पर्वत, वृक्ष, प्रासाद (गृह), नगर, ध्वज, वर्म और आयुध आदि में जहाँ एकाएक (विना आग का) धूआँ दिखाई दे, रसों के वर्णों में विकृति दिखाई दे, शब्द और स्पर्श में विपरीतता का आभास हो, वृक्ष, औषधि, तृण और गुल्म (झाड़ी) में जहाँ विकार दिखाई दे, वहाँ भौम धूमकेतु उपस्थित है— ऐसा जानना चाहिये। आन्तरिक्ष केतु या भौम केतु जहाँ दिखाई देता है, उस देश का छः मासों के भीतर विनाश होता है। जहाँ दिन में या रात में यदि ज्वाला दिखाई दे अर्थात् जहाँ केतु उदित हो, उस देश का नाश करता है।

दिव्यादिफलेषु विशेषो वटकणिकायाम्

दिव्या नक्षत्रस्थास्तीव्रफला मन्दफलकरा भौमाः।
प्राणिध्वजादितुङ्गेष्वथान्तरिक्षा न चात्यशुभाः॥

केचित् केतुसहस्रं शतमेकसमन्वितं वदन्त्यपरे।
नारदमतमेकोऽयं त्रिस्थानभवो विविधरूपः॥

नक्षत्रों में स्थित केतु दिव्यसंज्ञक होता है। ये तीव्र फल (अत्यधिक अशुभ फल) देने वाले होते हैं; पृथ्वी पर दिखाई देने वाले भौम केतु मन्द फल (अत्यल्प अशुभ फल) देने वाले होते हैं और प्राणी, ध्वजा आदि; घोड़े, हाथी आदि में दिखाई देने वाले आन्तरिक्ष केतु अधिक अशुभ फल नहीं देते हैं अर्थात् सर्वाधिक अशुभ फल देने वाले दिव्य, उससे कम आन्तरिक्ष और सर्वाल्प अशुभ फल भौम केतु देते हैं। किन्हीं आचार्य के मत से एक हजार प्रकार के केतु होते हैं, कुछ आचार्यों के अनुसार एक सौ एक केतु हैं और नारद मुनि के मतानुसार मात्र एक केतु ही है, जो तीनों (दिव्य, आन्तरिक्ष और भौम के) रूप में अनेक प्रकार का दिखाई देता है।

तथा च नारदः

दिव्योऽन्तरिक्षो भौमाख्य एकः केतुः प्रकीर्त्तितः।
शुभाशुभफलं लोके ददात्यस्तमनोदयैः॥

दिव्य, आन्तरिक्ष और भौमसंज्ञक एक ही केतु कहा गया है। संसार में एक ही केतु अस्त और उदय के अनुसार शुभ तथा अशुभ फल देता है।

असंख्याताः केतवो भवन्तीत्युक्तमाथर्वणाद्भुते

अनेकशतसाहस्राननेकशतलक्षणान्।
देवलस्तु ग्रहानाह सर्वानेव पृथक्फलान्॥

अनेक सौ हजारों प्रकार के अनेक सौ लक्षणों से युक्त सभी पृथक्-पृथक् फल देने वाले केतुग्रहों का वर्णन देवल ने किया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

यद्येको यदि बहवः किमनेन फलं तु सर्वथा वाच्यम् ।
उदयास्तमनैः स्थानैः स्पर्शैराधूपनैर्वर्णैः[१] ॥

केतु एक हो या अनेक; इसका कोई प्रयोजन नहीं है। किन्तु केतु के उदय, अस्त, स्थान, स्पर्श (ग्रह, नक्षत्र या द्रव्य से स्पर्श), आधूमन (श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण आदि) वर्णों के द्वारा ही फल का कथन करना चाहिये।

वृद्धगर्गः

सर्वथैवोपहिंसन्ति केतवो दारुणा जगत् ।
दिक्कालाकारवर्णैश्च दृश्यमाना नभोगताः ॥

आकाश में दृश्य दारुण केतु दिशा, समय, आकार और वर्णों के अनुसार संसार का सर्वथा विनाश करते हैं।

अथोल्काभिहतशिखाफलं वराहसंहितायाम्

उल्काभिताडितशिखः शिखी शिवः शिवतरोऽभिदृष्टो यः ।
अशुभं स एव चोलावगाणसितहूणचीनानाम् ॥

जो केतु उल्का से ताड़ित हो, वह शुभ करने वाला होता है। जो वृष्टियुक्त हो, वह अतिशय शुभ करने वाला होता है तथा वही केतु चोल, अवगाण, सित, हूण और चीन देशों में स्थित मनुष्यों का अशुभ भी करता है।

वृद्धगर्गस्तु

यानि यान्युपहिंसन्ति नक्षत्राणि महाग्रहाः ।
तेषां तेषां जनपदान् केतवो घ्नन्ति दर्शने ॥

केतु जिन-जिन नक्षत्रों को धूपित या पीड़ित करते हुए दिखाई देते हैं, उन-उन नक्षत्रों के आश्रित जनपदों का नाश करते हैं।

पराशरः

येषां नक्षत्रविषये रूक्षः सज्वाललोहितः ।
दृश्यते बहुमूर्त्तिश्च तेषां विन्द्यान्महद्भयम् ॥

अवर्षं शस्त्रकोपं च व्याधिदुर्भिक्षमेव च ।
कुर्यान्नृपतिपीडां च स्वचक्रपरचक्रतः ॥

यत्रोत्तिष्ठति नक्षत्रे प्रवासं यत्र गच्छति ।
धूपयेद्वा स्पृशेद्वाऽपि हन्याद्देशांस्तदाश्रयान् ॥

---

१. दृष्टैः - इति पाठान्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केतु जिन नक्षत्रों में उदय, अस्त, आधूपन, स्पर्श करते हुए रूक्ष ज्वाला से युक्त होकर रक्त वर्ण वाला या अनेक मूर्त्ति वाला दिखाई देता है, उन नक्षत्रों के आश्रित देशों की प्रजाओं में महान् भय, अवृष्टि, युद्ध का प्रकोप, व्याधि, दुर्भिक्ष, अपने देश के राजा से तथा दूसरे देश के राजाओं से पीड़ा होती है और देशवासियों का नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

ये शस्तांस्तान् हित्वा केतुभिराधूपितेऽथ वा स्पृष्टे।
नक्षत्रे भवति वधो येषां राज्ञां प्रवक्ष्ये तान्॥

अश्विन्यामश्मकपं भरणीषु किरातपार्थिवं हन्यात्।
बहुलासु कलिङ्गदेशं रोहिण्यां शूरसेनपतिम्॥

औशीनरमपि सौम्ये जलजाजीवाधिपं तथाऽऽर्द्रासु।
आदित्येऽश्मकनाथं पुष्ये मगधाधिपं हन्ति॥

असिकेशं भौजङ्गे पित्र्येऽङ्गं पाण्ड्यनाथमपि भाग्ये।
औज्जयिनिकमार्यम्णे सावित्र्ये दण्डकाधिपतिम्॥

चित्रासु कुरुक्षेत्राधिपस्य मरणं समादिशेत्तज्ज्ञः।
काश्मीरककाम्बोजौ नृपती प्राभञ्जने न स्तः॥

इक्ष्वाकुरलकनाथश्च हन्यते यदि भवेद्विशाखासु।
मैत्रे पुण्ड्राधिपतिर्ज्येष्ठासु च सार्वभौमवधः॥

मूलेऽन्ध्रमद्रकपती जलदेवे काशिपो मरणमेति।
यौधेयकार्जुनायनशिविचैद्यान् वैश्वदेवे च॥

हन्यात् कैकयनाथं पाञ्चनदं सिंहलाधिपं चाङ्गम्।
नैमिषनृपं किरातं श्रवणादिषु षट्स्वनुक्रमतः॥

शुभ केतुओं को छोड़कर अन्य केतुओं से धूपित या स्पृष्ट नक्षत्र होने पर जिन-जिन राजाओं का नाश होता है, उनको यहाँ कहते हैं—

यदि अश्विनी नक्षत्र केतु से स्पृष्ट या धूपित हो तो अश्मक नरेश, भरणी हो तो किरातों के अधिपति, कृत्तिका हो तो कलिङ्गदेश के अधिपति, रोहिणी हो तो शूरसेन देश के राजा, मृगशिरा हो तो उशीनर देश के स्वामी, आर्द्रा नक्षत्र हो तो मत्स्य देश के स्वामी, पुनर्वसु हो तो अश्मक देश के स्वामी और पुष्य हो तो मगध के अधिपति का नाश करता है।

यदि केतु से धूपित या स्पृष्ट आश्लेषा नक्षत्र हो तो असिकेश्वर, मघा हो तो अङ्ग देशाधिपति, पूर्वफाल्गुनी हो तो पाण्ड्य देश के अधिपति, उत्तरफाल्गुनी हो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उज्जयिनी के पति, हस्त हो तो दण्डकवन के स्वामी, चित्रा नक्षत्र हो तो कुरुक्षेत्र के अधिपति का मरण केतूपघात को जानने वाले पण्डित को कहना चाहिये। स्वाती नक्षत्र हो तो काश्मीर और कम्बोज देश के नृपतियों का नाश कहना चाहिये।

यदि केतु से धूपित या स्पृष्ट विशाखा नक्षत्र हो तो इक्ष्वाकु और अलकाधिपति, अनुराधा हो तो पुण्ड्राधिपति और ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो सार्वभौम राजाओं का नाश होता है।

यदि केतु से धूपित या स्पृष्ट मूल नक्षत्र हो तो आन्ध्र और मद्र देश के अधिपति, पूर्वाषाढ़ा हो तो काशी के अधिपति और उत्तराषाढ़ा हो तो यौधेयक, अर्जुनायन, शिवि तथा चेदि देश के नरेशों का नाश होता है।

यदि केतु से धूपित श्रवण हो तो केकय देश के स्वामी, धनिष्ठा हो तो पञ्जाब के स्वामी, शतभिषा हो तो सिंहलदेश के स्वामी, पूर्वभाद्रपद हो तो वङ्गदेश के स्वामी, उत्तरभाद्रपद हो तो नैमिषारण्य के स्वामी और रेवती हो तो किरातों के स्वामी का नाश करता है।

मृदुनक्षत्राभ्युदिताशुभकेतुफलमाहाथर्वमुनिः

मृदुध्रुवोग्रक्षिप्रेषु साधारणचरेषु च।
दारुणेषु च ऋक्षेषु विद्यात् तत्सदृशं फलम्॥

यथादेशं यथावर्णं यथावर्गपरिग्रहम्।
सर्व एवोदिता हन्युः सर्व एवाशुभा ग्रहाः॥

मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, उग्रसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, साधारणसंज्ञक, चरसंज्ञक और दारुणसंज्ञक नक्षत्रों में केतुओं का उदयास्तादि होने पर नामानुसार अशुभ फल जानना चाहिये।

सभी अशुभ केतु उदयकालिक देश, वर्ण और वर्ग-परिग्रह के अनुसार उन-उन देशवासियों, उन-उन वर्णों के लोगों और वर्ग-परिग्रहों का नाश करते हैं।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

धूमकेतुर्महाघोरः पुष्यमाक्रम्य तारकम्।
सेनयोरशिवं घोरं ज्येष्ठामाक्रम्य तिष्ठति॥

महाभारत-युद्ध के समय कौरव और पाण्डवों की सेनाओं के नाश के लिए पूर्वनिमित्त (उत्पात) के रूप में धूमकेतु पुष्य और ज्येष्ठा नक्षत्रों में विचरण करके आकाश में स्थित दिखाई दिया। इससे दोनों सेनाओं का घोर अकल्याण हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरिवंशे कंसवधनिमित्तम्

केतुना धूमकेतोस्तु नक्षत्राणि त्रयोदश ।
भरण्यादीनि भिन्नानि नानुयान्ति निशाकरम् ॥

कंसवध के समय भरणी से चित्रा तक तेरह नक्षत्र उत्पातविशेष धूमकेतु के केतु द्वारा (पुच्छ से) वेधित हुए और चन्द्रमा ने अपना फल नहीं दिया । अर्थात् जब केतु से नक्षत्र भेदित होते हैं तब केतुभेद का फल ही होता है; चन्द्रमा का फल नहीं होता है ।

वराहसंहितायाम्

उदयति सततं यदा शिखी चरति भचक्रमशेषमेव वा ।
अनुभवति पुराकृतं तदा फलमशुभं सचराचरं जगत् ॥

जब केतु हमेशा दिखाई दे या सम्पूर्ण नक्षत्रमण्डल में विचरण करे, उस समय संसार के स्थावर और जङ्गम सभी प्राणी पूर्वार्जित अशुभ फलों का अनुभव (भोग) करते हैं ।

गार्गीये

अथ यत्रोदितः केतुः सोमं समुपधूपयेत् ।
तदा सर्वं शोषमेति भौमं स्थावरजङ्गमम् ॥

समुद्राश्च क्षयं यान्ति सर्वा नद्यः सरांसि च ।
हैमवत्यो विशुष्यन्ति नद्योऽन्यासां तु का कथा ॥

नखकेशवहो वायुः कपालशकलाकुलः ।
नद्यश्चासृक्प्रवाहिन्यः सोमे समुपधूपिते ॥

अथ यत्रोदितः केतुर्लोहिताङ्गं प्रधूपयेत् ।
तदा प्रायः प्रदह्यन्ते ग्रामाणि नगराणि च ॥

रक्तवर्णाश्च पशवस्तथैव मृगपक्षिणः ।
रक्तपुष्पफला वृक्षाः सर्वे चाग्न्युपजीविनः ॥

हिरण्यं रजतं लोहं ताम्रसीसकमेव च ।
मणिरत्नं तथा वज्रं सर्वमेवोपहन्यते ॥

हिरण्यकारा कर्मकारास्ताम्रकांस्यादिकारकाः ।
प्राप्नुवन्ति वधं घोरं लोहिताङ्गे प्रधूपिते ॥

अथ यत्रोदितः केतुर्बुधं समुपधूपयेत् ।
तदा प्रजानां ये श्रेष्ठास्तेषां विन्द्यान्महद्भयम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पौराश्चात्र विनश्यन्ति वणिक्पथोपजीविनः ।
म्रियन्ते राजपुत्राश्च राजकन्यास्तथैव च ॥

प्राज्ञा मेधाविनः शूराः कुमाराश्च विशेषतः ।
गर्भाश्चात्र विनश्यन्ति बुधे समुपधूपिते ॥

अथ त्रयोदितः केतुर्गुरुं समुपधूपयेत् ।
तत्र विद्याद्विशेषेण ब्राह्मणानामुपद्रवम् ॥

प्राज्ञा मेधाविनश्चैव तथैवाश्रमवासिनः ।
वाचा ये चोपजीवन्ति श्रेष्ठा जनपदाश्रये ॥

मद्राः कैकेयशाल्वाश्च नराः काशीनरास्तथा ।
कोशलाः कुरुपाञ्चाला मत्स्याश्च सह चेदिभिः ॥

एतद्देशमनुष्याश्च राजानश्च तदाश्रयाः ।
सर्व एते विनश्यन्ति गुरौ समुपधूपिते ॥

यदा तु भार्गवं प्राप्य धूमकेतुः प्रधूपयेत् ।
तदा ससैन्या वध्यन्ते यात्रोद्युक्ता नराधिपाः ॥

यात्रागताश्च ये सार्था वसुमन्तश्च ये जनाः ।
क्षत्रिया योद्धमुख्याश्च ख्यातविद्याश्च ये जनाः ॥

महाविषाश्च ये नागास्तथाऽन्ये ये च जन्तवः ।
तथा वा वारणः सर्वे भयमृच्छन्ति दारुणम् ॥

अथ यत्रोदितः केतुर्धूपयेत्तु शनैश्चरम् ।
तदा म्लेच्छगणाः सर्वे भयमृच्छन्ति दारुणम् ॥

कृष्णवर्णाश्च पशवस्तथैव मृगपक्षिणः ।
कृष्णपुष्पफला वृक्षा वराहा महिषास्तथा ॥

गृध्राः केकाः सुपर्णाश्च कपोताः शूकचिल्लकाः ।
सर्व एते विनश्यन्ति मित्रपुत्रे प्रधूपिते ॥

यदा प्रधूपयेत् केतुः सप्तर्षीन् ध्रुवमेव च ।
तदा लोकाः क्षयं यान्ति सलिलं चापि शुष्यति ॥

यदि उदित होकर केतु चन्द्रमा को धूपित करे तो पृथ्वी पर स्थित सभी चराचर सूख जाते हैं अर्थात् जलविहीन हो जाते हैं। सभी समुद्र, नदियाँ और सरोवर सूख जाते हैं। हिमालय से निकलने वाली नदियाँ भी सूख जाती हैं तो अन्य नदियों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्या कहना है? हवा के साथ नख और केश उड़ते हैं, सर्वत्र मुण्डमय हो जाता है तथा चन्द्रमा के धूपित होने पर नदियाँ रक्त बहाने वाली हो जाती है।

यदि केतु उदित होकर मङ्गल को धूपित करे तो प्रायः सभी गाँव एवं नगर आग से जलते हैं; रक्त वर्ण वाले पशु, मृग, पक्षी, रक्त वर्ण के फूल और फल वाले वृक्ष, आग से आजीविका चलाने वाले सभी लोग, सुवर्ण, चाँदी, लोहा, ताँबा, सीसा, मणि, रत्न तथा वज्र आदि सभी जलते हैं अर्थात् सबों का क्षय होता है। सोनार, बढ़ई आदि कर्मकार, ताम्रकार, काँस्यकार आदि सभी का मङ्गल के केतु से धूपित होने पर घोर वध होता है।

यदि केतु उदित होकर बुध को धूपित करता है तो प्रजाओं में श्रेष्ठ व्यक्तियों को महान् भय होता है। पुरवासी और व्यापारियों का विनाश होता है, राजपुत्र और राजकन्याओं की मृत्यु होती है। विद्वान्, मेधावी, शूर, कुमार और गर्भो का विशेष रूप से बुध के धूपित होने पर विनाश होता है।

यदि केतु उदित होकर बृहस्पति को धूपित करता है तो विशेष रूप से ब्राह्मणों को उपद्रव होता है। विद्वान्, बुद्धिमान्, आश्रमवासी, वाणी से आजीविका चलाने वाले (कथावाचक आदि), जनपदों के आश्रय में रहने वाले श्रेष्ठ (मुखिया) व्यक्ति, मद्र, केकय, शाल्व, काशी, कोसल, कुरु, पञ्जाब, मत्स्य और चेदि देशों में रहने वाले मनुष्य और राजा तथा राजा के आश्रय में रहने वाले मनुष्य— इन सबों का गुरु के धूपित होने पर विनाश होता है।

जब शुक्र धूमकेतु से धूपित होता है तब युद्ध के लिए तैयार राजाओं का सेना-सहित वध होता है। धन के साथ यात्रा करने वाले, धनी लोग, क्षत्रिय, प्रमुख योद्धा, ख्यात विद्वान् लोग, महाविष वाले नाग (वासुकी आदि) और अन्य जन्तु तथा श्रेष्ठ हाथी— इन सबों को शुक्र के धूपित होने पर दारुण भय होता है।

जब केतु शनैश्चर को धूपित करता है तब म्लेच्छगणों को दारुण भय होता है। कृष्ण वर्ण वाले पशु, मृग, पक्षी; कृष्ण वर्ण के पुष्प एवं फल वाले वृक्ष, सूअर, महिष, गिद्ध, केक, सुपर्ण, कपोत, तोता, चिह्लिका— इन सबों का शनैश्चर के धूपित होने पर नाश होता है।

जब केतु सप्तर्षियों और ध्रुव को धूपित करता है तब लोकों का नाश होता है और पानी सूख जाता है।

वराहसंहितायाम्

मुनीनभिजितं ध्रुवं मघवतश्च भं संस्पृशन्।
शिखी धनविनाशकृत् कुशलकर्महा शोकदः॥

भुजङ्गमथ स्पृशेद्भवति वृष्टिनाशो ध्रुवम्।
क्षयं व्रजति विद्रुतो जनपदश्च व्यालाकुलः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि केतु सप्तर्षिमण्डल, अभिजित् नक्षत्र, ध्रुवतारा या ज्येष्ठा नक्षत्र को स्पर्श करे तो मेघों का नाश, कुशल का नाश (अमङ्गल), कर्मों की हानि और शोक देने वाला होता है। यदि आश्लेषा नक्षत्र को स्पर्श करे तो निश्चय ही वृष्टि का विनाश और सर्पों के भय से पीड़ित होकर जनपद के लोग वहाँ से चलकर नष्ट हो जाते है।

भार्गवीये

यस्मिन् देशे शिरस्तस्य स देशः पीड्यते ध्रुवम्।
मध्ये तु मध्यपीडा स्याद्यतः पुच्छं ततो जयः॥

उदित केतु का मस्तक (मुख) जिस देश में होता है, वह देश निश्चय हीं पीड़ित होता है। केतु का मध्यभाग जिस देश में रहता है, उस देश में मध्यम पीड़ा होती है और जिस देश में केतु की पुच्छ होती है, उसकी जय होती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

यस्यां दिशि केतोः शिखा दीप्ता भवति तद्देशं नृपतिरभियुञ्जीत।

जिस दिशा में केतु की शिखा दीप्त (प्रकाशित) हो, उस देश (दिशा) की ओर राजा को प्रस्थान करना चाहिये।

पराशरस्तु

यस्यां दिशि समुत्तिष्ठेत्तां दिशं नाभियोजयेत्।
यतः शिखा यतो धूमस्ततो यायान्नराधिपः॥
प्रतिलोमं तु यः केतोर्जयार्थी याति पार्थिवः।
सामात्यवाहनबलः स नाशमुपगच्छति॥

जिस दिशा में केतु का उदय (मुखभाग) हो, उस दिशा की ओर राजा को यात्रा नहीं करनी चाहिये। जिस दिशा की ओर केतु की शिखा हो और जिस दिशा में धूम दिखाई दे, उस दिशा की ओर राजा को जाना चाहिये। इसके विपरीत गमन करने पर जयार्थी राजा का मन्त्री, वाहन और सेनाओं के साथ नाश होता है।

गार्गीये

यतो धूमस्ततो यात्रा यतो ज्योतिस्ततो जयः।
यतः स्थानं ततः पीडां केतूनामुदये भवेत्॥
प्रतिलोमं तु यः केतुं कृत्वा सेनां प्रयोजयेत्।
जायते तस्य सेनाया भयं घोरं पराजयः॥
यां दिशं धूपयेत् केतुर्न तत्राभिमुखो व्रजेत्।
यस्यां दिशि प्रतिष्ठेत हन्ति तां स विशेषतः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केतुओं के उदय होने पर जिस दिशा में धूआँ हो, वहाँ यात्रा; जिस दिशा में ज्योति (प्रकाश) दिखाई दे, वहाँ जय और जहाँ केतु स्थित हो, वहाँ पीड़ा होती है। इसके विपरीत यदि राजा सेना का प्रयोग करे तो उसके सेना की पराजय और दारुण भय होता है। केतु जिस दिशा को धूपित करे, उस ओर राजा को गमन नहीं करना चाहिये। केतु जिस दिशा में स्थित रहता है, उस दिशा में स्थित देशों का विशेष रूप से नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

नम्राः यतः शिखिशिखाऽभिसृतो यतो वा
ऋक्षं च यत् स्पृशति तत्कथितांश्च देशान्।
दिव्यप्रभावनिहतान् स यथा गरुत्मान्
भुङ्क्ते महीं नरपतिः परभोगिभोगान्॥

केतु की शिखा जिस दिशा में नत हो, जिस दिशा में फैलती हो या जिस नक्षत्र को स्पर्श करती हो, वहाँ पर स्थित देशों में अन्य भोगी जनों को अपने दिव्य प्रभावों (अत्यधिक पराक्रमों) से नाश करके उसी तरह राजा लोग भोगते हैं, जैसे गरुड़ दिव्य प्रभाव से नष्ट उत्कृष्ट सर्पों के अङ्गों का भोग करता है।

वटकणिकायाम्

उदयास्तमनाधूमनसंयोगाकारवर्णदिक्पातैः ।
फलनिर्देशो दिवसैर्मासान्मासैश्च वर्षाणि॥

केतु के उदय, अस्तमन, धूमन, संयोग (नक्षत्रों से या ग्रहों से), आकार, वर्ण (श्वेत, रक्तादि), दिशा, पतन आदि के द्वारा फल का निर्देश करना चाहिये। दिन से मास और मास से वर्ष अर्थात् जितने दिनों तक केतु उक्त प्रकार से दृश्य हो, उतने मासों तक तथा जितने मासों तक दृश्य हो, उतने वर्षों तक फल होता है।

बृहत्संहितायाम्

यावन्त्यहानि दृश्यो मासैस्तावद्भिरेव फलपाकः।
मासैरब्दानि वदेत् प्रथमात् पक्षत्रयात् परतः॥

केतु जितने दिनों तक दृष्टिगोचर हो, उतने मासों तक तथा जितने मासों तक दिखाई दे, उतने वर्षों तक फल देता है; परन्तु यह फल अस्त होने के ४५ दिनों के बाद से ही प्रारम्भ होता है।

गर्गश्च

यावन्त्यहानि दृश्येत तावन्मासान् फलं वदेत्।
यावन्मासांस्तु दृश्येत तावतोऽब्दांस्तु वैकृतम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिपक्षात् परतः कर्म पच्यतेऽस्य शुभाशुभम् ।
सद्यः समुदिते केतौ फलं नेहादिशेद्बुधः ॥

एवं त्रिपक्षात् परतः पापसंज्ञे विनिर्दिशेत् ।
शोभनेऽपि तथा केतौ फलं दर्शनतो वदेत् ॥
यस्य यस्य विशेषेण पाककालो न दर्शितः ॥

जितने दिनों तक केतु दिखाई दे, उतने मासों तक तथा जितने मासों तक दिखाई दे, उतने वर्षों तक अशुभ फल होता है। यह शुभाशुभ फल अस्त होने के तीन पक्ष (४५दिन) के बाद होता है। उदित होते ही केतु का फल विद्वान् को नहीं कहना चाहिये। इस प्रकार अस्त होने के तीन पक्ष (४५ दिन) के बाद उस अशुभ या शुभ केतु का फलपाक कहना चाहिये। जिसका फलपाक-काल विशेष रूप से नहीं कहा गया है अर्थात् जिसका फलपाक काल बताया गया है, उसका उसी समय से फल समझना चाहिये।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिकेषु केतूत्पातेषु केतुग्रहपूजापूर्विका ग्रहधूपने वा धूपितग्रहपूजापूर्विका च प्रभूतकनकान्न-गोमहीदानादिका सामान्यशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघ-वमवगम्य कर्त्तव्या – इति ।

यहाँ केत्वद्भुतावर्त्त में अनुक्त विशेष शान्ति वाले केतूत्पातों की शान्ति के लिए केतुग्रह की पूजा अथवा केतु से धूपित ग्रह होने पर धूपित ग्रह की पूजा करके प्रचुर सुवर्ण, अन्न, गाय, पृथ्वी आदि का दान औत्पातिक फल की गुरुता और लाघवता को जानकर तदनुसार करना चाहिये। इसे सामान्य शान्ति कहते हैं।

अथ विहितविशेषशान्तिजाः केतूत्पाताः । तत्र नारदः

अकस्माद्दृश्यते केतुरुदयेऽस्तमये यदा ।
हन्त्यस्यान्तःपुरं राज्ञो ज्वरपित्तोद्भवो भवेत् ॥

इन्द्रनीलमणेश्चैव हेमरत्नसमन्वितम् ।
केतुं कृत्वा प्रदातव्यो ब्राह्मणाय तपस्विने ॥

यदि केतु उदय या अस्त के समय अकस्मात् दृश्य हो तो राजा के अन्तःपुर का नाश करता है और लोगों में पित्त से उत्पन्न ज्वर होता है। इसकी शान्ति के लिए सुवर्ण और मरकत आदि रत्नों से युक्त इन्द्रनीलमणि का केतु बनाकर तपस्वी ब्राह्मणों को दान करना चाहिये।

मयूरचित्रेऽप्येतद्वचनमधिकृतम् । शान्तिस्तु

दधिमधुघृताक्तानां पुष्पाणामयुतं ततः ।
जुहुयादिन्द्रनीलस्य केतुं दद्याद्द्विजातये ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूषितं हेमरत्नाद्यैस्ततः सम्पद्यते शुभम् ।
अथवा वैष्णवी शान्तिश्चतुष्कर्म तथैव च ॥

विष्णोरराटमन्त्रेण जुहुयाद्घृतसम्प्लुताः ।
अष्टोत्तरसहस्राणि द्वादशाथ प्रयत्नतः ॥

समिधोऽश्वत्थवृक्षस्य ब्राह्मणांस्तर्पयेत्ततः ।
पूर्वोक्तेन तु मन्त्रेण दद्याद्वत्सवृषादिकम् ॥

कुसुम्भस्याथ वा होमः केतुं कृण्वेति मन्त्रतः ।
इन्द्रनीलं सुवर्णं च दातव्यं च द्विजन्मने ॥

दही, मधु और घृत से आर्द्र करके दस हजार पुष्पों का हवन करना चाहिये और सुवर्ण तथा रत्नों से भूषित इन्द्रनील मणि का केतु बनाकर ब्राह्मणों को दान करना चाहिये— ऐसा करने से शुभ होता है। अथवा केतूत्पात के शमन के लिए वैष्णवी तथा [१]चतुष्कर्म शान्ति करनी चाहिये। 'विष्णोरराट' इस मन्त्र से १२ ब्राह्मणों के द्वारा १००८ पीपल की समिधा को घृत से आर्द्र करके हवन कराकर ब्राह्मणों को दानादि से सन्तुष्ट करना चाहिये। अथवा पूर्वोक्त 'विष्णोरराट' मन्त्र से या 'केतुं कृण्वन्' इस मन्त्र से कुसुम्भपुष्प का हवन करके वत्स, वृषभ, इन्द्रनीलमणि और सुवर्ण आदि ब्राह्मणों को दान करना चाहिये।

भार्गवीये

उत्थानं चैव केतूनां विनाशायेति हि स्मृतम् ।
तस्मादाथर्वणैर्मन्त्रैः शमनं कारयेद् बुधः ॥

आराधिताः शमं यान्ति ते ह्युत्पाता न संशयः ।
होमैर्जपैश्च विविधैर्दानैश्च बहुरूपकैः ॥

तस्य यत्र शिरोदेशस्तत उत्थाय वा व्रजेत् ।
धनं वा सर्वमुत्सृज्य मृत्योर्मुच्येत वा न वा ॥

दत्वा च पृथ्वीं सर्वां राजा शान्तिं नियच्छति ।

केतुओं का उदय विनाश के लिए ही होता है, ऐसा कहा गया है। इसलिए विद्वान् लोगों को उसके शमन के लिए आथर्वण मन्त्र से हवन आदि शान्ति करनी चाहिये। हवन, जप, विविध रत्न, सुवर्ण आदि का दान और अनेक प्रकार से केतु की आराधना करने से निश्चय ही उत्पातों का शमन हो जाता है। अथवा केतु के शिरोभाग से उठकर अन्य देश को चला जाय, अथवा अपने सभी प्रकार के धनों और सारी पृथ्वी को उत्सर्ग कर दान करने से राजा शान्ति का अनुभव करते हैं।

---

१. **चतुष्कर्म**— हवन, जप, दान और दक्षिणादान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ वर्णाद्भुते

केतूत्थिते तु सर्वस्मिन् भये तु समुपस्थिते।
महाशान्तिं प्रकुर्वन्ति विविधां भूरिदक्षिणाम्॥
उपयाति शमं सर्वं प्रजानां च सुखं भवेत्।
राजानो मुदितास्तत्र पालयन्ति वसुन्धराम्॥

भय देने वाले सभी प्रकार के केतुओं के उदित होने पर राजाओं के द्वारा महाशान्ति करके, अनेक प्रकार की प्रचुर दक्षिणा ब्राह्मणों को देने से सभी उत्पातों का शमन हो जाता है, प्रजा सुखी होती है और प्रसन्न होकर राजा लोग पृथ्वी का पालन करते हैं।

पराशरः

यस्याभिषेकनक्षत्रं जन्मर्क्षं कर्मभं तथा।
देशर्क्षं पीडयेत् केतुः सशान्तिपरमो भवेत्॥

जिस राजा के राज्याभिषेक-नक्षत्र, जन्मनक्षत्र, कर्मनक्षत्र या देश का नक्षत्र केतु से पीड़ित हो, उस राजा को केतुग्रह की पूजा के साथ-साथ सामान्य शान्ति भी करनी चाहिये।

विशेषः– केतुपीडितेष्वभिषेकादिनक्षत्रेषु केतुग्रहपूर्विका नाडीनक्षत्राद्भुतविहिता सामान्यशान्तिः कर्त्तव्या। तां च नाडीनक्षत्राद्भुतावर्त्ते लिखिष्यामः।

वृद्धगर्गः

एतत्ते केतुचक्रं तु केतुसम्भव एव च।
लक्षणं दर्शनं चैव यथावत् परिकीर्त्तितम्॥
एतच्छिष्याय दातव्यं ब्राह्मणाय महात्मने।
नित्यशुश्रूषमाणाय ब्रह्मचर्यपराय च॥
निर्गुणायापि पुत्राय न दद्यात् केतुसम्भवम्।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे केत्वद्भुतावर्त्तः

यह केतुचक्र तो केतुओं के उदय से सम्बन्धित हैं। इनका लक्षण, दर्शन आदि यथावत् शास्त्रानुसार कहा गया है। केतूदय से सम्बन्धित ज्ञान ब्राह्मण, महात्मा, नित्य सेवारत और ब्रह्मचर्य को धारण करने वाले शिष्य को देना चाहिये; परन्तु यदि पुत्र भी गुणहीन हो तो उसे नहीं देना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ ध्रुवाद्यद्भुतावर्त्तः

तत्रागस्त्योदयास्तमयमाह ब्रह्मगुप्ताचार्यः

राशिचतुष्केण यदा स्वर्क्षभयुतेन भवति तुल्योऽर्कः।
उदयोऽगस्त्यस्य मुनेश्चक्रार्धाच्छोधितेऽस्तमयः ॥[1]

सूर्य जब चार राशियों का भोग कर अपनी राशि (सिंह राशि) में विचरण करता है, तब अगस्त्य मुनि का उदय होता है। अगस्त्योदय के समय सूर्य भचक्र में जितने अंश पर स्थित हो, उसे भार्ध (१८० अंश) में से घटाने पर शेष अंशतुल्य दिनों में अगस्त्य का अस्त होता है।

विशेष– बृहत्संहिता और समाससंहिता में वराहमिहिर के अनुसार सिंह राशि के २३ वें अंश पर स्पष्ट सूर्य के जाने पर अवन्ती, रोमकपत्तन आदि नगर में अगस्त्य का दर्शन होता है।

अथ शुभसूचकागस्त्यलक्षणं वराहसंहितायाम्

शातकुम्भसदृशं स्फटिकाभं तर्पयन्निव महीं किरणाद्यैः।
दृश्यते यदि ततः प्रचुरान्ना भूर्भवत्यभयरोगजनाढ्या ॥

सुवर्ण, रजत या स्फटिक के समान अपनी किरणों से पृथ्वी को तृप्त करते हुए अगस्त्य मुनि दिखाई दें तो पृथ्वी अधिक अन्न, निर्भीक और रोगरहित मनुष्यों से युत होती है।

अथाशुभसूचकागस्त्यलक्षणमाह पराशरः

संवृतः पुररोधाय स्पन्दनो भयाय – इति।

विशेषः– संवृतः स्वल्पः।

यदि अल्प मूर्त्ति वाले अगस्त्य मुनि का दर्शन हो तो पुरवासियों का नाश एवं काँपता हुआ दिखाई दे तो भय करता है।

अथ वर्णफलम्। तत्र वराहसंहितायाम्

रोगान् करोति कपिलः परुषस्त्ववृष्टिं
धूम्रो गवामशुभकृत् स्फुरणो भयाय।

---

१. ब्रह्मस्फुटसिद्धान्ते नोपलभ्यतेऽयं श्लोकः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माञ्जिष्ठरागसदृशः क्षुधमाहवं च
कुर्यादणुश्च पुररोधमगस्त्यनामा ॥

यदि अगस्त्य कपिल वर्ण का हो तो रोग, रूक्ष हो तो अवृष्टि, धूम्र वर्ण हो तो गौओं के लिए अनिष्ट फल, कम्पमान हो तो भय, मजिठे के समान लोहित वर्ण हो तो दुर्भिक्ष और युद्ध तथा सूक्ष्म मूर्त्ति वाला हो तो नगर का अवरोध करता है।

गर्गः

शङ्खकुन्देन्दुगोक्षीरमृणालरजतप्रभः ।
दृश्यते यद्यगस्त्यः स्यात् सुभिक्षक्षेमकारकः ॥

यदि अगस्त्य शङ्ख, कुमुदपुष्प, चन्द्रमा, मृणाल या चाँदी के समान श्वेत वर्ण का दिखाई दे तो सुभिक्ष और कल्याण करता है।

पराशरः

सुस्निग्धवर्णः श्वेतश्च शातकुम्भसमप्रभः ।
मुनिः क्षेमसुभिक्षाय प्रजानामभयाय च ॥

सुन्दर निर्मल वर्ण, श्वेत वर्ण, सुवर्ण-रजत के समान वर्ण वाला अगस्त्य मुनि क्षेम, सुभिक्ष और प्रजाओं को अभय प्रदान करता है।

तथा च

नीलोऽतिवर्षाय । अग्निपरुषरूक्षाभो रोगाय ।
कपिलो वृष्टिनिग्रहाय । धूमाभो गवामभावाय ।
माञ्जिष्ठः क्षुच्छस्त्रभयाय ।

अगस्त्य मुनि नील वर्ण वाला अतिवृष्टि, अग्नि के समान, परुष या रूक्ष वर्ण वाला रोग, कपिल वर्ण वाला वृष्टिनिग्रह (अवृष्टि), धूम्र वर्ण वाला गौओं का अभाव और माञ्जिष्ठ (लोहित) वर्ण वाला दुर्भिक्ष तथा शस्त्रभय (युद्ध) करता है।

गर्गस्तु

वैश्वानरार्चिःप्रतिमो मांसशोणितकर्दमैः ।
रणैर्भयैश्च विविधैः किञ्चिच्छेषायते प्रजाः ॥

अग्निशिखा के समान वर्ण वाला अगस्त मांस और शोणित की धारा बहाने वाले युद्ध और अनेक प्रकार के भय से प्रजा का नाश करके कुछ प्रजा को ही अवशेष रहने देता है।

अथ सोत्पातागस्त्यफलं वराहसंहितायाम्

उल्कया विनिहतः शिखिना वा क्षुद्भयं मरकमेव विधत्ते ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि अगस्त्य उल्का या केतु से आहत हो तो दुर्भिक्ष और मरी करता है।

पराशरश्च

हन्यादुल्का यदाऽगस्त्यं केतुर्वाऽप्युपधूपयेत्।
दुर्भिक्षं जनमारश्च तदा जगति जायते॥

जब अगस्त्य उल्का से आहत हो या केतु से धूपित हो तो संसार में दुर्भिक्ष और जनमरण होता है।

अथ सप्तर्षीणामद्भुतानि

भुजवसुदश१०८२मितशाके श्रीमद्वल्लालसेनराज्यादौ।
वर्षैकषष्टि६१भोगो मुनिभिर्विहितो विशाखायाम्॥

श्रीमद्वल्लालसेन देव के राज्याभिषेक के समय शकाब्द १०८२ को विशाख नक्षत्र में विचरण करते हुए सप्तर्षि ६१ वर्ष भोग कर चुके थे।

वराहसंहितायाम्

एकैकस्मिन्नृक्षे शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम्।
प्रागुत्तरतश्चैते सदोदयन्ते ससाध्वीकाः॥

पूर्वे भागे भगवान् मरीचिरपरे स्थितो वसिष्ठोऽस्मात्।
तस्याङ्गिरास्ततोऽत्रिस्तस्यासन्नः पुलस्त्यश्च॥

पुलहः क्रतुरिति भगवानासन्नानुक्रमेण पूर्वाद्याः।
तत्र वसिष्ठं मुनिवरमुपाश्रिताऽरुन्धती साध्वी॥

एक-एक नक्षत्र में सौ-सौ वर्ष सप्तर्षि रहते हैं। पूर्वोत्तर (ईशान कोण) दिशा में हमेशा साध्वी अरुन्धती-सहित सप्तर्षि उदित होते हैं। 'प्रागुदयतोऽप्यविवरावृजून्नयति तत्र संयुक्ताः।' ऐसा पाठ होने से जिस नक्षत्र का पूरब दिशा में उदय होने पर सप्तर्षिमण्डल स्पष्ट दिखाई दे, उसी नक्षत्र में उनकी स्थिति समझनी चाहिये। ऐसा अर्थ समझना चाहिये। सबसे पूरब भगवान् मरीचि, मरीचि से पश्चिम वशिष्ठ, वशिष्ठ से पश्चिम अङ्गिरा, अङ्गिरा के बाद अत्रि, अत्रि के निकट पुलस्त्य, इनके बाद पुलह, पुलह के बाद क्रतु— इस प्रकार पूरब दिशा से लेकर क्रम से सप्तर्षियों की स्थिति है। इनके मध्य में वशिष्ठ के आश्रय में रहने वाली साध्वी अरुन्धती है।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यवधनिमित्तम्

सप्तर्षीणामुदाराणां समवच्छाद्यते प्रभा।

उक्त समय में रजोवर्षण, उल्कापात आदि से सप्तर्षियों की प्रभा आच्छादित हो गई थी अर्थात् वे मेघ की तरह आच्छादित हो गये थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

उल्कयाऽभिहताः रूक्षाः स्फुरणा रजसा हताः ।
ऋषयः सर्वलोकानां विनाशाय सभूभृताम् ॥

यदि सप्तर्षि उल्का से आहत, रूक्ष वर्ण, कम्पमान और धूलियों से आहत हों तो चराचर सभी लोकों का नाश होता है ।

वराहसंहितायां तु

उल्काशनिधूमाद्यैर्हता विवर्णा विरश्मयो ह्रस्वाः ।
हन्युः स्वं स्वं वर्गं विपुलाः स्निग्धाश्च तद्वृद्ध्यै ॥

उल्का, वज्र या धूम आदि से हत, विवर्ण, ज्योतिरहित या स्वल्प मूर्त्ति वाला सप्तर्षिमण्डल हो तो अपने-अपने वर्ग का नाश करता है तथा विपुल और निर्मल बिम्ब वाला हो तो अपने-अपने वर्ग की वृद्धि करता है ।

गर्गस्तु

उल्कया केतुना वाऽपि धूमेन रजसाऽपि वा ।
हता विवर्णाः स्वल्पा वा किरणैः परिवर्जिताः ॥

स्वं स्वं वर्गं तदा हन्युर्मुनयः सर्व एव ते ।
विपुलाः स्निग्धवर्णाश्च स्ववर्गपरिपोषकाः ॥

उल्का या केतु, धूम या रज (धूलि) से सप्तर्षिमण्डल हत हो, विवर्ण, स्वल्प बिम्ब वाला या रश्मिविहीन हो तो सप्तर्षि अपने-अपने वर्ग का नाश करते हैं तथा वे विपुल और निर्मल वर्ण वाले हों तो अपने वर्ग के परिपोषक (वृद्धि करने वाले) होते हैं ।

एतेषां वर्गानाह पराशरः

देवदानवगन्धर्वाः सिद्धपन्नगराक्षसाः ।
नागा विद्याधराः सर्वे मरीचेः परिकीर्त्तिताः ॥

देवता, दानव, गन्धर्व, सिद्ध, पन्नग, राक्षस, नाग और विधाधर— ये सब मरीचि के वर्ग कहे गये हैं । मरीचि के पीड़ित होने पर इन्हें पीड़ा होती है और स्वस्थ रहने पर इनकी वृद्धि होती है ।

वराहसंहितायां तु

गन्धर्वदेवदानवमन्त्रौषधिसिद्धनागयक्षाणाम् ।
पीडाकरो मरीचिर्ज्ञेयो विद्याधराणाञ्च ॥

विशेषः– उल्काहतपीडाकर इति सम्बन्धः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि मरीचि उल्का आदि से हत (पीड़ित) हों तो गन्धर्व, देव, दानव, मन्त्र, औषधि, सिद्ध, नाग, यक्ष और विद्याधरों को पीड़ित करते हैं तथा निर्मल और विपुल होने पर उनकी वृद्धि करते हैं।

पराशरः

यवनाः पारदाश्चैव काम्बोजा दरदाः शकाः।
वसिष्ठस्य विनिर्दिष्टास्तापसा वनमाश्रिताः॥

यवन, पारद, काम्बोज, दरद, शक, तपस्वी और वनवासी वसिष्ठ के वर्ग हैं। वसिष्ठ के पीड़ित होने से उन्हें पीड़ा और विपुल तथा निर्मल होने पर उनकी वृद्धि होती है।

वराहसंहितायां तु

शकयवनदरदपारदकाम्बोजाँस्तापसान् वनोपेतान्।
हन्ति वसिष्ठाभिहतो विवृद्धिदो रश्मिसम्पन्नः॥
अङ्गिरसो ज्ञानयुता धीमन्तो ब्राह्मणाश्च निर्दिष्टाः।

यदि वसिष्ठ हत हों तो शक, यवन, दरद, पारद, काम्बोज, तपस्वी और वनवासियों का नाश करते हैं तथा रश्मियों से सम्पन्न हों तो उनकी वृद्धि करते हैं। अङ्गिरा के पीड़ित होने पर ज्ञानी, बुद्धिमान् और ब्राह्मणों को पीड़ा होती है तथा विपुल और निर्मल होने पर उनकी वृद्धि होती है।

पराशरस्तु

धीमन्तो ब्राह्मणा ये च ज्ञानविज्ञानपारगाः।
रूपलावण्यसंयुक्ता मुनेरङ्गिरसः स्मृताः॥

बुद्धिमान्, ब्राह्मण, ज्ञान-विज्ञान में निपुण और रूप-लावण्य से सम्पन्न व्यक्ति अङ्गिरा मुनि के वर्ग हैं। अङ्गिरा के पीड़ित होने पर उन्हें पीड़ा और विपुल तथा निर्मल होने पर उनकी वृद्धि होती है।

वराहसंहितयोस्तु[1]

अत्रेः कान्तारभवा जलजान्यम्भोनिधिः सरितः।

यदि अत्रि पीड़ित हों तो वन और जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य, समुद्र और नदियों को पीड़ित करते हैं तथा विपुल और निर्मल होने पर उनकी वृद्धि करते हैं। ऐसा वराहमिहिर ने बृहत्संहिता और वटकणिका में कहा है।

---

१. वटकणिका-बृहत्संहितयोरिति ज्ञेयम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरस्तु

कान्तारजास्तथाऽम्भोजान्यत्रेर्नद्यः ससागराः ।

वन और जल में उत्पन्न द्रव्य, नदी और समुद्र अत्रि मुनि के वर्ग में हैं।

वराहसंहितयोस्तु

रक्षःपिशाचदानवदैत्यभुजङ्गाः स्मृताः पुलस्त्यस्य ।

यदि पुलस्त्य पीड़ित हों तो उनके वर्ग राक्षस, पिशाच, दानव, दैत्य और भुजङ्ग पीड़ित होते हैं तथा विपुल और स्निग्ध हों तो उनकी वृद्धि करते हैं।

पराशरश्च

पिशाचा दानवा दैत्या भुजङ्गा राक्षसास्तथा ।
पुलस्त्यस्य विनिर्दिष्टाः पुष्पमूलफलं च यत् ॥
तत्सर्वं पुलहस्योक्तं यज्ञा यज्ञकृतश्च ये ।
क्रतोरेव विनिर्दिष्टा वेदज्ञा ब्राह्मणास्तथा ॥

विशेषः– अत्र पुष्पमूलफलं पुलहस्य यज्ञादयः क्रतोरिति सम्बन्धः ।

पिशाच, दानव, दैत्य, सर्प, राक्षस और सभी प्रकार के पुष्प, मूल एवं फल पुलह के वर्ग कहे गये हैं। यज्ञ, यज्ञ करने वाले, वेद को जानने वाले और ब्राह्मण क्रतु के वर्ग कहे गये हैं। पुलह और क्रतु के पीड़ित होने पर उनके वर्ग पीड़ित होते हैं तथा विपुल और स्निग्ध होने पर उनकी वृद्धि होती है।

तथा च वराहसंहितायाम्

पुलहस्य फलमूलं क्रतोस्तु यज्ञाः सुयज्ञकृतः ।

यदि पुलह पीड़ित हों तो फल और मूल को पीड़ित करते हैं तथा स्निग्ध और विपुल हों तो उनकी वृद्धि करते हैं। यदि क्रतु पीड़ित हों तो यज्ञ और यज्ञकर्त्ताओं को पीड़ित करते हैं तथा विपुल और स्निग्ध हों तो उनकी वृद्धि करते हैं।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

या चैषा विश्रुता राजँस्त्रैलोक्ये साधुसम्मता ।
अरुन्धती तथाऽप्येष वसिष्ठः पृष्ठतः कृतः ॥

हे राजन्! तीनों लोकों में जो अरुन्धती सती-साध्वी के नाम से (पति की अनुगामिनी के रूप में) विख्यात है, वह भी अपने पति वसिष्ठ को पीछे करके उदित देखी गयी। ऐसा उत्पात कौरव और पाण्डव की सेनाओं के नाश के निमित्त देखा गया।

Nepal Sanskrit University, Bālmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अगस्त्यसप्तर्षिध्रुवाणामशुभलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे

आगस्त्योऽरुणो रूक्षः श्यावो रेणूल्कयोपहतः शिखिशिखाध्वस्तो भयाय। एवंविधाः सप्तर्षयश्च। एवंविधे ध्रुवे त्रैलोक्यमपि पीड्यते।

लोहित, रूक्ष, श्याववर्ण, रेणु और उल्का से हत एवं केतु की शिखा से ध्वस्त (धूपित) अगस्त्य भय देने वाले होते हैं। इसी प्रकार के सप्तर्षि भी भय देते हैं और इसी प्रकार के ध्रुव भी तीनों लोकों को पीड़ित करते हैं।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

ध्रुवः प्रज्वलितो घोरमपसव्यं प्रवर्त्तते।

महाभारत-युद्ध के समय कौरव और पाण्डवों की सेनाओं के क्षय के निमित्त ध्रुव प्रज्वलित होकर भयङ्कर अपसव्य करते हुए देखे गये।

अथर्वमुनिः

यवक्रीतोऽथ रैभ्यश्च नारदः पर्वतस्तथा।
कण्वश्च रैभ्यपुत्राश्च अर्वावसुपरावसू॥

सप्तैते स्थावरा ज्ञेयाः सह सूर्येण सर्पिणः।
स्थावराणां नरेन्द्राणां प्राच्यानां पक्षमाश्रिताः॥

स्वस्त्यात्रेयो मृगव्याधो रुरुधः प्रचुरस्तथा।
प्रभासश्चन्द्रहासश्च तथाऽगस्त्यः प्रतापवान्॥

दृढव्रतस्त्रिशङ्कुश्च अजो वैश्वानरो मृगः।
अरुणः श्वदतश्चैव याम्यायां स्थावराः स्मृताः॥

गौतमोऽत्रिर्वसिष्ठश्च विश्वामित्रश्च काश्यपः।
ऋचीकपुत्रस्तु तथा भारद्वाजश्च वीर्यवान्॥

एवे सप्त महात्मान उदीच्यां स्थावराः स्मृताः।
शिशुमारेण सहिता ध्रुवेण च महात्मना॥

पुलस्त्यः पुलहः सोमो भृगुरङ्गिरसा सह।
हाहा हूहूश्च विज्ञेया विष्णोर्हृदयमुत्तमम्॥

एतेषां स्थावराणां तु नियतानीति बुद्धिमान्।
अवस्थानानि सर्वेषां दिक्षुरूपाणि लक्षयेत्॥

प्रभान्वितानि श्वेतानि स्निग्धानि विमलानि च।
अर्चिष्मन्ति प्रसन्नानि तानि कुर्युः प्रजाहितम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निष्प्रभाणि विवर्णानि चेरुर्वीथ्याश्रितानि च।
ह्रस्वाण्यस्नेहयुक्तानि न भवाय भवन्ति हि॥

यत्किञ्चित् स्थावरं लोके तत् प्रसन्नेषु वर्धते।
क्रूरस्थेषु प्रसन्नेषु स्थावरं परिहीयते॥

यवक्रीत, रैभ्य, नारद, पर्वत, कण्व, रैभ्यपुत्र और अर्वावसु-परावसु— ये सात पश्चिम दिशा के स्थावर कहे गये हैं। ये सूर्यास्त के साथ उदित होते हैं, क्योंकि ये सूर्य के साथ ही गमन करते हैं।

पूर्व दिशा के स्थावर (पृथ्वी पर स्थित) नरेन्द्रों के पक्ष में आश्रित, स्वस्ति, आत्रेय, मृगव्याध, रुरुध, प्रचुर, प्रभास और चन्द्रहास— ये सात स्थावर हैं।

प्रतापी अगस्त्य, दृढ़व्रती त्रिशङ्कु, अज, वैश्वानर, मृग, अरुण और श्वदत— ये सात दक्षिण दिशा में दृश्य होने वाले स्थावर कहे गये हैं।

गौतम, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वामित्र, काश्यप, ऋचीकपुत्र और वीर्यवान् भारद्वाज— ये सात महात्मा उत्तर दिशा में दृश्य होने वाले स्थावर कहे गये हैं।

शिशुमार और महात्मा ध्रुव-सहित पुलस्त्य, पुलह, सोम, अङ्गिरासहित भृगु, हाहा, हूहू— ये सभी विष्णु के उत्तम हृदयरूपी स्थावर हैं।

इन सभी स्थावरों के स्थान और दिशा को नियत जानकर, इन सबों के दिशा-रूप अवस्थान से बुद्धिमान् लोगों को लक्षण का ज्ञान करना चाहिये। ये स्थावर यदि प्रभा से युक्त, श्वेत वर्ण वाले, निर्मल, विमल, रश्मिवान और प्रसन्न दिखाई दें तो प्रजाओं के लिए हितकारी होते हैं। यदि ये कान्तिहीन, विवर्ण, वीथ्याश्रित, स्वल्प मूर्त्तिवान और रूक्ष दिखाई दें तो कल्याणकारी नहीं होते हैं।

इनके प्रसन्न होने पर पृथ्वी पर स्थित स्थावरों की वृद्धि होती है और उत्पातों से आहत होकर अप्रसन्न होने पर स्थावरों की हानि होती है।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिष्वगस्त्याद्यद्भुतेषु अगस्त्यादि-पूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्य-शान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

अगस्त्य-सप्तर्षि-ध्रुवादि अद्भुतावर्त्त में उत्पातों की विशेष शान्ति नहीं कही गई है। उनकी शान्ति के लिए अगस्त्यादि की पूजा के साथ प्रचुर सुवर्ण, अन्न, गौ, जमीन आदि का दान, औत्पातिक फल की गुरुता और लाघवता को जानकर तदनुसार करना चाहिये।

विशेषः– अत्रानुक्तफलपाकसमयविशेषणादगस्त्याद्यद्भुतानां संवत्सरेण फलपाको बोद्धव्यः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस अद्भुतावर्त्त में उत्पातों का फलपाक समय अनुक्त (नहीं कहा गया) है, अगस्त्यादि उन अद्भुतों का फलपाक एक संवत्सर (वर्ष) जानना चाहिये।

तथा च पराशरः

तत्रोत्पातफलं दिव्यं पूर्णे वर्षे विपच्यते – इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरेऽगस्त्यसप्तर्षिध्रुवाद्यद्भुतावर्त्तः

इस दिव्य उत्पात का फल एक वर्ष में होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ ग्रहयुद्धाद्यद्भुतावर्त्तः

तत्र गर्गः

छादनं रोधनं चैव रश्मिमर्दस्तथैव च।
अपसव्यं ग्रहाणां च चतुर्धा युद्धमुच्यते ॥

विशेषः– छादनं सकलबिम्बाच्छादनम्। छादने सति भेदनं भवति। रोधनं किञ्चिदपवारणम्। एतदेवोल्लेखनम्।

पञ्च ताराग्रहों (मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि) के छादन (अधः स्थित बिम्ब से ऊर्ध्वस्थित बिम्ब के आच्छादित होने से छादन = भेद), रोधन (एक बिम्ब की परिधि से दूसरे बिम्ब की परिधि का स्पर्श करने पर रोधन = उल्लेख), रश्मिमर्द (आसन्न स्थित दो ग्रहों के परस्पर किरण का संयोग रश्मिमर्द = अंशुमर्दन) और अपसव्य (ठीक दक्षिणोत्तर में स्थित होने से अपसव्य)— ये चार प्रकार के ग्रहयुद्ध कहे जाते हैं।

यदाह काश्यपः

भेदोल्लेखांशुसम्मर्दा अपसव्यस्तथा परः।
ततो योगो भवेदेषामेकांशकसमापनान् ॥

विशेषः– असंयुक्तबिम्बयोरन्योन्यरश्मिसंश्लेषोंऽशुसम्मर्दः सुसन्निहिता-संयुक्तरश्मिमण्डलयोः समदक्षिणोत्तरावस्थिभिरपसव्यम्। एवमेतान्यपसव्यादीनि प्रतिलोमानि सन्निधितारतम्याद्भवन्ति।

ताराग्रहों के एक अंश में रहने पर भेद, उल्लेख, अंशुमर्द और अपसव्य नामक चार प्रकार के युद्ध होते हैं।

पराशरतन्त्रे

अथ भगवन्तमनन्ततपसं पराशरकथान्ते शान्तशार्ङ्गधरः कृताञ्जलिः सम्पूज्योवाच। यत् सूत्रमुक्तं भगवता युद्धमिति तत्संशयो नः कथमुपर्युपरिव्यवस्थानां ग्रहाणां समागमः स्वर्गे वाऽपि विग्रहोऽस्तीति। तमुवाच भगवान्। एवमेतत् सौम्य। किन्तु योगदर्शनतः शुभाशुभं दर्शयन्ति प्रजानाम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसके बाद भगवान् अनन्त तपस्वी पराशर के कथन के अन्त में शान्त शार्ङ्गधर (पराशरशिष्य) ने दोनों हाथों से अञ्जलि जोड़कर पराशर की पूजा-प्रणाम करके कहा कि भगवन्! आपने जो इस प्रकार ग्रहयुद्ध के सम्बन्ध में सूत्र कहा है, उसमें मुझे यह सन्देह है कि उर्ध्वाध: कक्षा में स्थित ग्रहों का समागम (योग) कैसे होता है अथवा स्वर्ग में भी विग्रह (युद्ध) होता है क्या? भगवान् पराशर ने उससे कहा कि सौम्य! तुम्हारा सन्देह ठीक है, अर्थात् वस्तुत: ग्रहों में परस्पर युद्ध-समागम-विग्रह आदि नहीं होते; किन्तु उक्त प्रकार से ग्रहों के योगदर्शन से प्रजाओं के शुभाशुभ देखे जाते हैं।

वराहसंहितयोस्तु

वियति चरतां ग्रहाणामुपर्युपर्यात् स्वमार्गसंस्थानाम्।
अतिदूराद्दृग्विषये समतामिव सम्प्रयातानाम्॥
आसन्नक्रमयोगाद्भेदोल्लेखांशुमर्दनासव्यैः।
युद्धं चतुष्प्रकारं पराशराद्यैर्मुनिभिरुक्तम्॥

आकाश में चलते हुए, ऊपर-ऊपर (एक के ऊपर दूसरे) अपने मार्ग में स्थित, अति दूर से देखने से समान की तरह प्रतीत होने वाले ग्रहों के पराशरादि मुनियों ने आसन्नक्रमयोग के भेद से भेद, उल्लेख, अंशुमर्दन, अपसव्य— ये चार प्रकार के ग्रहयुद्ध कहे गये हैं।

पराशरेण त्वपसव्यमनभिधायारोहणेन चतुष्प्रकारत्वमुक्तम्; तद्यथा

भेदनमारोहणमुल्लेखनं रश्मिसंसर्गश्च – इति। ग्रहयुद्धं चतुर्विधमाचक्षते कुशलाः। तेषां पूर्वः पूर्वो गरीयान् – इति। संयुक्तयोः सपर्याधोऽवस्थितिमारोहणम्।

विशेषः– इदं चोल्लेख एवान्तर्भवतीति गर्गादिभिर्नोक्तम्। पूर्वः पूर्वो गरीयानिति। गुरुत्वमशुभफलतया।

भेदन, आरोहण, उल्लेख और रश्मिसंसर्ग— ये चार प्रकार के ग्रहयुद्ध कुशलों (ग्रहयुद्ध के ज्ञाता) ने कहा है। उनमें पूर्व-पूर्व के क्रम से फल में गुरुता होती है अर्थात् सर्वाधिक अशुभ फल देने वाला भेदन, उससे कम आरोहण, उससे न्यून उल्लेखन और सर्वाल्प अशुभ फल रश्मिसंसर्ग नामक युद्ध देता है। ऊर्ध्वस्थित बिम्ब की परिधि से अध:स्थित बिम्ब की परिधि का स्पर्श देखे जाने पर अध:स्थित बिम्ब से आरोहण नामक युद्ध होता है। इसका लक्षण उल्लेख के समान है, परन्तु गर्गादि आचार्यों ने ऐसा नहीं कहा है। पराशर ने अपसव्य को छोड़कर उक्त चार प्रकार के ग्रहयुद्ध बतलाये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भार्गवीये

अपसव्यो विग्रहं ब्रूयात् संग्रामं रश्मिसङ्कुले।
लेखनेऽमात्यपीडा स्याद्भेदने तु जनक्षयः॥

अपसव्य नामक ग्रहयुद्ध होने पर राजाओं में युद्ध होता है, रश्मिमर्द के होने पर राजाओं में युद्ध होता है, उल्लेख नामक ग्रहयुद्ध होने पर मन्त्री को पीड़ा होती है और भेदन नामक ग्रहयुद्ध होने पर लोगों का नाश होता है।

वराहसंहितायां तु

भेदे वृष्टिविनाशो भेदः सुहृदां महाकुलानां च।
उल्लेखे शस्त्रभयं मन्त्रिविरोधः प्रियान्नत्वम्॥

अंशुविरोधे युद्धानि भूभृतां शस्त्ररुक्क्षुदवमर्दाः।
युद्धे चाप्यपसव्ये भवन्ति युद्धानि भूपानाम्॥

यदि भेदयुद्ध हो तो वृष्टि का विनाश तथा मित्रों और उत्तम कुलोत्पन्न मनुष्यों में परस्पर भेद होता है। उल्लेख युद्ध हो तो शस्त्रभय, मन्त्रियों में विरोध और दुर्भिक्ष होता है। अंशुविरोध युद्ध हो तो राजाओं में परस्पर युद्ध, शस्त्र, रोग और क्षुधा से मनुष्यों को अत्यन्त पीड़ा होती है तथा अपसव्य युद्ध (कोई ग्रह किसी ग्रह के दक्षिण पार्श्व से आगे होकर वाम पार्श्वगत हो तो) राजाओं में परस्पर युद्ध होता है।

अथ पराजितजययुक्तलक्षणम्; तत्र वृद्धगर्गः

ग्रहो ग्रहं समागम्य श्यावीभवति यो भृशम्।
हानिं प्राप्नोति चाव्यक्तः स्पन्दते च मुहुर्मुहुः॥

परस्परं विशेषेण किरणैरवरुध्यते।
स्वकात् प्रच्यवते स्थानाद्यदि चाप्यनुलोमतः॥

विकीर्ण इव चात्यर्थं तमसा ह्यधिसम्भृतः।
दृश्यते यदि स ज्ञेयो रूपैरेभिः पराजयी॥

दो ग्रहों के युद्ध होने पर उनमें जो ग्रह श्याव वर्ण (कृष्ण वर्ण) का हो जाय, क्षीण मूर्त्ति वाला होकर अव्यक्त हो जाय, बारम्बार स्पन्दन (कम्पन) करता हो, परस्पर विशेष रूप से किरणों से अवरूद्ध हो जाय, अनुलोमगतिक होकर अपने स्थान से भ्रष्ट (चलित) हो जाय, विखरे हुए की तरह होकर अन्धकार से आवृत्त हो जाय तो इन लक्षणों से युक्त होने पर उस ग्रह को पराजयी जानना चाहिये।

गर्गस्तु

अरश्मिर्लोहितः श्यामः परुषः सूक्ष्मतारकः।
अपसव्यः कृतो यश्च चक्रान्तःपतितस्तथा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च्युतः स्थानाद्धतो यश्च प्रतिस्तब्धस्तथैव च।
निष्प्रभो विकृतश्चापि जवेनाभिहतस्तथा॥

अप्राप्य वा निवर्त्तेत वेपनः कृष्ण एव च।
लक्षणैः सप्तदशभिर्ग्रहं विद्यात् पराजितम्॥

अरश्मि, लोहित, श्याम, परुष (रूखा), सूक्ष्मतारक, अपसव्य करने वाले, चक्रान्त, पतित, स्थानच्युत, प्रतिस्तब्ध, निष्प्रभ (कान्तिहीन), विकारयुक्त, गति से आहत, दूसरे ग्रह के पास में नहीं जाकर लौटने वाला, कम्पायमान, कृष्णवर्ण— इन लक्षणों युक्त ग्रह पराजित होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

ग्रहारूढश्च्युतः स्थानात् स्फुरणो विजितो ग्रहः।
वर्जितो यदि लिङ्गैश्च कृष्णः श्यावद्युतिस्तथा॥

विशेषः– लिङ्गैर्जयचिह्नैः।

अन्य ग्रह से आक्रान्त, अपने स्थान से च्युत, कम्पायमान, यदि अन्य लक्षणों से रहित ग्रह कृष्ण तथा श्याव कान्ति वाला हो तो पराजित होता है। लिङ्ग से अभिप्राय जयचिह्न से है।

उदङ्मार्गगतिः स्निग्धो विमलो विमलप्रभः।
बृहद्रूपोऽतिशुक्लश्च विजयी कथितो ग्रहः॥

उत्तर दिशा की ओर चलने वाला, स्निग्ध, विमल, निर्मल कान्ति वाला, विशाल मूर्त्ति वाला, अति श्वेत वर्ण वाला ग्रह विजयी कहा गया है।

भार्गवीये

सर्वेषां नभसि समागमे ग्रहाणा-
मुत्कृष्टो भवति तथैव रश्मिवान् यः।
स्निग्धत्वं भवति च स ग्रहो जयेन
संयुक्तो भवति तु यः पराजयेन॥

श्यामो वाऽप्यपगतरश्मिमण्डलो वा
रूक्षो वाऽप्यपगतरश्मिवान् कृशो वा।
आक्रान्तो विनिपतितः कृतापसव्यो
विज्ञेयो हत इति स ग्रहो ग्रहेण॥

आकाश में स्थित दो ग्रहों का समागम (युद्ध) होने पर जो ग्रह उत्तम रश्मियों से युक्त हो, यदि उसमें स्निग्धता हो तो वह जय से युक्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो ग्रह श्याम वर्ण का हो, रश्मिमण्डल से रहित हो, रूक्ष हो अथवा रश्मिहीन होकर कृश (सूक्ष्म) मूर्तिवान हो, आक्रान्त (दूसरे ग्रह से आक्रान्त) हो, पतित हो, अपसव्य (दक्षिण) होकर गमन करे और आहत हो तो वह पराजय से युक्त होता है।

पराशरस्तु

दशभिर्लक्षणैग्रहं जितं विद्यात्। विवर्णः परुषः सूक्ष्मो याम्याशामार्गस्थो विरूढो विकृतो निष्प्रभोऽथवाऽभिहतोऽप्राप्य निवृत्तो वेपनश्चान्यथा विजयी।

दश लक्षणों के द्वारा पराजित ग्रह जानना चाहिये— यदि ग्रह विवर्ण, परुष, सूक्ष्म, दक्षिण दिशा के मार्ग में स्थित, आक्रान्त, विकृत (विकारयुत), कान्तिहीन, अभिहत (आहत), दूसरे ग्रह तक पहुँचने से पूर्व लौटने वाला और कम्पायमान हो तो पराजित; अन्यथा विजयी होता है।

वराहसंहितायां तु

दक्षिणदिक्स्थः परुषो वेपथुरप्राप्य सन्निवृत्तोऽणुः।
अधिरूढो विकृतो निष्प्रभो विवर्णश्च यः स जितः॥

उक्तविपरीतलक्षणसम्पन्नो जययुतो विनिर्दिष्टः।
विपुलः स्निग्धो द्युतिमान् दक्षिणदिक्स्थोऽपि जययुक्तः॥

दक्षिण दिशा में स्थित, रूक्ष, कम्पायमान, दूसरे ग्रह के पास में जाकर लौटने वाला, सूक्ष्म बिम्ब वाला, अन्य ग्रह से आक्रान्त, विकारयुत, किरणरहित, विवर्ण— इन लक्षणों से युक्त ग्रह पराजित होते हैं।

उपर्युक्त लक्षणों से विपरीत लक्षणयुक्त (उत्तर दिशा में स्थित, स्निग्ध, कम्पन से रहित, दूसरे ग्रह को प्राप्त करने वाला, ऊपर में स्थित और तेजस्वी) हो तथा दक्षिण में स्थित होने पर भी यदि विपुल, निर्मल, कान्तियुक्त बिम्ब वाला ग्रह हो तो विजयी होता है।

प्रभाकरस्तु

भवेद्ग्रहो जयी युद्धे उदीच्यो दक्षिणे सितः।

ग्रहयुद्ध में जो ग्रह उत्तर भाग में स्थित होता है, वह विजयी कहलाता है; परन्तु शुक्र दक्षिण में स्थित रहने पर जयी होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुलिशाचार्यश्च

सर्वे जयिन उदक्स्था दक्षिणदिक्स्थो जयी शुक्रः ।

सभी ग्रह उत्तर भाग में स्थित होने से जयी कहलाते हैं, परन्तु शुक्र दक्षिण में स्थित होने से जयी होता है।

अथ रव्यादीनां पराजयफलं भार्गवीये

कनकरजतसञ्चयाश्च सर्वे शमदममन्त्रधराश्च ये मनुष्याः ।
शकयवनतुषारवाह्लिकाश्च क्षयमुपयान्ति दिवाकरं प्रयातम् ॥

यदि पञ्चतारा ग्रह सूर्य के सान्निध्य में जाकर अस्तंगत हो, तो सुवर्ण-चाँदी को संग्रह करने वाले सभी, शम-दम-मन्त्र आदि को जानने वाले सभी मनुष्य, शर, यवन, तुषार और वाह्लिक देशवासी नाश को प्राप्त करते हैं।

पराशरस्तु

सूर्यपीडायां वरनृपतितपस्विधार्मिकयशस्विभ्राजिष्णुतेजस्वि-पीतलोहितबीजफलपुष्पौषधिमणिधात्वग्न्युपजीविनः शक-यवनकाम्बोजदरदपारदपह्लवानागरैः सहोपतप्यन्ते ।

सूर्य के पीड़ित होने पर श्रेष्ठ राजा, तपस्वी, धार्मिक, यशस्वी, कान्तिवान, तेजस्वी, पीला और लाल वर्ण वाले फल-पुष्प-औषधि-मणि-धान्य, अग्नि से आजीविका चलाने वाले, शक, यवन, काम्बोज, दरद, पारद और पह्लव देश के नागर लोग पीड़ित होते हैं।

भार्गवीये

अथ सोमहते विद्याद्ध्रुवं राज्ञो विपर्ययम् ।
संहरन्ति च भूतानि भूमिपालाः पृथक् पृथक् ॥

परस्परं विरुध्यन्ते क्षुद्भयं चापि जायते ।
अनावृष्टिभयं घोरं विद्यात् सोमविपर्यये ॥

यदि चन्द्रमा आहत (पीड़ित) हो, तो निश्चय ही राजा का विपर्यय (विनाश) होता है। सभी प्राणियों का राजा लोग पृथक्-पृथक् संहार करते हैं, लोगों में परस्पर विरोध होता है और क्षुधा का भय होता है तथा चन्द्रमा के विपर्यय में अनावृष्टि का घोर भय होता है।

पराशरस्तु

सोमे सोमपद्विजस्वाध्यायिव्रतदीक्षितविद्वत्साधु-सरित्सलिलोद्भवसागराश्रिताः क्षीरिण्योषधयो देवताभिः सहोपतप्यन्ते ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रमा के पीड़ित होने पर सोम रस का पान करने वाले, ब्राह्मण, स्वाध्यायी, व्रती, दीक्षित, विद्वान्, साधु, सरोवर, जलोत्पन्न वस्तु, समुद्र पर आश्रित (तटप्रदेश निवासी), दुग्ध वाले औषधि आदि के साथ देवता पीड़ित होते हैं।

भार्गवीये

त्रैगर्त्ताः क्षितिपतयः सयोधमुख्याः
पीड्यन्ते गिरिनिलयाग्निजीविनश्च ।
संग्रामाः सरुधिरपांशुवर्षमिश्रा
दुर्भिक्षं भवति धरासुतस्य घाते ।।

यदि युद्ध में मंगल पराजित हो तो त्रैगर्त्तवासी, प्रधान योद्धाओं के साथ राजा लोग, पर्वतनिवासी और अग्नि से जीविका चलाने वाले लोग पीड़ित होते हैं तथा रुधिर और पांशु (धूलि) वृष्टि के साथ संग्राम होते हैं एवं दुर्भिक्ष होता है।

पराशरस्तु

अङ्गारकवधे स्फीतजनपदग्रामनैगमजनवनधान्यनिचय-कोषेश्वरधनभूपलक्ष्म्यधिपौषधिबीजवनपुष्पफलशौण्डि-काग्न्युपजीविनो व्याधिभयशस्त्रेणोपतप्यन्ते ।

यदि मङ्गल पराजित हो तो उत्तम जनपद और ग्रामवासी, नैगम जन (वेद को जानने वाले), वनधान्यनिचय (वनधान्यसमूह), कोषाधिप, धनी, राजा, औषधि, बीज, वनपुष्प और फल, शौण्डिक (मद्य बनाने वाले) और अग्निजीवियों को व्याधिभय तथा उनका शस्त्र से नाश करता है।

भार्गवीये

सागरनिलयाः घोराः क्षयमुपयान्ति नरा वणिक्प्रधानाः ।
भवति च राजा विजयी बुधेन प्रपतन्ति चात्र गर्भाः ।।

यदि बुध आहत (पराजित) हो तो सागर में रहने वाले भयङ्कर जीव और प्रधान व्यापारी लोगों का नाश होता है। राजा विजयी होते हैं और स्त्रियों का गर्भपात होता है।

पराशरस्तु

बुधघाते नैगमजनधान्यनिचयमित्रोपजीविमन्त्रिपोत-यात्रिकहयगजयोधमार्गणधीवराश्च तापमुपयान्ति ।

यदि बुध आहत (पराजित) हो तो नैगमजन, धान्यनिचय (धान्यसमूह), मित्र के द्वारा जीविका चलाने वाले, मन्त्री, पोत (नाव) से यात्रा करने वाले, घोड़ा, हाथी, योद्धा, बाण, धीवर— ये सब पीड़ित होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भार्गवीये

दैवज्ञास्तपसि सुनिश्चिता व्रतस्था
आरूपा नृपतिगणाः पुरोहिताश्च ।
पीड्यन्ते भवति वधश्च नागराणां
त्रैलोक्यं क्षयमुपयाति जीवघाते ॥

बृहस्पति के पराजित होने पर दैवज्ञ, तपस्वी, व्रती, सभी राजाओं और पुरोहितों को पीड़ा होती है, नगरवासियों का वध होता है तथा तीनों लोकों का नाश होता है ।

पराशर

बृहस्पतिवधे सिन्धुसौवीराभिसारपौरत्रिगर्त्तमत्स्योसीनरशिवि-वैयासहारभूतयो नैगमजलचित्रकरशाल्वग्रामघोषनगरविद्वज्जन-ब्राह्मणपुरोहितब्रह्मचारिदीक्षितजप्यमङ्गलतत्परा आश्रमाश्च पीड्यन्ते ।

यदि बृहस्पति पीड़ित हो तो सिन्धु, सौवीर, अभिसार, पौर, त्रिगर्त्त, मत्स्य, उशीनर, शिवि आदि देशों में निवास करने वाले प्राणी, वेदज्ञ, जल, चित्रकारी, शाल्वग्रामवासी, अहीरों के गाँव, नगर के विद्वान्, ब्राह्मण, पुरोहित, ब्रह्मचारी, दीक्षित, जप-मङ्गल कार्य में लीन रहने वाले और आश्रम (संन्यास आदि) वासियों को पीड़ित करता है ।

भार्गवीये

यो राजा प्रथितपराक्रमः पृथिव्यां बङ्गाङ्गा मगधविदर्भशूरसेनाः ।
ये योधा जनभुवि चापि लब्धशब्दास्ते भृत्यैः क्षयमुपयान्ति शुक्रघाते ॥

यदि शुक्र पीड़ित हो तो पृथ्वी पर जो अति पराक्रमी राजा हों वे, वङ्ग, अङ्ग, मगध, विदर्भ, शूरसेन देश के निवासी और पृथ्वी के पराक्रमी योद्धा लोग अपने भृत्यों (सेवकों) के साथ पीड़ित होते हैं ।

पराशरस्तु

हते शुक्रे नश्यन्त्यभियोक्तृबङ्गाङ्गकलिङ्गमगधविदर्भ-चेदिवत्सभद्रकारयौधेयतरुकच्छसिन्धुसौवीराभिसारपौरत्रिगर्त्तमाल-वकैकयाम्बष्ठकाः शिवयो मालवद्रविडपौण्ड्रकोटी-वृषपह्लववर्णरूपवन्तः कुसुमानि हस्त्यश्वयोधेश्वरा राजानो वर्षविघातं च विद्यात् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि शुक्र पीड़ित हो तो यायी, वङ्ग, अङ्ग, कलिङ्ग, मगध, विदर्भ, चेदि, वत्स, भद्रकार, यौधेय, तरुकच्छ, सिन्धु, सौवीर, अभिसार, पौर, त्रिगर्त्त, मालव, कैकय और अम्बष्ठ देशवासी, शिवि, मालव, द्रविड़, पौण्ड्र, कोटीवृष, पह्लव देश के उत्तम वर्ण और रूपवान मनुष्य, फूल, हाथी, घोड़ा, योद्धाओं के प्रमुख, राजा लोग तथा वर्षा— इन सबों का नाश होता है।

भार्गवीये

महिषकपिवृषाः शकाः सपौण्ड्राः
कृषिपशुपालरताश्च ये मनुष्याः ।
विविधभयसमाहिताश्च सर्वे
क्षयमुपयान्ति शनैश्चरस्य धाते ॥

यदि शनि पीड़ित हो तो महिष, बन्दर, बैल, शक और पौण्ड्र देशवासी, खेती और पशुपालन में रत रहने वाले मनुष्य— ये सभी अनेक प्रकार के भयों से पीड़ित होते हुए नाश को प्राप्त करते हैं।

पराशरस्तु

शौरपीडायामपि गोरण्डसेनापतिप्रधानपश्वस्फीतजन-पदास्त्राग्न्युपजीविनो बहुस्त्रीकास्तथा शकमहिषदरदपारता आश्विनैः सहोपतापमुपयान्ति ।

यदि शनैश्चर पीड़ित हो तो गाय, अण्डज (पक्षी-सर्प आदि), सेनापति, प्रधान पशु, अस्फीत जनपद (नीच जनपद), अस्त्रजीवी लोग, अग्निजीवी लोग, अधिक स्त्री वाले मनुष्य तथा शक, महिषक, दरद, पारत और आश्विन देशवासी मनुष्य पीड़ित होते हैं।

भार्गवीये

ये केचिनन्नृपतिसुदाम्भिकाः पिशाचाः
कार्याणां व्रतनियमेषु ये च पालाः ।
ये चान्यैः शवरपुलिन्दचेदिगाधा
बध्यन्ते यदि भवतीह राहुघातः ॥

यदि राहुघात हो (रवि-चन्द्रबिम्ब में राहु का दर्शन ग्रहण कहलाता है, युद्ध नहीं। शेष ग्रहों का ग्रहण ही राहुयुद्ध माना जा सकता है) तो अपने बल-पौरुष-धन आदि पर दम्भ करने वाले सभी राजा लोग, पिशाच (यवन-शवर आदि), कार्यों में व्रत और नियमों का पालन करने वाले और अन्य शवर, पुलिन्द, चेदि तथा गाध देशवासी लोग— इन सबों का नाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरस्तु

वधे राहोर्निकृष्टजनबन्धनपालतस्करोपवर्त्तिकाः शितशमीधान्यशूलिकवार्धुषिकदुर्गविलकरवराहकुक्कुराश्व-श्रृगालदुष्करा दस्यवश्च विनश्यन्ति ।

राहु का वध होने पर नीच जाति के लोग, बन्धनपाल (जेलर आदि), चौर वृत्ति वाले, काला शमी, काला धान्य, शूलिक (शूल धारण करने वाले), वध करने वाले, किला, विल बनाने वाले, सूअर, कुत्ता, घोड़ा, सियार, दुष्ट कर्म करने वाले, चोर— इन सबों का नाश होता है।

भार्गवीये

आक्रान्तं समनुभवन्ति पापसंहा
बध्यन्ते यदि भवति परस्परं हि घातः ।
संग्रामाः सरुधिरपांशुवर्षमिश्रा
दुर्भिक्षं भवति तु केतुपीडनेन ॥

यदि ग्रह केतु से पीड़ित हो तो केतु वर्ग के सभी लोग पाप कर्म और संहार के भय से आक्रान्त (व्याकुल) होने का अनुभव करते हैं, परस्पर एक-दूसरे का वध करते हैं, रुधिर और धूलिवर्षा से युक्त संग्राम होते हैं तथा दुर्भिक्ष होता है।

पराशरस्तु

वधे केतोः केतुभूतानां राज्ञां ग्रहक्षेत्रनिधि-निधानोद्युक्तनृपतिसाधुजनपार्वतीयानां शस्त्रवृष्टि-प्रादुर्भावो भेदश्च ।

यदि केतु पीड़ित हो तो जिन प्राणियों एवं राजाओं का केतु स्वामी है, उनका तथा उसका प्रदेश, निधि, निधान, जीतने की इच्छा वाले राजा, साधुजन, पर्वतवासी लोगों का नाश होता है और शस्त्रयुद्ध तथा वृष्टि का प्रादुर्भाव होता है तथा लोगों में परस्पर भेद उत्पन्न होता है।

परन्तु केतु ग्रह का बिम्बदर्शन सम्भव नहीं होता है, यह औत्पातिक केतुदर्शन के अनुसार फल कहा गया है।

कस्यचित् पद्यम्

ग्रहस्य ये यस्य हतस्य देशाः पीडां समृच्छन्ति त एव तस्य ।
सम्प्राप्तवीर्यस्य जये समृद्धा जयन्ति शस्यद्विचतुष्पदाद्याः ॥

जिस पीड़ित ग्रह का ग्रहभक्ति के अनुसार जो देश कहा गया है, उन देशवासियों को पीड़ा होती है। यदि ग्रह बलवान होकर जयी हो तो उसके धान्य, मनुष्य, पशु आदि की वृद्धि होती है और वे लोग विजयी होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः- ग्रहदेशाः प्रत्येकं ग्रहाद्भुतेषु चोक्ताः। वराहेण तु रवियोगे ग्रहाणामस्तमितत्वाच्चन्द्रयोगे समागमत्वाद्रविचन्द्रमसोर्युद्धं नास्तीति नियमत्वात् तत्पराजयफलं नोक्तम्। आर्यविष्णुचन्द्रादिभिरप्यस्तमयादिपक्ष एवोक्तस्तथाऽपि विष्णुचन्द्रः।

सभी ग्रहों के देश तत्तद् ग्रहाद्भुतावर्त्त में कहे गये हैं, परन्तु वराहमिहिर ने सूर्य के साथ ग्रहों के रहने पर उसका अस्त और चन्द्रमा के साथ संयोग करने पर समागम होने के कारण नियमानुसार सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहों के साथ युद्ध नहीं होता है— ऐसा कहा है। आचार्य विष्णुचन्द्र आदि ने भी वराहमिहिर के पक्ष में ही अस्त-समागम आदि कहा है; जैसा कि उनका वचन है—

दिवसकिरणस्तमाप्तः समागमः शीतरश्मिसहितानाम्।
कुसुतादीनां युद्धं निगद्यतेऽतोऽन्ययुक्तानाम्॥

सूर्य के साथ (सान्निध्यवशात्) ग्रह अस्त, चन्द्रमा के साथ समागम और मङ्गलादि ताराग्रहों का परस्पर एक-दूसरे के समीप होने पर युद्ध कहलाता है।

प्रभाकरश्च

भौमादीनां प्रतियुद्धं शशिना च समागमः।
सूर्येणास्तं जयी युद्धे उदीच्ये दक्षिणे सितः॥

भौमादि ग्रहों के परस्पर समीप होने पर युद्ध, चन्द्रमा के साथ होने पर समागम और सूर्य के साथ होने पर ग्रह अस्त होता है। ग्रहयुद्ध में जो उत्तर भाग में अवस्थित होता है, वह ग्रह विजयी और दक्षिण में अवस्थित ग्रह पराजित होता है; परन्तु शुक्र दक्षिण में स्थित होने पर विजयी कहलाता है।

विशेषः- रविचन्द्रबिम्बे राहुदर्शनं तच्च ग्रहणं न तु युद्धम्। वृद्धगर्गेणापि भौमादिपञ्चकस्यैव युद्धमङ्गीकृतम्।

अर्थात् सूर्य और चन्द्रबिम्ब में राहु का दर्शन होने पर सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण कहलाता है, सूर्य-राहु या चन्द्र-राहु का युद्ध नहीं। ऐसे ही वृद्धगर्ग ने भी भौमादि पञ्चताराग्रहों का ही युद्ध कहा है।

तथा च ग्रहयुद्धोपसंहारे

ताराग्रहाणां पञ्चानां युद्धान्युक्तानि योगतः।
जयाः पराजयाश्चैव गर्गेण परिकीर्त्तिताः॥ इति।

भौमादि पञ्चताराग्रहों के परस्पर योग से युद्ध, जय और पराजय गर्ग ने कहा है।

अथ भौमादीनां बुधादिभिः पराजयफलम्; तत्र वृद्धगर्गः

पीड्यन्ते चानेकनृपा भौमे बुधनिपीडिते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि बुध से मंगल पराजित हो तो अनेक राजा लोग पीड़ित होते हैं।

वराहसंहितायां तु

शशिजेन शूरसेनः कलिङ्गशाल्वाश्च पीड्यन्ते।
गुरुणा जितेऽवनिसुते वाह्लीकाः यायिनोऽग्निवार्त्ताश्च॥

यदि बुध से मङ्गल पराजित हो तो शूरसेन, कलिङ्ग और शाल्व देश में रहने वाले पीड़ित होते हैं। यदि बृहस्पति से पराजित हो तो वाह्लीक देश में रहने वाले, विजय की इच्छा करने वाले और अग्नि से जीवनयात्रा चलाने वाले पीड़ित होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

यायिनः क्षत्रमुख्याश्च पीड्यन्ते चाग्निजीविनः।
बृहस्पतिहते भौमे पार्वतीयाश्च पार्थिवाः॥

यदि मङ्गल बृहस्पति से पीड़ित हो तो जीतने की इच्छा वाले प्रधान क्षत्रिय (योद्धा-राजा), अग्नि से आजीविका चलाने वाले और पर्वतीय राजा पीड़ित होते हैं।

वराहसंहितायां तु

कोष्ठागारम्लेच्छक्षत्रियतापश्च शुक्रजिते।

यदि मंगल शुक्र से पराजित हो तो कोष्ठागार (अन्तर्गृह = पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहन्तथा— इत्यमरः), म्लेच्छ जाति और क्षत्रिय पीड़ित होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

शुक्रेण भौमे तु हते जयन्ते यायिनो नृपाः।
कोष्ठागाराणि म्लेच्छाश्च क्षत्रं च भुवि पीड्यते॥

यदि मङ्गल शुक्र से पराजित हो तो जीतने की इच्छा वाले आक्रमणकारी राजा की जय होती है; कोष्ठागार, म्लेच्छ और क्षत्रियों को पीड़ा होती है।

वराहसंहितायाम्

सौरेणारे विजिते जयन्ति पौराः प्रजाश्च सीदन्ति।

यदि मंगल शनि से पराजित हो तो पुरवासी विजयी और प्रजा दुःखी होती है।

वृद्धगर्गस्तु

सौरेणाभिहिते वक्रे क्षत्रं बध्यति दस्युभिः।
प्रजाः सर्वाश्च सीदन्ति जयन्ते चापि नागराः॥

यदि मंगल शनि से पराजित हो तो चोरों के द्वारा क्षत्रियों का वध होता है। सभी प्रजा पीड़ित होती है और नगरवासियों की विजय होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गः

लोहिताङ्गे बुधहते नागराश्चापि पार्थिवाः ।
तापसाः सोमपा वृक्षाः सरितो दिक् तथोत्तरा ॥

विशेषः– पीड्यन्ते इति सम्बन्धः । हननं हतः । बुधस्य हननं यस्मात् कर्तृभूतात् स बुधहतः । बुधहतविलोहिताङ्गो भौमहतो बुध इत्यर्थः ।

यदि बुध मङ्गल से पराजित हो तो नगर में निवास करने वाले तथा स्थायी (नागर) राजा, तपस्वी, सोमरस (मदिरा) पान करने वाले, वृक्ष, सरोवर तथा उत्तर दिशा में रहने वाले पीड़ित होते हैं।

तथा च वराहसंहितायाम्

भौमेन हते शशिजे वृक्षसरित्तापसाश्मकनरेन्द्राः ।
उत्तरदिक्स्थाः क्रतुदीक्षिताश्च सन्तापमुपयान्ति ॥

यदि मङ्गल से बुध पराजित हो तो वृक्ष, सरोवर-नदी, तपस्वी, अश्मक देशवासी, राजा, उत्तर दिशा में निवास करने वाले और यज्ञ में दीक्षित मनुष्य पीड़ित होते हैं।

वृद्धगर्गः

गुरुणा निहते सौम्ये जयमृच्छन्ति यायिनः ।
गर्भाः स्रवन्ति चाह्नाय कम्पते च वसुन्धरा ।
म्लेच्छान् श्रेष्ठाँश्च बहुधा शूद्राँश्चैवानयः स्पृशेत् ॥

यदि गुरु से बुध पराजित हो तो जीतने की इच्छा वाले राजा लोग जय प्राप्त करते हैं, गर्भपतन और भूकम्प होता है। म्लेच्छ, श्रेष्ठ व्यक्ति और शूद्रों में अनीति (पाप) फैलती है अर्थात् वे लोग पीड़ित होते हैं।

वराहसंहितायां तु

गुरुणा बुधे जिते म्लेच्छशूद्रचौरार्थयुक्तपौरजनाः ।
त्रैगर्त्तपार्वतीयाः पीड्यन्ते कम्पते च मही ॥

भृगुणा जितेऽग्निकोपः शस्याम्बुदयायिविध्वंसः ।

यदि बृहस्पति से बुध पराजित हो तो म्लेच्छ जाति के लोग, शूद्र, चोर, धनी, पुरवासी लोग, त्रिगर्त्त देश में निवास करने वाले और पर्वत पर निवास करने वाले पीड़ित होते हैं तथा भूकम्प होता है।

यदि शुक्र से पराजित हो तो अग्नि का प्रकोप, धान्य, मेघ और गमन करने वालों का विनाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गस्तु

बुधे च शुक्राभिहते शस्त्रमग्निश्च मूर्च्छति।
यायिनश्चात्र पीड्यन्ते शस्यं वृष्टिश्च हन्यते॥

यदि शुक्र से बुध पराजित हो तो शस्त्र और अग्नि का प्रकोप होता है। गमन करने वाले पीड़ित होते हैं तथा धान्य और वर्षा का नाश होता है।

वराहसंहितायाम्

रविजेन बुधे ध्वस्ते नाविकयोधाब्जसधनगर्भिण्यः।

विशेषः– पीड्यन्ते इति सम्बन्धः।

यदि बुध शनि से पराजित हो तो नाविक, योद्धा, कमल, धनी और गर्भिणी को पीड़ा होती है।

वृद्धगर्गस्तु

नौजीविनो वरा योधा गर्भिण्योऽथ महाधनाः।
पीड्यन्ते सौरनिहते बुधे मन्दं च वर्षति॥

यदि शनैश्चर से बुध पराजित हो तो श्रेष्ठ युद्ध करने वाले, गर्भिणी, महाधनी पीड़ित होते हैं और वर्षा मन्द (अल्प) होती है।

वराहसंहितायाम्

भौमेन जिते जीवे मध्यो देशो नरेश्वरा गावः।

विशेषः– नश्यन्तीति सम्बन्धः।

यदि मंगल से बृहस्पति पराजित हो तो मध्य देश में निवास करने वालों, राजाओं और गौओं का विनाश होता है।

वृद्धगर्गस्तु

मध्यदेशनृपा मुख्या गावोऽथाश्रमिणो द्विजाः।
नागराश्चापि पीड्यन्ते लोहिताङ्गहते गुरौ॥

म्लेच्छान् शस्त्रभृतः शस्यं नागराँश्चापि पार्थिवान्।
हन्याद्गुरुर्बुधहतो मध्यदेशं च कृत्स्नशः॥

यदि मङ्गल से बृहस्पति पराजित हो तो मध्य देश के राजा, प्रमुख व्यक्ति, गाय, आश्रमी (संन्यासी आदि), ब्राह्मण और नगरवासियों को पीड़ा होती है। यदि बुध से बृहस्पति पराजित हो तो म्लेच्छ, शस्त्र धारण करने वाले, धान्य, नागर (स्थायी) राजा और मध्य देश का नाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां च

शशितनयेनापि जिते बृहस्पतौ म्लेच्छशस्यशस्त्रभृतः ।
उपयाति मध्यदेशश्च संक्षयं पश्च भक्तिफलम् ॥

जीवे शुक्रेण जिते कुलूतगान्धारकैकया मद्राः ।
शाल्वा वत्सा वङ्गा गावः शस्यानि नश्यन्ति ॥

यदि बुध से बृहस्पति पराजित हो तो म्लेच्छजन, धान्य, शस्त्र धारण करने वाले और मध्य देश का नाश होता है तथा गुरुभक्ति का (गुरु अद्भुतावर्त्तोक्त) फल का भी नाश होता है।

यदि शुक्र से पराजित हो तो कुलूत, गान्धार, कैकय, मद्र, शाल्व, वत्स और वङ्ग देश में निवास करने वाले, गाय, धान्य—इन सबों का नाश होता है।

वृद्धगर्गस्तु

गुरौ शुक्रहते मद्राः शाल्वा गान्धारकैकयाः ।
वङ्गा मत्स्याश्च कुरवः पीड्यन्ते चापि नागराः ॥

ब्रह्मक्षत्रगणाः गावः शस्यमाश्रमवासिनः ।
उत्तरा दिक्प्रधानाश्च पीड्यन्ते च नरा भुवि ॥

यदि शुक्र से बृहस्पति पराजित हो तो मद्र, शाल्व, गाान्धार, कैकय, वङ्ग, मत्स्य और कुरु देशवासी तथा नगर में रहने वाले पीड़ित होते हैं; पृथ्वी पर ब्राह्मण, क्षत्रियगण, गाय, धान्य, आश्रमी, उत्तर दिशा के प्रधान मनुष्य और पृथ्वी के अन्य मनुष्य पीड़ित होते हैं।

वराहसंहितायाम्

सौरेण चार्जुनायनवसातियौधेयशिविविप्राः ।

विशेषः– जीवे जिते नश्यतीति सम्बन्धः ।

यदि शनैश्चर से बृहस्पति पराजित हो तो अर्जुनायन, वसति, यौधेय और शिवि देशों के निवासी तथा ब्राह्मण पीड़ित होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

नागराँश्चाभिहन्याच्छौरेणाभिहतो गुरुः ।
शूरसेनान् कलिङ्गाँश्च शाल्वान् क्षत्रं च पीडयेत् ॥

यदि शनैश्चर से बृहस्पति पराजित हो तो नगरवासियों, शूरसेन, कलिङ्ग और शाल्व देश के निवासियों और क्षत्रियों को पीड़ा होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

कुजविजिते भृगुतनये बलमुख्यवधो नरेन्द्रसंग्रामाः ।

यदि मङ्गल से शुक्र पराजित हो तो सेनापति का वध और राजाओं में युद्ध होते हैं।

वृद्धगर्गस्तु

अङ्गारकहते शुक्रे संग्रामस्तुमुलात्मकः ।
यायिनो बलमुख्याश्च पीड्यन्ते च बलाधिकाः ॥

यदि मङ्गल से शुक्र पराजित हो तो घोर युद्ध होता है। जीतने की इच्छा वाले (गमन करने वाले), बलप्रधान (सेनापति) और अधिक बल वाले— इन सबों को पीड़ा होती है।

वराहसंहितायाम्

सौम्येन पार्वतीयक्षीरविनाशोऽल्पवृष्टिश्च ।

विशेषः– जिते भृगुतनय इति सम्बन्धः ।

यदि बुध से शुक्र पराजित हो तो पर्वत पर निवास करने वाले और दुग्ध का विनाश तथा अल्प वृष्टि होती है।

वृद्धगर्गस्तु

क्षीरिणः पार्वतीयाश्च पीड्यन्ते चापि यायिनः ।
न च वर्षति पर्यन्यो बुधेनाभिहते भृगौ ॥

यदि बुध से शुक्र पराजित हो तो दूध देने वाली (गाय, भैंस, बकरी आदि), पर्वत पर निवास करने वाले और यात्रियों (गमन करने वाले) को पीड़ा होती है तथा मेघ वर्षा नहीं देता है।

वराहसंहितायाम्

शुक्रे बृहस्पतिहते यायी श्रेष्ठो विनाशमुपयाति ।
ब्रह्मक्षत्रविरोधः सलिलं च न वासवस्त्यजति ॥

कोशलकलिङ्गवङ्गा वत्सा मत्स्याश्च मध्यदेशयुताः ।
महतीं व्रजन्ति पीडां नपुंसकाः शूरसेनाश्च ॥

यदि बृहस्पति से शुक्र पराजित हो तो यायी (जीतने की इच्छा वाले नायक) और प्रधान लोगों का नाश, ब्राह्मण और क्षत्रियों में परस्पर विरोध, अवृष्टि, कोशल, कलिङ्ग, वङ्ग, वत्स, मत्स्य और मध्य देश में निवास करने वाले मनुष्य, नपुंसक तथा शूरसेन देश में स्थित मनुष्य अत्यधिक पीड़ित होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गः

बृहस्पतिहते शुक्रे यायी श्रेष्ठो विनश्यति।
ब्रह्मक्षत्रविरोधश्च देवश्चैव न वर्षति॥

पाञ्चालाः शूरसेनाश्च वत्सा मत्स्याः सकोशलाः।
पुण्ड्रा बङ्गाः कलिङ्गाश्च मध्यदेशश्च पीड्यते॥

शनैश्चरहते शुक्रे गणमुख्याश्च यायिनः।
शस्त्रोपजीविनश्चैव क्षत्रं च परिपीड्यते॥

यदि बृहस्पति से शुक्र पराजित हो तो यायी (नायक) और प्रधान मनुष्यों का नाश, ब्राह्मण और क्षत्रियों में परस्पर विरोध तथा अवृष्टि होती है। पाञ्चाल (पञ्जाब), शूरसेन, वत्स, मत्स्य, कोशल, पुण्ड्र, बङ्ग, कलिङ्ग और मध्य देशों में निवास करने वाले मनुष्य पीड़ित होते हैं।

यदि शनैश्चर से पराजित हो तो गण का प्रधान, यायी, शस्त्र से जीविका यापन करने वाले मनुष्य और क्षत्रिय पीड़ित होते हैं।

वराहसंहितायां तु

रविजेन सिते विजिते गणमुख्याः शस्त्रजीविनः क्षत्रम्।
जलजाश्च निपीड्यन्ते सामान्यं भुक्तिफलमन्यत्॥

क्षितिजेन तङ्गणान्ध्रोड्रकाशिवाह्लीकदेशानाम्।

विशेषः– असिते निहते पीडेति सम्बध्यते।

यदि शनैश्चर से शुक्र पराजित हो तो गणप्रधान, शस्त्र से आजीविका चलाने वाले मनुष्य, क्षत्रिय और जलोत्पन्न वस्तुओं को पीड़ा होती है तथा ग्रहभक्ति के अन्य फलों का नाश करता है।

यदि मङ्गल से पराजित हो तो तङ्गण, आन्ध्र, उड्र, काशी और बाह्लीक देशों को पीड़ा होती है।

वृद्धगर्गस्तु

शूद्रान्धकान् पिष्ठलकान् कोशलानपि तान् गणान्।
अङ्गारकहतः सौरो नागराँश्चापि पीडयेत्॥

यदि मङ्गल से शनैश्चर पराजित हो तो शूद्र, अन्धक, पिष्ठक और कोशल देश के निवासी लोग और नागर लोग पीड़ित होते हैं।

वराहसंहितायाम्

सौम्येन पराभूते मन्देऽङ्गवणिग्विहङ्गपशुनागाः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– सन्तप्यत इति सम्बन्धः ।

यदि बुध से शनैश्चर पराजित हो तो अङ्ग देश के निवासी लोग, व्यापारी, पक्षी, पशु और हाथी को सन्ताप होता है ।

वृद्धगर्गस्तु

पशवः पक्षिणो गावो नदीजा वणिजो नगाः ।
नागराश्चापि पीड्यन्ते हते सौरे बुधेन तु ॥

यदि बुध से शनैश्चर पराजित हो तो पशु, पक्षी, गाय, नदी से उत्पन्न होने वाले जीव एवं वस्तु, व्यापारी, पर्वत (पर्वत पर निवास करने वाले) और नगर में निवास करने वाले मनुष्य पीड़ित होते हैं ।

वराहसंहितायाम्

सन्ताप्यन्ते गुरुणा स्त्रीबहुला महिषकशकाश्च ।

विशेषः– पराभूते मन्दे इति सम्बन्धः ।

यदि बृहस्पति से शनैश्चर पराजित हो तो अधिक स्त्री वाले मनुष्य, महिषक और शक देश में निवास करने वाले मनुष्य पीड़ित होते हैं ।

वृद्धगर्गस्तु

बृहस्पतिहतः सौरो वाह्लीकाँश्चापि पीडयेत् ।
बहुस्त्रीकाँश्च योधाँश्च ब्राह्मणाँश्चानयः स्पृशेत् ॥

यदि बृहस्पति से शनैश्चर पराजित हो तो वाह्लीक देश में निवास करने वाले मनुष्य, अधिक स्त्री वाले, योद्धा— ये सब पीड़ित होते हैं और ब्राह्मणों में अनय (पाप) फैलता है ।

वराहसंहितायाम्

असिते सितेन निहतेऽर्घवृद्धिरहिविहगमानिनां पीडा ।

यदि शुक्र से शनैश्चर पराजित हो तो महँगाई की वृद्धि, सर्प, पक्षी और मानी लोगों को पीड़ा होती है । परन्तु वृद्धगर्ग के वचन से स्पष्ट है कि 'विहगमानिनां' का अर्थ सूर्य है, अर्थात् पक्षी और मानी की जगह सूर्य को पीड़ित करता है ।

वृद्धगर्गस्तु

तेजस्विनः खगान् सूर्यान् नागराँश्चानयः स्पृशेत् ।
धान्यार्घश्चापि वर्धेत सौरे शुक्रेण मर्दिते ॥

यदि शनैश्चर शुक्र से पराजित हो तो तेजस्वी (व्यक्ति, वस्तु आदि), पक्षी, सूर्य और नगरवासियों को अनीति स्पर्श करती है अर्थात् तेजस्वी वस्तु और सूर्य में विकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्पन्न होता है, पक्षी पीड़ित होते हैं, नगरवासियों में पापाचरण होता है और धान्यार्घ बढ़ता है।

वराहसंहितायाम्

अयं विशेषोऽभिहितो हतानां कुजज्ञवागीशसितासितानाम्।
फलं तु वाच्यं ग्रहभक्तितोऽन्यद्यथा तथा घ्नन्ति हताः स्वभक्तीः॥

विशेषः– आदित्यादिभक्तय आदित्याद्भुतावर्त्तेषु लिखिताः।

मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि के ये विशेष फल कहे गये हैं, अवशिष्ट फल ग्रहभक्ति से कहना चाहिये। जिस तरह व्यक्त या अव्यक्त रूप से ग्रह पीड़ित होते हैं, उसी प्रकार व्यक्त या अव्यक्त रूप से अपनी भक्ति का नाश करते हैं। ये फल आदित्यादि ग्रहों के अद्भुतावर्त्त में कहे गये हैं।

अथ नागरादिग्रहजयपराजयफलम्; तत्र नागरादिग्रहानाह ऋषिपुत्रः

बृहस्पतिस्तथाऽऽदित्यो लोहिताङ्गः शनैश्चरः।
स्थावरा धूमकेतुश्च परास्तेभ्यश्चरा ग्रहाः॥
एवमाङ्गिरसाः प्राहुराचार्याः शास्त्रकोविदाः।

विशेषः– स्थावरा अकृतोद्यमयायिन उद्यमविषयास्त एव पौरा इत्युच्यते। चराः कृतोद्यमा यायिन इत्यर्थः।

बृहस्पति, सूर्य, मङ्गल, शनैश्चर और केतु स्थावर (नागर) ग्रह हैं तथा इनके अतिरिक्त चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु यायी ग्रह हैं। ऐसा ही अङ्गिरस ने भी कहा है।

भार्गवीये तु

दिवाकरश्चैव शनैश्चरस्तथा बृहस्पतिश्चैव बुधश्च नागराः।
प्रजापतिः केतुरथैव चन्द्रमास्तथैव राहूशनसौ च यायिनः॥

दिवाकर, शनैश्चर, बृहस्पति और बुध नागर (पौर) तथा मङ्गल, केतु, चन्द्रमा, राहु और शुक्र यायी ग्रह हैं।

पराशरस्तु

सूर्यबुधबृहस्पतिशनैश्चरा नागराः। सोमाङ्गारकशुक्रराहुकेतवो यायिनः।

सूर्य, बुध, बृहस्पति और शनैश्चर नागर तथा चन्द्र, मङ्गल, शुक्र, राहु और केतु यायी हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

राहुः केतुः कुजः शुक्रश्चन्द्रेण सह यायिनः।
बुधो जीवः शनैश्चारी नागरा रविणा सह॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वे कपाले पौरोऽर्को यायी भवति चापरे ॥

राहु, केतु, मङ्गल, शुक्र और चन्द्रमा यायी तथा बुध, बृहस्पति, शनि और सूर्य नागर हैं। परन्तु यदि सूर्य पूर्वकपाल (मध्याह्न से पूर्व) में हो तो नागर और पश्चिम कपाल (मध्याह्न के बाद) में हो तो यायी होता है।

योगयात्रायां वराहः

मध्याह्नेऽर्कस्तुहिनकिरणो नित्यमाक्रन्दसञ्ज्ञः
पौरः पूर्वे भवति दिनकृद्यायिसञ्ज्ञोऽन्यसंस्थः।
जीवः सौरस्तुहिनकिरणस्यात्मजश्चेति पौराः
केतुर्यायी सभृगुजकुजः सिंहिकानन्दनश्च ॥

विशेषः– आक्रन्दो यायिपौरेतरः पार्श्वस्थः।

मध्याह्न में सूर्य और सदा चन्द्रमा आक्रन्द (पार्श्वस्थ) संज्ञक होता है। पूर्व कपाल में सूर्य पौर और परकपाल में रहने पर यायीसंज्ञक होता है। बृहस्पति, शनैश्चर एवं बुध सदा पौर तथा केतु, शुक्र, मङ्गल और राहु सदा यायीसंज्ञक होते हैं।

ऋषिपुत्रस्तु

गर्गशिष्या यथा प्राहुस्तथा वक्ष्याम्यतः परम्।
भौमभार्गवराह्वर्ककेतवो यायिनो ग्रहाः ॥

आक्रन्दसारिणामिन्दुर्ये शेषा नागरास्तु ते।
गुरुसौरबुधानेव नागरानाह देवलः ॥

[1]परान् धूमेन सहितान् राहुभार्गवलोहितान्।
पूर्वाह्णे नागरं सूर्यमपराह्णे तु यायिनम् ॥

आक्रन्दं दिनमध्ये तु चन्द्रमाऽऽक्रन्दितं सदा।
बृहस्पतेरपि मतं गर्गस्याप्येवमेव तु ॥

किञ्चिदभ्यधिकं चात्र विशेषमुशनाऽब्रवीत्।
भजत्याक्रन्दसारित्वं चक्रकर्मणि लोहितः ॥

सम्प्राप्तचक्रो वक्रश्च परमागन्तुरेव सः।
यवक्रीतोदयी दिक्षु ये ग्रहा ग्रहसङ्गमे ॥

नागरास्ते ग्रहा ज्ञेयाः स्वासु दिक्ष्वन्यतोऽन्यथा।
कैश्चित् कालवशादुक्तं दिग्भ्योऽन्यैर्वर्गतोऽपरैः ॥

१. परान् यायिनः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वमेतदमीमांस्यं न मिथ्या मुनिभाषितम्।

गर्ग मुनि के शिष्यों ने जैसा कहा था, उसी प्रकार ऋषिपुत्र कहते हैं— मङ्गल, शुक्र, राहु, सूर्य और केतु यायीसंज्ञक ग्रह हैं। चन्द्रमा पार्श्ववर्त्ती (आक्रन्द) संज्ञक है और शेष ग्रह नागरसंज्ञक हैं। देवल ने बृहस्पति, शनैश्चर और बुध को ही नागरसंज्ञक तथा केतुसहित राहु, शुक्र और मङ्गल को यायीसंज्ञक कहा है।

सूर्य पूर्वाह्न में नागर, अपराह्न में यायी और मध्याह्न में आक्रन्दसंज्ञक होता है। चन्द्रमा हमेशा आक्रन्दसंज्ञक है। यह मत बृहस्पति और गर्ग का भी है; परन्तु उशना ने इससे कुछ विशेष कहा है। वे कहते हैं कि चक्रकर्म (ग्रहयुद्ध के समय) में मङ्गल आक्रन्द संज्ञक हो जाता है। युद्ध के पश्चात् वक्री होने पर आगन्तुक होता है। अपनी दिशा में संयोग करने वाले यवक्रीतोदयी ग्रह नागर कहलाते हैं। अन्य दिशा में नागर नहीं होते अर्थात् यायी या आक्रन्द होते हैं। कुछ आचार्यों ने नागर-आक्रन्द-यायी आदि का कथन काल के अनुसार किया है, तो किसी ने दिशा के अनुसार और किसी ने वर्ण के अनुसार किया है। इन सभी कथनों के आधार पर ग्रहों के नागरादि का विचार करना चाहिये; क्योंकि मुनियों का कथन मिथ्या नहीं होता है।

पराशरः

तेषां तज्जयाद्विजयो वधाद्वधोऽन्योन्यभेदाद्भेदः साम्यात् साम्यम्।

यायी, नागर और आक्रन्दसंज्ञक ग्रहों में परस्पर युद्ध होने पर विजयी ग्रह अपने वर्ग की विजय, पराजित ग्रह अपने का नाश, परस्पर भेद होने से अपने-अपने वर्ग के लोगों में परस्पर विभेद करते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे च

यायिना विजिते पौरे राष्ट्रे स्याद्यायिनां जयः।
यायिग्रहे पौरजिते पुरे राज्ञां जयो मृधे॥

यदि यायी ग्रह से पौर ग्रह पराजित हो तो देश में यायी राजाओं की विजय होती है और पौर ग्रह से यदि यायी ग्रह पराजित हो तो नागर राजाओं की युद्ध में विजय होती है।

भार्गवीये

यदा ग्रहो नागर एव नागरं विजेष्यते वाऽप्यथ वाऽपि यायिनम्।
तथा नृपो नागर एव नागरं विजेष्यते वाऽप्यथ वाऽपि यायिनम्॥

यदि नागर ग्रह से ही नागर ग्रह अथवा यायी ग्रह से ही यायी ग्रह पराजित हो तो नागर राजा ही नागर राजा को तथा यायी राजा ही यायी राजा को पराजित करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे तु

पौरेण विजिते पौरे पौरैः पौरक्षयं वदेत्।
यायिना यायिनि हते यायिना यायिनां क्षयः ॥

ग्रहाणां चेद्भवेत् साम्यं साम्यं राज्ञां विनिर्दिशेत्।
जयाजयौ नरेन्द्राणां निर्देश्यौ ग्रहवद्बुधैः ॥

यदि नागरसंज्ञक ग्रह से नागरसंज्ञक ग्रह पराजित हो तो नागर राजाओं से पुरवासी राजाओं का नाश होता है। यदि यायी ग्रह से यायी ग्रह पराजित हो तो यायी राजा से यायी राजाओं का नाश होता है और यदि ग्रहों में समानता हो तो राजाओं में सन्धि होती है। राजाओं के जय और पराजय ग्रह के अनुसार विद्वानों को कहना चाहिये।

आक्रन्दादिलक्षणं तत्पराजयादिफलं च वराहसंहितयोः

रविराक्रन्दो मध्ये पौरः पूर्वे परे स्थितो यायी।
पौरा गुरुबुधरविजा नित्यं शीतांशुराक्रन्दः ॥

केतुकुजराहुशुक्रा यायिन एते ग्रहैर्हता हन्युः।
आक्रन्दयायिपौरा जयिनो जयदाश्च वर्गस्य ॥

पौराः पौरेण हताः पौराः पौरान् नृपान् विनिघ्नन्ति।
एवं याम्याक्रन्दा नागरयायिग्रहाश्चैव ॥

द्वावपि मयूखयुक्तौ विपुलस्निग्धौ समागमे भवतः।
तत्रान्योन्यप्रीतिर्विपरीता चात्मपक्षघ्नौ ॥

युद्धं समागमो वा यद्यव्यक्तैः स्वलक्षणैर्भवतः।
भुवि भूभृतामपि तथा फलमप्युक्तं विनिर्देश्यम् ॥

सूर्य मध्याह्न समय में आक्रन्द, पूरब में पौर और पश्चिम में यायी होता है। बुध, बृहस्पति और शनि सदा पौर, चन्द्र आक्रन्द तथा केतु, मङ्गल, राहु और शुक्र यायीसंज्ञक हैं। ये ग्रह पीड़ित हों तो आक्रन्द, यायी और पौरों का नाश करते हैं। जैसे— यदि आक्रन्दसंज्ञक ग्रह पीड़ित हो तो आक्रन्द (रक्षक आदि = 'आरावे रुदिते त्रातर्य्याक्रन्द'— इत्यमरः) का, यायीसंज्ञक ग्रह पीड़ित हों तो यायी (गमन करने वालों) का और पौरसंज्ञक ग्रह पीड़ित हों तो पुरवासियों का नाश करते हैं तथा विजयी हों तो अपने वर्ग की विजय करते हैं।

यदि पौर ग्रह से पौर ग्रह पीड़ित हो तो पुरवासी राजाओं से पुरवासी राजाओं का नाश होता है। इसी प्रकार यायी ग्रह से आक्रन्द ग्रह पीड़ित हो तो यायी राजा से आक्रन्द राजा का नाश होता है और आक्रन्द ग्रह से यायी ग्रह पीड़ित हो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आक्रन्द मनुष्य से यायी मनुष्य का नाश होता है तथा नागरग्रह से यायीग्रह पीड़ित हो तो नागर राजा से यायी राजा का नाश और यायीग्रह से नागरग्रह पीड़ित हो तो यायी राजा से नागर राजा का नाश होता है।

यदि समागम के समय में दोनों ग्रह किरणयुक्त, विपुल या निर्मल हों तो दोनों ग्रहों के वर्गों में प्रीति और विपरीत हों तो दोनों ग्रहों के वर्गों का नाश होता है।

युद्ध (मङ्गलादि पञ्च ताराग्रहों का परस्पर युद्ध) और समागम (चन्द्रमा के साथ संयोग) यदि अपने-अपने उक्त लक्षणों से अव्यक्त (अप्रकाशित) हों (जैसे युद्ध में कौन ग्रह विजयी और कौन पराजित है, इसका ज्ञान न होता हो तथा समागम में ग्रह से चन्द्रमा उत्तर या दक्षिण, किन्तु मध्य में होकर गमन करता हो) तो पृथ्वी पर राजाओं को भी अव्यक्त (सन्दिग्धात्मक) फल कहना चाहिये।

भार्गवीये

असव्यं त्रिषु मासेषु सङ्गमो मासिकः स्मृतः।
लेखने पक्ष इत्याहुर्भेदनं सप्तरात्रिकम्॥

यदि अपसव्य नामक ग्रहयुद्ध हो तो तीन महीनों तक, समागम हो तो एक महीना तक, उल्लेख नामक युद्ध हो तो १५ दिनों तक और भेदन हो तो सात दिनों तक फलपाक होता है।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु ग्रहयुद्धोत्पातेषु योद्धृग्रहपूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्तिरौत्पातिक-फलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे ग्रहयुद्धाद्यद्भुतावर्त्तः

ग्रहयुद्धाद्यद्भुतावर्त्तोक्त उत्पातों की अनुक्त विशेष शान्ति की जगह युद्ध करने वाले ग्रहों की पूजा करके, प्रचुर मात्रा में सुवर्ण, अन्न, गाय, भूमि आदि दान के साथ उत्पातों के फलों की गुरुता एवं लाघवता को जानकर सामान्य शान्ति करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथाकृत्यादियोगाद्भुतावर्त्तः

विष्णुधर्मोत्तरे

पाशचक्रधनुर्वज्रसंस्थानाः क्षुदवृष्टिदाः ।
ग्रहा भयावहा नित्यं शृङ्गाटकपुरोगमाः ॥

यदि ग्रहों के योग या संस्थानविशेष के कारण पाश, चक्र, धनु, वज्र, शृङ्गाटक या पुर— ये आकृतियाँ दिखाई दें तो क्षुधाभय और अवृष्टि होती है तथा ग्रह लोक में भय उत्पन्न करते हैं।

वराहसंहितायां तु

ग्रहसंवर्त्तसमागमसम्मोहसमाजसन्निपाताख्याः ।
[1]कोपश्च षडित्येषामभिधास्ये लक्षणं सकलम् ॥

एकर्क्षे चत्वारः सह पौरैर्यायिनोऽथ वा पञ्च ।
संवर्त्तो नाम भवेच्छिखिराहुयुतश्च सम्मोहः ॥

पौरः पौरसमेतो यायी सह यायिना समाजाख्यः ।
यमजीवसङ्गमेऽन्यो यद्यागच्छेत् तदा कोपः ॥

उदितः पश्चादेकः प्राक् चान्यो यदि स सन्निपाताख्यः ।
अविकलतनवः स्निग्धा विपुलाश्च समागमे धन्याः ॥

समौ तु संवर्त्तसमागमाख्यौ सम्मोहकोपौ भयदौ प्रजानाम् ।
समाजसञ्ज्ञे तु समा प्रदिष्टा वैरप्रकोपः खलु सन्निपाते ॥

ग्रहसंवर्त्त, ग्रहसमागम, ग्रहसम्मोह, ग्रहसमाज, ग्रहसन्निपात और ग्रहकोप (पाठान्तर से ग्रहकोश)— ये छः योग हैं। अब इनके लक्षण और फल कहते हैं—

यदि एक नक्षत्र में चार या पाँच ग्रह स्थित हों तथा वे पौर और यायी ग्रहों से युक्त हों तो **संवर्त्त** योग होता है। इस योग में यदि राहु या केतु का योग हो तो **सम्मोह** नामक योग, यदि एक ही नक्षत्र में पौरग्रह के साथ पौर ग्रह या यायी ग्रह के साथ यायी ग्रह हो तो **ग्रहसमाज** नामक योग, शनि और गुरु के संयोग में यदि कोई दूसरा ग्रह आ जाय तो **कोप** (पाठान्तर से कोश) नामक योग, एक ग्रह पश्चिम दिशा में सूर्यमण्डल से निकलकर उदित हो और दूसरा ग्रह पूरब दिशा में उदित होकर

---

१. कोशश्च इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों एक नक्षत्रगत हों तो वह **सन्निपात** नामक योग तथा उक्त पाँचों लक्षणों से भिन्न लक्षणयुक्त होने से **समागम** होता है। इस समागम में ताराग्रह निर्विकार शरीर वाले, निर्मल और विपुल बिम्ब वाले शुभ होते है; अन्यथा अशुभ होते हैं।

संवर्त्त और समागम में सम (मध्यम) फल होता है अर्थात् न शुभ और न अशुभ। सम्मोह और कोप (कोश) में प्रजाओं को भय, समाज में सुसम (सुमध्यम) अर्थात् शोभन फल और सन्निपात में परस्पर द्वेष होता है।

काश्यपश्च

संवर्त्तसङ्गमौ मध्यौ सम्मोहौ भयदस्तथा।
कोपश्चानिष्टफलदः समाजाख्यस्तु मध्यमः॥
सन्निपाते महावैरमन्योन्यमुपजायते।

संवर्त्त और समागम योग में मध्यम फल, सम्मोह में भय, कोप में अशुभ फल, समाज नामक योग में मध्यम फल और सन्निपात में लोगों में परस्पर महान् वैर उत्पन्न होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

एकान्तरितनक्षत्रगताः स्युश्चेद्ग्रहा दिवि।
माला नाम भवेद्योगो मध्यदेशक्षितीशहा॥

यदि एकान्तरित नक्षत्रों में ग्रह स्थित हो तो **माला** नामक योग होता है। यह मध्यवर्त्ती देश के राजाओं का नाश करता है।

पराशरस्तु

अथाष्टौ ग्रहयोगाः कोपः शृङ्गाटको व्यूहो माला धनुस्तुला ध्वजश्चक्रं चेति। तत्रैकर्क्षे पञ्च ताराग्रहाः सूर्यानुगताः स्युः स कोपः। एकर्क्षगास्त्रयश्चन्द्रसंयुक्ताः स शृङ्गाटकः। विना सोमेन दृश्याश्चत्वारः स व्यूहः। पञ्चैकर्क्षगा दृश्येरन् स ध्वजः। एकैकर्क्षान्तरिताः पञ्च सा माला। उदयेऽस्तमये च ग्रहरूपं दृश्यते सा तुला, स एवाकृतिवशाद्धनुः। उदयास्त-मध्यान्तरेभ्योऽन्यर्क्षगाः स चक्रं तत्र दुर्भिक्षकृतकोपः। शृङ्गाटको नृपयायिनां नाशाय भवति। व्यूहे पुराणाम-वरोधनम्।

मालाऽभिषिक्तनाशाय मध्यदेशविपत्तये।
धनुः कुनृपनाशाय चोरदस्युक्षयाय च॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शस्याम्बुनाशाय तुला तुलाज्ञश्चोपजीवति।
ध्वजः शस्यविनाशाय चक्रं चक्रं विनाशयेत्॥

कोप, शृङ्गाटक, व्यूह, माला, धनु, तुला, ध्वज और चक्र— ये आठ ग्रहयोग हैं। एक नक्षत्र में पञ्च ताराग्रह सूर्यानुगत (सूर्य के पीछे चलने वाले अर्थात् सूर्यास्त के बाद दिखाई देने वाले) हों तो **कोप**संज्ञक योग, एक नक्षत्र में तीन ताराग्रह चन्द्रमा के साथ हों तो **शृङ्गाटक** नामक योग, एक नक्षत्र में चन्द्रमा को छोड़कर अन्य चार ग्रह हों तो **व्यूह**योग, एक नक्षत्र में पाँच ग्रह दिखाई दें तो **ध्वज**योग, एक-एक नक्षत्र के अन्तर में पाँच ग्रह हों तो **माला**योग, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय यदि कोई ग्रह दृश्य हो तो वह **तुला**योग, तुलायोग ही आकृतिवश **धनु** योग और उदय, अस्त तथा उदयास्त के मध्यान्तर अर्थात् चतुर्थ और दशम—इन चारों स्थानों में भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में यदि सभी ग्रह स्थित हों तो **चक्र**योग होते हैं।

कोपयोग लोक में दुर्भिक्षकारक, शृङ्गाटक योग यायी राजाओं का नाशकारक और व्यूह नगर का नाशकारक होता है।

मालायोग अभिषिक्त राजाओं का नाश और मध्यदेश को विपत्ति देता है। धनुयोग दुष्ट राजा का नाश और चोर-दस्यु का क्षय करता है। तुला धान्य और जल (वर्षा) का नाश तथा तुलाधारी की वृद्धि करता है। ध्वज धान्य का विनाश और चक्र योग चक्र (सेना-रथ आदि बल) का नाश करता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

यदा सप्तसु दृश्येत कृत्तिकादिषु सम्पतन्।
सह शुक्रेण तु बुधस्तदा देवो न वर्षति॥

जब कृत्तिकादि सात नक्षत्रों में बुध और शुक्र दिखाई देते हैं, तब वर्षा नहीं होती है।

पराशरः

उदयास्तमयस्थौ तु यदा शुक्रबृहस्पती।
पूर्वसन्ध्यागतौ घोरौ जनयेतां महद्भयम्॥

शुक्र और बृहस्पति परस्पर उदयास्त क्षितिज में (एक पूर्वक्षितिज में और दूसरा अस्तक्षितिज में) स्थित होकर यदि पूर्वसन्ध्या (प्रातःसन्ध्या) में दृश्य हों, तो महान् घोर भय उत्पन्न करते हैं।

ऋषिपुत्रस्तु

अन्योन्यसप्तमस्थौ तु यदि शुक्रबृहस्पती।
पूर्वसन्ध्यागतौ घोरौ जनयेतां महद्भयम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि शुक्र और बृहस्पति परस्पर एक-दूसरे से सातवें स्थान में स्थित होकर प्रात:सन्ध्या काल में दृश्य हों, तो अति घोर भय उत्पन्न करते हैं।

वराहसंहितायां तु

गुरुर्भृगुश्चापरपूर्वकाष्ठयोः परस्परं सप्तमराशिगौ यदा।
तदा प्रजा रुग्भयशोकपीडिता न वारि पश्यन्ति पुरन्दरोच्छ्रितम्॥

निहन्ति शुक्रः क्षितिजेऽग्रतः प्रजा हुताशशस्त्रक्षुदवृष्टितस्करैः।
चराचरं व्यक्तमथोत्तरापथं दिशो रजोल्कादहनैश्च पीडयेत्॥

सौम्योदस्तोदययोः पुरो भृगुसुतस्यावस्थितस्तोयकृ-
द्रोगान् कामलपित्तजाँश्च कुरुते पुष्णाति च ग्रैष्मिकम्।
हन्यात् प्रव्रजिनोऽग्निहोत्रिकभिषग्रङ्गोपजीव्यान् हयान्
वैश्यान् गाः सह वाहनैर्नरपतीन् मृद्नाति पश्चाद्दिशः॥

बृहस्पतौ हन्ति पुरःस्थिते सितः सितं समस्तं द्विजगोसुरालयम्।
दिशं च पूर्वां करकासृजोऽम्बुदा गले गदो भूरि भवेच्च शारदम्॥

शनैश्चरे म्लेच्छविडालकुञ्जराः खरा महिष्योऽसितधान्यशूकराः।
पुलिन्दशूद्राश्च सदक्षिणा पथाः क्षयं व्रजन्त्यक्षिमरुद्भवोद्भवैः॥

यथा स्थिता जीवबुधारसूर्यजाः स्थितस्य सर्वोग्रपथानुवर्त्तिनः।
नृनागविद्याधरसङ्गरास्तदा भवन्ति वार्त्ताश्च समुच्छ्रितान्तकाः॥

यदि बृहस्पति और शुक्र परस्पर सप्तम राशि में स्थित हों तो रोग और अनेक प्रकार के भय से प्रजागण पीड़ित होते हैं तथा इन्द्र द्वारा दिया हुआ जल नहीं देखते हैं अर्थात् अवृष्टि होती है।

यदि शुक्र के आगे मङ्गल गमन करे तो अग्नि, शस्त्र, क्षुधा, अवृष्टि और चोरों से प्रजाओं का, उत्तर दिशा में स्थित जङ्गम और स्थावर प्राणियों का एवं धूलि, उल्का तथा अग्नि से दिशाओं का नाश होता है।

यदि शुक्र के आगे अस्तंगत या उदित होकर बुध स्थित हो तो वृष्टि, लोगों में पित्तज और कामल रोगों की उत्पत्ति तथा ग्रीष्म में उत्पन्न होने वाले धान्यों को पुष्ट करता है एवं संन्यासी (वनवासी), अग्निहोत्री, वैद्य, योद्धा, घोड़ा, वैश्य, गाय, वाहन, राजा का नाश तथा पश्चिम दिशा को पीड़ित करता है।

यदि शुक्र के आगे बृहस्पति गमन करता हुआ स्थित हो तो सभी सफेद वस्तु, ब्राह्मण, गाय तथा देवगृह और पूरब दिशा का नाश करता है, मेघ से ओले की वृष्टि होती है, लोगों के गले में रोग होते हैं तथा शारदीय धान्य अत्यधिक होते हैं।

यदि शुक्र के आगे शनैश्चर गमन करे तो म्लेच्छ जाति, बिल्ली, हाथी, गदहा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भैंस, काले धान्य, सूअर, निषाद, शूद्र और दक्षिण दिशा में स्थित लोग नेत्ररोग तथा वायु के विकार से नष्ट होते हैं।

यदि शुक्र के आगे बृहस्पति, बुध, मङ्गल और शनि— ये सभी हों तो मनुष्य, नाग (हाथी) और विद्याधरों में युद्ध तथा उच्च वस्तु (वृक्षादिकों) को अन्त करने वाली वार्त्ता (वातावरण) होती है अर्थात् भयङ्कर आन्धी-तूफान से वृक्ष आदि गिरते हैं।

गर्गः

कोष्ठागारगते शुक्रे पुष्यस्थे च बृहस्पतौ।
विद्याद्धितं सुखं लोके शान्तशस्त्रमनामयम्॥

यदि मघा नक्षत्र में शुक्र और पुष्य नक्षत्र में बृहस्पति हों तो संसार में लोग हितैषी, सुखी, युद्धभयरहित तथा रोगरहित होते हैं।

पराशरः

कृत्तिकासु शनैश्चारी विशाखायां बृहस्पतिः।
तिष्ठेद्यदा तदा घोरः प्रजानामनयो भवेत्॥

एकनक्षत्रमाश्रित्य दृश्येतां युगपद्यदि।
अन्योऽन्यभेदं जानीयात् तदा पुरनिवासिनाम्॥

यदि कृत्तिका नक्षत्र में शनैश्चर तथा विशाखा नक्षत्र में बृहस्पति स्थित हों तो प्रजाओं में घोर उपद्रव होते हैं। यदि एक ही नक्षत्र में उक्त दोनों ग्रह स्थित होकर दृश्य हों तो नगरवासियों में परस्पर भेद उत्पन्न होता है।

वराहः

यदा विशाखासु महेन्द्रमन्त्री सुतश्च भानोर्दहनर्क्षमाश्रितः।
तदा प्रजानामनयोऽतिघोरः पुरप्रभेदो गतयोऽब्दमेकम्॥

यदि विशाखा नक्षत्र में बृहस्पति और कृत्तिका नक्षत्र में शनैश्चर स्थित हों तो प्रजाओं में अति भयङ्कर उपद्रव एवं नगरवासियों में भेद-भाव एक वर्ष तक उत्पन्न करते हैं।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यवधनिमित्तम्

संवत्सरस्थायिनौ च ग्रहौ प्रज्वालितावुभौ।
विशाखायाः समीपस्थौ बृहस्पतिशनैश्चरौ॥

विशेषः– संवत्सरनाम्नि वर्षे स्थायिनौ संवत्सरस्थायिनौ।

महाभारत-युद्ध के समय एक वर्ष तक विशाखा नक्षत्र के निकट में प्रज्वलित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होकर बृहस्पति और शनैश्चर स्थित थे, जिस कारण कौरव-पाण्डवों की सेनाओं का नाश हुआ।

विष्णुधर्मोत्तरे

चित्रायां लोहितो यत्र मूले देवगुरुस्तथा।
भार्गवश्च धनिष्ठासु तदा पौरभयं भवेत्॥

एकेन यदि वा द्वाभ्यां ग्रहाभ्यां सहितो गुरुः।
शनैश्चरो वा दृश्येत तदा दुर्भिक्षमादिशेत्॥

यदि चित्रा नक्षत्र में मङ्गल और मूल नक्षत्र में गुरु हों तथा धनिष्ठा नक्षत्र में शुक्र हो तो पुरवासियों को भय होता है। यदि बृहस्पति एक या दो ग्रहों से युत हो अथवा एक या दो ग्रहों से युत शनैश्चर दृश्य हो तो दुर्भिक्ष होने का आदेश करना चाहिये।

पराशरश्च

एकेन यदि वा द्वाभ्यां ग्रहाभ्यां सहितो गुरुः।
शनैश्चरो वा दृश्येत कोपवत् फलमादिशेत्॥

विशेषः– कोपफलं दुर्भिक्षम्।

यदि वृहस्पति एक या दो ग्रहों के साथ हो अथवा यदि शनैश्चर एक या दो ग्रहों से युत होकर दृश्य हो तो कोपग्रहयोग की तरह अशुभ फल कहना चाहिये। कोप का फल (दुर्भिक्ष) होता है।

अस्तोदये तु शुक्रस्य यदि चन्द्रदिवाकरौ।
आवृत्य मार्ग कुर्वीत तदा वर्षति भार्गवः॥

पुरस्तादेकनक्षत्रे दृश्येरँश्चेत् त्रयो ग्रहाः।
अवर्षदुर्भिक्षभयं गोमनुष्यभयं भवेत्॥

हिमवन्तमयोध्यां च तङ्गणानेकपादकान्।
पूर्वं समुद्रमगधानृक्षदेशाँश्च पीडयेत्॥

मध्ये यदा प्रदृश्यन्ते शृङ्गाटकपदाश्रिताः।
त्रयेणैकर्क्षमारूह्य मध्यदेशविपत्तये॥

वारुण्यां यत्र दृश्यन्ते लम्बमानास्त्रयो ग्रहाः।
तदृक्षमण्डलान्तःस्थाँस्त्रिगर्भांश्चानयः स्पृशेत्॥

यदि चन्द्रमा और सूर्य शुक्र के अस्त या उदय के समय उसके मार्ग को घेर कर स्थित हों अर्थात् जिस मार्ग से अस्तोदय के समय शुक्र गमन करे, उसी मार्ग में उसके आगे चन्द्रमा और सूर्य दोनों स्थित हों तो शुक्र वर्षा कराता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि उदयास्त के समय शुक्राधिष्ठित नक्षत्र से आगे एक नक्षत्र में तीन ग्रह एक साथ दिखाई दें तो अवृष्टि और दुर्भिक्ष के भय से गाय और मनुष्य पीड़ित होते हैं तथा हिमालय, अयोध्या, तङ्गण, एकपाद, पूर्वदेश, समुद्र, मगध और तन्नक्षत्रोक्त देशवासियों को पीड़ित करते हैं। आकाशमध्य में यदि एक नक्षत्र में ही तीन ग्रह स्थित होकर शृङ्गाटक नामक संस्थान करते हैं तो मध्यदेशवासियों को पीड़ा होती है। यदि पश्चिम दिशा में एक नक्षत्र में स्थित होकर लम्बायमान (लटकते हुए) तीन ग्रह दिखाई दें तो उस नक्षत्रमण्डल में स्थित देशों और त्रिगर्त्त देशवासियों (अथवा तीन गर्भ वाली प्राणियों) में उपद्रव होते हैं।

काश्यपः

भूमिपुत्रादयः सर्वे यस्यामस्तमिते रवौ।
दृश्यन्ते सर्वककुभिः तत्रानिष्टं विनिर्दिशेत्॥

जिस दिशा में मङ्गलादि सभी ग्रह सूर्यास्त के बाद दृश्य हों, उन दिशाओं में स्थित देशवासियों का अनिष्ट कहना चाहिये।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

पूर्वस्यां यदि दृश्यन्ते सर्वे ताराग्रहा यदि।
प्राच्यानां तु तदा राज्ञां भवेत् पीडा च दारुणा॥
मध्येन यदि दृश्यन्ते मध्यदेशो विनश्यति।
वारुण्यां यदि दृश्यन्ते तां दिशं पीडयन्ति ते॥

विशेषः– मध्येन यदि दृश्यन्त इति बुधभार्गवव्यतिरिक्तताराग्रहपरम्। बुधभार्गवयोर्नभोमध्ये दर्शनासम्भवात्।

यदि पूर्व दिशा में सभी मङ्गलादि ताराग्रह दिखाई दें तो पूर्व देश के राजाओं को दारुण पीड़ा होती है। यदि मध्याकाश में दिखाई दें तो मध्यदेश का नाश और यदि पश्चिम दिशा में दृश्य हों तो पश्चिम दिशा में स्थित देश को पीड़ित करते हैं। परन्तु मध्याकाश में बुध और शुक्र का दर्शन गोलयुक्ति से कभी भी सम्भव नहीं है; इसलिए मध्याकाश में मात्र मङ्गल, गुरु और शनि का दर्शन होने से उक्त अशुभ फलों का आदेश करना चाहिये।

यह उल्लेखनीय है कि संहिताकारों ने उत्पात के रूप में पाँचों ताराग्रहों का आकाशमध्य में भी दर्शन सम्भव बताया है। अतः कदाचित् उत्पातवश सम्भव हो सकता है।

पराशरस्तु

पुरस्ताद्यत्र दृश्यन्ते पञ्चतारा ग्रहा दिवि।
प्रकाशन्ते ध्वजाग्राणि पार्थिवानां युयुत्सताम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदा सर्वे समागम्य मध्ये तिष्ठति दारुणम्।
तत्रापि देशाः पीड्यन्ते मध्यदेशो विशेषतः ॥

प्रतीच्यां यत्र दृश्यन्ते पञ्च ते दिवि चारिणः।
क्षुभ्यते पृथिवी सर्वा न च शस्त्रं प्रकुप्यति ॥

यदि पूर्व दिशा में एक साथ पाँच ताराग्रह दृश्य हों तो युद्ध करने वाले राजाओं की ध्वजा प्रकाशित होती है अर्थात् पूर्व दिशाओं के राजाओं में युद्ध होता है। यदि सभी ताराग्रह एक साथ मध्याकाश में दिखाई दें, तो सभी देशों को पीड़ा होती है, परन्तु मध्यवर्त्ती देश विशेष रूप से पीड़ित होता है। यदि पश्चिम दिशा में पाँचों तारागह एक साथ दिखाई दें तो समस्त पृथ्वी क्षोभयुक्त (उपद्रवग्रस्त) हो जाती है और शस्त्र कुपित नहीं होता है अर्थात् शस्त्र से अपनी रक्षा नहीं कर पाते हैं।

वराहसंहितायां तु

दृश्यते यत्र खांशे ग्रहमाला दिनकरे दिनान्तगता।
तत्रान्यो भवति नृपः परचक्रोपद्रवश्च महान् ॥

सूर्यास्त के समय में जिस देश के आकाशमध्य में ग्रहमाला दिखाई दे, वहाँ पर अन्य राजा होता है और दूसरे राजा का उपद्रव होता है।

विशेषः– खांशे दशमस्थाने मध्याह्ने देश इत्यर्थः। ग्रहमाला बुधभार्गवव्यतिरिक्ता। दिनान्तगतेऽस्तमितमात्रे न तु समयान्तरे।

अर्थात् खांश आकाशमध्य जहाँ पर सूर्य के रहने से मध्याह्न होता है। ग्रहमाला में बुध और शुक्र को छोड़कर शेष ग्रह; क्योंकि सूर्यास्त के समय मध्याकाश में बुध और शुक्र का दर्शन असम्भव है; यह फल ठीक सूर्यास्त के समय में ही आकाशमध्य में ग्रहमाला के दिखाई देने पर होता है, अन्य समय में नहीं।

यस्यां दिशीक्षमाणा विशन्ति ताराग्रहा रविं सर्वे।
भवति भयं दिशि तस्यामायुधकोपः क्षुदातङ्कैः ॥

जिस दिशा में सभी ताराग्रह दिखाई दें तथा जिस दिशा में रवि में प्रविष्ट (अस्त) हों, उस दिशा में शस्त्रकोप, क्षुधा (दुर्भिक्ष) और आतङ्क (उपद्रव) से भय होता है।

पराशरः

यद्यत् फलमिह प्रोक्तं ग्रहसंयोगसम्भवम्।
तत्तन्नक्षत्रदेशेषु तेषु तेषु विनिर्दिशेत् ॥

इस अद्भुतावर्त्त में ग्रहों के संयोग के अनुसार जो-जो फल कहे गये हैं, वे संयोग जिन-जिन नक्षत्रों और दिशाओं में होते हैं, उन नक्षत्रों के देशों (भक्तियों) तथा उन दिशाओं में स्थित देशों में भी फल कहना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एतेष्वनुक्तविशेषशान्तिषु आकृत्यादिग्रहयोगाद्भुतेषु योगकर्त्तृक-ग्रहपूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्ति-रौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या ।

इन आकृत्यादि ग्रहयोगों से उत्पन्न अद्भुतों की अनुक्त विशेष शान्ति के लिए योग करने वाले ग्रहों की पूजा करके प्रचुर सुवर्ण, अन्न, गाय, भूमि आदि दान के साथ औत्पातिक फलों की गुरुता एवं लघुता को जानकर सामान्य शान्ति करनी चाहिये ।

विशेषः– 'अत्रानुक्तफलपाकसमयविशेषाणां दिव्याद्भुतानां वर्षेण फलपाकः पराशरेणोक्तः ।' अर्थात् जिन अद्भुतों का फलपाक का समय अनुक्त है, उन दिव्य अद्भुतों का फलपाक-काल एक वर्ष तक पराशर ने कहा है ।

वादरायणः

वृश्चिकस्थे सहस्रांशौ सौम्यैर्बलिभिरीक्षिते ।
तद्वत्केन्द्रयुतैर्विद्याद्ग्रीष्मधान्यस्य सम्पदः ॥

सूर्य के वृश्चिक राशि में स्थित होने पर यदि वह (सूर्य) बलवान शुभ ग्रहों से दृष्ट हो अथवा सूर्य से केन्द्रस्थान (वृश्चिक, कुम्भ, वृष और सिंह) में शुभ ग्रह हों तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्यों की वृद्धि होती है ।

वराहसंहितयोः

भानोरलिप्रवेशे केन्द्रैस्तस्माच्छुभग्रहाक्रान्तैः ।
बलवद्भिः सौम्यैर्वा निरीक्षिते ग्रैष्मिकविवृद्धिः ॥
अष्टमराशिगतेऽर्के गुरुशशिनोः कुम्भसिंहसंस्थितयोः ।
सिंहघटसंस्थितयोर्वा निष्पत्तिर्ग्रीष्मशस्यस्य ॥

सूर्य के वृश्चिक राशि में प्रवेश के समय उससे (सूर्य से) केन्द्र में शुभ ग्रह हों या जहाँ-कहीं पर (केन्द्र से इतर स्थान में) स्थित बली शुभ ग्रहों से वृश्चिक राशिगत सूर्य अवलोकित हो, तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्यों की वृद्धि होती है ।

सूर्य के आठवीं राशि (वृश्चिक) में गत होने के समय कुम्भ राशि में गुरु और सिंह राशि में चन्द्रमा या सिंह राशि में गुरु और कुम्भ राशि में चन्द्रमा बैठे हों तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्यों की निष्पत्ति (वृद्धि) होती है ।

वादरायणः

सूर्याद्द्वितीयगे शुक्रे विधुजे तत्र संस्थिते ।
द्वयोर्वा द्वादशेऽप्येवं स्थितयोः शस्यसम्पदः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्येऽत्र गुरुणा दृष्टे योगः स्यादतिशोभनः ।

यदि सूर्य से द्वितीय स्थान में शुक्र या बुध या दोनों स्थित हों अथवा इसी तरह सूर्य से द्वादशवें स्थान में बुध या शुक्र या दोनों ग्रह स्थित हों तो धान्यों की उत्पत्ति होती है। यदि सूर्य गुरु से दृष्ट हो तो वह योग अत्यन्त शोभन (ग्रीष्मकालिक धान्य- वृद्धिकारक) होता है।

वराहसंहितयोस्तु

अर्कात् सिते द्वितीये बुधेऽथ वा युगपदेव वा स्थितयोः ।
व्ययगतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्ट्या ॥

शुभमध्येऽलिनि सूर्याद्गुरुशशिनोः सप्तमे परा सम्पत् ।
अल्यादिस्थे सवितरि गुरोर्द्वितीयेऽर्धनिष्पत्तिः ॥

लाभहिबुकार्थयुक्तैः सूर्यादलिगात् सितेन्दुशशिपुत्रैः ।
शस्यस्य परा सम्पत् कर्मणि जीवे गवा चाग्र्या ॥

यदि सूर्य से द्वितीय या द्वादश स्थान में शुक्र या बुध या दोनों एक साथ बैठे हों तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्यों की निष्पत्ति होती है। यदि उक्त योगों में बृहस्पति की दृष्टि हो तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्यों की उत्तम निष्पत्ति होती है।

दो शुभग्रहों के मध्य में स्थित होकर सूर्य वृश्चिक राशि में स्थित हो और सूर्य से सप्तम में गुरु और चन्द्रमा हों तो धान्यों की उत्तम निष्पत्ति होती है तथा वृश्चिक के आदि में सूर्य और उससे द्वितीय में गुरु हो, तो धान्यों की आधी निष्पत्ति होती हैं।

यदि वृश्चिक राशिगत सूर्य से एकादश में शुक्र, चतुर्थ में चन्द्र और द्वितीय में बुध हों तो धान्यों की उत्तम निष्पत्ति होती है। यदि पूर्वोक्त योग में दशम में बृहस्पति हो तो गायों में उत्तम सम्पत्ति (दूध की अधिकता) होती है।

वादरायणः

वृश्चिकेऽर्के वृषे चन्द्रः कुम्भे जीवः कुजार्कजौ ।
मकरे चेद्भवेच्छस्यसम्पच्चक्रागमो महान् ॥

यदि वृश्चिक राशि में सूर्य, वृष में चन्द्र, कुम्भ में बृहस्पति और मकर में मंगल तथा शनि हों तो धान्यों की अधिक निष्पत्ति और परचक्र (दूसरे राजा) का आगमन होता है।

वराहसंहितयोस्तु

कुम्भे गुरुर्गवि शशी सूर्येऽलिमुखे कुजार्कजौ मकरे ।
निष्पत्तिरस्ति महती पश्चात् परचक्ररोगभयम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि कुम्भ में बृहस्पति, वृष में चन्द्रमा, वृश्चिक के आदि में सूर्य और मकर में मङ्गल तथा शनि हों तो धान्यनिष्पत्ति अधिक होती है तथा बाद में परचक्र और रोग का भय होता है।

वादरायणः

वृश्चिकावस्थितः सूर्यः पापमध्यगतो यदा।
शस्यहा सप्तमे पापे जातं जातं विपद्यते॥

यदि दो पापग्रहों के मध्य में वृश्चिक राशिगत सूर्य हो तो धान्यों का नाश करता है तथा उससे सप्तम राशि (वृष) में पापग्रह हो तो धान्य की उत्पत्ति (बीज) का नाश करता है।

वराहसंहितयोस्तु

मध्ये पापग्रहयोः सूर्यः शस्यं विनाशयत्यलिगः।
पापः सप्तमराशौ जातं जातं विनाशयति॥

अर्थस्थाने क्रूरः सौम्यैरनिरीक्षितः प्रथमजातम्।
शस्यं निहन्ति पश्चादुप्तं निष्पादयेद्व्यक्तम्॥

यदि वृश्चिक राशि में स्थित होकर सूर्य दो पापग्रहों के मध्य में स्थित हो तो धान्यों का नाश करता है तथा सप्तम राशि (वृष) में पापग्रह बैठा हो तो धान्यों की उत्पत्ति का भी नाश करता है।

यदि वृश्चिक राशिस्थ सूर्य से द्वितीय स्थान (धनु) में पापग्रह हो और शुभ ग्रहों से नहीं देखा जाता हो तो पहले बोई हुई खेती (बीज) का नाश करता है; किन्तु बाद के बोये हुए धान्यों की उपज अच्छी होती है।

वादरायणः

पापौ सूर्यात् सप्तमस्थौ केन्द्रस्थौ चापि घातकौ।
सौम्यदृष्टौ न सर्वत्र नाशनौ वृष्टिकोपतः॥

वृश्चिक राशिस्थ सूर्य से सप्तम (वृष) राशि में एक और सप्तमभिन्न केन्द्र (कुम्भ या सिंह) में दूसरा पापग्रह (मंगल, शनि में से एक) हो तो धान्यों का नाश करते हैं। यदि वे दोनों पापग्रह शुभ ग्रहों (बुध, शुक्र, गुरु, पुष्ट चन्द्र) से दृष्ट हों तो सर्वत्र नहीं, अपितु कहीं-कहीं वृष्टि-कोप से धान्यों का नाश करते हैं।

वराहसंहितयोः

जामित्रकेन्द्रसंस्थौ क्रूरौ सूर्यस्य वृश्चिकस्थस्य।
शस्यविपत्तिं कुरुतः सौम्यैर्दृष्टौ न सर्वत्र॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृश्चिकसंस्थादर्कात् सप्तमषष्ठोपगौ यदा क्रूरौ।
भवति तदा निष्पत्तिः शस्यानामर्घपरिहानिः ॥

वृश्चिक राशिस्थित सूर्य से सप्तम (वृष) में एक और सप्तमभिन्न केन्द्र (कुम्भ या सिंह) में दूसरा पापग्रह हो, तो धान्यों का नाश करता है। यदि वे दोनों पापग्रह (मंगल, शनि) शुभ ग्रहों से देखे जाते हों तो सर्वत्र नहीं; अपितु कहीं-कहीं पर धान्यों का नाश करते हैं।

यदि वृश्चिकस्थित सूर्य से सप्तम और षष्ठ स्थान में दो पापग्रह (मंगल और शनि) बैठे हों तो धान्यों की निष्पत्ति होती है और धान्य की महँगाई की हानि होती है।

वादरायणः

स एव योगाभिहितो वृश्चिकस्थे दिवाकरे।
वृषेऽपि ते शारदानां चिन्तनीया यथार्थतः ॥

जो योग वृश्चिकस्थ सूर्य के रहने पर कहे गये हैं, उसी तरह वृष राशिगत सूर्य के समय होने से शारदीय धान्यों का नाश या निष्पत्ति जानना चाहिये।

वराहसंहितयोः

विधिनाऽनेनैव रविर्वृषप्रवेशे शरत्समुत्थानाम्।
विज्ञेयः शस्यानां नाशाय शिवाय वा तज्ज्ञैः ॥

त्रिषु मेषादिषु सूर्यः सौम्ययुतो वीक्षितोऽपि वा विचरन्।
ग्रैष्मिकधान्यं कुरुते समर्घमुभयोपभोग्यं च ॥

कार्मुकमृगघटसंस्थः शारदशस्यस्य तद्वदेव रविः।
संग्रहकाले ज्ञेयो विपर्ययः क्रूरदृग्योगात् ॥

पूर्व स्थिति (वृश्चिक में प्रवेश की तरह) वृष राशिगत सूर्य के समय शारदीय धान्यों का नाश या निष्पत्ति पण्डितों को जानना चाहिये।

मेष आदि तीन राशियों (मेष, वृष, मिथुन) में गमन करता हुआ सूर्य यदि शुभग्रह से युत या दृष्ट हो तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्य सस्ते होते हैं तथा लोक-परलोक दोनों के लिए उपयुक्त होते हैं। जैसे बहुत सस्ते धान्य होने के कारण बन्धुवर्गों के साथ खूब उपभोग करने से लोक और दानादि धर्मकार्य करने से परलोक दोनों बन जाते हैं। कहीं-कहीं पर 'अभयोपयोग्यम्' पाठ भी मिलता है। इसका अर्थ यह है कि अभीतिकारक होते हैं अर्थात् ऐसे समय में मनुष्य निर्भय रहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु योगोत्पातेषु योगकर्तृ-ग्रहपूजापूर्विका जपहोमादिका शान्तिः कर्त्तव्या।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे आकृत्यादियोगाद्भुतावर्त्तः

ग्रहयोग से उत्पन्न उत्पातों के होने पर जहाँ विशेष प्रकार की शान्ति नहीं कही गयी है, उनकी शान्ति के लिए योग करने वाले ग्रहों की पूजा, जप, हवन आदि करना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ रव्यादिवर्षाद्भुतावर्त्तः

वटकणिकायाम्

वर्षाधिपा अशुभदा दिनकरतनयप्रभाकरमहीजाः ।
क्षुच्छस्त्रदहनतस्कररोगभयावृष्टयः प्रोक्ताः ॥

शेषाणामतिशुभदं शोभनकनकान्नवारिसम्पूर्णा ।
भवति वसुधा क्रियावाँल्लोकश्च नृपाः स्वभावस्थाः ॥

यदि शनि, सूर्य या मङ्गल वर्षेश हों तो अशुभ फल देने वाले होते हैं तथा क्षुधाभय, अग्निभय, चोर, रोग और अवृष्टि के भय होते हैं। शेष ग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र) वर्षेश हों तो वह वर्ष अति शुभ फल देने वाला होता है तथा पृथ्वी सुन्दर (अतिशय) सुवर्ण, अन्न और जल से पूर्ण होती है, लोग क्रियावान् होते हैं तथा राजा लोग स्वभावस्थ (प्रजा के हितकारी) होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

तीक्ष्णोऽर्कः स्वल्पशस्यश्च गतमेघोऽतितस्करः ।
बहूरगव्याधिगणैर्भास्कराब्दो रणाकुलः ॥

सूर्य का वर्ष प्रचण्ड सूर्य, अल्प धान्य, मेघरहित (अवृष्टि), चोरभय, अतिशय सर्प और व्याधिसमूहों के भय तथा युद्ध से लोगों को पीड़ित करता है।

यवनेश्वरस्तु

दिवाकराब्दे रणविग्रहोग्रपृथ्वीश्वरस्तीव्रविषज्वराग्निः ।
अवर्षशुष्कक्षयशस्यसङ्घः प्रचण्डवह्न्युग्रशिरोऽक्षिरोगाः ॥

सूर्य के वर्ष में युद्ध, परस्पर विरोध, राजा के स्वभाव में उग्रता, तीव्र विष, ज्वर ताप, अवृष्टि के कारण सूखकर धान्यसमूहों का नाश, प्रचण्ड अग्नि, उग्र मस्तकरोग एवं उग्र नेत्ररोग होते हैं।

वराहसंहितयोस्तु

सर्वत्र भूर्विबलशस्यवती वनानि
दैवाद्विभक्षयिषुदंष्ट्रिसमावृतानि ।
स्पन्दन्ति नैव च पयः प्रचुरं स्रवन्ति
रुग्भेषजानि न तथाऽतिबलान्वितानि ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीक्ष्णं तपत्यदितिजः शिशिरेऽपि काले
नात्यम्बुदा जलमुचोऽचलसन्निकाशाः ।
नष्टप्रभर्क्षगणशीतकरं नभश्च
सीदन्ति तापसकुलानि सगोकुलानि ॥

हस्त्यश्वपत्तिमदसह्यबलैरुपैता
बाणासनासिमुशलातिशयाश्चरन्ति ।
घ्नन्तो नृपा युधि नृपानुचरैश्च देशान्
संवत्सरे दिनकरस्य दिनेऽथ मासे ॥

सूर्य के वर्ष, मास या दिन में पृथ्वी पर सब जगह अल्प धान्य, दैववश भक्षण करने वाले दंष्ट्रीगण (सर्प, सूअर आदि जन्तुओं) से संयुक्त वन स्पन्दित (कम्पित), नदियों एवं मेघों में प्रचुर जल का अभाव, रोगनाशक वीर्ययुत औषधियों का अभाव, शिशिर काल (माघ-फाल्गुन) में भी सूर्य का भयङ्कर ताप, पर्वत के समान मेघ से भी अधिक वृष्टि का अभाव, नक्षत्र, चन्द्रमा और आकाश की दीप्ति का नाश, तपस्वीगण और गौओं के समुदाय शोकयुत होते हैं। संग्राम में हाथी, घोड़े, पदातियों से युत असह्य सैन्य, धनु, खड्ग और मुशलों से युत मन्त्री आदि के साथ राजा लोग देशों का नाश करते हुए विचरण करते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

बहुवर्षातिशस्यश्च गवां क्षीरप्रदायकः ।
चन्द्राब्दः कामिनामिष्टश्चित्यङ्कितमहीतलः ॥

चन्द्रमा के वर्ष में अतिशय वर्षा और धान्य, गौओं के समुदाय में दूध, कामिनियों का इष्टसिद्ध और अग्नि (यज्ञादि की अग्नि) से पृथ्वी व्याप्त होती है।

यवनेश्वरस्तु

सम्पन्नशस्याक्षुपशस्यशालिप्ररूढगुल्मो बहुवर्षवारिः ।
रसौषधिस्नेहपटुप्रसेकश्चान्द्रो रतिस्त्रीबलवर्धनोऽब्दः ॥

चन्द्र का वर्ष सभी प्रकार के धान्यों से युत, गुल्म (लता, झाड़ी, वृक्ष) से युत, रस, औषधि, स्निग्ध वस्तुओं से युत तथा रमण करने वाली स्त्रियों के बल (आनन्द) को बढ़ाता है।

वराहसंहितायां तु

व्याप्तं नभः प्रचलिताचलसन्निकाशै-
र्व्यालाञ्जनालिगवलच्छविभिः पयोदैः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गां पूरयद्भिरखिलाममलाभिरद्भि-
रुत्कण्ठितेन गुरुणा ध्वनितेन चाशाः ॥
तोयानि पद्मकुमुदोत्पलवन्त्यतीव
फुल्लद्रुमाण्युपवनान्यलिनादितानि ।
गावः प्रभूतपयसो नयनाभिरामा
रामा रतैरविरतं रमयन्ति रामान् ॥
गोधूमधान्ययवशालिवरेक्षुवाटा
भूः पाल्यते नृपतिभिर्नयकर्मयुक्तैः ।
चित्यङ्किता क्रतुवरेष्टिविघुष्टनादाः
संवत्सरे शिशिरगोरभिसम्प्रवृत्ते ॥

चन्द्र के वर्ष, मास या दिन में गमनशील पर्वत के समान, सर्प, कज्जल, भ्रमर और गवल (महिषशृङ्ग) की कान्ति वाले मेघों से समस्त पृथ्वी को निर्मल जल से पूर्ण करते हुए तथा विरहीजनों के औत्सुक्यजनक गौरवयुक्त (दु:सह) ध्वनियों से दिशाओं को पूर्ण करते हुए मेघों से आकाश आच्छादित होता है। जल (नदी-सरोवर आदि) कमल, कुमुद और उत्पल (कमलविशेष) से युक्त, उपवन प्रफुल्लित वृक्ष और गुञ्जायमान भ्रमरों से युत, अधिक दूध देने वाली गौ, नेत्रों से सुन्दरी स्त्री निरन्तर अपने पति को आनन्द देने वाली, गेहूँ, शाठी, यव, श्रेष्ठ धान्य और इक्षुवारों से युत, नागरिक आकरों (अर्थोत्पत्ति स्थानों) से युत, अग्नि से व्याप्त तथा श्रेष्ठ यज्ञ और इष्टि (पुत्रकाम्यादि यज्ञ) से समन्वित पृथ्वी राजा से नीतिपूर्वक पालित होती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

अग्नितस्कररोगाढ्यो नृपविग्रहदायकः ।
अल्पशस्यो बहुव्यालो भौमाब्दो बालहा भृशम् ॥

मङ्गल का वर्ष अग्निकोप, चौरभय और रोगयुक्त, राजा में विरोध उत्पन्न करने वाला, अल्प धान्य, अधिक सर्पभय और बालक का नाश करता है।

यवनेश्वरस्तु

रणप्रचण्डः क्षितिरल्पशस्या विशुष्कवारिद्रुमशस्यवीरुत् ।
अङ्गारकाब्दः प्रचुरोरगाग्निरातङ्कचौर्यक्षुदवृष्टिदुष्टः ॥

मङ्गल का वर्ष प्रचण्ड युद्ध, अल्प धान्य वाली पृथ्वी, जल-वृक्ष-धान्य-लता-गुल्मादि अति शुष्क, प्रचुर रोग, अग्निभय, चोर, दुर्भिक्ष और अवृष्टि करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

वातोद्धतश्चरति वह्निरतिप्रचण्डो
ग्रामान् वनानि नगराणि च सन्दिधक्षुः।
हाहेति दस्युगणपातहता रटन्ति
निःस्वीकृता विपशवो भुवि मर्त्त्यसङ्घाः॥
अभ्युन्नता वियति संहतमूर्त्तयोऽपि
मुञ्चन्ति कुत्रचिदपः प्रचुरं पयोदाः।
सीम्नि प्रजातमपि शोषमुपैति शस्यं
निष्पन्नमप्यविनयादपरे हरन्ति॥
भूपा न सम्यगभिपालनसक्तचित्ताः
पित्तोत्थरुक्प्रचुरता भुजगप्रकोपः।
एवंविधैरुपहता भवति प्रजेयं
संवत्सरेऽवनिसुतस्य विपन्नशस्या॥

मंगल के संवत्सर, मास या दिन में वायु से सञ्चालित, ग्राम, वन और नगरों को दग्ध करने की इच्छा वाली अग्नि अत्यन्त भयङ्कर होती है। चोरों से लूटे गये पीड़ित मनुष्यगण हाहाकार करते हैं। आकाश में संगठित मूर्ति वाले मेघ कहीं भी अधिक वृष्टि नहीं करते हैं। नीच स्थान (जलस्थान) में भी उत्पन्न धान्य सूख जाते हैं। राजा लोग धर्मतः प्रजापालन में तत्पर नहीं रहते हैं। पित्त से उत्पन्न होने वाले रोगों की अधिकता होती है। सर्पों से लोगों को पीड़ा होती है। इस प्रकार मङ्गल के स्वामित्व में प्रजागण पीड़ित और धान्यों का नाश होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

ब्रह्मक्षत्रस्य शस्यानां जनानां च कलाविदाम्।
वृद्धिप्रदोऽब्दो बौधस्तु भूयः शस्यकरः क्षितौ॥

जिस वर्ष का स्वामी बुध हो, उस वर्ष में ब्राह्मण, क्षत्रिय, धान्यों, कलाविद लोगों की वृद्धि (शुभ) होती है और समस्त पृथ्वी पर अतिशय धान्यवृद्धि होती है।

यवनेश्वरस्तु

सन्धानदानप्रयतः क्षितीशः स्वाध्यायतीर्थानुरतिर्द्विजौघः।
निराधिरुत्पादितशस्यवर्षो बौधः सुहृत्स्नेहविवर्धनोऽब्दः॥

बुध के वर्ष में राजा लोग प्रजापालन और दान-धर्म में रत रहते हैं। ब्राह्मण लोग स्वाध्याय और तीर्थसेवन में लीन रहते हैं। उपद्रवों से मुक्त धान्य और वर्षा होती है तथा मित्रों में परस्पर प्रेमभाव की वृद्धि होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

माहेन्द्रजालकुहकाकरनागराणां
गान्धर्वलेख्यगणितास्त्रविचारवृद्धिः ।
पिप्रीषया नृपतयोऽद्भुतदर्शनानि
दित्सन्ति तुष्टिजननानि परस्परेभ्यः ॥

वार्त्ता जगत्यवितथा विकलात्रयी च
सम्यक् चरत्यपि मनोरिव दण्डनीतिः ।
मध्यस्थतासु विनिविष्टधियोऽपि केचि-
दान्वीक्षिकीषु च परं पदमीहमानाः ॥

हास्यज्ञदूतकविबालनपुंसकानां
युक्तिज्ञसेतुजलपर्वतवासिनां च ।
हार्दिं करोति मृगलाञ्छनजः स्वकेऽब्दे
मासेऽथ वा प्रचुरतां भुवि चौषधीनाम् ॥

बुध के वर्ष, मास या दिन में इन्द्रजाल विद्या को जानने वाले, कुहक (आश्चर्य देखने वाले), आकर (अर्थोत्पत्ति स्थान) को जानने वाले, नगरों में रहने वाले, गन्धर्व (गान) विद्या को जानने वाले, लेखक, गणितज्ञ और अस्त्रविद्या को जानने वाले उन्नतियुत होते हैं। राजा लोग परस्पर प्रीति बढ़ाने की इच्छा से आश्चर्यजनक और हर्षोत्पादक द्रव्य परस्पर एक-दूसरे को देने की इच्छा करते हैं।

वार्त्ता (कृषि, पशुपालन और वाणिज्य) अवितथा (सफल) होती है। त्रयी (ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद) का अत्यधिक पाठ होता है। मनुरचित दण्डनीति नामक पुस्तकोक्त नीति की तरह नीति चलती है अर्थात् जिस प्रकार मनु राजा प्रजापालन करते थे, उसी तरह उस वर्ष राजा अपनी प्रजा की रक्षा करते हैं। कहा भी है—

गोरक्षकृषिवाणिज्यं सेवावर्जं परिग्रहम् ।
वर्त्तनं जीवनं चैव वार्त्ता तूज्जीवनं स्मृतम् ।।

ऋजो यजूंषि सामानीत्येषा त्रय्यभिधीयते ।
त्रय्यां धर्मस्थितिर्वृत्तो दण्डनीत्यां च रक्षणम् ।।

कोई अध्यात्म विद्या (योगशास्त्र) में और कोई आन्वीक्षिकी (तर्कविद्या) में निरत होते हैं। हास्यज्ञ, दूत, कवि, बालक, नपुंसक, युक्तिज्ञ, सेतु (स्थल), जल और पर्वत पर निवास करने वाले प्रसन्न होते हैं तथा पृथ्वी पर औषधियों की प्रचुरता होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

बहुयज्ञोऽतिशस्यश्च गोगजाश्वहितस्तथा ।
बहुवृष्टिप्रदः क्षेमो जीवाब्दो द्विजपुष्टिदः ॥

बृहस्पति का वर्ष बहुत यज्ञ कराने वाला, अतिशय धान्य उत्पन्न करने वाला, गाय, हाथी और घोड़े के लिए हित करने वाला, बहुत वर्षा कराने वाला तथा ब्राह्मणों को पुष्ट करने वाला होता है।

यवनेश्वरस्तु

सुवर्षयज्ञोत्सवसम्प्रदानो नीरुग्व्यथो धर्मपरोऽवनीशः ।
स्फीतानुपानैर्बहुशस्यकर्त्ता गुरोश्च धर्मप्रयतप्रजोऽब्दः ॥

बृहस्पति के वर्ष में सुन्दर वृष्टि, यज्ञ, उत्सव, दान, निरोग, व्यथारहित और धर्मरत राजा होते हैं। स्फीत (उत्तम) अनुपान (रस, दुग्ध आदि), बहुत धान्य की उत्पत्ति तथा प्रजा धर्म-कर्म में लीन रहती है।

वराहसंहितायां तु

ध्वनिरुच्चरितोऽध्वरे द्युगामी विपुलो यज्ञमुषां मनांसि भिन्दन् ।
विचरन्त्यनिशं द्विजोत्तमानां हृदयानन्दकरोऽध्वरांशभाजाम् ॥

क्षितिरुत्तमशस्यवत्यनेकद्विपपत्त्यश्वधनोरुगोकुलाढ्या ।
क्षितिपैरतिपालनप्रवृद्धा द्युचरस्पर्धिजना तदा विभान्ति ॥

विविधैर्वियदुन्नतैः पयोदैर्वृतमुर्वी पयसाऽभितर्पयद्भिः ।
सुरराजगुरोः शुभेऽथ वर्षे बहुशस्या क्षितिरुत्तमर्द्धियुक्ता ॥

गुरु के वर्ष, मास या दिन में यज्ञों में रात्रिवर्जित काल में श्रेष्ठ ब्राह्मणों से उच्चरित, विस्तीर्ण, स्वर्ग तक पहुँचने वाली, यज्ञ में विघ्न करने वाले राक्षसों के मन को भेदन करने वाली और इन्द्रादि देवताओं के मन को प्रसन्न करने वाली वेदध्वनि होती है। राजाओं से अच्छी तरह परिरक्षित, उत्तम धान्य, बहुत हाथी, पदाति, घोड़ा, धन और विस्तृत गोकुलों से पृथ्वी परिपूर्ण होती है। देवता के समान (सुखी) मनुष्य होते हैं। हमेशा पृथ्वी को जल से परिपूर्ण करते हुए उन्नत, विविध मेघों से आकाश व्याप्त होता है तथा पृथ्वी बहुत तरह के धान्य और समृद्धि से युत होती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

शस्याढ्यो धर्मबहुलो गतातङ्को बहूदकः ।
कामिनां कामदः कामं सिताब्दो नृपपुष्टिदः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र का वर्ष धान्यों से सम्पन्न, धर्मबहुल, आतङ्करहित, अधिक जल देने वाला, कामियों की मनोभिलषित कामनाओं की पूर्त्ति और राजाओं के लिये पुष्टिकारक होता है।

यवनेश्वरस्तु

पर्याप्तशस्यस्फुटकृष्णमेघाः प्ररूढवल्लीनवशस्यपुष्पाः।
कामः प्रकामः क्षितिपैरथाढ्यः शौक्रोऽङ्गनाहर्षवसुप्रदोऽब्दः॥

शुक्र का वर्ष अधिक धान्य, स्पष्ट और काले मेघों से युक्त, पुष्ट वृक्ष, गुल्म और लतायें नवीन धान्य की तरह पुष्पों से युक्त अर्थात् अतिशय पुष्पयुक्त, राजा धन-धान्य, सैन्यबल आदि से युक्त तथा स्त्रियों को हर्ष और धन देने वाला है।

वराहसंहितायां तु

शालीक्षुमत्यपि धरा धरणी धराभ-
धाराधरोज्झितपयःपरिपूर्णवप्रा।
श्रीमत्सरोरुहतताम्बुतडागकीर्णा
योषेव भात्यभिनवाऽभरणोज्ज्वलाङ्गी॥

क्षत्रं क्षितौ क्षपितभूरिबलारिपक्ष-
मुद्घुष्टनैकजयशब्दविराविताशम्।
संहृष्टशिष्टजननष्टविनष्टवर्गां
गां पालयन्त्यवनिपा नगराकराढ्याम्॥

पेपीयते मधु मधौ सह कामिनीभि-
र्जेगीयते श्रवणहारि सवेणुवीणाम्।
बोभुज्यतेऽतिथिसुहृत्स्वजनैः सहान्न-
मब्दे सितस्य मदनस्य जयावघोषः॥

शुक्र के वर्ष, मास या दिन में शालि (धान्य) और ईक्षु (ईख = गन्ना) से युत, पर्वत के समान मेघों से गिरे हुए जल से परिपूर्ण तट वाली, सुन्दर कमल और जल से परिपूर्ण तालाब से व्याप्त; अतः विविध वर्णों से युत पृथ्वी सम्पूर्ण भूषणों से युत स्त्री की तरह शोभित होती है। पृथ्वी पर शत्रुपक्ष की बहुत सेनाओं का नाश करने से उद्घोषित 'जय' शब्दों से सब दिशाओं को पूर्ण करने वाले राजवर्ग होते हैं। आनन्दयुत सज्जनगण, विनष्ट दुर्जनगण और अर्थोत्पत्ति स्थानों से युत पृथ्वी होती है। वसन्त के समय में स्त्रियाँ आनन्दपूर्वक बार-बार मद्यपान करती हैं, बांसुरी और वीणा के साथ श्रवणसुखद गीत गाती हैं। अभ्यागत, मित्र और बन्धुओं के साथ बार-बार भोजन करती हैं तथा सभी जगह कामदेव का जयघोष (जय-जयकार) होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

दुर्भिक्षमरकौ रोगान् करोति पवनं तथा।
शनैश्चराब्दश्चौराँश्च विग्रहानिव भूभृताम् ॥

शनैश्चर के वर्ष में दुर्भिक्ष, मरकी, रोग, वायुप्रकोप, चौरभय और राजाओं में विग्रह होते हैं।

यवनेश्वरस्तु

दुष्टाल्पवर्षः प्रबलानिलोऽपि विपन्नशस्यश्चलितक्षितीशः।
मृत्युक्षुधातङ्कभयोपसृष्टः शनैश्चराब्दः पशुशूद्रगोघ्नः ॥

शनैश्चर का वर्ष दूषित और अल्प वर्षा करने वाला, प्रबल वायु-प्रकोप वाला, धान्य नाश करने वाला, मृत्यु-क्षुधा-आतङ्क-भय से राजाओं को विचलित करने वाला, पशु, शूद्र और गोकुलों का नाश करने वाला होता है।

वराहसंहितायां तु

उद्धृत्तदस्युगणभूरिरणाकुलानि
राष्ट्राण्यनेकपशुवित्तविनाकृतानि ।
रोरूयमाणहतबन्धुजनैर्जनैश्च
रोगोत्तमाकुलकुलानि बुभुक्षया च ॥

वातोद्धताम्बुधरवर्जितमन्तरीक्ष-
मारुग्णनैकविटपं च धरातलं द्यौः।
नष्टाऽर्कचन्द्रकिरणातिरजोनिरुद्धा
तोयाशयाश्च विजलाः सरितोऽपि तन्व्यः ॥

जातानि कुत्रचिदतोयतया विनाश-
मृच्छन्ति पुष्टिमपराणि जलोक्षितानि।
शस्यानि मन्दमभिवर्षति वृत्रशत्रौ
वर्षे दिवाकरसुतस्य सदा प्रवृत्ते ॥

शनि के वर्ष, मास या दिन में चोरों से व्याप्त, अधिक युद्ध से व्याकुल, पशु और धनों से रहित, संग्राम में बन्धुजनों के मरण से बार-बार रोते हुए वंशों से युत मनुष्य प्रधान रोग और क्षुधा से अतिशय व्याकुल राष्ट्र होते हैं। वायु से उड़ाये गये मेघों से रहित आकाश होता है। पृथ्वी अनेक प्रकार से नष्ट वृक्षों से युत होती है। सूर्य और चन्द्र-किरण से रहित आकाश होता है और धूलियों के उड़ने से आकाश स्थगित होता है। तोयाशय (वापी, कूप, तालाब) जलविहीन होते हैं। नदियों में अत्यन्त कम जल होता है। वृत्रशत्रु (इन्द्र) अल्प वर्षा करता है। इसलिए कहीं-कहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर जल के विना धान्य नष्ट हो जाते हैं और कहीं-कहीं पर जल से सिक्त होकर पुष्ट होते हैं।

तत्रैव

अणुरपटुमयूखो नीचगो निर्जितो वा
न सकलफलदाता पुष्टिदाताऽन्यथाऽतः।
यदशुभमशुभेऽब्दे मासजं तस्य वृद्धिः
शुभफलमपि चैवं याप्यमन्योन्यतायाम्॥

जो ग्रह सूक्ष्म, अस्पस्ट किरण वाला, नीच स्थानगत एवं ग्रहयुद्ध में पराजित हो, वह सम्पूर्ण (उक्त) फल देने वाला नहीं होता है। इसके विपरीत लक्षण से सम्पूर्ण फल होता है। अशुभ ग्रह (रवि, मंगल, शनि) के वर्ष में अशुभ ग्रह के मासाधिप होने से अत्यन्त अशुभ फल होता है तथा वर्षाधिप और मासाधिप दोनों शुभ ग्रह हों तो शुभ फल की वृद्धि होती है तथा एक शुभ और एक अशुभ हो तो याप्य (अल्प) फल होता है।

यवनेश्वरः

अब्दाश्रयं लक्षणमीरितं यद्ग्रहस्वभावप्रभवं जनानाम्।
तदेव तन्मासदिनर्त्तुयुक्तं तदीश्वरस्थानविकल्पितं च॥

वर्षाधिप ग्रह के स्वभाव से उत्पन्न होने वाले शुभ या अशुभ फलों का लक्षण जिस प्रकार कहा गया है, उसी तरह मासेश, दिवसेश और ऋतु-स्वामी के स्वभाव एवं स्थान आदि के बलाबल के अनुसार लोगों को फल जानना चाहिये।

अथ वत्सराधिपगणनं विष्णुधर्मोत्तरे

सप्तच्छिन्ने तु यच्छेषं कलियातसमागणे।
आदित्यादिः स बोद्धव्यो ग्रहः संवत्सराधिपः॥

कलियुगादि से अभीष्ट शकाब्दपर्यन्त जितने वर्षसमूह हों उन कलिगताब्द संख्या में सात से भाग देने पर जो शेष रहें, वह रवि आदि से गणनानुसार संवत्सराधिप होते हैं अर्थात् एक शेष होने पर सूर्य, २ होने पर चन्द्र — इस प्रकार संवत्सराधिप का आनयन करना चाहिये। परन्तु ब्रह्मगुप्त ने कल्पाभिप्राय से अर्कादि-वर्षेश्वर की गणना की है, तदनुसार 'कलियातसमागणे' की जगह 'कल्पयातसमागणे' होना चाहिये।

अथ कलेर्गतसंवत्सराः

नन्दमैत्राग्नि३१७९संयुक्तः शककालः कलेर्गतः।

विशेषः– मैत्रशब्देनात्र सप्तदशग्रहणम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शकाब्दारम्भ से पूर्व ३१७९ वर्ष कलियुग के बीत गये थे। इसलिए कलिगताब्द लाने के लिए अभीष्ट शकाब्द में ३१७९ वर्ष जोड़ना चाहिये।

ब्रह्मसिद्धान्तकृता तु

'सावनवर्षाधिपोऽर्कादिः' – इत्युक्तम्।

एकादि शेष होने से सूर्यादि ग्रह सावनवर्षपति होते हैं।

विशेष– कल्पादि अहर्गण को तीस से भाग देने पर जो लब्ध हो, उसको द्विगुणित कर एक जोड़कर सात से भाग देने पर जो शेष हों, वे सूर्य आदि सावन मासपति होते हैं एवं कल्पगताहर्गण को तीन सौ साठ से भाग देने पर जो लब्ध हो, उसे तीन से गुणा कर तथा एक जोड़कर सात से भाग देने पर जो शेष रहें, वे रवि आदि वर्षपति होते हैं।

अतस्तन्मतेनैतद्ग्रन्थारम्भशकाद्वर्षाधिपगणनम्

खनवदश१०९०शेषकाले माघप्रथमांशके सितोऽब्दपतिः।
चतुरंशोनैकाब्दे तुर्यस्य दिने तु सावनाब्दपतिः॥

ग्रन्थारम्भ शकाब्द १०९० के शेष काल (अन्त समय) में माघ शुक्लादि में बार्हस्पत्य संवत्सर के अनुसार गणना से वर्षपति शुक्र हुआ। सौरमान से बार्हस्पत्यमान लगभग चार दिन न्यून होता है। यथा— एक बार्हस्पत्य वर्ष में ३६१ सावन दिन १ घटी ३६ पल और एक सौरवर्ष में ३६५ दिन, १५ घटी, २२ पल ३० विपल होते हैं। इसलिए उक्त वर्षपति से चौथा दिन अर्थात् शुक्र से चौथा चन्द्र सावनाब्दपति १०९० शकाब्द के अन्त अर्थात् १०९१ के आरम्भ में हुआ।

एवम्

वर्षाधिपास्तृतीयक्रमेण मासाधिपाः ग्रहा ज्ञेयाः।
होरेशा वारेशा स्पष्टा होराऽत्रनाडिके सार्धे॥

इस तरह वर्षाधिप से अग्रिम वर्षाधिप चतुर्थ ग्रह (दिन) तथा मासाधिप से अग्रिम मासाधिप तृतीय ग्रह (दिन) होते हैं। इस प्रकार होरेश और वारेश का आनयन करना चाहिये। स्पष्ट होरा का मान ढाई दण्ड ($२\frac{१}{२}=\frac{५}{२}$ दण्ड) होता है।

आशय यह है कि मासपति तीसरे-तीसरे होते हैं अर्थात् यदि मास रवि है तो अन्य मासपति भौम होंगे। इसी तरह तीसरे-तीसरे मासपति होते हैं। एवं सावनवर्षपति चौथे-चौथे होते हैं; वारपति अनन्तर अर्थात् रवि के बाद चन्द्रवार इस क्रम से होते हैं। होरेश छठे-छठे होते हैं। शनैश्चर से अधोधः कक्षा क्रम से कालहोरेश होते हैं। जैसे शनिवार को प्रथम कालहोरेश शनि, द्वितीय गुरु, तृतीय मंगल इत्यादि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्योदय से अढ़ाई-अढ़ाई दण्ड की एक कालहोरा होती है। प्रथम कालहोरेश वारेश ही होते हैं। द्वितीयादि कालहोरेश पूर्वोक्त प्रकार से समझना चाहिये।

वर्षपति का उदाहरण —

कलियात वर्ष	=	३१७९
ग्रन्थारम्भशकाब्द	=	१०९०
ग्रन्थारम्भशकाब्दपर्यन्त कलियात वर्ष	=	४२६९

४२६९ में ६ से भाग देने पर शेष ६ होता है। इसलिए सूर्यादिगणना से १०९० शकाब्द के अन्त में अर्थात् १०९१ के आरम्भ में शुक्र वर्षपति हुआ, जो ग्रन्थकार ने उक्त श्लोक में कहा है। परन्तु सम्प्रति शकाब्द का आरम्भ मेषादि से माना जाता है। ग्रन्थकार ने माघ कृष्ण प्रतिपत् तिथि को लक्ष्मण संवत् के आरम्भ के अनुरोध से कहा है। इससे आगे के वर्षपति चतुर्थ-चतुर्थ दिन को सावन वर्षपति माना है।

अत्राशुभफलवर्षे वर्षाधिपग्रहपूजाजपहोमादिका शान्तिः कर्त्तव्या।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्वल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे रव्यादिवर्षाद्भुतावर्त्तः

अशुभ फल देने वाले वर्ष में वर्षपति ग्रह की पूजा, उनका जप एवं हवन आदि शान्ति करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ संवत्सराद्भुतावर्त्तः

विष्णुधर्मोत्तरे

आद्यः संवत्सरो नाम द्वितीयः परिवत्सरः ।
इदाख्यश्च तृतीयोऽत्र चतुर्थश्चानुवत्सरः ॥
इद्वत्सरोऽन्यः कथितस्तथा चैवात्र पञ्चमः ।

कार्त्तिक आदि बारह मासों की तरह १२ युग होते हैं । प्रत्येक युग में पाँच-पाँच संवत्सर होते हैं । प्रथम का नाम संवत्सर, द्वितीय परिवत्सर, तृतीय इदावत्सर, चौथा अनुवत्सर और पाँचवाँ इद्वत्सर है ।

पराशरः

अथ वर्षेषु तावदाग्नेयः संवत्सरः परिवत्सर
इदावत्सरश्चान्द्रो वायव्योऽथ वत्सरः ।

पराशर के अनुसार पाँचों संवत्सरों में संवत्सर और परिवत्सर का स्वामी अग्नि, इदावत्सर का स्वामी चन्द्र और शेष अनुवत्सर तथा इद्वत्सर का स्वामी वायु है ।

विष्णुधर्मोत्तरे

संवत्सरोऽग्निः परिवत्सरोऽर्कः इदाभिधानो भगवाँच्छशाङ्कः ।
ब्रह्मा स्वयम्भूरनुवत्सरोऽत्र इद्वत्सरः शैलसुतापतिश्च ॥
वृष्टिः समाद्ये प्रमुखे द्वितीये प्रभूततोया कथिता तृतीये ।
पश्चाज्जलं मुञ्चति यच्चतुर्थं स्वल्पोदकं पञ्चममब्दमुक्तम् ॥

विशेषः– वराहसंहितायामप्येवमुक्तम् ।

संवत्सर का स्वामी अग्नि, परिवत्सर का स्वामी सूर्य, इदावत्सर का स्वामी चन्द्र, अनुवत्सर का स्वामी ब्रह्मा और इद्वत्सर का स्वामी शिव है ।

संवत्सर नामक वर्ष में मध्यम वृष्टि वर्षा ऋतु (श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक मासों) में होती है । परिवत्सर नामक वर्ष में प्रमुख आदि के दो मासों (श्रावण, भाद्र) में वृष्टि होती है, इदावत्सर नामक वर्ष में चारो मासों में बहुत वृष्टि होती है, अनुवत्सर नामक वर्ष में अन्त में (आश्विन, कार्त्तिक) वृष्टि होती है और इद्वत्सर नामक वर्ष में थोड़ी वृष्टि होती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरस्तु

आग्नेये विद्यात् प्राबल्यमग्नेः पैत्तिकानां च रोगाणाम्। सौरे शङ्करसूनुनामक्षामपुष्पफलशस्यदमतीव। चान्द्रे ग्रैष्मिकाणां व्याधीनां बहुत्वमन्नस्य सम्पदं सर्वौषधीनां च विशेषेण क्षीरणीनाम्। वायव्ये वातवेगवान् वातरोगप्राबल्यं घनानामल्पोदकत्वं च। मार्त्त्यवे सर्वव्याधिप्राबल्यं बालमरकं गर्भस्रावं च – इति।

आग्नेय संवत्सर में अग्नि की प्रबलता और पित्तविकार से उत्पन्न होने वाले रोगों की प्रबलता होती है। सौर (परिवत्सर) नामक संवत्सर शंकरपुत्र रुद्राक्ष, विना पुष्प वाले फल और धान्य के लिए शुभ होता है। चान्द्र (इदावत्सर) नामक संवत्सर में गर्मी ऋतु में व्याधियों की उत्पत्ति, अन्न सम्पदा और सर्वौषधियों की वृद्धि होती है; विशेष रूप से दूध वाली औषधि और जीव (गाय आदि) का शुभ होता है। वायव्य (अनुवत्सर) में हवा में तीव्रता, वातरोग की प्रबलता और मेघों में स्वल्प जल होता है। मार्त्त्यव (इद्वत्सर) नामक संवत्सर में सभी प्रकार के रोगों की प्रबलता, बालमरण और गर्भस्राव होते हैं।

अथ संवत्सरादिगणनम्

खनववियदिन्दु१०९०हीना व्येकाः शकवत्सराः शरैस्तष्टाः।
क्रमशोऽत्र सम्परीदान्विन्द्वाद्या वत्सराः पञ्च॥

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे संवत्साद्यद्भुतावर्त्तः

इष्ट शकाब्द में से १ घटाकर जो शेष हो, उससे १०९० घटाकर ५ से भाग देने पर एकादि लब्धि क्रमशः सं (संवत्सर), परि (परिवत्सर), इदा (इदावत्सर), अनु (अनुवत्सर) और इद्व (इद्वत्सर)— ये पाँच वत्सर होते हैं।

उदाहरण— इष्टगत शकाब्द १८६७ से १ घटाने से १८६६; पुनः १८६६ से १०९० घटाकर (१८६६-१०९०) शेष ७६६ में ५ से भाग देने पर लब्धि ५५५, शेष-१। शेष १ में १ जोड़ने से वर्त्तमान वत्सर २ = परिवत्सर नामक हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ ऋक्षाद्यद्भुतावर्त्तः

ऋक्षं नक्षत्रं राशिश्च । वटकणिकायाम्

नक्षत्राणां तारकाः सग्रहाणां धूमज्वालाविस्फुलिङ्गान्विताश्चेत् ।
आलोकं वा निर्निमित्तं न यान्ति ध्वंसं यायात् सर्वलोकः सभूपः ॥

यदि ग्रहयुक्त नक्षत्रों की तारायें धूम, ज्वाला और अग्निकणों से युक्त या विना निमित्त प्रकाशरहित दिखाई दें, तो राजासहित सभी लोकों का नाश होता है ।

विष्णुधर्मोत्तरे

रोहिणीशकटं भिन्द्युर्ग्रहा यदि भवेत्तदा ।
नाशः प्रजानां क्रूरैश्च विशेषेणेह संक्रमे ॥

यदि ग्रहों के द्वारा रोहिणीशकट का भेदन हो तो दुष्टों के द्वारा प्रजाओं का नाश होता है । संक्रमण काल में रोहिणीशकट का भेदन हो तो विशेष रूप से प्रजाओं का विनाश होता है ।

वराहसंहितयोः

प्राजापत्ये शकटे भिन्ने कृत्वैव पातकं वसुधा ।
केशास्थिशकलबाला कापालिकमिव व्रतं धत्ते ॥

यदि रोहिणीशकट का ग्रह भेदन करे तो पापकर्म से दुष्टों के द्वारा लोगों की मृत्यु होती है । पृथ्वी कापालिक (संन्यासी; जो श्मशान में रहता है) की तरह मनुष्यों के केश और हड्डियों को धारण कर शवल (विचित्र) हो जाती है अर्थात् सर्वत्र शव ही शव दिखाई देते हैं ।

बृहत्संहितायाम्

रोहिण्याऽनलभं च वत्सरतनुर्नाभिस्त्वषाढाद्वयं
सार्पं हृत् पितृदैवतं च कुसुमं शुद्धैः शुभैस्तैः फलम् ।
देहे क्रूरनिपीडितेऽग्न्यनिलजं नाभ्यां भयं क्षुत्कृतं
पुष्ये मूलफलक्षयोऽथ हृदये शस्यस्य नाशो ध्रुवम् ॥

संवत्सर पुरुष का नक्षत्र के अनुसार फल कहा गया है— संवत्सर पुरुष का रोहिणी और कृत्तिका नक्षत्र शरीर, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नाभि, आश्लेषा हृदय और मघा पुष्प है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि संवत्सर पुरुष के शरीर आदि अङ्ग शुद्ध (पापग्रह से रहित) और शुभ ग्रह से युक्त हों तो शुभ फल देते हैं। यदि देह (रोहिणी और कृत्तिका) में पापग्रह हों तो अग्नि और वायु का भय, नाभि (पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा) में पापग्रह हों तो दुर्भिक्ष का भय, पुष्प (मघा) में पापग्रह हों तो मूल (मूल पदार्थ) और फलों का क्षय तथा हृदय (आश्लेषा नक्षत्र) में पापग्रह हों तो धान्यों का नाश होता है।

काश्यपश्च

कृत्तिका रोहिणी चोभे संवत्सरतनुः स्मृता।
आषाढाद्‌द्वितयं नाभिः सार्पं हृत् कुसुमं मघा॥
क्रूरग्रहहते देहे दुर्भिक्षानलमारुताः।
क्षुद्भयं तु भवेन्नाभ्यां पुष्ये मूलफलक्षयः॥
हृदये शस्यहानिः स्यात् सौम्यैः पुष्टिः प्रकीर्त्तिता।

संवत्सर पुरुष के कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र शरीर, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नाभि, आश्लेषा हृदय एवं मघा पुष्प हैं। यदि संवत्सर पुरुष का देह (कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्रों) पापग्रह से आहत (पीड़ित) हो तो दुर्भिक्ष, आग और वायु का भय; नाभि (दोनों आषाढ़ा नक्षत्र) पापग्रह से पीड़ित हो तो मूल (मूल पदार्थ) और फलों का नाश; हृदय (आश्लेषा) पापग्रह से पीड़ित हो तो धान्यों का नाश होता है तथा संवत्सर पुरुष के उक्त देहादि अंग शुभ ग्रहों से युक्त (पापग्रहों से शुद्ध = रहित) हों तो सबों की वृद्धि होती है।

पराशरः

अथ ऋक्षाणि रहस्यभूतानि भवन्ति। तद्यथा– कृतिका रोहिणी मघा प्रौष्ठपदं सार्पमैन्द्रं वारुणं याम्यमाप्यं वैश्वदेवं च। तेषूपसृष्टेषु शुभग्रहाणां वक्रचारोदयास्तमयैः शुभानामप्यथ यथोक्तचारैर्भूकम्पोल्कापातनिर्घाताशनि-राहुकेतुविकृतैर्वर्षासु वर्षं विद्यात्। समग्रैरुपसृष्टैः फल-सामग्र्यमसमग्रैरसामग्र्यम्। रोहिणीज्येष्ठाप्रौष्ठपदाना-मुपघाते तीव्रतरं फलम्।

दश नक्षत्र रहस्यमय (शुभाशुभ सूचकों में विशिष्ट) होते हैं। कृत्तिका, रोहिणी, मघा, पूर्वभाद्र, आश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, पूर्वाषाढ और उत्तराषाढ— ये दश नक्षत्र हैं। यदि ये नक्षत्र शुभ ग्रहों के वक्रचार, उदय और अस्तमय से पीड़ित हों अथवा शुभ ग्रहों के यथोक्त चारों के समय भूकम्प, उल्कापात, निर्घात, वज्रपात, राहु और केतु के विकार (उत्पात) वर्षाकाल में हों तो वर्षा होती है। यदि समग्र (सभी) उत्पात एक साथ हों तो फलसमग्रता (पूर्ण फल) और यदि असमग्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(कोई एक या न्यूनाधिक) उत्पात हो तो फल की असमग्रता (अल्प फल) होती है। रोहिणी, ज्येष्ठा, पूर्वभाद्र— इन नक्षत्रों के उपहत (पीड़ित) होने पर तीव्रतर (अधिक अनिष्ट) फल होता है।

अपि च

वारुणं पित्र्यमाग्नेयं ज्येष्ठामपि च रोहिणीम्।
पीडयेयुर्यदैतानि राहुषष्ठाधिकारिणः॥

दुर्भिक्षं जायते लोके शस्यमत्र न रोहति।
शुष्यन्ति सरितः सर्वाः पर्जन्यश्च न वर्षति॥

एतेष्वनुपतप्तेषु दशमर्क्षेषु कालवित्।
विमुक्तान्तकसन्तापं जगद्वर्षासु निर्दिशेत्॥

यदि शतभिषा, मघा, कृत्तिका, ज्येष्ठा और रोहिणी को कन्या राशि का स्वामी राहु पीड़ित करे तो संसार में दुर्भिक्ष होता है, धान्य नहीं उगते हैं, सभी नदियाँ सूख जाती हैं और मेघ नहीं बरसते हैं। ये नक्षत्र यदि राहु से पीड़ित नहीं हों तो उक्त नक्षत्रों से दशवें नक्षत्रों में यमताप से मुक्त हुए संसार में वर्षा होती है— ऐसा दैवज्ञ को कहना चाहिये।

वराहसंहितयोः

रविरविसुतभोगमागतं क्षितिसुतभेदनचक्रभूषितम्।
ग्रहणहतमथोल्कया हतं नियतमुखाकरपीडितं च यत्॥

तदुपहतमिति प्रचक्षते प्रकृतिविपर्ययपातमेव च।
निगदितपरिवर्गदूषणं कथितविपर्ययगं समृद्धये॥

विशेषः– निगदितपरिवर्गदूषणमिति रव्यादिभोगदृष्टं नक्षत्रं स्वर्गदूषणं करोतीत्यर्थः।

सूर्य और शनि से भुक्त, मङ्गल के भेदन या वक्रगमन से दूषित, ग्रहणकालिक, उल्का से हत, चन्द्रमा से पीड़ित (चन्द्रमा जिस नक्षत्र की योगतारा को आच्छादित या उसके दक्षिण भाग से गमन करे) या स्वाभाविक उत्तम गुण से रहित नक्षत्र हों तो इस तरह पीड़ित नक्षत्र अपने वर्ग का नाश और उक्त से भिन्न लक्षणयुक्त हों तो उनकी वृद्धि करता है।

अथ नक्षत्रवर्गः। वराहसंहितायाम्

आग्नेये सितकुसुमाहिताग्निमन्त्रज्ञसूत्रभाष्यज्ञाः।
आकविकनापितद्विजपटकारपुरोहिताब्दज्ञाः॥

श्वेत पुष्प, अग्निहोत्री, मन्त्र जानने वाले, यज्ञशास्त्र को जानने वाले, वैयाकरण, अर्थोत्पत्ति स्थान (खान) में नियुक्त लोग, हजाम, ब्राह्मण, जुलाहा (पाठान्तर से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घटकारः = कुम्भकार), पुरोहित, ज्यौतिषी— ये सब कृत्तिका के वर्ग में हैं अर्थात् कृत्तिकागत पदार्थ हैं।

रोहिण्यां सुव्रतपण्यभूपधनियोगयुक्तशाकटिकाः।
गोवृषजलचरकर्षकशिलोच्चयैश्वर्यसम्पन्नाः ॥

सुन्दर व्रती, पण्यवृत्ती (व्यापारी), राजा, धनी, योग, गाड़ी से आजीविका चलाने वाले, गौ, बैल, जलचर जन्तु, किसान, पर्वत और ऐश्वर्ययुत लोग रोहिणी नक्षत्र के वर्ग में हैं।

मृगशिरसि सुरभिवस्त्राब्जकुसुमफलरत्नवनचरविहङ्गाः।
मृगोमपीथिगान्धर्वकामुका लेखहाराश्च ॥

सुगन्धित वस्तु, वस्त्र, जलोत्पन्न द्रव्य (कमल आदि), पुष्प, फल, रत्न, वनवासी, पक्षी, मृग, सोमरस का पान करने वाले, गानविद्या जानने वाले, कामी पुरुष और पत्रवाहक मृगशिरा नक्षत्रगत वर्ग में आते हैं।

रौद्रे वधबन्धानृतपरदारस्तेयशाठ्यभेदरताः।
तुषधान्यतीक्ष्णमन्त्राभिचारवेतालकर्मज्ञाः ॥

वध करने वाले, प्राणियों को बान्धने वाले, असत्य बोलने वाले, चोर, शठ (मन, वचंन और कर्म से जो दूसरों को कष्ट दे), भेद कराने वाले, भूसी वाले धान्य, क्रूर कर्म करने वाले, मन्त्रज्ञ, अभिचारज्ञ (वशीकरण आदि कर्मों को जानने वाले) और वेताल के उत्थापन कर्म को जानने वाले आर्द्रा नक्षत्र के वर्ग में हैं।

आदित्ये सत्यौदार्यशौचकुलरूपधीयशोऽर्थयुताः।
उत्तमधान्यं वणिजः सेवाभिरताः सशिल्पिजनाः ॥

सत्यवादी, उदार (दानी), शौचयुत (पवित्र रहने वाले), कुलीन, रूपवान्, बुद्धिमान्, यशस्वी, धनी, उत्तम धान्य, वणिक्, सेवक और शिल्पी पुनर्वसु नक्षत्रगत पदार्थ हैं।

पुष्ये यवगोधूमाः शालीक्षुवनानि मन्त्रिणो भूपाः।
सलिलोपजीविनः साधवश्च यज्ञेष्टिसक्ताश्च ॥

जौ, गेहूँ, धान्य, ईख (गन्ना), वन, मन्त्री, राजा, जल से आजीविका चलाने वाले (मल्लाह आदि), साधु (सज्जन), याज्ञिक (पुत्रकाम्य आदि विशिष्ट यज्ञ करने वाले)— ये सब पुष्य नक्षत्रगत पदार्थ हैं।

अहिदेवे कृत्रिमकन्दमूलफलकीटपन्नगविषाणि।
परधनहरणाभिरतास्तुषधान्यं सर्वभिषजश्च ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृत्रिम द्रव्य (रासायनिक पदार्थ), कन्द, मूल, फल, कीट, सर्प, विष, दूसरे के धन को हरण करने वाले, भूसी वाले धान्य, सभी प्रकार की औषधि करने वाले— ये सब आश्लेषा नक्षत्र के वर्गगत हैं।

पित्र्ये धनधान्याढ्याः कोष्ठागाराणि पर्वताश्रयिणः।
पितृभक्तवणिक्शूराः क्रव्यादाः स्त्रीद्विषो मनुजाः॥

मघा नक्षत्र के वर्ग में धन-धान्य से युक्त, उत्तम गृह वाले नगर, पर्वत पर निवास करने वाले, माता-पिता के भक्त, वणिक्, वीर, मांसाहारी (कच्चा या पका हुआ मांस भक्षण करने वाले) और स्त्री से द्वेष करने वाले मनुष्य हैं।

प्राक्फाल्गुनीषु नटयुवतिसुभगगान्धर्वशिल्पिपण्यानि।
कार्पासलवणमाक्षिकतैलानि कुमारकाश्चापि॥

नाचने वाले, स्त्री, सबों के प्रिय, गान विद्या को जानने वाले, शिल्पी, क्रय-विक्रय होने वाले द्रव्य, कपास (रूई), नमक, शहद, तैल, बालक— ये सब पूर्वफाल्गुनी नक्षत्रगत हैं।

आर्यम्णे मार्दवशौचविनयपाखण्डदानशास्त्ररताः।
शोभनधान्यमहाधनकर्मानुरताः समनुजेन्द्राः॥

कोमल हृदय वाले, शुद्ध (दूसरे के धन को नहीं चाहने वाले), विनम्र, पाखण्डी (वेदनिन्दक), दानी, शास्त्रों में निरत, सुन्दर धान्य, अतिशय धनी, अपने कर्म में लीन, राजा— ये सब उत्तरफाल्गुनी के वर्ग में हैं।

हस्ते तस्करकुञ्जररथिकमहामात्रशिल्पिपण्यानि।
तुषधान्यं श्रुतयुक्ता वणिजस्तेजोयुताश्चात्र॥

चोर, हाथी, रथ पर चलने वाले, हस्तिसाधनपति, शिल्पी, क्रय-विक्रय द्रव्य, भूसी वाले धान्य, वेदश्रवण में निरत, वणिक् और तेजस्वी हस्त नक्षत्र के वर्ग में हैं।

त्वाष्ट्रे भूषणमणिरागलेख्यगान्धर्वगन्धयुक्तिज्ञाः।
गणितपटुतन्तुवायाः शालाक्या राजधान्यानि॥

अलङ्कार को जानने वाले, मणि के लक्षण को जानने वाले, रागज्ञ (रंगरेज), लेखक, गान विद्या को जानने वाले, सुगन्धियुत द्रव्य बनाने वाले, गणितज्ञ, जुलाहा, नेत्ररोग-चिकित्सक, राजा के उपयुक्त धान्य— ये सब चित्रा नक्षत्र के वर्ग में हैं।

स्वातौ खगमृगतुरगा वणिजो धान्यानि वातबहुलानि।
अस्थिरसौहृदलघुसत्त्वतापसाः पण्यकुशलाश्च॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पक्षी, मृग, घोड़ा, वणिक्, वायुवर्द्धक धान्य (चरण, उड़ीद-प्रभृति), अस्थिर मित्र, छोटे जन्तु, तपस्वी, व्यापार में निपुण (पाठान्तर से वन्यकुशलाः = वन में कुशल)— ये सब स्वाती नक्षत्र वर्गगत हैं।

इन्द्राग्निदैवते रक्तपुष्पफलशाखिनः सतिलमुद्गाः।
कार्पासमाषचणकाः पुरन्दरहुताशभक्ताश्च ॥

रक्त पुष्प, रक्त फल, वृक्ष, तिल, मूंग, कपास, माष, चना, इन्द्र के उपासक और अग्नि के उपासक विशाखा नक्षत्र के वर्ग में हैं।

मैत्रे शौर्यसमेता गणनायकसाधुगोष्ठियानरताः।
ये साधवश्च लोके सर्वं च शरत्समुत्पन्नम् ॥

अनुराधा नक्षत्र के वर्ग में बलवान, समूहों के प्रधान, साधुओं के भक्त, गोष्ठी (सभा) में भाग लेने वाले, वाहन से चलने वाले, जनपदों के सज्जन लोग और शारदीय धान्य हैं।

पौरन्दरेऽतिशूराः कुलवित्तयशोऽन्विताः परस्वहृतः।
विजिगीषवो नरेन्द्राः सेनानां चापि नेतारः ॥

अति शूर, कुलीन, धनी, यशस्वी, दूसरे के धनों को अपहृत करने वाले, जीतने की इच्छा करने वाले राजा, सेनापति— ये सब ज्येष्ठा नक्षत्र वर्गगत हैं।

मूले भेषजभिषजो गणमुख्याः कुसुममूलफलवार्त्ताः।
बीजान्यतिधनयुक्ताः फलमूलैर्ये च वर्त्तन्ते ॥

औषधि, वैद्य, गण के प्रधान, पुष्प, फल और मूल से जीविका चलाने वाले, सभी प्रकार के बीज, अतिशय धनी, फलाहारी— ये सब मूल नक्षत्र के वर्ग में हैं।

आप्ये मृदवो जलमार्गगामिनः सत्यशौचधनयुक्ताः।
सेतुकरवारिजीवकफलकुसुमान्यम्बुजातानि ॥

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के वर्ग में कोमल हृदय वाले, जलमार्ग से चलने वाले, सत्यवादी, शुद्ध (पर धन से विमुख), धनी, पुल का निर्माण करने वाले, जल से जीविका चलाने वाले, जल से उत्पन्न होने वाले फल और पुष्प हैं।

विश्वेश्वरे महामात्रमल्लकरितुरगदेवतासक्ताः।
स्थावरयोधा भोगान्विताश्च ये तेजसा युक्ताः ॥

महामात्र (मुख्य मन्त्री = 'महामात्राः प्रधानानि' इत्यमरः), मल्ल (बाहुयद्ध में निपुण), हाथी, घोड़ा, दैवभक्त, स्थावर (वृक्ष, पर्वत आदि), युद्ध करने में कुशल, भोगी और तेजस्वी लोग उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के वर्ग में हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रवणे मायापटवो नित्योद्युक्ताश्च कर्मसु समर्थाः ।
उत्साहिनः सधर्मा भागवताः सत्यवचनाश्च ॥

माया करने में निपुण (कुशल प्रपञ्ची), नित्य उद्यमशील, सभी कार्यों में कुशल, उत्साही, धर्मात्मा, भगवान् के भक्त, सत्यवादी— ये सभी श्रवण नक्षत्र के वर्गगत हैं।

वसुभे मानोन्मुक्ताः क्लीबाश्चलसौहृदाः स्त्रियो द्वेष्याः ।
दानाभिरता बहुवित्तसंयुताः शमपराश्च नराः ॥

अहङ्कार से रहित, नपुंसक, अस्थिर मित्रता वाले, स्त्रीद्वेषी, दानी, बहुत धनी, जितेन्द्रिय— ये सब धनिष्ठा नक्षत्र के वर्गगत हैं।

वरुणेशे पाशिकमत्स्यबन्धजलजानि जलचरा जीवाः ।
सौकरिकरजकशौण्डिकशाकुनिकाश्चापि वर्गेऽस्मिन् ॥

पाशिक (जाल से प्राणियों को मारने वाले), मछली मारने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले सभी जीव, सूअर को पालने वाले (डोम आदि), धोबी, मद्य बेचने वाले, पक्षियों को मारने वाले— ये सब शतभिषा नक्षत्र के वर्गगत हैं।

आजे तस्करपशुपालहिंस्रकीनाशनीचशठचेष्टाः ।
धर्मव्रतैर्विरहिता नियुद्धकुशलाश्च ये मनुजाः ॥

चोर, पशुपालक, हिंसक (क्रूर), कीनाश (क्षुद्र = 'कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु'—इत्यमरः), नीच जन, शठ (परोपकार से विमुख), विधर्मी, व्रतों से रहित, बाहुयुद्ध को जानने वाले—ये सभी पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र के वर्ग के हैं।

आहिर्बुध्न्ये विप्राः क्रतुदानतपोयुता महाविभवाः ।
आश्रमिणः पाखण्डा नरेश्वराः सारधान्यं च ॥

ब्राह्मण, यज्ञ करने वाले, तपस्वी, महाधनी, आश्रमी (चतुर्थाश्रम में रहने वाले), पाखण्डी (वेदनिन्दक), राजा और उत्तम धान्य उत्तरभाद्र नक्षत्र के वर्गगत हैं।

पौष्णे सलिलजफलकुसुमलवणमणिशङ्खमौक्तिकाब्जानि ।
सुरभिकुसुमानि गन्धा वणिजो नौकर्णधाराश्च ॥

जल से उत्पन्न होने वाले द्रव्य, फल और फूल, नमक, मणि (चन्द्रकान्ता आदि), शङ्ख, मोती, कमल आदि सुगन्धियुक्त फूल, सुगन्धित द्रव्य, वणिक् और नाविक रेवती नक्षत्र के वर्ग में हैं।

अश्विन्यामश्वहराः सेनापतिवैद्यसेवकास्तुरगाः ।
तुरगारोहा वणिजो रूपोपेतास्तुरगरक्षाः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घोड़े को चुराने वाले, सेनापति, वैद्य, सेवक, घोड़े, घोड़े पर चढ़ने वाले, वणिक्, सुन्दर एवं अश्वरक्षक अश्विनी नक्षत्र के वर्गगत हैं।

याम्येऽसृक्पिशितभुजः क्रूरा वधबन्धताडनासक्ताः ।
तुषधान्यं नीचकुलोद्भवा विहीनाश्च सत्त्वेन ॥

रक्तमिश्रित मांस खाने वाले, क्रूर, वध करने वाले, बन्धन और ताड़न करने वाले, भूसीयुत धान्य, नीच कुल में उत्पन्न, औदार्यादि गुणों से विहीन— ये सब भरणी नक्षत्र के वर्ग में हैं।

तथा च वराहसंहितायाम्

पूर्वात्रयं सानलमग्रजानां राज्ञां तु पुष्येण सहोत्तराणि ।
सपौष्णमैत्रं पितृदैवतं च प्रजापतेर्भं च कृषीबलानाम् ॥

आदित्यहस्ताभिजिदाश्विनानि वणिग्जनानां प्रवदन्ति तानि ।
मूलत्रिनेत्रानिलवारुणानि भान्युग्रजातेः प्रभविष्णुतायाः ॥

सौम्येन्द्रचित्रावसुदैवतानि सेवाजनस्वाम्यमुपागतानि ।
सार्पं विशाखाश्रवणाभरण्यश्चण्डालजातेरभिनिर्दिशन्ति ॥

पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ, पूर्वभाद्र और कृत्तिका ब्राह्मणों के; पुष्य, उत्तरफाल्गुनी, उत्तरभाद्र और उत्तराषाढ़ क्षत्रियों के; रेवती, अनुराधा, मघा और रोहिणी किसानों (वैश्यों) के; पुनर्वसु, हस्त, अभिजित् और अश्विनी क्रय-विक्रय करने वालों के; मूल, आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा प्रभाववान क्रूर मनुष्यों के; मृगशिरा, ज्येष्ठा, चित्रा और धनिष्ठा स्वामी के समीप रहने वाले सेवकों के तथा आश्लेषा, विशाखा, श्रवण और भरणी नक्षत्र चाण्डाल जातियों के हैं।

अथ प्रत्येकं मिलितानां च नक्षत्रतारकाणां पीडाफलम् ।
तत्र पराशरः

अथर्क्षोपसर्गाः । अयथावद्योगश्चन्द्रमसः सूर्यानुप्रवेशो ग्रहोदयास्तमयो रश्मिसंसर्गः । स्थानचारः परिवेष उल्काभियातो रश्मिहानिर्विवर्ण्यमिति । तेषां तारावयवशः पृथक्पृथक् फलमुपदेश्यामः । तत्र कृत्तिकानामाद्या तारोपसृष्टा कलिङ्गानां दुर्भिक्षमुत्पादयति । प्रादक्षिण्येन द्वितीया दस्युगणवैद्यकपीडनी । तृतीया नृपशस्यविनाशिनी । चतुर्थी मगधकोशलानामुपतापाय । पञ्चमी विप्रान् पीडयति । षष्ठी दक्षिणपश्चिमान् जनवरान् निषादाँश्च । युगपदुपसृष्टाः सर्वाः शूरसूक्ष्ममत्स्यपुण्ड्रताम्रलिप्तगौरेयहाटकपाण्ड्यकामरूपवङ्गाङ्ग-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेणुबन्धनसत्यारण्याहिताग्निब्रह्मचारिणो धान्येषु यवानुपहन्ति । यश्चैकैकस्यां तारायामुक्तम् ।

प्रत्येक नक्षत्रों के एक-एक ताराओं तथा सभी ताराओं के ग्रहों से पीड़ित होने पर पराशर ने फल कहा है। चन्द्रमा का नक्षत्र ताराओं के साथ अयथावत् योग (विपरीतयोग = अपसव्य), सूर्यानुप्रवेश ग्रहों के उदयास्तमय, परस्पर रश्मिसंसर्ग, स्थानाचार, परिवेष, उल्का से पीड़ित, रश्मिहानि, विकारयुक्त वर्ण— ये उपसर्ग होते हैं। इन उपसर्गों से नक्षत्रों के प्रत्येक या सभी ताराओं के पीड़ित होने पर फल कहता हूँ।

उक्त उपसर्गों (उत्पातों) से यदि कृत्तिका की प्रथम तारा पीड़ित हो तो कलिङ्गदेश में दुर्भिक्ष उत्पन्न करती है। प्रदक्षिण क्रम से द्वितीय तारा के पीड़ित होने पर चोरसमूह और वैद्यों को पीड़ा होती है। तीसरी तारा राजा और धान्यों का नाश करती है। चौथी तारा मगध और कोशल देशवासियों को पीड़ित करती है। पाँचवीं तारा ब्राह्मणों को पीड़ित करती है। छठी तारा के पीड़ित होने से दक्षिण और पश्चिम देशवासी, श्रेष्ठ मनुष्य और निषाद पीड़ित होते हैं। कृत्तिका नक्षत्र की सभी (छः) तारायें एक साथ पीड़ित हों तो शूरसेन, सूक्ष्म, मत्स्य, पुण्ड्र, ताम्रलिप्ती, गौरेय, हाटक, पाण्ड्य, कामरूप, वङ्ग, अङ्ग आदि देशवासी, बाँस, बन्धन करने वाले, सत्यवादी, जंगली, अग्निहोत्री, ब्रह्मचारी और धान्यों में जौ— ये सभी विनष्ट होते हैं तथा जो कृत्तिका नक्षत्र की एक-एक तारा को पीड़ित होने पर विनाश होते हैं, वे सब भी विनष्ट होते हैं।

रोहिणीनां प्रागुत्तरेणाद्या तारोपसृष्टा मगधेशान् भुजगाँश्च पीडयति । उत्तरेण द्वितीया शस्यं सलिलं चोपतापयति । उत्तर एव तृतीया सा भूपान् महान्ति च कुलानि । दक्षिणपूर्वा चोपतप्ताबीजोपतापिनी दक्षिणतः । दक्षिणतः पञ्चमी प्रजा-नामुपतापाय । युगपदुपसृष्टाः सर्वा मौञ्जिपुरुषादगौडक-पञ्चालबन्ध्युधुर्यमहिषकुरुजाङ्गलशूरसेनानाम् । अन्नानां शालयः पीड्यन्ते । अस्यां पार्थिवानां शस्त्रप्रादुर्भावश्च । यच्चैकैकश उक्तम् ।

रोहिणी नक्षत्र की पाँच ताराओं में पूर्वोत्तर भाग में स्थित प्रथम तारा पीड़ित हो तो मगध के राजा और सर्पों को पीड़ा होती है। सबसे उत्तर में स्थित द्वितीय तारा पीड़ित हो तो धान्य और जल (वर्षा) का नाश होता है। उत्तर भाग में स्थित तीसरी तारा पीड़ित हो तो राजाओं और श्रेष्ठ कुलों का नाश, दक्षिण-पूरब में स्थित चौथी तारा पीड़ित हो तो बीजों का नाश और दक्षिण भाग में अवस्थित पाँचवीं तारा पीड़ित हो तो प्रजाओं का नाश होता है। यदि सभी तारायें एक साथ पीड़ित हों तो मौञ्जि, पुरुषाद, गौड, पाञ्चाल, बन्ध्युधुर्य, महिषक, कुरु, जाङ्गल और शूरसेन देश,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्न, धान्य— ये सभी पीड़ित होते हैं। इसमें राजाओं के शस्त्रों का प्रादुर्भाव (राजाओं का युद्ध) होता है और एक-एक ताराओं के फल भी होते हैं।

मृगशिरस्युत्तरेण या तारोपसृष्टा यतिमुनिब्राह्मणान् पीडयति। पूर्वेण द्वितीया तङ्गणोशीनरान्। तृतीया सर्वशस्यानि। युगपत् सर्वाः शाल्वनिषादगान्धारौदीच्याम्बष्ठविदेहान्। बीजेष्वलावुककारुक्षोर्वारुकषष्टिकान्। यच्चैकैकस्यामुक्तशाल्वानां चाग्र्यम्।

मृगशिरा नक्षत्र की तीनों ताराओं में जो उत्तर भाग में स्थित प्रथम तारा है, वह पीड़ित हो तो संन्यासी, मुनि और ब्राह्मणों को पीड़ित करती है। पूर्व भाग में स्थित द्वितीय तारा पीड़ित हो तो तङ्गण और उशीनर देशों को पीड़ा होती है। तृतीय तारा पीड़ित हो तो सभी धान्यों का नाश होता है। सभी तारायें एक साथ पीड़ित हों तो शाल्व, निषाद, गान्धार, औदीच्य, अम्बष्ठ और विदेह (मिथिला) देश, बीजों में अलाबू (लताविशेष या फल), कर्कारु (कदीमा), उर्वारु (ककड़ी) और शाठी (धान्य) का नाश होता है तथा प्रत्येक ताराओं के फल, परन्तु विशेष रूप से शाल्व देश को पीड़ा होती है।

आर्द्रायाः प्राग्भागस्योपतापे मालवादेविकानिवासिनश्चोपताप्यन्ते। दक्षिणस्य व्याधिचाण्डालवैकृतिकबन्धनेपालानां कलिङ्गानां च सन्धिः। पश्चिमस्य मृगा धनुर्वृत्तयश्च। उत्तरस्य नदनदीपल्वलाक्षोदकचराश्च। सर्वतस्त्वश्मकाः। स्नेहेषु तैलं पयः सुरासवेषु। यच्च पार्श्वेपूक्तम्।

आर्द्रा नक्षत्र में एक ही तारा है। यह पूर्व भाग से पीड़ित हो तो मालवा और देविका देशवासी पीड़ित होते हैं। दक्षिण भाग से पीड़ित होने पर लोगों में व्याधि, चाण्डालभय, कबन्ध (शिरविहीन शरीर) का भय, नेपालवासी और कलिङ्गदेश के निवासियों में सन्धि (मेल) होती है। पश्चिम भाग से पीड़ित होने पर मृग और धनुर्धारियों का नाश, उत्तर-पार्श्व से पीड़ित होने पर नद, नदी, गड्ढ़े और समुद्र में निवास करने वालों का नाश होता है तथा चारो ओर से अर्थात् पूर्ण रूप से आर्द्रा नक्षत्र पीड़ित होने पर अश्मक देशवासी, स्नेहयुक्त वस्तुओं में तेल, दूध, आसवों में सुरा एवं पार्श्व पीड़ाजनित अन्य उक्त फल होते हैं।

पुनर्वसोरुत्तरतारोपसर्गे देवमनुष्याः पीड्यन्ते। इतराया वणिजश्चावन्तिकाश्च। उभाभ्यां भरूकच्छपाण्ड्यापरान्तकान्तगिर्युपगिरिसूर्पोपावृत्तकाः। कार्पासं बीजेषु। यच्चोभाभ्यामुक्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनर्वसु नक्षत्र में चार तारायें (दो उत्तर भाग में और दो दक्षिण भाग में) हैं। उत्तर की दो तारायें यदि पीड़ित हों, तो देवता और मनुष्यगण पीड़ित होते हैं। दक्षिण की दोनों तारायें यदि पीड़ित हों तो वणिक् और अवन्ति देशवासी पीड़ित होते हैं। दोनों दिशाओं (सम्पूर्ण) से पीड़ित हों तो भरुकच्छ (मरुकच्छ), पाण्ड्य, अपरान्तक (पश्चिम देश), अन्तगिरि, उपगिरि, सर्प और उपावृत्तक देशवासी तथा बीजों में कपास (रूई) का नाश होता है और पार्श्वगत उक्त फल भी होते हैं।

पुष्ये पूर्वेणोपतप्तः पार्थिवान् पीडयति। दक्षिणेन चेदिमत्स्यान्। पश्चिमेन कुरून्। उत्तरेण क्षितीशान्। सर्वतः पाञ्चालसिन्धुसौवीरवर्धमाननास्तिक्यरामगिरिगौरीपुरनिवासिनः। कार्षिका द्विजाग्र्यमेधाविकधार्मिकदधिघृतपयांसि च। यच्च पार्श्वेषूक्तम्।

पुष्य नक्षत्रगत तीन तारायें यदि पूरब भाग से पीड़ित हों तो राजाओं को पीड़ित करती हैं। दक्षिण भाग से पीड़ित होने पर चेदि और मत्स्य देशवासियों को पीड़ा होती है। पश्चिम से कुरुदेशवासी और उत्तर से राजाओं को पीड़ा होती है। सभी ओर से पीड़ित होने पर पाञ्चाल, सिन्धु, सौवीर, वर्धमान, नास्तिक्य, रामगिरि और गौरीपुर निवासी किसान, ब्राह्मण, श्रेष्ठ, मेधावी, धार्मिक, दही, घृत और दूध का नाश होता है और पार्श्वगत फल भी होते हैं।

सर्पाणामुत्तरेणाद्या तारा तस्या उपसर्गाद्दंष्ट्रिण उपतप्यन्ते। प्रदक्षिणेन द्वितीयायाम्। अहिग्राहिमायाकारबन्धनपालाः। तृतीयायां गजगजाध्यक्षाः। तदनु चतुर्थ्युपसृष्टा तस्करान् विनाशयति। पञ्चमी दौवारिकान् खरकरभशूकरान्। षष्ठी भुजगसरीसृपसुरामैरेयविदानुपहन्ति। युगपत् सर्वा विदर्भनैमिषमणिमतीनिवासिनः। वर्षाशालिशुण्ठीकोद्रव-विनाशाय। यच्चैकैकश उक्तम्।

आश्लेषा नक्षत्र के उत्तर भाग की प्रथम तारा के उपसर्गयुक्त (पीड़ित) होने पर दंष्ट्रिगण (सूअर, सर्प आदि) पीड़ित होते हैं। प्रदक्षिण क्रम से (उत्तर-पूरब-दक्षिण क्रम से) दूसरी तारा के पीड़ित होने पर सर्प पकड़ने वाले (सपेरा), मायावी और बन्धपाल (जेलर आदि) पीड़ित होते हैं। चौथी तारा के पीड़ित होने पर चोरों का नाश होता है। पाँचवीं तारा दौवारिक (द्वारपाल), खर (गदहा), करभ (हाथी) और सूअरों का नाश करती है। छठी तारा सर्प, सरीसृप (छिपकिली), सुरा निर्माण करने वालों को पीड़ित करती है तथा सभी ताराओं के एक साथ पीड़ित होने पर विदर्भ, नैमिष और मणिमती देशनिवासी, वर्षाकालिक धान्य, शुण्ठी (सोंठ), कोदो तथा प्रत्येक तारा की सभी वस्तुओं एवं जीवों का विनाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मघानां दक्षिणतारोपतापे वासिष्ठाः पीड्यन्ते। तदुत्तरेण द्वितीया। तस्यामुपतप्तायामौषधयस्ताम्रपर्णकाश्च। तृतीयायां वृद्ध्युपजीविनः। चतुर्थ्यां कोष्ठागाराणि पितृधान्यं च। पञ्चम्यां माहिष्मतीनिवासिनः। षष्ठ्यां नागा नागाश्रिताश्च। युगपदुपसृष्टासु मल्लताम्रपर्णकाधिपगणबाह्यानि। यच्चैकैकश उक्तम्।

मघा की दक्षिण तारा के पीड़ित होने पर वसिष्ठ गोत्रोत्पन्न पीड़ित होते हैं। उससे उत्तर की दूसरी तारा के पीड़ित होने पर औषधियाँ तथा ताम्रपर्ण देश के निवासियों को पीड़ा होती है। उससे उत्तर की तीसरी तारा में वृद्धों के आश्रम से आजीविका वाले, चौथी तारा में कोष्ठागार (अन्तगृह) वासी या उत्तम भवन वाले, नगरवासी और पितृधान्य (तिल आदि), पाँचवीं में माहिष्मती नगरी के निवासी लोग, छठी तारा के पीड़ित होने पर नाग (सर्प या हाथी) तथा नागों के आश्रय से आजीविका वाले पीड़ित होते हैं। एक साथ सभी ताराओं के पीड़ित होने पर मल्ल (बाहुयुद्ध करने वाले), ताम्रपर्ण के अधिपति, गणवाह्य तथा एक-एक ताराओं के सभी जीवों एवं वस्तुओं का विनाश होता है।

विशेष– परन्तु वराहसंहिता एवं मुहूर्तचिन्तामणि में आश्लेषा और मघा नक्षत्रों की तारासंख्या ५-५ बतायी गयी है।

भाग्योत्तरतारोपघातेन किराताश्चोपताप्यन्ते। अपरायाः सुभगवनकाम्बोजाः। युगपदुपसृष्टे तदधिपतिपाञ्चालाभीर-भागीरथमहापथविदेहान् पीडयतः। रसेषु गुडविकारान्। यच्चैकैकश उक्तम्।

पूर्वफाल्गुनी की दो ताराओं में यदि उत्तर तारा आहत हो तो किरातों का नाश होता है और दक्षिण तारा आहत हो तो सुभग (सबों के प्रिय), वन और कम्बोजवासी पीड़ित होते हैं। दोनों तारायें एक साथ पीड़ित हों तो नक्षत्रोक्त देश, वस्तु आदि, पाञ्चाल, आभीर, भागीरथ, महापथ और विदेह देशों को पीड़ा होती है। रसों में गुड़विकार (ईख का रस) तथा प्रत्येक ताराओं के उक्त पीड़ित देश पीड़ित होते हैं।

आर्यम्णस्य दक्षिणोपसृष्टा मगधाधिपतिविनाशाय। उत्तरा उत्तरनिवासिनां शस्यानां च। उभे विदेहशाल्वमत्स्याङ्ग-मगधनेपालत्रैपुराहिताग्नीनाम्। शस्येषु कुलत्थानाम्। यच्चैकैकश उक्तम्।

उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र की दक्षिण तारा पीड़ित हो तो मगध नरेश का विनाश होता है तथा उत्तर तारा पीड़ित हो तो उत्तर दिशा में स्थित देश और धान्यों का नाश होता है। दोनों ताराओं के पीड़ित होने पर विदेह, शाल्व, मत्स्य, अङ्ग,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मगध, नेपाल और त्रिपुर देशवासियों तथा अग्निहोत्रियों का नाश, धान्यों में कुलत्थ (कुलथी) का नाश और एक-एक ताराओं के फल से सम्बन्धित देशों का नाश होता है।

सावित्रस्य पूर्वदक्षिणेन तारोपसृष्टा तस्करान् पीडयति। द्वितीया दक्षिणेन प्राच्याम्। तृतीयोत्तरेण सौरगिरिकान्। चतर्थ्युत्तरेण योगयुगन्धरभिक्षुकान्। एतस्यां तु पञ्चमी समिकलोत्कलद्वीप-पुरराष्ट्राणि। युगपत् सर्वा दण्डकमध्यारण्यकचेदिगोकर्णयामुन-सप्तराष्ट्रवैणिकदशार्णाङ्गबङ्गसौरगिरिकाँश्च। चतुष्पदेषु द्विरदान्। बीजेषु निष्पावमूलकानि। औषधेषु पीप्पलीम्। यच्चैकैकश उक्तम्।

हस्त नक्षत्र की पाँच ताराओं में पूर्व-दक्षिण भाग में स्थित प्रथम तारा उपद्रवयुत हो तो चोरों को पीड़ित करती है। दूसरी दक्षिण भाग में स्थित तारा उपद्रवयुत हो तो पूर्व देश को पीड़ित करती है। उत्तर भाग की तीसरी तारा सौरगिरिक के निवासी को पीड़ित करती है। उत्तर भाग में स्थित चौथी तारा पीड़ित हो तो योगयुगन्धर और भिक्षुक देशवासियों को पीड़ित करती है। इनमें पाँचवी तारा समिकल, उत्कल, द्वीप, पुर और राष्ट्रों को पीड़ित करती है। एक साथ पाँच तारा उपद्रवयुत हो तो दण्डकारण्य, मध्यारण्य, चेदिदेश, गोकर्ण, यामुन, सप्तराष्ट्र, वैणिक, दशार्ण, अङ्ग, वङ्ग, सौरगिरि आदि देश, पशुओं में द्विरद (हाथी), बीजों में निष्पावमूल (भूषा से रहित), औषधियों में पिप्पली (पीपर)— ये सब पीड़ित होते हैं तथा एक-एक ताराजन्य फल (उपर्युक्त) होते हैं।

अथ चित्रा प्राच्यां दिशि उपसृष्टा चेदीनामपां चाहिताय याम्यायां दण्डकाश्मकानाम्। वारुण्यां नटनर्त्तकचित्रकराणाम्। सौम्या-यामार्त्तिकानां भावानाम्। सर्वासु पञ्चालकैकयभागीरथ-कुरुगन्धर्वस्थलमद्रमाषमुद्गानाम्। विशेषतः कैकयश्रेष्ठा-नाम्। यच्चाशासूक्तम्।

चित्रा (की एक तारा) नक्षत्र पूर्व दिशा में उपद्रवयुक्त हो तो चेदि देश और जलचरों का, दक्षिण में उपद्रवयुत हो तो दण्डकारण्य और अश्मक देशवासियों का, पश्चिम में उपद्रवयुत हो तो नट, नर्तक, चित्रकारों का और उत्तर भाग में उपद्रवयुत हो तो आर्त्त भावना वालों का नाश होता है। सभी ओर से (पूर्ण तारा) उपद्रवयुत हो तो पाञ्चाल, कैकय, भागीरथ, कुरु, गन्धर्वस्थल, मद्र देश, माष और मूंगों का, विशेष रूप से कैकय देश के श्रेष्ठों (राजा आदि) का नाश होता है तथा एक-एक दिशाओं के उपद्रव के उक्त फल होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वातिः पूर्वेणोपसृष्टा वातवृष्टिं जनयति। दक्षिणेनातिवृष्टिम्। पश्चिमेन सिन्धुसौराष्ट्रनृपाँश्चोपहन्ति। उत्तरेण यवनकाम्बोजान्। सर्वतस्तूशीनरावन्तिचेदिवासोदिव्याभिसारकदरदकाश्मीरोत्तरकुरूणामभावाय। शाकेषु सर्वपाराणाम्। चतुष्पदेष्वेकशफानाम्। पश्चाच्चाभिषिक्तः शैलाटविकश्च राजा विनश्यतीति।

स्वाती नक्षत्र (एक तारा) पूर्व से उपद्रवयुत हो तो वायु-वृष्टि को उत्पन्न करता है। दक्षिण से पीड़ित हो तो अतिवृष्टि होती है। पश्चिम से पीड़ित होने पर सिन्धु और सौराष्ट्र के राजाओं का नाश करता है एवं उत्तर से पीड़ित हो तो यवन और कम्बोज के निवासियों को पीड़ित करता है। सभी ओर से पीड़ित होने पर उशीनर, अवन्ती, चेदि, वास, दिव्याभिसारक, दरद, काश्मीर, उत्तर देश और कुरुदेशवासियों का नाश करता है। शाकों में सर्वपारा (पोरा) और चतुष्पदों में एकशफों (गदहा, घोड़ा) का नाश होता है तथा बाद में अभिषिक्त (उपयुक्त समय के अनन्तर अभिषिक्त) और पर्वत पर विचरण करने वाले राजा का विनाश होता है।

विशाखोत्तरतारोपसर्गे कोशलेक्ष्वाकव उपसृष्ट्यन्ते। इतरायां भ्रातरो विभक्ताः कुरवश्च। युगपदुपसर्गे यमजाः। शस्येषु यवगोधूमाः। यच्चैकैकश उक्तम्।

विशाखा नक्षत्र की उत्तर तारा पीड़ित हो तो कोशल देशवासी इक्ष्वाकुवंशी पीड़ित होते हैं। दक्षिण भाग में स्थित शेष (तीन) ताराओं के पीड़ित होने पर भाइयों में भेद और कुरुओं का नाश होता है। एक साथ सभी ताराओं के पीड़ित होने पर यमज, धान्यों में जौ और गेहूँ का नाश होता है तथा एक-एक (उत्तर और दक्षिण) तारोपसर्गजनित फल होते हैं।

ज्येष्ठामध्यमधिष्ण्योपघाते ज्येष्ठनृपतिप्रधानजननारीविनाशं विन्द्यात्। पूर्वेण विदेहानाम्। एकशफानां पशुषु। स्वदेशेषु नृपस्य। शस्येषु कलायानां च। यच्चैकैकश उक्तम्।

ज्येष्ठा नक्षत्र की चार ताराओं में मध्य की ताराओं के पीड़ित होने से प्रधान राजा, प्रधान मनुष्य, प्रधान नारी (स्त्री) का विनाश होता है; पूर्व से पीड़ित होने पर विदेह (मिथिला) देशवासियों का, पशुओं में एकशफों (गदहा, घोड़ा) का, धान्यों में कलायों (मटर) का नाश होता है तथा एक-एक पीड़ित ताराओं का फल होता है।

अनुराधानामुत्तरेण ज्योतिरुपहतं सन्धिविग्रहं मित्रभेदं स्वस्थकोशलानां चोपतापं जनयति। दक्षिणेन द्वितीयचमूपतिद्वाराऽधिपतीनाम्। तृतीयं दक्षिणेन बालेषु विदग्धानां च। चतुर्थं शस्यानां च। युगपदुपसृष्टा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मगधाङ्गकाशिवैदेहभागीरथहिरण्यकुटुम्बकानाम् । तत्पश्चिमे यवनकाम्बोजानाम् । युगपत्सर्वास्विन्द्रप्रथममिन्द्र-प्रस्थमाहेन्द्रगिरिम् । मध्यं पृथिव्याश्चेदिपृष्ठमभिसारं क्षेमधृतिदरदाँश्चोपहन्ति । मृगादिपशुहानिः । ऐडविडानां च श्रेष्ठस्येति । यच्चैकैकश उक्तम् ।

अनुराधा नक्षत्र की चार ताराओं में— उत्तर की प्रथम तारा ज्योतिरहित (पीड़ित) हो तो सन्धिविग्रह (लोगों में परस्पर विरोध), मित्रों में भेद और स्वस्थ कोशलवासियों में पीड़ा उत्पन्न होती है। दक्षिण की दूसरी तारा पीड़ित हो तो सेनापति और द्वाराधिपतियों को पीड़ा उत्पन्न होती है। दक्षिण की तीसरी तारा के पीड़ित होने पर बच्चों और विदग्धों (चतुरों) को पीड़ा होती है। चौथी तारा धान्यों का नाश करती है। एक साथ सभी ताराओं के पीड़ित होने पर मगध, अङ्ग, काशी, विदेह, भागीरथ देश और हिरण (मृग) जातियों को पीड़ा होती है। तत्पश्चात् यवन और कम्बोज देश के निवासी पीड़ित होते हैं। एक साथ सभी ताराओं के पीड़ित होने पर इन्द्रप्रथम, इन्द्रप्रस्थ, महेन्द्रगिरि, पृथिवी का मध्यदेश, चेदिदेश, अभिसार देश, कल्याण, धृति (धैर्य), दरददेशवासी पीड़ित होते हैं। मृग आदि पशुओं की हानि और कुबेरादि श्रेष्ठ यक्षों का नाश होता है तथा एक-एक ताराओं के उक्त फल होते हैं।

मूलस्य पूर्वेणोत्तरतारोपसृष्टा शस्यानां विपत्तये राष्ट्रदुर्भिक्षाय । उभे ग्रामनगरनिगमजनोपदेष्टृ-कर्णप्रावरणदस्युसौवीरमहिषमाहिष्मतीगिरिव्रजनिवासि-नामभावाय । रसेषु च लवणस्य । मणिमतीनां च श्रेष्ठस्य । यच्चैकैकश उक्तम् ।

मूल नक्षत्र की पूर्व और उत्तर में स्थित तारा उपद्रवयुत हो तो धान्यों का नाश और राष्ट्र में दुर्भिक्ष होता है। पश्चिम और दक्षिण में स्थित ताराओं के पीड़ित होने पर ग्राम, नगर, वेदों का उपदेश करने वाले, कर्णप्रावरण, दस्यु, सौवीर, महिषक, माहिष्मती और गिरिव्रज देशों के निवासियों को पीड़ा होती है। छः रसों में लवण रस का और मणिमती देश के श्रेष्ठ लोगों का नाश होता है तथा एक-एक दिशाओं के उपद्रव से (उक्त) उत्पन्न पीड़ा भी होती है।

पूर्वाषाढायाः पूर्वेण ताराद्वयमुपसृष्टं कूपनदीसरःसागरसलिलाशयानामुपतापं जनयति । अपरं काशीनामवर्षं शवरेशविनाशं च । युगपच्चतस्रस्त्रिगर्त्तवीतिहोत्रभार्गववर्हिणप्रभासमार्यसुखं सञ्जनयति । सागराश्रिताँश्चोपहन्ति । मत्स्येषु वर्हिकान् माहिष्मत्याः श्रेष्ठम् । यच्चासां द्वन्द्वश उक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वाषाढ़ा की पूरब की दो तारायें पीड़ित हों तो कूआँ, नदी, सरोवर, समुद्र और जलाश्रित जीवों को पीड़ा होती है। पश्चिम की दोनों तारायें पीड़ित हों तो काशीवासियों के लिए अवृष्टि और शबरनरेश का विनाश होता है। एक साथ चारो तारायें पीड़ित हों तो त्रिगर्त्त, वीतिहोत्र, भार्गव, बर्हिण और प्रभास क्षेत्रों के श्रेष्ठ लोगों में सुख उत्पन्न होता है। समुद्र के आश्रित जीवों तथा समुद्र से जीविका चलाने वालों का नाश होता है। मत्स्यों में बर्हिकों और माहिष्मती देश के श्रेष्ठ लोगों का नाश होता है तथा जो फल एक-एक दिशाओं में पीड़ित तारा के कहे गये हैं, वे सब फल होते हैं।

वैश्वदेवस्योत्तरेण धिष्ण्यद्वयमुपसृष्टं चतस्त्रः समाः प्रजाः पीडयन्ति। दक्षिणेनामात्यधर्मिष्ठकाशिपुत्रं गृहस्थान्। युगपत्सर्वेषूपतप्तेषु वीतिहोत्रमर्जुनायनताम्रपर्णसैन्धवारण्यनैमिषजच्युतमार्गकौशिकसारस्वतान्। सर्वाणि च पुण्यायतनानि। वर्णेषु ब्राह्मणान्। पार्थिवेष्वग्र्यान्। यच्च द्वन्द्वश उक्तम्।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की दो तारायें उत्तर भाग से पीड़ित हों तथा चारो तारायें समान मूर्त्ति वाली (प्रकाशयुत या हीन) हों तो प्रजा पीड़ित होती है। दक्षिण भाग से दो तारायें पीड़ित हों तो मन्त्री, धर्मात्मा, काशीपुत्र और गृहस्थों को पीड़ा होती है। एक साथ सभी ताराओं के पीड़ित होने पर वीतिहोत्र (अग्निदेश), अर्जुनायन, ताम्र वर्ण, सिन्धु, अरण्य और नैमिष के निवासी, मार्गच्युत (संन्यासादि मार्ग से भ्रष्ट), कौशिक तथा सारस्वतों, सभी पुण्यायतनों (धर्मस्थानों), वर्णों में ब्राह्मणों, राजाओं में उग्रों (क्रूर) का नाश तथा जो उत्तर और दक्षिण दिशा के पीड़ा-फल कहे गये हैं, होते हैं।

परन्तु मुहूर्त्तचिन्तामणि और बृहत्संहिता में पूर्वाषाढ़ा तथा उत्तराषाढ़ा में दो-दो तारायें होती हैं— ऐसा कहा गया है। पराशर ने उक्त नक्षत्रों की चार-चार ताराओं का फल कहा है।

तथाऽभिजिता मध्यतारोपतापः शोषयति देवान्। द्वितीयोत्तरेण ब्राह्मणानृषिगणाँश्च। तृतीया दक्षिणेन नृपराष्ट्रकामात्यान्। युगपत् सर्वान् ब्राह्मणान् ब्राह्मीं पुरव्रीहिमतीं पूर्वगङ्गां स्वर्गङ्गां कालकूटां स्वस्तिभद्रां सर्पातिपन्नगयवनद्वीपं ब्रह्मचारिणो द्वीपेषु भद्राश्वान् पर्वतेषु पञ्चपर्वतपुष्परुद्रकान् कुलेषु श्रेष्ठान्। यच्चैकैकश उक्तम्।

अभिजित् नक्षत्र की मध्य तारा पीड़ित हो तो देवताओं को पीड़ा होती है। उत्तर से दूसरी तारा पीड़ित हो ब्राह्मणों और ऋषिगणों को पीड़ा होती है। दक्षिण से तीसरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तारा पीड़ित होने पर राजा, देश और मन्त्रियों को पीड़ा देती है। एक साथ सभी तारायें पीड़ित हों तो सभी ब्राह्मणों, सरस्वती, व्रीहिमतीपुर, पूर्वगङ्गा (गङ्गा का पूर्वभाग), स्वर्गङ्गा, कालकूट (विष या देशविशेष), स्वस्तिभद्रा, सर्पों, अतिपन्नगों (अतिविषैले सर्प), यवन द्वीप, ब्रह्मचारियों, द्वीपों में भद्राश्व, पर्वतों में पञ्चपर्वत (मेरु, सुमेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु और सुरालय), पुष्पों, रुद्रों और कुलों में श्रेष्ठों को पीड़ा होती है तथा जो एक-एक तारा की पीड़ा से उत्पन्न होने वाले फल कहे गये हैं, होते हैं।

श्रवणस्य मध्यमतारोपसृष्टा धनुर्धराणामभावाय। अपरा दक्षिणेन शूरसेनानां क्षत्रस्य। उत्तरेण तृतीया शूरसेनयवनकाम्बोजानां च। युगपत् सर्वास्त्रिगर्तानर्त्तमालवक्षुद्रकार्जुनायनाभीरयौधेयाम्बष्ठ-सुह्मकानाम्। रसेषु सर्वरसानां च सकामानां च श्रेष्ठस्य। यच्चैकैकश उक्तम्।

श्रवण नक्षत्र की तीन ताराओं में— मध्य में स्थित तारा उपद्रवयुत हो तो धनुर्धारियों का नाश, दूसरी दक्षिण भागस्थित तारा उपद्रवयुत हो तो शूरसेनवासियों और क्षत्रियों का नाश एवं उत्तर भागस्थित तीसरी तारा पीड़ित हो तो शूरसेन, यवन तथा कम्बोज देशों के निवासियों का नाश होता है। एक साथ तीनों तारायें पीड़ित हों तो त्रिगर्त्त, आनर्त्त, मालव, क्षुद्रक, अर्जुनायन, आभीर, यौधेय, अम्बठ और सुह्म देशों के निवासियों का नाश होता है। रसों में सभी भोजन रसों का और कामियों में श्रेष्ठों का नाश होता है तथा एक-एक ताराओं की पीड़ा से होने वाले उक्त फल होते हैं।

धनिष्ठायाः पश्चिमेन तारोपसृष्टा शकयवनकाम्बोजोत्तरनेपालानामहिताय। द्वितीयो-त्तरेणोत्तरपर्वतवासिनाम्। तृतीया पूर्वेण पूर्वसागरसंस्थितानाम्। चतुर्थी दक्षिणेन पक्षियवकलायसर्षपाणाम्। प्रत्यग्दक्षिणेन। पञ्चमी सिन्धुसौवीराभीराणाम्। युगपत् सर्वाः पाण्ड्यकै-रातोड्रशोकमोकस्वमोकतलरवाङ्गवङ्गहेमकूटसिंहलोत्कल-नैकरसमूलमध्यदेशवाह्लीकसैन्धवकालकूटेक्षुमतीनिवा-सिनाम्। शस्येषु मुद्गानाम्। शकेषु श्रेष्ठानाम्। यच्चैकैकश उक्तम्।

धनिष्ठा नक्षत्र के पश्चिम से प्रथम तारा उपद्रवयुत हो तो शक, यवन, कम्बोज के उत्तर भाग और नेपालवासियों का अहित होता है। उत्तर भाग की दूसरी तारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीड़ित हो तो पर्वतवासियों का, पूर्वभाग की तीसरी तारा पीड़ित हो तो पूर्वसमुद्र के तटवर्त्ती निवासियों का, दक्षिण से चौथी तारा पीड़ित हो तो पक्षी, जौ, कलाय (मटर) और सर्षप (सरसों) का, पश्चिम और दक्षिण (नैर्ऋत्य कोण) से पाँचवीं तारा पीड़ित हो तो सिन्धु, सौवीर और आभीरों का अहित (नाश) होता है। एक साथ सभी तारायें पीड़ित हों तो पाण्ड्य, किरात, उड्र, शोकमोक, स्वमोक, तलरव, अङ्ग, वङ्ग, हेमकूट, सिंहल, उत्कल देश, अनेक रस एवं मूल, मध्यदेश, वाह्लीक, सिन्धु, कालकूट और इक्षुमती देशों के निवासी एवं धान्यों में मूँग, शकों (शकदेशवासियों) में श्रेष्ठ लोग— इन सबों का नाश होता है तथा एक-एक ताराजनित पीड़ा-फल होते हैं।

अथ वारुणं पूर्वेणोपतप्तं कलिङ्गान् पीडयति। दक्षिणेन दक्षिणसमुद्रम्। पश्चिमेन पश्चिमभिषक्क्षुद्रौषधानि। चोत्तरेण सर्वौषधीः स्त्रीश्च सर्वतस्ताम्रपर्णा ताम्रलिप्तकहाटकसह्य-भरुकच्छपिङ्गभूपतिमूलापरान्तकपुक्कशाश्मकपुरेन्द्रराष्ट्रसौरगिरि-शैलेयपारियवनान्। शस्येषु यवगोधूमान्। ताम्रपर्ण-पार्थिवान्। यच्च पार्श्वेषूक्तम्।

शतभिषा (शततारक) नक्षत्र यदि पूरब दिशा से पीड़ित हो तो कलिङ्गदेश के निवासियों को पीड़ित करता है। दक्षिण से पीड़ित हो तो दक्षिण समुद्र (दक्षिण समुद्र के निकट के निवासी); पश्चिम से पीड़ित हो तो पश्चिमदेश, वैद्य, क्षुद्र औषधि; उत्तर से पीड़ित हो तो सर्वौषधि और स्त्री एवं सभी ओर से पीड़ित होने पर ताम्रपर्ण, ताम्रलिप्तक, हाटक, सह्य, भरुकच्छ, पिङ्गदेश के राजा, मूल, अपरान्त (पश्चिम समुद्र के निकटवर्ती देश), कपुक, कशा, अश्मक, पुर (नगर), इन्द्रराष्ट्र (इन्द्रप्रस्थ), सौरगिरि, शैलेयपारी और यवनों का तथा धान्यों में जौ और गेहूँ का, ताम्रपर्ण के राजाओं का नाश होता है तथा पार्श्वगत पीड़ा-फल होते हैं।

प्राक्प्रौष्ठपदोत्तरतारोपसृष्टा मगधाङ्गपुण्ड्रयवनकाम्बोजाना-मुपतापकर्त्ता। दक्षिणेनैकपगोमताम्। युगपदुभे भिषगम्बष्ठमेकलोत्कलपुलिन्दशवरदर्दुरमलयनर्मदासिन्धुसौवीर-काश्मीरहितहिरण्यबाहुवैशालेयशशकुन्तराजमार्गगोगजाश्वा-नाम्। यच्चैकैकश उक्तम्।

पूर्वभाद्रपद नक्षत्र की उत्तर तारा उपद्रवयुत हो तो मगध, अङ्ग, पुण्ड्र, यवन, काम्बोज— इन देशों के निवासियों को पीड़ा होती है। दक्षिण दिशा की तारा उपद्रवयुत हो तो एकप और गोमती देश के निवासियों को पीड़ा होती है। यदि एक साथ दोनों तारायें में पीड़ित हों तो भिषक्, अम्बष्ठ, मेकल, उत्कल, पुलिन्द, शबर, दर्दुर देश, मलय पर्वत, नर्मदा नदी, सिन्धु प्रदेश, सौवीर, काश्मीर, हित, हिरण्य,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाहु, वैशालेय, शश, कुन्त, राजमार्ग, गाय, हाथी और घोड़े का नाश तथा एक-एक पीड़ित ताराजनित फल होता है।

आहिर्बुध्न्योत्तरतारोपसृष्टा महात्मनां राज्ञामहिताय। अपरा मगधकाश्मीरराजानाम्। युगपदुभे काम्बोजोशीनरत्रिगर्त्त-काश्मकार्जुनायनक्षुद्रकमालवाभीराणाम्। सर्वत्र महतां कुशलानाम्। रसेष्विक्षुरसानाम्। यच्चैकैकश उक्तम्।

उत्तरभाद्रपद नक्षत्र की उत्तर तारा पीड़ित हो तो महात्मा और राजाओं का अहित होता है। दूसरी तारा पीड़ित हो तो मगध और काश्मीर देशों के राजाओं को पीड़ा होती है। एक साथ दोनों तारायें पीड़ित हों तो कम्बोज, उशीनर, त्रिगर्त्त, अश्मक, अर्जुनायन, क्षुद्रक, मालव और आभीरवासियों का, सभी देशों के श्रेष्ठ कुशल मनुष्यों का और रसों में इक्षुरसों (ईख के रसों) का नाश होता है तथा एक-एक पीड़ित ताराजन्य अशुभ फल होते हैं।

रेवती पूर्वेणोपसृष्टा पशूनुपहन्ति दक्षिणेनानर्त्तानाम्। पश्चिमेन वाह्लीकसिन्धुसौवीरकीरपह्लवान्। उत्तरेणापः। सर्वतः सुराष्ट्र-वैदेहहिरण्यपादक्षुद्रकमालवमलयजवृजिनहैमवतबाहुदाकुम्भिभोजा-नाम्। हिरण्यपादानां च श्रेष्ठम्। यच्च पार्श्वेषूक्तम्।

रेवती तारा यदि पूर्व से उपद्रवयुत हो तो पशुओं का नाश, दक्षिण से आनर्त्तों का नाश, पश्चिम से वाह्लीक, सिन्धु, सौवीर, कीर और पह्लव देशवासियों का नाश तथा उत्तर से जल का नाश होता है। सभी ओर से पीड़ित हो तो सुराष्ट्र, विदेह, हिरण्यपाद, क्षुद्रक, मालव, मलयज, वृजिन, हैमवत, बाहुद, आकुम्भि और भोज देशों के निवासियों का, हिरण्यपाद के श्रेष्ठ लोगों का और पार्श्वोक्त देशों का नाश होता है।

आश्विनस्योत्तरतारोपसृष्टा किरातकाम्बोजगर्त्तपह्लवान् पीडयति। अपरा रूपधनगुणान्वितचिकित्सकैकद्विशफानाम्। युगपदुभे प्राच्यो-दीच्यवाह्लीकपारतदरदकाशिवत्सनिषादानर्त्तान् किष्किन्धान्। यवनानां च श्रेष्ठम्। बीजेष्वौषधीन्। अध्यक्षेषु चाध्यक्षान्। यच्चैकैकश उक्तम्।

यदि अश्विनी नक्षत्र की उत्तर तारा उपद्रवयुत हो तो किरात, काम्बोज, गर्त्त और पह्लवों को पीड़ित करती है। दक्षिण से दूसरी तारा उपद्रवयुत हो तो रूपवान (सुन्दर), धनवान, गुणवान, वैद्य, एक खुर वाले (गदहा, घोड़ा), दो खुर वाले (बैल, भैंस आदि) पीड़ित होते हैं। एक साथ दोनों तारायें पीड़ित हों तो पूर्वदेश, उत्तरदेश, वाह्लीक, पारत, दरद, काशी, वत्स, निषाद, आनर्त्त और किष्किन्धा के रहने वाले, यवनों में श्रेष्ठ, बीजों में औषधि, अध्यक्षों में अध्यक्ष (सर्वश्रेष्ठ)— इन सबों को पीड़ा होती है तथा एक-एक ताराजन्य पीड़ाफल होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भरणीनां प्राक्तारोपतप्ता मेकलोत्कलकलिङ्गान् पीडयति। दक्षिणा प्रत्यन्ततस्करान्। उदक् प्राणिनः शस्यं च। सर्वाः शवरवर्वरपुलिन्दतिमिङ्गिलदुर्भटाङ्गवङ्गरोडुमेकलान्। सर्वदस्युकलिङ्गानां दक्षिणार्धम्। शस्येषु शूकधान्यम्। पूर्वमेकलानां श्रेष्ठं च। यच्चैकैकश उक्तम्।

यदि भरणी नक्षत्र की पूर्व तारा उपतप्त (पीड़ित) हो तो मेकल, उत्कल और कलिङ्ग देशवासियों को पीड़ित करती है। दक्षिण तारा पीड़ित हो तो गुहा में निवास करने वालों और चोरों का नाश होता है। यदि उत्तर तारा पीड़ित हो तो प्राणियों और धान्यों का नाश होता है। सभी तारायें पीड़ित हों तो शबर, वर्वर, पुलिन्द, तिमिङ्गिल, दुर्भट, अङ्ग, वङ्ग, रोडु और मेकलवासियों का, सभी चोरों, कलिङ्गदेश का दक्षिणार्ध के निवासी, धान्यों में शूकधान्य (सूंड वाले धान्य), पूर्वमेकल (मेकल देश का पूर्वभाग) और श्रेष्ठ व्यक्ति— इन सबों को पीड़ा होती है तथा एक-एक पीड़ित ताराजन्य फल जो उक्त हैं, होते हैं।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु नक्षत्रोत्पातेषु प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्तिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

नक्षत्रों के उत्पातों की अनुक्त विशेष शान्ति की जगह प्रचुर मात्रा में सुवर्ण, अन्न, गाय, पृथ्वी आदि दान के साथ औत्पातिक फल की गुरुता एवं लाघव को जानकर सामान्य शान्ति करनी चाहिये।

एतेषां फलपाकसमयं पाकसमयावर्त्ते वक्ष्यामः।

अथ ग्रहाणां नक्षत्रमार्गचारफलं वराहसंहितायाम्

उत्तरमार्गो याम्यादि निगदितो मध्यमस्तु भाग्यादि।
दक्षिणमार्ग आषाढादि कैश्चिदेवं कृता मार्गाः॥

किसी का मत है कि भरणी आदि नव नक्षत्र (भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा और मघा) उत्तरमार्ग में, पूर्वफाल्गुनी आदि नौ नक्षत्र (पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल) मध्यमार्ग में तथा पूर्वाषाढ़ा आदि नौ नक्षत्र (पूर्वषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती और अश्विनी) दक्षिणमार्ग में स्थित हैं।

तथा च गर्गः

भरण्यादौ मघान्ते च प्रथमे नवके गणे।
वर्त्तमानः शुभो ज्ञेय उत्तरे पथि वर्त्तते॥

विशेषः– उत्तरमार्गाश्रितः क्रूरग्रहोऽपि शुभफलो भवतीत्यर्थः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भरणी नक्षत्र के आदि और मघा नक्षत्र के अन्त में प्रथम नवकगण (भरणी से मघा तक नौ नक्षत्रों) में विद्यमान ग्रह (शुभ या पाप) उत्तरमार्ग में होते हैं तथा उत्तरमार्ग में स्थित ग्रह शुभ फल देते हैं।

क्रूरो निर्ऋतिपर्यन्ते भाग्यादौ नवके गणे।
वर्त्तमानश्च मध्यस्थो मध्यमे पथि वर्त्तते॥

विशेषः– मध्यममार्गाश्रितः क्रूरग्रहोऽपि समफलो भवतीत्यर्थः।

पूर्वफाल्गुनी के आदि से मूल नक्षत्र के अन्त तक द्वितीय नवक गण में स्थित ग्रह मध्यम मार्ग में होते हैं तथा मध्यम मार्ग में वर्त्तमान क्रूर ग्रह भी मध्यम फल देते हैं।

अश्वयुग्योगपर्यन्ताषाढादौ नवके गणे।
वर्त्तमानः सदा क्रूरो दक्षिणे पथि वर्त्तते॥

विशेषः– दक्षिणमार्गाश्रितः शुभग्रहोऽपि क्रूरफलो भवतीत्पर्थः।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के आदि से अश्विनी नक्षत्र तक नौ नक्षत्रों में स्थित ग्रह दक्षिण मार्ग में होते हैं तथा दक्षिण मार्ग में स्थित शुभ ग्रह भी अशुभ फल देते हैं।

अथ तिसृभिस्तिसृभिर्वा वीथीभिरप्युदग्दक्षिणमार्गा भवन्ति। यदाह गर्गः

पूर्वोत्तरा नागवीथी गजवीथी तथोत्तरा।
ऐरावती तृतीया स्यादेवं तास्तूत्तरा स्मृताः॥

आर्षभी तु चतुर्थी स्याद्गोवीथी पञ्चमी स्मृता।
षष्ठी जारद्गवी ज्ञेयास्तिस्रस्ता मध्यमाश्रिताः॥

सप्तमी मृगवीथी स्याद्दक्षिणं मार्गमाश्रिताः।
अष्टमी त्वजवीथी स्याद्दहना नवमी तथा॥

उत्तर मार्ग में नाग, गज और ऐरावत— ये तीन वीथियाँ होती हैं। इनमें सबसे उत्तर नागवीथी, उससे दक्षिण गजवीथी और तीसरी ऐरावत वीथी कही गई है। मध्य मार्ग में स्थित तीन वीथियाँ क्रमशः वृषवीथी, उससे दक्षिण गोवीथी और उससे दक्षिण जरद्गववीथी कही गयी है। दक्षिण मार्ग में क्रमशः सातवीं मृगवीथी, आठवीं अजवीथी और नवीं दहनवीथी कही गयी है। ये नौ वीथियाँ प्रत्येक मार्ग में तीन-तीन के विभाग से कहीं गई हैं।

पराशरश्च

अथर्क्षमार्गास्त्रयो भवन्ति उत्तरमध्यदक्षिणाः। पुनरेकैकशस्त्रिधा नव वीथय इत्याचक्षते। उत्तरोत्तरे नागगजैरावत्यः। मध्ये ऋषभगोजारद्गव्यः। दक्षिणे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृगाजाविकाः । आसां नामान्याग्नेययाम्यवायव्यानि । गजवीथी रोहिण्यादीनि त्रीणि । चत्वारि गजैरावत्यौ । आर्षभी फाल्गुन्यौ । गोवीथी प्राक्प्रौष्ठपदादीनि चत्वारि । श्रवणाश्रविष्ठावारुणानि जारद्गवी । मृगवीथी त्वाष्ट्रहस्तम् । आजी मैत्रमैन्द्राग्न्यम् । आविकेन्द्रमूलमाषाढे वैश्वानरं तामेवाहुः ।

उत्तर, मध्य और दक्षिण— ये तीन मार्ग होते हैं। पुनः प्रत्येक (उत्तर, मध्य और दक्षिण) मार्ग में तीन-तीन वीथियों के क्रम से नौ वीथियाँ होती हैं। उत्तर मार्ग में उत्तरोत्तर क्रम से नाग, गज और ऐरावत— ये तीन वीथियाँ; मध्य मार्ग में उत्तरोत्तर क्रम से ऋषभ (वृष), गो और जरद्गव— ये तीन वीथियाँ तथा दक्षिण मार्ग में उत्तरोत्तर क्रम से मृग, अज, आविक (दहन)— ये तीन वीथियाँ हैं। इनके नाम— कृत्तिका, भरणी और स्वाती नागवीथी; रोहिणी आदि तीन (रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा) नक्षत्र गजवीथी; गजवीथी से आगे-आगे चार नक्षत्र (पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा और मघा) पर्यन्त ऐरावती वीथी; पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी दो नक्षत्र आर्षभ वीथी; पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती और अश्विनी— ये चार नक्षत्र गोवीथी; श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा जरद्गववीथी; चित्रा और हस्त मृगवीथी; अनुराधा-विशाखा अजवीथी और ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ आविक-वीथी; जिसे वैश्वानरवीथी भी कहते हैं; होती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

कृत्तिका याम्यवायव्या नागवीथ्युत्तरोत्तरा ।
गजवीथी उदङ्मध्ये प्राजापत्यादयस्तु या ॥

ऐरावती ह्युदग्याम्या आदित्यादिचतुष्टयम् ।
मध्योत्तरगताऽऽर्षभी फाल्गुन्योर्ऋक्षयोर्द्वयोः ॥

मध्यमध्ये तु गोवीथी अजाद्यं भचतुष्टयम् ।
मध्ययाम्ये जरद्गुः स्यात् त्रितयं श्रवणादिकम् ॥

याम्योत्तरेण तु मृगा हस्तचित्रे प्रकीर्त्तिते ।
अजा दक्षिणमध्ये तु विशाखा मैत्रसंयुता ॥

आविका स्यात्तु याम्ये तु शक्राद्यं भचतुष्टयम् ।
वैश्वानरपथं प्राहुस्तामेवात्यन्तदारुणम् ॥

कृत्तिका, भरणी और स्वाती उत्तर मार्ग की सबसे उत्तर वीथी 'नाग' नाम की है। उत्तरमार्ग की मध्य वीथी 'गज' नामक, रोहिणी आदि तीन नक्षत्र (रोहणी, मृगशिरा और आर्द्रा) हैं। पुनर्वसु आदि चार नक्षत्र (पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मघा) ऐरावती वीथी उत्तरमार्ग के दक्षिण में है। मध्योत्तर मार्ग में पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी आर्षभी वीथी, मध्य-मध्य मार्ग में पूर्वभाद्र आदि चार नक्षत्र (पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती और अश्विनी) गोवीथी, मध्य-दक्षिण मार्ग में श्रवण आदि तीन (श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा) नक्षत्र जारद्गवी वीथी, दक्षिण-उत्तर मार्ग में हस्त और चित्रा मृगवीथी, दक्षिण-मध्य मार्ग में विशाखा और अनुराधा अजवीथी, दक्षिण-दक्षिण मार्ग में ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ आविक वीथी होती है। आविक वीथी को वैश्वानर वीथी भी कहते हैं, जो अत्यन्त दारुण फल देने वाली होती है।

वृद्धगर्गस्तु श्रवणादित्रयेण गोवीथीं पूर्वभाद्रपदादिचतुष्टयेन जारद्गवीं वीथीमाह।

तद्यथा

वायव्यानलयाम्येषु नागाद्या उत्तरोत्तराः।
रोहिण्यादिषु त्रिष्वेवं द्वितीया गजवीथिका॥

चतुर्ष्वादित्यपूर्वेषु तृतीयैरावती स्मृता।
फाल्गुन्यौ चार्षभी ज्ञेया चतुर्थी मध्यमादिगा॥

वैष्णवाद्येषु त्रिष्वाहुर्गोवीथीमथ पञ्चमीम्।
षष्ठी चतुर्भिराजाद्यैर्वीथी जारद्गवी भवेत्॥

सप्तमी मृगवीथी स्यात् सावित्रं त्वाष्ट्रमेव च।
वैश्वानरी तथेन्द्राद्यैश्चतुर्भिर्नवमी भवेत्॥

नागवीथ्युत्तराद्ये ता वीथ्यो नव निदर्शिताः।

स्वाती, कृत्तिका और भरणी नक्षत्रों में नागवीथी (उत्तर-उत्तर मार्ग=सबसे उत्तर मार्ग), रोहिणी आदि तीन (रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा) नक्षत्रों में दूसरी गजवीथी (उत्तर-मध्य मार्ग), पुनर्वसु आदि चार (पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा और मघा) नक्षत्रों में तीसरी ऐरावत वीथी (उत्तर-दक्षिण मार्ग) कही गयी है। पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी नक्षत्रों में चौथी (मध्योत्तर मार्ग) आर्षभी वीथी, श्रवण आदि तीन नक्षत्रों (श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा) में पाँचवी (मध्य-मध्यमार्ग) गोवीथी, पूर्वभाद्रादि चार नक्षत्रों (पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती और अश्विनी) में छठी (मध्य-दक्षिणमार्ग) जारद्गवी वीथी, हस्त और चित्रा नक्षत्रों में सातवीं (दक्षिण-उत्तर मार्गगत) मृगवीथी, ज्येष्ठा आदि चार नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़) नवीं (दक्षिण-दक्षिण मार्गगत) वैश्वानरी वीथी होती है। यहाँ अष्टम वीथीगत नक्षत्रों का उल्लेख वृद्धगर्ग के उक्त वचन में नहीं है; परन्तु ये नागादि नौ वीथियाँ होती हैं— ऐसा कहा गया है। अतः अष्टम वीथी 'अष्टमी आविका वीथी विशाखामैत्रसंयुता' अर्थात् विशाखा और अनुराधा— ये दो नक्षत्र अष्टमी वीथी (दक्षिण-मध्य-मार्गगत) आवी संज्ञक कही गई हैं— ऐसा पाठ होना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

वीथीमार्गानपरे कथयन्ति यथास्थितान् भमार्गेषु ।

किसी का मत है कि नक्षत्रमार्ग में जिस तरह वीथी के मार्ग स्थित हैं, उसी तरह दक्षिण, उत्तर और मध्यमार्ग की भी कल्पना करनी चाहिये ।

तथा च काश्यपः

नक्षत्राणां च ये मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।
त्रिधा विभज्य तानेव वीथीमार्गान् प्रकल्पयेत् ।।

नक्षत्रों के जो दक्षिण, उत्तर और मध्यमार्ग कहे गये हैं, उन्हें प्रत्येक को तीन-तीन विभाग कर वीथीमार्ग की कल्पना करनी चाहिये ।

अथ वीथीचारफलम् । तत्र गर्गः

उत्तरोत्तरमार्गस्था रश्मिमालाध्वगा ग्रहाः ।
निष्पन्दना इवात्यर्थं जयमाहुरुपस्थितम् ।।

अतिशय निष्पन्दित और रश्मिमाला से युत ग्रह उत्तरोत्तर (सबसे उत्तर) मार्ग होकर विचरण करे तो जय होती है— ऐसा कहना चाहिये । अर्थात् उत्तरोत्तर मार्ग में स्थित ग्रह क्रमशः शुभ फल देते हैं । दक्षिणमार्गस्थ ग्रह क्रमशः अशुभ फल देते हैं ।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

उदयास्तमयेऽस्यां तु चारेणापि तथा ग्रहाः ।
उत्तरास्तु शुभा ज्ञेया दक्षिणाश्चाशुभा ग्रहाः ।।

सुप्रभारश्मिवन्तश्च नागवीथ्यां यदा ग्रहाः ।
तत्तदस्ति शुभं लोके यत्र पश्यन्ति मानवाः ।।

विरश्मयो विवर्णाश्च वैश्वानरपथाश्रिताः ।
न तदस्त्यशुभं नाम यद्यत् कुर्युर्जगत्त्रये ।।

यदि उत्तर मार्ग में स्थित होकर ग्रह उदय, अस्त या गमन करे तो शुभ और दक्षिण मार्ग में होकर उदय, अस्तमन या गमन करे तो अशुभ जानना चाहिये । जहाँ नागवीथी में स्थित ग्रह सुन्दर कान्ति (निर्मल) और रश्मिवान दिखाई दे, वहाँ के निवासियों का शुभ होता है तथा जहाँ रश्मिविहीन और विवर्ण ग्रहों को वैश्वानर (दक्षिण-दक्षिण मार्ग) मार्ग में स्थित देखते हैं, वहाँ के निवासियों के लिए तीनों लोकों में ऐसा अशुभ होता है, जिसकी तुलना नहीं की जा सकती अर्थात् महान् भयङ्कर अशुभ होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृद्धगर्गेण प्रत्येकवीथीफलमुक्तम्। तद्यथा

यदोदये प्रवासे वा चारे वा नागवीथिगाः।
ग्रहास्तदाऽतिवर्षा स्यात् सुभिक्षक्षेम एव च॥

गजवीथीगताश्चापि क्षेमवर्षसुभिक्षदाः।
श्रेष्ठिकाश्चात्र पीड्यन्ते कुलानि च महान्ति च॥

ऐरावत्यां सुभिक्षं स्याद्वर्षमारोग्यमेव च।
नृपाः सवैरा जायन्ते बलक्षोभा भवन्ति च॥

गोवीथ्यार्षभवीथ्योश्च मध्यमं शस्यमुच्यते।
बलिनो गोमिनो गावः पीड्यन्ते च महानृपाः॥

जरद्गुवीथ्यां पीड्यन्ते वित्तज्ञानवयोऽधिकाः।
धान्यार्घाश्चापि वर्धन्ते रोगाश्चापि कफोत्तराः॥

अजवीथ्यां च पीड्यन्ते विप्रा ये च प्रजाधिकाः।
जायते चापि दुर्भिक्षं दुर्वृष्टिभयमेव च॥

मृगवीथ्यां मृगव्याधाः पीड्यन्ते च तपस्विनः।
क्षुद्भयं त्वपि वर्धेत विकाराश्चापि वातिकाः॥

वैश्वानर्यां तथा वीथ्यां पित्तमग्निश्च जायते।
मेघाश्च विलयं यान्ति धान्यादीनाञ्च सञ्चयाः॥

यदि ग्रह उदयकाल में या अस्तकाल में या चारकाल (विचरण) में नागवीथी में स्थित हों तो क्षेम, वर्षा और सुभिक्ष होते हैं। उक्त काल में यदि ग्रह गजवीथी में स्थित हों तो भी क्षेम, वर्षा और सुभिक्ष देने वाले होते हैं, श्रेष्ठ व्यक्ति और महान् कुलोत्पन्न पीड़ित होते हैं। ऐरावती वीथी में ग्रह के रहने पर सुभिक्ष, वर्षा और आरोग्य तथा राजाओं में परस्पर वैरभाव और सेनाओं में क्षोभ होते हैं।

गोवीथी और आर्षभ वीथी में ग्रहों के स्थित रहने पर धान्योत्पत्ति मध्यम होती है; बलवान, गाय वाले, गाय और महान् राजाओं को पीड़ा होती है।

जारद्गवी वीथी में धनवान एवं ज्ञानवान पीड़ित होते हैं; धान्यों की महँगाई और कफोत्पन्न रोगों की वृद्धि होती है।

अजवीथी में ग्रहों के रहने पर अधिक सन्तान वाले ब्राह्मण पीड़ित होते हैं; दुर्भिक्ष और दुर्वृष्टि का भय होता है। मृगवीथी में मृग, व्याधा, तपस्वी आदि पीड़ित होते हैं, लोगों में क्षुधाभय बढ़ता है और वातसम्बन्धी विकार (रोग) उत्पन्न होते हैं।

वैश्वानर वीथी में पित्त और अग्नि का भय एवं मेघ और धान्यसञ्चय (समूह) का नाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

नक्षत्राणां तारा याम्योत्तरमध्यमास्तद्वत् ।

विशेषः– याम्योत्तरमध्यमा नक्षत्रतारा याम्योत्तरमध्यमार्गान् कथयन्तीत्यर्थः ।

आकाश के दक्षिणभाग में स्थित नक्षत्रतारे दक्षिण मार्गस्थित, मध्य में स्थित मध्य मार्गस्थित और उत्तर में स्थित उत्तर मार्गस्थित होते हैं ।

तथा च काश्यपः

उदक्स्थास्तारकाः सौम्यो मध्यस्था मध्यमस्तथा ।
दक्षिणे दक्षिणो मार्गो नक्षत्रेषु प्रकीर्त्तितः ॥

विशेषः– एतद्वद्ग्रहेषु यथासम्भवं बोद्धव्यम् ।

उत्तर दिशा में स्थित तारागण उत्तर मार्गगत, मध्य में स्थित मध्य मार्गस्थ और दक्षिण में स्थित नक्षत्रों के तारागण दक्षिणमार्ग में होते हैं ।

इसी तरह ग्रहों को भी जानना चाहिये ।

अथोत्तरादिमार्गेषु ग्रहाणामुदयास्तफलम् । तत्र गर्गः

उदयास्तमयं कुर्यान्मध्यमं मार्गमाश्रितः ।
मध्यमं वर्षशस्यं च योगक्षेमं च निर्दिशेत् ॥

उदयास्तमयं कुर्याद्दक्षिणं मार्गमाश्रितः ।
धान्यसंग्रहणं कृत्वा केदारेषु तिलान् वपेत् ॥

यदि मध्यम मार्ग में स्थित ग्रहों का उदयास्त हो तो वर्षा, धान्य और योग-क्षेम मध्यम होते हैं । यदि दक्षिण मार्ग में स्थित ग्रहों का उदय या अस्त हो तो धान्यों का संग्रह करके खेतों में तिल बोना चाहिये अर्थात् वर्षा के अभाव में धान्योत्पत्ति नहीं होती है, इसलिये केवल अल्प वर्षा के कारण मात्र तिल की उत्पत्ति होती है ।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु नक्षत्रमार्गतारोत्पातेषु चारकर्त्तृकग्रहपूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका सामान्यशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या ।

नक्षत्रमार्ग के तारोत्पातों की अनुक्त विशेष शान्ति के लिए चार करने वाले ग्रहों की पूजा करके प्रचुर सुवर्ण, अन्न, गाय, जमीन आदि दानपूर्वक उत्पातजनित फलों की गुरुता एवं लघुता को जानकर तदनुसार सामान्य शान्ति करनी चाहिये ।

अथ दिग्देशनक्षत्रपीडाफलम् । तत्र पराशरः

कृत्तिकादीनि नक्षत्राणि मध्यदेशेऽस्मिन् वर्षे भवन्त्यार्द्रादीनि त्रीण्युक्तवर्गक्रमात् पूर्वादिष्वष्टसु दिक्षु दिङ्नक्षत्रेषूपसृष्टेषु दिग्जनपदानां तापो भवति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृत्तिकादि तीन नक्षत्र (कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा) इस भारतवर्ष के मध्य देश में कहे गये हैं। इन नक्षत्रों के पीड़ित होने पर मध्य देशों में स्थित जनपदों को ताप होता है। उक्त वर्ग के क्रम से अर्थात् पृथ्वी के नौ भागों (चार दिशा, चार विदिशा एवं एक भूमध्य) के क्रम से आर्द्रादि तीन-तीन नक्षत्र आठ दिशाओं में होते हैं तथा तत्तत् नक्षत्रों के पीड़ित होने पर तत्तत् दिशाओं में स्थित जनपद-निवासियों को पीड़ा होती है अर्थात् आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य— इन तीन नक्षत्रों के पीड़ित होने पर पूर्व दिशा में स्थित देशों के जनपदवासियों को पीड़ा होती है। आश्लेषा, मघा और पूर्वफाल्गुनी के पूर्व-दक्षिण (अग्निकोण) में स्थित देश; उत्तरफाल्गुनी, हस्त और चित्रा के दक्षिणदेश; स्वाती, विशाखा और अनुराधा के नैर्ऋत्य कोणस्थित देश; ज्येष्ठा, मूल और पूर्वाषाढ़ा के पश्चिम देश; उत्तराषाढ़, श्रवण और धनिष्ठा के वायव्य कोण; शतभिषा, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्र के उत्तरदेश तथा रेवती, अश्विनी और भरणी के ईशान कोण में स्थित देश कहे गये हैं। इन नक्षत्रों के पीड़ित होने पर उनके देशों के जनपदवासियों को पीड़ा होती है।

गर्गस्तु

कृत्तिकाद्यैस्त्रिनक्षत्रैर्भवर्गैर्नवभिः क्षितिः।
कल्पिता मध्यदेशादिप्रागादिक्रमयोगतः॥

कृतिकादिस्त्रिनक्षत्रप्रथिता मध्यमा चदा।
सा पीडिता पीडयति मध्यदेशमशेषतः॥

रौद्रादिः पीडिता पूर्वां सार्पादिः पूर्वदक्षिणाम्।
आर्यम्णादिस्तथा याम्यां स्वात्यादिर्दक्षिणां पराम्॥

ज्येष्ठादिः पश्चिमामाशां वैश्वादिरुत्तरोत्तराम्।
वारुणादिस्तथा सौम्यां पूषादिः पूर्व-उत्तराम्॥

भारतवर्ष को पृथ्वी के मध्य भाग में तथा शेष देशों को पूर्वादि दिशाओं में मानकर पृथ्वी के नौ विभाग किये गये हैं। तदनुसार मध्य, पूर्वादि विभागों में कृत्तिका आदि तीन-तीन नक्षत्र की कल्पना की गई है।

यदि मध्यदेशोक्त कृत्तिका आदि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो समस्त मध्यदेश पीड़ित होता है। इसी प्रकार आर्द्रादि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो पूर्वदेश, आश्लेषा आदि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो पूर्व-दक्षिण देश (अग्निकोणस्थ देश), उत्तरफाल्गुनी आदि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो दक्षिणदेश, स्वाती आदि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो नैर्ऋत्य कोणस्थ देश, ज्येष्ठा आदि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो पश्चिम देश, उत्तराषाढ़ा आदि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो वायव्य कोण, शतभिषा आदि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो उत्तर देश एवं रेवती आदि तीन नक्षत्र पीड़ित हों तो ईशान कोण में स्थित देशवासियों को पीड़ा होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुधर्मोत्तरे

कृत्तिका रोहिणी सौम्या मध्यदेशस्य निर्दिशेत्।
पीडिते त्रितये तस्मिन् मध्यदेशः प्रपीड्यते॥

आर्द्रापुनर्वसू पुष्यः पूर्वस्यां तु भवेद्दिशि।
पीडिते त्रितये तस्मिन् पूर्वदेशः प्रपीड्यते॥

सार्पं पितृ तथा भाग्यमनलस्य दिशि स्मृतम्।
पीडिते त्रितये तस्मिन्नाग्नेयी पीड्यतेऽथ दिक्॥

आर्यम्णमथ हस्तं च त्वाष्ट्रं स्याद्दिशि दक्षिणे।
पीडिते त्रितये तस्मिन् दक्षिणा दिक् प्रपीड्यते॥

स्वातिर्विशाखा मैत्रं च नैर्ऋत्यां दिशि कीर्त्तितम्।
पीडिते त्रितये तस्मिन् नैर्ऋती पीड्यतेऽथ दिक्॥

ज्येष्ठा मूलं च तोयं च वरुणस्य दिशि स्मृतम्।
पीडिते त्रितये तस्मिन् वारुणी पीड्यतेऽथ दिक्॥

वायव्यां दिशि निर्दिष्टा वैश्वश्रवणवासवाः।
पीडिते त्रितये तस्मिन्नैशानी दिक् प्रपीड्यते॥

कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र मध्यदेश का कहना चाहिये। इन तीनों नक्षत्रों के पीड़ित होने पर मध्यदेश पीड़ित होते हैं। आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्र पूर्व दिशा में हैं। इन तीनों के पीड़ित होने पर पूर्व दिशा में स्थित देश पीड़ित होते हैं। आश्लेषा, मघा और पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र अग्निकोण में कहे गये हैं। उनके पीड़ित होने से अग्निकोण में स्थित देश पीड़ित होते हैं। उत्तरफाल्गुनी, हस्त और चित्रा नक्षत्र दक्षिण दिशा में हैं, इन तीनों के पीड़ित होने पर दक्षिण दिशा पीड़ित होती है। स्वाती, विशाखा और अनुराधा नक्षत्र नैर्ऋत्य कोण में कहे गये हैं; इनके पीड़ित होने पर नैर्ऋत्य दिशा पीड़ित होती है। ज्येष्ठा, मूल और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पश्चिम दिशा में कहे गये हैं। इन तीनों के पीड़ित होने पर पश्चिम दिशा पीड़ित होती है। उत्तराषाढ़, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र वायव्य दिशा में कहे गये हैं। इनके पीड़ित होने पर वायव्य दिशा में स्थित देश पीड़ित होते हैं। यहाँ उत्तर दिशा और ईशान कोणस्थ देशों के नक्षत्रों का उल्लेख नहीं है, जो कि मूल में त्रुटि है; परन्तु अन्य वचनों से स्पष्ट है कि शतभिषा, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्रपद नक्षत्रों की दिशा उत्तर है तथा रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्र ईशान कोण के हैं; अतः इनके पीड़ित होने पर क्रमशः उत्तर दिशा एवं ईशान कोण में स्थित देशों को पीड़ा होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपस्तु

क्षितौ भारतवर्षेऽस्मिन् नवभागव्यवस्थया।
बहुलाद्यास्त्रयो ऋक्षा मध्यदेशादिषु स्थिताः॥

क्रूरग्रहहते तैस्तु पीड्यन्ते तन्निवासिनः।
ते पीडामुपयास्यन्ति भिन्नैः क्रूरैश्च मर्दितैः॥

पृथ्वी पर भारतवर्ष को मध्य में मानकर पृथ्वी के नौ विभागों की व्यवस्था से प्रति विभाग में कृत्तिका आदि तीन-तीन नक्षत्र मध्य, पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और ईशान दिशाओं में स्थित हैं। विभागानुसार नक्षत्रों के क्रूरग्रहों से पीड़न, भेदन या मर्दन होने पर वहाँ के निवासी पीड़ित होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरे

स्वदेशपीडनं कुर्यान्नक्षत्रं पीडितं कथम्।
सर्वमेतन्ममाचक्ष्व सर्वधर्मभृतां वर॥

हे सर्वधर्मात्माओं में अग्रगण्य मुनिवर! नक्षत्र पीड़ित होने पर अपने (उक्त) देश को कैसे पीड़ित करता है ? यह सब मुझे बतावें।

मार्कण्डेय उवाच

शनैश्चरार्कौ चारेण वक्रेणाङ्गारको ग्रहः।
उपरागेण राहुस्तु केतुश्चाधूमनोदयैः॥

उदयास्तमयाभ्यां च जीवशुक्रशशाङ्कजाः।
सञ्छादनेन च शशी असम्यग्योगतस्तथा॥

तथा च यस्मिन् नक्षत्रे दिव्यपार्थिवनाभसाः।
दृश्यन्ते सुमहोत्पाताः स्वां दिशं तत्र पीडयेत्॥

शनैश्चर और सूर्य किसी भी नक्षत्र को चार (गमन = भोग) करने से; मङ्गल किसी भी नक्षत्र में वक्र होने से; राहु उपराग (ग्रहण) से; केतु आधूमन (धूपित करने) और उदय से; बृहस्पति, शुक्र और बुध उदय और अस्त के द्वारा; चन्द्रमा आच्छादन और विपरीत योग (अपसव्य योग = गमन) से पीड़ित करते हैं तथा जिस नक्षत्र में दिव्य, भौम या आन्तरिक्ष अतिशय महान् उत्पात दिखाई दे, वह नक्षत्र अपनी दिशाओं के देशों में रहने वालों को पीड़ित करता है।

पराशरस्तु

दिङ्नक्षत्रेषूपसृष्टेषु दिग्जनपदानामुपतापो भवति। विशेषतस्तु शूरसेनमगधकलिङ्गावन्तिसौरसैन्धवहारभूतिमद्रपुलिन्दाधिपतीनाम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिशाओं के अनुसार उक्त नक्षत्रों के उपद्रवयुत (पीड़ित) होने पर उस दिशा के जनपदों को ताप (पीड़ा) होता है। विशेष रूप से शूरसेन, मगध, कलिङ्ग, अवन्ती, सौर, सैन्धव, हारभूति, मद्र, पुलिन्द— इन देशों के अधिपतियों (राजाओं) को पीड़ा होती है। ये देश आग्नेयादि (कृत्तिकादि) वर्ग के अनुसार कहे गये हैं।

वराहसंहितायां तु

वर्गैराग्नेयाद्यैः क्रूरग्रहपीडितैः क्रमेण नृपाः।
पाञ्चालो मागधिकः कालिङ्गश्च क्षयं याति॥

आवन्तोऽथानर्त्तो मृत्युं चायाति सिन्धुसौवीरः।
राजा च हारहौरो मद्रेशोऽन्यश्च कौलिन्दः॥

विशेषः– यदा उक्तविपरीतलक्षणं नक्षत्रं शुभग्रहादियुक्तं भवति तदा दिग्देशानामभ्युदयं करोति तथा चाभिहितक्रमेण मध्यप्रागादिदिग्देशानां नक्षत्राण्यभिधायोक्तम्।

आग्नेय (कृत्तिका) आदि नव वर्ग पापग्रहों से पीड़ित हों तो क्रम से पाञ्चाल, मगध, कलिङ्ग, अवन्ती, आनर्त्त, सिन्धु, सौवीर, हारहौर, मद्र और कौलिन्द देशों के नौ राजाओं का नाश होता है।

यदि उक्त अशुभ लक्षणों से विपरीत अर्थात् शुभग्रहों से युत नक्षत्र हों तो नक्षत्रोक्त दिशाओं का अभ्युदय करता है। यह विचार उक्त मध्य, पूर्व आदि दिशाओं के नक्षत्रों के अनुसार करना चाहिये।

मार्कण्डेयपुराणे

एतत्पीडास्वमी देशाः पीड्यन्ते ये क्रमोदिताः।
यान्ति चाभ्युदयं विप्र ग्रहैः सम्यग्व्यवस्थितैः॥

हे विप्र! पापग्रह आदि पीड़ा से पीड़ित नक्षत्र मध्य, पूर्व, दक्षिण आदि क्रम से उक्त अपने वर्ग के देशों को पीड़ित करते हैं तथा शुभ ग्रह आदि शुभ लक्षणों से युक्त नक्षत्र अपने देशों का अभ्युदय करते हैं।

अथ दिग्देशाः। तत्र काश्यपः

कुशस्थलं जयन्ती च उपज्योतिष्मती पुरी।
मध्यमाश्च कलिङ्गाग्रकपित्थाः शूरसेनकाः॥

आश्वत्था गुडनीपाश्च मेदाः काञ्चनकास्तथा।
मन्दारमत्स्यकालिङ्गाः कैकेया कुचरा अपि॥

गौरग्रीवाः सपाखण्डाः पारियात्रकमेकलाः।
सारस्वता माथुराश्च पाञ्चाला यामुनास्तथा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुरुक्षेत्रं कालकोटी तथा स्याद्धस्तिनापुरम्।
पाण्डवाः पाण्डुशाल्वाश्च उज्जिहाननिवासिनः ॥

कुशस्थल, जयन्ती, उपज्योतिष्मतीपुरी, कलिङ्गाग्र, कपित्थ, शूरसेन, आस्वस्थ, गुड़नीप, मेद, काञ्चन, मन्दार, मत्स्य, कालिङ्ग, कैकेय, कुचर, गौरग्रीव, पाखण्ड, पारियात्र, मेकल, सारस्वत, माथुर, पाञ्चाल, यामुन, कुरुक्षेत्र, कालकोटि, हस्तिनापुर, पाण्डव, पाण्डु, शाल्व और उज्जिहान के निवासी कृत्तिका आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (मध्यदेश) भारतवर्ष में स्थित हैं।

पराशरस्तु

अथ मध्यदेश आर्यावर्त्त इति च आख्यायते। तत्र जनपदाः शूरसेनोद्दैहिकमद्राश्वत्थनीपकाञ्चनककौरवोत्तमज्यौतिषभद्रा-रिमेदमाध्यमिकशाल्वसाकेतमत्स्यकपिष्ठलदौलेयमाण्डव्याः। पाण्डुनगरगौरग्रीवपारियात्रमरुकुकुरौदुम्बरयामुनगजाह्वौज्जिहान-कालकोटिमथुरोत्तरदक्षिणपाञ्चालधर्मारण्यकुरुक्षेत्रसारस्वताः।

पृथ्वी का मध्य भाग आर्यावर्त्त (भारतवर्ष) को कहा जाता है। इसमें शूरसेन, उद्दैहिक, मद्र, अश्वत्थ, नीप, काञ्चन, कौरव, उत्तमज्यौतिष, भद्र, अरिमेद, माध्यमिकशाल्व, साकेत, मत्स्य, कपिष्ठल, दौलेय, माण्डव्य, पाण्डुनगर, गौरग्रीव, पारियात्र, मरु, कुकुर, औदुम्बर, यामुन, गजाह्व, उज्जिहान, कालकोटि, मथुरा के उत्तर और दक्षिण जनपद, पाञ्चाल, धर्मारण्य, कुरुक्षेत्र और सारस्वत देशों के जनपद मध्य भाग में स्थित हैं।

मार्कण्डेयपुराणे तु

भद्रारिमेदमाण्डव्यशाल्वनीपास्तथा शकाः।
उज्जिहानास्तथा वत्सघोषसंख्यानयामुनाः ॥

मत्स्याः सारस्वता वत्साः शूरसेनाः समाथुराः।
धर्मारण्या ज्यौतिषिका गौरग्रीवा गजांशकाः ॥

वैदेहकाः सपाञ्चालाः साकेताः कङ्कमारुताः।
कालकोट्यः सपाखण्डाः पारियात्रनिवासिनः ॥

कापिष्ठलाः कुकुराद्यास्तथैवोदुम्बरा जनाः।
गजाह्वयाश्च कूर्मस्य जलमध्यनिवासिनः ॥

भद्रा, अरिमेद, माण्डव्य, शाल्व, नीप, शक, उज्जिहान, वत्स, घोष, संख्यान, यामुन, मत्स्य, सारस्वत, वत्स, शूरसेन, माथुर (मथुरा), धर्मारण्य, ज्यौतिष, गौरग्रीव, गजांश, विदेह, पाञ्चाल, साकेत, कङ्क, मारुत, कालकोटि,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाखण्ड, पारियात्रनिवासी, कपिष्ठल, कुकुरदि, उदुम्बर, गजाह्व और कूर्मदेश के जलमध्य के निवासी— यह कृत्तिका आदि तीन नक्षत्रों का वर्ग (मध्य भाग) है।

वराहसंहितायाम्

भद्रारिमेदमाण्डव्यशाल्वनीपोज्जिहानसंख्याताः ।
मरुवत्सघोषयामुनसारस्वतमत्स्यमाध्यमिकाः ॥

माथुरकोपज्यौतिषधर्मारण्यानि शूरसेनाश्च ।
गौरग्रीवोद्देहिकपाण्डुगुडाश्वत्थपाञ्चालाः ॥

साकेतकङ्ककुरुकालकोटिकुकुराह्वपारियात्रनगाः ।
औदुम्बरकापिष्ठलगजाह्वयाश्चेति मध्यमिदम् ॥

भद्र, अरिमेद, माण्डव्य, शाल्व, नीप, उज्जिहान, संख्यात, मरु, वत्स, घोष, यामुन, सारस्वत, मत्स्य, माध्यमिक, माथुर, उपज्योतिष, धर्मारण्य, शूरसेन, गौरग्रीव, उद्देहिक, पाण्डु, गुड, अश्वत्थ, पाञ्चाल, साकेत, कङ्क, कुरु, कालकोटि, कुकुर, पारियात्र, नग, औदुम्बर, कापिष्ठल और हस्तिनापुर— ये देश कृत्तिका आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (भारतवर्ष के मध्य भाग) में स्थित हैं।

वटकणिकायान्तु

मध्यमुदक्पाञ्चाला गङ्गाया उत्तरं कुरुक्षेत्रम् ।
उदगपि च पारियात्रं मरुमथुरायोध्यमत्स्याश्च ॥

सारस्वतयामुनवत्सघोषसंस्थाननीपमाण्डव्याः ।
भद्रारिमेदनैमिषशाल्वोपज्यौतिषाश्वत्थाः ॥

औदुम्बरकुकुराह्वोज्जिहानगजशाल्वपाञ्चालाः ।
माध्यमिकोद्देहिककालकोटिकापिष्ठलं मध्ये ॥

वटकणिका में भी कहा गया है कि मध्य देश के उत्तर में पाञ्चाल, गंगा के उत्तर में कुरुक्षेत्र, पारियात्र, मरु, मथुरा, अयोध्या, मत्स्य, सारस्वत, यामुन, वत्स, घोष, संस्थान, वीप, माण्डव्य, भद्र, अरिमेद, नैमिष शाल्व, उपज्यौतिष, अश्वत्थ, औदुम्बर, कुकुर, उज्जिहान, गज, शाल्व, माध्यमिक, उद्देहिक, कालकोटि और कापिष्ठल मध्य भाग में स्थित हैं।

अथ पूर्वदिशाः । तत्र काश्यपः

पूर्वे मालवका भद्रा मिथिला पौण्ड्रवर्धनम् ।
काशिकोशलसूक्ष्माश्च मागधा मेकलास्तथा ॥

व्याघ्रवक्त्राः सूर्पकर्णा लौहित्यः शोण एव च ।
प्राग्ज्यौतिषमहेन्द्रादिकिराताः क्षीरवासिनः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मालव, भद्र, मिथिला, पौण्ड्र, वर्धमान, काशी, कोसल, सूक्ष्म, मगध, मेकल, व्याघ्रमुख, सूर्पकर्ण, लौहित्य, शोण, प्राग्ज्यौतिष, महेन्द्रादि, किरात और क्षीरवासी आर्द्रा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (भारतवर्ष के पूर्व भाग) में स्थित्त हैं।

पराशरस्तु

अथ पूर्वस्यां च मालवशिविराञ्जनपद्मवृषध्वजोदयशिखरिदन्तुरकाः काशिकोशलमगधमिथिलामेकलोत्कलपुण्ड्रककर्वटसमतटोड्रगौडकभद्रद्रविडसुह्मताम्रलिप्तप्राग्ज्यौतिषवर्धमानवाजिमुखाम्बष्ठपुरुषादसूर्पिकर्णिकोष्ठाधिश्रोत्रव्याघ्रमुखलौहित्यार्णवक्षीरोदार्णवमीनाशनकिरातसौवीरमहीधरा विवासिनैकपादोदयनिवासिनश्च।

मालव, शिवि, राञ्जन, पद्म, वृषध्वज, उदयगिरि, दन्तुरक, काशी, कोसल, मगध, मिथिला, मेकल, उत्कल, पुण्ड्र, कर्वट, समतट, उड्र (उड़ीसा), गौड़, भद्र, द्राविड़, सुह्म, ताम्रलिप्त, प्राग्ज्यौतिष, वर्धमान, अश्वमुख, अम्बष्ठ, पुरुषाद, सूर्पकर्ण, कोष्ठ, अधिश्रोत्र, व्याघ्रमुख, लौहित्य समुद्र, क्षीरसागर, मीनाशन, किरात, सौवीर, पर्वत, विवासी, एकपाद— ये देश आर्द्रा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (पूर्व दिशा) में स्थित हैं।

मार्कण्डेयपुराणे तु

वृषध्वजोऽञ्जनश्चैव पद्माख्यो मलयाचलः।
सूर्पकर्णव्याघ्रमुखौ गुर्वर्कः कर्पटाशनः॥

तथा चान्द्रपुराश्चैव खशाः समगधास्तथा।
शिवयो मिथिला औड्रास्तथा वदनदन्तुराः॥

प्राग्ज्यौतिषाश्च लौहित्याः सामुद्राः पुरुषादकाः।

वृषध्वज, अञ्जन, पद्म, मलयाचल, सूर्पकर्ण, व्याघ्रमुख, गुर्वर्क, कर्पटाशन, चान्द्रपुर, खश, मगध, शिवि, मिथिला, औड्र, वदनदन्तुरा, प्राग्ज्यौतिष, लौहित्यसमुद्र और पुरुषाद— ये देश पूर्व दिशा में स्थित हैं।

वराहसंहितायां तु

अथ पूर्वस्यामञ्जनवृषभध्वजपद्ममाल्यवद्गिरयः।
व्याघ्रमुखसुह्मकर्वटचान्द्रपुराः सूर्पकर्णाश्च॥

खशमगधशिविरगिरिमिथिलसमतटोड्राश्चवदनदन्तुरकाः।
प्राग्ज्यौतिषलौहित्यक्षीरोदसमुद्रपुरुषादाः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उदयगिरिभद्रगौडकपौण्ड्रोत्कलकाशिमेकलाम्बष्ठाः ।
एकपदताम्रलिप्तककोशलका वर्धमानाश्च ॥

अञ्जन, वृषध्वज, पद्म और माल्यवान् गिरि, व्याघ्रमुख, सुह्म, कर्वट, चान्द्रपुर, सूर्पकर्ण, खश, मगध, शिविरगिरि, मिथिला, समतट, ओड्र (उड़ीसा), अश्ववदन, दन्तुरक, प्राग्ज्यौतिष, लौहित्य नद, क्षीरोद समुद्र, पुरुषाद, उदयगिरि, भद्र, गौड़क, पौण्ड्र, उत्कल, काशी, मेकल, अम्बष्ठ, एकपद, ताम्रलिप्तक, कोशलक और वर्धमान— ये देश आर्द्रा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (पूर्व दिशा) में स्थित हैं।

अत्र प्रधानदेशा वटकणिकायाम्

आर्द्रादिकाशिकोशलमिथिलोत्कलवर्धमानपौण्ड्रोड्राः ।
लौहित्यमगधसमतटमेकलखशताम्रलिप्ताश्च ॥

काशी, कोशल, मिथिला, उत्कल, वर्धमान, पौण्ड्र, ओड्र, लौहित्यनद, मगध, समतट, मेकल, खश और ताम्रलिप्त— ये प्रधान देश आर्द्रादि तीन नक्षत्रों के वर्ग (पूर्व दिशा) में स्थित हैं।

अथाग्नेयी दिग्देशाः । तत्र काश्यपः

आग्नेय्याशास्थिता ये च विन्ध्यं मलयपर्वतम् ।
विदिशाश्च दशार्णश्च वङ्गा अङ्गाः कलिङ्गकाः ॥

किष्किन्धाः शूकराः पुण्ड्राः पाठराश्च विदेहकाः ।
क्षत्रियाः शवरा नग्ना नालिकेरार्णवाश्रिताः ॥

आग्नेय दिशा में स्थित सभी देश, विन्ध्याचल और मलयपर्वत, विदिशा, दशार्ण, वङ्ग, अङ्ग, कलिङ्ग, किष्किन्धा, शूकर, नग्न, नालिकेर, समुद्र के आश्रित (तटप्रदेश) देश— ये सब आश्लेषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (आग्नेय दिशा) में स्थित हैं।

पराशरस्तु

अथ प्राग्दक्षिणस्यां विन्ध्यातटवासिनश्चेदिवसतिदशार्णाङ्गबङ्गोपबङ्गकलिङ्गजठरपुण्ड्रकशूलिकविदर्भनग्नपर्णकशवरकाश्च । क्षत्रपुरपूरिककण्टस्थलवृषद्वीपकोशलोर्ध्वकर्णोड्रचार्मत्वग्लूतकाकचारुहेमकूटव्यालग्रीवमहाग्रीवश्मश्रुधरनालिकेरद्वीपकिष्किन्ध्याधिवासिनः ।

विन्ध्य पर्वत एवं उसके तटवासी, चेदि, वसति, दशार्ण, अङ्ग, वङ्ग, उपवङ्ग, कलिङ्ग, जठर, पुण्ड्रक, शूलिक, विदर्भ, नग्न, पर्णक, शवरक, क्षत्रपुर, पूरिक, कण्टस्थल, वृषद्वीप, कोशल, ऊर्ध्वकर्ण, चार्म, त्वक्, लूत, काक, चारु,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हेमकूट, व्यालग्रीव, महाग्रीव, श्मश्रुधर, नालिकेर द्वीप, किष्किन्धा— इन देशों के निवासी आश्लेषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (आग्नेयी दिशा) में स्थित हैं।

मार्कण्डेयपुराणे तु

कलिङ्गवङ्गजठराः कोशलाः शूलिकास्तथा।
चेदयश्चोर्ध्वकर्णाश्च मत्स्यान्ध्रा विन्ध्यवासिनः॥

विदर्भनालिकेराश्च चर्मद्वीपास्तथाऽलिकाः।
व्याघ्रग्रीवा महाग्रीवास्त्रैपुराश्मश्रुधारिणः॥

किष्किन्ध्यहिमकूटाश्च निषधाः कण्टकस्थलाः।
दशार्णा हरिका नग्ना निषदाः काकुलालकाः।
तथैव पर्णाः शवराः पादे वै पूर्वदक्षिणे॥

कलिङ्ग, वङ्ग, जठर, कोशल, शूलिक, चेदि, ऊर्ध्वकर्ण, मत्स्य, आन्ध्र, विन्ध्यवासी, विदर्भ, नालिकेर, चर्मद्वीप, अलिक, व्याघ्रग्रीव, महाग्रीव, त्रैपुर, श्मश्रुधारी, किष्किन्धा, हिमकूट, निषध, कण्टकस्थल, दशार्ण, हरिक, नग्न, निषद, काकुलालक, पर्ण, शवर— ये देश पूर्व-दक्षिण (आग्नेय) दिशा में आश्लेषादि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

वराहसंहितायां तु

आग्नेयां दिशि कोशलकलिङ्गवङ्गोपवङ्गजठराङ्गाः।
मैथिलविदर्भमत्स्यान्ध्रचैदिकाश्चोर्ध्वकर्णाश्च॥

वृषनालिकेरचर्मद्वीपा विन्ध्यान्तवासिनस्त्रिपुरी।
श्मश्रुधरहेमकूटव्यालग्रीवा महाग्रीवाः।
किष्किन्ध्यकण्टकस्थलनिषादराष्ट्राणि पुरिकदाशार्णाः।
सह नग्नपर्णशवरैराश्लेषाद्ये त्रिके देशाः॥

कोशल, कलिङ्ग, वङ्ग, उपवङ्ग, जठराङ्ग, मैथिल, विदर्भ, मत्स्य, आन्ध्र, चैदिक, ऊर्ध्वकर्ण (पाठान्तर से ऊर्ध्वकण्ठ), वृष, नालिकेर और चर्मद्वीप, विन्ध्याचल के समीप देशवासी, त्रिपुरी, श्मश्रुधर, हेमकूट, व्यालग्रीव, महाग्रीव, किष्किन्धा, कण्टकस्थल, निषादराष्ट्र, पुरिक, दशार्ण, नग्नशवर, पर्णशवर— ये सब देश आग्नेय दिशा में आश्लेषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

अथ प्रधानदेशा वटकणिकायाम्

आश्लेषाद्ये त्रैपुरनिषादराष्ट्राणि चेदिदाशार्णाः।
पुरिका विन्ध्यान्तस्था वत्सान्ध्रविदर्भकालिङ्गाः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आश्लेषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में त्रैपुर, निषादराष्ट्र, चेदि, दशार्ण, पुरिक, विन्ध्य पर्वत के निकटवर्त्ती, वत्स, आन्ध्र, विदर्भ और कलिङ्ग देश आग्नेय दिशा में स्थित हैं।

अथ दक्षिणदिग्देशाः । तत्र काश्यपः

याम्ये माहेन्द्रमलयविन्ध्यं च कुसुमाकरम् ।
स्वमालिनी स्त्रीराष्ट्रं च धान्यं दशपुरन्दरा ॥

अवन्ती दर्पणं चैव कर्कोटकवनं तथा ।
कौन्तमार्गणकोपारा दण्डकारण्यमेव च ॥

[1]प्रवालं मौक्तिकं शङ्खं वैडूर्यं ताम्रधातवः ।
ऋष्यमूकगिरी रम्यं तापसाश्रममेव च ॥

कोङ्कणं चित्रकूटं च मरुचीपट्टनं तथा ।
पट्टनं बलदेवस्य कार्मणेयकमेव च ॥

नासिका चैव गोनर्दकर्णाटद्रविडानि च ।
काकुलाङ्गलकोटिश्च निद्रा पाञ्चनदाश्रिताः ॥

वैखण्डं कालेयं मालं सूर्पावर्त्तं कुजावहम् ।
तथा भोगवती चेति विख्याता दक्षिणा दिशि ॥

माहेन्द्र, मलय और विन्ध्य पर्वत, कुसुमाकर, स्वमालिनी, स्त्रीराष्ट्र, धान्य, दशपुरन्दर, अवन्ती, दर्पण, कर्कोटकवन, कौन्त (कुन्तल), मार्गण, कोपार, दण्डकारण्य, प्रवाल (मूँगा), मौक्तिक, शङ्ख, वैदूर्य और ताम्र आदि धातुओं के उत्पत्तिस्थान, ऋष्यमूक गिरि, रम्यस्थान, तापसाश्रम, कोङ्कण, चित्रकूट, मरुचीपट्टन, बलदेवपट्टन, कार्मणेयक, नासिक, गोनर्द, कर्णाटक, द्रविड़, काकु, लाङ्गलकोटि, निद्रास्थान, पाञ्चनद के आश्रित देश, वैखण्ड, कालेय, माल, सूर्पावर्त्त, कुजावह, भोगवती— ये सभी देश दक्षिण दिशा में उत्तरफाल्गुनी आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

पराशरस्तु

अथ दक्षिणस्यां विन्ध्यकुसुमापीडदर्दुरमहेन्द्रसूर्पावर्त्त-मलयमालवाऽवन्तिशावरत्रिदशपुरैककर्णभवकच्छर्षिकपवनवासोप-गिरिनगरदण्डकगणराष्ट्रस्त्रीराज्यकर्कोटकवनतिमिङ्गिलसमहर-ऋष्यमूकतापसाश्रमचम्पाशङ्खमुक्ताप्रवालवैडूर्याकरोड्रत्रिवारिचर-विरिञ्चिदक्षिणार्णवचोलककौवेरकावेरीपिशिकधर्मपट्टनपट्टि-कासिकृष्णवर्णताम्रपर्णनर्मदाकाञ्चीपट्टनकलिकटिसेनाकीर्ण-

१. प्रवालादि तस्योत्पत्तिस्थानमिति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरिणकारवेणीतटतुम्बवनवैखण्डकालाजिनद्वीपिकर्णिकारशि-विकोङ्कणचित्रकूटकार्णाटहारिकान्ध्रकोलगिरिनासिक्यर्क्ष-कार्मणेयकविघातकचोचिलकबलदेवपट्टनक्रौञ्चद्वीपसिंहलाः । परमगोवर्धनमलयमरुचित्रकूटशिखरालङ्कृतलङ्कासूर्पावर्त्तर्षभ-कुञ्जरवदरीगाङ्गवतीनृणादाङ्गिरिसाश्रमाः ।

दक्षिण दिशा में विन्ध्य, कुसुमापीड, दर्दुर, महेन्द्र, सूर्पावर्त्त और मलयपर्वत, मालवा, अवन्ती, शवर, त्रिदशपुर, एककर्ण, भवकच्छ (भरुकच्छ), ऋषिक, पवनवास, उपवन, गिरि, नगर, दण्डकारण्य, गणराज्य, स्त्रीराज्य, कर्कोटकवन, तिमिङ्गिल, समहर, ऋष्यमूक पर्वत, तापसाश्रम, चम्पासरोवर, शङ्ख-मुक्ता-प्रवाल-वैडूर्य-आकर आदि के उत्पत्तिस्थान, उड्र, त्रिवारिचर, विरिञ्चि, दक्षिण समुद्र, चोलक, कौवेर, कावेरी, पिशिक, धर्मपट्टन, पट्टिक, असि, कृष्णवर्ण, ताम्रवर्ण, नर्मदा, काञ्चीपट्टन, कलिकटि, सेनाकीर्ण, हरिणकार, वेणीतट, तुम्बवन, वैखण्ड, कालाजिन, द्वीपि, कर्णिकार, शिवि, कोङ्कण, चित्रकूट, कार्णाट, हारिक, आन्ध्र, कोलगिरि, नासिक, ऋक्ष, कार्मणेयक, विघातक, चोचिलक, बलदेवपट्टन, क्रौञ्च और सिंहल द्वीप, परम, गोवर्धन, मलय, मरु, चित्रकूट, शिखरालंकृत, लङ्का, सूर्पावर्त्त, ऋषभ, कुञ्जर, वदरी, गाङ्गवती, नृणाद, आङ्गिरसाश्रम— ये सभी देश दक्षिण दिशा में उत्तरफाल्गुनी आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

मार्कण्डेयपुराणे तु

लङ्काकालाजिनाश्चैव सैनिका निकुचास्तथा ।
महेन्द्रमलयौ द्वौ च दर्दुरे चैव सन्ति ये ।।

कर्कोटकरता ये च भरुकच्छः सकोङ्कणः ।
शवराश्च तथाऽभीरा वेणीतीरनिवासिनः ।।

आवन्तयो दशपुरास्तथैवाकरिणो जनाः ।
महाराष्ट्राः सकर्णाटा गोनर्दाश्चित्रकूटकाः ।।

चोलाः कोलगिरिश्चैव क्रौञ्चद्वीपा जटाधराः ।
कावेरी ऋष्यमूकस्था नासिक्याश्चैव ये जनाः ।।

शङ्खवैदूर्यमुक्तादिशैलप्रान्तरताश्च ये ।
तथा वारिचराः कौलाश्चर्मपट्टनिवासिनः ।।

गणराष्ट्रचराः कृष्णा द्वीपवासनिवासिनः ।
सूर्पाद्रौ कुमुदाद्रौ च ये वसन्ति तथा जनाः ।।

नौकाञ्वनाः सपिशिकास्तथा ये कार्मणेयकाः ।
दक्षिणाङ्गे तथा ये च ऋषिकास्तापसाश्रमाः ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋषभाः सिंहलाश्चैव तथा काञ्चीनिवासिनः ।
त्रिलिङ्गाः कुञ्जरनदीकच्छवासी च यो नरः ॥
ताम्रपर्णी तथा कुक्षिरिति कूर्मस्य दक्षिणम् ।

लङ्का, कालाजिन, सैनिक, निकुच, महेन्द और मलय दोनों पर्वत, दर्दुर, कर्कोटक, भरुकच्छ, कोङ्कण, शवर, आभीर, वेणा नदी के तटवासी, अवन्ती, दशपुर, आकरिजन, महाराष्ट्र, कर्णाट, गोनर्द, चित्रकूट, चोल, कोलगिरि, क्रौञ्चद्वीप, जटाधारी, कावेरी, ऋष्यमूक, नासिक्यवासी लोग, शंख, वैदूर्य, मुक्ता आदि, पर्वत के निकट रहने वाले, जलचर जीव, कोल, चर्मपट्टनिवासी, सूर्पाद्रि और कुमुदाद्रि-निवासी, नौकाञ्चन, पिशिक, कार्मणेयक, दक्षिण भाग में स्थित सभी ऋषि और तपस्वियों के आश्रम, ऋषभ, सिंहल तथा काञ्ची-निवासी, त्रिलिङ्ग, कुञ्जर नदी के तटवासी, कच्छवासी, ताम्रपर्णी और कूर्मविभागानुसार दक्षिण कुक्षि में स्थित देशवासी उत्तरफाल्गुनी आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (दक्षिण दिशा) में स्थित हैं।

वराहसंहितायाम्

अथ दक्षिणेन लङ्का कालाजिनसौरिकीर्णताडिकटाः ।
गिरिनगरमलयदर्दुरमहेन्द्रमालिन्द्यभरुकच्छाः ॥

कर्कोटकवनवासीशिविकामणिकारकोङ्कणाभीराः ।
आकरवेणावर्त्तकदशपुरगोनर्दकेरलकाः ॥

कर्णाटमहाटविचित्रकूटनासिक्यकोलगिरिचोलाः ।
क्रौञ्चद्वीपजटाधरकावेर्या ऋष्यमूकश्च ॥

वैडूर्यशङ्खमुक्तात्रिवारिचरधर्मपट्टनद्वीपाः ।
गणराष्ट्रकृष्णवेल्लूरपिशिकसूर्पाद्रिकुसुमनगाः ॥

तुम्बवनकार्मणेयकयाम्योदधितापसाश्रमा ऋषिकाः
काञ्चीमरुचीपट्टनचेर्यार्यकसिंहला ऋषभाः ॥

बलदेवपट्टनं दण्डकावनं तिमिङ्गिलाशना भद्राः ।
कच्छोदकन्दरदरीसताम्रपर्णीति विज्ञेयाः ॥

लंका, कालाजिन, सौरिकीर्ण, ताडिकट (तालिकट), गिरिनगर, मलयपर्वत, दर्दुर, महेन्द्रपर्वत, मालिन्द्य, भरुकच्छ, कर्कोटक, वनवासी, शिविक, मणिकार, कोङ्कण, आभीर, आकर, वेण, आवर्त्तक, दशपुर, गोनर्द, केरल, कर्णाट, महाटवि, चित्रकूट, नासिक्य, कोलगिरि, चोल, क्रौञ्चद्वीप, जटाधर, कावेरी नदी, ऋष्यमूक पर्वत, वैदूर्य, शंख, मुक्ता आदि के उत्पत्तिस्थान, त्रिवारिचर, धर्मपुरद्वीप, गणराज्य, कृष्णवेल्लूर, पिशिक, सूर्पाद्रि, कुसुमनग, तुम्बवन, कार्मणेयक, दक्षिण समुद्र,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तापसाश्रम, ऋषिक, काञ्ची, मरुचीपट्टन, चेर्य, आर्यक, सिंहल, ऋषभ, बलदेवपट्टन, दण्डकारण्य, तिमिङ्गिलाशन, भद्र, कच्छोद, कन्दरा, दरी, ताम्रपर्णी— ये सभी देश उत्तरफाल्गुनी आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (दक्षिण दिशा) में स्थित हैं।

अथ वटकणिकायां प्रधानदेशाः

आर्यम्णाद्ये चोलिककोङ्कणवनवासिकोल्लगिरिमलयाः।
उज्जयिनीभरुकच्छा दिशा च याम्याऽर्णवं यावत्॥

चोलिक, कोङ्कण, वनवासी, कोल्ल (पाठान्तर से कोर्ण) गिरि, मलयपर्वत, उज्जयिनी, भरुकच्छ, दक्षिण दिशा और दक्षिण समुद्र उत्तरफाल्गुनी आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (दक्षिण दिशा) में स्थित हैं।

अथ नैर्ऋतीदिग्देशाः। तत्र काश्यपः

नैर्ऋत्यां दिश्यमी देशाः सिन्धुपह्लवकच्छपाः।
आभीराः शूद्रसौवीरा रैवताः क्रीतभीषणम्॥

कालेयाः फलगिरयो वर्वराः खण्डमुञ्जकाः।
यवना मार्गणानर्त्ताः कर्णप्राचेयकास्तथा॥

किराता द्रविडाः सिन्धुस्त्रीमुखाः कपिलास्तथा।
प्रभावमङ्गसन्देशं महासागर एव च॥

सिन्धु प्रदेश, पह्लव, कच्छप, आभीर, शूद्र, सौवीर, रैवत, क्रीतभीषण, कालेय, फलगिरि, वर्वर, खण्डमुञ्जक, यवन, मार्गण, आनर्त्त, कर्णप्राचेय, किरात, द्रविड, सिन्धुनद, स्त्रीमुख, कपिल, प्रभाव, अङ्ग, सन्देश और महासागर नैर्ऋत्य दिशा में स्वाती आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में ये देश स्थित हैं।

पराशरस्तु

अथ प्रत्यग्दक्षिणस्यां महाराष्ट्रसिन्धुसुराष्ट्रसौवीरशूद्राभीरद्रविडकेतकसिन्धुकोलकहेमगिरिरैवतकानर्त्तकवाह्लीकयवनपह्लववर्वरधूम्राम्बष्ठकर्णप्रवरकशिरोवासिनोऽतः परं महार्णवो यत्रौर्वकोपजोऽग्निर्वडवामुखः – इति।

महाराष्ट्र, सिन्धु प्रदेश, सौराष्ट्र, सौवीर, शूद्र, आभीर, द्रविड़, केतक, सिन्धुनद, कोलक, हेमगिरि, रैवतक, आनर्त्त, वाह्लीक, यवन, पह्लव, वर्वर, धूम्र, अम्बष्ठ, कर्णप्रवरक, शिरोवासी और इसके अतिरिक्त महार्णव, जहाँ और्व ऋषि के क्रोध से उत्पन्न वडवानल नामक समुद्राग्नि है—ये सभी देश नैर्ऋत्य दिशा में स्थित स्वाती आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मार्कण्डेयपुराणे तु

काम्बोजाः पह्लवाश्चैव तथैव वडवामुखाः ।
तथैव सिन्धुसौवीराः सानर्त्ता वनितामुखाः ॥

यवना मार्गणाः शूद्राः कर्णप्रावेयवर्वराः ।
किराताः पारताः पाण्ड्यस्तथा पारशवाः कुलाः ॥

प्रचुका हेमगिरिकाः सिन्धुकालकरैवताः ।
सौराष्ट्रवादराश्चैव द्रविडाश्च महार्णवाः ॥

एते जनपदाः पादे स्थिता वै दक्षिणापरे ।

काम्बोज, पह्लव, वडवामुख, सिन्धु, सौवीर, आनर्त्त, वनितामुख, यवन, मार्गण, शूद्र, कर्णप्रावेय, वर्वर, किरात, पारत, पाण्ड्य, पारशव, कुलक, प्रचुक, हेमगिरिक, सिन्धुनद, कालक, रैवत, सौराष्ट्र, वादर, द्रविड, महार्णव— ये सभी देश नैर्ऋत्य दिशा में स्थित हैं।

वराहसंहितायां तु

नैर्ऋत्यां दिशि देशाः पह्लवकाम्बोजसिन्धुसौवीराः ।
वडवामुखारवाम्बष्ठकपिलनारीमुखानर्त्ताः ॥

फेणगिरियवनमार्गणकर्णप्रावेयपारशवशूद्राः ।
वर्वरकिरातषण्ढक्रव्यादाभीरचञ्चुमुखाः ॥

हेमगिरिसिन्धुकालकरैवतकसुराष्ट्रवादरद्रविडाः
स्वात्याद्ये भत्रितये ज्ञेयश्च महार्णवोऽत्रैव ॥

पह्लव, काम्बोज, सिन्धुप्रदेश, सौवीर, वडवामुख, अरब, अम्बष्ठ, कपिल, नारीमुख, आनर्त्त, फेणगिरि, यवन, मार्गण, कर्णप्रावेय, पारशव, शूद्र, वर्वर, किरात, षण्ढ़ = नपुंसक (पाठान्तर से खण्ड), क्रव्याद, आभीर, चञ्चुमुख, हेमगिरि, सिन्धुनद, कालक, रैवतक, सुराष्ट्र, वादर, द्रविड़ और महार्णव— ये सभी स्वाती आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (नैर्ऋत्य दिशा) में स्थित हैं।

अथ प्रधानदेशाः वटकणिकायाम्

स्वात्याद्ये सिन्धुसौवीरकपिलवनितास्यमार्गणानर्त्ताः ।
वर्वरमगधसुराष्ट्राः काम्बोजद्रविडरैवतकाः ॥

सिन्धु, सौवीर, कपिल, वनितामुख, मार्गण, आनर्त्त, वर्वर, मगध, सुराष्ट्र, काम्बोज, द्रविड़ और रैवतक— ये सभी स्वाती आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में प्रधान दिग्देश स्थित हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ पश्चिमदिग्देशाः । तत्र काश्यपः

पश्चिमेऽस्तगिरेः शृङ्गे महेन्द्रो नाम पर्वतः ।
महोपलो महाहेमशृङ्गः सानुभिराकुलः ॥

वामनः शृङ्गका वैश्या तारक्षुत्कशकास्तथा ।
केशान्तिका हैहयाश्च निर्मर्यादाश्च ये नराः ॥

अस्तगिरि के दोनों शृङ्ग (शिखर), महेन्द्र नामक पर्वत, महोपल, महाहेमशृङ्ग, पर्वत के समतलवासी, वामन, शृंगक, वैश्य, तारक्षुत्, कशक, केशान्तिक, हैहय और मर्यादाहीन (म्लेच्छ आदि) जाति के लोग पश्चिम दिशा में ज्येष्ठा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

पराशरस्तु

अथ पश्चिमायां मणिमत्क्षुरार्पणमेघवद्वनौघचक्रवदस्तगिरिप्रशस्ताद्रिमण्डिताः पञ्चनदकाशिब्रह्मवसतितारक्षितिपारतशान्तिकशिविरमहाशृङ्गिवायव्यगुडवासिजहैहयसत्कङ्गताजिकहूणपार्श्ववैकतकवोक्काणाः । अन्ये च गिरिवासिनस्त्यक्तधर्ममर्यादा म्लेच्छजातयः ।

मणिमान्, क्षुरार्पण, मेघवान्, वनौघ, चक्रवान्, अस्तगिरि, प्रशस्ताद्रि, मण्डित, पञ्चनद, काशी, ब्रह्मवसति, तारक्षिति, पारत, शान्तिक, शिविर, महाशृङ्गि, वायव्य, गुडवासिज, हैहय, सत्कङ्ग, ताजिक, हूण, पार्श्व, वैकतक, वोक्काण तथा अन्य पर्वतवासी, धर्म और मर्यादा को छोड़ने वाले, म्लेच्छ जाति के लोग ज्येष्ठा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में पश्चिम दिशा में स्थित हैं।

मार्कण्डेयपुराणे

मणिमेघः क्षुराद्रिश्च खञ्जनोऽस्तगिरिस्तथा ।
अपरान्तिका हैहयाश्च शान्तिकादिप्रशस्तिकाः ॥

वोक्काणाः पञ्चनदका वामनाः पारतास्तथा ।
तार्क्ष्या ऋक्षाङ्गलकाः शर्कराः शाल्ववैश्यकाः ॥

गुरुपर्वाः फाल्गुनका वेणुमत्यां च ये जनाः ।
एकेक्षणाः शशरुहा दीर्घग्रीवास्तु सैनिकाः ॥

अश्वकेशास्तथा पुच्छे जनाः कूर्मस्य संस्थिताः ।

मणिमेघ, क्षुराद्रि, खञ्जन, अस्तगिरि, अपरान्तिक, हैहय, शान्तिक, प्रशस्ताद्रि, वोक्काण, पञ्चनद, वामन, पारत, तार्क्ष्य, ऋक्षाङ्गलक, शर्कर, शाल्व, वैश्य, गुरुपर्व, फाल्गुनक, वेणुमती, एकेक्षण, शशरुह, दीर्घग्रीव, सैनिक, अश्वकेश आदि कूर्मपुच्छ (पश्चिम दिशा) में ज्येष्ठा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां तु

अपरस्यां मणिमान् मेघवान् वनौघः क्षुरार्पणोऽस्तगिरिः ।
अपरान्तिकशान्तिकहैहयप्रशस्ताद्रिवोक्काणाः ॥

पञ्चनदरमठपारततारक्षुभितं सवैश्यकनकशकाः ।
निर्मर्यादा म्लेच्छा ये पश्चिमदिक्स्थितास्ते च ॥

मणिमान्, मेघवान्, वनौघ, क्षुरार्पण, अस्तगिरि, अपरान्तक, शान्तिक, हैहय, प्रशस्ताद्रि, वोक्काण, पञ्चनद, रमठ, पारत, तारक्षुभित्, वैश्य, कनक, शक, मर्यादारहित, म्लेच्छ, जो पश्चिम दिशा में रहते हैं— ये सभी ज्येष्ठा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (पश्चिम दिशा) में स्थित हैं।

अथ प्रधानदेशा वटकणिकायाम्

ज्येष्ठादितोऽपरान्तिकशकहैहयभङ्गपाञ्चनदकतकाः ।
निर्मर्यादा म्लेच्छाः शान्तिकवोक्काणवैश्याश्च ॥

अपरान्तिक, शक, हैहय, भङ्ग, पाञ्चनद, कतक, मर्यादाहीन (नीच), म्लेच्छ, शान्तिक, वोक्काण और वैश्य ज्येष्ठा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (पश्चिम दिशा) में स्थित हैं।

अथ वायव्यदिग्देशाः । तत्र पराशरः

अथ पश्चिमोत्तरस्यां दिशि गिरिमतिवेणुमतिरलमतिफाल्गुनकमाण्डव्यैकनेत्रमरुकुत्सतुषारतालफलमद्रहलहंसवलाहानलानदीर्घकेशग्रीवाव्यङ्गाचर्मवङ्गखगशूलिगुरूहकुलाताः परमतः स्त्रीराष्ट्रम् – इति ।

गिरिमती, वेणुमती, रलमती, फाल्गुनक, माण्डव्य, एकनेत्र, मरु, कुत्स, तुषार, तालफल, मद्र, हल, हंस, वलाह, अनलान, दीर्घकेश, दीर्घग्रीव, अव्यङ्ग, चर्म, वङ्ग, खग, शूलिक, गुरुह, कुलात और स्त्रीराज्य— ये सभी देश उत्तराषाढ़ा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग पश्चिमोत्तर दिशा (वायव्य दिशा) में स्थित हैं।

मार्कण्डेयपुराणे तु

माण्डव्याश्च तुषाराश्च अश्वफाललतास्तथा ।
कुलूतालद्रुमाश्चैव स्त्रीराष्ट्रलोहिकास्तथा ॥

नृसिंहा वेणुमत्याश्च वनावस्थास्तथा परे ।
चर्मवङ्गास्तथा लूकास्तन्त्रकूर्चास्तथा जनाः ॥

तथा फाल्गुनका घोरा गुरूहा शूलिकास्तथा ।
एकेक्षणा वाजिकेशा दीर्घग्रीवास्तथैव च ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वामपादे जनाश्चैते स्थिताः कूर्मस्य भागुरेः ।

माण्डव्य, तुषार, अश्वफाल, लता, कुलूत, तालद्रुम, स्त्रीराज्य, लोहिक, नृसिंह, वेणुमती नदी, वनवासी, चर्म, वङ्ग, लूक, तन्त्र, कूर्च, फाल्गुनक, घोर, गुरुहा, शूलिक, एकेक्षण, वाजिकेश, दीर्घग्रीव— ये सभी देशवासी कूर्म के वामपाद में उत्तराषाढ़ादि तीन नक्षत्रों के वर्ग (वायव्य दिशा) में स्थित हैं।

वराहसंहितायां तु

दिशि पश्चिमोत्तरस्यां माण्डव्यतुषारतालहलमद्राः ।
अश्मककूलूतहलडाः स्त्रीराष्ट्रनृसिंहवनखस्थाः ॥

वेणुमती फल्गुलुका गुलुहा मरुकुत्सचर्मरङ्गाख्याः ।
एकविलोचनशूलिकदीर्घग्रीवास्यकेशाश्च ॥

माण्डव्य, तुषार, ताल, हल, मद्र, अश्मक, कुलूत, हलड, स्त्रीराज्य, नृसिंहवन, खस्थ, वेणुमती नदी, फल्गुलुक, गुलुह, मरु, कुत्स, चर्मरङ्ग, एकविलोचन, शूलिक, दीर्घग्रीव, दीर्घास्य, दीर्घकेश— ये सब देश उत्तराषाढ़ा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (वायव्य कोण) में स्थित हैं।

अथ प्रधानदेशा वटकणिकायाम्

विश्वेश्वरादिशूलिकतालतुषारैकनेत्रमाण्डव्याः ।
स्त्रीराज्यचर्मरङ्गाश्महलारुहकफल्गुलुकाः ॥

शूलिक, ताल, तुषार, एकनेत्र, माण्डव्य, स्त्रीराज्य, चर्मरङ्ग, अश्मक, हलारुहक, फल्गुलुक— ये सब देश विश्वेश्वर (उत्तराषाढ़ा) आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (वायव्य कोण) में स्थित हैं।

अथोत्तरदिग्देशाः । तत्र काश्यपः

उत्तरस्यां तु कैलासं मरुमुत्तरजान् कुरून् ।
विशातयः क्षुद्रमीनाः क्रौञ्चोऽथ हिमवान् गिरिः ॥

कैकया यामुनाश्चैव भोगप्रस्थाः क्षुरा नगाः ।
आदर्शाश्च त्रिगर्त्ताश्च उत्तराः केशधारिणः ॥

तक्षशिलाः पिङ्गलकाः कण्ठधाराश्च मानवाः ।
पुष्करावतकैराताश्चिपिटानासिकाश्च ये ॥

मालवाः पिङ्गलाधर्मा यौधेया दासमेयकाः ।
हूणा हयमुखाश्चैव गान्धारा हेममालकाः ॥

राजन्याः खेचरा गव्याः श्यामकाः क्षेमधूर्त्तकाः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कैलास, मरु, उत्तर कुरु, विशाति, क्षुद्रमीन, क्रौञ्च, हिमवान् पर्वत, कैकय, यामुन, भोगप्रस्थ, क्षुरपर्वत, आदर्श, त्रिगर्त्त, उत्तरकेशधारी, तक्षशिला, पिङ्गलक, कण्ठधारामानव, पुष्करावत, कैरात, चिपिटनासिक, मालव, पिङ्गलधर्म, यौधेय, दासमेयक, हूण, हयमुख, गान्धार, हेममालक, राजन्य, खेचर, गव्य, श्यामक, क्षेमधूर्त्तक— ये सब देश उत्तर दिशा में शतभिषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

पराशरस्तु

अथोत्तरस्यां हिमवत्क्रौञ्चमधुमत्कैलाशवसुमन्मेरुनगोत्तरोत्तरमद्रपौरवयौधेयमालवशूरसेनराजन्यार्जुनायनत्रिगर्त्तकैकयक्षुद्रमालवकमत्स्यवसातिदर्भफलाफलाग्निस्थलसुस्थलशाकलक्षेमधूर्त्तदासमेयानहव्यमुरदण्डगव्यनव्यजनधानादाशेरकवाटधानान्तर्द्वीपगान्धारवन्दिसुरास्तुततक्षशिलालवणत्रिपुष्करावर्त्तयशोवतिमणिवतिश्यामकशवरकोहलकनगरशरभूतिपूरकैरातकदशान्तदशपिङ्गलयामुनेयमणिफलद्गुणहेमतालाश्वमुखाः। हिमवद्वसुमत्कैलाशक्रौञ्चात्परमभिजना – इति।

हिमवान्, क्रौञ्च, मधुमान्, कैलास, वसुमान्, मेरु पर्वतोत्तर, उत्तरमद्र, पौरव, यौधेय, मालव, शूरसेन, राजन्य, अर्जुनायन, त्रिगर्त्त, कैकय, क्षुद्र, मालवक, मत्स्य, वसाति, दर्भफल, अफल, अग्निस्थल, सुस्थल, शाकल, क्षेमधूर्त्त, दासमेय, अनहव्य, मुर, दण्ड, गव्य, नव्य, जनधान, दाशेरक, वाटधान, अन्तर्द्वीप, गान्धार, वन्दी, सुरास्तुत, तक्षशिला, लवण, त्रिपुष्कर, आवर्त्त, यशोवती, मणिवती, श्यामक, शवर, कोहलकनगर, शरभूतिपुर, कैरातक, दशान्त, दशपिङ्गल, यामुनेय, मणिफलत्, गुण, हेम, ताल, अश्वमुख, हिमवान्, वसुमान्, कैलास और क्रौञ्च पर्वत के श्रेष्ठ निवासी— ये सभी देश उत्तर दिशा में शतभिषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

मार्कण्डेयपुराणे तु

कैलासो हिमवाँश्चैव धनुष्मान् दर्दुरस्तथा।
क्रौञ्चः कुरवकाश्चैव क्षुद्रमीनाश्च ये जनाः॥

वशाभयः सकैकेया भोगप्रस्थाः सयावनाः।
अन्तर्द्वीपास्त्रिगर्त्ताश्च अग्निक्षामार्जुनायनाः॥

तथैवाश्वमुखाः प्रान्ताश्चिपिटाः केशधारिणः।
दासेरका वाटधानाः शरधानास्तथैव च॥

पुष्करावर्त्तकैरातास्तथा तक्षशिलाश्रयाः।
असुरा मालवा मुण्डाः कैशिकाः शरदण्डकाः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिङ्गला माणहलका हूणाः कोहलकास्तथा ।
माण्डव्या भूतिपुलकाः शातका हेमतालकाः ॥

यशोमत्स्याः सगान्धाराः खचराः सव्यवामकाः ।
यौधेया दासमेयाश्च राजन्याः श्यामकास्तथा ॥

क्षेमधूर्त्ताश्च कूर्मस्य वामकुक्षिमुपाश्रिताः ।

कैलास, हिमवान् (हिमालय), धनुष्मान्, दर्दुर, क्रौञ्च, कुरवक, क्षुद्रमीन, वशाति, कैकय, भोगप्रस्थ, यावन, अन्तर्द्वीप, त्रिगर्त्त, अग्नि, क्षाम, अर्जुनायन, अश्वमुख, प्रान्तचिपिट, केशधारी, दासेरक, वाटधान, शरधान, पुष्कर, आवर्त्त, कैरात, तक्षशिला, असुर, मालव, मुण्ड, कैशिक, शरदण्डक, पिङ्गल, माणहलक, हूण, कोहलक, माण्डव्य, भूतिपुलक, शातक, हेमतालक, यशोमती, मत्स्य, गान्धार, खचर, सव्य, वामक, यौधेय, दासमेय, राजन्य, श्यामक, क्षेमधूर्त्त— ये सब देश और कूर्म के वाम कुक्षि में आश्रित देश शतभिषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (उत्तर दिशा) में स्थित हैं।

वराहसंहितायां तु

उत्तरतः कैलासो हिमवान् कुसुमान् गिरिधनुष्माँश्च ।
क्रौञ्चो मेरुः कुरवस्तथोत्तराः क्षुद्रमीनाश्च ॥

कैकेयवसातियामुनभोगप्रस्थार्जुनायानाम्बष्ठाः ।
आदर्शान्तर्द्वीपत्रिगर्त्ततुरगानननाः श्वमुखाः ॥

केशधरचिपिटनासिकदासेरकवाटधानशरधानाः ।
तक्षशिलपुष्कलावतकैरातककण्टधानाश्च ॥

अम्बरमद्रकमालवपौरवकच्छारदण्डपिङ्गलकाः ।
माणहलहूणकोहलशीतकमाण्डव्यभूतपुराः ॥

गान्धारयशोवतिहेमतालराजन्यखचरगव्याख्याः ।
यौधेयदासमेयाः श्यामाकाः क्षेमधूर्त्ताश्च ॥

कैलास, हिमवान, वसुमान, धनुष्मान, क्रौञ्च, मेरुगिरि, उत्तरकुरु, क्षुद्रमीन, कैकय, वसाति, यामुन, भोगप्रस्थ, अर्जुनायन, अम्बष्ठ (पाठान्तर से आग्नीध्र), आदर्श, अन्तर्द्वीप, त्रिगर्त्त, तुरगानन, श्वमुख, केशधर, चिपिटनासिक, दासेरक, वाटधान, शरधान, तक्षशिला, पुष्कलावत, कैरातक (पाठान्तर से कैलावतक), कण्टधान (कण्ठधान), अम्बर, मद्रक, मालव, पौरव, कच्छार, दण्डपिङ्गलक, माणहल, हूण, कोहल, शीतक, माण्डव्य, भूतपुर, गान्धार, यशोवती, हेमताल, राजन्य, खचर, गव्य, यौधेय, दासमेय, श्यामक और क्षेमधूर्त्त— ये सब देश शतभिषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (उत्तर दिशा) में स्थित हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ प्रधानदिग्देशा वटकणिकायाम्

शतभिषगाद्ये कैकयगान्धारा दर्शयामुनाश्चीनाः ।
दासेयचिपिटनासार्जुनायना दण्डपिङ्गलकाः ॥

कैकय, गान्धार, दर्श, यामुन, चीन (पाठान्तर से आग्नीध्र), दासेय, चिपिटनासिक, अर्जुनायन और दण्डपिङ्गलक— ये देश शतभिषा आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (उत्तर दिशा) में स्थित हैं।

अथैशानीदिग्देशाः । तत्र काश्यपः

ऐशान्यां दिशि काश्मीरं दरदश्च सतङ्गणाः ।
अभिसारकुलूता ये सौहृद्यं नष्टराज्यकम् ॥

चीनाः किरातकाम्बोजाः कौलिन्दा वनराज्यकाः ।
ब्रह्मपुरदीर्घलोलं पह्लवा एकपादकाः ॥

सुवर्णं भूरत्नं विश्वावसु धनं च जटाधरः ।
दिविष्ठाश्च धरा ये च कुलटाः कुचिकारिणः ॥

पौरवाश्चीनवसनास्त्रिनेत्राः पुञ्जगा नगाः ।
पशुपालगणाध्यक्षाः कनकाचलवासिनः ॥

गान्धर्वाः कीरदेशाख्यदासमेया जनास्तथा ।
एते कूर्मविभागेन विषया भारते स्थिताः ॥

काश्मीर, दरद, तङ्गण, अभिसार, कुलूत, सौहृद्य, नष्टराज्य, चीन, किरात, काम्बोज, कौलिन्द, वनराज्य, ब्रह्मपुर, दीर्घलोल, पह्लव, एकाद, सुवर्णभूमि, रत्नभूमि, विश्वावसु, धनभूमि, जटाधर, दिविष्ठ, धरा, कुलट, कुचिकारी, पौरव, चीरवसन, त्रिनेत्र, पुञ्जगनग, पशुपाल, गणाध्यक्ष, कनकाचलवासी, गान्धर्व, कीरदेश, दासमेय— ये सब देश कूर्मविभाग से भारत में रेवती आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (ईशान कोण) में स्थित हैं।

पराशरस्तु

अथ प्रागुत्तरस्यां कौलूतपुरब्रह्मपुरकुलिन्ददिनपारतनष्टराज्यवनराष्ट्रवैमकेणभल्लसिंहपुरचामरतङ्गणसार्यकमाषकपार्वतकाश्मीरदरददार्वाभिसारजटाधरलोलसैरिन्ध्रिककारकौन्तलकिरातपशुपालचीनस्वर्णभूमिदेवस्थलदेवोद्यानानि ।

कौलूतपुर, ब्रह्मपुर, कुलिन्द, दिन, पारत, नष्टराज्य, वनराज्य, वैमकेण, भल्ल, सिंहपुर, चामर, तङ्गण, सार्यक, माषक, पार्वत, काश्मीर, दरद, दार्व, अभिसार, जटाधर, लोल, सैरिन्ध्रि, ककार, कौन्तल, किरात, पशुपाल, चीन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वर्णभूमि, देवस्थल और देवोद्यान— ये सब देश पूर्वोत्तर दिशा (ईशान कोण) में रेवती आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग में स्थित हैं।

मार्कण्डेयपुराणे तु

मेरुकं नष्टराज्यं च पशुपालं सचोलकम्।
काश्मीरं च तथा राष्ट्रमभिसारजनस्तथा॥

दरदास्तङ्गणाश्चैव कुलटा वनराष्ट्रकाः।
गिरिष्ठा ब्रह्मपुरकास्तथैव वनराज्यकाः॥

किराताश्चीनकालिन्दा जनाः पह्लवलोलजाः।
दीर्घा डामरकाश्चैव कुलटाश्चानुदीनकाः॥

एकपादाः खशा घोषाः स्वर्णभौमाः सविश्वकाः।
तथा वसुधनादिस्थाश्चीरप्रावरणाश्च ये॥

त्रिनेत्राः पौरवाश्चैव गन्धर्वाश्च द्विजोत्तम।
पूर्वोत्तरं तु कूर्मस्य पादमेते समाश्रिताः॥

मेरुपर्वत, नष्टराज्य, पशुपाल, चोल, काश्मीर, अभिसार, दरद, तङ्गण, कुलट, वनराष्ट्र, गिरिष्ठ, ब्रह्मपुर, वनराज्य, किरात, चीन, कौलिन्द, पह्लव, लोलज, दीर्घडामरक, अनुदीन, कुलट, एकपाद, खश, घोष, स्वर्णभूमि, विश्वक, वसुधन, चीरप्रावरण, त्रिनेत्र, पौरव, गन्धर्व— ये सभी देश कूर्म विभाग के पूर्वोत्तर पाद में रेवती आदि तीन नक्षत्रों के वर्गगत हैं।

वराहसंहितायां तु

ऐशान्यां मेरुकनष्टराज्यपशुपालकीरकाश्मीराः।
अभिसारदरदतङ्गणकुलूतसैरिन्ध्रवदनराष्ट्राः॥

ब्रह्मपुरदीर्घडामरवनराज्यकिरातचीनकौलिन्दाः।
पह्लवलोलजटाधरकुलटाः खशघोषकुशिकाख्याः॥

एकचरणान्ध्रविश्वाः सुवर्णभूर्वसुधनं दिविष्ठाश्च।
पौरवचीरनिवासिनत्रिनेत्रमुञ्जाद्रिगान्धर्वाः॥

मेरुक, नष्टराज्य, पशुपाल, कीर, काश्मीर, अभिसार, दरद, तङ्गण, कुलूत, सैरिन्ध्र, वदनराष्ट्र, ब्रह्मपुर, दीर्घडामर, वनराज्य, किरात, चीन, कौलिन्द, पह्लव, लोल, जटाधर, कुलूत, खश, घोष, कुशिक (पाठान्तर से—भल्ल, पटोल, जटासुर, कुनट, खश, घोष, कुचिक), एकचरण, आन्ध्र, विश्व (पाठान्तर से एकचरण, अनुविद्ध), सुवर्णभू, वसुधन, दिविष्ठ, पौरव, चीरनिवासी, त्रिनेत्र, मुञ्जाद्रि, गन्धर्व— ये सब देश रेवती आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (ईशान कोण) में स्थित हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्र प्रधानदेशा वटकणिकायाम्

पौष्णाद्ये काश्मीरत्रिगर्त्तदरदाभिसारचीनखशाः ।
तङ्गणकीरकुलूता ब्रह्मपुरजटासुराश्चेति ॥

काश्मीर, त्रिगर्त्त (पाठान्तर से अर्णव), दरद, अभिसार, चीन, खश, तङ्गण, कीर, कुलूत (पाठान्तर से किरात), ब्रह्मपुर, जटासुर— ये सब देश रेवती आदि तीन नक्षत्रों के वर्ग (ईशान कोण) में स्थित हैं।

राशेस्तदीश्वरस्य च पीडायामपि राशिदेशानां पीडा भवति ।
तथा च मार्कण्डेयपुराणे

कूर्मदेशास्तथार्क्षाणि देशष्वेतेषु वै द्विज ।
राशयश्च तथार्क्षेषु ग्रहराशिष्ववस्थिताः ॥

तस्माद्ग्रहर्क्षपीडासु देशपीडां विनिर्दिशेत् ।
यस्यर्क्षस्य पतिर्यो हि ग्रहस्तद्धानितो भयम् ॥

तद्देशस्य मुनिश्रेष्ठ तथोत्कर्षे शुभागमे ।
मेषादयस्तयोर्मध्ये मुखे द्वौ मिथुनादिकौ ॥

प्राग्दक्षिणे तथा पादे कर्किसिंहौ व्यवस्थितौ ।
सिंहः कन्या तुलश्चैव कुक्षौ राशित्रयं स्मृतम् ॥

तुला च वृश्चिकश्चोभौ पादे दक्षिणपश्चिमे ।
पृष्ठे च वृश्चिकश्चैव सहधन्वी व्यवस्थितः ॥

वायव्ये चास्य वै पादे धनुर्ग्राहादिकं त्रयम् ।
कुम्भमीनौ तथैवास्य उत्तरं कुक्षिमाश्रितौ ॥

मीनमेषौ द्विजश्रेष्ठ पदे पूर्वोत्तरे स्थितौ ।
तस्माद्विज्ञाय देशर्क्षग्रहपीडां तथाऽऽत्मनः ॥

कुर्वीत शान्तिं मेधावी लोकवादाँश्च सत्तम ।
आकाशाद्देवतानां च दैत्यादीनाञ्च दौर्हदाः ॥

पृथ्व्यां पतन्ति ते लोके लोकवादा इति स्मृताः ।
ताँस्तथैव बुधः कुर्य्याल्लोकवादान्न हापयेत् ॥

तेषां तु करणान्नृणामुक्तो दृष्ट्वाऽऽगमक्षयः ।
तस्माच्छान्तिपरः प्राज्ञो लोकवादरतस्तथा ॥

लोकवादाँश्च शान्तिं च ग्रहपीडासु कारयेत् ।
भूदोहानुपवासाँश्च शस्त्रचैत्यादिवन्दनम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जपं होमं तथा दानं स्नानं क्रोधादिवर्जनम्।
अक्रोधं सर्वभूतेषु मैत्रं कुर्यात्तु पण्डितः॥
वर्जयेदसतीं वाचमभिवादाँस्तथैव च।
ग्रहपूजां च कुर्वीत सर्वपीडासु मानवः॥
एवं शमन्त्यशेषाणि घोराणि द्विजसत्तम।
प्रयतानां मनुष्याणां ग्रहर्क्षोत्थान्यसंशयम्॥

राशि और राशिपति के पीड़ित होने से वक्ष्यमाण राशिदेशों के निवासियों को पीड़ा होती है। नक्षत्र-कूर्मविभागानुसार सभी नक्षत्रों के देश उक्त प्रकार से कहे गये हैं। हे विप्र ! नक्षत्रानुसार १२ राशियों का भी कूर्मविभाग किया गया है। ग्रह नक्षत्र और राशियों में स्थित होकर गमन करते हैं। इसलिए नक्षत्र या राशि और ग्रह (राशीश) के पीड़ित होने पर नक्षत्र और राशियों के देशवासियों को पीड़ा कहनी चाहिये। जिस राशि का जो ग्रह स्वामी है, उस ग्रह के पीड़ित होने पर राशिदेश में भय और ग्रह के उत्कर्ष में उस देश में शुभागम होते हैं।

कूर्म के मध्य (मध्यदेश) में मेष और वृष, मुख (पूर्व दिशा) में मिथुन और कर्क, पूर्व-दक्षिण (आग्नेय) पाद में कर्क और सिंह, दक्षिण कुक्षि (दक्षिण दिशा) में सिंह-कन्या और तुला, दक्षिण-पश्चिम पाद (नैर्ऋत्य) में तुला और वृश्चिक, पृष्ठभाग (पश्चिम दिशा) में वृश्चिक और धनु, पश्चिमोत्तर (वायव्य) पाद में धनु-मकर और कुम्भ, उत्तर कुक्षि (उत्तर दिशा) में कुम्भ और मीन तथा उत्तर-पूर्व पाद (ईशान कोण दिशा) में मीन और मेष राशि व्यवस्थित हैं। इसलिए राशि और ग्रह की पीड़ा के अनुसार उक्त प्रकार से अपने-अपने देशों की पीड़ा को जानकर उसके शमन के लिये मेधावी को सम्बन्धित ग्रह की शान्ति और लोकवादों को करना चाहिये।

आकाश से देवताओं और दैत्यों आदि (विद्याधर, यक्ष, किन्नर आदि) की अप्रसन्नता के कारण उत्पन्न होने वाले दौर्हद (अनिष्टकारी प्रकोप) पृथिवी पर पतित होते हैं, उन्हें लोकवाद कहा गया है।

पृथिवी पर उनके शमन के लिए जो व्यवस्था (लौकिक शान्ति-विधि) की गई है, विद्वान् को उन लोकवादों का उसी तरह अनुसरण करना चाहिये; उनका परित्याग नहीं करना चाहिये। अशुभ उत्पातों को देखकर लोकवादों के अनुसार (टोना-टापर-यन्त्र-मन्त्र आदि) शान्ति करने पर उससे मुक्ति मिलती है। इसलिए शान्ति-कार्य में तत्पर और लोकवाद को जानने में रत रहना चाहिये। ग्रहों की पीड़ा होने पर लोकवाद और ग्रहशान्ति करनी चाहिये। भूदोहन, उपवास, शस्त्रागार आदि की वन्दना, जप, हवन, प्रभूत कनकान्नादि दान और तीर्थादि में स्नान क्रोधादि से रहित होकर करना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पण्डित को सभी प्राणियों के साथ क्रोधरहित होकर मित्रता करनी चाहिये। असत्यत्याग, परस्पर अभिवादन और औत्पातिक ग्रह की पूजा आदि सभी पीड़ाओं में मनुष्य को करनी चाहिये।

इस प्रकार शान्ति और लोकवादों में संलग्न मनुष्यों के ग्रह और नक्षत्र-राशियों से उत्पन्न सभी प्रकार के भयङ्कर अशुभ उत्पातों का शमन होता है।

अथ कृत्तिकादीनामष्टमासिकः प्राकावर्त्तोक्तः फलपाकसमयः।
राशेस्तु सामान्योक्तः संवत्सरः ॥

कृत्तिकादि नक्षत्रों के फलपाक के समय पूर्व के आवर्त्तों में कहे गये आठ मास होते हैं और राशियों का फलपाक-समय सामान्यतया एक वर्ष होता है।

अथ नाडीनक्षत्रपीडाफलम्। तत्र पराशरः

ग्रहैरुपहतं यस्य नक्षत्रमिह दृश्यते।
विद्यात् पराभवं तस्य कर्म चास्य विपद्यते ॥

चतुर्थं जन्मनक्षत्रं यस्मात् तन्मानसं भवेत्।
सांघातिकं षोडशकं यदृक्षं प्रसवर्क्षतः ॥

यन्मानसर्क्षादिकोनविंशं सामुदयं स्मृतम्।
दशमं जन्मनक्षत्रान्नक्षत्रं कर्मसंज्ञितम् ॥

वैनाशिकं तु नक्षत्रं कर्मर्क्षाद्यच्चतुर्दशम्।

जिसके नाडीनक्षत्र पापग्रहों से पीड़ित होते हैं, उसका पराभव (दुःख = पीड़ा) होता है तथा उसके कर्म (कार्य) का नाश होता है। जन्मकालिक चतुर्थ अर्थात् जन्मनक्षत्र से चौथा नक्षत्र मानस नक्षत्र, प्रसवकालिक (जन्मर्क्ष) नक्षत्र से सोलहवाँ सांघातिक नक्षत्र, मानस नक्षत्र से उन्नीसवाँ अर्थात् जन्मनक्षत्र से तेईसवाँ नक्षत्र सामुदय, जन्मर्क्ष से दशवाँ कर्म नक्षत्र और कर्म नक्षत्र से चौदहवाँ अर्थात् जन्मर्क्ष से चौबीसवाँ नक्षत्र वैनाशिक कहा गया है।

विष्णुधर्मोत्तरे

यस्मिन् भे जननं यस्य जन्मर्क्षं तस्य तत् स्मृतम्।
चतुर्थं जन्मनक्षत्रं यस्मात्तन्मानसं भवेत् ॥

दशमं जन्मनक्षत्रान्नक्षत्रं कर्मसंज्ञितम्।
सांघातिकं षोडशं स्यान्नक्षत्रं प्रसवर्क्षतः ॥

यन्मानसर्क्षादिकोनविंशं सामुदयं स्मृतम्।
वैनाशिकं तु नक्षत्रं कर्मर्क्षाद्यच्चतुर्दशम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यन्नक्षत्रस्तु पुरुषः सर्वप्रोक्तो महीयते।
राजा तु नवनक्षत्रान्नक्षत्रत्रितयं शृणु॥

नित्यमभ्यधिकं षड्भ्यः पार्थिवस्य नृपोत्तम।
देशाभिषेकनक्षत्रे जातिनक्षत्रमेव च॥

जात्याश्रितानि वक्ष्यामि नक्षत्राणि तवानघ।
पूर्वात्रयं तथाऽग्नेयं ब्राह्मणानां प्रकीर्त्तितम्॥

आदित्यमाश्विनं हस्तं शूद्राणामभिजित्तथा।
सार्पं विशाखा याम्यं च वैष्णवं च नराधिप॥

प्रतिलोमभवानां तु सर्वेषां परिकीर्त्तितम्।

जिस नक्षत्र में जिस पुरुष का जन्म हो, वह उसका जन्मर्क्ष कहा गया है। जन्मनक्षत्र से चतुर्थ नक्षत्र उसका मानस, जन्मनक्षत्र से दशम कर्मसंज्ञक, जन्मर्क्ष से षोडशतम सांघातिक, मानस नक्षत्र से उन्नीसवाँ सामुदय और कर्मनक्षत्र से चतुर्दश नक्षत्र वैनाशिक कहा गया है। ये छः (जन्मनक्षत्र, मानस, कर्म, सांघातिक, सामुदयिक और वैनाशिक) नक्षत्र पुरुष के सर्वस्वरूप में फल देते हैं। परन्तु राजा के सर्वस्व फलदायक नौ नक्षत्र होते हैं। उक्त छः नक्षत्रों के अतिरिक्त तीन और नक्षत्र देशनक्षत्र (कूर्मविभागानुसार कथित), अभिषेकनक्षत्र और जातिनक्षत्र राजाओं को नित्य अधिक फल देने वाले हैं।

हे निष्पाप ! जातिनक्षत्र इस प्रकार हैं— तीनों पूर्वा (पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और पूर्वभाद्र) और कृत्तिका— ये ब्राह्मण जाति के नक्षत्र हैं। पुनर्वसु, अश्विनी, हस्त और अभिजित् शूद्र जाति के नक्षत्र हैं। आश्लेषा, विशाखा, भरणी और श्रवण चाण्डाल जाति के नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों के प्रतिलोम (पीड़ित) होने से उनकी जाति के लोगों को पीड़ा होती है।

यहाँ क्षत्रिय, वैश्य, व्यापारी और सेवकों के नक्षत्र नहीं बताये गये हैं, जो बृहत्संहिता और योगयात्रादि ग्रन्थों में वराह ने बताया है।

योगयात्रायां वराहः

जन्मर्क्षमाद्यं दशमं च कर्म सांघातिकं षोडशमृक्षमाद्यात्।
अष्टादशं स्यात् समुदायसंज्ञं वैनाशिकं विंशतिभिस्त्रिभिश्च॥

यत् पञ्चविंशं खलु मानसं च षड्ऋक्ष एवं पुरुषस्तु सर्वः।
राज्ञो नवर्क्षाणि विदन्ति जातिदेशाभिषेकैः सहितानि तानि॥

कूर्मोपदेशादिह देशभानि राज्ञोऽभिषेकेऽहनि चाभिषेकम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वात्रयं सानलमग्रजानां राज्ञां तु पुष्येण सहोत्तराणि।
सपौष्णमैत्रं पितृदैवतं च प्रजापतेर्भं च कृषीवलानाम्॥

आदित्यहस्ताभिजिदाश्विनानि वणिग्जनानां प्रभवन्ति तानि।
मूलत्रिनेत्रानिलवारुणानि भान्युग्रजातेः प्रभविष्णुतायाः।
सौम्येन्द्रचित्रावसुदैवतानि सेवाजनस्वाम्यमुपागतानि॥

सार्पं विशाखाश्रवणाभरण्यश्चाण्डालजातेरभिनिर्दिशन्ति।

मनुष्य का जन्मकालिक प्रथम नक्षत्र जन्मर्क्ष, दशम कर्मनक्षत्र, सोलहवाँ सांघातिक, अठारहवाँ समुदायसंज्ञक, तेईसवाँ वैनाशिक और पच्चीसवाँ मानससंज्ञक नक्षत्र है। ये छः नक्षत्र पुरुष के सर्वस्व (सभी प्रकार के फल देने वाले) हैं।

राजा के लिए उक्त छः नक्षत्रों के अतिरिक्त जातिनक्षत्र, देशनक्षत्र और अभिषेकनक्षत्र— ये तीन मिलाकर कुल नौ नक्षत्रसर्वस्व होते हैं। कूर्मविभागानुसार देशनक्षत्र और राज्याभिषेक के दिन का नक्षत्र अभिषेकनक्षत्र कहे गये हैं। जाति-नक्षत्र इस प्रकार हैं— तीनों पूर्वा और कृत्तिका अग्रजों (ब्राह्मणों) के नक्षत्र; पुष्य और तीनों उत्तरा राजाओं के नक्षत्र; रेवती, अनुराधा, मघा और भरणी नक्षत्र वैश्यों के; पुनर्वसु, हस्त, अभिजित् और अश्विनी वणिक् (क्रय-विक्रय करने वालों) के; मूल, आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा नक्षत्र क्रूर मनुष्यों के; मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा और ज्येष्ठा नक्षत्र सेवकों के तथा आश्लेषा, विशाखा, श्रवण और भरणी नक्षत्र चाण्डालों के हैं।

बृहद्यात्रायां च वराहः

जन्माद्यं कर्म ततो दशमं सांघातिकं च षोडशभम्।
समुदयमष्टादशभं विनाशसंज्ञं त्रयोविंशम्॥

नामानुरूपमेषां सदसत्फलमिष्टपापगुणदोषात्।

प्रथम नक्षत्र जन्म, दशवाँ कर्म, षोलहवाँ सांघातिक, अठारहवाँ समुदय और तेईसवाँ विनाशसंज्ञक नक्षत्र है। इन नक्षत्रों का नाम के अनुसार शुभाशुभ फल गुण और दोष के बलाबल से होता है।

ज्योतिःपराशरविष्णुधर्मोत्तरयोः

इह देहार्थहानिः स्याज्जन्मर्क्ष उपतापिते।
कर्मर्क्षे कर्मणां हानिः पीडा मनसि मानसे॥

मूर्त्तिद्रविणबन्धूनां हानिः सांघातिके हते।
सन्तप्ते सामुदयिके मित्रभृत्यार्थसञ्चयः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैनाशिके विनाशः स्यादेहद्रविणसम्पदाम् ।

यदि जन्मर्क्ष पीड़ित हो तो शरीर और धन की हानि, कर्मनक्षत्र पीड़ित हो तो कर्म की हानि, मानसनक्षत्र पीड़ित हो तो मन की पीड़ा, सांघातिक नक्षत्र पीड़ित हो तो शरीर, धन और बन्धुओं की हानि, सामुदयिक नक्षत्र पीड़ित हो तो मित्र, भृत्य और अर्थसञ्चय का नाश तथा वैनाशिक नक्षत्र पीड़ित हो तो देह, धन और अन्य सम्पदाओं का नाश होता है ।

पराशरस्तु

एतेष्वनुपतप्तेषु मानवो नोपतप्यते ।
ऋक्षेषु षट्सु युगपत् सन्तप्तेष्वाशु नश्यति ॥

ये छः (जन्म, मानस, कर्म, सांघातिक, समुदय और वैनाशिक) नक्षत्र यदि पीड़ित नहीं हों तो उस मनुष्य को पीड़ा नहीं होती है । यदि ये छः नक्षत्र एक साथ पीड़ित हों तो वह मनुष्य शीघ्र नष्ट हो जाता है ।

विष्णुधर्मोत्तरे

पीडिते चाभिषेकर्क्षे राष्ट्रभ्रंशं विनिर्दिशेत् ।
देशर्क्षे पीडिते पीडां देशस्य च पुरस्य च ॥

पीडिते जातिनक्षत्रे राज्ञां व्याधिं विनिर्दिशेत् ।

राजा का अभिषेकनक्षत्र पीड़ित हो तो राष्ट्र का नाश कहना चाहिये, यदि देशनक्षत्र पीड़ित हो तो देश और नगर को पीड़ा तथा जातिनक्षत्र पीड़ित हो तो राजाओं को व्याधि होती है— ऐसा आदेश करना चाहिये ।

वराहसंहितायां तु

रोगाभ्यागमवित्तनाशकलहाः सम्पीडिते जन्मभे
सिद्धिं कर्म न याति कर्मणि हते भेदस्तु सांघातिके ।
वित्तस्योपचितस्य सामुदयिके सम्पीडिते संक्षये
वैनाशे तु भवन्ति कायविपदश्चिन्तासुखं मानसे ॥

निरुपद्रुतभो निरामयः सुखभुङ्नष्टरिपुर्धनान्वितः ।
षडुपद्रुतभो विनश्यति त्रिभिरन्यैश्च सहावनीश्वरः ॥

यदि जन्मनक्षत्र पीड़ित हो तो रोग की उत्पत्ति, वित्तनाश और कलह; कर्मनक्षत्र पीड़ित हो तो कर्म की असिद्धि; सांघातिक नक्षत्र पीड़ित हो तो भेद, सामुदयिक नक्षत्र पीड़ित हो तो सञ्चित धन का नाश, वैनाशिक नक्षत्र पीड़ित हो तो शरीर में व्याधि और चिन्ता तथा मानस नक्षत्र पीड़ित हो सुख का नाश होता है । यदि उक्त छः नक्षत्र निरुपद्रव हों तो मनुष्य आरोग्य, सुखी, शत्रुरहित और धनी होता है । अन्य तीन नक्षत्रों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(अभिषेक, जाति और देशनक्षत्र) के साथ उक्त छः नक्षत्र यदि उपद्रवयुत हों तो राजा का नाश होता है।

योगयात्रायां वराहः

न भवति शरीरपीडा यस्य विना शान्तिभिः पीडा।
तस्य शरीरविपत्तिं पाकान्ते देवलः प्राहः॥

नक्षत्रों को पीड़ित होने पर यदि शान्ति के विना भी शरीर-पीड़ा न हो तो उसकी शरीरपीड़ा पाकान्त में होती है— ऐसा देवल ने कहा है।

अथ शान्तिमाह पराशरः

तत्र जन्मर्क्षोपतापे श्वेतवृषभस्य शकृन्मूत्रं तद्वर्णायाश्च गोः पयः कुशाँश्चोदकुम्भे निधायाभिषेचनं कुर्यात्।

यदि जन्मनक्षत्र पीड़ित हो तो श्वेत बैल के गोबर एवं मूत्र, श्वेत गाय का दूध और कुश जलपूर्ण घट में रखकर अभिषेचन करना चाहिये।

काश्यपश्च

श्वेतदन्तिशकृन्मूत्रैः श्वेतगोपयसा कुशैः।
कलशैरभिषेक्तव्यो जन्मर्क्षं यस्य पीडितम्॥

जिसका जन्मनक्षत्र पीड़ित हो, उसे सफेद हाथी के गोबर एवं मूत्र, सफेद गाय के दूध और कुशों से कलश के जल से अभिषेक करना चाहिये।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

शकृन्मूत्रे च संगृह्य श्वेतस्य वृषभस्य तु।
श्वेतगोपयसा सार्धं स्नातव्यं शुभवारिणा॥

जन्मनक्षत्र के पीड़ित होने पर सफेद वर्ण वाले बैल के गोबर एवं मूत्र, सफेद गाय का दूध और स्वच्छ जल को मिलाकर स्नान करना चाहिये।

वराहसंहितायां तु

सितगोक्षीरवृषभशकृन्मूत्रैः सह पूर्णकलशाद्यैः।
स्नानं जन्मनि दुष्टेष्वाचारवतां हरति पापम्॥

जन्मनक्षत्र के दूषित होने पर सफेद गाय के दूध और सफेद वृषभ के गोबर एवं मूत्र के साथ-साथ पूर्ण कलश (जलपूर्ण) आदि से स्नान करने से आचारवान मनुष्यों का पाप (पीड़ा) नष्ट होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्मर्क्षपीडायां शान्तिमाह पराशरः

कर्मर्क्षे गौरसर्षपप्रियङ्गुशतपुष्पीशतावरीभिरभिषिक्तो मधुघृतमिश्रमग्नौ हुत्वा दशरात्रं ब्रह्मचारी मांसक्षारक्षौद्रमद्यानि वर्जयेत् ।

यदि कर्मसंज्ञक नक्षत्र पीड़ित हो तो सफेद सरसों, प्रियङ्गु, शतपुष्पी, शतावरी—इन सभी वस्तुओं को कलश में डालकर स्नान करके मधु और घृत मिलाकर अग्नि में हवन करके दश रात तक ब्रह्मचर्य धारण करते हुए मांस, लवण, मधु और मदिराओं का त्याग करना चाहिये ।

काश्यपस्तु

शतावर्या प्रियङ्ग्वा च गौरवर्णैश्च सर्षपैः ।
शतपुष्प्याऽभिषेक्तव्यं कर्मर्क्षं यस्य पीडितम् ॥
जुहुयान्मधुसर्पिर्भ्यामयुतं तु जितेन्द्रियः ।
मधुमांसं न भुञ्जीत कट्वाम्ललवणानि च ॥

जिस मनुष्य का कर्मनक्षत्र पीड़ित हो, उसे शतावरी, प्रियङ्गु, गौरवर्ण वाले सरसों और शतपुष्पी से अभिषेक (जल में मिलाकर स्नान) करना चाहिये । उसके बाद मधु और घृत से दश हजार बार हवन करना चाहिये तथा जितेन्द्रिय रहकर मधु, मांस, कटु पदार्थ, अम्ल और नमक नहीं खाना चाहिये ।

विष्णुधर्मोत्तरे

सिद्धार्थकान् प्रियङ्गुं च शतपुष्पीं शतावरीम् ।
स्नातव्यमम्भसि क्षिप्त्वा कर्मर्क्षे तूपपीडिते ॥

यदि कर्मनक्षत्र पीड़ित हो तो सिद्धार्थक (सफेद सरसों), प्रियंगु, शतपुष्पी और शतावरी को जल में डालकर उससे स्नान करना चाहिये ।

वराहसंहितायान्तु

कर्मणि मधुघृतहोमो दशाहमक्षारमद्यमांसादः ।
दूर्वाप्रियङ्गुसर्षपशतपुष्पशतावरीस्नानम् ॥

यदि कर्मनक्षत्र पीड़ित हो तो दूर्वा, प्रियंगु, सरसो, शतपुष्पी और शतावरी को जल में डालकर स्नान करके दस दिनों तक नमक, मदिरा, मांस आदि का त्याग करते हुये मधु और घृत से हवन करना चाहिये ।

अथ सांघातिकनक्षत्रपीडायां शान्तिमाह पराशरः

सांघातिके प्रियङ्गुबिल्वसितसर्षपशरलपिप्पलशतावरीचन्दनोकैरभिषेकं कुर्यात् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सांघातिक नक्षत्र पीड़ित हो तो प्रियंगु, बिल्व, सफेद सरसों, शरल, पिप्पल, शतावरी और चन्दनमिश्रित जल से अभिषेक (स्नान) करना चाहिये।

काश्यपः

प्रियङ्ग्वा सर्षपैर्विल्वैः पिप्पलैः शरलैर्यवैः।
चन्दनेन शतवर्या स्नानं सांघातिके हते॥

यदि सांघातिक नक्षत्र पीड़ित हो तो प्रियंगु, सर्षप, बिल्व, पिप्पल, शरल, यव (जौ), चन्दन और शतावरीमिश्रित जल से स्नान करना चाहिये।

विष्णुधर्मोत्तरे

प्रियङ्गुविल्वसिद्धार्थयवाश्वत्थासुरप्रियाः।
चन्दनोदकसंयुक्ताः स्नानं सांघातिके हते॥

यदि सांघातिक नक्षत्र आहत हो तो प्रियंगु, बिल्व, सिद्धार्थ (सफेद सरसों), यव, पिप्पल, असुरप्रिय और चन्दन से संयुक्त जल से स्नान करना चाहिये।

वराहसंहितायां तु

सांघातिके तु तप्ते मांसमधुमद्यमन्मथाँस्त्यक्त्वा।
स्नातो दूर्वां जुहुयाद्दानं दद्याद्यथाशक्ति॥

यदि सांघातिक नक्षत्र अभितप्त हो तो मांस, मधु, मद्य और काम को छोड़कर स्नान करके दूर्वा से हवन तथा यथाविभव दान करना चाहिये।

अथ सामुदयिकनक्षत्रपीडायां शान्तिमाह पराशरः

सामुदयिके सर्वगन्धसर्षपाक्षतैस्त्र्यहं स्नानं
सुमनोभिरभिनवैः कुसुमैश्च द्विजानर्चयेत्।

यदि सामुदयसंज्ञक नक्षत्र पीड़ित हो तो सर्वगन्ध (अगरु, कुंकुम, चन्द्र, चन्दन—चारों समान भाग से मिश्रित), सर्षप और अक्षतों से तीन दिनों तक स्नान करके प्रसन्न चित्त होकर अभिनव पुष्पों से ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिये।

काश्यपस्तु

अक्षतैः सर्षपैः पुष्पैः सर्वगन्धसमन्वितैः।
त्रिरात्रं स्नपनं कुर्यात् सामुदये हतेऽशुभैः॥

यदि सामुदयिक नक्षत्र पापग्रहों से आहत हो तो अक्षत, सर्षप, पुष्प और सर्वगन्ध मिलाकर जल से तीन दिन स्नान करना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गन्धशास्त्रे

अगरुं कुङ्कुमं चन्द्रं चन्दनं च चतुःसमम् ।
सर्वगन्धमिति प्राहुः समस्तसुरवल्लभम् ॥

अगरु, कुंकुम, चन्द्र और चन्दन— चारो का समान मिश्रण सर्वगन्ध कहा गया है, जो सभी देवताओं को प्रिय है।

वराहसंहितायां तु

सामुदयिके तु दद्यात् काञ्चनरजतान्युपद्रुते धिष्ण्ये ।

सामुदयिक नक्षत्र पीड़ित हो तो सुवर्ण और चाँदी का दान करना चाहिये।

अथ वैनाशिकनक्षत्रपीडायां शान्तिमाह पराशरः

वैनाशिके वृषशृङ्गोद्धृतमृद्बिल्वोत्पलसोमशतपुष्प्यम्भसाऽभिषेकं कुर्यात् ।

यदि वैनाशिक नक्षत्र पीड़ित हो तो बैल के शृंग (सिंग) में लगी हुई मिट्टी, बिल्व, कमल, सोम, शतपुष्पी (सौंफ) और जल से अभिषेक (स्नान) करना चाहिये।

काश्यपः

वैनाशिके वृषशृङ्गमृत्तिकोत्पलसंयुजा ।
शतपुष्प्या पूर्णकुम्भैः स्नानं दुरितनाशनम् ॥

यदि वैनाशिक नक्षत्र पीड़ित हो तो वृषशृङ्ग की मृत्तिका, उत्पल, शतपुष्पी और पूर्ण कलश के जल से स्नान करने से पीड़ा का नाश होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

सर्वगन्धोदकैः स्नानं तथा सिद्धार्थकैः शुभैः ।
शतपुष्प्या ससोमाख्यैः स्नानं वैनाशिकं भवेत् ॥

यदि वैनाशिक नक्षत्र की पीड़ा हो तो सर्वगन्ध जल, शुभकारी सिद्धार्थक, (सफेद सरसों), शतपुष्पी (सौंफ) और सोम से स्नान करना चाहिये।

वराहसंहितायां तु

वैनाशिकेऽन्नपानं वसुधां तु गुणान्वितां दद्यात् ।

वैनाशिक नक्षत्र की पीड़ा में अन्न, पेय वस्तु और गुणों से युक्त पृथ्वी का दान करना चाहिये।

अथ मानसनक्षत्रपीडायां शान्तिमाह पराशरः

मानसेऽश्वत्थसितचन्दनशिरीषकुञ्जरमदाम्भसा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुस्नातस्तोयभवैः कुसुमैः सोममभ्यर्चयेत् ।
व्रतं चान्द्रायणमाचरेत् ।

यदि मानससंज्ञक नक्षत्र पीड़ित हो तो पीपल, सफेद चन्दन, शिरीष-पुष्प, गजमद और जल से स्नान करके जलोत्पन्न कुसुमों से चन्द्रमा की पूजा करनी चाहिये तथा चान्द्रायण व्रत करना चाहिये ।

काश्यपश्च

शिरीषं चन्दनं शुक्लं वारणस्य मदोदकम् ।
नीरजैः फुल्लकह्लारैरुदकुम्भाभिषेचनम् ॥
व्रतं चान्द्रायणं कुर्यान्मानसे ह्युपतापिते ।

यदि मानससंज्ञक नक्षत्र पीड़ित हो तो शिरीष-पुष्प, शुक्ल चन्दन, गजमद, जलज पुष्प (कमल आदि), विकसित कह्लारपुष्प और पूर्ण कुम्भ के जल से अभिषेक और चान्द्रायण व्रत करना चाहिये ।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

शिरीषचन्दनाश्वत्थगजदानाम्बुभिर्नरः ।
स्नातस्तु मानसे तप्ते तस्माद्दोषाद्विमुच्यते ॥

मानस नक्षत्र के पीड़ित होने पर शिरीष, चन्दन, पीपल, गजमद और जल से स्नान करने से उसके दोष से मनुष्य मुक्त हो जाता है ।

वराहसंहितायां तु

मानसतापे होमः सरोरुहैः पायसैर्द्विजा भोज्याः ।
गजमदशिरीषचन्दनबलातिबलवारिणा स्नानम् ॥

यदि मानस नक्षत्र पीड़ित हो तो गजमद, शिरीषपुष्प, चन्दन, वलातिबल (औषधि आदि) और जल से स्नान, कमलपुष्प और पायस से हवन तथा ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये ।

अथाभिषेकदेशजातिनक्षत्रपीडायां शान्तिर्विष्णुधर्मोत्तरे

पीडिते चाभिषेकर्क्षे सर्वरत्नोदकैस्तथा ।
पीडिते देशनक्षत्रे मृद्भिः स्नानं विधीयते ॥
मृत्तिकाश्च प्रवक्ष्यामि गदतः शृणु मे नृप ।
नदीकूलद्वयान्नद्योः सङ्गमात् सरसस्तटात् ॥
अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्गोस्थाद्गिरिमस्तकात् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शक्रस्थानात् सवल्मीकाद्राजस्थानाद्वनालयात् ॥

गजश‍ृङ्गोद्धृता चैव वृषश‍ृङ्गोद्धृता तथा ।
सर्वबीजोदकस्नातो जातिनक्षत्रपीडनात् ॥

मुच्यते किल्विषाद्राजन् नात्र कार्या विचारणा ।

यदि राजा का अभिषेक (राज्याभिषेक) नक्षत्र पीड़ित हो तो सर्वरत्न और जल से स्नान करना चाहिये । यदि देशनक्षत्र पीड़ित हो तो मृत्तिकास्नान (मृत्तिका-लेपन) करना चाहिये । हे राजन् ! अब स्नान के लिए विहित मिट्टी कहता हूँ । नदी के दोनों तटों की मिट्टी, दो नदियों के संगम, सरोवर के तट, अश्वस्थान, गजस्थान, गोशाला, पर्वत के मस्तक (शिखर), इन्द्र के स्थान, वल्मीक (दिवड़ा भीड़), राजा के निवासस्थान, वनालय (वन), गजश‍ृङ्ग (सूड़) और वृषश‍ृङ्ग से लायी हुई मिट्टियाँ विहित हैं ।

यदि जातिनक्षत्र पीड़ित हो तो सर्वबीज और जल से स्नान करने से उस पाप (पीड़ा) से राजा मुक्त हो जाते हैं । हे राजन् ! इसमें विचार नहीं करना चाहिये अर्थात् यह सत्य है ।

देवीपुराणे सर्वबीजानि

यवगोधूममुद्गानि शालिः षष्टिक आढकी ।
तिलमाषाः प्रशान्ती च श्यामाकाशररालकाः ॥

आढकी तु रविप्रसारिनीवारः । रालकः कङ्गुः ।

जौ, गेहूँ, मूँग, धान्य, साठी, आढ़की (नीवार), तिल, माष, प्रशान्ती, श्यामाकाशर और कङ्गु— ये सर्वबीज कहे गये हैं ।

विष्णुधर्मोत्तरे स्नानमन्त्रः

इदमापः प्रवहतः स्नानमन्त्रः प्रकीर्त्तितः ।
स्नानं तथैवं नृपचन्द्र पश्चात् स्नानं प्रकुर्याद्गृहसम्प्रविष्टम् ।
पीडाकरस्याथ ततस्तु कार्यं नक्षत्रपीडाभिहितं यथावत् ॥

पीडाकरस्याथ ततस्तु कार्या पूजा ग्रहेन्द्रस्य नरेन्द्रचन्द्र ।
सम्पूजयेच्चाप्यथ चन्द्रयुक्तं ततः स दोषान् सकलान् जहाति ॥

'इदमापः प्रवहतः' इत्यादि स्नानमन्त्र कहा गया है । इस मन्त्र से नदी में स्नान करके पुनः घर में स्नान करना चाहिये । उसके बाद पीड़ित नक्षत्रों के अनुसार यथोक्त शान्ति करके, पीड़ित करने वाले ग्रहों और चन्द्रमा की पूजा करके राजा समस्त दोषों से मुक्त हो जाते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथैकदैव पीडितषड्नक्षत्रपीडायां शान्तिः । तत्र काश्यपः

**उदुम्बरफलैर्विल्वैः शतावर्या प्रियङ्गुभिः ।
अथर्वशिरसा जप्तैस्तोयैः सर्वाभिषेचनम् ॥**

यदि जन्म, कर्म आदि छः नक्षत्र एक साथ पीड़ित हों तो गूल्लरफल, बिल्वफल, शतावरी और प्रियङ्गु-मिश्रित जल से अथर्वशिरस मन्त्र से सभी नक्षत्रों की पीड़ा होने पर अभिषेक करना चाहिये ।

वराहसंहितायां तु

**सर्वेषां पीडायां दिनमेकमुपोषितोऽनलं जुहुयात् ।
सावित्र्या क्षीरितरोः समिद्भिरमरद्विजानुरतः ॥**

यदि एक साथ सभी नक्षत्र पीड़ित हों तो एक दिन उपवास करके दूध वाले वृक्ष की लकड़ी से सावित्री मन्त्र के द्वारा अग्नि में हवन करना चाहिये और देवता तथा ब्राह्मणों की सेवा में लीन रहना चाहिये ।

पराशरः

यथा नक्षत्रपूजां बल्युपहारमग्निहोमं च कुर्यात् ।

नक्षत्रों की पीड़ा में नक्षत्रपूजा, बलि (भूतबलि), ब्राह्मण आदि को उपहार (दानादि) और हवन करना चाहिये ।

अथ दिनरात्र्योस्तारकदर्शनादर्शनफलं बार्हस्पत्ये

**निर्निमित्तं ज्योतिषां चेद्दिवासन्दर्शनं भवेत् ।
रात्रावनभ्रे यदि वाऽदर्शनं तद्विगर्हितम् ॥**

यदि अकारण (सूर्यग्रहणादि के विना भी) दिन में तारागण दिखाई दें तथा अकारण (मेघादि आच्छादन के विना भी) रात में दिखाई न दें तो अशुभ होता है ।

वराहसंहितायम्

व्यभ्रे निश्युडुनाशो दर्शनमपि वाऽह्नि दोषकरम् ।

यदि मेघरहित आकाश में भी रात में तारा का नाश (अदर्शन) अथवा दिन में दर्शन हो तो वह दोषकारक होता है ।

मत्स्यपुराणे तु

**रात्रावनभ्रगगने भयं स्यादृक्षवर्जिते ।
दिवा सतारे गगने तथैव भयमादिशेत् ॥**

मेघरहित आकाश में भी रात में तारा का अदर्शन तथा दिन में आकाश में तारागण दिखाई दे तो लोगों में भय का आदेश करना चाहिये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अरण्यकाण्डे खरवधनिमित्तम्

उदभासद्दिवा चन्द्रस्तारागणसमन्वितः ।

उक्त समय में दिन में तारागणों के साथ चन्द्रमा प्रकाशित दिखाई दिये। वाल्मीकीय रामायण में उक्त स्थान पर 'उत्पेतुश्च विना रात्रिं ताराखद्योतसप्रभा:' यह उपलब्ध है।

गार्गीये

यस्मिन् देशे दिवा तारा दृश्यते दिवि कर्हिचित् ।
तस्य देशस्य यो राजा सराष्ट्रः स विनश्यति ॥

जिस देश में दिन में ही आकाश में कदाचित् तारा दिखाई दे तो उस देश का राजा राष्ट्रसहित विनष्ट होता है।

वराहसंहितायाम्

त्रिदशगुरौ नृपतिवधो दिवा दृष्टे------- ।

दिन में बृहस्पति के दृष्ट होने पर राजा का वध होता है।

पराशरस्तु

कदाचिद् दृश्यते यत्र दिवा देवपुरोहितः ।
राजा च म्रियते तत्र सर्वदेशो विनश्यति ॥

विशेषः– जन्मनक्षत्रादिस्थे बृहस्पतौ दिवा दृष्टे नृपवधः। अन्यत्र तु देशनाशः - इति।

यदि कदाचित् दिन में बृहस्पति ग्रह दिखाई दे तो राजा की मृत्यु और सम्पूर्ण देश का नाश होता है।

विशेष– यदि जन्मनक्षत्रादि में स्थित होकर बृहस्पति दिन में दृश्य हो तो राजा का वध एवं अन्य नक्षत्र में स्थित होकर दिन में दृश्य हो तो देश का नाश होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

अकस्माद्यत्र दृश्येत दिवा देवपुरोहितः ।
राजा वा म्रियते तत्र सर्वदेशो विनश्यति ॥

यदि अकस्मात् दिन में बृहस्पति दिखाई दे तो राजा की मृत्यु अथवा सम्पूर्ण देश का नाश होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

अहः सर्वं यदा शुक्रो दृश्यते तु महाग्रहः ।
तदा चागन्तुभिर्ग्रामा वध्यन्ते नगराणि च ॥

यदि पूरा दिन शुक्र महाग्रह दिखाई दे तो आक्रमणकारियों से ग्राम और नगरवासियों का वध होता है।

विशेषः– 'अहः सर्वमिति शौक्रं सकलसावनमिति। सकलसौरसावनदिने भार्गवदर्शनासम्भवात्।' अर्थात् सम्पूर्ण सूर्यसावन में शुक्र का दर्शन कभी भी सम्भव नहीं हो सकता है। इसलिए सम्पूर्ण सावन का अभिप्राय सकल शुक्रसावन से है।

वराहसंहितायाम्

दृष्टोऽनस्तङ्गतोऽर्के भयकृत् क्षुद्रोगकृत् समस्तमहः ।
अर्धदिवसे च सेन्दुर्नृपबलपुरभेदकृच्छुक्रः ॥

यदि शुक्र सूर्यास्त से पहले दिखाई दे तो भय करता है। दिन भर दिखाई दे तो दुर्भिक्ष और रोग उत्पन्न करता है तथा मध्याह्न में चन्द्र के साथ दिखाई दे तो राजा, सेना और नगर में भेद-भाव उत्पन्न करता है।

विशेष– 'दृष्टो मस्तगतोऽर्को' यह पाठ भी है। वहाँ मस्तगत का अभिप्राय पाँच मुहूर्त्त न्यून तीन प्रहर है।

वटकणिकायाम्

यमारयोः पवनहुताशजं भयं ह्यदृष्टयोरसहितयोश्च सद्ग्रहैः ।

यदि शनि और मङ्गल शुभ ग्रहों से अयुक्त और अदृष्ट हों तो वायु तथा अग्नि का भय उत्पन्न करते हैं।

विशेषः– तारकाणां दिवादर्शने रात्रावदर्शने च मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरवराहसंहितोक्ताग्निवैकृतशान्तिः कर्त्तव्या। तां चाग्न्यद्भुतावर्त्ते लिखिष्यामः।

अथ राश्यद्भुतानि। तत्र काश्यपः

चतुःपञ्चद्विसप्तस्थो नवदिग्रुद्रगो गुरुः ।
यस्य राशेस्तदुक्तानां द्रव्याणां वृद्धिकृत् स्मृतः ॥

द्व्येकादशदशपञ्चाष्टसंस्थितः शशिजः शुभः ।
शुक्रः सप्तरिपुस्थो वा हानिकृद्वृद्धिगोऽन्यगः ॥

पापास्तूपचयस्थाश्च वृद्धिं कुर्वन्ति नान्यगाः ।

बृहस्पति जिस राशि से चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, नवम, दशम या एकादश स्थान में स्थित हो, उस राशि के द्रव्यों की वृद्धि करता है। जिस राशि से द्वितीय, एकादश,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दशम, पञ्चम या अष्टम स्थान में बुध बैठा हो, उस राशि के कथित द्रव्यों की वृद्धि करता है।

जिस राशि से सप्तम या षष्ठ स्थान में शुक्र बैठा हो, उस राशि के कथित द्रव्यों की हानि और शेष स्थान (प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश या द्वादश) में स्थित हो तो उनकी वृद्धि करता है तथा जिस राशि से पापग्रह (रवि, मङ्गल और शनैश्चर) उपचय (३, ६, १० या ११) स्थान में स्थित हों उसके द्रव्यों की वृद्धि और शेष (१, २, ४, ५, ७, ८, ९ और १२) स्थानों में स्थित हों तो हानि करता है।

वराहसंहितयोः

राशेश्चतुर्दशार्थायसप्तनवपञ्चमस्थितो जीवः।
द्व्येकादशदशपञ्चाष्टभसंस्थः शशिजश्च वृद्धिकरः॥

षट्सप्तमगो हानिं वृद्धिं शुक्रः करोति शेषेषु।
उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः॥

जिस राशि से बृहस्पति ४, १०, २, ११, ७, ९ या ५ स्थान में स्थित हो, उस राशि के कथित द्रव्यों की वृद्धि करता है। जिस राशि से बुध २, ११, १०, ५ या ८ स्थान में स्थित हो, उस राशि के द्रव्यों की वृद्धि करता है। जिस राशि से ६ या ७ वें स्थान में शुक्र स्थित हो, उस राशि के द्रव्यों की हानि तथा शेष स्थान में स्थित हो तो वृद्धि करता है। पापग्रह जिस राशि से उपचय स्थान में हो, उस राशि के कथित द्रव्यों की वृद्धि और शेष (अनुपचय) स्थान में हो तो उनकी हानि करता है।

काश्यपः

इष्टस्थाने स्थिताः सौम्या बलिनो येषु राशिषु।
भवन्ति तद्भवानां तु द्रव्याणां शुभदाः स्मृताः॥

जिन राशियों से इष्ट स्थान (पूर्वकथित वृद्धिस्थान) में बली शुभ ग्रह स्थित हों, उन राशियों के कथित द्रव्यों को शुभ कहा गया है।

वराहसंहितायां तु

इष्टस्थाने सौम्या बलिनो येषां भवन्ति राशीनाम्।
तद्द्रव्याणां वृद्धिः सामर्घ्यं सुलभताऽत्रैव।

जिस राशि से इष्ट स्थान (पूर्वकथित वृद्धिस्थान) में बली होकर शुभ ग्रह (बुध, गुरु और शुक्र) स्थित हो, उस राशि के कथित द्रव्यों की वृद्धि, अल्प मूल्य में मिलने वाले और द्रव्य सुलभ होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपः

राशेरनिष्टस्थानेषु पापाश्च सबलाः स्थिताः ।
तद्द्रव्याणां नाशकरा दुर्लभास्ते भवन्ति च ॥

जिस राशि से अनिष्ट स्थान (उपचय स्थान) में स्थित होकर पापग्रह (शनि, रवि और मंगल) बली (मित्रगृह, स्वगृह, उच्च, स्वनवांश या शुभग्रहों से दृष्ट) हो, उस राशि के कथित द्रव्यों का नाश होता है और द्रव्य दुर्लभ हो जाते हैं।

वराहसंहितायां तु

राशेर्यस्य क्रूराः पीडास्थानेषु संस्थिताः बलिनः ।
तत्प्रोक्तद्रव्याणां महार्घता दुर्लभत्वं च ॥

जिस राशि से पीड़ास्थान (उपचयस्थान) में बली होकर पापग्रह स्थित हों, उस राशि के कथित द्रव्यों की महँगी और दुर्लभता होती है।

अथ मेषादिराशीनां द्रव्याणि । तत्र काश्यपः

मेषे सुवर्णस्थलजगोधूमाजाविकास्तथा ।

मेष राशि के सुवर्ण, स्थल (जलरहित भूमि) से उत्पन्न (वनौषधि आदि), गेहूँ, बकरा, भेड़ आदि द्रव्य हैं।

वराहसंहितयोस्तु

वस्त्राविककुतुपानां मसूरगोधूमरालकयवानाम् ।
स्थलसम्भवौषधीनां कनकस्य च कीर्त्तितो मेषः ॥

वस्त्राविक (भेड़ के रोम से निर्मित वस्त्र), कुतुप (बकरी के रोम से निर्मित वस्त्र), मसूर, गेहूँ, रालक (कङ्गु), जौ, स्थल (जलरहित भूमि) से उत्पन्न औषधि और सुवर्ण का स्वामी मेष राशि है।

यवनेश्वरस्तु

भूमेः कृषेः शस्यसुवर्णताम्रधात्वग्निजन्याहवसम्भ्रमाणाम् ।
गजाश्वबालव्यजनातपत्रशक्तिध्वजस्तेनचमूपतीनाम् ॥

अजाविकातीक्ष्णकरद्रुमादित्वक्पत्रदग्धप्रहतक्षतानाम् ।
मनःशिलागैरिकरक्तयुक्तिद्रव्याधिकारो विहितोऽजराशिः ॥

कृषियोग्य भूमि, धान्य, सुवर्ण, ताम्र, धातु, अग्निजन्य युद्ध, सम्भ्रम, गज, घोड़ा, बाल, व्यजन, आतपत्र (छत्र), शक्ति, ध्वज, चोर, सेनापति, बकरा, भेड़, तीक्ष्ण, आकर (द्रव्योत्पत्ति स्थान), वृक्ष आदि, दालचीनी, दग्ध, प्रहत, क्षत, मैनशिल पत्थर, गैरिक (सुगन्ध द्रव्य), रक्त, युक्ति आदि द्रव्यों का स्वामी मेष राशि है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपः

वृषे महिषगोवस्त्रशालयः पुष्पसम्भवः ।

भैंस, गाय-बैल, वस्त्र, शालिधान्य और फूलों से उत्पन्न होने वाले द्रव्यों का स्वामी वृष राशि है।

वराहसंहितायां तु

गवि वस्त्रकुसुमगोधूमशालियवमहिषसुरभितनयाः स्युः ।

वस्त्र, पुष्प, गेहूँ, शालिधान्य, जौ, भैंस और बैल का स्वामी वृष राशि है।

यवनेश्वरस्तु

क्रीडाविहारस्त्रगपत्यनारीविद्यारतोद्यानसभाप्रपानाम् ।
सर्पिर्दधिक्षीररसस्य पुष्पमन्थानगोलाङ्गुलकर्षकाणाम् ॥

युगाक्षशय्याशकटाक्षचक्रगन्धाक्षताम्भोमहिषर्षभाणाम् ।
सौभाग्यरत्नाम्बरदण्डकानां प्रभुर्वृषः कोषगृहाश्रमाणाम् ॥

क्रीड़ा, विहार, स्त्रक्, सन्तान, स्त्री, विद्यारत, बगीचा, सभा, प्रपा (जल रखने का स्थान), घृत, दही, दूध, रस, पुष्प, कहतरी (जिसमें दही मथा जाता है), गोलाङ्गल (हल), किसान, जुवा, जुवा का अवयव, शय्या, शकट (गाड़ी), धुरी, चक्र, गन्ध, अक्षत, जल, महिष, वृषभ, सौभाग्य, रत्न, वस्त्र, दण्ड, कोष और गृहाश्रमी— इन सबों का स्वामी वृष राशि है।

काश्यपः

मिथुने शारदं धान्यं वल्लीकार्पासशालुकाः ।

शारदीय धान्य, लता, कपास और शालूक (कुमुदकन्द) का स्वामी मिथुन राशि है।

वराहसंहितायां तु

मिथुनेऽपि धान्यशारदवल्लीशालूककार्पासाः ।

धान्य, शारदीय लता, शालूक (कुमुदकन्द) और कपास का स्वामी मिथुन राशि है।

यवनेश्वरस्तु

पुंस्त्रीरतिद्यूतविहारशिल्पगन्धर्वगीतस्मितवादितानि ।
व्यामचित्रायुधलेख्यपांशुसंवादसम्मन्त्रितपुस्तकानि ॥

द्वन्द्वार्थयोगो मिथुनौषधादिज्ञानोपदेशव्यवहारधीराः ।
नैपुण्यवैकारिकदम्भजीवा राशेस्तृतीयस्य नटाः सधूर्त्ताः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुष, स्त्री, रति, द्यूत, विहार, शिल्प, गन्धर्व, गीत, स्मित (साभिप्राय हँसना), वादित (वाद्य), व्यायाम, चित्र, आयुध (अस्त्र), लेख, पांशु (धूलि), संवाद, मन्त्रित (दीक्षित), पुस्तक, द्वन्द्व (स्त्री-पुरुष का जोड़ा), धनयोग, मिथुन, औषध आदि के जानकार तथा उसके उपदेश-व्यवहार में निपुण, निपुणता, वैकारिक दम्भ वाले जीव, नट और धूर्तों का स्वामी मिथुन राशि है।

काश्यपः

कर्कटे फलदूर्वादि कोद्रवः कदली तथा।

फल, दूर्वा आदि, कोदो (कुत्सित धान्य), केला— इन सबों का स्वामी कर्क राशि है।

वराहसंहितायां तु

कर्किणि कोद्रवकदलीदूर्वाफलकन्दपत्रचोचानि।

कोदो, केला, दूर्वा, सभी फल, कन्द (शकरकन्द आदि), पत्र (सुगन्धपत्र) एवं चोच (नारियल) का स्वामी कर्क राशि है।

यवनेश्वरस्तु

नारीतरस्विश्रुतवृद्धिविप्राः सरांसि वाप्यः कुमुदोत्पलानि।
द्रव्याणि शीतानि मृदुद्रवाणि स्वादूनि सञ्जीवनहर्षणानि।
नक्राः समण्डूककुलीरकूर्माः शाकानि पुष्पाणि च वारिजानि।
फेनाः सकुन्ताः जलजीविनश्च राशेश्चतुर्थस्य परिग्रहाः स्युः।

नारी, तरस्वी ('तरस्वी त्वरिते नेगी' इत्यमरः = शीघ्रता करने वाला), वेद, वृद्धि, ब्राह्मण, सरोवर, वापी (कूप), कुमुदपुष्प, कमलपुष्प, शीतल वस्तु, कोमल वस्तु, द्रवपदार्थ, स्वादयुक्त, सञ्जीवन, हर्षण, नक्र (घड़ियाल), मण्डूक (भेक), वृश्चिक, कूर्म, सभी शाक और जलोत्पन्न पुष्प, फेन, भाला (अस्त्र) ('प्रासस्तु कुन्तः' इत्यमरः) और सभी जलजीवी— ये सब कर्क राशि के परिग्रह हैं।

काश्यपः

सिंहे धान्यं सर्वरसाः सिंहादीनां त्वचो गुडः।

धान्य, सभी रस, सिंह आदि प्राणी, त्वचा (चमड़ा) और गुड़ सिंह राशि के परिग्रह हैं।

वराहसंहितयोस्तु

सिंहे तुषधान्यरसाः सिंहादीनां त्वचः सगुडाः।

भूसी वाले धान्य, मधुर आदि रस, सिंह आदि प्राणी, त्वचा और गुड़ सिंह राशि के द्रव्यादि हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यवनेश्वरस्तु

शैलाटवीशृङ्गविषास्थिकाष्ठत्वग्मांसरोमाजिनतान्तवानाम् ।
आरण्यजानां नखदन्तिशृङ्गिकुरङ्गरूक्षोक्षुरसौषधीनाम् ॥
व्याधेष्टकृद्विप्रनृमुख्यभूभृन्मूर्च्छाग्निशस्त्रौर्णिककाञ्चनानाम् ।
ऋत्विग्भिषङ्मन्त्रभृदुद्धतानां सिंहो निरुक्तो विभुरोजसां च ॥

पर्वत, जङ्गल, शृङ्ग, विष, हड्डी, काष्ठ, त्वचा, मांस, रोम, अजिन (मृगादि के चमड़े), तान्त, जंगली जीव एवं वस्तु, नख (नख वाले प्राणी), दन्ती (हाथी), शृङ्गि (सींग वाले प्राणी— भैंस आदि), कुरङ्ग (हिरण), रूक्ष (रूखा अर्थात् भयङ्कर प्राणी), बैल, रस, औषधि, व्याधा, इष्टिकृत् (पुत्रेष्टि यज्ञ करने वाले), ब्राह्मण, प्रधान, राजा, मूर्च्छा, अग्नि, शस्त्र, ऊर्णा वस्त्र, सुवर्ण, ऋत्विक, वैद्य, मन्त्र जानने वाला, उद्धत, बलशाली— इन सबों का स्वामी सिंह राशि है।

काश्यपः

कन्या कुलत्थमुद्गानां नीवाराणं कलायकम्।

कुलथी, मुद्ग, नीवार (कोदो) और उड़द का स्वामी कन्या राशि है।

वराहसंहितयोस्तु

षष्ठेऽतसीकलायाः कुलत्थगोधूमनिष्पावाः ।

अतसी (तीसी), कलाय (उड़द), कुलथी, गेहूँ और निष्पाव (शालिधान्य या शिम्बि धान्य) का स्वामी कन्या है।

यवनेश्वरस्तु

कन्यारतिप्रायिकसङ्गताग्निवनप्रलम्बिद्रवभूमिभूपाः ।
मुखेषु रागाञ्जनगात्रभूषाः स्त्रीक्रीडनादर्शसमुद्भवानि ॥
प्रदीपिकानौगिरिकोत्तरीयस्त्रीशिल्पकाव्यश्रुतिपार्थलेख्याः ।
विरागवासोमणिगन्धधूपाः संस्थानगीतादिकलाश्च षष्ठे ॥

कन्या, रतिप्रायिक संगत (कामक्रीड़ा), अग्नि, वन, प्रलम्बि (गले में लटकने वाला आभूषण या माला), द्रव, भूमि, राजा, मुँह में लगाने वाले रागादि, अञ्जन, शरीर के आभूषण, स्त्री-क्रीडा से सम्बन्धित आभूषणादि, दीप, नाव, गिरिका (छोटी चुहिया), उत्तरीय वस्त्र, शिल्प, काव्य, वेद, पार्थ (अर्जुन वृक्ष) लेख, विराग वास (विशिष्ट अनुरागयुत घर), मणि, गन्धयुत वस्तु, धूप, संस्थान, गीतादि कला— इन सबों का स्वामी कन्या है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काश्यपः

तुले तु यवगोधूममाषाः सिद्धार्थकास्तथा।

जौ, गेहूँ, माष (उड़द), सफेद सरसों का स्वामी तुला है।

वराहसंहितायाम्

सप्तमराशौ माषा यवगोधूमाश्च सर्षपाश्चैव।

माष (मसूर, उड़द आदि), जौ, गेहूँ, और सरसों का स्वामी तुला है।

यवनेश्वरस्तु

तुलादिमानापणपाथवीथीहिरण्यरत्नाम्बरमौक्तिकानाम् ।
उद्घोषकोद्देशिकसार्थमुख्यहारादिनैर्याणिकसूतिकानाम् ॥

विवादधूर्त्तानृतदम्भजीवपौण्याध्वकर्त्तृश्रुतिपण्डितानाम् ।
षाड्गुण्यसेवादिकचातुराणां तुलाधरः सम्पठितोऽधिकारे ॥

तुलादि मान ('तुलं पलशतम्' इत्यमरः), दुकान, पाथ (जल), वीथी (पंक्ति = कतार), सुवर्ण, रत्न, वस्त्र, मोती, उद्घोष करने वाला, उद्देशिक, सार्थी, मुख्य हार आदि, नैर्याणिक, सूतिका, विवाद, धूर्त्त, असत्य, दम्भी जीव, पुण्य करने वाला, मार्ग बनाने वाला, वेद, पण्डित, षड्गुणी, सेवा आदि कर्म में चतुर— इन सबों का स्वामी तुला राशि है।

विशेष– सन्धि, विग्रह (अवकार), यान (चढ़ाई), आसन (तटस्थ), संश्रय (आश्रय) और द्वैधीभाव (अपने सैन्यबल को दो भाग में बाँटना)— ये षड्गुण हैं।

काश्यपः

वृश्चिकेक्षुरसं सैक्यमाजं लोहं सकांस्यकम्।

ईख का रस, सैक्य (लताफल), आज (छाग), लोहा और काँसा का स्वामी वृश्चिक है।

वराहसंहितायां तु

अष्टमराशाविक्षुः सैन्यं लोहाद्यजाविकं चापि।

ईख (गन्ना), लता का फल, लोहा आदि धातु, छाग तथा भेड़सम्बन्धी जन्तुओं का स्वामी वृश्चिक है।

यवनेश्वरस्तु

श्वित्राग्निवल्मीकविषाग्निशस्त्रप्रणष्टदष्टक्षतजाहतानि ।
सरीसृपावृश्चिकचक्रगोधासर्पादयो नक्तविहारिणोऽन्ये ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विहारिपापौपहतप्रदुष्टदीनार्त्तभग्नास्त्रविगर्हितानि ।
मांसोत्करावस्थितगुह्यभाण्डसाङ्गायुधास्त्रादि च वृश्चिके तु ॥

शिवत्र (कुष्ठरोग), अग्नि, वल्मीक, विष, आग्नेयास्त्र, प्रणष्ट, दष्ट (डँसा हुआ), क्षतज, आहत, सरीसृप (सर्प), विच्छू, चक्र-गोधा आदि सर्प, रात में विचरण करने वाले जीव, विहारजन्य पाप से पीड़ित, अत्यन्त दुष्ट, दीन, आर्त्त, भग्न, अस्त्र, निन्दित, मांस, उत्कर (ढ़ेरी) पर स्थित, गुह्य (गुप्तेन्द्रिय), भाण्ड (वर्त्तन), सभी प्रकार के अस्त्र— इन सबों का स्वामी वृश्चिक है।

काश्यपः

धान्यं धनुषि वस्त्राणि लवणास्तुरगास्तथा ।

धान्य, वस्त्र, नमक, घोड़ा— इन सबों का स्वामी धनु है।

वराहसंहितायां तु

नवमे तु तुरगलवणाम्बरास्त्रतिलधान्यमूलानि ।

घोड़ा, नमक, वस्त्र, अस्त्र, तिल और धान्य आदि का स्वामी धनु है।

यवनेश्वरस्तु

हयद्विपाः शाकुनचक्रवाकवर्मास्त्रयोधायुधयन्त्रशाणाः ।
वेदाङ्गमन्त्रक्रतुहव्यभाण्डवेदान्तिकाचार्यमुनिक्रियाश्च ॥
ज्ञानोपदेशागमवाग्वरिष्ठकाव्यस्मृतिव्याकृतिमङ्गलार्थाः ।
राष्ट्राण्यमात्यापुरमन्त्रिपौराः सुगन्धिनो यच्च सुगन्धि सत्त्वम् ।

घोड़ा, हाथी, शाकुन (पक्षी या चिड़ीमार या शकुन के जानकार), चक्रवाक (चकवा) पक्षी, वर्मास्त्र (कवच), योद्धा, आयुध (अस्त्र), यन्त्रशाण (अस्त्रविशेष), वेदाङ्ग, मन्त्र, यज्ञ, हवन के वर्त्तन, वेदान्तिकाचार्य, मुनिक्रिया, ज्ञान, उपदेश, आगम, वाग्वरिष्ठ (उत्तम वक्ता), काव्य, स्मृति के जानकार, मङ्गलकार्य, देश, मन्त्री, पुर, नगरवासी एवं सुगन्धयुक्त वस्तुओं का स्वामी धनु है।

काश्यपः

मकरे शस्यसीसे च सुवर्णगुडधातवः ।

धान्य, सीसा, सुवर्ण, गुड़ और धातुओं का स्वामी मकर राशि है।

वराहसंहितायां तु

मकरे तरुगुल्माद्यं सैक्येक्षुसुवर्णकृष्णलोहानि ।

वृक्ष, गुल्म (सामयिक वृक्ष), आदि (लता-वल्ली), सैक्य (लता फल), ईख (गन्ना), सुवर्ण, काला लोहा— इन सबों का स्वामी मकर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यवनेश्वरस्तु

**वन्या मृगा मन्त्रबलेक्षुपादानलद्विजाश्च क्रिमिशैवलाद्याः ।
दंष्ट्राविशिष्टा मकरादयोऽन्ये ससीसलोहायसधातुधान्याः ॥
कुशस्यधान्यानि सकाञ्चनानि वल्लीद्रुमादीनि च सेकजानि ।
वैराणि जीवा मृगपक्षिनिम्ना मृगाश्रये यच्च जलाधिवासे ॥**

जंगली मृग, मन्त्रबली, ईख, आहिताग्नि, क्रिमि, सेवार आदि (जलोत्पन्न वस्तु), दंष्ट्री (सूअर-सर्प आदि), मकर (घड़ियाल आदि), सीसा, लोहा, अयसपत्र, धातु, धान्य, कुत्सित धान्य (कोदो आदि), सुवर्ण, वल्ली, वृक्ष आदि, सेकपात्र (नाव से जल निकालने वाला पात्र), मनुष्य या पशु-पक्षी से वैर रखने वाले जीव (हिंसक), मृग, पक्षी, निम्न लोग या छोटे जीव, मृग पर आश्रित रहने वाले जीव तथा जल में रहने वाले जीवों का स्वामी मकर है।

काश्यपः

कुम्भे कुसुमचित्राणि हंसाश्च जलदोद्भवाः ।

सभी पुष्प, चित्रवस्तु, हंस और जलोत्पन्न वस्तुओं का स्वामी कुम्भ है।

वराहसंहितायां तु

कुम्भे सलिलजफलकुसुमरत्नचित्राणि हंसाश्च ।

जलोत्पन्न वस्तु, फल, पुष्प, रत्न, चित्रित वस्तु और हंसों का स्वामी कुम्भ है।

यवनेश्वरस्तु

**तडागकूपप्रतिरोधबन्धसम्प्रेक्ष्यचीनशलथलोहिताङ्गाः ।
कुशस्यलोहायसकृष्णमांसश्वपाकचौरान्तरबद्धवृद्धाः ॥
नपुंसकानौकृतिका जलोत्था विचित्रपुष्पाणि फलानि हंसाः ।
सुरासवाद्यम्बुचरा वकाद्या वटादयः कुम्भभृदाश्रयाः स्यु ॥**

तड़ाग, कूप, विरोध, बन्धन, सम्प्रेक्षण, चीन (कृष्णसार नामक मृग-विशेष), शिथिल और रक्त वर्ण वाली वस्तु, कुत्सित धान्य, लोहा, अयस् पत्र, काला वर्ण, मांस, श्वपाक (चाण्डाल), चोर, अन्तर्बद्ध, वृद्ध, नपुंसक, नाव या तत्सदृश, जलोत्पन्न वस्तु, नाना पुष्प, फल, हंस, सुरा, आसव आदि (मदिरा आदि), जलचर जीव, वक आदि पक्षी, वट आदि वृक्ष— ये सभी कुम्भ राशि के वर्गगत हैं।

काश्यपः

पद्ममुक्ताफलादीनां द्रव्याणां मीन ईश्वरः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पद्मराग, मुक्ताफल (रत्नविशेष) आदि रत्नों का स्वामी मीन है।

वराहसंहितयोस्तु

मीने कपालसम्भवरत्नान्यम्बूद्भवानि चित्राणि।
स्नेहाश्च नैकरूपा व्याख्याता मत्स्यजातं च॥

कपालसम्भव रत्न (मुक्ताफल), जलोत्पन्न अनेक वस्तु, (पाठान्तर से चित्राणि की जगह वज्राणि = वज्र है), अनेक प्रकार के तेल और मत्स्य से उत्पन्न मुक्ता आदि का स्वामी मीन है।

यवनेश्वरस्तु

गम्भीरतोयोदधितीर्थतीरनौपोतवाहास्तिमिमीनशङ्खाः ।
नारी सरोगा जलजोपजीवी स्नानाम्बरस्नेहसदर्पणानि॥

यज्ञा द्विजेष्ठा मणिशुक्तिरत्नप्रवालहेमादिविभूषणानि।
पुराणवेदव्रतनीतिधर्मद्रव्याणि मीनद्वयसंश्रयाणि॥

द्रव्याण्यनेकाकृतिलक्षणानि ग्राह्याणि राशिप्रभवैर्विकारैः।

अगाध जल, समुद्र, तीर्थ, तट, नाव, नाविक (नाव का नियामक), तिमि (मत्स्यविशेष), मछली, शंख, रुग्ण स्त्री, जल से जीविका चलाने वाले, स्नान, वस्त्र, तेल, दर्पण, यज्ञ, श्रेष्ठ ब्राह्मण, मणि, शुक्ति, रत्न, प्रवाल, सुवर्ण आदि आभूषण, पुराण, वेद, व्रत, नीति, धर्म आदि से सम्बन्धित द्रव्य, अनेक प्रकार के आकृति-लक्षण वाले द्रव्य आदि मीन राशि के वर्ग में हैं।

शान्तिः

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु राशेस्तदधिपस्योत्पातकर्त्तुश्च ग्रहस्य पूजाजपहोमादिका शान्तिः कर्त्तव्या।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्वल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे ऋक्षाद्यद्भुतावर्त्तः

इस आवर्त्त के उत्पातों की अनुक्त शान्ति के लिए पीड़ित राशि और उत्पात करने वाले ग्रहों की पूजा, जप, हवन आदि करना चाहिये।

॥ दिव्याश्रयः परिपूर्णः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्तरिक्षाश्रयः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ प्रतिसूर्याद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकप्रतिसूर्यलक्षणं वटकणिकायाम्

प्रतिसूर्यकः प्रशस्तो दिवसकृदनुवर्णसुप्रभास्निग्धः ।
वैडूर्यनिभः स्वच्छः क्षेमसुभिक्षाय शुक्लश्च ॥

सूर्य के समान (ऋतु के अनुसार) वर्ण वाला, निर्मल, वैदूर्य मणि के सदृश स्वच्छ और श्वेत वर्ण का प्रतिसूर्य (दूसरा सूर्य) दिखाई दे तो क्षेम और सुभिक्ष करता है ।

अथ रवेरुदगादिषु प्रतिसूर्यफलं वराहसंहितायाम्

दिवसकृतः प्रतिसूर्यो जलकृदुदग्दक्षिणे स्थितोऽनिलकृत् ।
उभयस्थः सलिलभयं नृपमुपरि निहन्त्यधो जनहा ॥

यदि सूर्यमण्डल की उत्तर दिशा में प्रतिसूर्य दिखाई दे तो वृष्टि होती है, दक्षिण में दिखाई दे तो वायु करता है । दोनों तरफ दिखाई दे तो जल का भय, ऊपर दिखाई दे तो राजा का और नीचे दिखाई दे तो लोगों का नाश करता है ।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

प्रतिसूर्यस्तूदग्जलकृत् दक्षिणेनान्ताद्वातकृत् । उभयस्थितो महावर्षाय, उपरि राजमृत्यवे, अधस्ताज्जनविनाशाय, उभयतो महाभयाय, सर्वतस्त्रिभुवनपीडावहो भवति ।

यदि सूर्यमण्डल की उत्तर दिशा में प्रतिसूर्य दिखाई दे तो वृष्टि, दक्षिण में वायु, दोनों तरफ में महान् वर्षा, ऊपर में राजा की मृत्यु, नीचे में लोगों का नाश, ऊपर और नीचे दोनों तरफ में महान् भय और चारो ओर दिखाई दे तो तीनों लोकों में पीड़ा होती है ।

पराशरस्तु

तथा प्रतिसूर्यकेषु रवेः पूर्वतो युवराजस्य राज्ञो वधाय । दक्षिणपूर्वतोऽग्निवृद्धये । दक्षिणतो विग्रहाय । प्रत्यग्दक्षिणतो दस्युविनाशाय । प्रत्यगवर्षदः । पश्चिमोत्तरतो वातवृष्टिदः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तरतोऽतिवृष्टिकरः पूर्वोत्तरतश्च। सन्ध्यायां बहवश्च दृश्येरन् क्रमाद्दिक्षु सकलनृपतिविनाशं कुमारवधं मरकभयं दस्युशस्यपीडामन्नक्षयं व्याधिशस्त्रकोपयजमानयाजकभयम्। पाखण्डिपीडां सप्रभे प्रतिसूर्ये। निष्प्रभे रवौ राष्ट्रवधं विद्यात्।

इस प्रकार प्रतिसूर्यों के दिखाई देने पर सूर्यमण्डल की पूर्व दिशा में दिखाई दे तो युवराज और राजा का वध, दक्षिण-पूर्व दिशा (अग्निकोण) में दिखाई दे तो अग्निकोप, दक्षिण में विग्रह (विरोध), पश्चिम-दक्षिण (नैर्ऋत्य कोण) में चोर का नाश, पश्चिम में वृष्टि, पश्चिमोत्तर (वायव्य कोण) में वायु और वर्षा, उत्तर दिशा और पूर्वोत्तर (ईशान कोण) में दिखाई दे तो अतिवृष्टि करता है। यदि सन्ध्या के समय में बहुत प्रतिसूर्य दिखाई दें तो पूर्वादि आठो दिशाओं में क्रमशः समस्त नृपति का विनाश, कुमार का वध, मरकभय, चोर और धान्यों को पीड़ा, अन्नों का क्षय, व्याधि और शस्त्रों का प्रकोप, यजमान और याजकों को भय होते हैं। यदि प्रतिसूर्य प्रभा (प्रकाश) युत हो तो पाखण्डियों को पीड़ा और प्रभाहीन हो तो राष्ट्र का वध जानना चाहिये।

वराहसंहितायाम्

उभयपार्श्वगतौ परिधी रवेः प्रचुरतोयकरौ वपुषान्वितौ।
अथ समस्तककुप्परिचारिणः परिधयस्तु कणोऽपि न वारिणः॥

यदि सूर्यमण्डल के दोनों पार्श्वों (दोनों तरफ) में परिधि (परिधिस्तु प्रतिसूर्यः) शरीरवान् (प्रभायुक्त) दिखाई दे तो प्रचुर वृष्टि होती है। यदि सूर्यमण्डल की सभी दिशाओं में विचरण करती हुई परिधि (प्रतिसूर्य) दिखाई दे तो जल का एक कण (बिन्दु) भी नहीं गिरता है अर्थात् अनावृष्टि होती है।

परिधिः प्रतिसूर्यः; तथा च वराहसंहितायाम्

'परिधेस्तु प्रतिसूर्यः' – इति प्रतिसूर्यानुवृत्तौ।

परिधि प्रतिसूर्यसंज्ञक है। सूर्योदय के बाद एक प्रहर तक तथा सूर्यास्त से पूर्व एक प्रहर तक जब एक छोटा मेघ का टुकड़ा आ जाता है, तब वह सूर्य की किरणों से चमकता हुआ द्वितीय सूर्य के समान लक्षित होता है। उसी को प्रतिसूर्य कहते हैं।

पराशरस्तु

परिधी उभयपार्श्वतः स्निग्धौ वर्षकरौ रूक्षौ विनाशनौ पृष्ठतो वा संग्रामाय। परिमण्डलाः कुम्भकुण्डाकृतयः प्रशस्ताः। विपरीता अन्ये शङ्खवैदूर्यपरिग्रहाः। स्निग्धाः प्रशस्ताः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन्निकृष्टाः प्रजाहिताय वर्षाय च पीते व्याधिभयं विद्यात्। ताम्रे शस्त्रकोपो भवति।

दीप्ताग्निवर्णः कनकप्रभो वा सन्ध्यासु चेद्भास्करमावृणोति। कम्पे तु भूः खात्प्रपतेन्महोल्का राजा विनश्येत्सहितः प्रजाभिः॥

विशेषः– दीप्ताग्निवर्णः कनकप्रभो वा प्रतिसूर्यो भास्करमावृणोति तिरस्कुरुत इत्यर्थः।

यदि सूर्यमण्डल के दोनों भागों में निर्मल परिधियाँ (प्रतिसूर्य) दिखाई दें तो वर्षा होती है, यदि रूक्ष हों तो विनाश होता है। यदि पृष्ठ भाग से दिखाई दे तो युद्ध होता है। यदि मण्डलाकार, कुम्भाकार या कुण्डाकार की परिधि दिखाई दे तो शुभ होता है तथा इससे विपरीत अशुभ फल देने वाली है। शंख और वैदूर्य की आकृतिक श्वेत और निर्मल हो तो शुभ, प्रजाहित और वर्षा होती है; अन्यथा अशुभ होता है। पीतवर्ण होने पर व्याधिभय और ताम्रवर्ण होने पर शस्त्रकोप होता है।

यदि प्रतिसूर्य प्रज्ज्वलित अग्नि और सुवर्ण के समान कान्तियुक्त होकर सन्ध्या के समय सूर्यमण्डल को घेर ले (तिरस्कृत करे) तो भूकम्प, आकाश से महान् उल्कापात और प्रजासहित राजा का नाश होता है।

वटकणिकायाम्

पीतो व्याधिं जनयत्यशोकरूपश्च शस्त्रकोपाय।
प्रतिसूर्याणां माला दस्युभयातङ्कतो नृपतिहन्त्री॥

पीत वर्ण का प्रतिसूर्य व्याधि करता है। अशोक पुष्प के सदृश लोहित वर्ण का प्रतिसूर्य शस्त्रकोप के लिये होता है। यदि प्रतिसूर्यों की माला दिखाई दे तो चोर का भय और उपद्रव तथा राजा का नाश होता है।

पराशरस्तु

सन्ध्यासमीपे यदि भास्करस्य दृश्येत माला प्रतिसूर्यकाणाम्।
सूर्ये भवेयुः प्रचुराश्च वैरा रोगाश्च घोरा विविधप्रकाराः॥

यदि सन्ध्याकाल के निकट में सूर्य के समीप में प्रतिसूर्यों की माला दिखाई दे तो पूर्वकथित सूर्य के वर्ग वाले लोगों में प्रचुर वैर, रोग तथा अनेक प्रकार के उपद्रव होते हैं।

शान्तिः

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु प्रतिसूर्योत्पातेषु सावित्री-मन्त्रकलशदशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस आवर्त्त में प्रतिसूर्यजनित उत्पातों की विशेष रूप से शान्तिविधि नहीं कही गयी है, उनकी शान्ति के लिए कलशस्थापनादिपूर्वक सावित्री मन्त्र का जप, हवन आदि अभया नामक शान्ति अथवा महाशान्ति औत्पातिक फल की गुरुता और लघुता को जानकर तदनुसार करनी चाहिये।

मयूरचित्रे

उदीयमाने सूर्ये च दृश्यते प्रतिसूर्यकः।
त्रीण्यब्दानि भवेत् त्रासो मासार्धेन न संशयः।
अत्र साधारणी शान्तिः कर्त्तव्या भूतिमिच्छता।

सूर्योदय के समय यदि प्रतिसूर्य दिखाई दे तो मासार्ध (१५ दिनों) से तीन वर्षों तक लोगों को त्रास (विविध भय) होता है, इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये। इसके शमन के लिए कल्याण की इच्छा वालों को साधारणी शान्ति करनी चाहिये।

फलपाकः

अनुक्तफलपाकसमयविशेषाणामन्तरिक्षाद्भुतानां षाण्मासिकः फलपाकः पराशरेणोक्तः।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे प्रतिसूर्याद्भुतावर्त्तः।

जिन अन्तरिक्षाद्भुतों का फलपाक-काल नहीं कहा गया है, उनका फलपाक-काल छः महीनों तक पराशर ने कहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ परिवेषाद्भुतावर्त्तः

तत्र परिवेषस्वरूपमाह पराशरः

अथ परिवेषा वाताभ्ररश्मिविकारसमुत्थाननं चन्द्रे सूर्ये वा सद्यः फलमादिशेदतः सप्तरात्राद्वा यावद्दर्शने भेदे ।

वायु, मेघ और सूर्य तथा चन्द्रमा के किरण के संयोगजन्य विकार से उत्पन्न सूर्य और चन्द्रबिम्ब के चारो ओर मण्डलाकार परिवेष दिखाई देते हैं। परिवेष के दृश्य होने पर सद्यः या सात रात तक शुभाशुभ फल का आदेश करना चाहिये ।

वराहसंहितायां तु

सम्मूर्च्छिता रवीन्द्वोः किरणाः पवनेन मण्डलीभूताः ।
नानावर्णाकृतयस्तन्वभ्रे व्योम्नि परिवेषाः ॥

अल्प मेघ वाले आकाश में सूर्य और चन्द्रमा के किरण वायु के द्वारा सम्मूर्च्छित (प्रतिबिम्बित) होकर अनेक वर्ण के मण्डलीभूत रूप में आकाश में परिवेष दिखाई देते हैं।

विशेषः– अत्र रवीन्द्वोरित्युपलक्षणम् । ग्रहाणां नक्षत्राणां चेति बोद्धव्यम् ।

तदुक्तं भार्गवीये

गृहीत्वा भूरजः सूक्ष्मवर्णं पांशुं नियम्य च ।
पीडामहनि योगेन मरुता मण्डलीकृतात् ॥
हिताहितार्थलोकानां ज्योतींष्युपरुणद्धि वै ।
नक्षत्रग्रहताराणां शशिनो दिनपस्य च ॥
निविष्टो भाव आगन्तुः परिवेष इति स्मृतः ।

वायु के द्वारा पृथ्वी की धूलियों से सूक्ष्म वर्ण-कण वाली धूलि को लेकर और ऊपर ले जाकर अरिष्टयोग से लोगों के हित तथा अहित की सूचना के लिए नक्षत्र, ग्रह, चन्द्र और सूर्य की किरणों को सम्मूर्च्छित करते हुए मण्डलीभूत रूप से आगन्तुकों के निविष्ट भाव से आकाश में परिवेष दिखाई देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रक्तवर्णादयः परिवेषा नव इन्द्रादिदिक्पालकृताः । तथा च वराहसंहितायाम्

ते रक्तनीलपाण्डुरकापोताभ्राभशवलहरितशुक्लाः ।
इन्द्रयमवरुणनैर्ऋतिश्वसनेशपितामहाग्निकृताः ॥

धनदः करोति मेचकमन्योन्यगुणाश्रयेण चाप्यन्ये ।

वे परिवेष इन्द्र, यम, वरुण, निर्ऋति, वायु, शिव, ब्रह्मा और अग्निकृत क्रम से रक्त, नील, थोड़ा श्वेत-सा, कबूतर के रङ्ग, मेघवर्ण, शवल (कृष्णश्वेत), हरे और श्वेत वर्ण के हैं। जैसे— इन्द्रकृत परिवेष रक्त वर्ण का, यमकृत नील, वरुणकृत थोड़ा-सा श्वेत, निर्ऋतिकृत कबूतर के रङ्ग, वायुकृत मेघवर्ण, शिवकृत शवलवर्ण, ब्रह्माकृत हरितवर्ण और अग्निकृत श्वेतवर्ण का होता है।

कुबेर मेचक (मयूरकण्ठसदृश नील) वर्ण का परिवेष करता है। अन्य (इन्द्र आदि) मिले हुए रङ्ग के परिवेष करते हैं।

भार्गवीये

अतः परं प्रवक्ष्यामि नक्षत्रेषु ग्रहेषु च ।
परिवेषान् बहुविधान् नानाविधफलोदयान् ॥

ऐन्द्रवारुणकौवेरान् रक्तपाण्डुरमेचकान् ।
पाण्डून् वभ्रूँश्च नीलाँश्चानलानिलयमात्मकान् ॥

प्राजापत्याँश्च रौद्राँश्च नैर्ऋत्याँश्चैव भार्गवान् ।
हरिच्छवलकापोतान् परिवेषानुवाच ह ॥

नवैते परिवेषाणां वर्णा दैवतयोनयः ।
बहुत्वमेते गच्छन्ति अन्योन्यगुणसंश्रयात् ॥

इसके अनन्तर मैं नक्षत्रों और ग्रहों में अनेक प्रकार के फलों को देने वाले विभिन्न परिवेषों को कहता हूँ— रक्त, पाण्डु और मेचक (मयूरकण्ठ के सदृश नील) वर्ण वाले परिवेष क्रमशः इन्द्र, वरुण और कुबेरकृत होते हैं। पाण्डु (थोड़ा श्वेत-सा), बभ्रु (भूरा) और नील वर्ण वाले परिवेष क्रमशः अग्नि, वायु और यमकृत हैं। हरित, शवल (कृष्ण-श्वेत) और कबूतर के वर्ण वाले परिवेष क्रमशः प्रजापति (ब्रह्मा), रुद्र और नैर्ऋति तथा भार्गवकृत होते हैं। इन नौ प्रकार के परिवेषों की वर्ण दैवतयोनि (स्व-स्वदेवता के अनुसार वर्ण) होती है। एक-दूसरे या बहुत देवताओं से उत्पन्न परिवेषों के वर्ण मिले हुए वर्ण के (अनेक प्रकार के) होते हैं।

विशेषः– 'एवं ते सर्व एव स्निग्धाः शुभावहा भवन्ति ।' अर्थात् निर्मल वर्ण वाले सभी परिवेष शुभ फल देने वाले होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च काश्यपः

सितपीतेन्द्रनीलाभा रक्ताः कापोतबभ्रवः ।
शवलाग्निमेचकाः स्निग्धा विज्ञेयास्ते शुभावहाः ॥

श्वेत, पीत, इन्द्रनील, रक्त, कबूतर, भूरा, शवल (कृष्णश्वेत), अग्नि और मेचक (मयूरकण्ठ के समान) वर्ण वाले सभी परिवेष निर्मल हों तो शुभकारक होते हैं ।

अथाऽपरोऽपि वायुकृतः परिवेषो वराहसंहितायामुक्तो यथा

प्रविलीयते मुहुर्मुहुरल्पफलः सोऽपि वायुकृतः ॥

जो परिवेष बार-बार उत्पन्न होकर नष्ट हो जाय, वह वायुकृत परिवेष थोड़ा फल देने वाला होता है ।

भार्गवीये तु

धूमकर्पूरमाञ्जिष्ठरक्तपीतासिताकृतिः ।
भवत्येकतरे पार्श्वे रूपेणाखिलमण्डलः ॥

तनुना वाऽभ्रजालेन समन्तात् परिवारितः ।
मुहुर्मुहुश्च विलयं सन्धानं वाऽपि गच्छति ॥

सोऽपि वायुकृतो ज्ञेयो मृदुमन्ददिवाकरः ।
परिवेषोऽल्पफलदो वातवृष्ट्युपबृंहितः ॥

अथ चेद्वातवृष्टिस्तु त्रिरात्रान्नोपजायते ।
ज्वलज्ज्वलनचौराणां प्रादुर्भावः प्रजायते ॥

धूम, कर्पूर, मजीठ, रक्त, पीत, श्वेत और कृष्ण वर्ण वाले, अखण्ड मण्डलाकार एक पार्श्व (दिशा) में दिखाई देने वाले, बार-बार उत्पन्न होकर नष्ट होने वाले, मेघसमूहों से घिरे हुए सूर्य के चारो ओर भी वायुकृत परिवेष होते हैं, वे मन्द फल देते हैं । वायु और वृष्टि से युक्त परिवेष अल्प फल देते हैं । यदि परिवेष देखने के बांद तीन रातों तक वायु और वर्षा नहीं हो तो अग्निदाह और चोरों का भय उत्पन्न होता है ।

अथ वर्णफलं वटकणिकायाम्

स्निग्धो मधुघृतशिखिचाषपत्रनीलाब्जरत्ननिभः ।
क्षेमसुभिक्षाय भवेत् परिवेषोऽर्कस्य शशिनो वा ॥

यदि सूर्य अथवा चन्द्रमा के परिवेष का वर्ण मधु, घृत, मयूर, चाषपत्र (नीलकण्ठ के पंख), नीलकमल और नीलमणि के समान होकर निर्मल हो तो क्षेम और सुभिक्ष करता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां च

वर्णेनैकेन यदा बहलः स्निग्धः क्षुराभ्रसङ्कीर्णः ।
स्वर्त्तौ सद्यो वर्षं करोति पीतश्च दीप्तार्कः ॥

विशेषः– क्षुरः कोकिलाक्षपुष्पं तद्वर्णमभ्रं क्षुराभ्रम् । मध्यदिने तु शस्त्रोत्पाताय वर्षाय वा ।

एक वर्ण वाला, अधिक निर्मल और अस्तुरे के समान (या कोकिलाक्षपुष्प के समान वर्ण वाले) मेघों से व्याप्त परिवेष अपने ऋतु (वर्षा ऋतु) में दिखाई दे तो शीघ्र वृष्टि होती है। यदि पीत वर्ण का परिवेष हो और उस समय सूर्य की किरणें तीक्ष्ण हों तो भी वृष्टि शीघ्र होती है।

भार्गवीये

मयूरगलशङ्खेन्दुमुक्तागोक्षुरपाण्डुराः ।
मधूकघृतमण्डाभा दूर्वाश्यामाश्च वृष्टये ॥

मयूर की गर्दन के समान वर्ण, शङ्ख, चन्द्र, मोती, गाय, क्षुर (कोकिलाक्षपुष्प के समान वर्ण), पाण्डु, मधु, घृतमण्ड और दूर्वा के समान वर्ण वाले परिवेष वृष्टिकारक होते हैं।

पराशरः

अखण्डा विकृता सद्योजाः श्वेताः स्निग्धाश्च नताः परिवेषाः सद्यो वर्षाय वा ।

अखण्ड, अविकृत, सद्यः उत्पन्न होकर नष्ट होने वाले, श्वेत वर्ण वाले और नत (लटकते हुए) परिवेष सद्यः वर्षा करते हैं।

वराहसंहितायां तु

शिखिगलसमेऽतिवर्षं बहुवर्णे नृपवधो भयं धूम्रे ।
हरिचापनिभे युद्धान्यशोककुसुमप्रभे वाऽपि ॥

मयूर के कण्ठ के समान वर्ण (नील वर्ण) का परिवेष अतिवृष्टि, अनेक वर्ण का परिवेष राजा का वध, धूम्र वर्ण का भय एवं इन्द्रधनुष की तरह अथवा अशोकपुष्प की तरह अति लोहित वर्ण परिवेष युद्ध कराता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

बहुवर्णे परिवेषे प्रजापीडा स्यात् । विवर्णा एवार्धचन्द्राकृतयो बहिर्ज्योतिष्मत्यः सेनावधाय ।

यदि अनेक वर्ण का परिवेष हो तो प्रजाओं को पीड़ा होती है, विवर्ण अर्धचन्द्राकार और बाहर से प्रकाशयुक्त परिवेष हो तो सेनाओं का वध होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भार्गवीये

रक्ते पीते सिते ताम्रे कृष्णेऽथ हरितेऽरुणे।
क्षुच्छस्त्रव्याधिवर्षाग्निमृत्युशस्त्रानिलाय च॥
वर्णानां तु भयं ज्ञेयं यथावर्णपरिग्रहः।
कपोतः सबलश्चापि तिर्यग्योनौ व्यवस्थितौ॥

रक्त, पीत, श्वेत, ताम्र, कृष्ण, हरित और अरुण वर्ण वाले परिवेष क्षुधाभय, शस्त्रभय, व्याधि, वर्षा, अग्निभय, मृत्यु, युद्ध और वायु का भय उत्पन्न करते हैं। उक्त वर्ण वाले परिवेष अपने वर्ग के लोगों को भय देते हैं। कबूतर वर्ण और शबल वर्ण (कृष्ण-श्वेत) वाले परिवेष पक्षियों का नाश करते हैं।

मौशले वृष्णिवंशक्षयनिमित्तम्

परिवेषाश्च दृश्यन्ते दारुणाश्चन्द्रसूर्ययोः।
त्रिवर्णाः श्यामरूक्षान्तास्तथा भस्मारुणप्रभाः॥

महाभारत के मुशलपर्व में यदुवंशियों के क्षय के निमित्त कहा गया है कि उक्त समय में चन्द्र और सूर्यों में भयङ्कर परिवेष दिखाई दिये, वे परिवेष तीनों वर्णों (श्वेत, रक्त और पीत) के साथ श्याम वर्ण वाले, भस्म और अरुण वर्ण की कान्ति वाले एवं रूक्ष थे।

पराशरस्तु

धूम्रवर्णोऽग्निवर्णो वाऽग्निभयाय। अतिमात्रं रक्तः शस्त्राय। पीतो व्याधये। कृष्णो विरुद्धानामन्योन्य-वधाय वर्षाय च। परुषोऽन्योन्यवधायैव। नील उपायतो बलस्यैकदेशोपघाताय। लोहितश्चौराणाम्। कपिलो ब्राह्मणानाम्। पीतवर्णः सन्धानाय। पाण्डुरो निःश्रेयसे। समवायेषु तु द्वादशसु कालकालपरुषपरुष-हरितहरितनीलनीलताम्रताम्रकपिलकपिलारुणारुणरक्तरक्त-शुक्लशुक्लपीतपीतपाण्डुकृष्णेषु द्वयोर्वर्णयोः पूर्वः पूर्वो वर्णो गरीयान्। अभ्यन्तरोऽभ्यन्तराणां बहिर्बाह्यानां त्रीणि चेन्मण्डलानि स्युरन्तर्लोहितं मध्ये पीतं बहिः श्वेतं स्यात् बाह्यस्य राज्ञो जयाय अभ्यन्तरस्य च वधाय। विपर्यये विपरीतम्। अभ्यन्तरतः कुलीनमेवाभिषिञ्चति। अन्तः पीतके रक्तमध्ये बहिः श्वेते – इति।

धूम्र वर्ण अथवा अग्नि के सदृश वर्ण का परिवेष अग्निभय के लिए, अतिमात्र (अत्यन्त) लोहित वर्ण का युद्ध के लिए, पीत वर्ण का व्याधि के लिए, काला वर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परस्पर विरोधियों के वध और वर्षा के लिए, लोहित (रक्त) वर्ण का चौर के लिए, कपिल वर्ण ब्राह्मणों के लिए, पीत वर्ण धनी के लिए और पाण्डु वर्ण पापी के लिए होता है।

समवाय सम्बन्ध वाले बारह प्रकार के दो-दो वर्ण वाले परिवेषों में पूर्व-पूर्व वर्ण का फल ही अधिक होता है। इन वर्णों में काल (काल के समान भयङ्कर), काल-परुष, परुष-हरित, हरित-नील, नील-ताम्र, ताम्र-कपिल, कपिल-अरुण, अरुण-रक्त, रक्त-शुक्ल, श्वेत-पीत, पीत-पाण्डु और कृष्ण हैं। अर्थात् जिस परिवेष में दो वर्ण दिखाई दें, उसमें पहला वर्ण ही फल देता है। वर्णफल उपर्युक्त हैं।

यदि परिवेष में तीन मण्डल (तीन रेखा) दिखाई दें तो भीतर का मण्डल (रेखा) का फल आभ्यन्तर (नागर) वासियों एवं राजाओं को तथा बाहर के मण्डल के शुभाशुभ वर्ण के अनुसार बाह्य (आक्रमणकारी) राजा को फल होता है। यदि आभ्यन्तर मण्डल लोहित (अतिरक्त), मध्य का मण्डल पीला वर्ण और बाहर का मण्डल श्वेत वर्ण का हो तो बाहरी (यायी) राजा की जय और नागर राजा का वध होता है। इससे विलोम क्रम में परिवेष के मण्डलों के वर्ण दिखाई दें तो उक्त के विपरीत फल जानना चाहिये अर्थात् अन्तः श्वेत, मध्य पीत और बहिर्मण्डल का वर्ण लोहित हो तो यायी राजा का वध और स्थायी राजा की जय होती है। यदि सबसे भीतर का मण्डल पीला, मध्यमण्डल रक्त और बहिर्मण्डल श्वेत हो तो पुरवासियों में कुलीनों को ही पुष्ट करता है।

भार्गवीये

यायिनां स्थावराणां च तथैवाक्रन्दसारिणाम्।
परिवेषाद्विजानीयाद्बाह्याभ्यन्तरमध्यतः ॥

परिवेष के बाहर, आभ्यन्तर और मध्यमण्डल के वर्ण आदि शुभाशुभत्व के अनुसार यायी (आक्रमणकारी राजा), स्थायी (नागर राजा) और आक्रन्दसारियों ('आक्रन्दो दारुणे रणे' इत्यमरः। भयङ्कर युद्ध) की सार वस्तुओं (सेनाओं) का शुभाशुभ फल जानना चाहिये। अर्थात् परिवेष के बाहर का मण्डल (रेखा) यायियों के लिए, आभ्यन्तर का मण्डल स्थावरों (स्थायियों) के लिए और मध्य की रेखा आक्रन्दसारियों (सेनाओं) के लिए फलाफल-दायिका होती हैं।

वराहसंहितायां च

नागरकाणामभ्यन्तरस्थितानां यायिनां च बाह्यस्था।
परिवेषमध्यरेखा विज्ञेयाऽऽक्रन्दसाराणाम्॥

रक्तः श्यामो रूक्षश्च भवति येषां पराजयस्तेषाम्।
स्निग्धः श्वेतो द्युतिमान् येषां भागो जयस्तेषाम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिवेष के अन्दर की रेखा नगरवासियों का, बाहर दिखाई देने वाली रेखा गमन करने वाले विजयेच्छु राजाओं का और मध्य की रेखा आक्रन्दसारियों (सेनाओं) का शुभाशुभ करने वाली होती है। जिसके भाग में लाल, काला या रूक्ष वर्ण का परिवेष दिखाई दे तो उसकी पराजय होती है तथा जिसके भाग का परिवेष निर्मल, श्वेत और कान्तिमान दिखाई दे, उसकी विजय होती है।

भार्गवीये तु

सरक्तः श्यामकलुषो येषां भागो हतप्रभः।
तेषां पराजयं विद्यात् स्निग्धे तेषां च वै जयः॥

येन येनात्र वर्णेन यो यो भागोऽनुरज्यते।
तत्र तेषां फलं विन्द्याद्भक्त्यादिषु प्रकीर्त्तितम्॥

जिनके भाग का परिवेष रक्त, काला, कलुष या कान्तिरहित हो, उनकी पराजय होती है तथा जिनके भाग का परिवेष निर्मल हो, उनकी जय होती है।

जिन-जिन वर्णों से परिवेष का जो-जो भाग अनुरञ्जित हो तो ग्रहभक्ति आदि में कथित उनके परिग्रहों का तदनुसार ही फल जानना चाहिये।

अथ शुभसूचकपरिवेषलक्षणम्। वराहसंहितायाम्

चाषशिखिरजततैलक्षीरजलाभः स्वकालसम्भूतः।
अविकलवृत्तः स्निग्धः परिवेषः शिवसुभिक्षकरः॥

यदि नीलकण्ठ, मयूर, चाँदी, तैल, घृत, दुग्ध या जल की कान्ति वाला स्वऋतु में उत्पन्न (ऋतुवर्णयुत), अखण्डमण्डलाकार और निर्मल परिवेष दिखाई दे तो कल्याण और सुभिक्ष करता है।

अथाशुभपरिवेषलक्षणम्। भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

परिवेषस्तथा घोरः चन्द्रभास्करयोरभूत्।
वेदयानो भयं [1]घोरः राज्ञां देहावकर्त्तनम्॥

कुरु और पाण्डवयुद्ध के समय चन्द्रमा और सूर्य के भयानक परिवेष दारुण भय और राजाओं के देहनाश की पूर्वसूचना के रूप में दिखाई दिये।

तथा च वराहसंहितायाम्

सकलगगनानुचारी नैकाभः क्षतजसन्निभो रूक्षः।
असकलशकटशरासनशृङ्गाटकवत् स्थितः पापः॥

---

१. घोरो भयानकः पापफल इत्यर्थः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्पूर्ण आकाश में विचरण करने वाला (उदय से अस्त तक स्थिर रहने वाला), अनेक वर्ण वाला, रक्त वर्ण वाला, रूक्ष, अखण्डित तथा गाड़ी, धनुष या शृंगाटक (त्रिभुज) की तरह आकृति वाला परिवेष अशुभ फल देने वाला होता है।

वटकणिकायाम्

शृङ्गाटकचापोरगशकटनिभः परुषमूर्त्तिरतिबहुलः ।
सकलगगनानुचारी बहुवर्णश्चानुबन्धी च ॥
द्वित्रिगुणः खण्डो वा त्रिसन्ध्यमभ्युच्छ्रितो ग्रहच्छादी ।
परिवेषः पापफलो ग्रहरोधी हन्ति तद्भक्तान् ॥

शृंगाटक (त्रिभुज), धनुष, सर्प या गाड़ी की तरह आकृति वाला, अत्यधिक रूक्ष मूर्त्ति वाला, सम्पूर्ण आकाश में गमन करने वाला, बहुत वर्ण वाला, ग्रह को घेरने वाला, दो रेखा वाला या तीन रेखा वाला या खण्डित, तीनों सन्ध्या (प्रातः, मध्याह्न या सायं) में अधिक उन्नत दिखाई देने वाला, ग्रह को ढकने वाला परिवेष पापफल (अशुभ) देता है तथा जिस ग्रह का परिवेष होता है, उसके परिग्रहों का नाश करता है।

भार्गवीये

तापतीक्ष्णार्ककिरणे प्रसन्नाम्बरमण्डले ।
लोहिताख्ये क्षुरभ्रान्ते सरश्मौ पीतमण्डले ॥
अप्रकाशाद्दिनपतेरानक्षत्रानुगामिनि ।
सान्द्राभतारस्तनिते परिवेषे प्रकाशिनि ॥
अनृतावपि[1] जानीयान्महद्भयमुपस्थितम् ।
कृष्णनीहारतिमिरैः सम्प्रत्याक्रान्तमण्डले ।
विकारैर्नाभसैः कीर्णैः स्फुलिङ्गोपचितेऽशुभे ॥
विषमे विगतस्नेहे विध्वस्तकलुषाद्भुते ।
त्रिषु सन्धिषु भूयिष्ठे दर्शनं चोपगच्छति ॥
द्वित्रिनक्षत्रगे वाऽपि नक्षत्रार्धगतेऽपि च ।
प्रदीप्तैर्वा रसद्भिश्च वीक्षमाणैर्मृगद्विजैः ॥
परिवेषं विजानीयान्नृपोत्थानमुपस्थितम् ।
सप्तरात्राद्भयं घोरं चौरशस्त्राग्निमृत्युभिः ॥

---

१. 'अपि'शब्दः समुच्चये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि ताप और तीक्ष्ण सूर्य-किरणयुक्त निर्मल आकाशमण्डल में लोहित नामक क्षुराकार रश्मियुत पीत मण्डल वाला परिवेष हो या प्रकाशहीन सूर्य-मण्डल के होने से नक्षत्रानुगामी सघन और उच्च शब्दायमान प्रकाशयुक्त परिवेष हो तो महान् भय होता है। यदि कृष्ण वर्ण वाले नीहारों के अन्धकार से परिमण्डल आक्रान्त (व्याप्त) हो या नाभस विकारों से युक्त हो या स्फुलिङ्ग (अग्निकण) से युक्त हो या विषम, रूक्ष, प्रकाशहीन हो तो अशुभ होता है। यदि तीनों सन्ध्या (प्रातः, मध्याह्न और सायं) कालों में परिवेष का दर्शन हो, यदि दो नक्षत्रों में या आधा नक्षत्र में परिवेष स्थित हो, परिवेष को मृग (पशु) और पक्षीगण प्रदीप्त (परिवेषाभिमुख) होकर देखते हों तो सात रातों के अन्दर राजा का नाश, चौर, शस्त्र, अग्निप्रकोप और मृत्यु आदि का दारुण भय होता है।

अरण्यकाण्डे खरवधनिमित्तम्

श्यामं च रक्तपर्यन्तं बभूव परिवेषणम्।
अलातचक्रप्रतिमं परिगृह्य दिवाकरम्॥

खर नामक राक्षस के वध के समय काला और लाल वर्ण वाला परिवेष सूर्य के चारो ओर दिखाई दिया। उस समय ऐसा लगता था, जैसे अलात ('अलातमुल्मुकम्'— इत्यमरः = अङ्गार) चक्र (अङ्गारचक्र) ने सूर्य को घेर लिया है।

हरिवंशमत्स्यपुराणपद्मपुराणेषु हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्। सूर्य इत्यनुवृत्तौ।

गगनस्थश्च भगवान् सततं परिविष्यते।

विशेषः– गगनस्थो दशमस्थो मध्याह्न इत्यर्थः।

हिरण्यकशिपु के वध के समय हमेशा मध्याह्न के समय भगवान् सूर्य का परिवेष होता था।

वराहसंहितायाम्

प्रतिदिवसमहिमकिरणः परिवेषी सन्ध्ययोर्द्वयोरथ वा।
रक्तोऽस्तमेति रक्तोदितश्च भूयः करोत्यन्नम्॥

प्रत्येक दिन दोनों सन्ध्यासमय में सूर्य का परिवेष दिखाई दे अथवा लाल वर्ण वाले परिवेषी सूर्य का अस्त हो तथा पुनः लाल वर्ण वाले परिवेष के साथ सूर्योदय हो तो अन्न उत्पन्न होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

उदयास्तमने भानोः चन्द्रस्य च यदा भवेत्।
परिवेषस्तदा राजा क्षिप्रमेव विनश्यति॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सूर्य और चन्द्र के उदय तथा अस्त के समय परिवेष दिखाई दे तो शीघ्र ही राजा की मृत्यु होती है।

वराहसंहितायाम्

प्रतिदिनमर्कहिमांश्वोरहर्निशं रक्तयोर्नरेन्द्रवधः।
परिविष्टयोरभीक्ष्णं लग्नास्तमयोर्भयं तद्वत्॥

यदि प्रतिदिन सूर्य का और प्रत्येक रात्रि चन्द्र का रक्त वर्ण का परिवेष दिखाई दे तो राजा का नाश करता है तथा सदा उदय या अस्त काल में सूर्य और चन्द्र का परिवेष दिखाई दे तो नरेन्द्र का नाश होता है।

गर्गः

उदयेऽस्तमये मध्ये सूर्याचन्द्रमसोर्दिवि।
परिवेषः प्रदृश्येत तद्राष्ट्रमवसीदति॥

यदि आकाश में सूर्य और चन्द्र के उदय, अस्त या मध्याह्न के समय परिवेष दिखाई दे तो उस राष्ट्र का नाश होता है।

वराहसंहितायाम्

दीप्तमृगविहङ्गरुतः कलुषः सन्ध्यात्रयोत्थितोऽतिमहान्।
भयकृत् तडिदुल्काद्यैर्हतो नृपं हन्ति शस्त्रेण॥

यदि सूर्य की ओर मुख किये मृग और पक्षीगण के शब्दों से युक्त, रूक्ष वर्ण वाले, तीनों सन्ध्याओं (प्रातः, मध्याह्न और सायं) में उत्पन्न और अतिविस्तृत परिवेष दिखाई दें तो भय करते हैं तथा ऐसे परिवेष यदि विद्युत्, उल्का आदि से आहत हों तो शस्त्र से राजा का नाश (वध) करते हैं।

गर्गः

दिवा सूर्ये परीवेषो रात्रौ चन्द्रे यदा भवेत्।
एकस्मिँस्तदहोरात्रे तदा नश्यति पार्थिवः॥

यदि एक अहोरात्र के दिन में सूर्य का और रात में चन्द्र का परिवेष दिखाई दे तो राजा का नाश करता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

सकलं यदहः सूर्यो रात्रिं चेत् सकलां शशी।
परिवेषो भवेद्राजा तत्रापि वधमृच्छति॥

यदि पूरा दिन सूर्य का और पूरी रात चन्द्र का परिवेष दिखाई दे तो राजा का वध करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरस्तु

सोमसूर्ययोः सकलाहोरात्रपरिवेषणं क्षुद्व्याधिभयैः प्रजानाशाय – इति ।

यदि चन्द्र और सूर्य का समस्त अहोरात्र अर्थात् पूरा दिन सूर्य का और पूरी रात चन्द्र का परिवेष दिखाई दे तो क्षुधा और व्याधिभयों से प्रजा का नाश होता है ।

मयूरचित्रे

विक्षिप्तमण्डले रूक्षे परिवेषेऽर्कचन्द्रयोः ।
वृष्टिं तत्र विजानीयाद्विपर्यासे विपर्ययः ॥
रक्ताभे परिवेषे च रवेः स्याद्भूपतेः क्षयः ।
चन्द्रस्य तु चमूनां तु सप्रभस्याप्रभस्य च ॥

यदि सूर्य और चन्द्रमा में विक्षिप्त मण्डल वाला (प्रभाहीन) और रूक्ष वर्ण वाला परिवेष दिखाई दे तो वर्षा होती है । उक्त के विपरीत परिवेष के दिखाई देने पर विपरीत (अवृष्टि) फल होता है । यदि रक्त वर्ण की कान्ति वाला परिवेष सूर्य का दिखाई दे तो राजा का नाश होता है और रक्त कान्ति वाला परिवेष यदि क्षीण या पुष्ट चन्द्र का दिखाई दे तो सेना का नाश करता है ।

गर्गः

द्विमण्डलपरीवेषः सेनापतिवधङ्करः ।
युद्धं सुदारुणं कुर्याद् दृश्यते मण्डलैस्त्रिभिः ॥

दो मण्डल (दो रेखायुत) वाला परिवेष सेनापति का वध करता है और तीन मण्डल वाला परिवेष अत्यन्त भयङ्कर युद्ध कराता है ।

भार्गवीये

द्वाभ्यां सेनापतिभयं युवराजभयं त्रिभिः ।
मण्डलैः पुररोधः स्यात् त्रिभिरभ्यधिकं ध्रुवम् ॥

दो मण्डल वाला परिवेष सेनापति के लिए भयकारक, तीन मण्डल वाला युवराज के लिए भय करने वाला और तीन से अधिक मण्डल वाला परिवेष नगर का निश्चित नाश करता है ।

पराशरस्तु

सन्ध्ययोश्चेत् सप्तमण्डलानि सूर्येऽभीक्ष्णं दृश्येरन् उपतापस्तस्य देशस्य मरकः स्यात् क्षुच्छस्त्रकोपाभ्यामन्योन्यविरोधाच्च ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि दोनों सन्ध्यासमयों में सूर्यमण्डल में बार-बार सात मण्डल वाला परिवेष दृश्य हो तो क्षुधा, शस्त्रप्रकोप तथा परस्पर लोगों के विरोध से उस देश को पीड़ा तथा मरकी होती है।

अथ नक्षत्रग्रहावरोधकं चन्द्रपरिवेषफलम्। तत्र पराशरः

यत्र त्रीण्यवरुध्येरँश्चन्द्रमाः सनक्षत्रो ग्रहस्तत्र्यहाद्देवो वर्षति मासाद्वा भयं ब्रूयात्।

यदि चन्द्रमा, कोई नक्षत्र और कोई भौमादि ग्रह— ये तीनों एक परिवेषगत हों तो तीन दिन में इन्द्र वर्षा करते हैं अथवा एक मास में भय होता है।

गर्गश्च

त्रयो यत्रावरुध्येरन् नक्षत्रं चन्द्रमा ग्रहः।
त्र्यहाद्वर्षं समाचष्टे मासाद्वा विग्रहं महत्॥

जिस देश में कोई एक नक्षत्र, चन्द्रमा और भौमादि कोई एक ग्रह— ये तीनों एक परिवेष में गत हों तो उस देश में तीन दिन में वर्षा होती है अथवा एक मास में महान् युद्ध होता है।

वराहसंहितायां च

वृष्टिस्त्र्यहेण मासेन विग्रहो वा ग्रहेन्दुभनिरोधे।
होराजन्माधिपयोर्जन्मर्क्षे वाऽशुभो राज्ञः॥

यदि भौमादि कोई ग्रह, चन्द्रमा और कोई नक्षत्र— ये तीनों एक परिवेष में गत हों तो तीन दिन में वर्षा अथवा एक मास में लड़ाई होती है। जिस राजा का जन्मलग्नेश, जन्मराशीश या जन्मनक्षत्र परिवेष में हो, उस राजा का अशुभ होता है।

विशेषः– वेति व्यवस्थितविकल्पः। आत्मनः शत्रोर्वा जन्माधिपे लग्नाधिपे जन्मनक्षत्रे च परिवेषाभ्यन्तरे मासेन विग्रहो भवति। अन्यथा वृष्टिः। विग्रहे सति यस्य जन्माधिपादयः परिवेषावरुद्धास्तस्य राज्ञः पराजयोऽन्यस्य जय इति बोद्धव्यम्।

अर्थात् यदि राजा के अपने या उसके शत्रु के जन्मराशीश, जन्मलग्नेश और जन्मनक्षत्र एक परिवेष के आभ्यन्तर हों तो एक मास में उन दोनों की लड़ाई, अन्यथा वृष्टि होती है। लड़ाई होने पर जिनके जन्माधिपादि परिवेषगत हों, उस राजा की पराजय तथा दूसरे की जय होती है।

सूर्यपरिवेषे तत्फलं गणितेनानुमाय वक्तव्यम्। अतएव बृहद्यात्रायां वराहः

परिवेषोऽर्कशशिनोः शत्रुपक्षग्रहैः सह।
स्निग्धोऽखण्डश्च जयदः पापदो भयमण्डलः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेषः– शत्रुपक्षा ग्रहाः शत्रोर्जन्माधिपहोराधिपराज्याधिपवर्त्तमानदशाधिपाः। अत्र शत्रुपक्षग्रहैरित्युपलक्षणम्। शत्रुपक्षीयजन्मादिनवनक्षत्रैरवबोद्धव्यमिति।

यदि सूर्य और चन्द्रमा के साथ शत्रुपक्षीय (राजा के शत्रुपक्षीय राजा के जन्मराशीश, जन्मलग्नेश, राज्याभिषेकाधिप या वर्त्तमान दशाधिप ग्रह एवं शत्रुपक्षीय राजा के जन्मादि नौ नक्षत्र) ग्रहादिकों का परिवेष निर्मल और अखण्डित हो तो जय तथा भययुक्त मण्डल वाला परिवेष अशुभ फल देता है।

अथ रविचन्द्रपरिवेषाभ्यन्तरस्थभौमादिग्रहफलं वटकणिकायाम्

बलपुरोहितनरपतिकृषिकृत्पीडा क्रमेण परिविष्टैः।
कुजगुरुसितार्कपुत्रैः सौम्येन तु मन्त्रिपरिवृद्धिः॥
केतोः शस्त्रोद्योगो राहोः परिवेषणेन रोगभयम्।

यदि सूर्य या चन्द्रमा के परिवेष के अन्दर मंगल, बृहस्पति, शुक्र या शनि हों तो क्रमशः सेना, पुरोहित, राजा और किसान को पीड़ा होती है अर्थात् मंगल से सेना को, गुरु से पुरोहित को, शुक्र से राजा को तथा शनि से किसान को पीड़ा होती है और यदि बुध हो तो मन्त्री की वृद्धि होती है (अर्थात् मन्त्रियों के लिए शुभ होता है)। केतु से युद्ध और राहु के परिवेष में होने से रोगभय होता है अर्थात् ग्रहणकालिक परिवेष होने से रोगभय होता है।

पराशरः

राज्ञः शस्त्रेण निधनं पिनद्धे दैत्यमन्त्रिणि।
सौरे स्यादम्भसा पीडा जीवे राज्ञः पुरोधसाम्॥
बुधे ज्ञानिवधो भौमे दस्युशस्त्राग्निसम्भवः॥

यदि शुक्र परिवेष में हो तो राजा का शस्त्र से निधन, शनि हो तो जल से पीड़ा, बृहस्पति हो तो राजपुरोहित को पीड़ा, बुध हो तो ज्ञानियों का वध और मङ्गल परिविष्ट हो तो चोर, शस्त्र तथा अग्नि का प्रकोप होता है।

भार्गवीये तु

सेनापतिकुमाराणां सेनायाश्चापि विद्रवः।
लोहिताङ्गपरीवेषे शस्त्राग्न्युत्पात एव च॥
मन्त्रिणो लेखकाश्चापि वर्धन्ते स्थावराणि च।
वृष्टिं चापि विजानीयात् परिविष्टे बुधे ग्रहे॥
पुरोहितामात्यनृपा हन्युरन्योन्यमेव च।
पुररोधं विजानीयात् परिविष्टे बृहस्पतौ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यायिनः क्षत्रियाँश्चापि नृपपत्नीश्च पीडयेत्।
धान्यार्घं पृथु कुर्याच्च परिविष्टे भृगोः सुते॥

स्थावरान् कर्षकाँश्चापि क्षुद्रधान्यं च पीडयेत्।
वातवृष्टिं च जनयेत् परिविष्टः शनैश्चरः॥

बाह्यमेव हि गर्भांश्च राहुः पीडयते ध्रुवम्।
व्याधींश्चैव हि जनयेत् परिविष्टः सचन्द्रमाः॥

क्षुच्छस्त्राग्निभयं घोरं राजतो मृत्युतस्तथा।
परिविष्टश्च केतुः शिखिनश्च हिनस्ति सः॥

यदि मङ्गल परिवेष के भीतर हो तो सेनापति, राजकुमार और सेना को पीड़ा तथा शस्त्र और अग्नि का उत्पात (भय) होता है।

यदि बुध परिविष्ट हो तो मन्त्री, लेखक और स्थावरों (वृक्ष आदि) की वृद्धि तथा वृष्टि होती है। यदि बृहस्पति परिविष्ट हो तो पुरोहित, मन्त्री, राजा— ये सभी एक-दूसरे का वध करते हैं और नगर का नाश होता है। यदि शुक्र परिवेषान्तर्गत हो तो यायी (जीतने की इच्छा वाले), क्षत्रिय और रानी को पीड़ा तथा अधिक धान्यार्घ (महँगी) होता है। यदि शनि परिविष्ट हो तो स्थावर (वृक्ष आदि), किसान, क्षुद्र धान्य— इन सबों को पीड़ा और वायु-वृष्टि होती है। यदि चन्द्रमा के साथ राहु का परिवेष हो तो गर्भ को पीड़ा और रोगों की उत्पत्ति होती है। यदि शिखायुक्त केतु परिविष्ट हो तो क्षुधा (दुर्भिक्ष), शस्त्र और अग्नि से उत्पन्न घोर भय तथा राजा और मृत्यु से उत्पन्न दारुण भय होता है।

वराहसंहितायां तु

भौमे कुमारबलपतिसैन्यानां विद्रवोऽग्निशस्त्रभयम्।
मन्त्रिस्थावरलेखकपरिवृद्धिश्चन्द्रजे सुवृष्टिश्च॥

जीवे परिवेषगते पुरोहितामात्यनृपपीडा।
शुक्रे यायिक्षत्रियराज्ञीपीडा प्रियं चान्नम्॥

परिवेषमण्डलगतो रवितनयः क्षुद्रधान्यनाशकरः।
परिविष्टे गर्भभयं राहौ व्याधिर्नृपभयं च॥

क्षुदनलमृत्युनराधिपशस्त्रेभ्यो जायते भयं केतौ।

यदि मंगल परिवेष-मण्डल में पड़ा हो तो कुमार, सेनापति और सेनाओं को व्याकुल, अग्निभय और शस्त्रभय करता है। यदि बुध परिवेष-मण्डलगत हो तो मन्त्री, स्थावर (वृक्ष आदि) और लेखक की वृद्धि तथा सुन्दर वृष्टि होती है। बृहस्पति पड़े तो पुरोहित, मन्त्री और राजाओं को पीड़ा होती है। यदि शुक्र, परिवेषगत हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो यायी क्षत्रियों (गमन करने वालों) और रानियों को पीड़ा तथा दुर्भिक्ष होता है। यदि शनि परिवेषमण्डलगत हो तो क्षुद्र (छोटे) धान्यों (कोनी आदि) का नाश करता है। यदि राहु परिवेषमण्डलगत (अर्थात् ग्रहणकालिक सूर्य और चन्द्रमण्डलगत राहु परिविष्ट) हो तो गर्भभय, व्याधि और राजभय होता है। यदि केतु परिवेष-मण्डलगत हो तो क्षुधा (दुर्भिक्ष,) अग्नि, मरण, राजा और शस्त्रों का भय लोगों में होता है।

रविचन्द्रपरिवेषाभ्यन्तरभृग्वादिग्रहफलं वटकणिकायाम्

युद्धं क्षुद्भयनृपनाशमृत्यवो व्याधिभिः क्रमशः।

यदि रवि या चन्द्र के परिवेष के अन्दर शुक्र आदि पञ्चताराग्रह (शुक्र, शनि, मंगल, बुध और गुरु) हों तो क्रमशः युद्ध, दुर्भिक्षभय, राजा का नाश, मरण और व्याधिभय होता है।

भार्गवीये तु

द्वयोः संग्राममाचष्टे ग्रहयोः परिविष्टयोः।
क्षुद्भयं त्रिषु विज्ञेयं वर्षनिग्रह एव च॥

चतुर्भिर्म्रियते राजा सामात्यः सपुरोहितः।
युगान्त इति जानीयात् परिविष्टेषु पञ्चसु॥

यदि सूर्य या चन्द्र के परिवेष के अन्दर दो ताराग्रह स्थित हों तो दुर्भिक्ष, तीन ताराग्रह हों तो वर्षा का नाश, चार ताराग्रह हों तो मन्त्री और पुरोहित के साथ राजा की मृत्यु तथा पाँचों ताराग्रह स्थित हों तो युगान्त (प्रलय) की तरह लोक में भय होता है।

वराहसंहितायां च

युद्धानि विजानीयात् परिवेषाभ्यन्तरे द्वयोर्ग्रहयोः।
दिवसकृतः शशिनो वा क्षुद्वृष्टिभयं त्रिषु प्रोक्तम्॥

याति चतुर्षु नरेन्द्रः सामात्यपुरोहितो वशं मृत्योः।
प्रलयमिव भवति जगतः पञ्चादिषु मण्डलस्थेषु॥

यदि सूर्य या चन्द्र के परिवेष में दो ताराग्रह स्थित हों तो युद्ध, तीन हों तो दुर्भिक्ष और अवृष्टि-भय, चार हों तो मन्त्री और पुरोहित के साथ राजा की मृत्यु और पाँचों ताराग्रह परिवेष के अन्दर हों तो संसार का प्रलय की तरह (नाश) ही समझना चाहिये।

विशेषः– रविचन्द्रपरिवेषाभ्यन्तरस्थौ यदि द्वौ ग्रहौ यायिनागरौ भवतस्तदाऽतिदारुणं युद्धं शीघ्रं भवति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च काश्यपः

परिवेषाभ्यन्तरस्थौ द्वौ ग्रहौ यायिनागरौ ।
युद्धं तत्र भवेत् क्षिप्रं घोररूपं सुदारुणम् ॥

अनावृष्टिः क्षुद्भयं च परिवेषगतैस्त्रिभिः ।
चतुर्णां परिविष्टानां राज्ञां च मरणं भवेत् ॥

मण्डलान्तर्गताः पञ्च पृथिव्यां भयदाः स्मृताः ।

यदि सूर्य या चन्द्रमा के परिवेष में दो यायि-नागर (एक यायी तथा एक नागर) ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अत्यन्त दारुण घोररूप युद्ध होता है। यदि तीन ताराग्रह हों तो अनावृष्टि और दुर्भिक्षभय होते हैं। चार हों तो राजाओं की मृत्यु होती है तथा पाँच ताराग्रह हों तो समस्त पृथिवी पर भय देते हैं।

अथ पृथक् ताराग्रहाणां नक्षत्राणां च परिवेषफलम्। तत्र पराशरः

ग्रहाणां परिवेषो यथास्वं पीडयति नक्षत्राणां च – इति ।

विशेषः– यथास्वं यथास्ववर्गमित्यर्थः ।

कुजादि पञ्च ताराग्रह और नक्षत्र पृथक्-पृथक् परिविष्ट हों तो अपने-अपने वर्ग के लोगों और देशों को पीड़ित करते हैं।

भार्गवीये

ताराग्रहपरीवेषो नक्षत्राणां च केवलम् ।
[1]महाग्रहोदयं कुर्यान्मरणं वा महीपतेः ॥

पृथक् ताराग्रहस्यैव नक्षत्राणामथापि वा ।
परिवेषो यदा दृश्यस्तदा नरपतेर्वधः ॥

यदि केतूदयो न स्यादन्यथा तद्भवेत् फलम् ।

यदि ताराग्रह और नक्षत्रों का केवल परिवेष हो तो महाग्रह (केतु) का उदय अथवा राजा की मृत्यु होती है। अर्थात् केतु का उदय हो जाय तो राजा का वध नहीं होता है। ताराग्रह या नक्षत्रों का अलग-अलग परिवेष दिखाई दे तो राजा का वध होता है। उक्त परिवेष के अनन्तर यदि केतु का उदय न हो तो फल विपरीत होता है। अर्थात् केतु के उदित होने पर राजा का वध नहीं होता है।

वराहसंहितायां तु

ताराग्रहस्य कुर्यात् पृथगेव समुत्थयोर्नरेन्द्रवधः ।
नक्षत्राणामथ वा यदि केतोर्नोदयो भवति ॥

---

१. महाग्रहः केतुः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि केतु का उदय न हुआ हो तब यदि एक ताराग्रह या दो ताराग्रह अलग-अलग या नक्षत्र अलग-अलग परिवेषयुत हों तो राजा का वध होता है।

अथ प्रतिपदादितिथिषु फलं भार्गवीये

ब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रान् हन्यात् प्रतिपदादिषु।
ग्रामान् पुरं च कोषं च पञ्चम्यादिषु तु त्रिषु॥

अष्टम्यां युवराजं च चमूपालान् हिनस्ति वै।
नवम्यां च दशम्यां च एकादश्यां च पार्थिवान्॥

त्रयोदश्यां बलक्षोभो द्वादश्यां रुध्यते प्रजा।
राज्ञीपीडा चतुर्दश्यां पञ्चदश्यां नृपस्य च॥

प्रतिपदा आदि चार तिथियों में यदि परिवेष दिखाई दे तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों का क्रमशः नाश करता है अर्थात् प्रतिपदा में परिवेष दिखाई दे तो ब्राह्मणों का, द्वितीया में क्षत्रियों का, तृतीया में वैश्यों का और चतुर्थी में शूद्रों का नाश होता है। पञ्चमी आदि तीन तिथियों में क्रमशः ग्राम, नगर और कोष का नाश करता है। अष्टमी में परिवेष दिखाई दे तो युवराज और सेनापति का नाश करता है। नवमी, दशमी और एकादशी में यदि परिवेष दिखाई दे तो राजा का नाश करता है। द्वादशी में प्रजाओं का अवरोध, त्रयोदशी में सेनाओं में आकुलता, चतुर्दशी में रानी को पीड़ा और पञ्चदशी (पूर्णिमा तथा अमावास्या) में राजा को पीड़ा होती है।

वराहसंहितायाम्

ब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रहा भवेत् प्रतिपदादिषु क्रमशः।
श्रेणीपुरकोषाणां पञ्चम्यादिष्वशुभकारी॥

युवराजस्याष्टम्यां परतस्त्रिषु पार्थिवस्य दोषकरः।
पुररोधी द्वादश्यां सैन्यक्षोभस्त्रयोदश्याम्॥

नरपतिपत्नीपीडां परिवेषोऽभ्युत्थितश्चतुर्दश्याम्।
कुर्यात्तु पञ्चदश्यां पीडां मनुजाधिपस्यैव॥

यदि प्रतिपदा आदि चार तिथियों में परिवेष दिखाई दे तो क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों का नाश करता है। पञ्चमी आदि तीन तिथियों में यदि परिवेष दिखाई दे तो क्रमशः श्रेणी (समान जातियों के संघ) नगर और कोष का नाश होता है। यदि अष्टमी में दिखाई दे तो युवराज का, नवमी, दशमी और एकादशी तिथियों में दिखाई दे तो राजा का अशुभ करने वाला, द्वादशी में नगर का अवरोध, त्रयोदशी में सेनाओं में आकुलता, चतुर्दशी में रानी को पीड़ा और पञ्चदशी में परिवेष दिखाई दे तो राजा को पीड़ा होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

परिवेषमण्डलं यस्यां दिशि भिद्येत दारुणम् ।
तस्यां दिशि विशेषेण विद्यात् तीव्रतरं फलम् ॥

परिवेष-मण्डल जिस दिशा में भेदित (खण्डित) हो, उस दिशा में विशेष रूप से तीव्रतर (अशुभ) फल होता है।

भार्गवीये

छिद्राण्येव त्रीणि च स्युर्महान्ति विमलानि च ।
तैर्द्वारैः पार्थिवो यायात् प्रच्छन्नास्तु विशङ्कटाः ॥

विशेषः– प्रच्छन्ना या दिशस्ता विशङ्कटा दुर्ग्राह्याः ।

यदि परिवेष-मण्डल में तीन छिद्र (खण्ड) हों तो उनमें विमल और महान् द्वार (खण्ड) वाली दिशा में राजा को जाना चाहिये तथा जिस दिशा में परिवेष प्रच्छन्न (पूर्ण) हो, उस दिशा की ओर नहीं जाना चाहिये।

विष्णुधर्मोत्तरे तु

यतः खण्डपरीवेषस्तां दिशं नृपतिर्यायात् ।

जिस भाग में परिवेष-मण्डल खण्डित हो, उसी दिशा की ओर राजा को जाना चाहिये।

भार्गवीये तु

कालाम्बुदपरिस्त्रावग्रहोदयनिमित्तजम् ।
इत्येवं जन्म सर्वेषां शेषमुत्पातलक्षणम् ॥

काल (सन्ध्या समय एवं वर्षा ऋतु) में वृष्टि के लिए तथा ग्रहों के उदय के निमित्त परिवेष दिखाई दे तो शुभद; अन्यथा उत्पातकारक होता है।

पराशरः

सर्व एव सन्ध्ययोर्दृश्यमाना वर्षासु वर्षकाः स्युरन्यत्तौं भयाय ।

दोनों सन्ध्याओं में वर्षा ऋतु में सभी परिवेष वर्षा करने वाले होते हैं और अन्य ऋतुओं में दिखाई देने वाले परिवेष भयकारक होते हैं।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु परिवेषोत्पातेषु परिविष्टग्रह-नक्षत्रदेवतापूजापूर्विका सावित्रीमन्त्रकदशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्तिरौत्पातिकफलगुरु-लाघवमवगम्य कर्त्तव्या – इति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहाँ परिवेषजन्य उत्पातों की अनुक्त शान्ति के लिए परिविष्ट ग्रह और नक्षत्र के देवता की पूजा के साथ सावित्री मन्त्र से दश लाख हवन आदि से अभया नामक शान्ति अथवा महाशान्ति उत्पातों के फल की गुरुता तथा लाघवता को जानकर करनी चाहिये।

मत्स्यपुराणे

परिवेषेऽपि वृष्टिविकारविहिता शान्तिः कर्त्तव्या इत्युक्तम्। तां च वृष्ट्यद्भुतावर्त्ते लिखिष्यामः।

परिवेषोत्पातों की शान्ति के लिए वृष्टिविकार की विहित शान्ति करनी चाहिये। वृष्टिविकारसम्बन्धी शान्ति वृष्ट्यद्भुतावर्त्त में लिखी जायेगी।

अथ विहितविशेषशान्तयः परिवेषोत्पाता मयूरचित्रे

परिवेषे समुत्पन्ने शुक्लादौ ब्राह्मणादयः।
हतप्रभा वा जायन्ते तथा शक्रधनुर्निभे॥

औदुम्बराणां पञ्चैव सहस्राणि समाहितः।
अष्टोत्तरं घृताक्तानां शतमष्टोत्तरं तथा॥

पायसं भोजयेद् विप्रान्[१] दधिक्षीरगुडौदनैः।
सुवर्णरजतं दद्याद्भुतान्ते भूरिदक्षिणाम्॥

(इति षोडशी शान्तिः)

यदि इन्द्रधनुष की कान्तिसदृश या शुक्लादि वर्ण के परिवेष दिखाई दे तो (ब्राह्मणादि वर्ण के) लोग (क्रमशः) हतप्रभ (पीड़ित) होते हैं अर्थात् शुक्ल वर्ण का परिवेष ब्राह्मण के लिए, रक्त वर्ण का परिवेष क्षत्रियों के लिए, पीत वर्ण का परिवेष वैश्य वर्ण के लिए और कृष्ण वर्ण का परिवेष शूद्रों के लिए अशुभकारक होता है और मिश्रित वर्ण के परिवेष से सभी लोगों को पीड़ा होती है।

उक्त अशुभकारक परिवेष के होने पर पाँच हजार आठ गूलर की घृताक्त (घृत में डुबो कर) समिधा से तथा दही-दूध-गुड़ और भात से एक सौ आठ बार हवन करना चाहिये। हवन के पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन कराकर सोना, चाँदी और प्रचुर दक्षिणा का दान करना चाहिये।

यह षोडशी नामक शान्ति है।

फलपाकः

सप्ताहात् परिवेषफलपाक इति वराहेणोक्तम्।

---

१. विद्वान् इति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिवेष का फलपाक सात दिनों तक होता है— ऐसा वराहमिहिर ने कहा है।

गार्गीये

ग्रहाणां परिवेषेषु त्रिरात्रात् फलमादिशेत्।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे परिवेषाद्भुतावर्त्तः।

ग्रहों के परिविष्ट होने पर उसका फल तीन रातों तक होता है—ऐसा कहना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथेन्द्रधनुरद्भुतावर्त्तः

तत्रेन्द्रधनुःस्वरूपं वराहसंहितायाम्

सूर्यस्य विविधवर्णाः पवनेन विघट्टिताः कराः साभ्रे।
वियति धनुःसंस्थाना ये दृश्यन्ते तदिन्द्रधनुः॥

मेघयुत आकाश में हवा से सूर्यकिरण टकराकर अनेक वर्णयुत धनुषाकार आकाश में जो दिखाई देता है, उसी को लोग इन्द्रधनुष कहते हैं।

विशेषः– 'विन्ध्यवासिनः इयमार्या वराहेण लिखिता। केचिद्विन्ध्यावासी आचार्य इत्यनुमीयतेऽतोऽग्रेऽपि तद्वचनस्योपलब्धेः।' अर्थात् उपर्युक्त आर्या विन्ध्यवासी आचार्य के वचन से वराहमिहिर ने ग्रहण किया है, ऐसा अनुमान लगाया जाता है।

वराहसंहितायां तु

केचिदनन्तकुलोद्भवनिश्वासोद्भूतमाहुराचार्याः।

किसी (काश्यप आदि) आचार्य का मत है कि नागराज के कुल में उत्पन्न सर्पों के विश्वास से यह (इन्द्रधनुष) उत्पन्न होता है।

तथा च काश्यपः

अनन्तकुलजाता ये पन्नगाः कामरूपिणः।
तेषां निश्वाससम्भूतं शक्रचापं प्रचक्षते॥

नागराज अनन्त के वंश में उत्पन्न जो इच्छानुसार रूप धारण करने वाले सर्प हैं, उनके निःश्वास से उत्पन्न होने वाला इन्द्रधनुष कहा जाता है।

अथ शुभसूचकेन्द्रधनुर्लक्षणम्। तत्र काश्यपः

स्निग्धवर्णं घनश्यामं सर्वत्र दिशि दृश्यते।
बहूदकं सुभिक्षं च शिवं शस्यप्रदं भवेत्॥

यदि निर्मल वर्ण वाला, अविकल और श्याम वर्ण का इन्द्रधनुष सभी दिशाओं में दिखाई दे (उक्त इन्द्रधनुष किसी भी दिशा में) तो प्रचुर जल, सुभिक्ष, कल्याण और धान्य देता है।

वराहसंहितायाम्

चापमैन्द्रमनुलोममखण्डं प्रोज्ज्वलं बहुलमातपमिष्टम्।

अनुलोम (पश्चिम दिशा में स्थित अथवा एक दक्षिण दिशा में और दूसरा उत्तर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिशा में स्थित), अखण्ड, उज्ज्वल एवं प्रचुर किरणयुक्त इन्द्रधनुष दिखाई दे तो शुभ होता है।

विशेष– यह पद्य उपलब्ध बृहत्संहिता में नहीं है तथा 'वहलमातप' यह पाठ भी अशुद्ध है।

तथा च

अच्छिन्नमवनिगाढं द्युतिमत् स्निग्धं घनं विविधवर्णम्।
द्विरुदितमनुलोमं च प्रशस्तमम्भः प्रयच्छति च॥

विशेषः– अनुलोममिति यात्रासमये बोद्धव्यम्। यात्रायामेव बहुभिरेवम्भूतस्य धनुषः प्राशस्त्याभिधानात्।

अखण्ड, पृथ्वी में लगा हुआ (देखने में ऐसा लगे कि दोनों ओर पृथ्वी से सटा हुआ है), उज्ज्वल, निर्मल, अविकल, अनेक वर्णयुत, दो बार उदित और अनुलोम (अनुलोम का अर्थ पश्चिम दिशा में स्थित, एक दक्षिण और दूसरा उत्तर दिशा में स्थित या यात्रा के समय अनुलोम दिशा में उदित— इस प्रकार कई तरह से किया जाता है) इन्द्रधनुष दिखाई दे तो शुभ फल और बहुत वृष्टि करने वाला होता है।

तथा च ऋषिपुत्रः

द्विरुद्गतमविच्छिन्नं स्निग्धमिन्द्रायुधं महत्।
पृष्ठतो विजयाय स्याद्विच्छिन्नं परुषं न तु॥

दो बार उदित (एक दिन में दो बार), अखण्ड, निर्मल, महान् और यात्रा के समय पीछे की दिशा में दिखाई देने वाला इन्द्रधनुष राजा की विजय के लिए होता है, किन्तु खण्डित और रूखा इन्द्रधनुष पराजय करता है।

तथा च नन्दी

बहुवर्णमविच्छिन्नं द्विरुद्गतं स्निग्धममरपतिचापम्।
पश्चात् पार्श्वे चापि प्रयाणकाले रिपुवधाय॥

बहुत वर्ण वाला, अखण्ड, दो बार उदित और निर्मल वर्ण वाला इन्द्रधनुष यदि यात्रा के समय पीछे या पार्श्व में भी दिखाई दे तो शत्रु का नाश होता है।

बृहस्पतिः

नीलताम्रमविच्छिन्नं द्विगुणं स्निग्धमायतम्।
पृष्ठतः पार्श्वयोर्वाऽपि जयायेन्द्रधनुर्भवेत्॥

नीलवर्ण, ताम्रवर्ण, अखण्ड, द्विगुण (दो बार उदित), निर्मल, आयत (विस्तृत), पृष्ठ भाग या पार्श्वभाग (बगल) में दिखाई देने वाला इन्द्रधनुष जय के लिए होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मयूरचित्रे

सन्नाहकाले सैन्यानां वक्रमिन्द्रायुधं यदि ।
पक्षयोरुभयोर्मृत्युस्तदेत्याहुर्मनीषिणः ॥

युद्ध के समय वक्र इन्द्रधनुष यदि दिखाई दे तो दोनों पक्षों के सेनाओं की मृत्यु होती है— ऐसा मनीषियों ने कहा है।

पराशरः

अविच्छिन्ने बहुरागे स्निग्धवातानुबन्धे सद्यो वर्षं तथा कृष्णे स्निग्धे नीलाभ्रवृक्षत्रयस्थे सूर्येऽप्येवम् ।

यदि इन्द्रधनुष अखण्डित, बहुत वर्णयुत, निर्मल और हवा से युत हो तो सद्योवृष्टि करता है तथा कृष्ण वर्णयुत, निर्मल और नील वर्ण के तीन मेघवृक्ष और सूर्य पर इन्द्रधनुष दिखाई दे तो भी सद्योवृष्टि होती है।

अथाशुभसूचकेन्द्रधनुर्लक्षणमाह पराशरः

स्निग्धे समुद्रे द्विनगे वा वर्षमनृतौ भयं च ।

निर्मल इन्द्रधनुष समुद्र या दो पर्वतों से उठा हुआ वर्षा ऋतु में दिखाई दे तो वृष्टि होती है और अन्य ऋतु में ऐसा इन्द्रधनुष दिखाई दे तो भय होता है।

अथ वर्णफलं वराहसंहितयोः

पाटलपीतकनीलैः शस्त्राग्निक्षुत्कृता दोषाः ।

यदि पाटल (थोड़ा लाल वर्णयुत), पीत और नीला इन्द्रधनुष हो तो क्रम से शस्त्रदोष, अग्निदोष और दुर्भिक्ष करता है। जैसे— थोड़ा लाल हो तो शस्त्रदोष, पीला हो तो अग्निदोष और नीला हो तो दुर्भिक्ष करता है।

पराशरस्तु

रक्तमाञ्जिष्ठे श्यामारुणनीलपीतके भयम् ।
परुषे राजमृत्युं सर्वस्मिन्नेव च ॥

यदि रक्त और मजीठ वर्ण, श्याम, लाल, नील और पीला वर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई दे तो भय देता है और ऐसा इन्द्रधनु यदि रूखा हो तो राजा की मृत्यु होती है।

अथ दिक्फलं काश्यपः

अनावृष्ट्यां भवेद्वर्षमैन्द्र्यां वर्षत्यवर्षणम् ।
पश्चिमायां भवेद्वर्षं सदा कार्मुकसंस्थितौ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि अनावृष्टि (वर्षा ऋतु से भिन्न समय) के समय पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो वृष्टि तथा वृष्टि के समय दिखाई दे तो अवृष्टि होती है। पश्चिम दिशा में दिखाई दे तो हमेशा वृष्टि करता है।

विन्ध्यवासी च

कुरुते वृष्टौ वृष्टिं निहन्ति तामेव शक्रदिशि।
कथयति सदैव वृष्टिं धनुरैन्द्रं पश्चिमाशायाम्॥

वर्षाकाल में यदि पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो वर्षा का नाश करता है तथा पश्चिम दिशा में दिखाई देने पर हमेशा वृष्टि करता है।

वराहसंहितायां च

वृष्टिं करोत्यवृष्ट्यां वृष्टिं वृष्ट्यां निवारयत्यैन्द्र्याम्।
पश्चात् सदैव वृष्टिं कुलिशभृतश्चापमाचष्टे॥

यदि अनावृष्टि के समय पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष दृश्य हो तो वृष्टि और वर्षाकाल में दिखाई दे तो अनावृष्टि करता है तथा पश्चिम दिशा में स्थित इन्द्रधनुष सदा वृष्टि करता है।

पराशरस्तु

पश्चिमश्चेति सूर्ये तिष्ठत्यनुदेशं पुरस्ताद्दृश्येत
क्षेमाय स्यात् तनुवर्षाय विपरीतं वर्षविघाताय।
सन्ध्याकाले निवृत्ते तु पुनर्वर्षाय वर्षति।
विपरीतमवर्षाय वर्षायैव तु पश्चिमम्॥

यदि पश्चिम दिशा में सूर्य के रहने पर अर्थात् दिनान्त में विपरीत दिशा अर्थात् पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो क्षेम और अल्पवर्षा होती है। इससे विपरीत स्थिति में वर्षा का नाश करता है।

यदि वर्षाकाल के समाप्त होने के बाद (अन्य ऋतुओं में) सन्ध्या के समय (पूर्व दिशा में) इन्द्रधनुष दिखाई दे तो पुन: वृष्टि करता है; अन्यथा अवृष्टि करता है तथा पश्चिम दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो सदा वृष्टि करता है।

वराहसंहितयोः

विदिगुद्भूतं दिक्स्वामिनाशनम्।

यदि विदिशा (ईशान, आग्नेय, नैर्ऋत्य और वायव्य कोणों) में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो दिशा के स्वामी का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरः

प्रागुत्तरस्यां दिशि श्वेतवर्णचापदर्शनं दुर्भिक्षाय।

यदि पूर्वोत्तर दिशा (ईशान कोण) में सफेद वर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई दे तो दुर्भिक्ष करता है।

अथ स्थानफलं वराहसंहितयोः

जलमध्येऽनावृष्टिर्भुवि शस्यवधस्तरुस्थिते व्याधिः।
वल्मीके शस्त्रभयं ॥

यदि जल में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो अनावृष्टि, पृथ्वी पर दिखाई दे तो धान्यों का नाश, वृक्ष पर दिखाई दे तो व्याधि और वल्मीक (वमई = दीवड़ा की भीड़) पर दिखाई दे तो शस्त्रभय होता है।

अथावष्टब्यादित्येन्द्रधनुःफलं वराहसंहितायाम्

सुरचापपाटिततनुर्नृपतिविरोधप्रदः सहस्रांशुः।

यदि इन्द्रधनुष सूर्य को पाटित (आच्छादित) करे तो राजाओं में विरोध होता है।

पराशरः

सूर्यं भूमिं चेद्विष्टभ्यति तदा पुरोहितवधः। सन्ध्ययोश्च सूर्याचन्द्रमसौ परिरभ्य विन्द्यान्मन्त्रिसेनानायकानामनामयम् – इति।

यदि इन्द्रधनुष सूर्य और पृथ्वी से सटा हुआ (अवलम्बित) हो तो पुरोहित का वध करता है। दोनों सन्ध्या के समय में सूर्य या चन्द्र को पाटित करे तो मन्त्री और सेनापति को पीड़ित करता है।

तथा च

शत्रुभिरुपरुद्धे पुरे यदि सपरिवेषात् सूर्यात्
सादितमिन्द्रधनुर्भवति तदा पुरमोक्षदं भवति न
नृपतिविरोधप्रदम्।

यदि शत्रुओं से नगर व्याप्त (घिरा हुआ) हो और उस समय सम्पूर्ण सूर्यमण्डल इन्द्रधनुष से सादित (पीड़ित) हो तो नगर का मोक्ष करता है तथा राजा का विरोध नहीं करता है।

यदुक्तं मयूरचित्रे.

उपरुद्धं दिवानाथं शक्रचापं रुणद्धि चेत्।
त्वरितं पुरमोक्षः स्यादिति गर्गेण भाषितम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गर्गाचार्य ने कहा है कि यदि नगर शत्रुओं से घिरा हुआ हो, तब यदि इन्द्रधनुष सूर्य को पीड़ित करे तो शीघ्र ही नगर का मोक्ष होता है।

अथ समयफलं पराशरः

अनृतौ संस्थानकाले चेद्गर्भसामर्थ्यकरमिन्द्रधनुः शेषकाले तु भयदम् – इति।

अन्य ऋतुओं (वर्षा-भिन्न ऋतु) में संस्थानकाल (मेघगर्भाधान काल) में यदि इन्द्रधनुष दिखाई दे तो मेघ गर्भ धारण करता है, किन्तु शेष काल (गर्भाधान काल के अतिरिक्त समय) में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो भय देता है।

संस्थानकाले मेघगर्भाधानकाले

अत्रानुक्तविशेषशान्तिष्विन्द्रधनुरुत्पातेषु सावित्री-मन्त्रकदशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

चन्द्रादित्यावरोधके त्विन्द्रधनुषि तत्पूजापूर्विका प्रभूतकनकान्नगोमहीदानादिका शान्तिः कर्त्तव्या।

अथ साधारण्यपि शान्तिर्मयूरचित्रे विहिता। तां शान्त्यद्भुतावर्त्ते लिखिष्यामः।

यहाँ उक्त इन्द्रधनुष के दर्शन से उत्पन्न उत्पातों में जिनकी विशेष शान्ति नहीं बतायी गयी है, उनके शमन के लिए सावित्री मन्त्र से दश लाख हवन आदि अभया नामक शान्ति अथवा महाशान्ति उत्पातों के फल की गुरुता तथा लाघवता को जानकर करनी चाहिये।

चन्द्रमा और सूर्य को पीड़ित करने वाले इन्द्रधनुष के दर्शन से उत्पन्न दोषों के शमन के लिए उनकी पूजा के साथ-साथ प्रचुर सुवर्ण, अन्न, गाय, पृथ्वी-दान आदि शान्ति करनी चाहिये।

इन्द्रधनुषजन्य उत्पातों की शान्ति के लिए मयूरचित्र में साधारणी शान्ति-विधि भी बतायी गयी है, जो शान्त्यद्भुतावर्त्त में लिखी जायेगी।

अथ रात्राविन्द्रधनुरद्भुतानि। तत्र वर्णफलमौशनसे

श्वेतमिन्द्रायुधं विप्रान् रक्तं क्षत्रविनाशनम्।
वैश्यानां पीतकं रात्रौ कृष्णं शूद्रविनाशनम्॥

यदि रात में सफेद वर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई दे तो ब्राह्मणों का, लाल वर्ण का दिखाई दे तो क्षत्रियों का, पीला वर्ण का दिखाई दे तो वैश्यों का और काला वर्ण का दिखाई दे तो शूद्रों का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराशरस्तु

रात्रौ श्वेते ब्राह्मणानाम्। रक्ते क्षत्रियाणां च। पीते विशाम्। कृष्णे शूद्राणाम्। यथादिक्षु चैषामयनं ब्रूयात्। सर्वासु दिक्षु तु रूक्षे विच्छिन्ने गणानाम्।

यदि रात में श्वेत इन्द्रधनुष दिखाई दे तो क्षत्रियों का, पीला वर्ण का दिखाई दे तो वैश्यों का और काला दिखाई दे तो शूद्रों का दिशा के अनुसार (जिस दिशा में दिखाई दे, उस दिशा में स्थित तत्तद्वर्णों के लोगों का) नाश करता है। सभी दिशाओं में रूक्ष (रूखा) वर्ण वाला और खण्डित इन्द्रधनुष दिखाई दे तो गणों (समूहों) का नाश करता है।

वराहसंहितायाम्

निशि सुरचापं सितवर्णाद्यं जनयति पीडां द्विजपूर्वाणाम्।
भवति च यस्यां दिशि तद्देश्यं नरपतिमुख्यानचिराद्धन्यात्॥

यदि रात के समय श्वेत आदि (श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण) वर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई दे तो ब्राह्मण आदि (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) वर्णों का नाश करता है तथा जिस दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई देता है, उस दिशा के प्रधान राजा का शीघ्र नाश करता है।

काश्यपस्तु

रात्रौ चेद्दृश्यते चापं भयं भवति दारुणम्।

यदि रात में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो दारुण भय होता है।

मयूरचित्रे

निशायामिन्द्रचापस्य दर्शने नृपतेर्वधः।
परचक्रागमश्चैव यथा गर्गेण भाषितम्॥

यदि रात में इन्द्रधनुष दृश्य हो तो राजा का वध और परचक्र (दूसरे शत्रुराजा) का आगमन होता है, जैसा कि गर्ग ने कहा है।

वराहसंहितयोः

निशि सचिववधाय धनुरैन्द्रम् – इति।

यदि रात में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो सचिव का वध होता है।

एतत् तु सामान्यमुक्तमिन्द्रधनुषः फलम्। विशेषफलं त्रिवर्णोर्ध्वरिखेऽवगन्तव्यम्।

यथोक्तं बार्हस्पत्ये

यदा त्रिवर्णः सुमहाँस्त्रिरेखो महेन्द्रचापः समुदेति रात्रौ।
तदा भयं पार्थिवमण्डलानां वदन्ति शास्त्रार्थविदो द्विजेन्द्राः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब तीन वर्ण और तीन रेखा से युत महान् इन्द्रधनुष रात में उदित हो तब राजा और माण्डलिकों को भय होता है, ऐसा शास्त्रार्थ को जानने वाले ब्राह्मण-श्रेष्ठ कहते हैं।

मयूरचित्रे

त्रिवर्णश्च त्रिरेखश्च शक्रचापो यदा निशि।
राज्ञां माण्डलिकानां च भयं भवति दारुणम्॥

जब रात में तीन वर्ण और तीन रेखायुत इन्द्रधनुष दिखाई देता है तब राजा और मण्डलेश्वरों को दारुण भय होता है।

विशेषः– पूर्वस्यां दिशि राज्ञां याम्यां दिशि माण्डलिकानां मण्डलेश्वरसचिवानां सेनाप्रभृतीनामित्यर्थः।

तथा वराहसंहितयोः

चापं मघोनः कुरुते निशायामाखण्डलायां दिशि भूपपीडाम्।
याम्यापरोदक्प्रभवं निहन्यात् सेनापतिं नायकमन्त्रिणौ वा॥

यदि रात के समय पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो राजा को पीड़ित करता है, दक्षिण दिशा में दिखाई दे तो सेनापति, पश्चिम में दिखाई दे तो नायक (प्रधानपात्र) और उत्तर में दिखाई दे तो मन्त्री का नाश करता है।

काश्यपः

ऐन्द्र्यां दिशि यदा रात्रौ दृष्टं भूपवधो भवेत्।
याम्यां सेनापतिस्तस्य विनाशमधिगच्छति॥

पश्चिमस्यां तु सन्दृष्टं प्रधानं नाशमृच्छति।
उत्तरस्यां यदा दृष्टं रात्रौ मन्त्रिविनाशनम्॥

जब रात में पूरब दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो राजा का वध होता है, दक्षिण में दिखाई दे तो उसके सेनापति का नाश होता है, पश्चिम दिशा में दिखाई दे तो प्रधानपात्रों का नाश होता है और उत्तर दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो मन्त्री का विनाश करता है।

निशि परिविष्टे चन्द्रमसीन्द्रधनुःफलं मयूरचित्रे

उपरुद्धे निशानाथे रात्राविन्द्रधनुर्यदि।
तदा क्षोभः पुरस्य स्यात् परचक्रागमस्तथा॥

यदि रात में चन्द्रमा इन्द्रधनुष से परिविष्ट हो तो नगर की आकुलता और परचक्र (दूसरे राजा) का आगमन (नगर में) होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथेन्द्रधनुःफलं विष्णुधर्मोत्तरे

रात्राविन्द्रधनुश्चेद्व्यभ्रे महाभयाय च ।

यदि रात में मेघरहित आकाश में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो महान् भय होता है ।

वटकणिकायाञ्च वराहः

व्यभ्रजं मरककारि ।

मेघरहित आकाश में दिखाई देने वाला इन्द्रधनुष मरकी करता है ।

वराहसंहितायां च

व्यभ्रे नभसि सुरधनुर्दिवा यदा दृश्यतेऽथ वा रात्रौ ।
प्राच्यामपरस्यां वा तदा भवेत् क्षुद्भयं सुमहत् ॥

जब मेघरहित आकाश में दिन या रात में पूरब दिशा या पश्चिम दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो दुर्भिक्ष का भय होता है ।

मत्स्यपुराणे

निरभ्रे वा तथा रात्रौ श्वेतं याम्योत्तरेण तु ।
इन्द्रायुधं ततो दृष्ट्वा उल्कापातं तथैव च ॥
परचक्रागमं ब्रूयाद्देशोपद्रवमेव च ।

यदि निरभ्र आकाश में रात के समय दक्षिण से उत्तर दिशा तक सफेद इन्द्रधनुष दिखाई दे तथा उल्कापात हो तो परचक्र का आगमन और देश में उपद्रव होते हैं ।

बार्हस्पत्ये

निरभ्रे वा तथा रात्रौ श्वेतमिन्द्रायुधं यदि ।
पूर्वपश्चादुत्तरासु भवेद्दुर्भिक्षतो भयम् ॥

यदि मेघरहित आकाश में रात के समय सफेद इन्द्रधनुष पूरब, पश्चिम या उत्तर दिशाओं में दिखाई दे तो लोगों में दुर्भिक्ष से भय होता है ।

औशनसे तु

प्राच्यादिचतुरो वर्णान् हन्यादिन्द्रायुधं क्रमात् ।
रात्रौ श्वेतं तथा रक्तं पीतं कृष्णं च सर्वतः ॥

पूर्वादि (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर) दिशाओं में रात के समय यदि सफेद, रक्त, पीला और कृष्ण वर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई दे तो क्रमशः ब्राह्मण आदि (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) वर्णों का नाश करता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नारदः

रात्रौ चेन्द्रधनुर्यत्र दृश्यते यदि सत्तम।
अद्भुतं तत्र विज्ञेयं शान्तिं चेमां समारभेत्॥

औदुम्बर्याः सहस्राणि अष्टौ च जुहूयाद्द्विजः।
मध्वक्तानि घृताक्तनि जातवेदांसि मन्त्रवित्॥

विप्राय दक्षिणां दद्याद्धेनुं च वृषभं तथा।
एकरात्रोषितो भूत्वा ततः सम्पद्यते शुभम्॥

विशेषः– मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरवराहसंहितासु वृष्टिविकारविहिता शान्तिरत्र कर्त्तव्येत्युक्तम्। तां च वृष्ट्यद्भुतावर्त्ते लिखिष्यामः।

यदि रात्रि में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो जहाँ दिखाई दे, वहाँ अद्भुत समझना चाहिये। अद्भुत की शान्ति निम्नोक्त प्रकार से करनी चाहिये—

उदुम्बर (गूलर) की समिधा को घृत और मधु से आर्द्र कर एक हजार आठ बार वेदमन्त्रों से मन्त्रज्ञ ब्राह्मणों के द्वारा हवन कराना चाहिये तथा ब्राह्मणों को गाय, बैल तथा प्रचुर दक्षिणा देकर एक रात उपवास करना चाहिये। ऐसा करने से शुभ होता है।

अथ वर्णाद्भुते तु

इन्द्रायुधसवर्णानि वस्त्राण्याभरणानि च।
दद्याद्गाश्च हिरण्यं च तदा तच्छमयेद्भयम्॥

इन्द्रधनुष के दर्शन से उत्पन्न उत्पात के शमन के लिए इन्द्रधनुष के वर्ण के समान वस्त्र और आभूषण ब्राह्मणों को देना चाहिये तथा गाय और सुवर्ण के दान से उसकी शान्ति होती है।

पराशरः

अथेन्द्रधनुषः सद्यः फलं सप्तरात्राद्वा – इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे इन्द्रधनुरद्भुतावर्त्तः।

इन्द्रधनुष का फल सद्यः (तुरन्त = शीघ्र) या सात रातों के भीतर होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ रश्मिदण्डाद्भुतावर्त्तः

वराहसंहितायाम्

रविकिरणजालमरुतां सङ्घातो दण्डवत् स्थितो दण्डः ।
स विदिङ्मुखो नृपाणामशुभो दिक्षु द्विजातीनाम् ॥

शस्त्रभयातङ्ककरो दृष्टः प्राङ्मध्यसन्धिषु दिनस्य ।
शुक्लाद्यो विप्रादीन् यदभिमुखं तां च हन्ति दिशम् ॥

आकाश में सूर्य की किरणों के समूह और हवा के परस्पर संघात से दण्ड की तरह दिखाई देने वाला 'दण्ड' कहलाता है। वह दण्ड यदि विदिशा के अभिमुख दिखाई दे तो राजाओं का और पूर्वादि दिशाओं की ओर दिखाई दे तो ब्राह्मणादि वर्णों का अशुभ करता है। प्रातः, मध्याह्न और सायंसन्ध्या के समय दण्ड दिखाई दे तो शस्त्रभय से आतंकित करता है। शुक्लादि वर्ण का दण्ड क्रमशः ब्राह्मणादि वर्णों का नाश करता है तथा यह दण्ड जिस दिशा की ओर दिखाई देता है, उस दिशा का नाश करता है।

पराशरस्तु

अथ दण्डा धनुर्भिः समानरूपफलाः । विशेषतस्तूभयतो विच्छिन्नो दण्डोऽमूलवान् स्यात् । अपरं धनुरदृश्यात्मत् । दृश्यन्तश्च रश्मयस्तीक्ष्णाग्राश्चन्द्रसूर्ययोः । अन्तस्त्र्यहात् फलं तेषु त्रिषु विद्यात् । घनाः स्निग्धा दीर्घाः परिपूर्णा रक्तनीलाः श्वेतानुगामिनो योगक्षेमाय । रक्ता रूक्षा ह्रस्वा नीचास्तु वर्षाय । काला दुर्भिक्षाय । धूम्रलोहितास्तनवः शस्यस्यापदे । अत्यन्तमानीलकृष्णाः पाण्डुराः पारावतमयूरचित्रवर्णा वा वर्षाय । बहवश्च स्निग्धा द्वौ नीलौ रक्तौ परुषौ वा परचक्रभयाय । तथा च रक्तपरुष एकच्छिद्रो विच्छिन्नो दुर्जातो राजमृत्यवे । विपरीतो राजजन्मने । पुण्डरीकाकार उल्कापाताय । रक्तकपिलौ पीतरक्तौ वाऽत्यन्तगौररूक्षौ राजनिर्याणाय । त्रिवर्णो राजक्षयाय । स्थूलाकारोऽञ्जनवर्णो वर्षसम्पत्तये । अस्तमितमात्रे रश्मिदर्शनं मुख्यामात्यविनाशाय ।
अत्र सामान्या शान्तिः कर्त्तव्या ।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे रश्मिदण्डाद्भुतावर्त्तः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रधनुष के समान रूप और फल वाला दण्ड कहलाता है। 'दण्डस्त्वृजुरिन्द्रचापनिभः' बृहत्संहिता में वराह ने भी कहा है। इन्द्रधनुष के समान; परन्तु दोनों ओर खण्डित और मूलरहित दण्ड होता है। दूसरा धनुष की आकृति से भिन्न होता है और तीसरा धनुष की आकृति का दृश्य, सूर्य और चन्द्र की तीक्ष्ण किरणों के अग्रभाग में होता है। इस तरह तीन प्रकार के दण्ड कहे गये हैं। इन तीनों प्रकार के दण्डों के दर्शन के अनन्तर तीन दिनों के भीतर फल घटता है। घन (अविरल), निर्मल, दीर्घ, रक्त और नील वर्णों से युत तथा श्वेत वर्ण की तरह दिखाई देने वाला दण्ड योगक्षेम करता है। रक्त, रूक्ष, छोटा और नीच दण्ड वृष्टि करता है। काला (नील) वर्ण का दण्ड दुर्भिक्ष करता है। धूम्र और लोहित (रक्त) वर्ण का दण्ड धान्यनाश करता है। अतिशय नीला, कृष्ण, पाण्डु, कपोतवर्ण, मयूर वर्ण या विचित्र वर्ण का दण्ड वृष्टि करता है। अनेक दण्ड निर्मल, वर्णयुत, नीलवर्ण या रक्तवर्ण या रूक्षवर्ण के दो दण्ड एक ही दिन दिखाई दें तो परचक्र (दूसरे राजा) से भय होता है। इसी तरह र... और रूखा वर्ण का एक छिद्रयुत, खण्डित तथा दुर्जाति का दण्ड दिखाई दे तो राजा का मरण करता है और इससे भिन्न दण्ड दिखाई दे तो राजा का जन्म करता है। पुण्डरीक (श्वेत कमल) की तरह दण्ड दिखाई दे तो उल्कापात होता है। रक्त और कपिल, ...ा और रक्त अथवा अत्यन्त गौर और रूखा वर्ण का दण्ड दिखाई दे तो राजा का निर्याण (नाश) होता है। तीन वर्णों का दण्ड दिखाई दे तो राजा का क्षय करता है, स्थूल आकृति का अञ्जन के समान कृष्ण वर्ण का दण्ड वर्षा और सम्पत्तिकारक होता है। सूर्यास्त के समय रश्मिदण्ड दिखाई दे तो मुख्य मन्त्री का विनाश करता है।

इनके शमन के लिए सामान्य शान्ति करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ गन्धर्वनगराद्भुतावर्त्तः

तत्र काश्यपः

बहुवर्णपताकाढ्यं गन्धर्वनगरं महत्।
दृष्टं प्रजाक्षयकरं संग्रामे लोमहर्षणे ॥

यदि अनेक वर्णों के पताके से युत महान् गन्धर्वनगर आकाश में दिखाई दे तो रोंगटे खड़े करने वाले युद्ध में प्रजा का नाश होता है।

वराहसंहितयोस्तु

अनेकवर्णाकृति खे प्रकाशते पुरं पताकाध्वजतोरणान्वितम्।
यदा तदा नागमनुष्यवाजिनां पिबत्यसृक् भूरि रणे वसुन्धरा ॥

जिस समय आकाश में अनेक वर्ण और आकार के पताका, ध्वजा तथा तोरण (पुरद्वार) से युत गन्धर्वनगर दिखाई दे, उस समय युद्ध में हाथी, मनुष्य और घोड़ों का रक्त पृथ्वी अधिक पान करती है।

अथ वर्णफलं वराहसंहितयोः

गन्धर्वनगरमुत्थितमापाण्डुरमशनिपातवातकरम्।
दीप्ते नरेन्द्रमृत्युर्वामोऽरिभयं जयः सव्ये ॥

चौराटविकान् हन्याद्धूमानलशक्रचापाभम्।
सितरक्तपीतकृष्णं विप्रादीनामभावाय ॥

यदि पाण्डुर (श्वेत) वर्ण का गन्धर्वनगर दिखाई दे तो वज्रपात के साथ वायु करता है। दीप्त दिशा में गन्धर्वनगर स्थित हो तो उस दिशा में स्थित राजा का मरण होता है, वाम में स्थित हो तो शत्रुभय और दक्षिण में स्थित हो तो जय होती है।

यदि गन्धर्वनगर धूम, अग्नि या इन्द्रधनुष की कान्ति के समान दिखाई दे तो चोर और वनवासियों का नाश करता है। यदि श्वेत वर्ण का हो तो ब्राह्मणों का, रक्त वर्ण का हो तो क्षत्रियों का, पीत वर्ण का हो तो वैश्यों का और कृष्ण वर्ण का हो तो शूद्रों का नाश करता है।

विशेष– दीप्त दिशा का लक्षण— सूर्योदय से एक प्रहर दिन तक ऐशानी दिशा मुक्तसूर्या, पूर्व दिशा प्राप्तसूर्या और अग्निदिशा ऐष्यत्सूर्या होती है। एक प्रहर के बाद दो प्रहर दिन तक पूर्व दिशा मुक्तसूर्या, आग्नेयी दिशा प्राप्तसूर्या और दक्षिण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिशा ऐष्यत्सूर्या होती है। इसी प्रकार शेष छः प्रहरों में भी जानना चाहिये। मुक्तसूर्या अङ्गारिणी, प्राप्तसूर्या दीप्ता और ऐष्यत् सूर्या धूमिनी एवं शेष पाँच दिशायें शान्ता कहलाती हैं।

पराशरस्तु

उपस्थितायां चेत् सन्ध्यायां दृश्येत कुमारवधम्।
अतीतायां वृद्धस्य राज्ञः। गन्धर्वनगरेण सहैवोदितः
सूर्यः परचक्रागमनं कुर्यात्।

यदि प्राप्तसूर्या (दीप्ता) दिशा में सन्ध्या के समय गन्धर्वनगर दिखाई दे तो राजकुमार का वध एवं मुक्तसूर्या (अङ्गारिणी) दिशा में दिखाई दे तो वृद्ध राजा का वध करता है। गन्धर्वनगर के साथ ही यदि सूर्य उदित हो तो परचक्र (दूसरे राजा) का आगमन (आक्रमण) करता है।

वराहसंहितायाम्

सितखपुरेऽर्कक्रान्ते पुरलाभो भेदने नाशः।
नगरसदृशं सन्ध्याकाले यदा प्रतिदृश्यते
परमधिकृतं गन्धर्वाणां शतघ्निसमाकुलम्।
नरपतिभयं देशे तस्मिँस्तदा परचक्रतो
रुधिरकलिलः संग्रामो भवत्यतिदारुणः॥

यदि सन्ध्या के समय श्वेत गन्धर्वनगर सूर्य से आक्रान्त हो तो पुरलाभ और भेदित हो तो नाश करता है। यदि गन्धर्वनगर शतघ्नी (आयुध) से व्याप्त हो तो उस देश में परचक्र से राजा को भय और रक्तपात करने वाला अत्यन्त भयङ्कर युद्ध कराता है।

अथ दिक्फलं वराहसंहितायाम्

शान्तायां दिशि दृष्टं सतोरणं नृपतिविजयाज।

यदि शान्त दिशा में तोरण (पुरद्वार) से युत गन्धर्वनगर दिखाई दे तो राजा की विजय के लिए होता है।

पराशरः

दीप्तायां दिशि विच्छिन्नरूपं वृक्षाग्रेषु दृश्यते महाभयम्।
ऐशान्यां दिशि अभियोक्तृवधाय। वारुण्यामभियुक्तस्य।
एभ्यस्त्वन्यानि दिशान्ते स्निग्धरूपाण्यविच्छिन्नानि शुभानि विन्द्यात्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि दीप्त दिशा में विच्छिन्न (खण्ड-खण्ड) रूप में वृक्ष के अग्रभाग में गन्धर्वनगर दिखाई दे तो महान् भय करता है। यदि ईशान कोण में दिखाई दे तो अभियोग करने वाले (आक्रमणकारी) का वध एवं पश्चिम दिशा में दिखाई दे तो अभियुक्त (जिस पर आक्रमण किया जाय) का वध करता है। इससे भिन्न दिशा में निर्मल और अखण्डित गन्धर्वनगर दिखाई दे तो शुभ जानना चाहिये।

बृहद्यात्रायां वराहः

सिताद्यं ब्राह्मणादींस्तु विदिग्वर्णस्तु सङ्करान्।
प्रदक्षिणं च यात्रायां जयदं नेष्टमन्यथा॥

सफेद आदि वर्ण का गन्धर्वनगर दिखाई देने पर ब्राह्मण आदि चारो वर्णों के लिए तथा विवर्ण (विकृतियुक्त वर्ण) का गन्धर्वनगर दिखाई दे तो वर्णसङ्करों के लिए अशुभ (नाश) करने वाला होता है। यात्रा के समय प्रदक्षिण (वाम पार्श्व से आगे आकर दक्षिण भाग में आ जाय) गन्धर्वनगर दिखाई दे तो जय करता है; अन्यथा अशुभ करता है।

विशेषः– ब्राह्मणादीन् हन्तीति सम्बन्धः। विदिक्षु विवर्णं चेति विदिग्वर्णम् इति।

तथा च बार्हस्पत्ये

विदिक्ष्वेकं विवर्णं च पीडा ज्ञेया विवर्णिनाम्।
आशाधिकारिणां चैव पीडा ज्ञेया यथाविधि॥

यदि विदिशा में विवर्ण (विकारयुत वर्ण) गन्धर्वनगर दिखाई दे तो विवर्णों (वर्णसङ्करों) को पीड़ा होती है और जिस दिशा में विवर्ण गन्धर्वनगर दिखाई देता है, उस दिशा के अधिपति (राजा) को पीड़ित करता है।

बार्हस्पस्त्ये

प्राग्याम्यापरसौम्यानां गन्धर्वनगरं तथा।
राज्ञः सेनापतेश्चैव युवराजपुरोधसाम्॥
व्यसनं मरणं चापि विज्ञेयमनुपूर्वशः।

पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशाओं में गन्धर्वनगर दिखाई दे तो क्रमशः राजा, सेनापति, युवराज और पुरोहित का व्यसन (पीड़ा) और मरण होता है।

बृहद्यात्रायां वराहः

गन्धर्वनगरं हन्ति प्राक्प्रभृत्यवनीश्वरम्।
बलेशं युवराजं च पुरोहितमिति क्रमात्॥

पूर्वादि दिशाओं में गन्धर्वनगर दृश्य होने पर क्रमशः राजा, सेनापति, युवराज और पुरोहित का नाश करता है अर्थात् पूरब दिशा में दिखाई दे तो राजा का, दक्षिण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में सेनापति का, पश्चिम में युवराज का और उत्तर दिशा में दिखाई दे तो पुरोहित का नाश करता है।

वराहसंहितयोः

उदगादितः पुरोहितनृपबलपतियुवराजदोषदं खपुरम्।
नागरनृपविजयावहमुदग्विदिक्स्थं विवर्णनाशाय॥

यदि उत्तर आदि दिशाओं में गन्धर्वनगर दिखाई दे तो क्रम से पुरोहित, राजा, सेनापति और युवराज का अशुभ करता है।

यदि उत्तर दिशा में गन्धर्वनगर स्थित हो तो नागर राजाओं को विजय देने वाला होता है। विदिशा (ईशान, अग्नि, नैर्ऋत्य और वायव्य) में स्थित हो तो संकर (नीच) जातियों का नाश करता है।

पराशरस्तु

अथ गन्धर्वनगराणि प्राच्याद्यष्टासु दिक्षु प्रादुर्भूतानि क्रमात् फलमावेदयन्ति। क्षुत्पीडामग्निप्रकोपं युवराजवधं तस्करोपद्रवं राजपीडां तपस्विनां भयं भूतागमनं वर्षम् – इति।

पूरब आदि आठ दिशाओं में यदि गन्धर्वनगर दिखाई दे तो क्रम से क्षुत्पीडा (दुर्भिक्ष), अग्निप्रकोप, युवराज का वध, चोर का उपद्रव, राजा को पीड़ा, तपस्वियों को भय, भूतागमन और वर्षा— ये फल समझना चाहिये।

मयूरचित्रे तु

पूर्वस्यां दिशि विस्पष्टगन्धर्वनगरोदये।
पश्चिमस्यां दिशि राज्ञो भयमापद्यते महत्॥
सर्वास्त्वन्यासु दिक्ष्वेवं विपर्यासात् फलं विदुः।

यदि पूरब दिशा में या पश्चिम दिशा में स्पष्ट गन्धर्वनगर दिखाई दे तो राजा को महान् भय होता है। इसी प्रकार अन्य सभी दिशाओं में गन्धर्वनगर दिखाई दे तो विपरीत (अशुभ) फल जानना चाहिये।

बार्हस्पत्ये

सततं दृश्यमानं च राज्ञो राष्ट्रभयावहम्।

हमेशा दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर राजा और देश को भय देने वाला होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितयोः

सर्वदिगुत्थं सततोदितं च भयदं नरेन्द्राणाम्।

यदि सभी दिशाओं में हमेशा गन्धर्वनगर दिखाई दे तो राजाओं को भय देता है।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु गन्धर्वनगरोत्पातेषु सावित्रीमन्त्रकदशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

गन्धर्वनगर से उत्पन्न जिन उत्पातों की शान्ति अनुक्त (नहीं बताई गई) है, उनकी शान्ति के लिए सावित्री मन्त्र से दश लाख हवन आदि अभया नामक शान्ति या उत्पात के फलाफल को जानकर तदनुसार महाशान्ति करनी चाहिये।

फलपाकः

गन्धर्वनगरफलपाको मासत्रयेणेति पराशरादिभिरुक्तम्।

अर्थात् गन्धर्वनगर का फल तीन महीनों तक होता है, ऐसा पराशरादि मुनियों ने कहा है।

वराहसंहितायाम्

गन्धर्वपुरं मासात्– इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे गन्धर्वनगराद्भुतावर्त्तः।

गन्धर्वनगर का फल एक महीना के भीतर होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ निर्घाताद्भुतावर्त्तः

तत्र निर्घातस्वरूपमाह गर्गः

यदाऽन्तरिक्षे बलवन्मरुता मारुतो हतः ।
पतत्यधः स निर्घातो जायते वायुसम्भवः ।।

जब अन्तरिक्ष में बलवान (तेज) वायु से वायु टकराकर नीचे (पृथ्वी पर) गिरती है और उस समय उसके गिरने से जो शब्द (वायु से उत्पन्न) होता है, उसका नाम निर्घात है ।

वराहसंहितायां च

पवनः पवनाभिहतो गगनादवनौ यदा समापतति ।
भवति तदा निर्घातः स च पापो दीप्तविहगरुतः ।।

जब पवन से टकरा कर पवन आकाश से पृथ्वी पर गिरता है, उस समय उसके गिरने से जो शब्द होता है, उसका नाम निर्घात है। यदि वह दीप्त (सूर्याभिमुख स्थित) पक्षियों के शब्द से युत हो तो दुष्ट फल देने वाला होता है ।

पराशरः

अथ निर्घातेषु दिक्कालतिथिनक्षत्रानुबन्धेन चतुर्विधं फलमुपदिशन्ति यावच्छब्दे देशे ।

जिस देश में निर्घात शब्द सुनाई पड़ता है, उस देश में दिशा, काल, तिथि और नक्षत्र के अनुसार चार प्रकार के फल होते हैं ।

तत्र दिक्फलं वटकणिकायाम्

दिशं तापयति पतति यस्याम् ।

जिस दिशा में निर्घात शब्द हो, उस दिशा को पीड़ित करता है ।

पराशरस्तु

तत्र क्रमादष्टासु राजमरणरोगमरककोपक्षयातिवात-पुरोहितवधव्याध्यग्निभयानि ।

पूर्वादि दिशाओं के क्रम से आठो दिशाओं में निर्घात शब्द का फल— राजा का मरण, रोग, मरकी का कोप, क्षय (नाश), अतिवात (आँधी), पुरोहित का वध, रोग और अग्नि का प्रकोप होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायां च

भैरवज़र्जरशब्दो याति यतस्तां दिशं हन्ति ।

जिस दिशा में जर्जर (भग्न भाण्ड की तरह) भयङ्कर निर्घात शब्द हो, उस दिशा का नाश करता है।

गर्गस्तु

यां दिशं चाभिगच्छेत्तु निर्घातो भैरवस्वनः ।
तद्दिश्यान् हन्ति देशाँश्च सर्वं दिक्प्रभवं च यत् ॥

जिस दिशा में भयङ्कर शब्द वाला निर्घात उत्पन्न हो, उस दिशा में स्थित सभी देशों का नाश करता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

अतिभीमो निर्घातो राजमृत्यवे यां च दिशं पतति तां दिशं राजा यायात् ।

अत्यन्त भयङ्कर शब्द वाला निर्घात राजा की मृत्यु के लिए होता है। जिस दिशा में निर्घात गिरे, उस दिशा की ओर राजा को जाना चाहिये।

बार्हस्पत्ये

अष्टौ भवन्ति निर्घातास्तेषामैन्द्रः प्रशस्यते ।
पूर्वेण वृष्टितः शस्यं राज्ञो वृद्धिं च निर्दिशेत् ॥

पूर्वोत्तरेण सौभिक्षं भूमिलाभाय चोत्तरे ।
अपरोत्तरे चौरभयं वाजिनां चाप्युपद्रवः ॥

पश्चिमे तु भयं राज्ञो जलजातिश्च पीड्यते ।
नैर्ऋते शस्यगोस्त्रीणां गणानां च महद्भयम् ॥

दक्षिणे राजपीडा स्याद्वायुं चात्र विनिर्दिशेत् ।
अनलस्य भयं विन्द्याद्यदि स्यात् पूर्वदक्षिणे ॥

दिशाओं के भेद से आठ प्रकार के निर्घात होते हैं। उनमें ऐन्द्र (पूर्व दिशा में उत्पन्न) निर्घात शुभकारक है। पूरब दिशा में निर्घात हो तो वृष्टि से धान्य और राजा की वृद्धि, पूर्वोत्तर (ईशान) दिशा में होने वाला निर्घात सुभिक्ष, उत्तर में होने वाला निर्घात भूमिलाभ, पश्चिमोत्तर दिशा (वायव्य कोण) में चोर का भय और घोड़ों को उपद्रव, पश्चिम में राजा को भय और जलजातियों को पीड़ा, नैर्ऋत्य कोण में धान्य, गाय, स्त्री और गण (समूह) को महान् भय, दक्षिण में राजा को पीड़ा और वायु (आँधी आदि) का भय और यदि पूर्व-दक्षिण (अग्निकोण) में निर्घात हो तो अग्नि का भय जानना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ समयफलं बृहद्यात्रायाम्

हन्यान्नृपपौरराष्ट्रिकान् भृत्याम्भोरुहतस्करद्विजान् ।
वेलाक्रमशो दिनादितः काष्ठां तां च स यत्र भूस्वनः ॥

दिनादि (सूर्योदय) से वेलाक्रम के अनुसार निर्घात होने पर राजा, पौर (नगरवासी), राष्ट्रिक (देशवासी), भृत्य, जलोत्पन्न वस्तु, चोर और ब्राह्मणों का नाश करता है। जिस-जिस दिशा में निर्घात हो, उस दिशा (उस दिशा में स्थित देशवासियों) का नाश करता है।

पराशरस्तु

पूर्वाह्णे सराजका गणा वध्येरन्। मध्याह्नेऽनलभयात् प्रजापालनविनाशः। शस्त्रानावृष्टिरोगदुर्भिक्षैरपराह्णे। राज्ञस्तदनुजीविनां च प्रदोषे। सोपद्रवानावृष्टिर्मध्यरात्रे। लोहजीव्यतया परराात्रे। सन्ध्ययोर्ब्राह्मणानां रौद्रकर्मणां च।

यदि पूर्वाह्ण में निर्घात हो तो गणसहित राजा का वध, मध्याह्न में हो तो अग्निभय से प्रजापालन का नाश, अपराह्ण में शस्त्र, अनावृष्टि, रोग और दुर्भिक्ष से नाश, प्रदोष के समय राजा और राजा के अनुचर का नाश, मध्य रात्रि में उपद्रव और अनावृष्टि, पररात्र (मध्य रात्रि के बाद) में लौहजीवी का नाश एवं दोनों सन्ध्याओं (प्रात: एवं सायंसन्ध्या) में ब्राह्मणों और उग्र कर्म करने वालों का नाश करता है।

गर्गस्तु

यदा सूर्योदये प्राप्ते निर्घातः श्रूयते दिवि।
क्षत्रियान् योधमुख्याँश्च पीडयेत्तु न संशयः॥

प्रहरांशे तु वैश्याँश्च हन्याद्गोजीवनस्तदा।
परिवृत्ते हरौ वैश्यानपराह्णे च दस्यवः॥

जब सूर्योदय के समय निर्घात शब्द आकाश में सुनाई दे तो क्षत्रियों और मुख्य योद्धाओं को नि:सन्देह पीड़ित करता है। दिन के एक प्रहर तक यदि निर्घात हो तो वैश्यों और गोजीवियों (गाय से जीविका चलाने वालों) का, मध्याह्न में निर्घात हो तो वैश्यों का और अपराह्ण में निर्घात हो तो चोरों का नाश करता है।

वराहसंहितायां तु

अर्कोदयेऽधिकरणिकनृपधनियोधाङ्गनावणिग्वेश्यान्।
आप्रहरांशेऽजाविकमुपहन्याच्छूद्रपौराँश्च ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आमध्याह्नाद्राजोपजीविनो ब्राह्मणाँश्च पीडयति।
वैश्यजलदाँस्तृतीये चौरान् प्रहरे चतुर्थे च॥

यदि सूर्योदय-काल में निर्घात हो तो अधिकरणिक, राजा, धनी, शूर, स्त्री, व्यापारी और वेश्याओं का नाश करता है। यदि दिन के प्रथम प्रहर में निर्घात हो तो छाग, आविक (भेड़ पालने वाला), शूद्र और पुरवासियों का नाश करता है। द्वितीय प्रहर में राजा के सेवक और ब्राह्मणों को पीड़ा देता है। तृतीय प्रहर में वैश्य और मेघ का नाश करता है और चतुर्थ प्रहर में चोरों को पीड़ित करता है।

गर्गश्च

नीचानन्याँश्च हन्यात्तु सोऽस्तमेति दिवाकरे।
प्रथमे प्रहरे शस्यानर्धरात्रे तु राक्षसान्॥
रात्रित्रिभागे वैश्याँस्तु प्रत्यूषे शूद्रदस्यवः।

यदि सूर्यास्त के समय निर्घात हो तो नीच जातियों का नाश होता है, रात के प्रथम प्रहर में हो तो धान्यों का नाश, द्वितीय प्रहर में हो तो राक्षसों का नाश, तृतीय प्रहर में हो तो वैश्यों और रात के चतुर्थ प्रहर में हो तो शूद्रों और चोरों का नाश होता है।

वराहसंहितायां तु

अस्तं याते नीचान् प्रथमे यामे निहन्ति शस्यानि।
रात्रेर्द्वितीययामे पिशाचसङ्घान् निपीडयति॥
तुरगकरिणस्तृतीये विनिहन्याद्यायिनश्चतुर्थे च।

यदि सूर्यास्त के समय निर्घात हो तो नीचों का नाश करता है। रात के प्रथम प्रहर में धान्यों का नाश करता है। रात के द्वितीय प्रहर में पिशाचसमूहों का नाश करता है। रात के तृतीय प्रहर में घोड़े और हाथियों का नाश करता है एवं चतुर्थ प्रहर में निर्घात हो तो यायी (गमन करने वालों) का नाश करता है।

अथ तिथिफलं पराशरः

प्रतिपदष्टमीचतुर्दशीषु प्रादुर्भूतो मृदुरितरास्त्वितरः – इति।

विशेषः– मृदुर्मृदुफलः। इतरस्तीव्रफल इत्यर्थः।

यदि प्रतिपत्, अष्टमी और चतुर्दशी तिथियों में निर्घात हो तो मृदु (मन्द फल) होता है तथा इससे भिन्न तिथियों में तीव्र फल (अशुभ) होता है।

अथ नक्षत्रफलं पराशरः

यत्र नक्षत्रे वर्षणं प्रदुष्यात् तस्मिन् वर्षणं विन्द्यात्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिस नक्षत्र में निर्घात वर्षा के समय हो, उस नक्षत्र में वृष्टि होती है अर्थात् मेघरहित आकाश में यदि निर्घात हो तो उस नक्षत्र में वर्षा का नाश करता है।

बार्हस्पत्ये

अनभ्रे वाऽपि निर्घातः पतितो राजमृत्यवे।

मेघरहित आकाश में निर्घात राजा की मृत्यु के लिए होता है।

पराशरः

महास्वनश्च समग्रफलो भवति।

महान् शब्द वाला निर्घात सर्वत्र पूर्ण अशुभ फल देता है।

बार्हस्पत्ये

अत्र रौद्रीं प्रकुर्वीत सुभयां वाऽभयप्रदाम्।

अशुभ करने वाले निर्घात के शमन के लिए अभय देने वाली रौद्री या सुभया नामक शान्ति करनी चाहिये।

बीजवापपरिशिष्टे तु

निर्घातस्य प्रयतने शान्तिं कुर्वीत वैष्णवीम्।
विष्णुं सम्पूजयेत् सम्यग्ब्राह्मणाँश्चापि भोजयेत्॥

निर्घातजन्य अशुभ फलों के शमन के लिए वैष्णवी नामक शान्ति करनी चाहिये। इसमें विष्णु की सम्यक् पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये।

अथ फलपाकसमयमाह पराशरः

निर्घातस्तु त्रिभिर्मासैः – इति।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे निर्घाताद्भुतावर्त्तः।

निर्घात का फल तीन मासों के भीतर घटित होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ सन्ध्याद्भुतावर्त्तः

तत्र सन्ध्यासमयो वराहसंहितायाम्

अर्धास्तमयात् सूर्यात् सन्दृष्टास्तारका यावत्।
तेजःपरिहानिमुखाद्भानो रुद्धोदयो यावत्॥

अर्धास्त सूर्यबिम्ब के बाद आकाश में नक्षत्रगण के अच्छी तरह दिखाई देने तक अर्थात् सायंकाल में प्रकाशाभाव काल तक सायंसन्ध्या और प्रात: काल में नक्षत्रों की स्वल्प कान्ति होने के बाद से अर्धोदित सूर्यबिम्ब होने तक दूसरी (प्रात:सन्ध्या) होती है।

विशेष– यह पद्य सम्प्रति उपलब्ध बृहत्संहिता में नहीं है। इससे अनुमान लगाया जाता है कि उक्त पद्य वटकणिका का है।

तद्यथाह बृहत्संहितायाम्

अर्धास्तमितानुदितात् सूर्यादस्पष्टभं नभो यावत्।
तावत् सन्ध्याकालश्चिह्नैरेतैः फलं चास्मिन्॥

सन्ध्या का मान सामान्यतया २ दण्ड के बराबर होता है।

अथ शुभसूचकलक्षणं वराहसंहितायाम्

शस्ता शान्तद्विजमृगघुष्टा सन्ध्या स्निग्धा मृदुपवना च।

शान्त पक्षी और मृगों के शब्दों से युक्त, निर्मल और मन्द पवन से युक्त सन्ध्या शुभकारक होती है।

पराशरस्तु

निर्वातनिर्मलस्निग्धायां शान्तमृगद्विजायां
प्रसन्नायामनुपहतायां योगक्षेमं विन्द्यात्।

हवारहित, निर्मल, स्निग्ध, शान्त मृग और पक्षी से युत, प्रसन्न, अनुपहत (उत्पातरहित) सन्ध्या योगक्षेम (शुभ) देने वाली होती है।

वराहसंहितायां तु

मन्दपवनावघट्टितचलितपलाशद्रुमा विपवना वा।
मधुरस्वरशान्तविहङ्गमृगरुता पूजिता सन्ध्या।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन्द-मन्द चलती हुई हवा से कम्पित पलाश (पत्तों) से युक्त वृक्ष या वायु से रहित या मधुर शब्द करने वाले शान्त पक्षी और मृगों से युत सन्ध्या शुभ होती है।

वटकणिकायाम्

स्निग्धा प्रशान्तशकुना मृदुमारुता च
सन्ध्या सहस्रकिरणानुसमानवर्णा।
शस्ता पयोदसमये कुरुतेऽतिवर्षं
वृष्टिं रुणद्ध्यशुभदा च विपर्ययेण॥

निर्मल, प्रशान्त शकुन (अन्य शकुनों से रहित), मन्द-मन्द हवा से युक्त और सूर्यकिरण के समान वर्ण वाली सन्ध्या वर्षाकाल में शुभ करने वाली और वर्षा करने वाली होती है तथा उक्त के विपरीत लक्षण वाली सन्ध्या अशुभ करने वाली और वृष्टि-विनाश करने वाली होती है।

अथाशुभसूचकसन्ध्यालक्षणं बार्हस्पत्ये

तमोधूमरजस्काभ्रदीप्तद्विजमृगावृताः।
प्रदीप्तलक्षणाः सन्ध्याः सर्वा एवाहितावहाः॥
भृशमुद्घातिनी सन्ध्या कुरुते विग्रहागमम्।

अन्धकार, धूआँ, रज (धूलि) रूप मेघ (मेघरहित आकाश भी मेघाच्छन्न की तरह), दीप्त मृग और पक्षी से युत (दीप्त = सूर्याभिमुख) और प्रदीप्त (रूक्ष) लक्षणों से युत सन्ध्या अशुभ करती है। ऐसी उक्त लक्षण वाली सन्ध्या विग्रह करने वाली और घात करने वाली होती है।

तथा च

प्रातः प्रदोषाद्रजसा निरुद्धा
अनभ्रवत्योऽपि घनानुरूपाः।
क्रूराश्च सन्ध्या रुधिरप्रकाशा
भयानि राज्ञः प्रतिवेदयन्ति॥

प्रात:सन्ध्या और सायंसन्ध्या धूलियों से व्याप्त, मेघरहित रहने पर भी मेघ की तरह दिखाई देने वाली, क्रूर (प्रदीप्त) और रक्त के समान वर्ण वाली सन्ध्या राजा के लिए भय की सूचना देती है।

वराहसंहितायां तु

पांशुध्वस्ता जनपदनाशं धत्ते रूक्षा रुधिरनिभा वा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धूलियों से ध्वस्त (व्याप्त), रूक्ष और रुधिर के समान वर्ण वाली सन्ध्या जनपद का नाश करती है।

तथा च

गृहतरुतोरणमथने सपांशुलोष्टोत्करेऽनिले प्रबले।
भैरवरावे रूक्षे खगपातिनि चाशुभा सन्ध्या॥

दीप्तविहङ्गशिवामृगघुष्टा दण्डरजःपरिघादियुता च।
प्रत्यहमर्कविकारयुता वा देशनरेशसुभिक्षवधाय॥

अशुभाकृतिघनगन्धर्वनगरनीहारपांशुधूमवृता।
वृष्टिं करोत्यवग्रहमन्यर्त्तौ शस्त्रकोपकरी॥

दीप्तमृगाण्डजविरुता प्राक्सन्ध्या देशनाशमाख्याति।
दक्षिणदिक्स्थैर्विरुताद्ग्रहणाय पुरस्य दीप्तास्यैः॥

गृह, वृक्ष और तोरण (पुरद्वार) को कम्पित कराती हुई, धूलि और मृत्खण्डों से युत, प्रबल, भयङ्कर शब्द वाली, रूक्ष और आकाश से पक्षियों को गिराने वाली हवा सन्ध्या समय में अशुभ फल देने वाली होती है।

यदि सन्ध्याकाल सूर्य के सम्मुख स्थित हुए पक्षी, शृगाल और मृगों के शब्दों से युत, दण्ड (मेघरेखा), धूलि, परिघ आदि (इन्द्रधनुष, गन्धर्वनगर या हिम) से युत हो अथवा प्रतिदिन विकारयुक्त सूर्य से युक्त सन्ध्या हो तो देश, राजा और सुभिक्ष का नाश करती है।

यदि अशुभ आकृति वाले मेघ (दण्ड, परिघ आदि), गन्धर्वनगर, हिम, धूम और धूली से युक्त सन्ध्या वर्षाकाल में हो तो अवृष्टि और अन्य ऋतुओं में हो तो शस्त्र-कोप करती है।

सूर्याभिमुख स्थित मृग और पक्षियों के शब्द से युत प्रात:सन्ध्या देश का नाश करती है तथा सूर्याभिमुख होकर दक्षिण दिशा में स्थित मृग और पक्षियों के शब्दयुत सन्ध्या शत्रुओं द्वारा नगर को ग्रहण कराती है।

हरिवंशे कंसवधनिमित्तम्

प्राक्सन्ध्या परिघग्रस्ता भाभिर्वाधति भास्करम्।

कंसवध के निमित्त प्रात:सन्ध्या परिघरूप मेघखण्डों से ग्रसित (युक्त) थी और छाया से सूर्य को ढक ली थी।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

उभे सन्ध्ये प्रकाशेते दिशो दाहसमन्विते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कौरव और पाण्डवों की सेनाओं के विनाश के रूप में दोनों (प्रात:-सायं) सन्ध्या दिग्दाह से युत होकर प्रकाशित थी।

अथ वर्णफलं वराहसंहितायाम्

शिशिरादिषु वर्णाः शोणपीतसितचित्रपद्मरुधिरनिभाः।
प्रकृतिभवाः सन्ध्यायां स्वर्त्तौ सन्ध्या विकृतिरन्या॥

शिशिर आदि (शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् और हेमन्त) ऋतुओं में क्रमशः शोण (लाल), पीला, सफेद, चित्र (अनेक), कमल की तरह और रुधिर के समान सन्ध्या के वर्ण उक्त ऋतु के क्रम से स्वाभाविक और शुभ होते हैं; अन्यथा अशुभ होते हैं।

पराशरः

स्निग्धा गौरी योगक्षेमाय भवति श्वेतायां वस्त्रवृद्धिः।

निर्मल और गौरवर्ण वाली सन्ध्या योगक्षेम के लिए तथा सफेद वर्ण वाली सन्ध्या वस्त्रवृद्धि के लिए होती है।

बार्हस्पत्ये तु

सन्ध्या कमलकिञ्जल्कतडित्कल्पाः शुभावहाः।

कमल के केशर की तरह या बिजली की तरह कान्ति वाली सन्ध्या शुभ करती है।

वराहसंहितायां तु

कुवलयवैदूर्याम्बुजकिञ्जल्काभा प्रभञ्जनोन्मुक्ताः।
सन्ध्या करोति वृष्टिं रविकिरणोद्भासिता सद्यः॥

नीलकमल, वैदूर्यमणि या कमल के केशर की तरह कान्ति वाली, हवा से रहित और सूर्य के किरणों से प्रकाशित सन्ध्या हो तो उसी दिन वृष्टि होती है।

आषाढीयोगे पराशरः

वैदूर्यरजतहेमप्रभा सन्ध्या प्रावृड्वृद्धये।

वैदूर्यमणि, चाँदी या सुवर्ण के समान कान्ति वाली सन्ध्या वृष्टि-वृद्धि करती है।

मयूरचित्रे

मनःशिला प्रियङ्ग्वाभा हरितालनिभा तथा।
सद्यो वर्षाय सन्ध्या या हरिद्राभाऽरुणा मनाक्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैनशिल पत्थर, प्रियङ्गू (ककुनी या टांगुन) की तरह, हरताल नामक औषधविशेष की तरह तथा हरिद्रा की कान्ति वाली या थोड़ी रक्त वर्ण वाली सन्ध्या उसी दिन वर्षा करती है।

हरिवंशेऽर्जुनपराजयनिमित्तम्

सन्ध्यारागो जपावर्णः।

अर्जुन के पराजय के निमित्त सन्ध्या का वर्ण जपाकुसुम की तरह हो गया था।

लङ्काकाण्डे रावणवधनिमित्तम्

सन्ध्यया चावृता लङ्का जपापुष्पनिकाशया।
दृश्यते सम्प्रदीप्तेव दिवसेऽपि प्रवृद्धया॥

रावणवध के निमित्त जपापुष्प (अड़हुल) की तरह लाल वर्ण की सन्ध्या से लङ्का व्याप्त हो गयी तथा दिन में भी दीप्त (अशुभ) शकुन दिखाई दिये। 'प्रवृद्धया' की जगह पाठान्तर में 'वसुन्धरा' है।

पराशरस्तु

परिमण्डलायां रक्तायां भयम्। हरितायां शस्त्रभयम्। माञ्जिष्ठामग्निम्। पीतायां चतुष्पद्रोगम्। श्यामायां चौरतो भयम्। नीलपीतायामीतिभयम्। हरितालवर्णायां प्रथमामात्यस्य शस्त्रेण वधम्। आम्रकोरकवर्णायां वर्षम्। नीलरक्तायामवग्रहम्। कृष्णायामवर्षम्। त्र्यहं चेत् श्यामा रक्ता गौरी वा स्यात् पशुघातं विन्द्यात्। वातकपिलायामस्तमितमात्रे सूर्ये याऽतिमात्रप्रकाशा स्यात् प्रभा सा नामासौ तस्यां वर्षं विन्द्यात्। प्रत्यूषसि तद्रूपायामेव राज्ञः सेनापतेर्वा वधम्। तथा महावर्षं रूप्यवर्णायां नीलायां वा कृष्णायामनृतौ वर्षणमृता-ववग्रहाय। तथा च नीलमाञ्जिष्ठायामग्निजीविनां वधाय स्यात्। लोहितश्यामायां चौरवृद्धये। एवमेव चतूरागा पञ्चरागा वा।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु सन्ध्योत्पातेषु सावित्रीमन्त्रक-दशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्ति-रौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

यदि सन्ध्याकाल में आकाशमण्डल रक्त वर्ण हो तो लोगों में भय, हरा हो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शस्त्रभय, मजीठे की तरह लाल वर्ण हो तो अग्निप्रकोप, पीला हो तो चतुष्पदों को रोग, श्याम (काला) हो तो चोरभय, नील और पीत वर्ण का हो तो ईतिभय, हरताल (औषधविशेष) के वर्ण का हो तो प्रथम (मुख्य) मन्त्री का शस्त्र से वध, आम्रकोरक (कली) के वर्ण का हो तो वर्षा, नील और रक्त वर्ण का हो तो अवृष्टि, कृष्ण वर्ण का हो तो अवृष्टि, यदि तीन दिनों तक श्याम, रक्त अथवा गौर वर्ण का हो तो पशुओं का नाश जानना चाहिये। हवा से युक्त कपिल वर्ण वाली सन्ध्या में जो सूर्यास्त के बाद अतिशय प्रकाश से युक्त प्रभा नामक सन्ध्या होती है, उसमें वर्षा होती है। इसी प्रकार की प्रातःसन्ध्या राजा अथवा सेनापति का वध करती है। रूप्य (चाँदी) अथवा नील वर्ण की सन्ध्या महावृष्टि करती है। ऋतुभिन्न (वर्षा से भिन्न) काल में कृष्ण वर्ण की सन्ध्या वृष्टि करती है तथा वर्षा ऋतु में अवृष्टि करती है। नील और माञ्जिष्ठ वर्ण की सन्ध्या अग्निजीवियों का वध करती है। लाल और श्याम वर्ण की सन्ध्या चोरों की वृद्धि के लिए होती है। इसी तरह चार या पाँच वर्ण वाली सन्ध्या चोरों की वृद्धि के लिए होती है।

इन सन्ध्योत्पातों के शमन के लिए विशेष शान्तिविधि नहीं बताये जाने की जगह सावित्री मन्त्री के द्वारा दस लाख हवन आदि (दक्षिणा, ब्राह्मणभोजन, दान आदि) अभया नामक शान्ति अथवा महाशान्ति उत्पातों के फलों के बलाबल के अनुसार करनी चाहिये।

अथ विहितविशेषशान्तयः सन्ध्योत्पाता मयूरचित्रे

गोमूत्राभाऽऽज्यभाण्डाभा स्निग्धा हिङ्गुलसन्निभा।
लाक्षा विद्रुमकान्तिश्च सन्ध्या वृष्ट्यै रणाय च॥

तमोयुक्ता रजोयुक्ता सन्ध्या राष्ट्रनृपान्तकृत्।
ऋतुस्वभावजा सा तु सुभिक्षक्षेमकारिणी॥

अत्र साधारणी शान्तिः कर्त्तव्या गर्गभाषिता।

तत्रैव

निष्प्रभा वा यदा सन्ध्या रूक्षा भस्मरजःसमा।
तदा पित्तज्वरोद्भूतैः पीड्यन्ते व्याधिभिर्जनाः।
शान्तिश्चतुर्दशी कार्या सन्ध्योल्कापातचोदिता॥

सप्ताहात् सन्ध्ययोः फलपाकः – इति प्राकावर्त्ते वक्ष्यामः।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे सन्ध्याद्भुतावर्त्तः।

गोमूत्र की कान्ति के समान, घृतभाण्ड के समान कान्ति वाली, निर्मल, हिङ्गु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के समान, लाक्षा (लाह) और विद्रुम की कान्ति वाली सन्ध्या वृष्टि और युद्ध के लिए होती है। उक्त कान्ति वाली सन्ध्या ऋतुस्वभाव के अनुसार होने पर सुभिक्ष और कल्याण देने वाली होती है। इस सन्ध्या से उत्पन्न उत्पातों के लिए गर्ग मुनि- कथित साधारणी शान्ति करनी चाहिये।

यदि प्रभाहीन, रूक्ष, भस्म या धूलि के समान सन्ध्या दिखाई दे तो पित्त-ज्वर से उत्पन्न व्याधियों से लोग पीड़ित होते हैं। इन उत्पातों के लिए चतुर्दशी शान्ति करनी चाहिये।

सन्ध्योत्पातों का फल सात दिनों में होता है। इसे विशेष रूप में पाकावर्त्त में कहा जायगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ सन्ध्याकालिकरविकिरणाद्भुतावर्त्तः

तत्र पराशरः

स्निग्धाः परिपूर्णाः शुक्ला माञ्जिष्ठवर्णाः पीता
अभ्यन्तरगामिनो रश्मयः शस्यन्ते ।

यदि निर्मल, परिपूर्ण, शुक्ल, माञ्जिष्ठ वर्ण के समान पीली और आभ्यन्तरगामी (दक्षिणावर्त्त) सूर्यकिरण सन्ध्याकाल में दिखाई दे तो शुभ होता है।

वराहसंहितायां तु

उद्द्योतिनः प्रसन्ना ऋजवो दीर्घाः प्रदक्षिणावर्त्ताः ।
किरणाः शिवाय जगतो वितमस्के नभसि भानुमतः ॥

शुक्लाः करा दिनकृतो दिवादिमध्यान्तगामिनः स्निग्धाः ।
अव्युच्छिन्ना ऋजवो वृष्टिकरास्ते त्वमोघाख्या ॥

यदि अन्धकाररहित आकाश में प्रकाशयुक्त, निर्मल, स्पष्ट, दीर्घ और दक्षिणावर्त्त क्रम से परिवेष्टित सूर्य की किरण हो तो वह संसार का कल्याण करने वाली होती है।

सम्पूर्ण आकाश को व्याप्त करने वाली, निर्मल, अखण्डित और स्पष्ट सूर्य की शुक्ल किरण अमोघसंज्ञक (शुभ फल देने वाली) वर्षा करने वाली होती है।

पराशरः

रूक्षा विच्छिन्नास्तनवो ह्रस्वा धूमाभा लोहिता विवर्णा गर्हिताः ।

रूक्ष, खण्डित, सूक्ष्म, छोटी, धूयें के समान रक्त और विवर्ण सूर्य की किरण हो तो अशुभ होते हैं।

वराहसंहितायाम्

विच्छिन्नविषमविध्वस्तविकृतकुटिलापसव्यपरिवृत्ताः ।
तनुह्रस्वविकलकलुषाश्च विग्रहावृष्टिदाः किरणाः ॥
कल्माषबभ्रुकपिला विचित्रमाञ्जिष्ठहरितशबलाभाः ।
त्रिदिवानुबन्धिनो वृष्टयेऽल्पभयदास्तु सप्ताहात् ॥
ताम्रा बलपतिमृत्युं पीतारुणसन्निभाश्च रुग्व्यसनम् ।
हरिताः पशुशस्यवधं धूमसवर्णा गवां नाशम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माञ्जिष्ठाभाः शस्त्राग्निसम्भ्रमं बभ्रवः पवनवृष्टिम्।
भस्मसदृशास्त्ववृष्टिं तनुभावं शबलकल्माषाः ॥

यदि सन्ध्याकाल में खण्ड-खण्ड, विषम, वर्णरहित, विकारयुत, कुटिल, अप्रदक्षिण क्रम से परिवेष्टित, सूक्ष्म, छोटी, शक्तिरहित और मलिन सूर्य की किरणें हों तो मनुष्यों में परस्पर विरोध और वृष्टि को करती हैं।

यदि कल्माष (पीला, श्वेत और काला वर्णमिश्रित), भूरी, पीली, विचित्र, मजीठे की तरह हरी, शबल (काला-श्वेत मिश्रित) और सम्पूर्ण आकाश को व्याप्त करने वाली सूर्यकिरणें दिखाई दें तो सात दिन बाद से वृष्टि और थोड़ा भय करती हैं।

यदि सूर्यकिरणें ताम्र वर्ण की हों तो सेनापति की मृत्यु, पीली और लाल रंग के सदृश हों तो रोगों से पीड़ा, हरे रंग के समान हों तो पशु और धान्यों का विनाश, धूम्र वर्ण के समान हों तो गायों का नाश, मजीठ वर्ण की हों तो शस्त्र और अग्नि-भय, बभ्रु (पीली) वर्ण की हों तो हवायुक्त वर्षा, भस्म के समान हों तो अवृष्टि, शबल और कल्माष (सफेद, काली, नीली और पीली— ये सब मिश्रित) वर्ण की हों तो बहुत ही अल्प वर्षा होती है।

पराशरः

बन्धुजीवनिकाशेन तपनीयनिभेन वा।
उदये रजसा सूर्यः संवृतः शस्त्रमावहेत्॥

बन्धूकपुष्प की तरह या सुवर्ण की तरह कान्ति वाली धूलियों से उदयकालिक सूर्य संवृत (ढँका हुआ) हो जाय तो शस्त्रभय होता है।

वराहसंहितायां तु

बन्धूकपुष्पाञ्जनचूर्णसन्निभं सन्ध्यं रजोऽभ्येति यदा दिवाकरम्।
लोकस्तदा रोगशतैर्निपीड्यते शुक्लं रजो लोकविवृद्धिशान्तये ॥

यदि बन्धूकपुष्प या अञ्जन की तरह होकर धूली सूर्य की तरफ जाय तो लोग सैकड़ों रोगों से पीड़ित होते हैं तथा श्वेत वर्ण की होकर धूली सूर्य की तरफ जाय तो लोगों की वृद्धि और शान्ति के लिए होती है।

तथा च पराशरः

शङ्खचूर्णनिकाशेन रजसा संवृतो रविः।
राज्ञो विजयमाख्याति वृद्धिं जनपदस्य च॥

शङ्खचूर्ण के समान शुक्ल वर्ण वाली धूलियों से यदि सूर्य आवृत्त हो तो राजा की जय और जनपद की वृद्धि होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शान्तिः

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु सन्ध्याकालिकरविकिरणाद्भुतेषु सावित्रीमन्त्रकदशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या ।

सन्ध्याकलिक सूर्यकिरणों से उत्पन्न अद्भुतों की विशेष शान्ति नहीं कहने की स्थिति में सावित्रीमन्त्र के द्वारा दस लाख हवन आदि अभया नामक शान्ति या महाशान्ति उत्पातों के फलों के बलाबल के अनुसार करनी चाहिये ।

फलपाकः

सूर्यरश्मीनां त्रिरात्राभ्यन्तरे फलपाक इति रश्मिदण्डाद्भुतावर्त्ते उक्तम् ।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्वल्लालसेनदेवविरचितेऽद्भुतसागरे सन्ध्याकालिकरविकिरणाद्भुतावर्त्तः ।

सूर्यरश्मियों से उत्पन्न अद्भुतों का फलपाक तीन रातों के अन्दर होता है, ऐसा रश्मिदण्डाद्भुतावर्त्त में कहा गया है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ दिग्दाहाद्भुतावर्त्तः

तत्र दिग्दाहस्वरूपं बार्हस्पत्ये

सदाऽस्तमित आदित्ये वह्निज्वाला प्रदृश्यते।
दिशां दाहं तु तं विन्द्याद्भार्गवस्य वचो यथा॥

सूर्यास्त के अनन्तर यदि अग्नि की ज्वाला की तरह दिखाई दे तो उसे दिग्दाह जानना चाहिये, ऐसा भार्गव का कथन है।

शुभसूचकदिग्दाहलक्षणं वराहसंहितायाम्

नभः प्रसन्नं विमलानि भानि प्रदक्षिणं वाति सदागतिश्च।
दिशां च दाहः कनकावदातो हिताय लोकस्य सपार्थिवस्य॥

यदि आकाश प्रसन्न (निर्मल) हो, नक्षत्र विमल (निर्मल) हों, दक्षिणावर्त्त क्रम से घूमती हुई हवा हो और उस समय दिग्दाह हो तो राजा के साथ सब लोगों का हित करने वाला होता है।

अथ वर्णफलं वराहसंहितयोः

दाहो दिशां राजभयाय पीतो देशस्य नाशाय हुताशवर्णः।
यश्चारुणः स्यादपसव्यवायुः स शस्यनाशं प्रकरोति दृष्टः॥

यदि दिग्दाह पीले वर्ण का हो तो राजा के भय के लिए, अग्नि वर्ण का हो तो देशनाश के लिए और बाँयीं तरफ की वायु के साथ रक्त वर्ण का दिखाई दे तो धान्यों का नाश करता है।

बार्हस्पत्ये तु

श्वेताः पीताश्च रक्ताश्च दाहाः कृष्णाश्च वर्णतः।
ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रविनाशाय प्रकीर्त्तिताः॥

रक्ताः शस्त्रभयं कुर्युः पीता व्याधिप्रकोपनाः।
अग्निवर्णास्तथा कुर्युरग्निशस्त्रभयं महत्॥

नेष्टाः क्षतजमाञ्जिष्ठबन्धुयावकवर्णकाः।
सुपीतिपरुषश्याममेघवारणसन्निभाः॥

सर्वा एव क्षुधारोगमृत्युशस्त्राग्निकोपनाः।
ऋतौ तु वर्षं तीव्रं स्यात् सैन्यविद्रव एव वा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्वेत वर्ण के दिग्दाह ब्राह्मणों के नाश के लिए, पीत वर्ण के क्षत्रियों के विनाश के लिए, लाल वर्ण के वैश्यों के नाश के लिए और कृष्ण वर्ण के दिग्दाह शूद्रों के नाश के लिए होते हैं।

रक्त वर्ण के दिग्दाह शस्त्रभय करते हैं, पीत वर्ण के व्याधियों के प्रकोप करते हैं, अग्निवर्ण के दिग्दाह अतिशय अग्नि और शस्त्रभय करते हैं।

रुधिर के समान, मजीठ के समान, बन्धूकपुष्प या यावकपुष्प के वर्ण के समान, अत्यन्त पीला, रूक्ष, श्याम वर्ण, मेघ वर्ण और हाथी के समान वर्ण वाले दिग्दाह क्षुधा, रोग, मृत्यु, शस्त्र और अग्नि के प्रकोपों को देने वाले ये सभी वर्ण अनिष्ट होते हैं। वर्षाकाल में उक्त वर्ण वाले दिग्दाह वृष्टिकारक अथवा सेनाओं में तीव्र विग्रहकारक होते हैं।

अथ छायाव्यञ्जकदिग्दाहफलं वराहसंहितायाम्

योऽतीव दीप्त्या कुरुते प्रकाशं छायामपि व्यञ्जयतेऽर्कवद्यः।
राज्ञो महद्वेदयते भयं स शस्त्रप्रकोपं क्षतजानुरूपः॥

जो दिग्दाह अपनी अतिशय कान्ति से प्रकाशित होता है और सूर्य के समान दृश्यमान द्रव्य की छाया को भी प्रकाशित करता है, वह राजा को अत्यधिक भय देता है तथा रक्त वर्ण का हो तो शस्त्र का भय होता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

अतिदीप्तच्छायाव्यञ्जके राजमरणं विन्द्यात्।

यदि अतिशय कान्ति से दिग्दाह छाया को प्रकाशित करे तो राजा की मृत्यु होती है।

अथ दिक्फलं बार्हस्पत्ये

दिक्षु चौरैः प्रपीड्यन्ते यथादिग्देशभक्तयः।
शकुनज्ञाननिर्दिष्टाः ये च तत्राधिकारिणः॥

विशेषः– दिगधिकारिकान् सर्वान् शाकुनाद्भुतावर्ते वक्ष्यामः।

दिग्दाह अपनी दिशा और देश में (भक्ति के अनुसार), जो शकुन ज्ञान के लिए बताये गये हैं, स्थित अधिकारियों (राजाओं) को तथा लोगों को चोरों से पीड़ित करता है।

वराहसंहितायाम्

प्राक् क्षत्रियाणां सनरेश्वराणां प्राग्दक्षिणे शिल्पिकुमारपीडा।
याम्ये सहोग्रैः पुरुषैश्च वैश्या दूताः पुनर्भूप्रमदाश्च कोणे॥

पश्चात्तु शूद्राः कृषिजीविनश्च चौरास्तुरङ्गैः सह वायुदिक्स्थैः।
पीडां व्रजन्त्युत्तरतश्च विप्राः पाखण्डिनः स्युर्वणिजश्च शार्व्याम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि पूर्व दिशा में दिग्दाह दिखाई दे तो वह राजा के साथ सभी क्षत्रियों को पीड़ित करता है। आग्नेय कोण में दिखाई दे तो शिल्पी और कुमारों को पीड़ित करता है। दक्षिण दिशा में दिखाई दे तो क्रूर पुरुष और वैश्यों को पीड़ित करता है। नैर्ऋत्य कोण में दिखाई दे तो दूत और पुनर्भू स्त्री (जो अक्षतयोनि होकर दोबारा शादी करती है) को पीड़ित करता है। पश्चिम दिशा में दिखाई दे तो शूद्र और किसानों को पीड़ित करता है। वायुकोण में दिखाई दे तो चोर और घोड़ों को पीड़ित करता है। उत्तर दिशा में दिखाई दे तो ब्राह्मणों को पीड़ित करता है और ईशान कोण में दिखाई दे तो पाखण्डी और वणिजों को पीड़ित करता है।

पराशरस्तु

अथ दिग्दाहेषु प्राच्यादिष्वष्टासु दिक्षु दह्यमानासु विद्यात् तत्रैव देशे। अष्टमासान्तरादनावृष्टिभयं त्रिमासाद्रोगं महोत्पातं च नवमासादग्निप्रकोपं दशमासाद्बलक्षयं मासाद्राज्ञः शस्त्रेण भयम्। अष्टाभ्यः सर्वतो भयं सप्तभ्यो युवराजभयं षड्भ्यः कन्यानां भयम्। सप्ताहात् सर्वासु चावर्षम्।

पूर्वादि आठों दिशाओं में दिग्दाह होने पर तत्तद्दिशाओं में अशुभ फल जानना चाहिये। यदि पूर्व दिशा में दिग्दाह हो तो आठ मासों तक उस दिशा में स्थित देशों में अवृष्टि का भय, अग्निकोण में हो तो तीन महीनों तक रोग और महान् उत्पात का प्रकोप, दक्षिण में हो तो नौ महीनों तक अग्निप्रकोप, नैर्ऋत्य में दस मासों तक सेना का नाश, पश्चिम में एक मास में राजा को शस्त्र से भय, वायव्य में आठ महीनों में उक्त सभी प्रकोपों से भय, उत्तर में हो तो सात महीनों में युवराज को भय और ईशान में हो तो छः महीनों में कन्याओं को भय होता है और सभी दिशाओं का दिग्दाह सात दिनों तक अवृष्टि करता है।

बार्हस्पत्ये

दिशः सर्वाः प्रदह्यन्ते अक्षेमाय भयाय च।

सभी दिशाओं के दिग्दाहयुत होने पर अकल्याण और भय होते हैं।

हिरण्यकशिपोर्वधाय सकलाकाशव्यापी दिग्दाहोऽभूत्। तथा च हरिवंशे

सग्रहं सहनक्षयं प्रजज्वाल नभो निशि।

हिरण्यकशिपु के वध के निमित्त रात में ग्रह-नक्षत्रसहित समस्त आकाश दिग्दाह से प्रज्वलित हो गया।

मयूरचित्रे तु

विदिक्षु च दिशां दाहस्त्रिरात्रं यदि दृश्यते।
शस्त्रसम्पातमाचष्टे दुर्भिक्षमरकं तथा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विदिशाओं में यदि दिग्दाह दिखाई दे तो शस्त्र, दुर्भिक्ष और मरकी का भय होता है।

बार्हस्पत्ये

यथोक्तं तु महाशान्तिर्यथोक्तविधिना कृता।
सर्वं दिग्दाहजं घोरं शमयेत् सा सदक्षिणा॥

विशेषः– यथोक्तेति— अन्तरिक्षोत्पातविहिताऽभयाख्या वा महाशान्तिरित्यर्थः।

सभी दिग्दाहों से उत्पन्न भयों के शमन के लिए अभया शान्ति या महाशान्ति करके ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी चाहिये।

मयूरचित्रे

गगने मेघसञ्छन्ने दिग्दाहश्चेन्महोदयः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ जायते नृपतेर्वधः॥

द्वितीया शान्तिरुक्ता या सा च दिव्यप्रचोदिता।
वर्षारात्रौ च दिग्दाहे दुर्दिने नृपतेर्वधः॥

वर्षारात्रेषु निर्ह्रदि दिशां दाहो महान् भवेत्।
क्षिप्रं च भयमाख्याति देशस्य च नृपस्य च॥

अत्र साधारणी शान्तिः कर्त्तव्या गर्गभाषिता।

दिन में अथवा रात में मेघाच्छन्न आकाश में महान् दिग्दाह हो तो राजा का वध होता है। इसकी शान्ति के लिए दिव्योक्त द्वितीया शान्ति करनी चाहिये।

वर्षा वाली रात या दुर्दिन में दिग्दाह होने पर राजा का वध होता है। वर्षारात्रि में महान् दिग्दाह हो तो देश और राजा के लिए शीघ्र भय होता है। इसके शमन के लिए गर्गोक्त साधारणी शान्ति करनी चाहिये।

फलपाकः

'षण्मासा दिग्दाहफलम्' इति पाकावर्त्ते वक्ष्यामः।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-
विरचितेऽद्भुतसागरे दिग्दाहाद्भुतावर्त्तः।

इस दिग्दाह का फल छः मासों तक होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ छायाद्भुतावर्त्तः

मत्स्यपुराणे

विरजस्के रवौ व्यभ्रे यदा छाया न दृश्यते।
दृश्यते तु प्रतीपा वा तदा देशभयं भवेत्॥

यदि धूलिरहित (स्वच्छ) और मेघरहित आकाश में निर्मल सूर्य के स्थित रहने पर भी छाया नहीं दिखाई दे अथवा विपरीत छाया दिखाई दे तो देशभय होता है।

अथर्वणाद्भुते च

यदा वाऽनभ्रविमले सूर्ये छाया न दृश्यते।
दृश्यते सा प्रतीपा वा तदा देशभयं भवेत्।

जब मेघरहित आकाश में निर्मल सूर्य के रहने पर भी छाया नहीं दिखाई दे या किसी दृश्यमान वस्तु की छाया विपरीत (सूर्याभिमुख) दिखाई दे तो देश का भय होता है।

वराहसंहितायां च

यद्यमलेऽर्कच्छाया न दृश्यते प्रतीपा वा।
देशस्य तस्य सुमहद्भयमायातं विनिर्देश्यम्॥

यदि निर्मल (पूर्ण स्पष्ट किरणयुक्त) सूर्यबिम्ब से किसी भी दृश्यमान वस्तु की छाया नहीं दिखाई दे अथवा विपरीत छाया दिखाई दे तो उस देश के लिए महान् भय आया है— ऐसा आदेश करना चाहिये।

पराशरस्तु

दिवा व्यभ्रे विरजसि वा रवौ छायाऽदर्शनं
तत्प्रातिलोम्यदर्शनं वा जनमारभयम्।

दिन में मेघरहित तथा धूलिरहित आकाश के होने पर भी सूर्य में छाया नहीं दिखाई दे या विपरीत छाया का दर्शन हो तो लोगों की मरकी का भय होता है।

मत्स्यपुराणे हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

यदा च सर्वभूतानां छाया न परिवर्त्तते।
अपराह्णगते सूर्ये लोकानां युगसंक्षये॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब सूर्योदय होने के बाद से दिन के पूर्वाह्न में सभी प्राणियों की छाया नहीं दिखाई दे तब अपराह्न में सूर्य के जाते ही सभी लोकों का युगसंक्षय (प्रलय) होता है।

विशेषः– मत्स्यपुराणाद्युक्ता सूर्येन्दुपर्जन्यसमीरणयोगात्मिका वृष्ट्यद्भुतावर्त्ते लिखिता शान्तिरत्र कर्त्तव्या।

मयूरचित्रे तु

छाया वै यत्र भूतानां परिवृत्तिं न गच्छति।
अपराह्नगते सूर्ये न च छायाऽवलम्बते॥
अमात्यसार्थवाहानां श्रेष्ठानां च वदेद्वधम्।
प्राजापत्या ततः शान्तिरभीक्ष्णकलहोदिता॥

विशेषः– छायाद्भुतानामनुक्तफलपाकसमयविशेषत्वात् षाण्मासिकः फलपाको बोद्धव्यः।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे छायाद्भुतावर्त्तः।

यदि दिन के पूर्वाह्न में और अपराह्न में सूर्य के रहने पर भी प्राणियों की छाया नहीं बने तो मन्त्री, सार्थी, वाहन और श्रेष्ठ व्यक्तियों का वध कहना चाहिये। ऐसा होने पर प्राजापत्य शान्ति बार-बार करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ तमोधूमरजोनीहाराद्भुतावर्त्तः

तत्र पराशरः

अथ तमांसि स्थानदिग्वर्णविशेषैः शुभाशुभं दर्शयति प्रजानाम्। स्थानफलमाह भूम्याश्रिते तमसि वर्षं विन्द्यात्। नभसि महावर्षम्।

तम (अन्धकार) शुभाशुभ फलस्थान, दिशा और वर्णविशेष के अनुसार प्रजाओं में दिखाता है।

यदि भूमि पर आश्रित तम दिखाई दे तो वर्षा होती है। आकाश में तम दिखाई दे तो महावर्षा होती है।

मत्स्यपुराणपद्मपुराणहरिवंशेषु तारकामययुद्धे देवानां पराजयनिमित्तम्

विवेशरूपिणी काली कालमेवावगुण्ठता।
द्यौर्न भात्यभिभूतार्का घोरेण तमसाऽऽवृता॥

तारका एवं मयासुर के साथ देवताओं की पराजय के निमित्त घोर अन्धकार से व्याप्त सूर्य के हो जाने से आकाश दिखाई नहीं देता था, उस समय ऐसा प्रतीत होता था मानो काल को भी ग्रसित करने वाली साक्षात् काली ही सर्वत्र अन्धकार रूप में अवतरित हुई है।

पराशरः

शरदन्नप्राचुर्यमुदक्चराणां च प्राणिनामुपद्रवम्।
पर्वतौषधीनामभावं ग्रामनगरजनपदपीडाम्।

यदि दिन में अन्धकार दिखाई दे तो शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाले अन्नों की प्रचुरता और जलचर जीवों का उपद्रव होता है। पर्वतीय औषधियों का अभाव, ग्राम, नगर, जनपद आदि को पीड़ा होती है।

आरण्यककाण्डे जनस्थाननिवासिनां वधनिमित्तम्

तमसा चैव घोरेण समुद्भूतेन सर्वतः।
प्रच्छादितं जनस्थानं नीचाकाशे समन्ततः॥

जनस्थाननिवासियों के वध के निमित्त उत्पन्न घोर अन्धकार से आकाश के नीचे चारो ओर जनस्थान आच्छादित हो गया था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मत्स्यपुराणे च

अनैशानि तमांसि स्युर्यत्र तच्चाशु नश्यति ।

(अकारण) दिन में जहाँ अन्धकार दिखाई दे, वहाँ शीघ्र ही सबों का नाश करता है।

अथ दिक्फलं पराशरः

दिक्षु जनपदपीडनम् ।

जिस दिशा में अन्धकार हो, उस दिशा के जनपद को पीड़ा होती है।

आदिकाण्डे परशुरामपराजयनिमित्तम्

दिशः सतिमिराश्चासन् न तताप दिवाकरः ।[१]

परशुराम के पराजय के निमित्त सभी दिशायें अन्धकारमय हो गयीं तथा सूर्य प्रकाशहीन हो गये।

मत्स्यपुराणपद्मपुराणहरिवंशेषु तारकामययुद्धे देवानां पराजयनिमित्तम्

तिमिरौघपरिक्षिप्ता न राजन्ते दिशो दश ।

तारकासुर और मयासुर के युद्धों में देवताओं की पराजय के निमित्त अन्धकारसमूहों से व्याप्त होकर दसों दिशायें प्रकाशरहित (अन्धकारमय) हो गयीं।

गदापर्वणि दुर्योधनवधनिमित्तम्

बभूवुश्च दिशः सर्वास्तिमिरेण समावृताः ।

सभी दिशायें अन्धकार से व्याप्त हो गयीं।

अथ वर्णफलं पराशरः

पांशुरजोऽरुणप्रभेषु वृष्टिं श्वेते ब्राह्मणपीडामितरवर्णवृद्धिं लोहिते शस्त्रकोपं नीले शस्त्रक्षयं वर्षणं च प्रदोषे महाभयम् ।

यदि धूलि-कण लाल वर्ण की कान्ति की तरह हो तो वृष्टि, सफेद हो तो ब्राह्मणों को पीड़ा तथा अन्य (क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) वर्णों की वृद्धि, लोहित वर्ण का हो तो शस्त्रकोप, नील वर्ण का हो तो शस्त्र का नाश और वृष्टि तथा प्रदोष के समय धूली दिखाई दे तो महान् भय होता है।

---

१. नेदं पद्यं वाल्मीकीये उपलभ्यते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मत्स्यपुराणे

रजसा वाऽपि धूमैर्वा दिशो यत्र समाकुलाः ।
आदित्यचन्द्रताराश्च विवर्णा भयवृद्धये ॥

यदि धूलि से अथवा धूमों से दशो दिशा व्याप्त होकर सूर्य, चन्द्र और तारागण विवर्ण हो जायँ तो भय की वृद्धि होती है ।

द्रोणपर्वणि द्रोणवधनिमित्तम्

ततस्तुमुलमाकाशमावृणोत् सदिवाकरम् ।
वातोद्धतं रजस्तीव्रं कौशेयनिकरोपमम् ॥[1]

उसके बाद घोर अन्धकार से सूर्यसहित सम्पूर्ण आकाश आच्छादित हो गया और हवा के द्वारा उड़ायी गयी धूलि रेशमी वस्त्र की तरह व्याप्त हो गयी अर्थात् सम्पूर्ण आकाश धूलिमय हो गया ।

मत्स्यपुराणपद्मपुराणयोर्हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

न प्रकाशन्ति दिशो रक्तरेणुसमाकुलाः ।

रक्त वर्ण की धूलियों से व्याप्त दिशायें प्रकाशित नहीं होती थीं ।

आग्नेयपुराणेऽप्येवम् । हरिवंशे कंसवधनिमित्तम्

अपराह्णगते सूर्ये लोकानां क्षयकारिणि ।
न प्रकाशन्ते च दिशो रक्तरेणुसमाकुलाः ॥

सूर्य के अपराह्ण में रहने पर रक्त वर्ण की धूलियों से व्याप्त दिशायें प्रकाशित नहीं होती थीं । ऐसा लोगों के नाश के लिए होता है ।

आदिकाण्डे परशुरामपराजयनिमित्तम्

रजसा च जगत् कृष्णं भस्मनैवावकीर्यते ।

धूलियों से व्याप्त होकर समस्त संसार भस्म की तरह कृष्ण वर्ण का दिखाई देने लगा ।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

विष्वग्वाताश्च वान्त्युग्रा रजो नाप्युपशाम्यति ।

सर्वव्यापी उग्र हवा चलने लगी तथा धूलियाँ उड़ने लगीं ।

अत्र तमोधूमाद्युत्पातेषु सावित्रीमन्त्रक-

---

१. नेदं पद्यमुक्तस्थले उपलभ्यते ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्ति-रौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या ।

तम (अन्धकार), धूम, रज आदि से उत्पन्न उक्त उत्पातों के शमनार्थ सावित्री मन्त्र द्वारा दस लाख हवन आदि द्वारा अभया नामक शान्ति अथवा महाशान्ति उत्पातों के फल की गुरुता एवं लाघवता को जानकर तदनुसार करनी चाहिये ।

वराहेण त्वग्निविकृतप्रकरणमध्ये उक्तम्

धूमोऽग्निसमुत्थो रजस्तमश्चाग्निजं महाभयम् ।

यदि आग के विना धूआँ अथवा दिन में धूली या अन्धकार दिखाई दे तो अधिक भय होता है ।

विशेषः– इति (उक्त) वाक्यं लिखित्वा 'मन्त्रैराग्नेयाद्यैः'— इत्यादिभिराग्नेयी शान्तिर्विहिता । तां चाग्न्यद्भुतावर्त्ते लिखिष्यामः— इति ।

उक्त वाक्य की शान्ति के लिए बृहत्संहिता के उत्पाताध्याय श्लोक-२४ में उक्त मन्त्र द्वारा शान्तिविधि बतायी गई है, जो अद्भुतसागर के अग्न्यद्भुतावर्त्त में लिखी जायेगी ।

फलपाकः

अत्रानुक्तफलपाकसमयविशेषयोस्तमोनीहारयोरान्तरिक्षत्वात् षाण्मासिकः फलपाकः ।

यहाँ तम-नीहार के फलपाक के विशेष रूप से उद्धृत नहीं रहने तथा तम और नीहारजनित उत्पात के आन्तरिक्ष उत्पात होने के कारण छः मासों में फलपाक जानना चाहिये ।

धूमरजयोस्तु फलपाकसमयो गार्गीये

धूमिकापांशुवर्षेषु फलं मासाद्विपच्यते ।

विशेषः– वराहसंहितायामप्येवम् ।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे तमोधूमरजोनीहाराद्भुतावर्त्तः ।

धूम और रजोवर्षण का फल एक मास में होता है। ऐसा ही वराह ने भी कहा है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथोल्काद्भुतावर्त्तः

तत्रोल्कास्वरूपमाह गर्गः

अस्त्राणि विसृजन्त्येते शुभाशुभनिवेदकाः ।
लोकपाला महात्मानो लोकानां ज्वलितानि तु ॥

महात्मा लोकपाल लोगों के शुभाशुभ फल-ज्ञान के लिए जिन प्रज्वलित अस्त्रों को छोड़ते हैं, उसी को उल्का कहते हैं।

वटकणिकायां तु वराहः

अस्त्राणि लोकपाला लोकाभावाय यानि विसृजन्ति ।
तान्युल्काः केषाञ्चित् पुण्यकृतस्ते च्युताः स्वर्गात् ॥

लोकपाल लोगों के अशुभ कर्मों के फलों के सूचक उत्पातरूप में जो छोड़ते हैं, उन्हें उल्का कहते हैं तथा कुछ पुण्यात्माओं के पुण्य क्षीण होने पर (पुण्यकर्मों के भोग के पश्चात्) स्वर्ग से च्युत होकर जब वे पृथ्वी पर गिरते हैं, वही उल्का है।

वराहसंहितायां च

दिवि भुक्तशुभफलानां पततां रूपाणि यानि तान्युल्काः ।

स्वर्ग में शुभ फलों का भोग कर गिरते हुए प्राणियों का स्वरूप ही उल्का है।

बार्हस्पत्ये

अप्रधृष्याणि यानि स्यू शरीराणीन्द्रियैर्दृढैः ।
क्षमावन्ति विशुद्धानि सत्यव्रतरतानि च ॥

तान्येतानि प्रकाशन्ते भाभिर्वितिमिरं नभः ।
समन्ताद्बलयन्तीह यस्मादंशुकरं तपः ॥

तानि भाग्यक्षयाद्भूयः प्रच्युतानि नभस्तलात् ।
क्षितौ सलक्षणान्येव निपतन्तीह भार्गव ॥

तेषां निपतनं विप्र यत्र यत्रेह जायते ।
तत्र तत्रैव विविधं प्रजानां जायते भयम् ॥

जो प्राणी दृढ़ इन्द्रियों से युक्त शरीर वाले, अप्रधृष्य (सताये न गये), क्षमाशील, पापरहित और सत्यव्रतादि में रत हों, वे ही तेज से प्रकाशित होते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुए तथा आकाश में अन्धकार का नाश करते हुए, पुण्य के क्षय होने पर आकाशतल (स्वर्ग) से पृथ्वी पर अपने कर्मानुसार लक्षणयुक्त गिरते हैं। उनका पतन पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ होता है, वहाँ-वहाँ प्रजाओं को विविध भय होते हैं। यही उल्का है।

तत्र सामान्येन पतता ज्योतिर्विशेषेणैवोल्केति संज्ञा प्रतिपादिता। पञ्चविधा चोल्का भवति। तथा च वराहसंहितायाम्

धिष्ण्योल्काशनिविद्युत्तारा इति पञ्चधा भिन्नाः।

सामान्य रूप में आकाश से प्रकाशविशेष के गिरने का नाम उल्का है। उल्का के पाँच भेद— धिष्ण्या, उल्का, अशनि, विद्युत् और तारा हैं।

वटकणिकायां च

उल्काऽथ पञ्चरूपा धिष्ण्योल्काविद्युतोऽशनिस्तारा।

उल्का के पाँच रूप— धिष्ण्या, उल्का, विद्युत्, अशनि और तारा हैं।

बार्हस्पत्ये

तारा धिष्ण्यास्तथोल्काश्च विद्युतोऽशनयस्तथा।
विकल्पाः पञ्चधा चैषां परस्परबलोत्तराः॥

तारा, धिष्ण्या, उल्का, विद्युत् तथा अशनि— ये पाँच प्रकार के उल्का के भेद परस्पर क्रमशः उत्तरबली हैं।

तारालक्षणमाह काश्यपः

पद्मताम्राकृतिस्तारा हस्तमात्रायता मता।

कमल या ताम्र की आकृति (वर्ण) वाली एक हाथ लम्बी 'तारा' कही गयी है।

वटकणिकायाम्

तारा तु हस्तमात्रा यात्यूर्ध्वमधश्च श्वेतताम्राः।

एक हाथ लम्बी, सफेद या ताम्र वर्ण वाली, ऊपर और नीचे की तरफ जाने वाली 'तारा' होती है।

वराहसंहितायां च

तारा तु हस्तदीर्घा शुक्ला ताम्राब्जतन्तुरूपा च।
तिर्यगधश्चोर्ध्वं वा याति वियत्यूह्यमाने च॥

तारा एक हाथ लम्बी, श्वेत, ताम्र या कमलसूत्र के समान (अति सूक्ष्म) आकाश में आकृष्ट होती हुई तिरछी, नीचे और ऊपर की तरफ जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बार्हस्पत्ये तु

यस्तु शुक्लेन वर्णेन वपुषा पेशलेन च।
पद्मतन्तुनिकाशेन धूमराजीनिभेन च॥
उल्काविकारः सोऽप्युक्तस्तारका नाम नामतः।

जो शुक्ल वर्ण, सुन्दर शरीर, कमल के समान और धूम की कान्ति से युक्त हो, वह तारा नाम से उल्का का भेद प्रसिद्ध है।

अथ धिष्ण्यालक्षणम्; तत्र काश्यपः

धनूंषि दश दृश्येत धिष्ण्या सूक्ष्मा च विच्युता।
ज्वलिताङ्गारवर्णाभा द्वौ हस्तौ दृश्यते नभे[1]॥

'धिष्ण्या' सूक्ष्म (पतली), प्रज्ज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित, दो हाथ लम्बी, आकाश में दस धनुष-प्रमाण तक गिरती हुई दिखाई देती है।

वटकणिकायाम्

धिष्ण्या सिता द्विहस्ता धनूंषि दश याति कृशदेहा।

धिष्ण्या शुक्ल वर्ण, दो हाथ लम्बी, कृश देह (सूक्ष्म) और दस धनुष-प्रमाण तक जाती है (दिखाई देती है)।

बृहत्संहितायाम्

धिष्ण्या कृशाऽल्पपुच्छा दश धनुषो दृश्यतेऽन्तराभ्यधिका।
ज्वलिताङ्गारनिकाशा द्वौ हस्तौ सा प्रमाणेन॥

'धिष्ण्या' नामक उल्का पतली और छोटी पूँछ वाली, अग्नि की तरह प्रज्ज्वलित, दो हाथ लम्बी तथा दस धनुष-प्रमाण प्रदेश के बीच में अधिक दिखाई देती है।

बार्हस्पत्ये तु

ज्वलिताङ्गारसङ्काशा जिह्मगा त्वथ शीघ्रगा।
विना पुच्छावकाशेन द्विहस्ताऽतिकृशेन वा॥

दशान्तराणि धनुषः पञ्च वाऽपि प्रदृश्यते।
उल्काविकारो बोद्धव्यो धिष्ण्या इत्यभिधीयते॥

धिष्ण्या नामक उल्का प्रज्ज्वलित अग्नि के समान, जिह्मग (वक्र), शीघ्र गमनशील, पुच्छसहित दो हाथ लम्बी, अतिशय कृश (पतली) दस धनुष या पाँच धनुष-प्रमाण प्रदेश के बीच दिखाई देती है।

---

१. नभसि— इह नभे इत्यार्षप्रयोगः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ विद्युल्लक्षणम्। तत्र काश्यपः

विद्युत् त्रासकरी भीमा शब्दायन्ती चटाचटा।

'विद्युत्' नामक उल्का (प्राणियों को) भयभीत करने वाली और भयङ्कर चट-चट शब्द करती हुई दिखाई देती है।

वटकणिकायां वराहः

विद्युत्तटतटाशब्दा ज्वालामालाकुला पतति।

'विद्युत्' तट-तट (तर-तर) शब्द करती हुई तथा अग्निज्वालासमूह से व्याप्त होती हुई गिरती है।

वराहसंहितायां च

विद्युत् सत्त्वत्रासं जनयन्ती तटतटस्वना सहसा।
कुटिलविशाला निपतति जीवेन्धनराशिषु ज्वलिता॥

'विद्युत्' प्राणियों को भयभीत करती हुई, तट-तट (तर-तर) शब्द करती हुई, कुटिल और विस्तृत शरीर वाली, प्राणियों या काष्ठराशियों पर प्रज्ज्वलित होकर बहुत शीघ्र गिरती है।

बार्हस्पत्ये तु

तत्र शब्देन महता भृशं तटतटायिना।
सत्त्ववित्रासनात्यर्थं शब्देनोद्देशकारिणा॥
ज्वालामालाविसर्पिण्यः प्रकृत्याऽत्युग्रदर्शनाः।
विद्युतो निपतन्त्याशु जीवत्सु वनराजिषु॥

विद्युत् नामक उल्का महान् शब्दायमान, अतिशय तट-तट शब्द करती हुई, प्राणियों में अतिशय भय उत्पन्न करती हुई, अशुभ फलसूचक शब्द करती हुई, अग्निज्वालासमूह की तरह धधकती हुई, स्वभाव से ही अति उग्र (भयंकर) दीखती हुई, प्राणियों और वनराजी (काष्ठ-वृक्ष अदि) के ऊपर शीघ्र गिरती है।

अथाशनिलक्षणं वटकणिकायाम्

अशनिः प्राणिषु निपतति दारयति धरातलं बृहच्छब्दा।

'अशनि' नामक उल्का अत्यधिक शब्द करती हुई प्राणियों पर गिरती है तथा पृथ्वी का विदारण करती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बृहत्संहितायां च

अशानिः स्वनेन महता नृगजाश्वमृगाश्मवेश्मतरुपशुषु ।
निपतति विदारयन्ती धरातलं चक्रसंस्थाना ॥

'अशनि' अधिक शब्द करती हुई, चक्र की तरह भ्रमण करती हुई, मनुष्य, हाथी, घोड़ा, मृग, पत्थर, घर, वृक्ष या पशुओं पर गिरती है और पृथ्वी का विदारण करती है।

काश्यपस्तु

नरेभतुरगाश्वाश्मवृक्षेषु पतते सदा ।
ज्वलन्ती चक्रवत् पश्येद्दशनीमभ्रसंस्थिताम् ॥

अशनि चक्र की तरह प्रज्ज्वलित होती हुई आकाश में दिखाई देती है और मनुष्य, हाथी, घोड़ा, पत्थर तथा वृक्ष के ऊपर सदा गिरती है।

बार्हस्पत्ये तु

तत्र शब्देन महता विवरेण विकर्षिणा ।
महाचक्रमिवागच्छेदायताङ्गा नभस्तलात् ॥
मनुष्यमृगहस्त्यश्ववृक्षाश्मपथि वेश्मसु ।
पतन्त्यशनयो दीप्ताः स्फोटयन्त्यो धरातलम् ॥

अशनि महान् शब्द करती हुई, विवर (मध्य छिद्र) से युत, महान् चक्र की तरह घूमती हुई, विस्तृत शरीर वाली और पृथ्वी का विदारण करती हुई मनुष्य, मृग, हाथी, घोड़ा, वृक्ष, पत्थर, रास्ता और घर के ऊपर आकाश से गिरती है।

अथोल्कालक्षणम् । तत्र काश्यपः

बृहच्छिरास्तु सूक्ष्माङ्गा नतमानशिखोज्ज्वला ।
पौरुषी तु प्रमाणेन उल्का नानाविधा भवेत् ॥

उल्का विशाल शिर वाली और पतली शरीर वाली, लम्बी और उज्ज्वल शिखा वाली तथा पुरुष (मनुष्य) के प्रमाण (साढ़े तीन हाथ) की होती है और इसके अनेक भेद होते हैं।

वटकणिकायाम्

उल्काऽग्रतो विशाला बहुप्रकारा पुरुषमात्रा ।

उल्का आगे (मस्तक की ओर) से विशाल, पुरुष के प्रमाण के तुल्य लम्बी और अनेक प्रकार की होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बृहत्संहितायाम्

उल्का शिरसि विशाला निपतन्ती वर्धते प्रतनुपुच्छा।
दीर्घा च भवति पुरुषं भेदा बहवो भवन्त्यस्याः ॥

उल्का विशाल शिर वाली, पुरुष के प्रमाण के तुल्य लम्बी और गिरती हुई बढ़ती है तथा इसके अनेक प्रकार के भेद हैं।

बार्हस्पत्ये तु

सूक्ष्माऽमूला विशालाग्रा पतन्ती वाऽपि वर्धते।
कृशा नारीव दीप्तास्या सविषाङ्गारवर्षिणी ॥
उद्योतयन्ती गगनं काञ्चनेनैव कर्मणा।
पीतेन चापि वर्णेन धूमधूम्राऽरुणेन वा ॥
नरप्रमाणा विज्ञेया उल्का बहुविधा तु सा।
एवं पञ्चविधा ह्येताः शौनकेन प्रकीर्त्तिताः ॥
स्वर्गच्युतानां पततां लक्षणं पुण्यकर्मणाम्।
प्रकृत्या पौरुषी योल्का तस्या भेदान् निबोधत ॥
पद्मशङ्खादिसंस्थानाः काश्चिदुल्का भवन्ति हि।
वंशगुल्मनिभाः काश्चित् काश्चिदिन्द्रध्वजोपमाः ॥
काश्चिदिन्द्रायुधप्रख्याः काश्चिन्मण्डलसन्निभाः।
छत्रवच्चापि दृश्यन्ते चक्रवन्निपतन्ति च ॥
दण्डवच्चापि तिष्ठन्ति प्रभावन्ति च सर्पवत्।
प्रकीर्णेन कलापेन खे गच्छन्तीव बर्हिणः ॥
खण्डखण्डं गताः काश्चिदम्बरे स्तम्भिता यदा।
काश्चित् प्रतीपगा वायोः काश्चिदम्बरमागताः ॥
तन्तुनैव हि सम्बद्धा धूयमानेन वायुना।
पतन्ती दृश्यते काचित् काचिद्भ्रमति चाम्बरे ॥
उल्कासङ्घैः परिवृता पतेत् काचिन्नभस्तलात्।
तेजांसि विकिरन्त्यन्याः प्रधावन्ति च गोलवत् ॥
प्रनृत्यत्प्रेतमार्जारवराहानुगतास्तथा।
सस्वना विस्वनाश्चापि तथा चायुधसन्निभाः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एताश्चान्याश्च विविधाः पतन्ति च नभस्तलात्।
एतासां फलमुक्तानां प्रवक्ष्यामि पृथक् पृथक्॥

पद्मशङ्खेन्दुवज्राहिमत्स्यध्वजनिभाः शुभाः।
श्रीवृक्षस्वस्तिकावर्त्तहंसद्विरदवत् तथा॥

सूक्ष्मा (पतली), अमूला (मूलरहित), विशाल अग्र (शिरोभाग) भाग वाली, गिरती हुई बढ़ने वाली, पतली, विष और अग्नि वर्षाने वाली, भयंकर स्त्री के समान, सुवर्ण के समान पीत वर्ण से आकाश को प्रकाशित करती हुई अथवा धूम और रक्त वर्ण वाली, पुरुष के प्रमाण के समान लम्बी— इस तरह अनेक प्रकार की उल्का होती है।

इस तरह उक्त प्रकार से ये पाँच उल्कायें शौनक ने कही हैं। धर्मात्माओं के पुण्य क्षीण होने से च्युत होने पर पृथ्वी पर गिरती हुई स्वभाव से पौरुषी उल्का के भेद निम्न प्रकार हैं—

कमल, शंख आदि की आकृति वाली कुछ उल्कायें होती हैं। कुछ बाँस और गुल्म (झाड़ी, लता आदि) के समान, कुछ इन्द्रध्वज के समान, कुछ इन्द्रायुध के समान, कुछ मण्डल (वृत्त) के समान, छत्र के समान और चक्र की तरह घूमती हुई गिरती हैं।

कुछ उल्कायें दण्ड के समान दिखाई देती हैं और कुछ सर्प के समान ससरती हुई प्रकाशित दिखाई देती हैं। मयूर की तरह विभिन्न क्रियाकलापों से युक्त नाचती हुई आकाश में जाती हुई कुछ उल्कायें दिखाई देती हैं। जब कुछ उल्कायें आकाश में स्तम्भित (स्थिर) हो जाती हैं तो खण्ड-खण्ड होकर गिरती हैं। कुछ वायु की विपरीत दिशा में जाती हैं और कुछ हवा में उड़ती हुई आकाश की ओर सूत्ररूप में दिखाई देती हैं तो कुछ गिरती हुई और कुछ आकाश में घूमती हुई दिखाई देती हैं। कोई उल्का समूहों से घिरी हुई होकर आकाश से गिरती है। इन उपर्युक्त उल्काओं के अलग-अलग फल कहे जाते हैं। कमल, शङ्ख, चन्द्र, वज्र, सर्प, मछली, श्रीवृक्ष (नारियल), स्वस्तिकावर्त्त (चिह्नविशेष), हँस तथा हाथी की आकृति वाली उल्कायें शुभ फल देने वाली होती हैं।

वराहसंहितायाम्

ध्वजझषगिरिकरिकमलेन्दुतुरगसन्तप्तरजतहंसाभाः।
श्रीवृक्षवज्रशङ्खस्वस्तिकरूपाः शिवसुभिक्षाः॥

ध्वज, मत्स्य, पर्वत, हाथी, कमल, चन्द्रमा, घोड़ा, तपी हुई चाँदी, हंस, श्रीवृक्ष (नारियल), वज्र (हीरा या शस्त्र), शंख या स्वस्तिक के रूप वाली उल्का दिखाई दे तो लोगों का कुशल और सुभिक्ष करती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष– 'एता एव यदा भ्रमन्तः पतन्ति तदा दोषावहा भवन्ति ।' अर्थात् उक्त शुभ फल देने वाली उल्कायें ही यदि घूमती हुई गिरती हैं तो अनिष्ट करती हैं।

यदुक्तं गार्गीये

छत्रध्वजझषाकारा भ्रमन्ती निपतेद्यदि ।
महोल्का सप्तरात्रेण सा निहन्यान्नृपोत्तमम् ॥

छत्र, ध्वज और मछली की आकृति वाली बड़ी उल्का यदि भ्रमण करती हुई गिरती है तो सात रात के भीतर श्रेष्ठ राजा का नाश करती है।

मयूरचित्रे

इन्द्रध्वजरथाकारा भ्रमन्ती निपतेद्यदि ।
महोल्का सप्तरात्रेण सामात्यं हन्ति पार्थिवम् ॥

नागाश्वरथरूपाश्च ससैन्यं हन्ति पार्थिवम् ।
महीधरनिभास्तास्तु घ्नन्ति देशं सराजकम् ॥

इन्द्रध्वज और रथ के समान रूप वाली महोल्का यदि भ्रमण करती हुई गिरती है तो मन्त्री-सहित राजा का वध करती है। नाग (हाथी या सर्प) और घोड़ा की आकृति वाली उल्का सेनासहित राजा का वध करती है। पर्वत के समान रूप वाली उल्का देश और राजा का नाश करती है।

वराहसंहितायाम्

सुरपतिचापप्रतिमा राष्ट्रं नभसि विलीना जलदान् हन्ति ।
पवनविलोमा कुटिलं याता न भवति शस्ता विनिवृत्ता वा ॥

इन्द्रधनुष की तरह अथवा आकाश में उत्पन्न होकर शीघ्र विलीन होने वाली उल्का मेघों का नाश करती है। वायु के प्रतिकूल टेढ़ी होकर चलने वाली और उत्पन्न होकर नीचे की तरफ न जाकर वापस लौटने (ऊपर की ओर जाने) वाली उल्का शुभ नहीं होती है।

बार्हस्पत्ये तु

राष्ट्रमिन्द्रायुधप्रख्या मन्त्रिणं चक्रसन्निभा ।
विलीयमाना नभसि हिनस्त्युल्का पयोधरान् ॥

प्रजावैकल्यकारिण्यो वायोश्च प्रतिलोमगाः ।
नभोमध्यं च या यान्ति याश्च कुर्युर्गतागतम् ॥

इन्द्रायुध की तरह की उल्का राष्ट्र का, चक्र की तरह मन्त्री का तथा आकाश में ही विलीन होने वाली उल्का मेघों का नाश करती है। हवा के प्रतिकूल जाने वाली,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रजाओं को विकल करने वाली, आकाश में उत्पन्न होने वाली तथा गमनागमन (ऊपर-नीचे) करने वाली उल्का प्रजा का नाश करती है।

वराहसंहितायाम्

वर्हिपुच्छरूपिणी लोकसंक्षयावहा।
सर्पवत् प्रसर्पिणी योषितामनिष्टदा ॥

जो उल्का मोर के पूँछ की तरह हो, वह लोगों का नाश करती है और जो सर्प की तरह चलती है, वह स्त्रियों को अनिष्ट फल देती है।

बार्हस्पत्ये तु

मयूरपिच्छानुगता कुर्यादुल्का जनक्षयम्।
स्त्रीणामनिष्टदा ज्ञेया या च सर्पति सर्पवत्॥

उल्कासङ्घैः परिवृता याः पतन्ति [1]नभस्तलात्।
अनुसारिण्य उल्कास्ता राजराष्ट्रभयावहाः ॥

जो उल्का मयूरपुच्छ की तरह हो, वह लोगों का नाश करती है; जो सर्प की तरह चलती है, वह स्त्रियों का अनिष्ट करती है तथा उल्कासमूहों से घिरी हुई होकर जो उल्का आकाशमध्य से गिरती है, वह राजा और राष्ट्र के लिए भय देती है।

वराहसंहितायाम्

अम्बरमध्यात् पूर्वाह्णे निपतन्त्यो राजराष्ट्रनाशाय।

आकाशमध्य से पूर्वाह्ण में गिरती हुई उल्का राजा और राष्ट्र का नाश के लिए होती है।

विशेषः– 'आकाशमध्यादन्यत्र राजभयमात्रम्।' अर्थात् आकाश से इतर भाग से गिरती हुई उल्का मात्र राजा के लिए भय करती है।

यथाऽऽह पराशरः

युगपदर्चिस्तनयित्नुमत्यो निपतेयुः पार्थिवाभावाय।

मेघ की तरह आकाश में घूमती हुई यदि उल्का गिरती है तो राजा का नाश होता है।

वराहसंहितायाम्

बम्भ्रमती गगनोपरि सम्भ्रममाख्याति लोकस्य।

आकाश में बार-बार घूमती हुई उल्का लोगों की विपत्ति को कहती है।

---

१. नभस्तलात् आकाशमध्यादित्यर्थः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बार्हस्पत्ये च

लोकविभ्रममत्यर्थं भ्रमन्ती गगनोपरि ।

आकाश में चक्कर लगाने वाली उल्का लोगों को विपत्ति देती है ।

वराहसंहितायाम्

यस्याश्चिरं तिष्ठति खेऽनुषङ्गो दण्डाकृतिः स्यान्नृपतेर्भयाय ।
या वीक्ष्यते तन्तुवृतेव खस्था या वा महेन्द्रध्वजतुल्यरूपा ।।

जिस उल्का की आसक्ति आकाश में अधिक देर तक रहे, जो दण्डाकृति की दिखाई दे, जो आकाश में रस्सी से आवृत्त (बँधी हुई) की तरह स्थिर दिखाई दे या जो आकाश में इन्द्रधनुष की तरह दिखाई दे, वह सब राजभय के लिए होती है ।

बार्हस्पत्ये च

या चाकाशे चिरं तिष्ठेद्दण्डवद्भूपभीतिदा ।
तथा तन्तुवृता हन्ति नृपमिन्द्रध्वजोपमा ।।

जो उल्का आकाश में अधिक देर तक दिखाई दे, जो दण्डाकार दिखाई दे, जो तन्तु (रस्सी) से बंधी हो या जो इन्द्रध्वज की तरह दिखाई देती है, वह राजा को भय प्रदान करती है ।

वराहसंहितायाम्

हन्ति मण्डला पुरं छत्रवत् पुरोहितम् ।
वंशगुल्मसंस्थिता राष्ट्रदोषकारिणी ।।

मण्डलाकृति वाली उल्का नगर का और छत्राकृति वाली पुरोहित का नाश करती है तथा वंशगुल्माकारा (बाँस की वीड़ के समान) उल्का राष्ट्रभय करती है ।

बार्हस्पत्ये

पुरं मण्डलसंस्थाना छत्राकारा पुरोधसम् ।
वंशगुल्मनिभा राष्ट्रं हन्यादुल्का नभःस्थिता ।।
गोलवद्याः प्रधावन्ति तासु राष्ट्रभयं वदेत् ।

मण्डलाकृति वाली उल्का नगर का, छत्राकृति वाली पुरोहित का और वंशगुल्माकृति वाली आकाशस्थ उल्का देश का नाश करती है । जो उल्कायें आकाश में गोले की तरह इधर-उधर दौड़ती हैं, उनमें राष्ट्रभय कहना चाहिये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मयूरचित्रे

रथकूवरसंस्थाना हन्यान्नृपतिवाहनम् ।
असिपट्टिशसंस्थाना हन्याद्राष्ट्रं सराजकम् ॥

रथ के कूवर (जूआ) की आकृति वाली उल्का राजा के वाहन का नाश करती है और असिपट्टिश (अस्त्रविशेष) की आकृति वाली उल्का राजासहित राष्ट्र का नाश करती है।

गार्गीये तु

रथकूबरसंस्थाना हन्याद्भूपं सवाहनम् ।
शूलपट्टिशसंस्थाना देशं हन्ति सराजकम् ॥

उल्का लाङ्गलसंस्थाना कर्षकाँश्चैव घातयेत् ।

रथकूवर (जूआ) की आकृति वाली उल्का वाहनसहित राजा का नाश करती है, शूल-पट्टिश (अस्त्रविशेष) की आकृति वाली उल्का राजासहित देश का नाश करती है और लाङ्गल (हल) की आकृति वाली उल्का किसानों का नाश करती है।

मयूरचित्रे

लाङ्गलाकृतयस्ताश्च शिखिकण्ठसमत्विषः ।
अमात्यान् नैगमाँश्चैव घ्नन्ति वै कर्षकाँस्तथा ॥

लाङ्गल (हल) की आकृति वाली और मयूरकण्ठ की कान्ति वाली उल्का मन्त्री, वैदिक (पुरोहित) और किसानों का नाश करती है।

पराशरः

श्वमयूरशूकररक्षःप्रविकीर्णकेशनिकाशाभिः प्रवरनरपतिविनाशः स्यात् ।

कुत्ता, मयूर, सूअर, राक्षस आदि विविध रूप वाली तथा केश के समान कान्ति वाली उल्का श्रेष्ठ राजा का विनाश करती है।

बार्हस्पत्ये

वराहप्रेतशार्दूलसिंहमार्जारवानरैः ।
तुल्या भयावहा उल्काऽतिकृष्णाऽशनिभा च या ॥

शूलपट्टिशशक्त्यृष्टिपरश्वधसमुद्गरैः ।
अस्त्रावरणतुल्याश्च वृषभाश्च न पूजिताः ॥

सूअर, प्रेत, शार्दूल (व्याघ्रविशेष), सिंह, विडाल, वानर, अतिशय काली, अशनि (अस्त्रविशेष = वज्र) की आकृति वाली उल्का भय देने वाली होती है। शूल,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पट्टिश, शक्ति, इष्टि, कुठार, मुद्गर आदि अस्त्रविशेष और अस्त्रावरण के समान तथा बैल की आकृति वाली उल्का पूजित नहीं है अर्थात् अशुभ फल देती है।

वराहसंहितायाम्

प्रेतप्रहरणखरकरभनक्रकपिदंष्ट्रिलाङ्गुलमृगाभाः ।
गोधाहिधूमरूपा पापा या चोभयशिरस्का च ॥

प्रेत, शस्त्र, गदहा, ऊँट, घड़ियाल, बन्दर, दंष्ट्रि (सूअर, कुत्ता आदि), हल, मृग, गोह, साँप, धूम के समान या दो शिर वाली उल्का पाप फल देती है।

विशेषः– एवंविधा यदा विस्तीर्णा भवन्ति तदा मध्यफला बोद्धव्याः ।

यथाऽऽह काश्यपः

आयुधप्रेतसदृशी जम्बुकोष्ट्रखराकृतिः ।
धूमरूपा च यो सोल्का विस्तृर्णा सा तु मध्यमा ॥

अस्त्र, प्रेत, शृगाल, ऊँट, गदहे की आकृति वाली और धूम के समान रूप वाली उल्का यदि बड़ी हो तो मध्यम फल (अशुभ) देती है अर्थात् यदि छोटी आकृति वाली हो तो अधिक अशुभ करती है।

वराहसंहितायाम्

व्यालशूकरोपमा विस्फुलिङ्गमालिनी ।
खण्डशोऽथ वा गता सस्वना च पापदा ॥

सर्प या सूअर की तरह चिनगारियों की माला पहनी हुई (चिनगारियों से व्याप्त शरीर वाली), खण्ड-खण्ड और शब्दसहित उल्का पाप फल देने वाली होती है।

पराशरः

पतन्त्येव चेत् खण्डशो विशीर्येत सन्निपातं राज्ञामितरेतरभेदं च ।

यदि गिरती हुई उल्का खण्ड-खण्ड हो जाय तो राजाओं का नाश और अन्य लोगों में भेद होता है।

बार्हस्पत्ये

प्रनृत्यत्प्रेतमार्जारवराहानुगताश्च याः ।
क्रव्यादव्यालरूपाश्च जलसंक्षयकारिकाः ॥

स्फुलिङ्गान् विसृजन्त्यो यास्ताश्च वह्निभयप्रदाः ।
खण्डखण्डगता नेष्टाः सस्वनाश्चातिदारुणाः ॥

क्ष्वेडितास्फोटितोत्क्रुष्टा गीतवादित्रनिस्वनाः ।
उल्काः पातेषु बोद्धव्याः राजराष्ट्रभयावहाः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो उल्का नाँचते हुए प्रेत, विडाल, सूअर के समान, क्रव्याद (मांसभक्षी) या सर्प के समान रूप वाली होती है, वह जल का नाश करती है। जो चिनगारियाँ छोड़ती है, वह अग्निभय देती है। खण्ड-खण्ड होकर गिरने वाली उल्का अशुभ फल देती है। शब्दसहित उल्का अधिक अशुभ फल देती है।

यदि उल्कापात के समय क्ष्वेडित (वीरों का गर्जन), आस्फोटन (एक हाथ छाती पर रखकर दूसरे हाथ से ताड़न करने का शब्द) का उद्घोष, गान और वाद्य का शब्द हो तो राजा और राष्ट्र दोनों के लिए भय होता है।

वराहसंहितायां च

क्ष्वेडास्फोटितवादित्रगीतोत्क्रुष्टस्वना भवन्ति यदा।
उल्का निपातसमये भयाय राष्ट्रस्य सनृपस्य॥

यदि उल्कापात के समय क्ष्वेडा (वीरों का गर्जन), आस्फोटन (छाती के ताड़न का शब्द), वाद्य और गान का उद्घोषित शब्द हो तो राजा तथा राष्ट्र दोनों के भय के लिए होता है।

मयूरचित्रे

सद्यो या रक्तवर्णा च ज्ञेया शस्यविघातिनी।
महाशब्दं च कुर्वाणा यदोल्का निपतन्ति च॥
विपत्तिविषयं याति सदारो नृपतिस्तदा।

शीघ्र विनष्ट होने वाली और लाल वर्ण वाली उल्का धान्यनाश करती है। महाशब्द करती हुई जो उल्का गिरती है, वह राजा और रानी के लिए विपत्ति प्रदान करने वाली होती है।

पद्मपुराणाग्नेयपुराणयोर्हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

अपतन्नगरादुल्का विद्युद्रूपाः सशब्दिताः।
दिवा रात्रौ पतन्ति स्म हसन्त्यो रविमण्डलम्॥

हिरण्यकशिपु के वध के निमित्त नगर में बिजली की तरह शब्दसहित उल्कायें गिरीं तथा रात और दिन में रविमण्डल की तरह हंसती हुई (प्रकाश वाली) उल्कायें गिरीं।

गार्गीये

अग्निवर्णा सनिर्घाता उल्का तु निपतेद्यदि।
तदा हि योधलक्षस्य मही पिबति शोणितम्॥

यदि अग्नि वर्ण वाली निर्घात शब्द के साथ उल्का गिरे, तो लाखों योद्धाओं के रक्त का पृथ्वी पान करती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गदापर्वणि पाण्डवशिविरक्षयनिमित्तम्

महास्वना पुनर्दीप्ता सनिर्घाता भयङ्करी।
पपात चोल्का महती पतिते पृथिवीपतौ॥

पाण्डवशिविर के राजाओं के पृथ्वी पर गिरने पर महान् शब्द वाली, अत्यन्त दीप्त, निर्घातयुत और भयङ्कर बड़ी उल्का गिरी।

वटकणिकायाम्

क्रूरग्रहर्क्षलग्नक्षणतिथिकरणप्रभञ्जनैर्दीप्ता।
दीप्ताण्डजमृगविरुतैर्निर्घातैः क्षितिविकम्पैश्च॥

विशेषः– क्रूरग्रहर्क्षलग्नादिभिर्दीप्ता भवत्यनिष्टफलदा भवतीत्यर्थः।

यदि उल्कापात के समय क्रूरग्रह से नक्षत्र, लग्न, क्षण, तिथि, करण आदि आहत (युत) हो, दीप्त (सूर्याभिमुख) पक्षी और मृग हो, निर्घात शब्द हो और भूकम्प हो तो दीप्त (अशुभ) फल होता है।

अयोध्याकाण्डे

सनिर्घाता महोल्काश्च पतन्ति हि महास्वनाः।
प्रायेण हि निमित्तानामीदृशानां समुद्भवे॥

राजा वा नाशमाप्नोति राष्ट्रं वा नाशमृच्छति।

जब निर्घातसहित, महान् शब्द वाली, महान् आकार वाली उल्का गिरती है तो इन निमित्तों के उत्पन्न होने पर राजा का या राष्ट्र का नाश होता है।

द्रोणपर्वणि द्रोणवधनिमित्तम्

अपतद् दीप्यमाना च सनिर्घाता सकम्पना।
उल्का ज्वलन्ती संग्रामे पुच्छेनावृत्य सर्वशः॥

द्रोणवध के निमित्त संग्राम में देदीप्यमान निर्घात शब्द के साथ, काँपती हुई और पुच्छों से आवृत्त होकर सर्वत्र उल्का गिरने लगी।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

पतन्त्युल्काः सनिर्घाताः शक्राशनिसमप्रभाः।
अद्य चैव निशां व्युष्टामनयं समवाप्स्यथ॥

विनिःसृत्य महोल्काभिस्तिमिरं सर्वतो दिशम्।
अन्योन्यमुपतिष्ठद्भिस्तत्र चोक्तं महर्षिभिः।
भूमिपालसहस्राणां भूमिं पास्यति शोणितम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उक्त समय में निर्घातसहित, इन्द्र के वज्र के समान कान्ति वाली उल्का गिरने लगी। महान् उल्काओं से निकलकर सभी दिशाओं में अन्धकार छा गया। इन उत्पातों को देखकर महर्षियों ने परस्पर कहा कि आज रात के बीतने पर महान् अनर्थ होगा और हजारों राजाओं के शोणित का पान पृथ्वी करेगी।

सनिर्घाता विद्युतोऽशनयश्च दोषावहा भवन्ति। तथा च द्रोणपर्वणि द्रोणवधनिमित्तम्

शक्राशन्यश्च निष्पेतुः सनिर्घाताश्च विद्युतः।

इन्द्र के वज्र की तरह और निर्घात शब्दसहित विद्युत् (उल्कायें) गिरीं।

सभापर्वणि कुरुपुरविनाशनिमित्तम्

उल्का चाप्यपसव्येन पुरं कृत्वा व्यशीर्यत।

कुरुपुर (हस्तिनापुर) के वाम भाग से जाकर उल्का नष्ट हुई।

गार्गीये

उल्का ज्वलन्ती निपतेद्यदा वै धूमान्विता तालसमानमात्रा।
सव्यापसव्यं विहितान्तनादा सा हन्ति दीप्ताकुलजाबलाङ्गलान्॥

जब प्रज्ज्वलित, धूमों से युक्त और ताल वृक्ष के समान लम्बी, सव्य और अपसव्य (प्रदक्षिण और अप्रदक्षिण) करती हुई तथा शब्दायमान उल्का गिरती है तब दुष्ट कुलों के लोगों का नाश करती है।

मयूरचित्रे

उल्का ज्वलन्ती यदि रेणुरूपा सधूम्रदण्डा पृथुतालमात्रा।
सव्यापसव्यं विकृता सधूमा निहन्ति दस्यून् कुनृपाननेकान्॥

यदि प्रज्ज्वलित उल्का धूली के समान, धूमयुत दण्ड के समान, विस्तृत तालवृक्ष के समान हो, सव्य और अपसव्य होकर गिरती हो, विकृत हो और धूमयुक्त हो तो चोर और अनेक दुष्ट राजाओं का नाश करती है।

पराशरः

सधूमा स्वरनिर्ह्लादिनी व्यभ्रेऽतिचण्डनिर्घाता नैर्ऋतीं
दिशमभिपतेत् ज्वलन्ती तालमात्रा सधूमदण्डा
हन्याद्रक्षःपिशाचदस्यून् कुराज्ञश्च।

यदि उल्का धूमसहित हो, शब्द करती हो, निरभ्र आकाश में अतिशय उग्र निर्घातयुत हो, नैर्ऋत्य दिशा में गिरती हो, प्रज्ज्वलित हो, ताल वृक्ष की आकृति वाली हो, धूमसहित दण्डाकृति वाली हो तो राक्षस, पिशाच, चोर और दुष्ट राजाओं का नाश करती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गार्गीये

पूर्वरात्रे तथोल्का चेदादित्यपथमाश्रिता ।
पश्चिमाभिमुखी याति मध्ये गत्वा विशीर्यते ॥

तदा शस्येषु नष्टेषु दुर्भिक्षमचिराद्भवेत् ।

पूर्वरात्रि में (उक्त गार्गीय वचनानुसार अशुभ लक्षणयुक्त) उत्पन्न होकर सूर्यमार्ग में आश्रित होकर पश्चिमाभिमुखी गमन करती हुई मध्य में (मध्याकाश में) जाकर यदि उल्का गिरती (नष्ट होती) है तो धान्यों के नष्ट हो जाने से शीघ्र दुर्भिक्ष होता है ।

मयूरचित्रे तु

पूर्वरात्रे तु सम्भूता आदित्यपथमाश्रिता ।
पश्चिमाभिमुखी याति मध्ये चैव विशीर्यते ॥

निष्पन्नेष्वपि शस्येषु तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ।
मानुषाश्च विपद्यन्ते समृद्धाश्च कुटुम्बिनः ॥

यदि उल्का पूर्वरात्रि में उत्पन्न, सूर्यमार्ग में आश्रित होकर पश्चिमाभिमुखी गमन करती हुई मध्य (आकाशमध्य) में जाकर नष्ट होती है तो धान्यों के होने पर भी दुर्भिक्ष होता है, समृद्ध कुटुम्ब वाले मनुष्य भी पीड़ित (क्षुधा से पीड़ित) होते हैं ।

पराशर

यत्रातिमात्रज्वालाङ्गारकणानि चोद्वमन्ती भृशं
स्तनयित्नुमत्यभिपतेत् तत्राचिरात् परचक्रम् ।

जहाँ अधिक ज्वाला और अग्निकण उगलती हुई मेघ की ओर उल्का गिरती है, वहाँ शीघ्र परचक्र (दूसरे राजा) का आगमन होता है ।

मयूरचित्रे

यदा महोल्का निपतेत् सधूमा घोरेण रूपेण च सस्फुलिङ्गा ।
अङ्गारवर्षं विपुलं सृजन्ती भयाय सा शंसति पार्थिवानाम् ॥

अभीक्ष्णमुल्का निपतन्ति यत्र स्फुलिङ्गयुक्ताश्च नभःस्थलान्ताः ।
विनाशमाहुर्नृपतेस्तदानीं यथाऽऽह गर्गो हरभाषितानि ॥

जब महान् आकृति वाली, धूम और चिनगारियों से युक्त घोर रूप वाली उल्का अग्नि की वर्षा विपुल मात्रा में करती हुई गिरती है तब राजाओं के लिए भय उत्पन्न करती है । जहाँ बार-बार चिनगारियों से युक्त उल्कायें गिरती हैं, वहाँ के राजाओं का विनाश होता है, ऐसा महादेव के कथनानुसार आचार्य गर्ग ने कहा है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च

उल्कावर्षो यदि भवेच्छिलावर्षसमन्वितः ।
योधमुख्यसहस्राणां भूमिः पास्यति शोणितम् ॥

यदि पत्थरवृष्टि के साथ उल्का की वृष्टि हो तो हजारों मुख्य योद्धाओं के रक्त का पृथ्वी पान करती है।

आदिपर्वणि गरुणेन गजकच्छपभक्षणनिमित्तम्

पेतुरुल्काः सहस्रशः ।

उक्त समय में हजारों बार उल्कायें गिरीं।

मौशले वृष्णिवंशक्षयनिमित्तम्

उल्काश्चाङ्गारवर्षिण्यः प्रपेतुर्गगनाद्भुवि ।

उस समय आग वर्षाने वाली उल्कायें आकाश से पृथ्वी पर गिरीं।

पराशरः

या चावनिमभिपतत्याशु पुरुषमात्रमभिज्वलेत् सा पञ्चमासाभ्यन्तरादन्यभूपतिकारिणी स्यात्। या च निपत्याङ्गारमिवाभासेन्मुहुरन्तर्दशरात्रीः साऽन्यमवनिपतिमधिकुर्यात्।

जो उल्का शीघ्र पृथ्वी पर गिरकर पुरुषप्रमाण (साढ़े तीन हाथ) की ज्वाला की तरह दिखाई दे, वह पाँच मासों के भीतर दूसरा राजा बनाती है। जो उल्का पृथ्वी पर गिरकर आग की तरह दिखाई दे और पुनः नष्ट हो जाय, वह पाँच रातों के भीतर दूसरा राजा बनाती है।

पद्मपुराणे तारकामययुद्धे देवानां पराजयनिमित्तम्

पेतुरुल्काः सहस्राणि निपेतुः खचराणि च।

देवताओं के पराजय को सूचित करने के लिए हजारों उल्कायें गिरीं तथा नक्षत्र गिरे अर्थात् नक्षत्र गिरने की तरह उल्कायें गिरीं।

पराशरः

तथा सुमहती सधूमज्वाला तारागणानुसृता यमभिप्रायात् तमपसव्यतः प्रतिलोमं वाऽगच्छेत् तं हन्यात्।

बड़ी आकृति वाली, धूम और ज्वालासहित उल्का तारागणों का अनुसरण करती हुई जिस दिशा की ओर जाती हुई वाम भाग से अथवा विलोम (उल्टा होकर) गिरती है, वहाँ के लोगों का नाश करती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथोल्काया अधोमुखादिपतनफलं बार्हस्पत्ये

अधोमुखी नृपं हन्याद्ब्राह्मणानूर्ध्वगामिनी ।
तीर्यगाराजपत्नीश्च श्रेष्ठिनः प्रतिलोमिनी ॥

नीचे की ओर मुख वाली उल्का राजा का नाश करती है, ऊपर की ओर जाने वाली ब्राह्मणों का नाश करती है, तिरछी चलने वाली रानियों का और विपरीत (जहाँ से आयी हो वहाँ ही लौट) जाने वाली सेठों का नाश करती है ।

वराहसंहितायाम्

हन्त्यधोमुखी नृपान् ब्राह्मणाँस्तथोर्ध्वगा ।
तीर्यगा नृपाङ्गनाः श्रेष्ठिनः प्रतीपगा ॥

नीचे की ओर जाने वाली राजाओं का, ऊपर की ओर जाने वाली ब्राह्मणों का, तिरछी जाने वाली रानियों का और विपरीत जाने वाली सेठों का नाश करती है ।

अथ वर्णफलं गार्गीये

यदा विनिपतन्त्युल्काः कुन्देन्दुरजतप्रभाः ।
राजा विजयमाप्नोति सुभिक्षक्षेम एव च ॥

यदि कुन्दपुष्प, चन्द्र या चाँदी की कान्ति वाली उल्कायें गिरती हैं तो राजा विजय प्राप्त करता है और सुभिक्ष तथा क्षेम (कल्याण) होता है ।

मयूरचित्रे

यदा विनिपतन्त्युल्काः कुन्देन्दुरजतप्रभाः ।
राज्ञो विजयमाचष्टे सुभिक्षक्षेमकारिकाः ॥

दधिकाञ्चनवैदूर्यचन्द्रस्फटिकसन्निभाः ।
उल्का रजतसंकाशाः क्षेममाहुर्महीपतेः ॥

अग्निवर्णाश्च सुस्निग्धाः रूप्यस्फटिकसन्निभाः ।
पतन्ति वर्षमाख्यान्ति महोल्काः सद्य एव तु ॥

वैदूर्यवर्णस्फटिकप्रकाशाः सुवर्णवर्णा रजतप्रभाश्च ।
याश्चन्द्रवर्णादधिकप्रकाशास्ताः क्षेममाहुर्विजयं च राज्ञः ॥

वैदूर्यवर्णासु वदन्ति कृत्स्नं क्षेमं सुभिक्षं स्फटिकप्रभासु ।
अग्निप्रकोपं कनकप्रभासु रक्तासु संग्राममुदाहरन्ति ॥

श्यामा रूक्षा च विध्वस्ता शस्यपीडावहा मता ।
चन्द्रमण्डलवर्णा या पावकार्चिःप्रभाऽथ वा ॥

उल्का विनिपतेद्यत्र युवराजवधं वदेत् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब कुन्दपुष्प, चन्द्र या रजत् की कान्ति वाली उल्कायें गिरती हैं तब राजा की विजय और सुभिक्ष तथा लोगों का कल्याण होता है। दही, सुवर्ण, वैदूर्य, चन्द्र, स्फटिक या रजत् की कान्ति वाली उल्का राजा का कल्याण करती है। अग्नि के समान वर्ण वाली, निर्मल, चाँदी या स्फटिक की तरह कान्ति वाली उल्कायें गिरती हैं तो वर्षा होती है। यदि उक्त उल्का बड़ी आकृति वाली हो तो सद्यः वृष्टि होती है। वैदूर्य या स्फटिक के समान प्रकाश वाली, सुवर्ण के समान वर्ण वाली या रजत् की कान्ति वाली या चन्द्रमा से अधिक प्रकाश वाली उल्का जब गिरती है तो वह राजा का क्षेम और विजय के लिए कही गयी है। वैदूर्य वर्ण वाली उल्का सभी प्रकार के कल्याण, स्फटिक की कान्ति वाली सुभिक्ष, सुवर्ण की कान्ति वाली अग्निप्रकोप और रक्त वर्ण वाली उल्का युद्ध की सूचना देती है।

श्याम वर्ण, रूक्ष और विध्वस्त वर्ण वाली उल्का धान्यनाश करती है। जो उल्का चन्द्रमण्डल के समान वर्ण वाली अथवा आग की ज्वाला की कान्ति वाली होकर जहाँ गिरती है, वहाँ के युवराज का वध करती है।

वराहसंहितायाम्

श्यामारुणनीलाऽसृग्दहनासितभस्मसन्निभा रूक्षा।
सन्ध्यादिनजा वक्रा दलिता च परागमभयाय॥

शुक्ला रक्ता पीता कृष्णा चोल्का द्विजादिवर्णघ्नी।
क्रमशश्चैतान् हन्युर्मूर्धोरःपार्श्वपुच्छस्थाः॥

श्याम, रक्त, नील, रुधिर के समान, अग्नि के समान, काली, भस्म की तरह, रूक्ष, सन्ध्याकाल में उत्पन्न, दिन में उत्पन्न, वक्र या खण्डित उल्का पुरवासियों को शत्रु के आगमन से भय कराती है।

सफेद, लाल, पीली और काली उल्का क्रम से ब्राह्मण आदि वर्णों का नाश करती है; जैसे— सफेद उल्का ब्राह्मणों का, लाल क्षत्रियों का, पीली वैश्यों का और काली शूद्रों का नाश करती है तथा जो शिर से ठहरती है अर्थात् शिरयुक्त होकर गिरती है वह ब्राह्मणों का, जो छाती से युत होकर गिरती है वह क्षत्रियों का, जो बगल से युत होकर गिरती है वह वैश्यों का और जो पुच्छयुत गिरती है वह शूद्रों का नाश करती है।

विशेषः– एताः शुक्लादिवर्णा उल्का यथाक्रमं कूर्मविभागोक्तक्रमेण मूर्धोरः-पार्श्वपुच्छस्थान् जनपदान् हन्युः।

बार्हस्पत्ये

हिनस्ति शुक्ला शीर्षस्थान् मध्यस्थान् क्षतजप्रभान्।
पीता वैश्योपघाताय शूद्रान् हन्यात् सितेतरा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सफेद उल्का ब्राह्मणों का, लाल उल्का क्षत्रियों का, पीली उल्का वैश्यों का और काली उल्का शूद्रों का नाश करती है।

विशेषः– स्फुलिङ्गाद्यशुभलक्षणयुक्तोल्का शुक्लादिवर्णा विप्रादिवर्णनाशिनी बोद्धव्या।

यदुक्तं गार्गीये

श्वेता च सस्फुलिङ्गोल्का ब्राह्मणानां भयावहा।
क्षत्रियाणां तु संरक्ता वैश्यानां पीतवर्णिका॥
कृष्णा सधूमा शूद्राणां भयमाख्याति दारुणम्।

सफेद और चिनगारियों से युत उल्का ब्राह्मणों को भय देने वाली, रक्त वर्ण वाली उल्का क्षत्रियों को, पीली उल्का वैश्यों को और धूमसहित काली उल्का शूद्रों को दारुण भय देने वाली होती है।

मयूरचित्रे तु

रजउल्कापातविद्युद्दिग्दाहाः प्रभवन्ति चेत्।
श्वेताः पीतास्तथा रक्ताः कृष्णा विप्रादिनाशनाः॥
अनुवर्णं क्रमेणोक्ता यथा गर्गेण भाषितम्।

यदि धूलि, उल्कापात, विद्युत् या दिग्दाह सफेद वर्ण के हों तो ब्राह्मणों का, पीत वर्ण के हों तो क्षत्रियों का, रक्त वर्ण के हों तो वैश्यों का और कृष्ण वर्ण के हों तो शूद्रों का नाश करते हैं। वर्णानुसार उक्त फल गर्ग-मतानुसार कहे गये हैं। अन्यत्र रक्त वर्ण क्षत्रियों के लिए तथा पीत वर्ण वैश्यों के लिए फलदायक कहे गये हैं।

अथ दिक्फलं वराहसंहितायाम्

उत्तरदिगादिपतिता विप्रादीनामनिष्टदा रूक्षा।
स्निग्धाऽखण्डा ऋज्वी नीचोपगता च तद्वृद्ध्यै॥

उत्तर आदि दिशाओं में गिरी हुई उल्का रूक्ष हो तो ब्राह्मण आदि वर्णों को अशुभ फल देती है। जैसे— उत्तर में गिरे तो ब्राह्मणों को, पूर्व में गिरे तो क्षत्रियों को, दक्षिण में गिरे तो वैश्यों को और पश्चिम में गिरे तो शूद्रों को अशुभ फल देती है। यदि चिकनी (निर्मल), अखण्ड, सीधी और आकाश से नीचे भाग में जाने वाली उल्का हो तो ब्राह्मण आदि वर्णों की वृद्धि करती है।

वटकणिकायां तु

उदगादिषु विप्रादीन् सितरक्तसुवर्णकृष्णवर्णाश्च।

उत्तर आदि (उत्तर, पूरब, दक्षिण और पश्चिम) दिशाओं में सफेद, रक्त, सुवर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्ण (पीत) और काली उल्का पतित हो तो क्रम से ब्राह्मण आदि (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) वर्णों का नाश करती है।

पराशरस्तु

श्वेतरक्तपीतकृष्णवर्णाः सौम्यादिदिगनुगामिन्यो ब्राह्मणा-दिवर्णघातायान्यवर्णाऽन्यदिशमभिपतन्त्युभयमभिहन्यात्।

यदि श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण वाली उल्का उत्तर आदि (उत्तर, पूरब, दक्षिण और पश्चिम) दिशाओं में गिरे तो ब्राह्मण आदि वर्णों का क्रम से नाश करती है। भिन्न वर्ण वाली उल्का दूसरी दिशा में गिरे अर्थात् श्वेत वर्ण वाली उल्का उत्तर दिशा को छोड़कर अन्य किसी दिशा में गिरे; इसी तरह रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण वाली उल्का अन्य दिशा में गिरे तो दोनों वर्णों (जिस दिशा के वर्ण की उल्का हो तथा जिस दिशा में गिरे उन दोनों दिशाओं के वर्णों) का नाश करती है। जैसे— सफेद उल्का दक्षिण दिशा में गिरे तो ब्राह्मण और वैश्यवर्णों का नाश करती है।

आदित्यचन्द्राभिमुखाद्युल्कापातफलं गार्गीये

आदित्याभिमुखी या च उल्का पतति दारुणा।

सूर्याभिमुख होकर (दिन में) जो उल्का गिरती है, वह दारुण (अति अशुभ) फल देती है।

पराशरस्तु

महती चोज्ज्वलन्ती तिर्यक् सूर्यमभिद्रवेद्वधाय राज्ञः।

बड़ी, प्रज्ज्वलित और तिरछी होकर सूर्याभिमुखी उल्का राजा के वध के लिए गिरती है।

मयूरचित्रे

आदित्याभिमुखी चोल्का पतन्ती दारुणा मता।
शशाङ्काभिमुखी यत्र पतत्युल्का सुदारुणा॥
करोति द्विजपीडाश्च पुरोहितवधं तथा।

सूर्याभिमुख होकर गिरती हुई उल्का दारुण कही गई है तथा चन्द्राभिमुखी होकर जहाँ उल्का गिरती है, वहाँ अति दारुण (भयङ्कर) फल देती है, ब्राह्मणों को पीड़ा देती है और पुरोहित का वध करती है।

विष्णुधर्मोत्तरे

दिवोल्का चन्द्रार्कविनिर्गता उद्योतिनी अतिस्थूला सस्फुलिङ्गा तथोर्ध्वगा राजमृत्यवे स्यात्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि दिन में चन्द्रमा या सूर्य से निकली हुई, प्रज्ज्वलित, अत्यन्त मोटी, चिनगारियों से सहित तथा ऊपर की ओर जाने वाली उल्का गिरे हो तो राजा की मृत्यु होती है।

अथ ग्रहर्क्षपीडाकृदुल्काफलं मयूरचित्रे

ग्रहर्क्षसोमसूर्येषु पतन्त्युल्का भयावहाः ।

ग्रह, नक्षत्र, चन्द्रमा या सूर्यमण्डल में उल्कापात हो तो भय होता है।

काश्यपः

नक्षत्राणि ग्रहाश्चैव उल्कया ध्वस्तधूपिताः ।
तद्देशनाथनाशाय लोकानां संक्षयाय च ॥

यदि नक्षत्र और ग्रह उल्का से आहत (पीड़ित) हों तो उन-उन देशों (नक्षत्रकूर्मोक्त एवं ग्रहभक्ति के अनुसार उक्त देशों) के स्वामी (राजा) और लोगों का नाश होता है।

पराशरस्तु

सूर्यमेव चेदभिहत्योल्का याम्यां दिशमभिपतेद्राज्ञो वधाय ।

सूर्य को ही आहत करके उल्का दक्षिण दिशा में राजा के वध के लिए गिरती है।

पराशरः

या चार्कचन्द्रयोरग्रतो निपतेन्नृपतिजयमविजयं च पृष्ठतः ।

जो उल्का सूर्य और चन्द्रमा से आगे निकलकर गिरे, वह राजा की जय और जो पृष्ठभाग से गिरती है, वह उस राजा की पराजय के लिए होती है।

वराहसंहितायाम्

पौरेतरघ्नमुल्काऽपसव्यकरणं दिवाकरहिमांश्वोः ।
उल्का शुभदा पुरतो दिवाकरविनिःसृता यातुः ॥

यदि उल्का सूर्य और चन्द्रमा के प्रदक्षिण क्रम से गमन करे तो क्रम से पुर में रहने वाले और पुर के बाहर रहने वाले का नाश करती है। जैसे— सूर्य के प्रदक्षिण क्रम से गमन करे तो पुरवासियों का और चन्द्र के प्रदक्षिण क्रम से गमन करे तो बाहर रहने वाले का नाश करती है। जो उल्का सूर्य से निकल कर गमन करने वालों के आगे गिरती है, वह शुभ फल देने वाली होती है।

विशेषः— आदित्यमण्डलादुल्कापातोऽतीव भयावहः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च भीष्मपर्वणि कुरुक्षयनिमित्तम्

पपात महती चोल्का मध्येनादित्यमण्डलात् ।

उस समय सूर्यमण्डल के मध्य भाग से बड़ी उल्का गिरी।

द्रोणपर्वणि द्रोणवधनिमित्तम्

पपात महती चोल्का आदित्यान्निःस्वनत्युत ।

उक्त समय में सूर्यमण्डल से शब्द करती हुई बड़ी उल्का गिरी।

स्कन्दपुराणे लोकोद्वेगनिमित्तम्

दिवाकरात् कबन्धाङ्कात् पेतुरुल्काः समन्ततः ।

लोगों के उद्वेग के निमित्त सूर्यबिम्ब से कबन्धचिह्न से चारो ओर उल्कायें गिरीं।

विशेषः– चन्द्रबिम्बविनिःसृताऽपि दोषावहा भवति।

वराहसंहितायाम्

संस्पृशती चन्द्रार्कौ तद्बिम्बविनिःसृता सभूकम्पा ।
परचक्रागमनृपभयदुर्भिक्षावृष्टिभयजननी ॥

जो उल्का सूर्य या चन्द्रबिम्ब को स्पर्श करती है अथवा सूर्य या चन्द्र से निकलकर भूकम्प करती हुई गिरती है, वह दूसरे राजा का आगमन, राजभय, दुर्भिक्ष और अवृष्टिभय करती है।

हरिवंशे बाणपराजयनिमित्तम्

सूर्यं भित्वा महोल्का च पपात धरणीतले ।

उक्त निमित्त के रूप में सूर्य को भेदन करके बड़ी उल्का पृथ्वी पर गिरी।

आश्वमेधिके सैन्धवपराजयनिमित्तम्

उल्काश्च जघ्निरे सूर्यं विकीर्यन्त्यः समन्ततः ।

सूर्य को आहत कर उल्कायें चारो ओर गिरने लगीं।

शल्यपर्वणि कौरवक्षयनिमित्तम्

सदण्डाः सोल्मुका राजन् कीर्यमाणाः समन्ततः ।
उल्काः पेतुर्दिवो भूमावाहत्य रविमण्डलम् ॥

सूर्यमण्डल को आहत करके दण्ड और उल्मुक (लुआठ = दग्धकाष्ठ) के साथ चारो ओर पृथ्वी पर उल्कायें आकाश से गिरीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भीष्मपर्वणि कुरुक्षयनिमित्तम्

पपात महती चोल्का प्राङ्मुखी भरतर्षभ ।
उद्यन्तं सूर्यमाहत्य व्यशीर्यत महास्वना ॥

उदित होते हुए सूर्य को आहत (पीड़ित) कर पूर्वाभिमुखी महान् शब्द वाली महान् उल्का गिरी ।

पराशरः

उदयेऽस्तमये भानुमुल्काऽऽहत्य समुच्छ्रिता ।
प्रज्वलन्ती तदा राजा क्षिप्रं शस्त्रेण हन्यते ॥

यदि सूर्योदय या सूर्यास्त के समय उल्का सूर्य को आहत करके प्रज्ज्वलित होती हुई गिरती है तो राजा शीघ्र ही शस्त्र से मारा जाता है ।

वराहसंहितायाम्

दिवसकरमुदयसंस्थितमुल्काशनिविद्युतो यदा हन्युः ।
नरपतिमरणं विद्यात् तदाऽन्यराष्ट्रप्रतिष्ठां च ॥

उदय के समय में यदि उल्का, अशनि या विद्युत् सूर्य को आहत करे तो राजा की मृत्यु होती है और दूसरा राजा होता है ।

अथ चन्द्रपीडाकृदुल्काफलम् । पद्मपुराणमत्स्यपुराणयोर्हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

उल्काः प्रज्वलिताश्चन्द्रे विचरन्ति यथासुखम् ।

चन्द्रमण्डल में प्रज्ज्वलित होकर (चन्द्रमा को पीड़ित कर) उल्कायें आकाश में विचरण करती थीं (गिरने लगीं) ।

गार्गीये

चन्द्रमण्डलगा या च पावकार्चिःप्रभाऽथ वा ।
उल्का विनिपतेत्तत्र युवराजवधं वदेत् ॥

यदि चन्द्रमण्डल-स्थित अग्नि की कान्ति अथवा अग्निज्वाला की तरह उल्का गिरती है तो युवराज का वध कहना चाहिये ।

पराशरः

चन्द्रमसमभिहन्यादभियोक्तुर्वधाय च । सूर्ये नागराणां तयोरेवान्तरा चेद्व्रजेद्यायिनागरसन्धानय – इति ।

यदि चन्द्रमा को आहत कर उल्का गिरती है तो आक्रमणकारी (यायी) राजा का वध, सूर्य को आहत करती है तो नागर (स्थायि राजा) का वध तथा दोनों (सूर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और चन्द्रमा) के निकट से होकर उल्कापात हो तो यायी और नागर दोनों में सन्धि या दोनों का नाश होता है।

वराहसंहितायां तु

उल्कया यदा शशी ग्रस्त एव हन्यते।
हन्यते तदा नृपो यस्य जन्मनि स्थितः॥

जब उल्का से ग्रस्त चन्द्रमा पीड़ित होता है तब जिसकी जन्मराशि में चन्द्रमा स्थित रहता है, उस राजा का नाश करता है।

पराशरः

उपरक्तं चन्द्रमसमभिदध्यादभियोक्तुर्वधाय।

राहु से ग्रसित चन्द्रमा यदि उल्का से पीड़ित हो तो आक्रमणकारी (यायी) राजा का वध होता है।

मत्स्यपुराणे हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

गृहीतो राहुणा चन्द्र उल्काभिरभिहन्यते।

राहु से ग्रसित चन्द्रमा उल्का से पीड़ित हुआ।

पराशरः

पीताऽरुणनीलासितरक्ता वा सस्फुलिङ्गारार्चिर्वाऽर्कमिन्दु-मुद्यन्तमभिघ्नती प्रवरनरपतिविनाशिनी स्यात्।

यदि पीली, लाल, नीली, उजली अथवा रक्त वर्ण वाली उल्का, चिनगारियों से युक्त अथवा अग्नि की कान्ति वाली उल्का उदित होती हुई सूर्य अथवा चन्द्रमा को आहत करती है तो श्रेष्ठ राजा का नाश करती है।

वराहसंहितायाम्

उदये घ्नती रवीन्दू पौरेतरमृत्यवेऽस्ते वा।

यदि उदय या अस्त के समय सूर्य और चन्द्रमा को पीड़ित करके उल्का गिरती है तो पौर और इतर (नगर के बाहर रहने वाले) की मृत्यु होती है।

बृहद्यात्रायाम्

लग्नेऽर्केन्दू निघ्नती शास्ति पौरान्
उल्का हन्याद्या तु पौरग्रहाँश्च।
यातुः शस्ता समृता वा ध्रुवर्क्षे
नेष्टाऽतोऽन्या धूमिनी या च रूक्षा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि उदयकाल में सूर्य या चन्द्रमा को या पौर ग्रहों को उल्का हनन करे तो पुरवासियों को पीड़ित करती है। ध्रुवसंज्ञक (उत्तरात्रय एवं रोहिणी) नक्षत्र में स्थित ग्रहों को उल्का पीड़ित करती है तो गमन करने वालों का शुभ होता है, परन्तु यदि उल्का धूमिनी (धूम्रयुत) या रूक्ष हो तो अनिष्ट फल देती है।

भौमघातफलं गार्गीये

यदा तु निपतन्त्युल्का हन्यादङ्गारकं ग्रहम्।
तदा सेनापतिवधं शस्त्रकोपं च निर्दिशेत्॥

जब मङ्गलग्रह को हनन कर उल्कापात हो तो सेनापति का वध और शस्त्रकोप कहना चाहिये।

मयूरचित्रे

निपतन्ती यदा चोल्का निहन्त्यङ्गारकं ग्रहम्।
सेनापतिवधं ब्रूयाच्छस्त्राग्निभयमेव च॥

जब मंगल को आहत करके उल्का गिरती है तब सेनापति का वध और शस्त्र तथा अग्नि का भय करती है।

बुधघातफलं गार्गीये

यदा बुधं तापयन्ती उल्काज्वलनसन्निभा।
तदा कुमारमरणं ज्ञेयं देशस्य पीडनम्॥

जब बुध को तपाती हुई अग्निज्वाला के समान उल्का गिरती है तब कुमार की मृत्यु और देश की पीड़ा जाननी चाहिये।

मयूरचित्रे

बुधं सन्तापयत्युल्का ज्वालामालासमाकुला।
कुमारमरणं ब्रूयाद् भूपपीडा च सम्भवेत्॥

यदि ज्वाला-माला से युक्त उल्का बुध को तपाती है तो कुमार का मरण कहना चाहिये और राजा को पीड़ा की सम्भावना होती है।

बृहस्पतिघातफलं गार्गीयमयूरचित्रयोः

बृहस्पतिं देवगुरुं यद्युल्का परितापयेत्।
पुरोहितवधं ब्रूयात् पीड्यन्ते च द्विजातयः॥

यदि उल्का देवगुरु बृहस्पति को पीड़ित करती है तो पुरोहित का वध कहना चाहिये और ब्राह्मण जाति के लोग पीड़ित होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भार्गवघातफलं गार्गीये

भार्गवं तापयन्ती सा तत्र राजवधं वदेत्।

यदि उल्का शुक्र को तपाती हुई गिरती है तो राजा का वध कहना चाहिये।

मयूरचित्रे

भार्गवं तापयन्ती सा महाराजभयावहा।

शुक्र को तपाती हुई उल्का महाराज को भय देने वाली होती है।

शनैश्चरघातफलं मयूरचित्रे

निपतन्ती यदा चोल्का दीप्ता हन्ति शनैश्चरम्।
तदा नायकमुख्यानां गार्गीया ब्रुवते फलम्॥

यदि प्रदीप्त उल्का गिरती हुई शनैश्चर कों आहत करती है तो मुख्य नायकों का नाश करती है। यह फल गर्ग मुनि द्वारा कहा गया है।

गार्गीये

यदा रविसुतं दीप्ता उल्का हन्ति शनैश्चरम्।
तदा नायकमुख्याँश्च बलाध्यक्षाँश्च पातयेत्॥

जब दीप्त (अशुभ लक्षणयुक्त) उल्का सूर्यपुत्र शनैश्चर को पीड़ित करती है तब नायकमुख्य और सेनापतियों का नाश होता है।

अथ नक्षत्रघातफलं वराहसंहितायाम्

भाग्यादित्यधनिष्ठामूलेषूल्काहतेषु युवतीनाम्।
विप्रक्षत्रियपीडा पुष्यानिलविश्वदेवेषु॥

ध्रुवसौम्येषु नृपाणामुग्रेषु सवारुणेषु चौराणाम्।
क्षिप्रेषु कलाविदुषां पीडा साधारणे च हते॥

पूर्वफाल्गुनी, पुनर्वसु, धनिष्ठा या मूल नक्षत्र की योगतारा यदि उल्का से हत हो तो युवती स्त्रियों को पीड़ा होती है। पुष्य, स्वाती या श्रवण नक्षत्र की योगतारा यदि उल्का से हत हो तो ब्राह्मण और क्षत्रियों को पीड़ा होती है।

ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा, रोहिणी) या सौम्यसंज्ञक (मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती) नक्षत्र की योगतारा यदि उल्का से पीड़ित हो तो राजाओं को पीड़ा होती है। उग्रसंज्ञक (तीनों पूर्वा, भरणी, मघा) या दारुणसंज्ञक (आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा एवं मूल) नक्षत्र की योगतारा यदि उल्का से हत हो तो चोरों को पीड़ा होती है। क्षिप्रसंज्ञक (अश्विनी, हस्त, पुष्य एवं अभिजित्) या साधारणसंज्ञक (कृत्तिका एवं विशाखा) नक्षत्र की योगतारा यदि उल्का से आहत हो तो कलाओं को जानने वालों को पीड़ा होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्मनक्षत्रघातफलं गार्गीये

यस्य राज्ञस्तु नक्षत्रमुल्कया प्रतिहन्यते।
स राजा नश्यति क्षिप्रं यदि शान्तिं न कारयेत्॥

जिस राजा का जन्मनक्षत्र उल्का से हत हो, यदि वह राजा शान्ति नहीं करे तो उसका शीघ्र नाश होता है।

मयूरचित्रे

यस्य वै जन्मनक्षत्रमुल्कया प्रतिहन्यते।
क्षिप्रं स हीयते राजा यदि शान्तिं न कारयेत्॥

जिस राजा का जन्मनक्षत्र उल्का से प्रतिहत हो और यदि वह शान्ति नहीं करे तो शीघ्र ही उस राजा का नाश होता है।

पराशरस्तु

असिमुशलभिन्दिपालोरुभुजगाकृतिश्चेन्निर्घाताङ्गारधूमार्चिष्मती या वा महती यस्यर्क्षमवनिपतेरभिहन्यात् स हन्यते सराष्ट्रम्।

यदि असि (तलवार), मुशल (मुद्गर), भिन्दिपाल (अस्त्रविशेष = नलिका अस्त्र) या सर्पाकृति की उल्का निर्घातयुत, अग्नि या धूम की कान्ति वाली या महान् शरीर वाली होकर गिरती है और जिस राजा का जन्मनक्षत्र उससे हत होता है, वह राजा राज्यसहित नष्ट हो जाता है।

मयूरचित्रे

त्रिशङ्कुं ब्रह्मराशिं च चित्रां स्वातीमरुन्धतीम्।
मृगव्याधमगस्त्यं च ब्रह्मणो हृदयं तथा॥

अरुणं शिशुमारं च सप्तर्षीन् ध्रुवमेव च।
एतानभिहतान् दृष्ट्वा उल्कादिभिर्महद्भयम्॥

त्रिशङ्कु, ब्रह्मराशि, चित्रा, स्वाती, अरुन्धती, मृगव्याध, अगस्त्य, ब्रह्महृदय, अरुण, शिशुमार, सप्तर्षि और ध्रुव नक्षत्र— इन सबों को उल्का आदि (उल्का, निर्घात आदि) से आहत देखकर महान् भय जानना चाहिये।

गार्गीये तु

त्रिशङ्कुं ब्रह्मराशिं च चित्रां स्वातीमरुन्धतीम्।
मृगव्याधमगस्त्यं च ब्रह्मणो हृदयं तथा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अरुणं शिशुमारं च ध्रुवं सप्तर्षिमण्डलम्।
एतान् यदि निहन्त्युल्का तदा विद्यान्महाभयम्॥
विलुप्यन्ते च भूतानि दस्युभिर्मरकेण वा।

यदि त्रिशङ्कु, ब्रह्मराशि, चित्रा, स्वाती, अरुन्धती, मृगव्याध, अगस्त्य, ब्रह्महृदय, अरुण, शिशुमार, ध्रुव और सप्तर्षिमण्डल— इन सबों को उल्का पीड़ित करती है तो महान् भय जानना चाहिये। चौरों या मरकियों से प्राणियों का क्षय होता है।

बार्हस्पत्ये

आशाग्रहोपघातेषु तद्दिश्यानां भयं वदेत्।

जो दिक्पति ग्रह उल्का से हत हो, उस दिशा में रहने वाले मनुष्यों का भय कहना चाहिये।

वराहसंहितायाम्

आशाग्रहोपघाते तद्देश्यानाम् ...... इति।

विशेषः– पीडां करोतीति सम्बन्धः।

यदि दिक्पतिग्रह उल्का से हत हो तो उस दिशा में रहने वाले लोगों को पीड़ा होती है।

तथा

नक्षत्रग्रहघातैस्तद्भक्तीनां क्षयाय निर्दिष्टा।

यदि उल्का नक्षत्र या ग्रह का उपघात करे तो नक्षत्रव्यूह में उक्त उस नक्षत्र या ग्रह की भक्तियों का नाश करती है।

वटकणिकायां च

उल्काग्रहर्क्षपाते तद्भक्तीनां च नाशाय।

यदि ग्रह या नक्षत्र पर उल्कापात हो अर्थात् उल्का से ग्रह या नक्षत्र उपहत हो तो उस ग्रह या नक्षत्र की भक्तियों के लोगों का नाश होता है।

बार्हस्पत्ये

ग्रहेषु राज्ञां जानीयाद्भेषु तद्भक्तिजं भयम्।

यदि ग्रहों पर उल्कापात हो तो राजा को और नक्षत्र पर उल्कापात हो तो उस नक्षत्र की भक्तियों के लोगों को भय होता है।

गार्गीये

यदि नक्षत्रमाश्रित्य द्विधा भूत्वा विशीर्यते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्ञेया प्रतिहता सोल्का न तत्र फलमादिशेत् ॥

यदि उल्का नक्षत्र पर आश्रित होकर दो भागों में विभक्त होते हुए विलीन होती है तो वैसी उल्का को प्रतिहत जानकर उसका फल नहीं कहना चाहिये अर्थात् उसे निष्फल कहना चाहिये ।

अथोल्काविद्युदशनीनामाश्रयविशेषेषु पातफलं गार्गीये

ग्रहर्क्षसोमसूर्येषु निपतेत् तोरणे ध्वजे ।
गृहे च निपतेद्यत्र तत्रापि भयमादिशेत् ॥

यदि ग्रह, नक्षत्र, चन्द्र, तोरण (पुरद्वार), ध्वज या घर पर उल्कापात हो तो लोगों में भय होता है ।

मयूरचित्रे

तोरणध्वजगेहेषु स्वामिनां वधमादिशेत् ।

तोरण, ध्वजा या घर पर यदि उल्का गिरे तो गृहस्वामी का वध कहना चाहिये ।

वराहसंहितायां तु

कुर्वन्त्येताः पतिता देवप्रतिमासु राजराष्ट्रभयम् ।
शक्रोपरि नृपतीनां गृहेषु तत्स्वामिनां पीडाम् ॥

उल्का यदि देवता की प्रतिमा (मूर्त्ति) पर गिरे तो राजा और देश को भय, इन्द्र के ऊपर गिरे तो राजाओं को भय और घर पर गिरे तो गृहपति को पीड़ित करती है ।

बार्हस्पत्ये

देवतार्चासु पतनाद्राजराष्ट्रभयं भवेत् ।
एतासामिन्द्रशिरसि पतने नृपतेर्भयम् ॥
द्वारि वा पुःक्षयं विन्द्याद्गृहे तत्स्वामिनो भयम् ।

देवमन्दिर पर उल्कापात होने से राजा और राष्ट्र को भय, इन्द्र के मस्तक पर गिरे तो राजा को भय, द्वार (घर के द्वार या पुरद्वार) पर गिरे तो नगर का नाश और घर पर गिरे तो गृहपति को भय देती है ।

वराहसंहितायाम्

चैत्यतरौ सम्पतिता सत्कृतपीडां करोत्युल्का ।
द्वारि पुरस्य पुरक्षयमथेन्द्रकीले जनक्षयोऽभिहितः ॥

यदि चैत्य तरु (छोटे मन्दिर के पास का वृक्ष) के ऊपर उल्का गिरे तो पूज्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्तियों को पीड़ित करती है। यदि पुरद्वार पर उल्का गिरे तो पुर का क्षय और किवाड़ पर गिरे तो पुरवासियों का क्षय करती है।

बार्हस्पत्ये च

चैत्यवृक्षादिपातेषु सत्कृतानां महद्भयम्।
पुरद्वारि पुरक्षोभमिन्द्रकीले जनक्षयः॥

यदि चैत्य वृक्ष (छोटे मन्दिर के समीप का वृक्ष या बगीचे का वृक्ष) आदि पर उल्का गिरे तो सदाचारी (पूज्य) लोगों को महान् भय होता है। यदि नगरद्वार पर गिरे तो पुर में क्षोभ होता है और द्वार के किवाड़ पर गिरे तो लोगों का नाश होता है।

वराहसंहितायाम्

ब्राह्मायतने विप्रान् विनिहन्याद्गोमिनो गोष्ठे।

यदि ब्रह्मा के मन्दिर पर उल्कापात हो तो ब्राह्मणों का नाश होता है तथा गोष्ठ (गाय के स्थान) पर उल्का गिरती है तो गायों को पालन करने वालों का नाश करती है।

बार्हस्पत्ये च

ब्राह्मायतनपातेषु ब्राह्मणानामुपद्रवः।
गोष्ठेषु गोमिनां विन्द्यात् कर्षकाणां खलेषु च॥

यदि ब्रह्मा के मन्दिर पर उल्कापात हो तो ब्राह्मणों के लिए उपद्रव, गोष्ठ पर उल्कापात हो तो गौओं के पालकों और खलिहान में गिरती है तो किसानों के लिए उपद्रव होता है।

वराहसंहितायाम्

.... खले कृषिकराणाम् – इति।

खलिहान में उल्का गिरती है तो किसानों का नाश करती है।

मयूरचित्रे

वाराहे वा मृगे वाऽपि वानरे वा पतेद्यदि।
राक्षसाश्च पिशाचाश्च घ्नन्ति देशं सराजकम्॥
निर्मले यत्र नभसि विद्युत्पातः प्रवर्त्तते।
नित्यं भयमिहाख्याति देशस्य च कुलस्य च॥

यदि उल्का सूअर या मृग या हिरण के ऊपर गिरती है तो राक्षस और पिशाच राजासहित देश का नाश करते हैं। यदि निर्मल आकाश (मेघरहित) में विद्युत्पात हो तो देश और कुल का नित्य भय कहना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बार्हस्पत्ये तु

स्वभावान्निपतन्त्यन्या मारुतप्रतिलोमगाः ।
स्तृता न विद्युतो नेष्टा इष्टास्ताः पुनरन्यथा ॥

यदि स्वाभाविक रूप से हवा की प्रतिलोम दिशा की ओर जाने वाली विद्युत्पात हो तो अशुभ नहीं करती है; अन्यथा अशुभ होती है ।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषूल्कापातेषु सावित्रीमन्त्रक-दशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महा-शान्तिरौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या ।

जिन अशुभ उल्कापातों की विशेष शान्तिविधि नहीं कही गयी है, उनके लिए सावित्री मन्त्र के द्वारा दश लाख हवन आदि अभया नामक शान्ति या उत्पातफलों के न्यूनाधिक बल को जानकर महाशान्ति करनी चाहिये ।

मयूरचित्रे तु

अत्र साधारणी शान्तिः कर्त्तव्या – इत्युक्तम् ।

अशुभोल्कापात के शमन के लिए साधारणी शान्ति करनी चाहिये ।

विशेषः– मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरपुराणयोस्तु वृष्टिविकारोक्तशान्तिर्विहिता । तां च वृष्ट्यद्भुतावर्त्ते लिखिष्यामः— इति ।

अथ विहितविशेषशान्तय उल्काद्युत्पाताः । तत्र दिवोल्कायाः पातफलं विष्णुधर्मोत्तरे

दिवोल्का राजमृत्यवे इति । यदा तु दिवा महत्युल्का
पतति राजानं हत्वा तद्राष्ट्रेऽन्यनृपतिं कुर्यात् ।

दिन में दिखाई देने वाली उल्का राजा की मृत्यु के लिए होती है । जब दिन में महान् उल्का गिरती है तब राजा की हत्या करके उस देश में दूसरा राजा होता है ।

तथा च पराशरः

दिवा पतन्त्यतिमात्रमन्यनृपतिकारिणी स्यात् ।

यदि दिन में महान् उल्कायें गिरती हैं तो दूसरा राजा होता है ।

आथर्वणाद्भुते

दिवा पतति योल्का सा हन्याद्देशं सभूपतिम् ।
महाशान्तिं तत्र कुर्यादमृतां विश्वभेषजीम् ॥

विशेषः– एतदपि दिवापतितमहोल्कापरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो उल्का दिन में गिरती है, वह राजासहित देश का नाश करती है। इसके लिए महाशान्ति या विश्वभेषजी नामक अमृता शान्ति करनी चाहिये।

तत्रैव

दिवोल्कायां नृपो ज्ञात्वा वरेद्विप्रं सुशिक्षितम्।
दत्वा ग्रामवरं चास्मै शान्तिकर्म प्रवर्त्तयेत्॥

वृतः स गत्वाऽरण्यार्धं दीक्षामादित्यदैवताम्।
गृहीत्वा नवरात्रं तु तपेन्मूलाशनो यतः॥

फलाशनो वा शाकाशो पिबेद्दव्यं पयोऽथ वा।
नवाहान्ते त्रिरात्रं तु सलिलेनैव वर्त्तयेत्॥

प्रागुदक्प्रवणे देशे रमणीयेऽथ वा पुनः।
आरण्यमुपयुञ्जानश्चरेद्दीक्षां समाहितः॥

महीक्षितश्चरेन्नित्यं बलिं द्वादशरात्रिकम्।
समन्ताद्यो विपक्षश्च विदूरश्च महासुरः॥

तथा समरसश्चैव एतेषां निर्दिशेद्बलिम्।
आपूपं भक्तसहितं शूर्पे सचरुमेव च॥

रक्षेभ्यो रुधिरं दद्यादुद्बुद्धमृतकाश्च ये।
सप्तधेन्वादिकानेतान् सम्भारानुपकल्पयेत्॥

श्वेतां धेनुं लोहितां च कृष्णां च कपिलां तथा।
वह्निस्वरूपां च तथा बहुरूपां च सप्तमीम्॥

सुवर्णनाभं कुर्वीत ताम्रपात्रं सुविस्तरम्।
ताम्रस्त्रुवं शुक्लकृष्णा व्रीहीश्चैवोपकल्पयेत्॥

तासां च सप्तधेनूनां क्षीरं सम्पाद्य यत्नतः।
सद्योजातं दधि ततो मन्थानेनाभिमन्थयेत्॥

इच्छन्ति केचिन्मन्थानं दक्षिणेनैव पाणिना।
असद्योजातमपि वा केचिन्मध्यं जगुर्दधि॥

तदुक्तं नवनीतं तु दिनान्येकादशैव हि।
रक्षेत् पिपिलिकादिभ्यः सुगुप्तं तु निधापयेत्॥

द्वादशेऽनि सम्प्राप्ते यत्रोल्का पतिता भवेत्।
तस्य देशमभिव्रज्य हेमपुङ्खशरेण तु॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिविध्य परं मृत्यो इति मन्त्रेण मन्त्रवित् ।
शान्तिवृक्षमयेनाथ सन्दंशेन तु मृत्तिकाम् ॥

गृहीत्वाऽनवेक्षमाणो गत्वा दक्षिणतः क्षिपेत् ।
द्वेष्यदेशसमीपे वा तां मृदं प्रक्षिपेद्बुधः ॥

अनवेक्षमाणः प्रत्येत्य अष्टौ दिश्याः प्रकल्पयेत् ।
वेदीर्मध्ये वेदीमेकां सप्तविध्यादिसम्भृतः ॥

क्षीरोदनं मध्यमेऽग्नौ श्रपयित्वा यथाविधि ।
कामयुक्तेन जुहुयादुपस्ताराभिघारितम् ॥

सम्पातानानयेच्छेषे ततः पूर्वादिवह्निषु ।
होमः प्रदक्षिणं कार्यः सम्पाताँश्चैव पातयेत् ॥

होमः क्षीरोदनैश्चैव यामाहुस्तारकामिति ।
ततः क्षीरोदनात्तस्मात् सार्धपिण्डद्वयं ततः ॥

उल्कापातसमीपस्थैः प्राश्नीयात्तु वरैः सह ।
सर्वे च ते वरान् दद्युः प्राश्यकर्मोपकल्पकाः ॥

तामेवोपाचरेयुस्ते सर्वे च द्वादशीं निशाम् ।
यथोक्तमालभेनात्र पशुमादित्यदैवतम् ॥

यद्दैवतां चरेद्दीक्षां हविस्तद्दैवतं भवेत् ।
यथोक्तेन विधानेन वर्षाहोमादिकं चरेत् ॥

सावित्रीशान्तिसश्राद्धैर्विश्वकर्माभिरेव च ।
आदित्यनैर्ऋतैर्होमै राष्ट्रं हुत्वा यथाविधि ॥

महाशान्तिं ततः कुर्याद्धोत्रे ग्रामस्वदक्षिणाम् ।

दिन में उल्कापात होने पर राजा को निम्नोक्त शान्ति करनी चाहिये—

विद्वान् ब्राह्मण को श्रेष्ठ ग्राम दान देकर, वरण करके राजा को शान्तिकर्म करना चाहिये । वरण के बाद उसे जंगल के मध्य में जाकर सूर्य देवता की दीक्षा ग्रहण करके नौ रातों तक मूल या फल या शाक का भोजन अथवा गोदुग्ध या जल पीकर तप करना चाहिये तथा नौ दिनों के बाद तीन रातों तक मात्र जल पीकर रहना चाहिये । अथवा पूर्वोत्तर की ओर प्लव भूभाग या रमणीय स्थान में जंगली वस्तुओं (फल-मूल आदि) का आहार करते हुए एकाग्र चित्त होकर सूर्यदेवता की दीक्षा लेनी चाहिये और पृथ्वी (जिस जगह उल्कापात हुआ हो) का निरीक्षण करते हुए प्रतिदिन बारह दिनों तक चारो ओर के विपक्षी तथा दूरवर्त्ती महान् वीर और जो समान भाव (सम) रखने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाले हों, उन सबों को बलि देनी चाहिये। अपूप (पूआ) और भातसहित चरु सूर्प में रखकर राक्षसों और प्रेतों को बलि देनी चाहिये।

श्वेत वर्ण, लोहित (रक्त वर्ण), कृष्ण वर्ण, कपिल वर्ण, अग्नि वर्ण, अनेक वर्ण वाली और सुवर्णनाभि आदि सात गायों को, विस्तृत ताम्रपात्र, ताम्बा का स्रुव, सफेद और काला धान आदि सम्भारों को एकत्रित करना चाहिये। उक्त सात धेनुओं के दुग्ध से सद्योजात (तुरन्त जमाये हुए) दही को मथना चाहिये। कुछ आचार्यों के मतानुसार दक्षिण हाथ से पुराने दही को मथकर ग्यारह दिनों तक नवनीत (मक्खन) निकालकर पिपीलिका आदि (चींटी आदि) से उसे बचाने हेतु सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिये। बारहवें दिन में जहाँ पर उल्का गिरी हो, वहाँ जाकर सुवर्णपंख वाले शर से 'प्रतिविध्य परं मृत्यो:' इस मन्त्र से मिट्टी ग्रहण कर उसे विना देखते हुए दक्षिण दिशा की ओर फेंकनी चाहिये अथवा उस मिट्टी को शत्रु राजा के देश के निकट जाकर फेंकनी चाहिये। विना देखते हुए पुनः आठो दिशाओं में उक्तवत् मिट्टी फेंकनी चाहिये। तदुपरान्त वेदी के मध्य में एक वेदी बनाकर, सप्तविधि आदि उपकरणों से सुसज्जित करके दूध और भात मध्यम आग में पकाकर (पायस बनाकर) उसे घृत (नवनीत) से सराबोर करके 'कामयुक्तेन' इत्यादि मन्त्र से हवन करना चाहिये। सम्पातित भूमि से पूर्वादि आठों दिशाओं में प्रदक्षिणक्रम से 'यामाहुस्तारका' इत्यादि मन्त्र से दूध और भात से हवन करना चाहिये। तदुपरान्त बारहवीं रात में ढाई पिण्डों का श्रेष्ठ ब्राह्मणों के साथ भोजन करना चाहिये तथा सबों को वरदान देना चाहिये अर्थात् अभिलषित दानादि देना चाहिये। हवन के लिए सूर्य देवता के पशु का आलम्भन यथोक्त रीति से करके (क्योंकि जिस देवता की दीक्षा ली जाती है, उसी देवता की प्रिय वस्तु हवि होती है) यथोक्त प्रकार से हवन आदि करना चाहिये। सावित्री मन्त्र, शान्ति मन्त्र, विश्वकर्मा, सूर्य और नैर्ऋत आदि देवताओं के मन्त्र से यथाविधि राष्ट्र के हित के लिए हवन करके, महाशान्ति करनी चाहिये और होताओं को ग्रामादि के साथ विहित दक्षिणा देनी चाहिये।

गार्गीये

यस्मिन् देशे पतन्त्युल्का भास्करे गगने स्थिते।
स देशो राजभृत्यश्च राजा चैव विनश्यति॥

आकाश में (मध्याह्न) सूर्य के स्थित रहने पर जिस देश में उल्कायें गिरती हैं, वह देश, राजकर्मचारी और राजा नष्ट हो जाते हैं।

यथाऽऽह नारदः

उल्का वा पतते विप्र मध्याह्ने चार्धरात्रतः।
उदये प्रातः सन्ध्यायामपराह्ने विशेषतः॥
तद्देशे म्रियते राजा दुर्भिक्षं च भवेत्ततः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देशस्तत्र विनश्येत षड्भिर्मासैर्न संशयः ॥

यदि मध्याह्न, अर्धरात्रि, उदय के समय, प्रातः, सन्ध्या तथा विशेषतः अपराह्न में उल्का गिरती है तो उस देश में राजा का मरण और दुर्भिक्ष होता है तथा निश्चय ही छः मासों में उसका नाश होता है।

विशेषः– अर्धरात्र एव तु यदा उत्तरस्यां दिशि पतति तदा महावर्षं करोति न राजमरणादिकम्।

तथा च पराशरः

सौम्यां दिशमर्धरात्रेऽभिपतति महावर्षमिति। मध्याह्ने तु यदा सधूमोल्कापातो भवति तदा सप्ताहाभ्यन्तरे फलं भवति।

यदि उत्तर दिशा में अर्धरात्रि के समय उल्का गिरती है तो अतिवृष्टि होती है। जब मध्याह्न के समय धूमसहित उल्कापात होता है तो एक सप्ताह के भीतर फल (अशुभ) होता है।

तथा च मयूरचित्रे

मध्याह्ने चेत् पतेदुल्का ज्वालाधूमसमाकुला।
ससैन्यं सप्तरात्रेण नृपव्यूहं च नाशयेत् ॥

विशेषः– ज्वालासमाकुला ससैन्यं नपं हन्ति। धूमसमाकुला व्यूहमिति।

यदि मध्याह्न के समय उल्का ज्वाला और धूम से युक्त होकर गिरती है तो सात दिनों के भीतर सेनासहित राजा और नृपव्यूह का नाश करती है।

यदुक्तं गार्गीये

मध्याह्ने चेत् पतेदुल्का ज्वलन्ती चाग्निसन्निभा।
ससैन्यं सप्तरात्रेण सा हन्यान्मेदिनीपतिम् ॥

यदि मध्याह्न के समय अग्नि के समान धधकती हुई उल्का गिरती है तो सात दिनों के भीतर सेनासहित राजा का वह नाश करती है।

विशेषः– उदये सस्फुलिङ्गसधूमोल्कापाते नृपमरणमन्यथा दुर्भिक्षादिकमवगन्तव्यम्।

तथा च मयूरचित्रे

उदये सस्फुलिङ्गा सा सधूमा राजमृत्यवे।

यदि सूर्योदय के समय स्फुलिङ्ग (आग की चिनगारी) और धूआँ से युक्त होकर उल्कापात हो तो राजा की मृत्यु होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रातः सधूमे ज्वालोल्कापाते फलं स्वल्पम्। तथा च मयूरचित्रे

प्राक्सन्ध्यायां पतेदुल्का ज्वलन्ती धूमसङ्कुला।
नगरं मुच्यते राज्ञा सकोषबलवाहनम्॥

प्रात:काल में यदि अग्निज्वाला और धूम से व्याप्त उल्का गिरे तो खजाना, सेना और वाहनसहित राजा नगर का त्याग करता है।

विशेषः– विधूमाऽत्र ज्वलन्ती पौरे नृपतिं हन्ति।

तथा च गार्गीये

पूर्वसन्धौ पतत्युल्का ज्वलन्ती वह्निसन्निभा।
नागरं हन्ति राजानं सकोषबलवाहनम्॥

प्रात:सन्ध्या के समय यदि अग्नि की तरह ज्वाला से युक्त उल्का गिरती है तो नागर राजा का कोष, सेना और वाहनसहित नाश करती है।

अथ सन्ध्योल्कापातेऽपरमपि फलं मयूरचित्रे

पौराणां पूर्वसन्ध्यासु यायिनामपरासु च।
एवं पश्चिमसन्ध्यासु यज्विनां भयमादिशेत्॥

विशेषः– अपरासु मध्याह्ने सन्ध्यासु च।

यदि प्रात:सन्ध्या में उल्कापात हो तो नागर राजाओं को, मध्याह्न सन्ध्या में उल्कापात हो तो यायी राजाओं को और सायंसन्ध्या में उल्कापात हो तो यज्ञ करने वालों को भय कहना चाहिये।

यदुक्तं गार्गीये

प्राक्सन्ध्यायां नागराणां मध्याह्ने यायिनां तथा।
ततः पश्चिमसन्ध्यायां यज्विनां भयमादिशेत्॥

यदि प्रात:सन्ध्या में उल्कापात हो तो नागर राजाओं को, मध्याह्न में उल्कापात हो तो यायी राजाओं को और सायंसन्ध्या के समय उल्कापात हो तो यज्ञ करने वालों को भय कहना चाहिये।

अथ सन्ध्यादिषूल्कापाते शान्तिमाह नारदः

अत्र शान्तिं प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम्।
दधिमधुसमायुक्तं सिद्धान्नं घृतमिश्रितम्॥
चरुं चाथ [१]स्वदैवत्यं कृत्वा चैवंविधानतः।
जुहुयात् पञ्चसाहस्रं जातवेदसि मन्त्रवित्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धेनुं च दक्षिणां दद्यात् सुवर्णं धान्यमेव च।
अस्मिन् नाशकृते शान्तिर्ग्रामस्य च शुभं भवेत्॥

सन्ध्याकालिक उल्कापात के लिए शान्ति कही गयी है, जिससे शुभ होता है। दही और मधु से युक्त घृतमिश्रित सिद्धान्न (भात) और अग्निदेवता के चरु से मन्त्र के साथ अग्नि में पाँच हजार हवन करना चाहिये। हवन के पश्चात् गाय, सुवर्ण, धान्य और दक्षिणा दान करना चाहिये। इस प्रकार शान्ति करने से उक्त उल्कापातजन्य अशुभ का नाश और ग्राम का शुभ होता है।

मयूरचित्रे

उदयेऽस्तमये वज्रपातो राज्ञां वधाय तु।

यदि सूर्योदय या सूर्यास्त के समय में वज्रपात हो तो राजा का वध होता है।

तथा

प्रासादे भवने क्षेत्रे ग्राममध्ये तथा गिरौ।
निर्घातश्चाशनिश्चैव पतिता यदि कर्हिचित्।
भयं तत्र विजानीयाच्छान्तिः साधारणी त्विह॥

यदि प्रासाद, गृह, क्षेत्र (मैदान), ग्राममध्य या पर्वत पर निर्घात या अशनि (वज्र)-पात कदाचित् हो तो वहाँ भय जानना चाहिये तथा उक्त भय के शमनार्थ साधारणी शान्ति करनी चाहिये।

तथा

यत्र वातो महावेगो महोल्कावज्रमुल्बणम्।
तत्र वै षोडशी शान्तिर्या वाच्या परिवेषणे॥

जहाँ महान् वेगयुत हवा (निर्घात), महान् उल्का और वज्रपात स्पष्ट दिखाई दे, वहाँ षोडशी शान्ति करनी चाहिये; जो कि परिवेषाद्भुत की शान्ति के लिये भी कही गई है।

तथा

प्रतोल्यां नगरे द्वारे तोरणे राजवेश्मनि।
गजगोवाजिशालासु पार्थिवानां गृहेषु च॥

शान्तिगृहे देवगृहे राजमार्गे चतुष्पथे।
उल्का वा यदि वा वज्रं पततश्चेत् कथञ्चन॥

---

१. स्वदैवत्यमग्निदैवतमित्यर्थः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मासस्याभ्यन्तरे चैव तत्र विन्द्यान्महद्भयम् ।
राजा जनपदः पौरो भवेद्यश्च पुरोहितः ॥

द्वितीया शान्तिरत्रोक्ता विशेषस्त्वेष केवलः ।
त्रिषु स्थानेषु जायन्ते महोत्पाताश्च तेष्विमाम् ॥

शान्तिं कुर्याच्चरुं चास्य प्राशनं दक्षिणामपि ।

यदि प्रतोली (गली), नगर, द्वार, तोरण (पताका), राजा के घर, हथिशाल, गोशाला, घुड़शाल, राजा का निवासगृह, शान्तिगृह, देवालय, राजमार्ग या चौराहा पर कदाचित् उल्का या वज्र गिरे तो एक मास के भीतर वहाँ महान् भय जानना चाहिये । इसके शमनार्थ राजा, जनपद के निवासी, पुरवासी और पुरोहित— इन सबों को द्वितीया शान्ति करनी चाहिये । यदि तीन स्थानों पर एक साथ उल्का या वज्रपात हो तो विशेष रूप से शान्ति करनी चाहिये और चरु (हवनयोग्य सिद्धान्न) का प्राशन करके दक्षिणा देनी चाहिये ।

तथा

प्राकारे नगरद्वारे तोरणे राजवेश्मनि ।
गजशालाश्वशालायां विद्युत्प्रपतने सति ॥

विनश्यति बलाध्यक्षः प्रथमा शान्तिरत्र तु ।

प्राकार, नगरद्वार, तोरण, राजसदन, गजशाला एवं अश्वशाला पर विद्युत् पात होने से सेनाध्यक्ष का विनाश होना कहा गया है; अतः उक्त दोष के शमनार्थ प्रथमा शान्ति करनी चाहिये।

तथा

सन्ध्ययोरुभयोरुल्कापातश्चैवाशनिध्वनिः ।
भयं ब्रूयाच्च भूपानां कोषशस्त्राग्निजं तथा ॥

तत्राग्निब्राह्मणानां च पूजां कृत्वा महीपतिः ।
हेमवाहनरत्नाद्यैर्महीं दद्याद्द्विजन्मने ॥

चरुः कार्योऽशनं तस्य भोज्या विप्राः सदक्षिणाः ।

(इति चतुर्दशी शान्तिः)

यदि दोनों सन्ध्याओं में उल्कापात और वज्रपात की ध्वनि हो तो राजाओं के लिए कोष, शस्त्र और अग्नि से भय कहना चाहिये । इसके शमन के लिए अग्नि और ब्राह्मणों की पूजा करके ब्राह्मणों को सुवर्ण, वाहन, रत्नादि और पृथ्वी (जमीन) आदि दान करना चाहिये तथा स्वयं चरु को ग्रहण कर ब्राह्मणों को दक्षिणासहित भोजन कराना चाहिये । इसका नाम चतुर्दशी शान्ति है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा

ज्वलत्युल्का पतद्गेहेऽसुनाशार्थेन तद्भवेत्।
शान्तिहोमं ततः कुर्याद्दद्याद्गां चैव दक्षिणाम्॥

यदि जलती हुई (ज्वालायुक्त) उल्का घर पर गिरे तो गृही का प्राणनाश करती है। इसके लिए शान्ति-हवन आदि करके गोदान और दक्षिणा देनी चाहिये।

तथा

वज्रमुल्काशनिर्वाऽपि गृहादौ निपतेद्यदि।
वर्षस्याभ्यन्तरे चैव भयं विन्द्याज्जनक्षयम्॥

राजामात्यविनाशः स्याच्छान्तिरत्राग्निचोदिता।
त्रिरात्रोपोषितो भूत्वा हविष्याशी पुरोहितः॥

अपामार्गस्य समिधं सहस्रं जुहुयाद्बुधः।
अष्टोत्तरं ततो विप्रान् भोजयेत् पायसेन तु॥

रक्ताशोकसवर्णानां गवां क्षीरं समाहरेत्।
हुत्वा हुतिशतं विप्रो मन्त्रेणैन्द्रेण मन्त्रवित्॥

सुवर्णं रजतं कांस्यं हुत्यन्ते भूरिदक्षिणाम्।

(इति सप्तदशी शान्तिः)

यदि वज्र और उल्का या वज्रपात गृह आदि (गृह, ग्राम, नगर, पुर, जनपद, द्वार, तोरण, प्रतोली, वृक्ष, पर्वत आदि) पर हो तो एक वर्ष के भीतर जनक्षय का भय जानना चाहिये। राजा और मन्त्री का भी विनाश होता है। यहाँ अग्निशान्ति (अग्नि देवता की पूजा = हवन-दक्षिणा आदि) कही गयी है। तीन रात तक उपवास करके, हविष्यान्न का भोजन करके पुरोहित से अपामार्ग (चिड़चिड़ी) की समिधा से एक हजार बार हवन कराना चाहिये और १०८ ब्राह्मणों को पायस भोजन कराना चाहिये, पुनः लाल वर्ण अशोक के समान वर्ण वाली गायों के दूध का इन्द्रदेवता के मन्त्र से मन्त्रवित् ब्राह्मण के द्वारा एक सौ आहुति देकर सुवर्ण, रजत्, कांस्य आदि के साथ प्रचुर दक्षिणा हवनान्त में देनी चाहिये। यह सप्तदशी शान्ति विधि है।

नारदः

गृहे वज्रं पतेद्यत्र तत्र दोषं विनिर्दिशेत्।
धनं पुत्राश्च नश्यन्ति स्वयं नश्यति वा प्रभुः॥

ईशारुद्रेति मन्त्रेण होम एव विधीयते।
विप्राय दापयेत्तत्र तिलपात्रं सकाञ्चनम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धेनुं च वृषभं चैव ततः सम्पद्यते शुभम्।

जिस घर पर वज्र गिरे, वहाँ अशुभ कहना चाहिये। उस घर का स्वामी स्वयं या उसके धन और पुत्र नष्ट होते हैं। वहाँ गृहस्वामी 'ईशारुद्र' इत्यादि मन्त्र से हवन करके सुवर्णयुत तिलपात्र, गाय और बैल आदि ब्राह्मणों को दान करने से शुभत्व को प्राप्त करता है।

तथा

यत्र देवकुले वज्रं पतेद्गृध्रोऽपि वा पुनः।
ईशानो भिद्यते यत्र वज्रेणैवाहतः क्वचित्॥

ग्रामोत्सादो भवेत्तत्र स्वामिनो मरणं दिशेत्।
राज्ञो वा मरणं राष्ट्रं धनं धान्यं च नश्यति॥

अत्र शान्तिं प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम्।
रत्निमात्रमतः खात्वा अधस्ताद्द्वादशाङ्गुलम्॥

कुण्डं कृत्वा विधानेन ततो होमं समाचरेत्।
शुचिश्च प्रयतो भूत्वा अग्निः स्थाप्यो विधानतः॥

चरुं च यमदैवत्यं स्थापयित्वा विधानतः।
परिधाप्याहतं वासः शोभनं द्विजसत्तम॥

ससुवर्णेन हस्तेन ततः कर्म समाचरेत्।
अष्टोत्तरशतं हुत्वा घृताक्तं समिधां ततः॥

माषैर्मुद्गैस्तिलैश्चैव तण्डुलैश्च सितैस्तथा।
घृतेन मधुना चैव नैवेद्यानि तु कारयेत्॥

सम्पूर्णानां शरावाणां कुण्डे कुर्यान्निधापनम्।
तिलधान्यैर्यवैश्चैव घृतेन मधुना सह॥

एभिः पञ्चसहस्राणि शक्तिबीजेन होमयेत्।
होमान्ते तर्पयेद्विप्रान् दक्षिणाभोजनादिभिः॥

भूमिं धेनुमनड्वाहं स्वर्णं धान्यं च दक्षिणाम्।
पञ्चगव्यं ततः कृत्वा [१]स्नायाद्देवालयं द्विजः॥

कलशेन पुनः स्नायाद्देवं सम्पूज्य यत्नतः।
बलिं दत्वा विधानज्ञः कृशरैः पायसैस्तथा।

---

१. स्नायात् स्नापयेदित्यर्थः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ईशानं स्थापयेत्तत्र योगं कृत्वा विधानतः ॥
एवं कृत्वा विधानं तु कृतकृत्यो भवेन्नरः ।

जहाँ देवकुल (देवालय) पर वज्र या गृध्र (गिद्ध पक्षी) गिरे या ईशान (रुद्र) देवता की मूर्त्ति वज्र से आहत हो तो उस ग्राम का विनाश और गृहस्वामी का मरण होता है अथवा राजा का मरण और धन-धान्य, राष्ट्र का नाश होता है।

इस उत्पात के लिए शान्ति कही जाती है, जिससे शुभ होता है— रत्निमात्र (निमूठ हाथ = अंगुलि बाँधकर एक हाथ) जमीन को द्वादश अंगुल प्रमाण नीचे खोदकर (कुण्ड बनाकर) विधिपूर्वक हवन करना चाहिये।

पवित्र होकर विनयपूर्वक अग्नि का स्थापन विधानपूर्वक करना चाहिये। यम देवता के अनुरूप चरु की स्थापना करके नवीन एवं सुन्दर वस्त्र धारण करके सुवर्ण-हस्त होकर हवन कर्म का आरम्भ करना चाहिये। तदुपरान्त १०८ घृताक्त समिधाओं (घी में भिंगोकर लकड़ी) का हवन करके माष, मुद्ग, तिल, सफेद चावल, घृत और मधु को मिलाकर नैवेद्य देना चाहिये। सम्पूर्ण शरावों (नैवेद्ययुक्त) को कुण्ड में रख देना चाहिये।

तदुपरान्त तिल, धान्य, जौ, घृत और मधु का 'शक्तिबीज' मन्त्र से पाँच हजार हवन करना चाहिये। हवन के अन्त में दक्षिणा और भोजन आदि से ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करना चाहिये। जमीन, गाय, बैल, सुवर्ण, धान्य आदि दक्षिणा देनी चाहिये। तदुपरान्त पञ्चगव्य से देवालय को स्नान कराकर (सिक्त कर) पुनः कलशस्थ जल से देवता को स्नान कराकर, देवता की पूजा विधिपूर्वक करके कृशरान्न के पायस से बलि देकर ईशान का योग करके विधिपूर्वक स्थापना करनी चाहिये। इस प्रकार विधिपूर्वक ईशान की स्थापना करने से मनुष्य कृतकृत्य (धन्य) हो जाता है अर्थात् अशुभ फल से मुक्त हो जाता है।

मयूरचित्रे

प्रासादे राजमार्गे च पुरे च ग्राम एव च।
अग्रहारे च गोष्ठे च वज्रपातो भवेद्यदि ॥
राजामात्यविनाशः स्यात् षड्भिर्मासैः पुरक्षयः ।
अत्र साधारणी शान्तिः कर्त्तव्या दिव्यचोदिता ॥

यदि प्रासाद, राजमार्ग, पुर, ग्राम, अग्रहार (द्वार) या गोष्ठ (गोशाला) पर वज्रपात हो तो राजा और मन्त्री का विनाश तथा छः मासों में पुर का क्षय होता है। इसमें दिव्योक्त साधारणी शान्ति करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बार्हस्पत्ये

पतन्त्यो नोपलक्ष्यन्ते कर्मणा ताश्चकासते।
क्षितावशनयो यत्र तत्र नाभिभयागमः ॥

यदि वज्र गिरता हुआ देखा नहीं जाय, मात्र कर्म से (वज्रपातजन्य शब्द, प्रकाश आदि) प्रकाशित होता हुआ जहाँ पृथ्वी पर गिरे, वहाँ भय नहीं होता है।

तत्रैव

आग्नेयमण्डले चैवमशनेः पतने सति।
चतुर्थी दिव्यजा शान्तिर्दोषा नैव तदीयकाः ॥

यदि आग्नेय मण्डल में वज्रपात हो तो चतुर्थी दिव्याश्रयोक्त शान्ति करनी चाहिये। इससे अशुभ फल नहीं होते हैं।

अथ तारादीनां फलपाकनिर्णयो बार्हस्पत्ये

ताराधिष्ण्याश्च बोद्धव्याश्चिरान्मृत्युफलोदयाः।
तासामपि च भूयिष्ठदर्शनं दोषकारकम् ॥

यदि तारा और धिष्ण्या का अधिक मात्रा में दर्शन हो तो अशुभ फल और चिरकाल में मृत्युफल होता है।

वटकणिकायाम्

फलपादकरी तारा धिष्ण्याऽर्धं पुष्टिदा शेषाः।

तारा सम्पूर्ण फल का चतुर्थांश और धिष्ण्या आधा फल देती है तथा शेष (विद्युत्, उल्का और अशनि) पूर्ण फल देते हैं।

बृहत्संहितायाम्

तारा फलपादकरी फलार्धदात्री प्रकीर्तिता धिष्ण्या।
तिस्रः सम्पूर्णफला विद्युदथोल्काऽशनिश्चैव ॥

'तारा' एक पाद अर्थात् चतुर्थांश, 'धिष्ण्या' आधा और विद्युत्, उल्का एवं अशनि— ये तीनों सम्पूर्ण फल प्रदान करती हैं।

वटकणिकायाम्

धिष्ण्योल्के पक्षफले त्रिगुणं चैवाशनिः षडहमन्ये[१]।

---

१. अन्ये विघुत्तारे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धिष्ण्या और उल्का का १५ दिनों में, अशनि का ४५ दिनों में और अन्य (विद्युत् तथा तारा) का छः दिनों में फलपाक होता है।

बृहत्संहितायाम्

उल्का पक्षेण फलं तद्वद्धिष्ण्याऽशनिस्त्रिभिः पक्षैः।
विद्युदहोभिः षड्भिस्तद्वत् तारा विपाचयति॥

अभिभवति यतः पुरं वलं वा भवति भयं तत एव पार्थिवस्य।
निपतति च यया दिशा प्रदीप्ता जयति रिपूनचिरात्तु तत्र तत्र॥

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्वल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे उल्काद्भुतावर्त्तः।

उल्का १५ दिनों में, धिष्ण्या १५ दिनों में, अशनि ४५ दिनों में, बिजली छः दिनों में और तारा छः दिनों में फल देती है।

जिस ओर से आकर उल्का पुर या सेना के ऊपर गिरती है, उसी दिशा से राजा को भय होता है और जिस दिशा को प्रकाशित करती हुई गिरती है, उस दिशा में गमन करने वाला राजा शीघ्र ही शत्रुओं का नाश करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ विद्युदद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकविद्युल्लक्षणं मयूरचित्रे

मुक्तावलीनिभां स्निग्धां विद्युतं रजतप्रभाम्।
मेघमध्यगतां दृष्ट्वा सुभिक्षं क्षेममादिशेत्॥

मेघ के मध्य में स्थित मुक्ता (मोती) की पंक्ति की तरह, स्निग्ध या रजत् की कान्ति की तरह विद्युत् (बिजली) को देखकर सुभिक्ष और क्षेम (कल्याण) का आदेश करना चाहिये।

बृहद्यात्रायां वराहः

तन्वी प्रलम्बा विजयाय दीर्घा तडिद्घनस्फूर्जितवर्जिता च।

पतली एवं लम्बी और बिजली एवं मेघ के स्फूर्जन (शब्द) से रहित दीर्घ बिजली विजय के लिए दिखाई देती है।

पराशरः

अथ विद्युदूर्ध्वाधस्तिर्यग्गतित्वात् पिण्डितत्वाच्च ज्वालावर्णवातविशेषान् दृष्ट्वा तत्फलं ब्रूयात् सद्यो जलधरो वर्षेत्। तत्र पूर्वा सूर्यकान्ता दक्षिणा शतह्रदा पश्चिमा तडित् उत्तरा सौदामिनी शेषा दिग्देवताविख्याताः। तासां सूर्यकान्ता सौदामिन्यैशानी वार्षिक्या। सूर्यकान्ता तु कृष्णा कृष्णमेघस्था अवर्षाय। श्वेता च वर्षाय च। वृषशिरसि स्थिता ग्रहयोर्वा मध्ये वातवर्षाय। आग्नेयी नैर्ऋती च वार्षिक्यौ। हरिताभासा तु नैर्ऋती महावर्षायेति।

बिजली की ऊर्ध्व, अध: और तिरछी गति के कारण तथा पिण्डित (सम्मिलित) रूप के कारण उत्पन्न ज्वाला, वर्ण एवं वायुविशेष को देखकर उसका फल कहना चाहिये कि मेघ से सद्य: वृष्टि होगी या नहीं। दिशा के क्रम से बिजली की विशेष संज्ञा एवं फल बताये गये हैं—

पूर्व दिशा में उत्पन्न होने वाली बिजली का नाम सूर्यकान्ता, दक्षिण दिशा में शतह्रदा, पश्चिम में तडित्, उत्तर में सौदामिनी है और शेष (विदिशाओं आदि में) दिग्देवता के नाम से विख्यात हैं। उनमें सूर्यकान्ता, सौदामिनी और ऐशानी बिजली वृष्टि करने वाली होती है। काले मेघ में उत्पन्न कृष्ण वर्ण की सूर्यकान्ता अवृष्टि के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए और श्वेता (सफेद वर्ण) वर्षा के लिए दिखाई देती है। वृष राशि में या दो ग्रहों के मध्य में उत्पन्न होने वाली वायु-वृष्टि करने वाली होती है। आग्नेयी और नैर्ऋती विद्युत् वृष्टि देने वाली होती है। हरित् वर्ण की कान्ति वाली नैर्ऋती बिजली अतिशय वृष्टि के लिए दिखाई देती है।

मयूरचित्रे तु

उदक्पश्चिमपूर्वासु दिक्ष्वेशान्यां च विद्युतिः।
वृष्टिर्वायव्यभागे तु विज्ञेयः पवनोद्गमः॥

रक्तमानीलपर्यन्ता यदा विद्युत् प्रकाशते।
आग्नेयेऽथ दिशो भागे स्वल्पं वर्षति वासवः॥

शस्त्रसम्पातभूयिष्ठं याम्ये तु भयमादिशेत्।

उत्तर, पश्चिम, पूर्व और ईशान कोण में दिखाई देने वाली विद्युत् वृष्टि करने वाली होती है। वायव्य कोण में उत्पन्न होने वाली बिजली वायु उत्पन्न करती है। रक्त और नील वर्ण वाली बिजली यदि अग्निकोण में प्रकाशित दिखाई देती है तो स्वल्प वर्षा होती है। दक्षिण दिशा में दिखाई देने वाली बिजली शस्त्रप्रकोप और भय देने वाली होती है।

पराशरस्तु

स्निग्धा हरितावभासा सरश्मिः शतह्रदा मेदोवर्णा च महावर्षाय – इति।

स्निग्ध, हरित वर्ण की कान्ति वाली, किरणयुक्त और मेद (चर्बी के समान) वर्ण वाली बिजली अतिशय वर्षा करती है।

मयूरचित्रे

समन्ताद्यदि दृश्येरन् दिक्षु सर्वाशु विद्युतः।
सप्तरात्रं महावर्षं घोरं चैव विनिर्दिशेत्॥

यदि चारो ओर सभी दिशाओं में विद्युत् दिखाई दे तो सात रात तक महान् वर्षा और घोर भय कहना चाहिये।

पराशरस्तु

सर्वाश्चेत् प्रदक्षिणमभिवृत्योदयन्त्यः सुमहावर्षाय। विपर्यये विपरीताः। तासु बलवती चाशुगतिः पाण्डुताम्रा बहूदका। सर्वा एव वाताय कपिलिकाः। आतपाय लोहिताः। सर्वोर्ध्वगतयो रश्मिवत्योऽन्तःपरिवेषगताः। स्निग्धा नीलाश्चेतरेतरं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेयुस्ताडयेयुरुल्लिखेयुर्वायोश्चादित्यं विशेयुः श्वेतमण्डलाकाराः सोमान्निष्क्रम्य सूर्यं विशन्त्यो वर्षाय। सूर्यान्निष्क्रम्य नीलश्वेतारुणावभासाः सोमं विशन्त्यो भयाय वर्षाय वा। दक्षिणमार्गे सर्वाः स्युरवर्षाय। त्रिषु चेन्मार्गेषु मध्यमोत्तमयोश्चरन्ती वर्षायैव। अजवीथ्यादिषु या नीलाभ्रस्था तिर्यगूर्ध्वचारिणी श्वेता या चाभ्रं चन्द्रं च युगपदेव संस्पृशेन्महावर्षाय। श्वेता त्र्यहमेव। इन्द्रपथेऽन्तः सप्ताहाद्देशनिपाताय। अन्या भयाय स्युः। सर्वाः सन्ध्ययोर्दिवा च प्रादुर्भूता अवर्षिण्योऽपि महावर्षाय। श्वेतारुणैका विरश्मिर्नभोमध्यचारिणी सद्योवर्षाय। सूर्यकान्ताऽघोरा कपिलाभ्रे चाग्नेयी पीता। रक्ताभ्रे शतह्रदा ताम्रचूर्णे नैर्ऋती तडित्सौदामिन्यौ चास्निग्धकपिलमेघेषु शस्त्रपाताय – इति।

सभी दिशाओं में सभी विद्युत् प्रदक्षिणक्रम से आवृत्त होकर यदि उत्पन्न होती है तो अतिशय वृष्टि होती है। विपरीत (वाम) क्रम से उत्पन्न होने वाली बिजली विपरीत (अवृष्टि) फल देती है। उनमें बलवान, शीघ्रगामिनी और पाण्डु-ताम्र वर्ण की बिजली बहुत जल देने वाली होती है। कपिल वर्ण वाली सभी बिजली वायु उत्पन्न करती है। रक्त वर्ण वाली, ऊर्ध्व गमन करने वाली, रश्मि वाली, परिवेष के भीतर उत्पन्न होने वाली आतप (धूप) के लिए होती है। स्निग्ध, नील वर्ण वाली, एक-दूसरे में प्रवेश करने वाली, ताडन करने वाली, उल्लिखित होने वाली, वायु उत्पन्न होकर सूर्य-विम्ब में प्रवेश (विलीन) करने वाली, श्वेत मण्डलाकार, चन्द्रविम्ब से निकलकर सूर्यविम्ब में प्रवेश (विलीन) होने वाली वर्षा के लिए दिखाई देती है। सूर्यविम्ब से निकलकर नील, श्वेत और रक्त वर्ण की कान्ति वाली यदि चन्द्रविम्ब में प्रवेश करती है तो भय अथवा वृष्टि होती है। दक्षिण मार्ग (नक्षत्रवीथी के अनुसार) में उत्पन्न होने वाली सभी विद्युत् अवृष्टि के लिए होती है। तीनों (दक्षिण, मध्य और उत्तर) मार्गों में मध्यमोत्तम (मध्य और उत्तर) मार्गों में उत्पन्न होने वाली वर्षा के लिए ही होती है। अज (दक्षिण) वीथी आदि में जो नील मेघ में स्थित, तिर्यक् (तिरछी) और ऊर्ध्व गमन करने वाली, सफेद वर्ण वाली, जो एक साथ मेघ और चन्द्रमा का स्पर्श करती हो— ये सब महावृष्टि के लिए होती है। श्वेत वर्ण वाली तीन दिनों तक वृष्टि देती है। इन्द्रपथ के अन्तर्गत दिखाई देने वाली सात दिनों में देश के नाश के लिए और अन्य भय के लिए होती है। दोनों सन्ध्याओं और दिन में उत्पन्न होने वाली वर्षा से भिन्न काल में भी महावृष्टि के लिए होती है। श्वेत और रक्त वर्ण वाली, रश्मिहीन, आकाशमध्य में उत्पन्न होने वाली सद्योवृष्टि के लिए होती है। सूर्यकान्ता,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अघोरा, कपिल वर्ण की आभा वाली, आग्नेयी, पीता, रक्त वर्ण की कान्ति वाली, शतह्रदा, ताम्र वर्ण वाली, नैर्ऋती, तडित्, सौदामिनी— ये सभी विद्युत् अस्निग्ध (रूक्ष) और कपिल वर्ण के मेघों में दिखाई दे तो शस्त्रपात (युद्ध) होता है।

तथाऽऽषाढ़शुक्लचतुर्थ्यां पञ्चम्यां वा विद्युत्स्फुरवाताभ्यां सांवत्सरिकशुभाशुभनिरूपणं भार्गवीये

आषाढशुक्ले नियतं विद्युल्लक्षणमद्भुतम्।
वर्णरूपविकारांश्च दिशो भागान् शुभाशुभान्॥

चतुर्थीं पञ्चमीं चैव परीक्षेत प्रयत्नतः।
अतिवृष्टिमनावृष्टिं भावाभावौ तथैव च॥

सर्वशस्येषु निष्पत्तिं विद्युतो दर्शयन्ति हि।
ऐन्द्र्यां चेत् स्फुरते विद्युदैन्द्रश्चापि हि मारुतः॥

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं विवृत्तिं च विनिर्दिशेत्।
आग्नेय्यां चेदुभौ स्यातां भयं तत्र महद्भवेत्॥

अनावृष्टिश्च लोकस्य शस्त्राग्निभयमेव च।
याम्यायां स्फुरते विद्युद्याम्यश्चापि हि मारुतः॥

विषमां तु [1]समां विन्द्याद्व्याधिमृत्युभयाकुलाम्।
कनीयसी तु नैर्ऋत्यां तथा बह्वीतिका समा।
मध्यमा शस्यसम्पत् स्याद्वारुण्यां व्याधिसङ्कुला॥

पतङ्गदंशमशका वायव्यां मध्यशस्यदाः।
अतिचारिभयं विद्यात् सौम्यायां भूरिसम्पदम्॥

निवृत्तिः शस्यसम्पत्तिः प्रधानैशानगोचरे।
प्रतिलोमेषु वातेषु ईतिबाहुल्यमादिशेत्॥

शुभायां स्पन्दमानायामनिष्टा स्पन्दते यदि।
सम्पद्यते महाशस्यं महाँश्च स्यादुपद्रवः॥

अशुभा स्पन्दते पूर्वा यदा पश्चाच्च शोभना।
सुवृष्टिमेव तत्राहुर्न च शस्यं समृद्ध्यति॥
यदा च सर्वाः स्पन्दन्ते विषमां वृष्टिमादिशेत्॥

आषाढ़ शुक्ल पक्ष की चतुर्थी और पञ्चमी तिथियों में विद्युत् स्फुरण और हवा के वर्ण, आकृति और विकारों की परीक्षा कर प्रयत्नपूर्वक विद्युत् लक्षण के निश्चित

१. समा संवत्सरमिति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूप से अद्भुत के शुभाशुभ, अतिवृष्टि-अनावृष्टि, भावाभाव और सभी धान्यों की निष्पत्ति आदि का ज्ञान करना चाहिये। उक्त तिथियों की बिजली उक्त सबों का ज्ञान कराती है।

यदि पूर्व दिशा में विद्युत् का स्फुरण हो और पूरब की हवा बहती हो तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य और निवृत्ति (कार्यसिद्धि) होती है।

यदि अग्निकोण में विद्युत् का स्फुरण (उत्पत्ति) और अग्निकोण की हवा हो तो महान् भय, अनावृष्टि और शस्त्र एवं अग्नि का भय लोगों को होता है।

यदि दक्षिण दिशा में बिजली दिखाई दे और दक्षिण दिशा की हवा हो तो उस वर्ष को व्याधि और मृत्युभय से आकुल विषम (भयङ्कर) जानना चाहिये।

यदि नैर्ऋत्य कोण की हवा और विद्युत् हो तो उक्त फल से अल्प व्याधि और मृत्युभय तथा बहुत ईतिभय देने वाला वर्ष होता है।

यदि पश्चिम दिशा में विद्युत् और पश्चिम दिशा की ही हवा हो तो सस्य-सम्पत्ति मध्यम होती है और व्याधि से लोग भयभीत होते हैं।

यदि वायव्य दिशा में बिजली का स्फुरण हो तो पतङ्ग, कीट, मच्छर आदि की वृद्धि और मध्यम सस्य-सम्पद् होते हैं।

यदि उत्तर दिशा में बिजली का स्फुरण और उत्तर की हवा हो तो अतिचारी का भय और प्रचुर सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

यदि ईशान कोण की बिजली और हवा हो तो निवृत्ति (अभीष्टसिद्धि) और धान्यसम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

जिस दिशा में बिजली का स्फुरण हो और उसके विपरीत हवा हो तो ईतिबाहुल्य कहना चाहिये।

यदि शुभसूचक विद्युत् के स्फुरण के साथ अशुभसूचक विद्युत् का भी स्फुरण हो तो धान्य की वृद्धि अत्यधिक और महान् उपद्रव होता है।

यदि पूर्व दिशा में अशुभ स्फुरण और पश्चिम दिशा में शुभसूचक स्फुरण हो तो सुवृष्टि ही होती है; परन्तु धान्य की समृद्धि नहीं होती है।

जब सभी दिशाओं में विद्युत् का स्फुरण हो तो विषम (भयङ्कर) वृष्टि कहनी चाहिये।

शान्तिविधिः

अत्रानुक्ताविशेषशान्तिषु विद्युदुत्पाते, सावित्रीमन्त्रक-दशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्तिरौत्पा-तिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहाँ विद्युत् उत्पातों की अनुक्त शान्ति की जगह सावित्री मन्त्र के द्वारा दस लाख बार हवन आदि अभया नामक शान्ति अथवा उत्पातों की गुरुता एवं लाघवता को जानकर महाशान्ति करनी चाहिये।

मयूरचित्रे तु साधारणी शान्तिः कर्त्तव्येत्युक्तम्।

मयूरचित्र में विद्युत् उत्पातों के लिए साधारणी शान्ति बतायी गई है।

मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोस्तु वृष्टिविकारोक्ता शान्तिर्विहिता तां च वृष्ट्यद्भुतावर्त्ते लिखिष्यामः।

मत्स्यपुराण और विष्णुधर्मोत्तर पुराणों में वृष्टिविकार से उत्पन्न उत्पातों के लिए विहित शान्ति ही विद्युत् उत्पातों के लिए भी कही गयी है, जो वृष्ट्यद्भुतावर्त्त में लिखी जायगी।

फलपाकः

विद्युतामान्तरिक्षत्वात् षाण्मासिकः फलपाकः।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे विद्युदद्भुतावर्त्तः।

विद्युत् उत्पात अन्तरिक्ष में उत्पन्न होते हैं। इसलिए इसका फलपाक छः मासों में होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ वाताद्भुतावर्त्तः

तत्र शुभसूचकवातलक्षणमाह पराशरः

इह खलु वायवोऽष्टासु दिक्षु भवन्ति तेषां सुरभिरनुकूलो मृदुः सम इति सर्वदा शस्यते।

आठो दिशाओं की हवाओं में जो सुगन्धित, अनुकूल (आवश्यकतानुसार), मृदु (मन्द-मन्द) और समान रूप में बहती है, वह हमेशा शुभ फल देती है।

मत्स्यपुराणे

अनुकूलो मृदुः स्निग्धः सुखस्पर्शः सुखावहः।

अनुकूल, मृदु, स्निग्ध और सुखस्पर्श (जिस हवा से आनन्द का अनुभव हो) हवा सुखकारक एवं शुभद होती है।

अथाशुभसूचकवायुलक्षणं मत्स्यपुराणे

वायुः सशर्करो रूक्षः सर्वविघ्नसमन्वितः।
प्रतिलोमस्तथाऽतीव विज्ञेयो भयकृद्द्विज॥

अधिक बालूकण या छोटे-छोटे पत्थर-कंकड़युक्त, रूक्ष, सभी विघ्नों से युक्त और प्रतिलोम (विपरीत) हवा अतिशय भयङ्कर होती है।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

विष्वग्वाताश्च वान्त्युग्रा रजो नाप्युपशाम्यति।

सभी दिशाओं में भयङ्कर हवा बहती थी और धूलियाँ उड़ती थी।

तथा

वृक्षानुन्मूल्य वान्त्युग्रा वाताः शर्करकर्षिणः।

वृक्षों को उखाड़कर (गिराती हुई) भयङ्कर आन्धी, कंकड़ और धूलियों के साथ बहती थी।

मौशले वृष्णिक्षयनिमित्तम्

ववुर्वाताः सनिर्घाता रूक्षाः शर्करकर्षिणः।

निर्घात शब्द के साथ रूक्ष और शर्कर (कंकड़-पत्थर तथा धूलियों से युक्त) हवा (आन्धी) चलती थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भागवते वासुदेवोत्क्रान्तिनिमित्तम्

[१]वायुर्वाति खरस्पर्शो रजसा विसृजन् नभः ।

रूखे स्पर्श वाली तथा धूलियों से आकाश को व्याप्त करती हुई हवा बहती थी ।

विशेषः– बहुदिनानुबन्धिवातपरमेतत् फलगौरवात् ।

तथा च मौशले वृष्णिक्षयनिमित्तम्

उत्पेदिरे महावाता दारुणाश्च दिने दिने ।

प्रतिदिन भयङ्कर और महावात (अतिशय आन्धी-तूफान) उत्पन्न होती थी ।

बार्हस्पत्ये तु

वाति चाकालजो वायुर्घोरः शर्करकर्षणः ।
पातयन् वृक्षवेश्मादि गर्जयन्निव भीषणम् ॥

सप्ताहमथ वा पक्षमनुबध्नाति दारुणम् ।
ततो यदि न वर्षेत घोरं शस्त्रभयं भवेत् ॥

यदि अकाल (असमय) में भयङ्कर और शर्कर (कंकड़-पत्थर-धूलि आदि) के साथ हवा बहती है और वृक्ष-घर आदि को गिराती हुई तथा भीषण गर्जन (शब्द) के साथ बहती हुई सात दिन अथवा १५ दिनों तक भय उत्पन्न करती है । उसके बाद यदि वर्षा नहीं हो तो भयङ्कर शस्त्रभय होता है ।

आदिकाण्डे परशुरामपराजयनिमित्तम्

तयोः समुद्यतोरेव वायुः प्रादुरभून्महान् ।
प्रचण्डः शर्कराकर्षी कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥

उन दोनों के परस्पर युद्ध हेतु उद्यत होने पर महान् हवा की उत्पत्ति हुई (हवा बहने लगी) । वह हवा प्रचण्ड, शर्करयुत और पृथ्वी को कँपाती हुई की तरह बहती थी ।

उत्तरकाण्डे कार्त्तवीर्याद्रावणपराजयनिमित्तम्

चण्डः प्रवाति पवनः सनादः सरजास्तथा ।
सकूर्चो वैकृताराव: संवर्त्तः क्षुभितो घनैः ॥

विशेषः– नेदं पद्यद्वयं वाल्मीकीये उक्तस्थले उपलभ्यते ।

---

१. नेदमुक्तस्थले श्रीमद्भागवते उपलभ्यते ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्त्तवीर्य से रावण के पराजय के निमितरूप में उग्र, शब्दायमान, धूलियों से युक्त हवा बहती थी तथा संवर्त्त आदि मेघ विकृत शब्द करते हुए क्षुभित हो गये थे।

वनपर्वणि सौगन्धिकाहरणे भीमपराजयनिमित्तम्

ततो वायुर्महान् शीघ्रो नीचैः शर्करकर्षणः।
प्रादुरासीत् खरस्पर्शः संग्राममभिचोदयन्॥

महान् (उग्र) हवा तीव्र गति से शर्कर (कंकड़-पत्थर के टुकड़े और धूलिकण आदि) के साथ, रूखी स्पर्श करती हुई भयङ्कर युद्ध की सूचना देने वाली बहने लगी।

उत्तरकाण्डे जगदुद्वेजकरावणोत्पत्तौ

.... ववुर्वाताः सुदारुणाः।

रावण की उत्पत्ति के समय अत्यन्त दारुण हवा बहती थी।

भागवते हिरण्यकशिपूत्पत्तौ

ववौ वायुः सुदुःस्पर्शः फूत्कारानीरयन् मुहुः।
उन्मूलयन् नगपतीन् वात्यानीको रजोद्धतः॥

हिरण्यकशिपु के जन्म के समय अत्यन्त रूक्ष स्पर्श करने वाली, बार-बार फुँफकार की आवाज वाली, पर्वतों को उखाड़ती हुई धूलियों के साथ हवा बहती थी।

विशेषः– नेदं पद्यं श्रीमद्भागवते उक्तस्थले उपलभ्यते।

अथ दिक्फलं गार्गीये

पूर्वाऽभ्रजननो वायुरितरोऽभ्रविनाशनः।
उदग्जनयते वृष्टिं वर्षत्येव च दक्षिणः॥

पूर्व दिशा की हवा मेघ की उत्पत्ति करती है, पश्चिम दिशा की हवा मेघ का नाश करती है, उत्तर तथा दक्षिण दिशा की हवा वृष्टि कराती है।

विशेषः– 'उदग्जनयते वृष्टिमिति हिमसमयव्यतिरेकेण' अर्थात् शीतकाल के अतिरिक्त समय में उत्तर की हवा वृष्टि करती है।

पराशरः

तत्र पूर्वो मेघानां सञ्जननः। पश्चिमो विनाशनोऽन्यत्र नभोनभस्ययोः। नित्यं वर्षायोत्तरः। दक्षिणोऽभ्रसम्प्लवकरो मन्दवर्षाणि यच्छत्यपि वाऽन्यवातजं वर्षम्। नैर्ऋतो वायव्यश्चाभ्रवान् महावर्षाय। ऐशान्यो मृदुरपि वर्षाय। नानावातसम्पातो महावर्षाय। सर्वेषां चान्यवातकृतानामभ्राणामुपसृष्टवर्षाणां तत्प्रतिलोमो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनाशाय। अनुपसृष्टवर्णानां तु महावर्षाय। पूर्वश्चेन्महाशब्दो नीचैर्वलाहकानामाकर्षो महावर्षायैव स्यात्। यस्यां च दिशि पूतिगन्धनो निमित्तमागच्छेयुस्तस्यां दिशि शस्त्रकोपजननं विन्द्यात्।

पूर्व दिशा की हवा मेघों की उत्पत्ति करती है, पश्चिम दिशा की हवा श्रावण और भादव मासों को छोड़कर अन्य समय में मेघों का नाश करती है, उत्तर की हवा हमेशा वृष्टि के लिए तथा दक्षिण दिशा की हवा मेघाच्छादन और मन्द वृष्टि देती हुई अन्य वायु से होने वाली वृष्टि भी कराती है। नैर्ऋत्य और वायव्य दिशा की हवा मेघ के साथ महावृष्टि करती है। ईशान कोण की मन्द हवा वर्षा के लिए होती है।

अनेक वायुओं के सम्पात होने से महावृष्टि होती है। सभी दिशाओं की हवाओं तथा अन्य हवाओं से होने वाली वृष्टियों की विपरीत हवाओं में उत्पन्न होने से वृष्टि का विनाश होता है। अनुपसृष्ट वर्षा वाली अर्थात् जिस हवा से वृष्टि नहीं होती है, उसके विपरीत हवाओं के उत्पन्न होने से महान् वृष्टि होती है। अर्थात् वृष्टि करने वाली हवा यदि उपद्रवयुत नहीं हो तो महती वृष्टि होती है।

यदि पूरब की हवा जोड़ों से शब्द करने वाली नीचे से मेघों को आकर्षित करने वाली हो तो महती वृष्टि होती है। जिस दिशा में दुर्गन्धियुक्त हवा निमित्त के लिए आती हो, उस दिशा में शस्त्रकोप की उत्पत्ति जाननी चाहिये।

उद्योगपर्वणि हस्तिनापुरोत्सादनिमित्तम्

प्रामथ्नाद्धस्तिनपुरं वातो दक्षिणपश्चिमः।
अरुजन् गणशो वृक्षान् परुषोऽशनिनिःस्वनः॥

दक्षिण और पश्चिम दिशा (नैर्ऋत्य कोण) की हवा ने वृक्षसमूहों को उखाड़ती हुई, रूखी और वज्रपात की तरह शब्द करती हुई हस्तिनापुर को मथ दिया।

अत्र समयफलम्। तत्र पराशरः

ग्रीष्महेमन्तयोश्चेन्नाभिवर्षेद्वर्षाणां सम्पदं कुर्यात्। आधानकाले शर्कराकर्षिणो नीचैः स्वराः खरवपुषश्च शस्यन्ते।

यदि ग्रीष्म और हेमन्त ऋतुओं में वर्षा नहीं हो तो वर्षा (वर्षा ऋतु में) अधिक होती है। आधान (मेघ के गर्भधारण) के समय में शर्करा को उड़ाने वाली, अल्प शब्द करने वाली रूखी स्पर्श वाली हवा भी शुभ करती है।

आदिपर्वणि जतुगृहदाहानन्तरं पाण्डवानां वनप्रवेशे कौरववधनिमित्तम्

अप्रकाशा दिशः सर्वा वातैरासन्ननार्त्तवैः।

अनार्त्तव (ऋतुभिन्न) हवाओं से सभी दिशायें प्रकाशरहित हो गयीं थीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वादिदिग्वातफलमभिधाय पराशरः

सर्वेष्वेवातिमात्रेष्वनवरतेषु शीघ्रेषु सप्तरात्रेषु भयं महावर्षं वा विन्द्यात्। द्वादशरात्रपरेषु महावर्षं राजमृत्युं वा। पक्षपरेषु भयमेव च। तत्र क्षुद्भयमैन्द्रे। आग्नेये क्षुच्छस्त्रभयं दस्युतो राजदेशविनाशयोरन्यतरम्। याम्ये मूलफलपुष्प-घातमुत्पातातङ्कपिटकभयम्। नैर्ऋते कृमिपतङ्गदंश-मशककक्लेशशस्त्रप्रादुर्भावमीतिं चाधिकाम्। वारुणे फलपुष्पदमारोग्यं वा। वायव्ये क्षुच्छस्त्रभयै राजदेशविनाशयोरेकतरम्। सौम्ये क्षेमसुभिक्षम्। ईशाने शस्यसम्पदम्। सर्वतो दिग्भ्यस्तु युगपन्महाराजभयं सर्वदा।

सभी दिशाओं में अतिशय अनवरत शीघ्र (तेज) हवा सात रातों तक बहने पर भय अथवा महावृष्टि होती है। उक्त हवा बारह रात तक चलती हो तो महावृष्टि या राजमृत्यु का भय होता है। पन्द्रह दिनों तक चलने वाली हवा भय ही देती है। उनमें पूर्व की हवा में क्षुधाभय, अग्निकोण में क्षुधाभय, शस्त्रभय और चौरों से राजा तथा देश दोनों में से एक का नाश होता है। दक्षिण में मूल, फल और पुष्पों का नाश, उत्पात, आतङ्क तथा पिटक (फोड़ा) का भय होता है। नैर्ऋत्य कोण की उक्त हवा में कृमि (कीट), पतङ्ग, दंश (मच्छर, विच्छू आदि), मशक (मच्छर) आदि से क्लेश, शस्त्रभय और ईतियों की अधिकता होती है। पश्चिम में फल, पुष्प अथवा आरोग्य की वृद्धि होती है। वायव्य में क्षुधा और शस्त्रभय से राजा अथवा देश का नाश होता है। उत्तर में क्षेम और सुभिक्ष होता है। ईशान कोण की हवा में धान्यसम्पद् होती है। सभी दिशाओं से एक साथ हवा चलती है तो महाराजा को भय होता है।

आषाढपौर्णमास्यां तु विशेषमाह पराशरः

अतोऽनन्तरमाषाढीसंयुक्ते शशिनि सुरभिरनुकूलः स्पर्शवान् मारुतः। पूर्वः पूर्वोत्तर उत्तरो वर्षशस्यातिवर्षकरो नैर्ऋताग्नेययाम्यवारुणवायव्यो मध्यशस्यवर्षकरः। विपर्ययो विपरीतेषु। आधानविसर्गान्तभागे निमित्तानि प्रावृषामाद्यन्तेषु मध्येषु फलम् – इति।

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्रगत चन्द्र के समय सुगन्धित, अनुकूल (शुभ = उत्तर, ईशान या पूर्व दिशा में उत्पन्न), सुखस्पर्श शुभ होता है। पूर्व दिशा की वायु वृष्टि करने वाली, ईशान कोण की वायु धान्य देने वाली और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तर दिशा की वायु अतिवृष्टि करने वाली होती है। नैर्ऋत्य, आग्नेय, दक्षिण, पश्चिम और वायव्य कोण की वायु मध्यम धान्य और मध्यम वृष्टि करने वाली होती है। उक्त के विपरीत वायु विपरीत (अशुभ) फल देती है। गर्भ-धारण-समय के आदि, मध्य और अन्त भाग में निमित्त क्रमशः वर्षाकाल में आदि, अन्त और मध्य भाग में फल देते हैं।

फलपाकः

आन्तरिक्षत्वादन्यत्र षाण्मासिकः फलपाकः।

आन्तरिक्ष निमित्त का फल छः महीनों में होता है।

वातोत्पातशान्तिर्मत्स्यपुराणे

त्र्यहातिरिक्ते पवने रूक्षे सर्वदिगुत्थिते।
वैकृते वातजे वाऽपि वायव्या शान्तिरिष्यते॥

वायोश्च पूजा द्विजशक्तुभिश्च हुत्वा तदुक्ताँश्च जपेच्च मन्त्रान्।
दद्यात् प्रभूतं परमान्नमत्र सदक्षिणं तेन समोऽस्य भूप॥

यदि तीन दिनों से अधिक सभी दिशाओं में उत्पन्न, रूक्ष, विकारयुक्त हवा हो तो वायव्या शान्ति करनी चाहिये। इसमें वायु देवता की पूजा और ब्राह्मण के द्वारा शक्तु का हवन करके वायु देवता के मन्त्रों का जप करना चाहिये। जप-पूजन के अनन्तर राजा के द्वारा ब्राह्मणों को प्रचुर उत्तम अन्न और दक्षिणा का दान देना चाहिये।

वराहसंहितायाम्

वायव्येष्वेषु नृपतिर्वायुं शक्तुभिरर्चयेत्।
अवायोरिति पञ्चर्चा जप्याश्च प्रयतैर्द्विजैः॥

ब्राह्मणान् परमान्नेन दक्षिणाभिश्च तर्पयेत्।
बह्वन्नदक्षिणाहोमाः कर्त्तव्याश्च प्रयत्नतः॥

वायुजन्य विकृति के शमन के लिए राजा को शक्तु से वायु देवता की पूजा करनी चाहिये तथा नियमपूर्वक ब्राह्मणों के द्वारा 'आवयो' इत्यादि पाँच मन्त्रों का जप करवाना चाहिये। ब्राह्मणों को उत्तम अन्न और भूरि दक्षिणा से तृप्त करना चाहिये। इस प्रकार प्रचुर अन्न, दक्षिणा और हवन प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये।

बार्हस्पत्ये तु

वायव्येष्वेषु नृपतिर्वायुं शक्तुभिरर्चयेत्।
द्वाविमौ वाताविति च जप्तव्यं प्रयतैर्द्विजैः॥

बह्वन्नदक्षिणाहोमा कर्त्तव्याश्च प्रयत्नतः।
वायव्यामेव शान्तौ च वायोः सवितुरीरयेत्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदावन्ते च मध्ये च तथैव मनुजो जपेत्।
गुरवे दक्षिणां दद्याद्वायवीं शान्तिमद्भुताम्॥

वायुजनित अद्भुतों की शान्ति के लिए राजा को वायु देवता की पूजा शक्तुओं से करनी चाहिये। 'द्वाविमौ वाता' इत्यादि का जप एकाग्र होकर ब्राह्मणों से कराना चाहिये तथा प्रचुर अन्न और दक्षिणा के साथ हवन कराना चाहिये। वायवी शान्ति में वायु देवता और सूर्य देवता के मन्त्रों का आदि और अन्त में जप करना चाहिये और गुरु को दक्षिणा देनी चाहिये।

मयूरचित्रे तु

वहन्ति वाताः प्रखरं निरभ्राः स्तनितस्वनाः।
भयं तत्र विजानीयाच्छान्तिः साधारणी त्विह॥

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्वल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे वाताद्भुतावर्त्तः।

यदि प्रखर (रूक्ष) हवा चले, मेघरहित आकाश में स्तनित (मेघशब्द) सुनाई दे, तो भय जानना चाहिये और तब साधारणी शान्ति करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ मेघाद्भुतावर्त्तः

तत्राषाढे स्वातिसंयुक्ते चन्द्रमसि शुभाशुभमेघलक्षणमाह पराशरः

स्वातिसंयुक्ते चन्द्रमसि घनस्निग्धस्तनयित्नुविद्युन्मण्डल-निरम्भोदैर्नभसोऽवच्छादनं सुभिक्षक्षेमाय। वातप्रादुर्भा-वोल्कानिर्घातकम्पोपघातैश्च तद्विपर्ययः।

यदि स्वाती नक्षत्र में स्थित चन्द्र के समय सघन, निर्मल एवं मेघशब्द से युत विद्युन्मण्डल और जलरहित मेघ की छाया हो तो सुभिक्ष और कल्याण होता है। यदि जोड़ों की हवा की उत्पत्ति, उल्कादर्शन, निर्घात शब्द, भूकम्प आदि उत्पात हो, तो दुर्भिक्ष और भय होता है।

आषाढमासिकरोहिणीयोगे तु वराहसंहितायाम्

रूक्षैरल्पैर्मारुताक्षिप्तदेहैरुष्ट्रध्वाङ्क्षप्रेतशाखामृगाभैः ।
अन्येषां वा निन्दितानां सरूपैर्मूकैः शब्दैर्नो शिवं नापि वृष्टिः ॥

रूक्ष, अल्प, हवा से प्रेरित, ऊँट, कौआ, मुर्दा, वानर या अन्य निन्दित जीवों (कुत्ता, बिल्ली, राक्षस, सियार आदि) की तरह कान्ति वाले और शब्दरहित मेघ अशुभ और अवृष्टि करने वाले होते हैं।

बृहद्यात्रायां वराहः

ध्वजातपत्रपर्वतद्विपाश्वरूपधारिणः ।
जयाय सन्ध्ययोर्घना रणाय रक्तसन्निभा ॥

पलालधूमसञ्चयस्थितोपमा वलाहकाः ।
बलाल्परूक्षमूर्त्तयो विवर्धयन्ति भूभृतः ॥

निन्दितसत्त्वपिशाचविचित्राः पिशितभुगाकृतयः परुषाश्च ।
वज्रमुचः क्षतजास्रमुचो वाऽनलभयमाशु घनाः कथयन्ति ॥

सन्ध्या के समय ध्वजा, छत्र, पर्वत, हाथी, घोड़ा आदि के स्वरूप वाले रक्त वर्ण के मेघ जय के लिए दिखाई देते हैं। पुआल के धूम के एकत्रित होने की तरह अरूक्ष मूर्त्ति वाले मेघ राजा की सेना की वृद्धि के लिए होते हैं। निन्दित जीव (कुत्ता, बिल्ली, गीदड़ आदि), पिशाच (मांसभोजी भूतविशेष), पिशितभुक् (मांसभक्षी जन्तु), रूक्ष, वज्र गिराने वाले, रुधिर की वर्षा करने वाले मेघ शीघ्र अग्निभय देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरिवंशमत्स्यपद्मपुराणेषु तारका-मययुद्धे देवानां पराजयनिमित्तम्

एतस्मिन्नन्तरे मेघा निर्वाणाङ्गारवर्चसः ।
सार्कचन्द्रग्रहगणं छादयामासुरम्बरम् ॥
वेणुविद्युद्गणोपेता घोरनिर्ह्रादकारिणः ।

उस समय बूझी हुई अग्नि की तरह कान्ति वाले मेघ सूर्य, चन्द्रमा एवं ग्रहों के साथ आकाश को ढक लिये और बाँस के समान विंद्युत् गणों से युक्त भयंकर शब्द करने वाले मेघ दिखाई दिये ।

अथ गर्जनफलं बृहद्यात्रायाम्

स्फूर्जितं सलिलकुम्भनिषेकज्यौतिषार्णवमयं विजयाय ।

जलपूर्ण घड़े के समान नक्षत्रसमूहों के ढकने वाले मेघ का गर्जन विजय के लिए होता है ।

अथ वर्णफलं भार्गवीये

श्वेतः श्यामो हरित् कृष्ण इति वर्णा व्यवस्थिताः ।
प्रोक्ता मेघेषु चत्वारो व्यक्ताः स्निग्धाश्च पूजिताः ॥
स्निग्धेषु व्यक्तवर्णेषु चतुर्ष्वेतेषु नारद ।
सन्ध्योपमाभ्रवर्णेषु वर्षं तेष्वतिनिर्दिशेत् ॥
रूपेषु चम्पकाभेषु मेघेष्वपि च वर्षति ।
एभ्यश्च विपरीता ये ते वृष्टिभयदा घनाः ॥
मयूरगलपद्मेन्दुकांस्यनीलीनिभानि तु ।
सन्ध्यास्वभ्राणि दृश्यन्ते तीव्रं वर्षमुपस्थितम् ॥

श्वेत, श्याम, हरित और कृष्ण— ये चार मेघ के स्पष्ट और निर्मल वर्ण शुभ होते हैं । उक्त चारों वर्ण व्यक्त (स्पष्ट) और निर्मल हों तथा सन्ध्या वर्ण की तरह कान्ति वाले मेघ हों तो प्रचुर वृष्टि का आदेश करना चाहिये । यदि चम्पकपुष्प के समान वर्ण वाला मेघ हो तो भी वर्षा होती है । इनके अतिरिक्त वर्ण वाले मेघ वृष्टिविनाशक होते हैं । मयूर के गर्दन की तरह कान्ति वाले, कमल, चन्द्रमा, कांस्य और नीली की कान्ति वाले मेघ यदि सन्ध्या के समय दिखाई दें तो घोर वर्षा होती है ।

वराहसंहितायाम्

पीतच्छुरिताश्च घना घनमूला भूरिवृष्टिकराः ।

पीले वर्ण की कान्ति वाले मूल की तरफ सघन मेघ प्रचुर वर्षा देने वाले होते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मयूरचित्रे

पद्मिनीपत्रसङ्काशा घना मत्स्यसमत्विषः ।
चन्द्रार्कावुपगूहन्ते घना यच्छन्ति भूर्यपः ॥

यदि कमलिनी की कान्ति वाले या मछली की कान्ति वाले मेघ चन्द्र और सूर्य को ढक लें तो पृथ्वी पर पानी देते हैं ।

भार्गवीये

काञ्चनाभे जनारिष्टं सर्पिः सर्पनिभेषु च ।
हेमपावकवर्णेषु विपुलेषु जनक्षयः ॥

यदि सुवर्ण की कान्ति वाला मेघ हो तो लोगों को अरिष्ट, यदि सर्प की तरह हो तो घृत का नाश एवं यदि सुवर्ण और अग्नि के समान वर्ण वाले मेघ हों तो लोगों का नाश होता है ।

अथ दिक्फलं मयूरचित्रे

आषाढ्यामैन्द्रदिग्भागे मेघस्तनितवायुषु ।
समग्राँश्चतुरो मासान् सम्यग्वर्षति वासवः ॥

यदि आषाढ़ मास में पूरब दिशा में मेघ, गर्जन और वायु हो तो वर्षा ऋतु के चारो महीनों में अच्छी वर्षा होती है ।

आषाढे रोहिणीयुक्ते चन्द्रे विशेषो वराहसंहितायाम्

पूर्वोद्भूतैः शस्यनिष्पत्तिरब्दैराग्नेयाशासम्भवैरग्निकोपः ।
याम्ये शस्यं क्षीयते नैऋतेऽर्धं पश्चाज्जातैः शोभना वृष्टिरब्दैः ॥

वायव्योत्थैर्वातवृष्टिः क्वचित्तु पुष्टा वृष्टिः सौम्यकाष्ठासमुत्थैः ।
पुष्टं शस्यं स्थाणुदिक्सम्प्रवृद्धिर्वायुश्चैवं दिक्षु धत्ते फलानि ॥

पूर्व दिशा में उत्पन्न मेघों से धान्य-निष्पत्ति, आग्नेय कोण में उत्पन्न मेघों से अग्नि का भय, दक्षिण दिशा में उत्पन्न मेघों से धान्य का नाश, नैर्ऋत्य कोण में उत्पन्न मेघों से धान्य की आधी निष्पत्ति, पश्चिम दिशा में उत्पन्न मेघों से सुन्दर वृष्टि, वायव्य कोण में उत्पन्न मेघों से कहीं-कहीं पर वृष्टि (सर्वत्र नहीं), उत्तर दिशा में उत्पन्न मेघों से पूर्ण वृष्टि और ईशान कोण में उत्पन्न मेघों से धान्यों की उत्तम निष्पत्ति होती है । उक्त दिशाओं के वशवर्ती हवा का भी उपर्युक्त फल समझना चाहिये ।

आषाढशुक्लचतुर्थीपञ्चम्योर्विशेषो भार्गवीये

चतुर्थी पञ्चमी चैव प्रतीक्षेत तदा शुचिः ।
आषाढशुक्ले नियतं विद्युद्दर्शनमद्भुतम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सविद्युतः सस्तनिता दर्शयन्ति यदा शुभम्।
पूर्वोत्तरां दिशं मेघाः सुवृष्टिं तां विजानते॥

पूर्वतः पूर्ववृष्टेषु दृश्यन्ते यदि तोयदाः।
दक्षिणावर्त्तशुभदाः सुवृष्टमिति निर्दिशेत्॥

आग्नेयेष्वतिवृष्टिः स्याच्छस्यं चापि विपद्यते।
याम्येषु विषया वृष्टिर्व्याधिं मृत्युं च निर्दिशेत्॥

वर्धयित्वा नैर्ऋतेषु सामान्यफलदायिनी।
वारुणेषु पयोदेषु मध्यमं शस्यमादिशेत्॥

वायव्यां प्रथमं वर्षं यत्र वर्षति वासवः।
तत्रातिवृष्टिर्भवति स्वल्पं बीजानि वापयेत्॥

वर्णस्नेहोपपन्नास्तु पूर्ववृष्टाः पयोधराः।
सौम्या यत्र प्रवर्षेयुस्तत्र सर्वगुणाः स्मृताः॥

आषाढ़ शुक्ल की चतुर्थी और पञ्चमी तिथियों में सावधानीपूर्वक विद्युद्दर्शन से उत्पन्न अद्भुतों का निरीक्षण करना चाहिये। इन तिथियों में बिजली का दर्शन उत्पातकारी होता है। यदि बिजली मेघगर्जन के साथ दिखाई दे तो शुभ होता है।

पूर्वोत्तर (ईशान कोण) दिशा में मेघ दिखाई दें तो अच्छी वृष्टि जाननी चाहिये। पूरब दिशा में दक्षिणावर्त्त मेघ दिखाई दे तो अच्छी वृष्टि होती है। आग्नेय कोण में मेघ होने से अतिवृष्टि और धान्य का नाश होता है। दक्षिण दिशा में मेघ दिखाई दे तो विषम वृष्टि, व्याधि और लोगों की मृत्यु का आदेश करना चाहिये। नैर्ऋत्य कोण में उक्त अशुभ फलों में वृद्धि और सामान्य फल, पश्चिम दिशा में मेघ होने से मध्य धान्य-निष्पत्ति, वायव्य कोण में मेघ हो तो जहाँ पहले वृष्टि होती है, वहाँ अतिवृष्टि होती है; अतः स्वल्प बीज का वपन (बोना) करना चाहिये। वर्ण, स्नेह आदि गुणों से समाहित मेघ जहाँ प्रथम वृष्टि करते हैं, वहाँ शुभ होता है। उत्तर दिशा के मेघ सभी गुणों से युक्त होते हैं।

अथ संस्थानानि वराहसंहितायाम्

विलम्बिनो द्रुमोपमाः खरारुणप्रकाशिनः।
घनाः शिवाय सन्ध्ययोः पुरोपमाः शुभावहाः॥

यदि दोनों सन्ध्याकालों में लटके हुए, वृक्ष की तरह, अतिलोहित वर्णों से प्रकाशित और पुर (नगर) की तरह मेघ दिखाई दे तो शुभ करता है।

विष्णुधर्मोत्तरे

.... मेघैश्चायुधसन्निभैः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उदयास्तमये छन्नः पार्थिवानां न शस्यते ॥

उदय और अस्तकाल में आयुध के समान मेघ से आच्छादित (आकाश) हो तो राजाओं के लिए अशुभ होता है।

वृद्धगर्गः

उद्यत्यर्के धनूरूपै रुध्यमाने च तोयदैः ।
परचक्रागमो वाच्यः प्रजानाशस्तथैव च ॥

सूर्योदय के समय धनुष के समान मेघों से सूर्य ढका दिखाई दे तो परचक्र (दूसरे राजा) का आगमन और प्रजाओं का नाश कहना चाहिये।

वराहसंहितायाम्

आयुधभं नररूपं छिन्नाभ्रं परभयाय रविगामी ।

सूर्योदय के समय सूर्य को ढकने वाला आयुध (अस्त्र-शस्त्र) की तरह, मनुष्य की तरह और छिन्न मेघ दिखाई दे तो परचक्र (दूसरे राजा) का भय होता है।

भार्गवीये

अश्वस्था वारणस्थाश्च रथस्थाश्च यदा नराः ।
मेघेषु सम्प्रदृश्यन्ते सयोधाः सकुलध्वजाः ॥
तथा सवारणाश्चैव निघ्नतश्च परस्परम् ।
क्रव्याद्भिर्भक्ष्माणाश्च गृध्रगोमायुवायसैः ॥
उद्योतन्ते यदा युक्ता राज्ञां संशयकारकाः ।

यदि घोड़े, हाथी और रथ पर बैठे हुए मनुष्य मेघ में दिखाई दें तो सेनासहित कुल, ध्वजा और हाथीसहित सबों का परस्पर नाश हो जाता है। यदि मांसभक्षण करने वाले जीव, गृध्र, गीदड़, कौआ आदि के समान आकृति के मेघ दिखाई दें तो राजा के लिए संशय (अशुभ) होता है।

अथ वृक्षादिफलम् । तत्र पराशरः

अथाभ्रविकारेषु वृक्षपरिघस्तनितसञ्चयात्मकेषु सद्यः फलमादिशेत् । अत्र सप्तरात्राद्वा षण्मासात् तु गर्भकालजं वर्षम् । तत्र वृक्षेष्वेव तावद्यदि सन्ध्यायां पीतमाञ्जिष्ठो दृश्येताभ्रवृक्षः । शान्तायां दिशि राज्ञो विनाशाय स्यात् । स एव दीप्तायां दक्षिणतो वाऽर्कस्य हस्त्यश्वयोधानामन्यतमश्रेष्ठविनाशाय । कपिलः कृष्णो वा तथा भाग एव राज्ञो भयाय स्यात् । श्वेतो विजयाय ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन्ध्याकृतिश्चेत् पीतमाञ्जिष्ठनीलो वा हन्याद्राजानम्। पीतवर्णोऽर्कस्य पच्यमानः सद्यो बलकोपाय। पीताग्रश्चेद् घनः सन्ध्यायां प्रकाशेताहितक्षयाय। बहुकपिलस्तु ब्राह्मणानां पीडायै। लोहितः क्षत्रियाणाम्। हरितो वैश्यानाम्। कृष्णः शूद्राणाम्। चित्रो गणकानाम्। बहवश्चेद्गर्भरूपिणोऽरुणवर्णा विलापिनः परुषाः सर्ववर्णोपतापाय। धूम्रश्चेद् दृश्यमान आदित्यमियाद-भ्रवृक्षाकारोऽपि महते भयाय स्यात्। अच्छिन्नश्वेताग्रेण नभसो मध्यस्पृक् सद्यो वर्षाय। तथैव सूर्यमावृत्य तिष्ठन् नीलश्वेताग्रो यदि वा वंशवीरणगुल्माभ्रवृक्षा-दुदीयादस्तमितमियाद्वाऽर्कः। एवमेव विरूपेषु मूलवत्सु विशालेषु स्तनयित्नुनिर्घोषः सतडित्कलापस्तमधिसप्ता-भिहन्याच्छादयँस्तामभियुञ्जीत राजा।

मेघविकारों में वृक्ष-परिघ (मेघरेखा), मेघगर्जन आदि का फल सद्यः कहना चाहिये। यहाँ मेघगर्भधारण काल से सात रातों में अथवा छः मासों में वर्षा होती है। वृक्षों में यदि सन्ध्या के समय पीला और मजीठे की तरह वर्ण वाला मेघवृक्ष शान्त दिशा में दिखाई दे ते राजा का विनाश होता है। वैसा ही अभ्रवृक्ष सूर्य के दक्षिण भाग में दीप्त दिशा में दिखाई तो हाथी, घोड़े और योद्धाओं में से किसी एक श्रेष्ठ का नाश करता है। कपिल वर्ण या कृष्ण वर्ण का मेघवृक्ष दीप्त दिशा में दिखाई देने पर राजा को भय होता है। श्वेताभ्र वृक्ष राजा की विजय के लिए होता है। सन्ध्या के वर्ण के समान, पीत, माञ्जिष्ठ और नील वर्ण का मेघवृक्ष राजा का नाश करता है। पीत वर्ण का मेघवृक्ष सूर्य को आच्छादित करने वाला शीघ्र सैनिककोप (युद्ध) कराता है। पीत वर्ण वाला अग्रभाग सघन मेघ यदि सन्ध्या के समय दिखाई दे तो शत्रुओं का नाश होता है। अधिक कपिल वर्ण वाला मेघ ब्राह्मणों की पीड़ा के लिए, लाल वर्ण वाला क्षत्रियों की पीड़ा के लिए, हरे वर्ण का मेघ वैश्यों की पीड़ा के लिए और कृष्ण वर्ण का मेघ शूद्रों की पीड़ा के लिए दिखाई देता है। अनेक वर्ण वाला गणकों की पीड़ा के लिए, बहुत से गदहा के आकार वाले लाल वर्ण के, विलाप (चञ्चल) करते हुए, रूक्ष वर्ण वाले मेघ सभी वर्णों को दुःख देने के लिए दिखाई देते हैं। यदि सूर्य की ओर धूम्र की तरह दिखाई देने वाला मेघ गमन करे या मेघवृक्ष की आकृति वाला होकर सूर्य के पास दिखाई तो महान् भय होता है। अविच्छिन्न और अग्र भाग सफेद वर्ण वाला मध्याकाश को स्पर्श करने वाला मेघ सद्योवृष्टि के लिए दिखाई देता है। इसी प्रकार सूर्य को ढककर नील-श्वेताग्र मेघ मध्याकाश को स्पर्श करता हुआ स्थित हो अथवा यदि बाँस, वीरण, गुल्म (लता) की आकृति के मेघ मेघवृक्ष से उत्पन्न होकर अस्तंगत सूर्य तक स्थित हो तो सद्योवृष्टि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होती है। इसी तरह विवर्ण, मूलयुक्त, विशाल मेघ शब्द, विद्युत् शब्दयुक्त मेघ सूर्य को ढके तो राजा को शान्ति करनी चाहिए।

सन्ध्यालक्षणे एव वराहसंहितायाम्

दधिसदृशाग्रो नीलो भानुच्छादी खमध्यगोऽभ्रतरुः।
पीतच्छुरिताश्च घना घनमूलास्ते भवन्ति वृष्टिकराः॥

दही के समान सफेद अग्र भाग वाले, नील वर्ण वाले, एक भाग से सूर्य को ढकने वाले, आकाशमध्य में स्थित, पीले रंग से रंगे हुए और जड़ की तरफ सघन मेघवृक्ष हों तो वृष्टि करते हैं।

पराशरः

आषाढीसंयुक्ते शशिनि स्निग्धाभ्रवृक्षप्रादुर्भावः प्रावृड्वृद्धये।

उत्तराषाढ़ नक्षत्रगत चन्द्रमा के समय निर्मल मेघवृक्ष उत्पन्न हो तो वर्षा की वृद्धि होती है।

सन्ध्यालक्षणे वराहसंहितायाम्

अनुलोमगेऽभ्रवृक्षे समुद्गते यायिनो नृपस्य वधः।
बालतरुप्रतिरूपे युवराजामात्ययोर्मृत्युः॥

यायी (शत्रु के ऊपर चढ़ाई करने वाले) राजा के पीछे यदि मेघवृक्ष उत्पन्न हो तो उस राजा की मृत्यु होती है। यदि वही मेघवृक्ष बाल (छोटे) वृक्ष की तरह हो तो युवराज और मन्त्री का मरण होता है।

पराशरः

अथाभ्रपरिघस्त्रिवर्णो भानुमावृत्य तिष्ठन्महते जनक्षयाय स्यात्। कपिलो वातहर्षाय। रक्तः शस्त्रकोपाय। माञ्जिष्ठोऽग्निभयाय। अरुणो वाताय। पीताभः क्षयाय द्विपदानां रोगाय च। कृष्णश्छिद्रः सद्यो वर्षाय। ताम्रः शस्त्रसमुत्पाताय पशूनां च हरणाय। श्यामो गन्धर्वपीडायै चौरवृद्धये वा। स्निग्धनीलो महावर्षाय। श्वेतः सुभिक्षाय।

तीन वर्ण वाला मेघपरिघ (मेघरेखा) यदि सूर्य को घेरकर स्थित हो तो महान् जनक्षय, कपिल वर्ण का हो तो वातवृद्धि, रक्त वर्ण का हो तो शस्त्रकोप, माञ्जिष्ठ वर्ण का हो तो अग्निभय, लाल वर्ण का हो तो वायुवृद्धि, पीले वर्ण की आभा वाला हो तो द्विपदों (मानवों) का क्षय और रोग, कृष्ण छिद्रयुक्त हो तो सद्योवृष्टि, ताम्रवर्ण का हो तो शस्त्रोद्योग (युद्ध) और पशुओं का नाश, श्याम वर्ण का हो तो गन्धर्वपीड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथवा चौरों की वृद्धि, निर्मल और नील वर्ण का हो तो महावृष्टि और सफेद वर्ण का हो तो सुभिक्ष होता है।

बृहद्यात्रायां वराहः

नृपविपत्तिकरः परिघः सितः क्षतजतुल्यवपुर्बलकोपकः।
कनकरूपधरो बलवृद्धिदः सवितुरुद्गमकालसमुत्थितः॥

सूर्योदय के समय में उत्पन्न परिघ (मेघरेखा) यदि सफेद वर्ण का हो तो राजा का नाश, रक्त वर्ण का हो तो सेना का नाश और सुवर्ण की तरह कान्ति वाला हो तो सेनाओं की वृद्धि होती है।

स्कन्दपुराणे तारकावधनिमित्तम्

रक्तनीलाश्च परिघास्तिष्ठन्त्यावृत्य भास्करम्।

उक्त समय रक्त और नील वर्ण के परिघ सूर्य को ढककर स्थित दिखाई दिये।

हरिवंशे तु वाणपराजयनिमित्तम्

त्रिवर्णपरिघो भानुः सन्ध्यारागमथावृणोत्।

सन्ध्या के समय तीन वर्ण वाले परिघों से युक्त सूर्य ने सन्ध्या के राग (वर्ण) को आवृत्त (बदल) कर लिया।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

श्वेतलोहितपर्यन्ता कृष्णग्रीवाः सविद्युतः।
त्रिवर्णाः परिघाः सन्ध्यौ भानुमावारयन्त्युत॥

सफेद और लाल शरीर वाले तथा कृष्ण गरदन वाले, विद्युत् सहित तीन वर्ण वाले परिघ सन्ध्या के समय सूर्य को आवृत्त कर लिये।

भार्गवः

नीललोहितपर्यन्तं कृष्णग्रीवं सविद्युतम्।
त्रिवर्णं परिघं दृष्ट्वा विन्द्यादुदकवाहकम्॥

नील, लोहित वर्ण शरीर और कृष्ण ग्रीव, विद्युत् सहित तीन वर्ण वाले परिघ को देखकर मेघ को जानना चाहिये अर्थात् वृष्टि होती है—ऐसा जानना चाहिये।

भीष्मपर्वणि कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

सकबन्धश्च परिघो भानुमावृत्य तिष्ठति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कबन्ध (शिररहित शरीर) युक्त परिघ सूर्य को घेरकर स्थित हो गया।

द्रोणपर्वणि द्रोणवधनिमित्तम्

सकबन्धस्तथाऽदित्ये परिघः समदृश्यत।

उक्त समय सूर्य के पास कबन्धयुक्त परिघ (कबन्ध की आकृति वाला परिघ) दिखाई देने लगा।

पराशरः

अथान्तःसूक्ष्मा रक्ताः परुषा नैर्ऋत्यां दिशि प्रपद्यमाना राजवधाय स्युः। शेषा रश्मिभिः समानफलाः। अथाभ्राणि सञ्चितानि सेनानगरकबन्धरूपाणि संग्रामाय। तत्र दिक्षु वर्णेषु यथास्वं जयपराजयं विन्द्यात्। विमूढानि घनानि महान्ति प्राकारशिखररूपाणि महावर्षाय पारावतमयूरवर्णानि च। तथा नृपजलचरामोदाय घट-रूपाण्युपरिमण्डलवाद्याकृतीनि काञ्चनाञ्जनरूप-शङ्खमणिमुक्ताप्रवालकाण्डधौतकृष्णायःप्रसन्नानि। तथा विद्युत्स्तनयित्नुमन्ति सुजातानि सूर्यस्य पुरस्तात् तान्यर्यमनाम्नः प्रदक्षिणपरिवर्त्तीनि। मध्याह्नरात्र्योश्च वायुस्तनयित्नुमन्त्यभिवर्षाय। पीतलोहितापीतनीलाति-मात्रसञ्चयान्यनृत्तौ शस्त्राय वर्षाय च। सूक्ष्माणि त्वव्यक्तरागाणि विच्छिन्नमूलान्यनर्थायातिवातवेगाय वा। तथा वराहाश्वखरदंष्ट्रिरूपाणि शीघ्रनिपातीनि शस्योपरोधायावग्रहाय वा।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु मेघोत्पातेषु सावित्रीमन्त्रक-दशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्ति-रौत्पातिकफलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

यदि नैर्ऋत्य दिशा में मध्य भाग सूक्ष्म वाले, रक्त वर्ण और रूक्ष वर्ण के मेघ उत्पन्न हों तो राजा का नाश होता है। शेष दिशाओं में रश्मि (वर्ण) के समान फल होते हैं। मेघों के इकट्ठे होने से सेना, नगर और कबन्ध की आकृति दिखाई दे तो युद्ध होता है। उस युद्ध में दिशा-वर्ण (उक्त) के अनुसार राजा की जय-पराजय जाननी चाहिये। मेघों के जमा होने से महान् प्राकार (परकोटा = बड़ी दीवार) हो, शिखर का आकार हो और पारावत (कबूतर) और मयूर के वर्ण वाले मेघ हों तो महावृष्टि होती है। सुवर्ण, अञ्जन, शङ्ख,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मणि, मुक्ता, प्रवाल (मूँगा), काण्ड (बाण), धौत-कृष्ण के समान वर्ण वाले, निर्मल, घड़ा, परिमण्डल और वाद्ययन्त्र की आकृति वाले मेघ राजा और जलचर जीवों के लिए आनन्द देने वाले होते हैं। सूर्य के आगे (ऊपर) विद्युत् युक्त, प्रदक्षिणवर्त्ती मेघ अर्यम नाम के होते हैं, जो शुभदायक होते हैं। मध्याह्न और रात में वायुयुक्त मेघ सुवृष्टिदायक होते हैं। पीला, लाल, अत्यन्त पीला, नीला आदि वर्णों से युक्त मेघ वर्षा से भिन्न ऋतुओं में युद्ध के लिए और वर्षा के लिए होते हैं। सूक्ष्म (पतले), अस्पष्ट वर्ण वाले और विच्छिन्न मूल वाले मेघ अनर्थ या अतिशय हवा के लिए उत्पन्न होते हैं। सूअर, घोड़ा, गदहा और दंष्ट्रि (सूअर, कुत्ता आदि) रूप वाले और शीघ्र नष्ट होने वाले मेघ धान्यनाश अथवा अवग्रह (सुखार) के लिए होते हैं।

मेघोत्पातों की अनुक्त शान्ति की जगह सावित्री मन्त्र के द्वारा दश लाख हवन आदि के द्वारा अभया नामक शान्ति अथवा उत्पातों के फलों के बलाबल को जानकर महाशान्ति करनी चाहिये।

अथ विहितविशेषशान्तयो मेघोत्पाता भार्गवीये

गदर्भैर्महिषैरुष्ट्रैर्वृकैर्वा शूकरैः खगैः।
समानाकृतयः कुर्युः सन्ध्यायां जलदाभयम्॥
यत् तु क्रोडादिमकरा घना यच्छन्ति भूर्यपः।
इति मयूरचित्रवचनं तद्वार्षिकमेघपरम्।

गदहा, महिष, ऊँट, वृक (भेंड़िया), सूअर या पक्षी की आकृति वाले मेघ सन्ध्या के समय उत्पन्न हों तो भय करते हैं। परन्तु क्रोड (सूअर), मकर (घड़ियाल) आदि के समान आकार वाले मेघ पृथ्वी पर पानी बरसाते हैं (मयूरचित्र में यह वचन वार्षिक मेघ के निमित्त कहा गया है)।

बार्हस्पत्यमयूरचित्रयोः

नानापक्षिमृगाकाराः शृगालोष्ट्राश्वसन्निभाः।
उदयास्तमये मेघाः कुर्वन्ति जगतो भयम्॥

दोनों सन्ध्या के समयों में अनेक प्रकार के पक्षियों और मृगों के आकार वाले, गीदड़, ऊँट, घोड़ा आदि की तरह रूप वाले मेघ संसार को भय प्रदान करते हैं।

वराहसंहितायां तु

प्रहरणरूपैर्जलदैः स्थगितः सन्ध्याद्वयेऽपि रणकारी।
मृगमहिषविहङ्गखरकरभसदृशरूपैश्च रणकारी॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि दोनों सन्ध्या के समयों में प्रहरण (शस्त्र) के आकार वाले, मृग, महिष, पक्षी, गदहा, ऊँट आदि के समान रूप वाले मेघ के द्वारा सूर्य स्थगित (आच्छादित) हो जाय तो युद्ध होता है।

मयूरचित्रे

अत्र साधारणी शान्तिः कर्त्तव्या गर्गभाषिता।

उपर्युक्त मेघोत्पात के शमन के लिए साधारणी शान्ति, जो गर्ग ने कही है, करनी चाहिये।

तत्रैव

प्रावृट्काले च मेघेषु दण्डशूलोर्मिभेषु च।
दस्युस्तेयक्षयो युद्धं भयं चैव महद्भवेत्॥

अविच्छिन्ना यदा व्यक्ता गदायाः सदृशास्तथा।
कपालसदृशाकारा मेघा दस्युभयावहाः॥

वज्रपरिघतुल्येषु युद्धं मेघेषु जायते।
एषूत्पातेषु दिव्योक्ता प्रथमा शान्तिरिष्यते॥

रथाङ्गसदृशाकारा मेघाः प्रासादसन्निभाः।
कबन्धशिरःसङ्काशा नृणामाहुर्महद्भयम्॥

द्वितीया शान्तिरेतेषु कर्त्तव्या दिव्यचोदिता।
पताकाध्वजसङ्काशाश्चक्रवर्त्तिवधं घनाः॥

ब्रूवते दस्युसम्भूतिं शस्यनाशं रणं तथा।
प्रथमां वा द्वितीयां वा दिव्यकाण्डप्रचोदिताम्॥

विशेषः– शान्तिं कुयादिति सम्बन्धः।

यदि वर्षाकाल में दण्ड, शूल या पानी की तरङ्ग के सदृश मेघ दिखाई दें तो चोर-डकैतों से भय, युद्ध और महान् भय होते हैं। यदि अविच्छिन्न और स्पष्ट गदा के समान तथा कपाल के समान आकार वाले मेघ दिखाई दें तो चोरों का भय होता है। यदि वज्र या परिघ (अस्त्रविशेष) की तरह आकृति वाले मेघ दिखाई दें तो युद्ध होता है। इन उत्पातों के दर्शन होने पर दिव्योक्त प्रथमा शान्ति करनी चाहिये। यदि रथाङ्ग (रथ का पहिया) या प्रासाद (भवन), कबन्ध या शिर के समान आकार वाले मेघ दिखाई दें तो मनुष्यों के लिए महान् भय कहना चाहिये। इन उत्पातों के होने पर दिव्योक्त द्वितीया शान्ति करनी चाहिये। पताका या ध्वजा की तरह के मेघ से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चक्रवर्त्ती राजा का वध होता है और चोरों की वृद्धि, धान्यनाश तथा युद्ध होता है। इन उत्पातों के दिखाई देने पर दिव्योक्त प्रथमा अथवा द्वितीया शान्ति करनी चाहिये।

फलपाकः

अत्रानुक्तफलपाकसमयविशेषाणामान्तरिक्षत्वात्
षाण्मासिकः फलपाकः।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे मेघाद्भुतावर्त्तः।

यहाँ पर मेघोत्पात का विशेष फलपाक कथित न होने के कारण आन्तरिक्ष अद्भुत होने के कारण छः मास में फलपाक जानना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ मेघानां गर्भाद्धुतावर्त्तः

तत्र वराहसंहितायाम्

अन्नं जगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्य चान्नमायत्तम् ।
यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृट्कालः प्रयत्नेन ॥

केचिद्वदन्ति कार्त्तिकशुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः ।
न तु तन्मतं बहूनां गर्गादीनां मतं वक्ष्ये ॥

मार्गशिरःसितपक्षप्रतिपत्प्रभृतिक्षपाकरेऽषाढाम् ।
पूर्वां वा समुपगते गर्भाणां लक्षणं ज्ञेयम् ॥

मृगशीर्षाद्या गर्भा मन्दफलाः पौषशुक्लजाताश्च ।

अन्न संसार का प्राण है, वह अन्न वर्षाकाल (वर्षा ऋतु) के अधीन है। अतः प्रयत्नपूर्वक वर्षा ऋतु की परीक्षा करनी चाहिये।

किसी का मत है कि कार्तिक शुक्लान्त (पूर्णिमा) के पश्चात् गर्भदिन (मेघगर्भधारण के समय) होते हैं। परन्तु यह मत बहुतों का नहीं है। अतः गर्गादि आचार्यों का मत कहते हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा से जब चन्द्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्र में स्थित हो, उस समय से गर्भों का लक्षण जानना चाहिये। यहाँ पर 'वा' शब्द चार्थक है।

मार्गशीर्ष शुक्ल और पौष शुक्ल में स्थित गर्भ मन्द फल (अल्प वृष्टि) देने वाला होता है।

पराशरः

माघेन श्रावणं विन्द्यान्नभस्यं फाल्गुनेन तु ।
चैत्रेणाश्वयुजं प्राहुर्वैशाखेन तु कार्त्तिकम् ॥

शुक्लपक्षेण कृष्णं तु कृष्णपक्षेण चेतरम् ।
रात्र्यह्नोश्च विपर्यासं गर्भकालविनिश्चयम् ॥

यदि माघ में गर्भधारण हो तो श्रावण में प्रसव (वृष्टि), फाल्गुन में गर्भ हो तो भादव में, चैत्र में गर्भ हो तो आश्विन में एवं वैशाख में गर्भ हो तो कार्त्तिक में प्रसव जानना चाहिये। यदि शुक्ल पक्ष में गर्भ धारण हो तो कृष्ण पक्ष में प्रसव एवं कृष्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पक्ष में हो तो शुक्ल पक्ष में तथा रात और दिन में भी विपरीतक्रम से अर्थात् रात का गर्भ दिन में एवं दिन का गर्भ रात में वृष्टि करता है— ऐसा कहना चाहिये।

वटकणिकायाम्

पौषासितपक्षाद्यैः श्रावणशुक्लादयो विनिर्देश्याः।
कृष्णेन शुक्लपक्षः सितेन कृष्णो निशा दिनोत्थेन॥
रात्र्याहः सन्ध्यायां सन्ध्यादिग्व्यत्ययाज्जलदाः।

पौष कृष्ण पक्षादि में स्थित गर्भ क्रमशः श्रावण शुक्लादि में, कृष्ण पक्ष में स्थित गर्भ शुक्ल पक्ष में, शुक्ल पक्ष में धारित गर्भ कृष्ण पक्ष में, दिन का गर्भ रात में, रात का गर्भ दिन में, सन्ध्याकाल में धारित गर्भ सन्ध्या और दिशा के विलोम से अर्थात् प्रातःसन्ध्याकालिक गर्भ सायंसन्ध्याकाल में, पूर्वादि दिशाओं में धारित गर्भ से क्रमशः पश्चिमादि विपरीत दिशाओं में उत्पन्न मेघ वृष्टि करता है।

बृहत्संहितायां तु

पौषस्य कृष्णपक्षेण निर्दिशेच्छ्रावणस्य सितम्।
माघसितोत्था गर्भाः श्रावणकृष्णे प्रसूतिमायान्ति॥
माघस्य कृष्णपक्षेण विनिर्दिशेद्भाद्रपदशुक्लम्।
फाल्गुनशुक्लसमुत्था भाद्रपदस्यासिते विनिर्देश्याः॥
तस्यैव कृष्णपक्षोद्भवाश्च ये तेऽश्वयुक्शुक्ले।
चैत्रसितपक्षजाताः कृष्णेऽश्वयुजश्च वारिदा गर्भाः॥
चैत्रासितसम्भूताः कार्त्तिकशुक्लेऽभिवर्षन्ति।
सितपक्षभवाः कृष्णे शुक्ले कृष्णा द्युसम्भवा रात्रौ॥
नक्तम्प्रभावाश्चाहनि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम्।
पूर्वोद्भूताः पश्चादपरोत्थाः प्राग्भवन्ति जीमूताः॥
शेषास्वपि दिक्ष्वेवं विपर्ययो भवति वायोश्च॥

यदि पौष कृष्ण पक्ष में गर्भधारण हो तो श्रावण शुक्ल पक्ष में एवं माघ शुक्ल पक्ष में गर्भ हो तो श्रावण कृष्ण पक्ष में प्रसव कहना चाहिये। माघ कृष्ण में गर्भ हो तो भाद्रपद शुक्ल पक्ष में, फाल्गुन शुक्ल में गर्भ हो तो भाद्रपद कृष्ण में, उसी के (फाल्गुन के) कृष्ण पक्ष में गर्भ हो तो आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में, चैत्र शुक्ल में गर्भ हो तो आश्विन कृष्ण पक्ष में, चैत्र कृष्ण पक्ष में उत्पन्न गर्भ से कार्त्तिक शुक्ल पक्ष में वर्षा होती है (यहाँ पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मासग्रहण करना चाहिये अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वैशाख कृष्ण अमान्त तक एक मास, इत्यादि)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि गर्भ शुक्ल पक्ष में हो तो कृष्ण पक्ष में, कृष्ण पक्ष में हो तो शुक्ल पक्ष में, दिन में हो तो रात में, रात में हो तो दिन में, पूर्वसन्ध्या में हो तो पश्चिमसन्ध्या में और पश्चिमसन्ध्या में हो तो पूर्वसन्ध्या में प्रसव होता है।

यदि गर्भकाल में मेघ पूर्व दिशा में हो तो प्रसवकाल में पश्चिम दिशा में, पश्चिम में हो तो पूरब में, दक्षिण दिशा में हो तो उत्तर दिशा में, उत्तर में हो तो दक्षिण में, आग्नेय विदिशा में हो तो वायव्य में, वायव्य कोण में हो तो आग्नेय कोण में, ईशान कोण में हो तो नैर्ऋत्य कोण में, नैर्ऋत्य कोण में हो तो ईशान कोण में मेघ होता है। इसी प्रकार वायु का भी दिग्वैपरीत्य समझना चाहिये। अर्थात् गर्भकाल में पूरब तरफ की वायु हो तो प्रसवकाल में पश्चिम तरफ की वायु चलती है, इत्यादि समझना चाहिये।

वटकणिकायाम्

सार्धैः षड्भिर्मासैर्गर्भनिषेकः स्वनक्षत्रे।

जिस नक्षत्र में गर्भधारण होता है, उसी नक्षत्र में चन्द्रमा के जाने पर साढ़े छः मासों में प्रसव (वृष्टि) होता है। (यहाँ पर चान्द्रमान से साढ़े छः मास (१९५ दिन) ग्रहण करने पर वही नक्षत्र आता है; परन्तु सावनमान से १९५ वें दिन में वही नक्षत्र नहीं आता है। अतः सावनमान ग्रहण करना उचित नहीं है)।

बृहत्संहितायां तु

यन्नक्षत्रमुपगते गर्भश्चन्द्रे भवेत् स चन्द्रवशात्।
पञ्चनवते दिनशते तत्रैव प्रसवमायाति॥

चन्द्रमा के जिस नक्षत्र में स्थित रहने पर गर्भधारण होता है, चान्द्रमान से १९५ वें दिन में उस गर्भ का प्रसव होता है। परन्तु चान्द्रमान से ऐसा सम्भव कदाचित् ही होता है; अतः सावनमान ग्रहण नहीं करना चाहिये।

पराशरः

वाय्वभ्रविद्युत्स्तनयित्नुवर्षाणि गर्भाः। तान् लक्षयेत् प्रशस्तानप्रशस्तांश्च। प्रशस्तता च यदा सूर्येन्दु-नक्षत्रान्तरिक्षाश्रयाणां वर्षालिङ्गानां प्रादुर्भावरूपता गर्भाणां धारणमासे त्वसूतिः। विपर्यये त्वशस्तता।

वायु, मेघ, विद्युत्, मेघशब्द और वृष्टि— इन पाँचों से गर्भस्थिति होती है। इनके शुभत्व और अशुभत्व की परीक्षा करनी चाहिये। जब सूर्य-चन्द्र-नक्षत्र और अन्तरिक्ष में आश्रित रहने वाले वर्षाकारक चिह्नों में शुभत्व एवं निर्मलत्व हो तथा गर्भधारण-मास में वृष्टि नहीं हो तो गर्भ की पुष्टि होती है; अन्यथा गर्भ की पुष्टि नहीं होती है। यहाँ मूल में 'स्तनित' की जगह 'स्तनयित्नु' पाठ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वटकणिकायाम्

पञ्चनिमित्तैः शतयोजनं तदर्धार्धमेकहान्याऽतः ।
वर्षति पञ्चनिमित्ताद्रूपेणैकेन यो गर्भः ॥

वर्षा पञ्चनिमित्तो द्रोणो वृष्ट्याढकास्त्रयो मरुता ।
षड्विद्युता नवाभ्रैः स्तनितेन द्वादश प्रसवे ॥

शस्तानि मार्गशीर्षाच्छीतहिममेघवातरसितानि ।
स्तनिततडिज्जलमारुतघनतापान्यतिशयं तु वैशाखे ।
पृथुला बहुला जलदास्त्वतिपृथुलजलचारिसत्त्वनिभाः ।
स्निग्धसितबहुलपरिवेषपरिवृतौ हिमकरोष्णकरौ ॥

नृखगमृगा मुदिता निरूपहतास्तरवः ।
वियदमलं च यदा भवति तदा सुसमा ॥

स्निग्धतडित्प्रतिसूर्यकमत्स्याः शक्रधनुः प्रथमापरसन्ध्ये ।
शान्तरवा मृगपक्षिमनुष्याः शक्रशशीश्वरदिङ्मरुतश्च ॥

पाँच निमित्तों (वायु, जल, विद्युत्, मेघ का शब्द और मेघ) से युक्त गर्भ प्रसवकाल में सौ योजन तक बरसता है। चार निमित्तों से युत गर्भ पचास योजन तक, तीन निमित्तों से युत गर्भ पच्चीस योजन तक, दो निमित्तों से युत गर्भ साढ़े बारह योजन तक और एक निमित्त से युक्त गर्भ पाँच योजन तक प्रसवकाल में बरसता है।

पाँच निमित्तों से युत गर्भ एक द्रोण बरसता है। वायु से युत गर्भ तीन आढ़क, विद्युत् से युत गर्भ छः आढ़क, मेघों से युत गर्भ नौ आढ़क और मेघों के गर्जन से युत गर्भ प्रसव के समय बारह आढ़क बरसता है।

विशेषः– आढ़क और द्रोण के परिमाण पराशर के अनुसार इस प्रकार हैं—

आढ़काँश्चतुरो द्रोणमपां विन्द्यात्प्रमाणतः ।
धनुःप्रमाणं मेदिन्यां विन्द्याद्द्रोणातिवर्षणम् ॥

समे विंशाङ्गुलानाहे द्विचतुष्काङ्गुलोच्छ्रिते ।
भाण्डे वर्षति सम्पूर्णं ज्ञेयमाढकवर्षणम् ॥

वराहः

हस्तविशालं कुण्डमधिकृत्याम्बुप्रमाणनिर्देशः ।
पञ्चाशत्पलमाढकमनेन मिनुयाज्जलं पतितम् ॥

मार्गशीर्ष से चैत्र मास तक क्रमशः शीत, हिम, मेघ, वायु और मेघगर्जन शुभ होते हैं अर्थात् मार्गशीर्ष मास में शीत गिरने से, पौष मास में हिमपात होने से, माघ में मेघों से, फाल्गुन में वायु से और चैत्र मास में मेघगर्जन से गर्भ पुष्ट होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। वैशाख में मेघगर्जन, विद्युत्, जल, हवा, मेघ और ताप अतिशय होने से गर्भ पुष्ट होता है।

अतिशय विशाल जल-जन्तु के आकार वाले बहुत विस्तृत मेघ, स्निग्ध-श्वेत विस्तृत परिवेष से घिरे हुए सूर्य और चन्द्रमा, मनुष्य-पक्षी-मृग आदि आनन्दित, उपद्रव (उत्पात) रहित वृक्ष और निर्मल आकाश वाला गर्भ शुभ (वृष्टिकारक) होता है। यदि स्निग्ध (निर्मल) विद्युत्, प्रतिसूर्य, मत्स्य (मेघ की मत्स्याकृति), इन्द्रधनुष, शान्त शब्द वाले मृग-पक्षी-मनुष्य और पूर्वोत्तर दिशा की वायु दोनों सन्ध्याकाल में हो तो गर्भ पुष्ट होता है।

बृहत्संहितायाम्

ह्लादिमृदूदक्शिवशक्रदिग्भवो मारुतो वियद्विमलम्।
स्निग्धसितबहुलपरिवेषपरिवृतौ हिममयूखार्कौ॥

पृथुबहुलस्निग्धघनं घनसूचीक्षुरकलौहिताभ्रयुतम्।
काकाण्डमेचकाभं वियद्विशुद्धेन्दुनक्षत्रम्॥

सुरचापमन्द्रगर्जितविद्युत्प्रतिसूर्यका शुभा सन्ध्या।
शशिशिवशक्राशास्थाः शान्तरवा पक्षिमृगसङ्घाः॥

विपुलाः प्रदक्षिणचराः स्निग्धमयूखा ग्रहा निरुपसर्गाः।
तरवश्च निरुपसृष्टाङ्कुरा नरचतुष्पदा हृष्टाः॥

गर्भाणां पुष्टिकराः सर्वेषामेव योऽत्र तु विशेषः।
स्वर्त्तुस्वभावजनितो गर्भविवृद्ध्यै तमभिधास्ये॥

पौषे समार्गशीर्षे सन्ध्यारागोऽम्बुदाः सपरिवेषाः।
नात्यर्थं मृगशीर्षे शीतं पौषेऽतिहिमपातः॥

माघे प्रबलो वायुस्तुषारकलुषद्युती रविशशाङ्कौ।
अतिशीतं सघनस्य च भानोरस्तोदयौ शस्तौ॥

फाल्गुनमासे रूक्षश्चण्डः प्रबलोऽभ्रसम्प्लवाः स्निग्धाः।
परिवेषाश्चासकलाः कपिलस्ताम्रो रविश्च शुभः॥

पवनघनवृष्टियुक्ताश्चैत्रे गर्भाः शुभाः सपरिवेषाः।
घनपवनसलिलविद्युत्स्ननितैश्च हिताय वैशाखे॥

मुक्तारजतनिकाशास्तमालनीलोत्पलाञ्जनाभासाः।
जलचरमत्स्याकारा गर्भेषु घनाः प्रभूतजलाः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीव्रदिवाकरकिरणाभितापिता मन्दमारुता जलदाः ।
रुषिता इव धाराभिर्विसृजन्त्यम्भः प्रसवकाले ॥

यदि गर्भधारण के समय में आह्लादजनक, सुखस्पर्श और उत्तर, ईशान या पूर्व दिशा में उत्पन्न वायु, निर्मल आकाश, स्निग्ध और श्वेत परिवेष से घिरे हुए चन्द्रमा और सूर्य, आकाश में बहुत विस्तृत और स्निग्ध मेघ, सूच्याकार, क्षुराकार और लोहित मेघों; काक के अण्डे के समान, मयूर के कण्ठ के समान, निर्मल चन्द्र और नक्षत्रों से युत आकाश, इन्द्रधनुष, मेघों के मधुर शब्द, विद्युत् और प्रतिसूर्य से युक्त पूर्वापरा सन्ध्या सूर्याभिमुख होकर उत्तर, ईशान या पूर्व दिशा में स्थित पक्षी और मृग, नक्षत्रों के उत्तर मार्ग में होकर निर्मल और उत्पातरहित ग्रहों का गमन, बाधारहित वृक्षों का अङ्कुर, मनुष्य और पक्षी हर्षित— इन सब गुणों से युक्त गर्भ का समय हो तो गर्भ पुष्ट होता है। मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा से वैशाख के अन्त तक गर्भ की परीक्षा करनी चाहिये तथा गर्भ की वृद्धि के लिए ऋतु के स्वभाव से उत्पन्न अवशिष्ट लक्षणों को आगे कहता हूँ।

पौष और मार्गशीर्ष में दोनों सन्ध्या में रक्त और परिवेषयुत मेघ शुभ होता है। मार्गशीर्ष में अल्प शीत और पौष में हिमपात होना शुभ होता है। माघ मास में प्रबल भयङ्कर वायु, हिमयुक्त होकर मलिन कान्ति वाले सूर्य और चन्द्र, अतिशीत और मेघसहित सूर्य का उदयास्त शुभ होता है। फाल्गुन मास में रूक्ष और भयङ्कर वायु, मेघों का उदय, सूर्य और चन्द्र का निर्मल तथा अखण्ड परिवेष, कपिल या ताम्र वर्ण का सूर्य शुभ होता है। चैत्र मास में वायु, वृष्टि, मेघ और परिवेषयुत गर्भ शुभ होता है। वैशाख मास में मेघ, वायु, जल, विद्युत् और मेघगर्जनयुत गर्भ शुभ होता है।

मोती या चाँदी के समान श्वेत अथवा तमाल वृक्ष, नीलकमल या अञ्जन के समान अतिकृष्ण अथवा जलचर जन्तु के समान कान्ति वाले गर्भकालिक मेघ हों तो बहुत वृष्टि देने वाले होते हैं। अतिभयङ्कर सूर्यकिरण से तापित, अल्प वायु से युत गर्भकालिक मेघ प्रसवकाल (१९५ वें दिन) में रूष्ट की तरह होकर धाराप्रवाह अतिवृष्टि करते हैं।

वटकणिकाबृहत्संहितयोः

पवनसलिलविद्युद्गर्जिताभ्रान्वितो यः
स भवति बहुतोयः पञ्चरूपाभ्युपेतः ।
विसृजति यदि तोयं गर्भकालेऽतिभूरि–
प्रसवसमयमित्वा शीकराम्भः करोति ॥

यदि वायु, जल, विद्युत, मेघगर्जन और मेघों से युत गर्भ हो तो प्रसवकाल में बहुत वर्षा होती है। इस तरह के गर्भसमय में यदि बहुत वृष्टि हो तो प्रसवकाल में अतिवृष्टि नहीं होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वटकणिकायाम्

गर्भोपघातलिङ्गाद्युल्काशनिभूमिकम्पनिर्घाताः ।
ग्रहयुद्धराहुशिखिनो भङ्गं खपुरं रजो वाऽपि ॥

उल्कापात, विद्युत्, भूकम्प, निर्घात शब्द, ग्रहयुद्ध, राहु-केतु का दर्शन, खण्डित गन्धर्वनगर, रज (धूलि) का वर्षण गर्भ के नाश करने वाले लक्षण हैं।

बृहद्यात्रायाम्

गर्भोपघातलिङ्गाद्युल्काशनिपांशुपातदिग्दाहाः ।
क्षितिकम्पखपुरकीलककेतुग्रहयुद्धनिर्घाताः ॥

रुधिरादिवृष्टिवैकृतपरिवेषेन्द्रधनूंषि दर्शनं राहोः ।
इत्युत्पातैरेतैस्त्रिविधैश्चान्यैर्हतो गर्भः ॥

स्वर्त्तुस्वभावजनितैः सामान्यैर्यैश्च लक्षणैर्वृद्धिः ।
गर्भाणां विपरीतैस्तैरेव विपर्ययो भवति ॥

भाद्रपदाद् द्वयविश्वाम्बुदेवपैतामहेष्वथर्क्षेषु ।
सर्वेष्वृतुषु विवृद्धो गर्भो बहुतोयदो भवति ॥

गर्भसमय में उल्कापात, विद्युत्, धूलिवृष्टि, दिग्दाह, भूकम्प, गन्धर्वनगर, नाभस-कीलक आदि केतुओं का दर्शन, ग्रहयुद्ध, निर्घात शब्द, रुधिर आदि (रुधिर, मांस, वसा, घृत, तैल आदि) वृष्टिविकार परिवेष, इन्द्रधनुष, राहुदर्शन (चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण) आदि उत्पातों से तथा अन्य त्रिविध (दिव्यान्तरिक्षभौम) उत्पातों के दर्शन से गर्भ का नाश होता है।

ऋतुओं के स्वभावजनित या सामान्य लक्षणों से युत गर्भ की वृद्धि; अन्यथा हानि होती है।

सभी ऋतुओं में पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वषाढ़ा और रोहिणी— इन पाँच नक्षत्रों में बढ़ा हुआ गर्भ प्रसवकाल में अधिक वर्षा देता है।

ये सभी श्लोक बृहत्संहिता में भी हैं।

वटकणिकाबृहत्संहितयोः

शतभिषगाश्लेषार्द्रास्वातिमघासंयुतो गर्भः ।
पुष्णाति बहून् दिवसान् हन्त्युत्पातैर्हतस्त्रिविधैः ॥

विशेषः– हत इति आधाननक्षत्रहननेन इत्यर्थः ।

शतभिषा, आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाती या मघा नक्षत्र में उत्पन्न गर्भ बहुत दिनों तक पुष्ट रहता है। इन पाँच नक्षत्रों में स्थित गर्भ जितने दिनों तक त्रिविध (दिव्य, आन्तरिक्ष और भौम) उत्पातों से हत हों, उतने दिनों तक वर्षा नहीं होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा च पराशरः

येषु येषु नक्षत्रेषु गर्भस्थितिः स्यात् तेषु तेषु ग्रहाणामुदयास्तमयोल्कानिर्घाताशनिनिपातगन्धर्वनगर-दिग्दाहार्करश्मिविकारभूचलनप्रादुर्भावो वर्षास्ववर्षाय।

जिन-जिन नक्षत्रों में गर्भ उत्पन्न हों, उन गर्भाधानकालिक नक्षत्रों में यदि ग्रहों के उदयास्त, उल्कापात, विद्युत्पात, गन्धर्वनगर, दिग्दाह, सूर्य-किरण-विकारयुक्त भूकम्प आदि उत्पन्न हों तो वर्षा के समय वृष्टि नहीं होती है।

पुष्णाति बहून् दिवसानित्यत्र विशेषो बृहत्संहितायाम्

मार्गशिरादिष्वष्टौ षट् षोडशविंशतिश्चतुर्युक्ता।
विंशतिरथ दिवसत्रयमेकतमर्क्षेण पञ्चभ्यः॥

क्रूरग्रहसंयुक्ते करकाशनिमत्स्यवर्षदा गर्भाः।
शशिनि रवौ वा शुभसंयुतेक्षिते भूरिवृष्टिकराः॥

गर्भसमयेऽतिवृष्टिर्गर्भाभावाय निर्निमित्तकृता।
द्रोणाष्टांशेऽभ्यधिके वृष्टेर्गर्भः स्रुतो भवति॥

गर्भः पुष्टः प्रसवे ग्रहोपघातादिभिर्यदि न वृष्टः।
आत्मीयगर्भसमये करकामिश्रं ददात्यम्भः॥

काठिन्यं याति यथा चिरकालधृतं पयः पयस्विन्याः।
कालातीतं तद्वत्सलिलं काठिन्यमुपयाति॥

उक्त पाँच नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में मार्गशीर्ष मास में गर्भ की वृद्धि हो तो प्रसवसमय से ८ दिन, पौष मास में गर्भ की वृद्धि हो तो ६ दिन, माघ में १६ दिन, फाल्गुन में २४ दिन, चैत्र में २० दिन और वैशाख में गर्भ की पुष्टि हो तो प्रसवसमय में ३ दिन तक वृष्टि होती है।

यदि गर्भकालिक नक्षत्र पापग्रह युक्त हो तो उपल, वज्र और मछली से युत वृष्टि होती है। यदि गर्भकालिक नक्षत्र में चन्द्र या सूर्य स्थित होकर शुभग्रह से युत या दृष्ट हों तो गर्भ बहुत वर्षा देने वाला होता है।

यदि गर्भसमय में निमित्तरहित अतिवृष्टि हो तो गर्भ का नाश होता है। यदि द्रोण का आठवाँ भाग (पच्चीस पल) या उससे अधिक वृष्टि गर्भसमय में हो तो गर्भ का स्राव हो जाता है।

पुष्ट गर्भ ग्रहोपघात आदि (दिव्य, आन्तरिक्ष और भौम) कारणों से जलप्रद न हो तो आत्मीय गर्भ (पुनः द्वितीय गर्भग्रहण) काल में उपलमिश्रित वृष्टि करता है।

जिस प्रकार बहुत समय तक रखा हुआ गायों का दूध कठिन हो जाता है, उसी प्रकार बहुत समय बीतने पर जल कठिन होकर उपल के रूप में हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वराहसंहितायाम्

ज्येष्ठसितेऽष्टम्याद्याश्चत्वारो वायुधारणा दिवसाः ।
मृदुशुभपवनाः शस्ताः स्निग्धघनस्थगितगगनाश्च ॥

ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी से चार दिनों तक गर्भधारण-दिवस होते हैं। इन दिनों में सुखस्पर्श, शुभ (उत्तर, ईशान या पूर्व दिशा में उत्पन्न) वायु और निर्मल मेघयुक्त आकाश शुभ होते हैं।

विशेषः– वायोः सम्पर्कान्मेघैर्गर्भा ध्रियन्ते येषु ते वायुधारणा मृदुपवनादिमन्तः शुभा भवन्ति।

काश्यपस्तु

ज्येष्ठस्य शुक्लाष्टम्यां तु नक्षत्रे भगदैवते ।
चत्वारो धारणाः प्रोक्ता मृदुवातसमीरिताः ॥

नीलाञ्जनसमैर्मेघैर्विद्युत्स्तनितमारुतैः ।
विस्फुलिङ्गरजोधूमैश्छन्नौ शशिदिवाकरौ ॥

एकरूपाः शुभा ज्ञेया अशुभाः सान्तराः स्मृताः ।
अनार्यैतस्करैर्घोरैः पीडा चैव सरीसृपैः ॥

ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी और भगदैवत (पूर्वफाल्गुनी) नक्षत्र से चार दिनों तक गर्भधारणदिवस कहे गये हैं। इन दिनों में सुखस्पर्श वायु से गर्भ पुष्ट होता है। नीलाञ्जन के समान मेघ, विद्युत्, मेघगर्जन और वायु, विस्फुलिङ्ग (अग्निकण), धूलि और धूआँ से आच्छन्न सूर्य तथा चन्द्र आदि यदि चारों गर्भधारण के दिनों में एक रूप के हों तो शुभ और असमान (न्यूनाधिक) रूप में हों तो अनार्य (दुष्ट), चोर तथा भयङ्कर सरीसृप (सर्प) से भय आदि अशुभ फल होते हैं।

वराहसंहितायाम्

यदि ताः स्युरेकरूपाः शुभास्ततः सान्तरास्तु न शिवाय ।
तस्करभयदाः प्रोक्ताः श्लोकाश्चाप्यत्र वाशिष्ठाः ॥

सविद्युतः सपृषतः सपांशूत्करमारुताः ।
सार्कचन्द्रपरिच्छन्ना धारणाः शुभधारणाः ॥

यदा वा विद्युतः श्रेष्ठाः शुभाशाः प्रत्युपस्थिताः ।
तदाऽपि सर्वशस्यानां वृद्धिं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥

सपांशुवर्षा सापश्च शुभा बालक्रिया अपि ।
पक्षिणां सुस्वरा वाचः क्रीडा पांशुजलादिषु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रविचन्द्रपरीवेषाः स्निग्धा नात्यन्तदूषिताः ।
वृष्टिस्तदाऽपि विज्ञेया सर्वशस्याभिवृद्धये ॥
मेघाः स्निग्धाः संहताश्च प्रदक्षिणगतिक्रियाः ।
तदा स्यान्महती वृष्टिः सर्वशस्यार्थसाधिका ॥ इति ॥

यदि चारो गर्भधारण के दिन एक समान के हों तो शुभ तथा असमान हों तो अशुभ और चोरों का भय देने वाले होते हैं। आगे इसी अर्थ को पुष्ट करने के लिए वसिष्ठ का पद्य वराह ने लिखा है।

यदि विद्युत्, जलकण, धूलियों से युत वायु, मेघाच्छन्न रवि-चन्द्र और शुभ दिशा (उत्तर, ईशान तथा पूर्व दिशा) में उत्पन्न विद्युत् गर्भधारण के दिन हो तो सभी धान्यों की वृद्धि कहनी चाहिये।

धूलि की वृष्टि, जल, बालकों की सुन्दर चेष्टायें, पक्षियों के मधुर शब्द, धूलि या जल में उनकी क्रीडा और स्निग्ध, विकाररहित, परिवेषसहित रवि-चन्द्रों से युत गर्भधारण दिन हों तो समस्त धान्यों को सिद्ध करने वाली वृष्टि होती है। स्निग्ध, सघन और प्रदक्षिण करके (पूरब से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम, पश्चिम से उत्तर और उत्तर से पूरब दिशा की ओर) गमन करने वाले मेघ गर्भधारण दिन में शुभ होते हैं।

पराशरः

विशेषतो ज्येष्ठबहुलपक्षद्वादश्यादिदिनचतुष्टयं धारणं गर्भाणाम्। क्रमात् सप्ताहोरात्रस्त्रावो मासविघाताय।

विशेषतः ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी आदि चार दिनों तक गर्भधारण होता है। गर्भदिन के क्रम से सात अहोरात्रपर्यन्त गर्भस्राव होने पर उस गर्भधारणसम्बन्धी मास का नाश होता है अर्थात् सम्बन्धित मास में वृष्टि नहीं होती है।

वराहसंहितायाम्

तत्रैव स्वात्याद्ये वृष्टे भचतुष्टये क्रमान्मासाः ।
श्रावणपूर्वा ज्ञेयाः परिस्रुताः धारणास्ताः स्युः ॥

वराहमिहिर के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में स्वाती आदि चार नक्षत्रों (स्वाती, विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा) में वृष्टि हो जाय तो क्रम से श्रावण आदि (श्रावण, भादव, आश्विन और कार्त्तिक) चार मासों में अवृष्टि होती है।

विशेषः–ज्ञेया इत्यनावृष्टिमन्तो ज्ञेया इत्यर्थः। अत्र हेतुः परिस्रुता इति।

वटकणिकायाम्

ज्येष्ठसितस्वात्याद्यैः श्रावणपूर्वं चतुष्टयं ज्ञेयम्।
वृष्टेस्तत्रावृष्टिः समरूपा धारणाः शुभदाः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में स्वाती आदि चार नक्षत्रों से श्रावण आदि मास-चतुष्टय जानना चाहिये। उन (स्वाती, विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा) नक्षत्रों (गर्भधारण दिन) में वृष्टि होने पर श्रावण आदि मासों में क्रम से वृष्टि नहीं होती है। यदि धारण समरूपक हों तो सभी मास वृष्टि के लिए शुभ होते हैं।

काश्यपश्च

स्वातौ तु श्रावणं हन्याद् वृष्टेरेवाग्निदैवतम्।
भाद्रपदे त्ववृष्टिः स्यान्मैत्रे चाश्वयुजे स्मृताः॥

ऐन्द्रे तु कार्त्तिके त्वेवं वृष्टे वृष्टिं निहन्ति च।
एतेषु यदि नो वृष्टिस्तदा सौभिक्षलक्षणम्॥

स्वाती नक्षत्र में वृष्टि होने पर श्रावण मास का नाश (श्रावण में वृष्टि का अभाव) होता है, विशाखा में वृष्टि होने से भाद्रपद में अवृष्टि, अनुराधा में वृष्टि होने से आश्विन में अवृष्टि और ज्येष्ठा में वर्षा होने से कार्त्तिक मास की वृष्टि का नाश होता है। यदि स्वाती आदि चार नक्षत्रों में वृष्टि नहीं हो तो श्रावणादि मासों में क्रम से सुभिक्ष होता है।

वराहसंहितायाम्

दैवविदविहितचित्तो द्युनिशं यो गर्भलक्षणे भवति।
तस्य मुनेरिव वाणी न भवति मिथ्याऽम्बुनिर्देशः॥

जो दैवज्ञ शान्तचित्त होकर अहर्निश गर्भलक्षण की परीक्षा में संलग्न होता है, उसकी जलनिर्देशसम्बन्धी वाणी कभी मिथ्या नहीं होती है।

अत्रानुक्तविशेषशान्तिषु गर्भाद्भुतेषु सावित्रीमन्त्रकदशलक्ष-होमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्तिरौत्पातिक-फलगुरुलाघवमवगम्य कर्त्तव्या।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे मेघानां गर्भाद्भुतावर्त्तः।

मेघगर्भाद्भुतसम्बन्धी विशेष शान्तिविधि का उल्लेख नहीं होने के कारण अद्भुतों के शमनार्थ सावित्री मन्त्र से दश लाख हवन आदि अभयाख्या अथवा महाशान्ति उत्पातों की लघुत-गुरुता के अनुसार करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ प्रवर्षणाद्भुतावर्त्तः

तत्र वराहसंहितायाम्

ज्यैष्ठ्यां समतीतायां पूर्वाषाढादिसम्प्रवृष्टेन।
शुभमशुभं वा वाच्यं परिमाणं वाऽम्भसस्तज्ज्ञैः॥

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा के बीत जाने पर पूर्वाषाढ़ आदि सभी नक्षत्रों में वृष्टि होने पर शुभ; अन्यथा अशुभ फल कहना चाहिये और वृष्टि होने पर जल-परिमाण कहना चाहिये। शुभाशुभ फलानुसार धान्यों की निष्पत्ति होती है।

विशेषः– शुभमशुभमिति। सम्प्रवृष्टेन शुभमर्थादसम्प्रवृष्टेनाशुभम्। शुभमशुभं च शस्यनिष्पच्युचितानुचितवृष्टिरूपो गर्भधारणोक्तवृष्ट्यपवादोऽयम्। परिमाणं चेति। वृष्टौ सत्यां परिमाणं ज्ञातव्यमिति।

तथा च

येन धरित्री मुद्रा जनिता वा विन्दवस्तृणाग्रेषु।
वृष्टेन तेन वाच्यं परिमाणं वारिणः प्रथमम्॥

विशेषः– पूर्वाषाढादौ नक्षत्रे एवम्भूतायां वृष्टौ वक्ष्यमाणं प्रसवकालेऽपि पूर्वाषाढादौ नक्षत्रे वृष्टिपरिमाणं वाच्यमित्यर्थः।

जिस वृष्टि से भूमि पर धूलि मिट जाय अथवा तृणाग्रों पर जलकण दिखाई दें, उससे जल का प्रमाण कहना चाहिये। अर्थात् पूर्वाषाढ़ा आदि नक्षत्रों में से जिन नक्षत्रों में वृष्टि हो, उसी नक्षत्र के आधार पर जल का परिमाण कहना चाहिये।

वृष्टिपरिमाणमेवम्

हस्ताप्यसौम्यचित्रापौष्णधनिष्ठासु षोडश द्रोणाः।
शतभिषगैन्द्रस्वातिषु चत्वारः कृत्तिकासु दश॥

श्रवणे मघानुराधाभरणीमूलेषु दश चतुर्युक्ताः।
फाल्गुन्यां पञ्चकृतिः पुनर्वसौ विंशतिर्द्रोणाः॥

ऐन्द्राग्न्याख्ये वैश्वे च विंशतिः सार्पभे दश त्र्यधिकाः।
आहिर्बुध्न्यार्यम्णप्राजापत्येषु पञ्चकृतिः॥

पञ्चदशाजे पुष्ये च कीर्त्तिता वाजिभे दश द्वौ च।
रौद्रेऽष्टादश कथिता द्रोणा निरुपद्रुतेष्वेते॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हस्त, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, चित्रा, रेवती और धनिष्ठा नक्षत्र में यदि प्रवर्षण काल में वृष्टि हो तो प्रसव काल में सोलह द्रोण वृष्टि होती है। इसी प्रकार शतभिषा, ज्येष्ठा और स्वाती में चार द्रोण, कृत्तिका में दश द्रोण, श्रवण, मघा, अनुराधा, भरणी और मूल नक्षत्र में चौदह द्रोण, पूर्वफाल्गुनी में २५ द्रोण, पुनर्वसु में २० द्रोण, विशाखा और उत्तराषाढ़ में २० द्रोण, आश्लेषा में १३ द्रोण, उत्तरभाद्रपद-उत्तराषाढ़ और रोहिणी में २५ द्रोण, पूर्वभाद्र और पुष्य में १५ द्रोण, अश्विनी में १२ द्रोण तथा आर्द्रा नक्षत्र में यदि प्रवर्षणकाल में वृष्टि हो तो प्रसवकाल में १८ द्रोण वृष्टि होती है।

द्रोण-परिमाण नक्षत्र के उपद्रवरहित होने पर ही सही मानना चाहिये।

वटकणिकायाञ्च

द्वादश शक्रा आशास्तत्त्वानि नृपा धृतिर्नखास्तिथयः।
विश्वे मनवोऽसुकराः शस्तत्त्वानि नृपा नृपा वेदाः॥

विंशतिरिन्द्रा वेदाः शक्रा क्षितिपा नखाश्चतुर्दश तु।
भूपा वेदास्तिथयस्तत्त्वानि नृपाः क्रमाद् द्रोणाः॥

अश्विनिपूर्वेष्वेते ज्ञेया निरुपद्रवेषु पूर्णफलाः।
पापग्रहाभिभूतेषु वृष्टिरोगातिभयजनकाः॥

अश्विनी से रेवतीपर्यन्त २६ नक्षत्रों में क्रम से १२, १४, १०, २५, १६, १८, २०, १५, १३, १४, २५, २५, १६, १६, ४, २०, १४, ४, १४, १६, २०, १४, १६, ४, १५, २५, १६ द्रोण जल प्रसवकाल में होता है अर्थात् अश्विनी में १२ द्रोण, भरणी में १४, कृत्तिका में १०, रोहिणी में २५, मृगशिरा में १६, आर्द्रा में १८, पुनर्वसु में २०, पुष्य में १५, आश्लेषा में १३, मघा में १४, पूर्वफाल्गुनी में २५, उत्तरफाल्गुनी में २५, हस्त में १६, चित्रा में १६, स्वाती में ४, विशाखा में २०, अनुराधा में १४, ज्येष्ठा में ४, मूल में १४, पूर्वाषाढ़ में १६, उत्तराषाढ़ में २०, श्रवण में १४, धनिष्ठा में १६, शतभिषा में ४, पूर्वभाद्र में १५, उत्तरभाद्र में २५ और रेवती नक्षत्र में यदि प्रवर्षण के समय वृष्टि हो तो प्रसवकाल में १६ द्रोण वृष्टि होती है। परन्तु प्रवर्षणकालिक नक्षत्र यदि निरुपद्रव हों तो पूर्ण फल अर्थात् उक्त द्रोण; अन्यथा पूर्ण फल नहीं होता है। पापग्रहों से अभिभूत नक्षत्र वृष्टि और रोग के अतिशय भय उत्पन्न करने वाले होते हैं अर्थात् वृष्टि के अभाव और भयङ्कर रोग से लोगों को पीड़ा होती है।

बृहत्संहितायां तु

रविरविसुतकेतुपीडिते भे क्षितितनयत्रिविधाद्भुताहते च।
भवति न हि शुभं न चापि वृष्टिः शुभसहिते निरुपद्रवे शिवं च॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य, शनैश्चर, केतु, मङ्गल या त्रिविध उत्पातों (दिव्य, आन्तरिक्ष और भौम) से यदि नक्षत्र पीड़ित हो तो शुभ (कल्याण) नहीं होता है और वृष्टि भी नहीं होती है। यदि उपद्रवरहित होकर बुध, बृहस्पति या शुक्र से युत नक्षत्र हो तो मङ्गलकार्य और वृष्टि होती है।

प्रसवकाले यत्र देशे यावन्मात्रे वा देशे वृष्टिर्भवति तदुक्तं वराहसंहितायाम्

केचिद्यथाऽभिवृष्टं दशयोजनमण्डलं वदन्त्यन्ये।
गर्गवशिष्ठपराशरमतमेतद्द्वादशान्न परम्॥

कुछ मुनियों (काश्यपादि) का मत है कि प्रवर्षण काल में (ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा के बाद पूर्वाषाढ़ आदि २६ नक्षत्रयुत काल) में किसी प्रदेश में भी वृष्टि हो तो वहाँ प्रसवकाल (वर्षाकाल) में अच्छी वृष्टि होती है। अन्य मुनि (देवल आदि) के मतानुसार, यदि प्रवर्षण काल में कम से कम १० योजन तक वृष्टि हो तो वर्षाकाल में अच्छी वृष्टि होती है। गर्ग, वसिष्ठ और पराशर का मत है कि प्रवर्षण काल में १२ योजन तक वृष्टि हो तो वर्षाकाल में उत्तम वृष्टि होती है।

विशेषः– केचिद्यथाऽभिवृष्टमिति। प्रवर्षणकाले यत्र देशे वृष्टिः प्रसवकालेऽपि तत्रैव वर्षतीत्याहुः।

तथा च काश्यपः

यत्र प्रवर्षणे वृष्टौ वासवस्तत्र वर्षति।
वर्षाकालं समासाद्य यद्युत्पातो न दृश्यते॥

जिस प्रदेश में प्रवर्षण काल में वृष्टि होती है तथा प्रवर्षण काल उत्पातरहित होता है, उसी प्रदेश में वर्षाकाल आने पर बरसता है।

विशेषः– दशयोजनमण्डलं वदन्त्यन्ये इति। प्रवर्षणकाले यत्र देशे वृष्टिस्ततो दशयोजनान्तराले वर्षतीत्यन्ये वदन्ति।

तथा च देवलः

प्रवर्षणे यदा वृष्टो वर्षमाणः शतक्रतुः।
वर्षाकालं समासाद्य वर्षते दशयोजनम्॥

प्रवर्षण काल में जिस प्रदेश में वर्षा होती है, उस प्रदेश में वर्षाकाल में १० योजन तक वर्षा कराने वाले इन्द्र वृष्टि करते हैं।

गर्गस्तु

आषाढादिषु वृष्टेषु वर्षाकाले विनिर्दिशेत्।
योजनानि दश द्वे च वर्षते पाकशासनः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा के पश्चात् पूर्वाषाढ़ आदि नक्षत्रों में जिस स्थान पर वृष्टि होती है, उस प्रदेश में इन्द्र वर्षाकाल में १२ योजन तक वृष्टि करते हैं।

वराहसंहितायाम्

येषु च भेष्वभिवृष्टं भूयस्तेष्वेव वर्षति प्रायः।
यदि नाप्यादिषु वृष्टं सर्वेषु तदा त्वनावृष्टिः॥

यदि पूर्वाषाढ़ आदि जिस-किसी नक्षत्र में प्रवर्षण काल में वृष्टि हो तो प्रसवकाल में पुन: उसी नक्षत्र में वृष्टि होती है। यदि प्रवर्षण काल में पूर्वाषाढ़ आदि नक्षत्रों में वृष्टि नहीं हो तो प्रसवकाल में अनावृष्टि होती है।

वटकणिकायाम्

युग्माजगोमत्स्यगते शशाङ्के रविर्यदा कर्कटके प्रयाति।
जलं शताढे हरिकार्मुकेऽर्धमुक्तं च कन्यामृगयोरशीतिः॥

कुलीरकुम्भालितुलाभिधाने संवृद्धियुक्ता नवतिः समन्तात्।

जब सूर्य कर्क राशि में हो तब चन्द्रमा के मिथुन, मेष, वृष या मीन राशि में स्थित होने पर यदि वृष्टि हो तो १०० आढ़कतुल्य; सिंह या धनु में जाने पर ५० आढ़क, कन्या या मकर में ८० आढ़क तथा कर्क, कुम्भ, वृश्चिक या तुला राशिगत चन्द्रमा के होने पर शुभ वृष्टि (प्रवर्षण) होने से ९० आढ़कतुल्य वृष्टि होती है।

पुनर्वसुप्रभृतिनक्षत्रयुक्तशुक्लप्रतिपत्सु प्रवर्षणजलपरिमाणमाह पराशरः

इह खलु शुक्लप्रतिपत्प्रभृतिवर्षं दशाकुलमाचक्षते। तस्यां यावदभिवृष्टे देशे वर्षतोऽपां प्रमाणमन्नशस्यप्रजाक्षेमाक्षेमलक्षणं वार्षिकमुपदेश्यामः। तत्रादित्ये विंशतिद्रोणाभिवर्षा सर्वशस्यक्षेमारोग्याय। पुष्येऽष्टादश द्रोणान् पश्चादभिवृद्धवर्षाय जघन्यशस्यसम्पदे। आश्लेषायां वर्षबीजक्षेमसाधुजनविघाताय त्रयोदशवृष्टये। पित्र्ये शस्योदकविघातकरपर्वतीयनृपतिवृद्धिं चतुर्दशद्रोणाभिवर्षणं च विन्द्यात्। भाग्ये चतुःषष्टिमाढकाणां वर्षत्यपि च शस्यरोगवृद्धये। शतमाढकानामार्यम्णेऽभिवृष्टो जनानभिनन्दयति। हस्ते पञ्चदशद्रोणान् क्षेमशस्यसम्पदं विन्द्यात्। पञ्चषष्टिद्रोणाभिवर्षी त्वाष्ट्रे सर्वजनवृद्धये। चतुरः स्वातौ शस्यविघातमक्षेमं चादिशेत्। ऐन्द्राग्ने विंशतिद्रोणाभिवर्षी राज्ञां विरोधकृद्भवति। मैत्रे द्विसप्तकद्रोणाभिवृष्टे नरेन्द्रोद्योगवणिग्बीजक्षीररोगवृष्टिं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विन्द्यात्। ऐन्द्रे चतुर्द्रोणाभिवर्षी बीजान्युच्छेदयति। तच्चतुर्गुणो मूले सर्वशस्याभावी न क्षेमाय। आप्ये म्लेच्छसर्वशस्यव्याधिप्राबल्यम्। अष्टादशग्रहावसाने द्रोणान् षोडश वर्षति। हेमन्ते वा वैश्वदेवे शस्यवृद्धिः क्षेमायाभीक्ष्णविंशतिपर्यन्तं द्रोणवर्षाय। श्रवणे मुखरोगातीसारज्वरशस्यप्राबल्यं वृष्टिद्रोणाश्चात्र षोडशैव। वासवे शीर्षरोगप्राबल्यं च। वारुणे तच्चतुर्भागमपि च शस्त्रं दुर्भिक्षजननं च विन्द्यात्। आजेऽष्टादशद्रोणप्रततवर्षाप्रधानभूपतिविरोधाय। आहिर्बुध्न्ये चतुर्दशाढकवर्षा कुक्षिरोगशस्यदम्। अश्विन्यां द्वादशद्रोणान् पश्चादभिवृष्ट एकदेशे निम्नेषु शस्यं निष्पादयति। भरण्यां पञ्चदशद्रोणाभिवर्षा भवत्यग्निचौरक्षुद्व्याधिकरः। आग्नेये अग्निदंष्ट्रिशस्त्रभयाय षोडशद्रोणवर्षाय च। रोहिण्यामाढकशतवर्षा सर्वजगदामोदाय। सौम्ये विप्रशस्यव्याधिवृद्धये षोडशद्रोणवर्षाय। आर्द्रायामष्टादशाढकवर्षा बीजशस्यभयाय।

शुक्ल-प्रतिपदाप्रभृति तिथियों में पुनर्वसु आदि नक्षत्रों में प्रवर्षण जल का परिमाण के अनुसार दशाकुल (वार्षिक वृष्टिविचार) कहते हैं। पुनर्वसु आदि नक्षत्रों में जिस देश में जितनी वृष्टि होती है; तदनुसार ही वार्षिक वृष्टि, अन्न-शस्य-प्रजाक्षेम-अक्षेमों के लक्षण बताते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र में २० द्रोणतुल्य वृष्टि होने से सभी धान्यों की वृद्धि, कल्याण और आरोग्य होते हैं। पुष्य नक्षत्र में १८ द्रोण वृष्टि से वर्ष के उत्तरार्ध में वृष्टि और जघन्य (कुत्सित) धान्य की वृद्धि होती है। आश्लेषा में १३ द्रोण वृष्टि होने पर वर्षा, बीज, कल्याण और सज्जनों का नाश होता है। मघा में १४ द्रोण वृष्टि होने से धान्योत्पत्तिहेतु जल का नाश अर्थात् अभाव और पर्वतीय राजाओं की वृद्धि जाननी चाहिये। पूर्वफाल्गुनी में ६४ आढ़क वृष्टि होने पर धान्य और रोग की वृद्धि होती है। उत्तरफाल्गुनी में १०० आढ़क वर्षण से लोगों में आनन्द होता है। हस्त नक्षत्र में १५ द्रोण वृष्टि होने पर कुशल और धान्य-समृद्धि होती है। चित्रा में ६५ द्रोण वृष्टि होने पर सभी लोगों की वृद्धि होती है। स्वाती में ४ द्रोण वृष्टि से धान्यनाश और अकुशलता होती है। विशाखा में २० द्रोण वृष्टि से राजाओं का विरोध होता है। अनुराधा में ७२ द्रोण वर्षण होने पर नरेन्द्रोद्योग (युद्ध), व्यापार, बीजोत्पत्ति, दुग्ध, रोग और वर्षा होती है। ज्येष्ठा में ४ द्रोण वर्षा होने से बीजों का नाश होता है। मूल में १६ द्रोण वृष्टि होने पर सभी धान्यों का नाश और अक्षेम होता है। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में १६ द्रोण या १८ द्रोण तक वृष्टि होने से म्लेच्छ जाति,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समस्त धान्य और व्याधि की प्रबलता होती हैं। उत्तराषाढ़ नक्षत्र में २० द्रोण तक वृष्टि होने पर हेमन्त ऋतु में होने वाले धान्यों की वृद्धि और कल्याण होता है। श्रवण में १६ द्रोण वृष्टि होने पर मुखरोग, अतिसार, ज्वर और धान्यवृद्धि होती है। धनिष्ठा में १६ द्रोण वृष्टि से मस्तकरोग की वृद्धि होती है। शतभिषा में ४ द्रोण तक की वृष्टि होने से शस्त्रभय और दुर्भिक्ष होते हैं। पूर्वभाद्र में १८ द्रोण तक वृष्टि होने पर प्रधान राजाओं में विरोध होता है। उत्तरभाद्र नक्षत्र में १४ आढ़क वृष्टि होने से उदररोग और धान्योत्पत्ति होती हैं। अश्विनी में १२ द्रोण वृष्टि होने से निम्न भूमि में धान्योत्पत्ति होती है अर्थात् अल्प वृष्टि एवं खण्ड वृष्टि होती है। भरणी में १५ द्रोण वृष्टि होने पर अग्नि, चोर, क्षुधा और व्याधिभय होते हैं। कृत्तिका में १६ द्रोण तक वृष्टि होने से अग्नि, दंष्ट्रि (व्याघ्र, सर्प आदि) और शस्त्रभय होते हैं। रोहिणी में १०० आढ़क वर्षा होने से समस्त लोगों को आनन्दित करता है। मृगशिरा में १६ द्रोण वृष्टि होने से ब्राह्मण, धान्य और व्याधि की वृद्धि होती है तथा आर्द्रा में १८ आढ़क वृष्टि होने से बीज और धान्य के लिए भय होता है अर्थात् उनका नाश करता है।

अपि च

आढकाँश्चतुरो द्रोणोऽपां विन्द्यात् प्रमाणतः।
धनुःप्रमाणं मेदिन्यां विन्द्याद्द्रोणाभिवर्षणम्॥

चतुर्विंशाङ्गुलानाहे द्विचतुष्काङ्गुलोच्छ्रिते।
भाण्डे वर्षाम्बुसम्पूर्णे ज्ञेयमाढकवर्षणम्॥

एक धनुषतुल्य व्यास वाले और एक धनुषतुल्य गहरे वर्तुलाकार कुण्ड से जल का मापन करना चाहिये। जलपूर्ण इस कुण्ड में एक द्रोणतुल्य जल होता है। चार आढ़कों के बराबर एक द्रोण होता है। २४ अङ्गुल व्यास और ८ अङ्गुल ऊँचा भाण्ड वर्षा के जल से पूर्ण होने पर एक आढ़क तुल्य वृष्टि होती है।

वराहसंहितायां तु

हस्तविशालं कुण्डकमधिकृत्वाऽम्बुप्रमाणनिर्देशः।
पञ्चाशत्पलमाढकमनेन मिनुयाज्जलं पतितम्॥

विशेषः– तत्र कुण्डे पञ्चाशत् पलानि पतितानि तदा जलाढ़कवृष्टिर्भूतेति जानीयादित्यर्थः।

एक हाथ तुल्य व्यास वाले और एक हाथ गहरे वर्त्तुलाकार कुण्ड (गड्ढ़ा) से वृष्टि के जल का मापन करना चाहिये। जलपूर्ण इस कुण्ड में पचास पल (एक आढ़क) तुल्य जल होता है। पचास पल का एक आढ़क और चार आढ़क का एक द्रोण होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष– भास्कराचार्य के अनुसार एक हाथ चौड़ा, लम्बा और मोटा बारह कोण वाला गड्ढ़ा एक घनहस्त संज्ञक है, उसे एक खारी कहा गया है।

खारी के सोलहवें भाग को एक द्रोण, द्रोण के चौथे भाग को एक आढ़क, आढ़क के चौथे भाग को प्रस्थ और प्रस्थ के चौथे भाग को कुड़व कहा गया है। परन्तु बृहत्संहिता में कुड़व से सूक्ष्म मान 'पल' कहा गया है। अर्थात् एक आढ़क = पचास पल = १६ कुड़व होता है। तदनुसार ही वृष्टि का मापन करना चाहिये।

अत्र प्रवर्षणोत्पातेषु वृष्टिविकारविहिता शान्तिः कर्त्तव्या।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे प्रवर्षणाद्भुतावर्त्तः।

प्रवर्षणकालिक उत्पातों के होने पर वृष्टिविकार-हेतु कथित शान्ति करनी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथातिवृष्ट्याद्यद्भुतावर्त्तः

तत्र पराशरः

अतिवर्षमवर्षणं दुर्भिक्षाय ।

अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि होने से दुर्भिक्ष होता है ।

मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

अतिवृष्टिरनावृष्टिदुर्भिक्षादिभयं महत् ।

विशेषः– आदिशब्देन शत्रुभयस्य ग्रहणम् ।

अतिवृष्टि और अनावृष्टि से दुर्भिक्ष, रोग, शत्रु आदि का महान् भय होता है ।

तथा च वराहसंहितायाम्

दुर्भिक्षमनावृष्ट्यामतिवृष्टौ क्षुद्भयं परभयं च ।

अनावृष्टि होने पर दुर्भिक्ष और अतिवृष्टि होने पर क्षुधाभय और परभय (दूसरे राजा के आक्रमण के भय) होते हैं ।

बार्हस्पत्ये च

अतिवृष्टिरनावृष्टिदुर्भिक्षाच्च भयं भवेत् ।

अतिवृष्टि, अनावृष्टि और दुर्भिक्ष से लोगों में भय होता है अर्थात् अतिवृष्टि या अनावृष्टि होने पर अन्नोत्पत्ति नहीं होती है; अतः दुर्भिक्ष होता है और दुर्भिक्ष से लोगों में भुखमरी आदि का भय उत्पन्न हो जाता है ।

अकालवर्षा रोगाय -------------- ।

अकाल वृष्टि अर्थात् उचित समयानुसार वृष्टि नहीं होने पर रोग की उत्पत्ति होती है ।

विशेषः– इति त्रिदिनातिरिक्तवृष्टिपरम् । अर्थात् तीन दिनों से अधिक समय तक लगातार होने वाली वृष्टि को अकाल वृष्टि कहा गया है ।

तथा च मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

अनृत्तौ त्रिदिनातिरिक्ता वृष्टिर्ज्ञेया भयाय तु ।

वर्षा ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतुओं में तीन दिनों से अधिक समय तक होने वाली वृष्टि भय (रोगभय) उत्पन्न करती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतिवृष्टौ तु विशेषमाह पराशरः

त्र्यहादूर्ध्वं यदा वर्षेत् प्रवृद्धः पाकशासनः ।
अनृतौ तस्य देशस्य स्यात् प्रधानवधो ध्रुवम् ॥

बलवान इन्द्र जब वर्षा ऋतु से भिन्न काल में तीन दिनों से अधिक समय तक वृष्टि करते हैं तो निश्चय ही उस देश के प्रधान (राजा या तत्समान व्यक्ति) का वध होता है ।

औशनसे च

यत्रानृतौ प्रवर्षेण त्र्यहादूर्ध्वं प्रवर्षति ।
तस्मिन् देशे प्रधानस्य पुरुषस्य वधो भवेत् ॥

जिस देश में वर्षा ऋतु से भिन्न समय में तीन दिनों से अधिक समय तक वर्षा होती है, उस देश में प्रधान पुरुष का वध होता है ।

बृहद्यात्रायां वराहः

सप्ताहं सततोऽन्यर्त्तौ वृष्टिर्हन्यान्नराधिपम् ।

अन्य ऋतु में (वर्षा ऋतु से भिन्न ऋतु में) सात दिनों तक लगातार वृष्टि होने से राजा का वध होता है ।

अतिवृष्टिविशेषो बार्हस्पत्ये

सप्तरात्रं यदा वर्षेत् प्रवृद्धः पाकशासनः ।
अनृतौ तस्य देशस्य प्रधानानां वधो ध्रुवम् ॥

जहाँ पर अन्य ऋतु में बलवान इन्द्र सात रातों तक (लगातार) वर्षा कराते हैं, उस देश के प्रधानों का निश्चय ही वध होता है ।

तत्रैव

अनृतौ वर्षतेऽभीक्ष्णं ऋतुष्वेव न वर्षति ।
अनारोग्यं भयं चैव प्रजानां चैव निर्दिशेत् ॥

अन्य ऋतु में बार-बार वर्षा होती है और वर्षा ऋतु में ही वर्षा नहीं होती है तो प्रजाओं के लिए अनारोग्य और भय कहना चाहिये ।

मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

अनभ्रे विकृता चैव विज्ञेया राजमृत्यवे ।

मेघरहित आकाश में विकार (वृष्टिसम्बधी या वृष्टि) राजा की मृत्यु के लिए होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बार्हस्पत्ये तु

अनभ्रे वर्षतेऽकस्मात् पतिते गर्जितेऽपि वा।
अनभ्रे वाऽपि निर्घातः पतितो राजमृत्यवे॥

मेघरहित आकाश से वर्षा हो या मेघगर्जनविद्युत् आदि पतित (सुनाई) हो अथवा निर्घात शब्द पतित (सुनाई) हो तो राजा की मृत्यु होती है।

उद्योगपर्वणि भगवद्याने कुरुपाण्डवसैन्यक्षयनिमित्तम्

अन्वेगेव च पर्जन्यः प्रावर्षद्विघने भृशम्।

मेघरहित आकाश से अतिशय वृष्टि हुई।

बृहद्यात्रायां वराहः

सप्ताहान्तर्बलभयकरी वृष्टिरन्यर्त्तुजाता
केचिद्यात्रामसितजलदैः प्रोज्झितां पूजयन्ति।
चित्राद्यायां बलपतिवधो रूक्षपीडाम्बुदायां
क्षुज्ज्येष्ठायां भवति न चिराद्द्व्यम्बुदायां च नाशः॥

वाहनानि सव्यगा हन्ति योषितोऽन्यथा।
पञ्जराकृतिस्थिता सर्वतो बलेश्वरम्॥

वर्षा ऋतु से भिन्न ऋतु में सप्ताहान्तपर्यन्त वृष्टि (यात्रा के समय) होने पर सेना के लिए भयकारी होती है। कुछ लोग काले मेघ के द्वारा वृष्टि होने पर यात्रा को स्थगित कर पूजा (शान्ति) करते हैं। चित्रा आदि (चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा) नक्षत्रों में असमय में रूक्ष पीड़ित (विकारयुक्त) मेघ से वृष्टि होने पर बलपति (सेनानायक) का वध होता है तथा ज्येष्ठा नक्षत्र में विकारयुत मेघ से वृष्टि होने से शीघ्र सैन्यादि का नाश होता है।

अथ करकावृष्टिर्मयूरचित्रे

शालिखर्जूरसिकताभाः करका वदरोपमाः।
शीतजातीफलाकाराः पतन्त्यः क्षेमकारणाः॥

इन्द्रध्वजरथाकारैश्चक्रस्वस्तिकसन्निभैः।
शङ्खपद्मनिभै राज्ञः करकैर्जयमादिशेत्॥

मत्स्यकच्छपमण्डूकशूक्तिशम्बूकसन्निभाः।
वदन्त्युपलकास्तापं दीयमानं घनैर्ध्वनिम्॥

बिल्वोदुम्बरतालाभाः कपित्थाम्रशिरःसमाः।
गदामुशलसङ्काशाः करका घ्नन्ति भूनृपौ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्र साधारणी शान्तिः कर्त्तव्या गर्गचोदिता।

यदि धान्य, खजूर, बालूकण, वेर, शीत (लसोढ़ा = 'शेलुः श्लेष्मातकः शीतः उद्दालो बहुवारकः' इत्यमरः), जातीफल (जायफल) आदि के आकार के ओले की वृष्टि हो तो कल्याण होता है। यदि इन्द्रध्वज, रथ, चक्र, स्वस्तिक, शङ्ख और पद्म की आकृति वाले ओलों की वृष्टि हो तो राजा की जय होती है।

यदि मछली, कछुआ, मण्डूक, सीप, घोंघा आदि के सदृश ध्वनि (गर्जन) युत ओले की वृष्टि हो तो ताप (भय) उत्पन्न होते हैं।

यदि बिल्व, उदुम्बर (गुलर), ताल, कपित्थ, आम्र, मस्तक आदि के समान तथा गदा, मुशल आदि के सदृश ओलों की वृष्टि हो तो राजा का नाश होता है।

इन उत्पातों के होने पर गर्गाचार्योक्त सामान्या शान्ति करनी चाहिये।

अथ शोणितादिवृष्टिः। तत्र पराशरः

शोणिताभिवर्षणं परचक्रागमाय।

रक्त की वृष्टि परचक्र के लिए होती है अर्थात् दूसरे राजा का आक्रमण होता है।

आरण्यकाण्डे पञ्चवट्यां खरदूषणाद्यागमननिमित्तकथने रामवाक्यम्

इमे रुधिरधाराभिर्वर्षन्तोऽतिखरस्वनाः।
व्योम्नि मेघा विवर्त्तन्ते परुषा गर्दभारुणाः॥

खरदूषण के आगमन के समय आकाश में रूक्ष, गर्दभाकृतिक और लाल वर्ण वाले मेघ व्याप्त हो गये और अतिशय तीक्ष्ण शब्दों से युक्त रक्तधारा की वृष्टि हुई।

बार्हस्पत्ये तु

शोणितं वर्षते यत्र तत्र देशे भयं वदेत्।

जिस देश में रक्त की वर्षा हो, वहाँ शस्त्रभय कहना चाहिये।

तथाच मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

शोणितं वर्षते यत्र तत्र शस्त्रभयं वदेत्।

विशेषः– भयं शस्त्रभयम्।

जहाँ शोणित की वृष्टि होती है, वहाँ शस्त्रभय कहना चाहिये।

स्कन्दपुराणे तु प्रह्लादपराजयनिमित्तम्

प्रस्रुताः क्षतजं मेघाः -------- ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेघ से खून की वर्षा हुई।

तत्रैव देवासुरयुद्धे देवानां पराजयनिमित्तम्

अनभ्रे भयदं वर्षमपतद्रुधिरं बहु।

मेघरहित आकाश से अत्यन्त भयदायी रुधिरवर्षा हुई।

हरिवंशे वाणपराजयनिमित्तम्

देवानामपि यो देवः सोऽभ्यवर्षत वासवः।
शोणितं शोणितपुरे सर्वतः पुरमन्तिकात्॥

देवताओं के देवता इन्द्र ने शोणितपुर में सर्वत्र शोणित की वृष्टि की।

भागवते विष्णोरुत्क्रान्तिनिमित्तम्

असृग्वर्षन्ति जलदाः----------।

मेघ रक्त की वर्षा करते हैं।

आदिपर्वणि गजकच्छपभक्षणनिमित्तम्

उत्पातमेघा रौद्राँश्च ववृषुः शोणितं बहु।

उत्पातयुत मेघों ने भयङ्कर शब्द (गर्जन) और रक्त की वृष्टि की।

आग्नेयपुराणहरिवंशमत्स्यपुराणेषु हिरण्यकशिपुवधनिमित्तम्

देवानामपि यो देवः सोऽभ्यवर्षत शोणितम्।

इन्द्र ने शोणित की वर्षा की।

मयूरचित्रे

रक्तवर्षे तथाऽऽकाशशब्दे नरपतेर्वधः।

शोणित की वर्षा और आकाश शब्द होने पर राजा का वध होता है।

हरिवंशे कंसवधनिमित्तम्

प्रस्रवन्ति घना रक्तं साशनिस्तनयित्नवः।

मेघ से शोणित की वृष्टि हुई और मेघ वज्रयुक्त हो गये अर्थात् वज्रपात हुआ।

स्कन्दपुराणे तारकवधनिमित्तम्

रूक्षा रूक्षाशनिरवाडम्बरोल्मुकसन्निभाः।
ववर्षुर्जलदास्तोयं रुधिराग्निविमिश्रितम्॥

अत्यन्त रूक्ष शब्दयुत वज्र, नगाडा (वाद्यविशेष) और लुआठ (अधजली लकड़ी) के समान भयंकर मेघों से रक्त एवं अग्निमिश्रित वृष्टि हुई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लङ्काकाण्डे प्रहस्तवधनिमित्तम्

व्यभ्रमाकाशमाविश्य घोररूपः खरस्वनः ।
ववर्ष रुधिरं देवः प्रहस्तस्य रथोपरि ॥

प्रहस्त के रथ पर मेघरहित आकाश से इन्द्र देव ने भयङ्कर कठोर शब्द और रक्तवृष्टि की।

उत्तरकाण्डे माल्यवदादिराक्षसवधनिमित्तम्

अस्थीनि मेघा ववृषुरुष्णं शोणितमेव च ।

मेघ से हड्डियों और गर्म रक्त की वृष्टि हुई।

तत्रैव (वाल्मीकीये) जगदुद्वेजकरावणोत्पत्तौ

ववर्ष रुधिरं देवो मेघाश्च खरनिस्वनाः ।

कठोर शब्दों से युक्त मेघ से रुधिरवर्षा हुई।

उद्योगपर्वणि भीष्मसेनापत्यकरणे भीष्मवधनिमित्तम्

प्रादुरासीदनभ्रे च वर्षं रुधिरकर्दमम् ॥

अनभ्राकाश से रक्त-कीचड़ की वृष्टि हुई।

आश्वमेधिके सैन्धवपराजयनिमित्तम्

रासभारुणसङ्काशा धनुष्मन्तः सविद्युतः ।
आवृत्य गगनं मेघा मुमुचुर्मांसशोणितम् ॥

अरुण वर्ण (किञ्चित् लाल वर्ण) वाले गदहे के समान और विद्युत् युक्त धनुर्धारी के समान वाले मेघ ने आकाश में फैलकर मांस और रुधिर की वर्षा की।

गदापर्वणि पाण्डवशिविरविनाशनिमित्तकथने धृतराष्ट्रे सञ्जयवाक्यम्

तथा शोणितवर्षं च पांशुवर्षं च भारत ।
ववर्ष मघवाँस्तत्र तव पुत्रे निपातिते ॥

पर्जन्यः पांशुवर्षी च मांसवर्षी च भारत ।

हे भारत (राजा धृतराष्ट्र) ! आपके पुत्र के नाश होने पर रक्त, धूलि और मांस की वर्षा हुई है। 'पर्जन्यः पांशुवर्षी च मांसवर्षी च भारत' यह उक्त स्थल पर उपलब्ध नहीं होता है।

स्कन्दपुराणे दैत्यपराजयनिमित्तम्

पपात नभसो रेणुः कपोतोदरधूसरः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आकाश से कपोत के उदर के समान धूसरवर्ण धूलियों की वृष्टि हुई।

मयूरचित्रे

पांशुतैलवसामांसवृष्टौ माण्डलिनां वधः।

धूलि, तेल, चर्वी और मांसों की वृष्टि होने पर मण्डलेश्वर (राजा) का वध होता है।

बार्हस्पत्यमत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरेषु

अङ्गारपांशुवर्षे तु नगरं तद्विनश्यति।
मज्जास्थिस्नेहमांसानां जनमारभयं वदेत्॥

आग और धूलियों की वृष्टि होने पर नगर (देश) का नाश होता है तथा मज्जा, हड्डी, तेल और मांसों की वर्षा होने पर जनमरकी का भय होता है।

पराशरः

अङ्गारसिकतापांशुप्रवर्षणं पुरविनाशाय। तथा मज्जासृक्स्नेहमांसास्थिवर्षणं जनमारभयाय।

आग, बालूकण या धूलिवर्षण होने पर नगर का विनाश होता है तथा मज्जा, रक्त, तेल, मांस या हड्डी की वृष्टि होने पर जनमरकी का भय होता है।

वराहसंहितायां च

अङ्गारपांशुवर्षे विनाशमुपयाति तन्नगरम्।

यदि अग्नि (कोयला) और धूलि की वृष्टि हो तो उस नगर (जिस जगह वृष्टि हो) का नाश होता है।

औशनसे

अङ्गारवालुकाधान्यं यत्र देवः प्रवर्षति।
क्षिप्रं तत्र भयं घोरं प्रवर्त्तेत चतुर्विधम्॥

मांसवर्षं च मघवा यत्र देशेषु वर्षति।
अस्थीनि रुधिरं मज्जां वसां चैतेषु वै ध्रुवम्॥

परचक्रागमः शीघ्रं विज्ञेयं सुमहद्भयम्।
अहिताश्चात्र जायन्ते विपुला विकृतात्मनाः॥

जिस देश में अग्नि (कोयला), बालू और धान्य की वृष्टि इन्द्रदेवता करते हैं, वहाँ शीघ्र चतुर्विध भयंकर भय होता है। जिस देश में मांस, अस्थि, रुधिर, मज्जा और वसा की वर्षा इन्द्र करते हैं, वहाँ शीघ्र परचक्र का आगमन (दूसरे राजा का आक्रमण), महान् भय, शत्रुवृद्धि और दुष्टात्माओं (दुष्टों) की वृद्धि होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

फलपुष्पशमीधान्यं हिरण्यं वा भयावहम् ।

विशेषः– वृष्टिमिति सम्बन्धः ।

यदि फल, पुष्प, शमी ('शमी सक्तुफला शिवा' इत्यमरः), धान्य या हिरण्य की वृष्टि हो तो लोगों को भय होता है।

वराहसंहितायाम्

धान्यहिरण्यत्वक्फलकुसुमाद्यैर्वर्षिते भयं विन्द्यात् ।

धान्य, सोना, त्वचा (वृक्ष की छाल), फल, पुष्प आदि (पत्र आदि) की वृष्टि हो तो भय होता है।

मत्स्यपुराणे

पांशुजन्तूपलानां तु वर्षणे रोगजं भयम् ।

धूलि, जन्तु (मछली आदि) और ओले की वृष्टि हो तो रोग से उत्पन्न भय होता है।

पराशरः

लोमोपलासवक्षीरदधिमधुघृततैलमत्स्यभेकपक्षिशस्यवर्षणं दुर्भिक्षाय ।

रोम, ओला, आसव (गन्ने का रस या शाक आदि से बनी मदिरा), दूध, दही, मधु, घृत, तेल, मछली, भेक (वेंग), पक्षी या धान्य की वृष्टि दुर्भिक्ष के लिए होती है।

औशनसे तु

सर्पान् मत्स्यान् पक्षिणो वा यत्र देवः प्रवर्षति ।
तत्र शस्त्रोपघातः स्याद्भयं चातिप्रवर्त्तते ॥

सुरासवं तथा क्षौद्रं सर्पिस्तैलं पयो दधि ।
यत्र वर्षति पर्जन्यः क्षुद्रोगस्तत्र जायते ॥

जहाँ पर साँप, मछली अथवा पक्षी की वृष्टि इन्द्र करते हैं, वहाँ शस्योपघात और अतिशय भय होता है। जहाँ सुरा, आसव, मधु, घृत, तेल, दूध और दही मेघ से बरसता है, वहाँ क्षुधा-रोग होता है अर्थात् दुर्भिक्ष होता है।

बृहद्यात्रायां वराहः

धान्यरसमद्यभोजनफलपुष्पस्नेहमांसवस्त्राणाम् ।
सिकतारजोवसामृतशर्करकाङ्गारवर्षेषु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुतपत्नीक्षुद्रोगा नृपवेशचमूमरणसंक्लेशैः ।
भेदोपजापमन्त्रिव्याधिभयविनाशभयशोकाः ॥

यदि धान्य, रस, मदिरा, भोजन, फल, पुष्प, तेल, मांस, वस्त्र, बालू, धूलि, वसा, अमृत (यज्ञ या भोजन के अवशिष्ट उच्छिष्ट वस्तु), शर्करा (छोटे-छोटे कंकड़), आग (कोयला) आदि की वृष्टि हो तो पुत्र और पत्नी को क्लेश, क्षुधाभय, रोग, राजा, वेश (वेश्याओं का स्थान) का नाश, सेना की मृत्यु क्लेश के साथ होती है तथा राजा को मन्त्री आदि से भेद, व्याधिभय, विनाशभय और शोक होते हैं।

बार्हस्पत्ये

वृष्टिर्यदा वर्षति रेणुवर्षं तस्योपरिष्टाद्धरितालवर्षम् ।
अदृष्टपूर्वं च यदा प्रवर्षेत् तदा बलं नश्यति पार्थिवस्य ॥

जब धूलिवर्षा के समय धूलिवृष्टि और उसके बाद हरताल (औषधिविशेष) की वृष्टि हो तथा अदृष्टपूर्व (जो पहले नहीं देखी गयी हो) वृष्टि हो तो राजा की सेना का नाश होता है।

अत्र शान्तिर्मत्स्यपुराणविष्णुधर्मोत्तरयोः

सूर्येन्दुपर्जन्यसमीरणानां यागः स्मृतो वृष्टिविकारकाले ।
धान्यं च गोकाञ्चनदक्षिणाश्च देयास्ततो नाशमुपैति पापम् ॥

उक्त वृष्टिविकार के समय सूर्य, चन्द्र, इन्द्र और वायुदेवता का यज्ञ करके धान्य, गाय, सुवर्ण और दक्षिणा देने से पाप का नाश होता है— ऐसा कहा गया है।

बार्हस्पत्ये तु

सूर्येन्दुवायुपर्जन्या यष्टव्या वर्षवैकृते ।
अन्नानि सहिरण्यानि धान्यं गावश्च दक्षिणाः ॥

वैश्वदेवाश्च होतव्याः सर्वाद्भुतविनाशनाः ।
चतुर्णामपि वर्णानामभयं विद्यते ततः ॥

गुरवे च हयः श्वेतः सर्वलक्षणलक्षितः ।
शतनिष्काश्च दातव्या अलाभे तु गवां शतम् ॥

वृष्टिविकार होने पर सूर्य, चन्द्र, वायु और पर्जन्य (इन्द्र) देवताओं का याग करना चाहिये और अन्न, सुवर्ण, धान्य, गाय तथा दक्षिणा दान करना चाहिये। सभी प्रकार के वृष्टिजन्य अद्भुतों के नाश के लिए विश्वेदेव का हवन करना चाहिये और गुरु को सर्वलक्षणों से संयुक्त सफेद घोड़ा और एक सौ निष्क (१०८ सोने की अशर्फियाँ) देना चाहिये। इसके अलाभ (अशक्तता की स्थिति) में एक सौ गाय का दान करना चाहिये। इससे चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों) को अभय मिलता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मयूरचित्रे

हेमरक्ताम्रपाषाणबालमुत्पांशुकर्दमैः ।
पुष्पायस्ताम्रकेशैश्च वृष्टौ सौर्या चरुक्रिया ॥
दिव्ये सूर्याय स्वाहेति प्रभृत्युक्ताऽतिदिश्यते ।

वर्षाकाल में सुवर्ण, रक्त, अस्त्र, पत्थर, बालक को आनन्दित करने वाली वस्तु, धूलि, कीचड़, पुष्प, लोहा, ताँबा और केश की वृष्टि हो तो सूर्यदेवता का याग एवं सूर्याय स्वाहा इत्यादि मन्त्र से हवनादि करना चाहिये ।

तत्रैव

प्रावृट्काले यदा मेघः पांशुवृष्टिं विमुञ्चति ।
चक्रवर्त्तिवधः प्रोक्तस्तदा गर्गेण भागुरे ॥
द्वितीया शान्तिरेतेषु कर्त्तव्या दिव्यचोदिता ।

वर्षाकाल में जब मेघ धूलिवृष्टि करे तो राजा का वध कहना चाहिये । उस समय दिव्याश्रयोक्त द्वितीया शान्ति करनी चाहिये ।

फलपाकसमयो गार्गीये

घृततैलवसावर्षे सद्यः फलमुदाहृतम् ।
व्यभ्रवृष्टिर्भवेन्मासात्----- इति ॥

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-
विरचितेऽद्भुतसागरेऽतिवृष्ट्याद्यद्भुतावर्त्तः ।

विशेषः– अन्यासां आन्तरिक्षत्वात् षाण्मासिकः फलपाकः ।

वर्षाकाल में घृत, तेल और वसा की वृष्टि होने पर उसका फल शीघ्र होता है— ऐसा कहा गया है । निरभ्राकाश से वृष्टिसम्बन्धी उत्पात का फल एक मास में प्राप्त होता है ।

अन्य अन्तरिक्षसम्बन्धी उत्पात का फल छः महीनों में होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ कबन्धाद्भुतावर्त्तः

लङ्काकाण्डे धूम्राक्षनिर्याणे धूम्राक्षवधनिमित्तम्

रुधिरार्द्रो महाश्वेतः कबन्धो निपपात ह ।

युद्ध के लिए धूम्राक्ष के प्रस्थान करने के समय रक्त से आर्द्र (लथपथ) और महाश्वेत सफेद कबन्ध (विना शिर का शरीर) गिरा। यह उत्पात उसके वध का सूचक था।

गदापर्वणि पाण्डवशिविरवधनिमित्तम्

बहुपादैर्बहुभुजैः कबन्धैर्घोरदर्शनैः ।
नृत्यद्भिर्भयदैर्व्याप्ता दिशस्तत्राभवन्नृप ।।

हे राजन्! पाण्डव शिविरस्थ सैन्य वध के निमित्त अनेक पाँव और अनेक हाथ वाले भयङ्कर दिखाई देने वाले और नाचते हुए कबन्धों से दिशायें व्याप्त हो गईं।

शान्तिः

अत्रापि सावित्रीमन्त्रदशलक्षहोमादिका शान्तिरभयाख्या वा महाशान्तिः कर्त्तव्या ।

इति श्रीमहाराजाधिराजनिःशङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लालसेनदेव-विरचितेऽद्भुतसागरे कबन्धाद्भुतावर्त्तः ।

उक्त अद्भुतों के दिखाई देने पर सावित्री मन्त्र से दश लाख हवन आदि अभयाख्या शान्ति अथवा महाशान्ति करनी चाहिये।

।। इत्यन्तरिक्षाश्रयः पूर्णः ।।

Acc. 30995
30115

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष-वास्तुशास्त्रग्रन्थाः

- **सूर्यसिद्धान्त** । प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय
- **पूर्वकालामृत** । प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय
- **अर्थववेदीय ज्योतिष** । आचार्य अभय कात्यायन
- **विश्व के प्रमुख कालदर्शक** । आचार्य अभय कात्यायन
- **नक्षत्रचिकित्साज्योतिष** । आचार्य अभय कात्यायन
- **गृहवास्तुप्रदीप** । डॉ. (श्रीमती) शैलजा पाण्डेय
- **मनुष्यालयचन्द्रिका** । डॉ. (श्रीमती) शैलजा पाण्डेय
- **राजवल्लभमण्डन** । डॉ. (श्रीमती) शैलजा पाण्डेय
- **जातकपारिजात** । डॉ. हरिशंकर पाठक
- **जातकतत्त्व** । डॉ. हरिशंकर पाठक
- **फलदीपिका** । डॉ. हरिशंकर पाठक
- **दशाफलदर्पण** । डॉ. हरिशंकर पाठक
- **केशवीयजातकपद्धति** । डॉ. सुरकान्त झा
- **ज्योतिष रत्नमाला** । पं. सीताराम झा
- **फलित-प्रकाश** । पं. बालमुकुन्द पाण्डेय
- **बृहत्पाराशरहोराशास्त्र** । डॉ. पद्मनाभ मिश्र
- **बृहत्संहिता** । पं. श्रीअच्युतानन्द झा
- **मुहूर्तपारिजात** । पं. सोहनलाल व्यास
- **हस्तरेखाशास्त्र** । श्रीसोमनाथ एवं श्रीराजेन्द्रमिश्र
- **सर्वार्थचिन्तामणि** । पं. गुरुप्रसाद गौड़
- **होराशास्त्र** । डॉ. सत्येन्द्र मिश्र
- **मुहूर्तचिन्तामणि** । आचार्य विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी
- **(सफल) अंक ज्योतिष** । डा. अल्पना वत्स
- **गुरुज्ञान** । (जन्मकुण्डली कैसे बनाएं और फलादेश) । पं. दिवाकर शास्त्री
- **मकरन्दप्रकाश** । आचार्य लखनलाल झा
- **मानसागरी** । पं. मधुकान्त झा
- **रेखा-रहस्य** । पं. गोपालदेव गौड़
- **अद्भुतसागर** । डॉ. शिवाकान्त झा
- **वेदाङ्ग ज्योतिष** । डॉ. शिवराज आचार्य कौण्डिन्यायन

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu